

अनुक्रमणिका.

अनुक्रम.	विषयनुं नाम	पृष्ठांक.
१	शास्त्री कको.	१
२	बाराखडो.	२
३	नवकारना लुटा शब्दना अर्थ.	५
४	नवकार मंत्र.	५
५	नवकारना विस्तार अर्थ.	६
१	नमो अरिहंताणं ए शब्दना जुदा जुदा अर्थ.	६
२	नमो सिद्धाणं ए शब्दनो अर्थ.	११
३	नमो आयरियाणं ए शब्दनो अर्थ.	१२
४	नमो उवझायाणं ए शब्दनो अर्थ.	१५
५	नमो लोए सब्ब साहूणं ए शब्दनो	१०६
६	पंच परमेष्ठिने नमस्कार कहन.	१०७
७	एसो पंचनमुकारोहाउससगगनुं चैत्यवंदन.	१६७
८	अरिहंतना शब्दना अर्थ	१६७
९	सिद्ध भगवन् विस्तार अर्थ.	१६७
१०	आचार्यनानार अर्थशब्दना अर्थ.	१६८
११	उपाध्यायजोना पगं जोमे देवमिथो सूत्र.	१६९
१२	साधुना सत्तावीसगंगा विस्तार अर्थ	१७०

१३ नवकारनो महिमा तथा ते उपर श्रीमतीनी कथा.	३७
पंचिंदियना छुटा शब्दना अर्थ.	४०
६ पंचिंदिय सूत्र.	४१
पंचिंदियना विस्तार अर्थ.	४१
इच्छामि स्वमासमणना छुटा शब्दना अर्थ.	४३
७ इच्छामि स्वमासमण सूत्र.	४४
इच्छामि स्वमासमणना विस्तार अर्थ.	४४
इरियावहियंना छुटा शब्दना अर्थ.	४५
८ इरियावहियं सूत्र.	४६
इरियावहियंना विस्तार अर्थ.	४७
तस्सउत्तरीना छुटा शब्दना अर्थ.	५३
९ तस्सउत्तरी सूत्र.	५४
तस्सउत्तरीना विस्तार अर्थ.	५४
अन्नथ उससिणंना छुटा शब्दना अर्थ.	५६
१० उससिणं सूत्र.	५८
उससिणं विस्तार अर्थ.	५८
	६१
	६३
	६४
	८०
तथा अर्थ समजुती साथे.	८१
	८२

१३	करेमिभंते सूत्र.	८६
	करेमिभंतेना विस्तार अर्थ.	८६
	सामाइय वयजुत्तोना लुटा शब्दना अर्थ.	८९
१४	सामाइय वयजुत्तो सूत्र.	८९
	सामाइय वयजुत्तोना विस्तार अर्थ.	९०
	वांदणाना लुटा शब्दना अर्थ.	९१
१५	वांदणा सूत्र.	९२
	वांदणाना विस्तार अर्थ.	९४
	सांजनां पच्चख्खाणना लुटा शब्दना अर्थ.	१००
१६	सांजनां पच्चख्खाण.	१००
	१. पाणहारनुं पच्चख्खाण.	१००
	२. चउविहारतिविहार अने दुविहारनुं.	१०१
	चैत्यवंदनोना लुटा शब्दना अर्थ. १-२-३-४ ना	१०३
१७	शत्रुंजय तीर्थनुं चैत्यवंदन.	१०१
१८	पंचपरमेष्ठि चैत्यवंदन.	१०७
१९	वीश स्थानकना नामनुं चैत्यवंदन.	१०७
२०	वीश स्थानकतपना काउस्सग्गनुं चैत्यवंदन.	१६७
	जंकिंचिना लुटा शब्दना अर्थ.	१६७
२१	जंकिंचि सूत्र. विस्तार अर्थ.	१६७
	जंकिंचिना विस्तार अर्थशब्दना अर्थ.	१६८
	नमुथ्युणंना लुटा शब्दनां जोमे देवमिभो सूत्र.	१६९
२२	नमुथ्युणं सूत्र. लग्गना विस्तार अर्थ	१७०

नम्मुध्युणंना विस्तार अर्थ. ११३

जावंति वे ना लुटा शब्दना अर्थ. ११०

१३ जावंति चेइआइं सूत्र. १२०

जावंति चेइआइंना विस्तार अर्थ. १२१

२४ जावंत केविसाहू सूत्र. १२१

जावंत केविसाहूना विस्तार अर्थ. १२१

२५ नमस्कार अर्थ सहित. १२२

उवसग्ग हरंना लुटा शब्दना अर्थ. १२२

२६ उवसग्गहरं सूत्र. १२३

उवसग्गहरंना विस्तार अर्थ. १२४

स्तवन १-२ ना लुटा शब्दना अर्थ. १२७

२७ ऋषभ देवनुं स्तवन. १२८

२८ प्रथम व्रत पूजानुं स्तवन. १२९

जयवीयरायना लुटा शब्दना अर्थ. १३२

२९ जयवीयराय सूत्र. १३३

जयवीयरायना विस्तार अर्थ. १३३

इआणंना लुटा शब्दना अर्थ. १३७

१३७

अर्थ. १३८

अर्थ. १४०

१ १४१

१४१

३२	सिद्धचक्रनी शोय अर्थ सहित.	१४४
	संसार दावाना छुटा शब्दना अर्थ.	१४५
३३	संसारदावानी स्तुति.	१४६
	संसार दावाना विस्तार अर्थ.	१४७
	स्नातस्याना छुटा शब्दना अर्थ.	१५०
३४	स्नातस्यानी स्तुति.	१५२
	स्नातस्याना विस्तार अर्थ	१५४
	पुरुखरवर दीवहेना छुटा शब्दना अर्थ.	१५६
३५	पुरुखरवरदीवहे सूत्र.	१५७
	पुरुखरवरदीवहेना विस्तार अर्थ.	१५७
	सिद्धाणं बुद्धाणंना छुटा शब्दना अर्थ.	१६०
३६	सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र.	१६१
	सिद्धाणं बुद्धाणंना विस्तार अर्थ.	१६२
	वेआवच्चगराणंना छुटा शब्दना अर्थ.	१६५
३७	वेआवच्चगराणं सूत्र.	१६५
	वेआवच्चगराणंना विस्तार अर्थ.	१६५
	देवसिपडिक्कमणे ठाउंना छुटा शब्दना अर्थ.	१६७
३८	देवसिपडिक्कमणे ठाउं सूत्र.	१६७
	देवसि पडिक्कमणे ठाउंना विस्तार अर्थ.	१६७
	जोमे देवसिओना छुटा शब्दना अर्थ.	१६७
३९	इच्छामिठामि काउस्सगं जोमे देवसिओ सूत्र.	१६९
	इच्छामिठामि काउस्सगंना विस्तार अर्थ	१७०

	नाणंमिदंसणंमिना लुटा शब्दना अर्थ	१७२
४०	नाणंमि दंसणंमि सूत्र	१७४
	नाणंमिदंसणंमिना विस्तार अर्थ	१७५
४१	देवसिञ्चं आलोउं सूत्र	१७१
	देवसिञ्चं आलोउंना विस्तार अर्थ	१८१
	सातलाखना लुटा शब्दना अर्थ	१८२
४२	सातलाख सूत्र	१८३
	अठार पाप स्थानकना लुटा शब्दना अर्थ	१८४
४३	अठार पापस्थानक सूत्र	१८४
४४	वंदिता सूत्र तथा लुटा शब्द तथा विस्तार अर्थ सहित	१८६
	अण्भुठिओमिना लुटा शब्दना अर्थ	२४२
४५	अण्भुठिओमि सूत्र	२४३
	अण्भुठिओमिना विस्तार अर्थ	२४४
	आयरिय उवछायना लुटा शब्दना अर्थ,	२४५
४६	आयरिय उवछाय सूत्र	२४६
	आयरिय उवछायना विस्तार अर्थ	२४६
	सुअदवयोदि थोयोना लुटा शब्दना अर्थ	२४७
४७	सुअदेवयानी थोय तथा विस्तार अर्थ	२४७
४७	क्षेत्र देवतानी थोय	२४७
	क्षेत्र देवतानी थोयना विस्तार अर्थ	२५०
४८	कमलदलनो थोय विस्तार अर्थ सहित	२५०
५०	यस्याः क्षेत्रं नी थोय विस्तार अर्थ सहित	२५१

५१	भुवन देवतानी थोय विस्तार अर्थ सहित	३५१
	नमोस्तु वर्द्धमानायना छुटा शब्दना अर्थ	३५२
५२	नमोस्तु वर्द्धमानाय सूत्र	२५३
	नमोस्तु वर्द्धमानायना विस्तार अर्थ	२५४
	स्तवनना छुटा शब्दना अर्थ	३५५
५३	स्तवन (सखी आवी देवदीवाळी)	२५६
	वरकनकना छुटा शब्दना अर्थ	३५७
५४	वरकनक सूत्र	२५७
	वरकनकना विस्तार अर्थ	३५८
	अढ्वाइज्जेसुना छुटा शब्दना अर्थ	२५८
५५	अढ्वाइज्जेसु सूत्र	२५८
	अढ्वाइज्जेसुना विस्तार अर्थ	२५९
	सझाय (अनाथी मुनीनी)ना छुटा शब्दना अर्थ	२६०
५६	सझाय (अनाथी मुनिनी)	२६०
५७	लघुशांति सूत्र छुटा शब्दना अर्थ तथा विस्तार अर्थ सहित	३६३
	चउकसायना छुटा शब्दना अर्थ	२७६
५८	चउकसाय सूत्र	२७७
	चउकसायना विस्तार अर्थ	३७७
	जग चिंतामणिना छुटा शब्दना अर्थ	२७९
५९	जगचिंतामणि चैत्यवंदन	३८०
	जग चिंतामणिना विस्तारार्थ	२८२

भरहेसरनी सज्जायना छुटा शब्दना अर्थ	२८५
६० भरहेसरनी सज्जाय	२८७
भरहेसरनी सज्जायना विस्तार अर्थ	२९०
इच्छकार सुहराइना छुटा शब्दना अर्थ	३९८
६१ इच्छकार सुहराइ सूत्र	२९८
इच्छकार सुहराइना विस्तार अर्थ	२९८
तीर्थवंदनाना छुटा शब्दना अर्थ	३००
६२ तीर्थवंदना	३००
सवारनां पञ्चख्वाणना छुटा शब्दना अर्थ	३०२
६३ पञ्चख्वाण	३०३
१ नमुकार सहिअनुं	३०३
२ नमुकार सहिअं मुठिसहिअनुं	३०४
३ पोरिसि साढुपोरिसिनुं	३०४
४ पुरिमढु अवढुनुं	३०६
५ विगइ निविगइनुं	३०६
६ एकासणा तथा वेआसणानुं	३०८
७ आयंविलनुं	३१०
८ चउविहार उपवासनुं	३११
९ तिविहार उपवासनुं	३११
१० चउथ्य छठ भत्तादिकनुं	३१२
११ तपना दिवसे पाणहारनुं	३१२
१२ गठसहिअं आदि अभिग्रहानुं	३१३

१३	देसावगासिकनुं	३१४
१४	पञ्चख्वाण पारवानो विधि	३१४
१५	निवियातां विचार	३१५
	विशाल लोचनना छुटा शब्दना अर्थ	३१६
६४	विशाल लोचन सूत्र	३१६
	विशाल लोचनना विस्तार अर्थ	३२०
	सीमंधर जिन चैत्यवंदन, स्तवन तथा थोयना छुटा शब्दना अर्थ	३२२
६५	सीमंधर जिन चैत्यवंदन (सीमंधर परमात्मा)	३२२
६६	सीमंधर जिन चैत्यवंदन (सीसीमंधर जगधणो)	३२३
६७	सीमंधर जिन स्तवन (पुरुषलवइ विजयेजयो)	३२४
६८	सीमंधर जिन स्तवन (चितहुं संदेशो मोकले)	३२४
६९	सीमंधर जिन थोय (सीमंधर जिनवर तथा श्री सीमंधर मुजने वहाला)	३२६
	सिद्धाचलनां चैत्यवंदन तथा स्तवनना छुटा शब्दना अर्थ	३२७
७०	सिद्धाचलनुं चैत्यवंदन (श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्र)	३२७
७१	सिद्धाचलनुं स्तवन १ लुं (जात्रा नवाणुं करीए)	३२७
७२	” २ जुं (चालोने प्रीतमजी प्यारा)	३२८
७३	सिद्धाचलनो थोय (पुंडरिकगिरि महिमा तथा श्री शत्रुंजय गिरितीरथ सार)	३२९
७४	सकलाऽर्हत छुटा शब्दना तथा विस्तार अर्थ सहित	३३०

७५	श्रावकपाक्षिकादि सांक्षिप्तातिचार	३५२
७६	श्रावकपाक्षिकादि विस्तारातिचार	३६७
७७	श्रावक पाक्षिकादि अतिचार	३७६
७८	अजितशांति छुटा शब्दना अर्थ तथा विस्तार अर्थ सहित	४०७
७९	बृहच्छांति स्तव छुटा शब्दना अर्थ तथा विस्तार अर्थ सहित	४५१
८०	संतिकर स्तोत्र छुटा शब्दना तथा विस्तार अर्थ सहित	४७२
८१	तिजयपहुत्त, छुटा शब्दना तथा विस्तार अर्थ सहित	४८३
८२	नमिऊण, छुटा शब्दना अर्थ तथा विस्तार अर्थ सहित	४९८
८३	भक्तामर छुटा शब्दना अर्थ तथा विस्तार अर्थ सहित	५१६
८४	कल्याणमंदिर छुटा शब्दना अर्थ तथा विस्तार अर्थ सहित	५५९
८५	संधारा पोरिसि, छुटा शब्दना अर्थ, तथा विस्तार अर्थ सहित	६०७
८६	सागरचंदो, छुटा शब्दना अर्थ तथा विस्तार अर्थ सहित	६१६
८७	पोसहनुं पच्चरुखाण, छुटा शब्दना अर्थ तथा विस्तार अर्थ सहित	६२१
८८	पडिलेहेण करवानो विधि	६२३
८९	देववांदवानो विधि	६२४
	मन्हजिणाणंना छुटा शब्दना अर्थ	६२५
९०	मन्हजिणाणंनी सद्याय	६२५
	मन्हजिणाणंना विस्तार अर्थ	६२७

९१ पोसहनां चोवीश मांडलां	६२७
ए२ पोषधविधि	६३०
१ गमणागमणे	६३३
२ स्थंडिल जवानो विधि	६४३
३ माथे कामालि नांखवा संवंधि काल	६४४
४ अचित्त पाणीनो काल	६४४
५ परचुरण समजुतो	६४५
६ पोसहना अठार दोष	६४५
ज्ञान पंचमीनी स्तुतिना छुटा शब्दना अर्थ	६४७
९३ ज्ञान पंचमीनी स्तुती (श्रीनेमिःपंचरूप)	६४७
ज्ञान पंचमीनो स्तुतिना विस्तार अर्थ	६५०

चैत्यवंदनानि.

९४ वीजतुं चैत्यवंदन (दुविध धर्मे जिणेउपदोश्यो)	६५३
ए५ ज्ञान पंचमीतुं चैत्यवंदन (त्रीगडे वेठा वीरजिन)	६५४
९६ अष्टमीतुं चैत्यवंदन (महासुदो आठम दोने)	६५५
९७ एकादशीतुं चैत्यवंदन (शासन नायक वीरजी)	६५६
९८ रोहिणी तपतुं चैत्यवंदन (रोहिणीतप आराधोये)	६५७
एए वीश स्थानक तपना काउस्सगनुं चैत्यवंदन	६५८
१०० आदि जिन चैत्यवंदन (सर्वारथ सिद्धे थकी)	६५९
१०१ चोवीश जिनना वर्णतुं (पद्मप्रभने वासुपूज्य)	६५९
१०२ चोवीश जिनना लंछनतुं चैत्यवंदन	
(वृषभ लंछन रूपभदेव)	६६०

(१३)

- १०३ पार्श्वनाथ चैत्यवंदन (जयचिंतामणो पार्श्वनाथ) ६६१
 १०४ शांतिजिन चैत्यवंदन (जयजय शांतिजिणंद्वोर) ६६१
 १०५ आदिजिन चैत्यवंदन (अरिहंत नमो भगवंत नमो) ६६१

छंद.

- १०६ गौतमाष्टक छंद ६६३
 १०७ सोलसतीनो छंद ६६४
 १०८ नवकारनो छंद (वांछोत पुरे विविध परे) ६६६
 ११० महावीर स्वामिनो छंद ६७०
 १११ नवकार लघुछंद (सुख कारण भविअणं) ६७१

स्तवनानि.

- ११२ वीजनुं स्तवन (प्रणमो सारदमाय) ६७३
 ११३ पांचमनुं स्तवन (पंचमो तप तमे करोरे प्राणी) ६७४
 ११४ अष्टमीनुं स्तवन (हारे मारे ठाम धरमना) ६७५
 ११५ एकादशीनुं स्तवन (जगपति नायक नेमि जिणंद) ६७८
 ११६ एकादशोना दोढसो कल्याणकनुं स्तवन ६८४
 ११७ मोटुं दीवाली स्तवन (श्री श्रमण संघतिलकौ पमं) ६९६
 ११८ वीर स्तवन (वीर हमणां आवे छे मारे मंदिरिए) ७१५
 ११९ वीर प्रभुनुं दीवालीनुं स्तवन (मारग देशक मोक्षनोरे) ७१६
 १२० आराधनानुं स्तवन. ७१७
 १२१ ज्ञानपांचमनुं स्तवन मोटुं (सुत सिद्धारथ भूपनोरे) ७३०
 १२२ छ आवश्यकनुं स्तवन ७४१
 १२३ मुनिराज गुण स्तवन (सम्यक् दृष्टीने संतोषो) ७४७

१.१४ पूजाविधि आश्रयीश्री सुविधि जिन स्तवन	७४ए
१.१५ पार्श्वनाथजीनुं भाव पूजानुं स्तवन	७५१
१.२६ सिद्धाचलजीनुं स्तवन (बापलडारें पातोकडारें)	७५३
१.२७ ऋषभ देवजीनुं स्तवन (माता मरुदेवीना नंद)	७५५
१.२८ सोद्धाचलजीनुं स्तवन (चालो चालो विमलगिरि)	७५६
१.२९ सिद्धाचलजीनुं स्तवन (आंखडीएरे में आज शेत्रुंजो दीठोरे)	७५७
१.३० समेत शिखरजीनुं स्तवन (ममेतशिखर जिनवंदीए)	७५८
१.३१ समेत शिखरजीनुं स्तवन (जइ पूजोलाल)	७५ए
१.३२ समेतशिखरजीनुं स्तवन (समेत शिखर गिरिभेटीएरे)	७६१
१.३३ आवुजीनुं स्तवन (आवु अचल रलियामणोरे)	७६३
१.३४ अर्बुदगिरिनुं स्तवन (आवो आवोने राज)	७६४
१.३५ आवुगिरिनुं स्तवन (आदि जिणेसर पूजतां)	७६५
१.३६ गिरनारजीनुं स्तवन (तारणथोरथ फेरी चाल्याकंत)	७६७
१.३७ गिरनारजीनुं स्तवन (सहेसावन जइ वसीए)	७६८
१.३८ गिरनारजीनुं स्तवन (नेम निरंजन देवके)	७६ए
१.३९ अष्टापद स्तवन (चउअठ दसदोय वंदीएजी)	७७१
१.४० अष्टापद स्तवन (अष्टापद अरिहंतजी)	७७३
१.४१ अष्टापद गिरिस्तवन (अष्टापद गिरियात्रा कारणकुं)	७७४
१.४२ तीर्थमालानुं स्तवन (शेत्रुंजे रिखभ समोसर्या)	७७५
१.४३ श्री सीमंधरजिन स्तवन (धन धनखेत्र महाविदेहजी)	७७६
१.४४ श्री युगमंधरजीन स्तवन (श्री युगमंधरने केजो)	७७७

१४५ अजरापार्श्वनाथनुं स्तवन	
(हारें मारें आजनी घडी ते रलियामणिरे)	७७९
१४६ पांच करणनुं स्तवन छ ढालनुं	७८०
१४७ संभवनाथजीनुं स्तवन (साहिब सांभळोरे)	७८०
१४८ संखेश्वर पार्श्वनाथजीनुं स्तवन (अंतरजामी सुण)	७९०
१४९ दीवालीनुं स्तवन (जयजिनवर)	७९१
१५० दीवालीनुं स्तवन वीजुं (रमती गमती अमुन साहेली)	७९२
१५१ सिद्धचक्र स्तवन (अवसर पामोनेरे)	७९३
१५२ रोहिणी तपनुं स्तवन (हारें मारें वासुपुज्यनो नंदन)	७९५
१५३ गौतम स्वामीनुं प्रभाती स्तवन (मात पृथ्वी सुत)	७९६
१५४ संखेश्वरा पार्श्वनाथनुं प्रभाती स्तवन (पास संखेश्वरा)	७९८
१५५ दान, शीयल, तप अने ज्ञावनुं प्रभातिउं	
(रेजीव जैनधर्म कीजीए)	७९९
१५६ प्रभातिउं (जोवनीआनी मोजां फोजां)	७९९
१५७ प्रभातिउं (आवी रुडी भक्ति)	८००
१५८ स्तवन राग प्रभाती (आजको लाहो लीजीए)	८०१
१५९ स्तवन प्रभाती (जागे सो जिन भक्त कहावे)	८०२

सजायो.

१६० आप स्वभावनी (आप स्वभावमारें)	८०२
१६१ सहजानंदीनी (सहजानंदीरे आतमा)	८०३
१६२ चेतन शीखामणनी (चेतन अवकलु चेतिये)	८०६
१६३ आत्म बोधनी (हो सुण आतमा)	८०६

१६४ आत्म बोधनी (सांभल सयणां)	८०७
१६५ धोबीडानी (धोबीडा तुं धोजे मननुं)	८०८
१६६ भरतजीनी (मनहीमें वैरागी)	८०९
१६७ ढंढणरुषिनी (ढंढण रुषिने वंदणा हुं वारी लाल)	८१५
१६८ अइमत्ताजीनी (श्री अइमत्ता मुनीवरजीकी)	८११
१६९ करकंडुनी (चंपानगरी अतीभली)	८१३
१७० क्रोधनी (कडुवां फल छे क्रोधनां)	८१३
१७१ माननी (रे जीव मान न कीजीए)	८१४
१७२ मायानी (समकीतनुं मूल जाणोयेजी)	८१४
१७३ लोभनी (तुमे लक्षण जोजो लोभनारे)	८१०
१७४ आठमइनी (मद आठ महा मुनी वारीए)	८१६
१७५ भेतारज मुनिनी सज्जाय.	८१८
१७६ अरणिक मुनिनी सज्जाय.	८२०
१७७ वणजारानी सज्जाय.	८२१
१७८ आत्म शिक्षा सज्जाय.	८२२
१७९ सामायकना वत्रीस दोषनी सज्जाय.	८२३
१८० शाश्वता जिन स्तुति.	
१८१ आदिजिन स्तुति.	८२५
१८२ बीज तीथिनी स्तुति.	८२६
१८३ पंचमीनी स्तुति.	८२७
१८४ अष्टमीनी स्तुति.	८२८
१८५ एकादशी स्तुति.	८२९

१८६ रोहिणी तपनी स्तुति.	८३०
१८७ पञ्चसणनी स्तुति.	८३२
१८८ पञ्चसणनी स्तुति.	८३३
१८९ अध्यात्म स्तुति.	८३४
१९० शांतिजिन स्तुति.	८३५
१९१ पंच तीरथनी आरती.	८३७
१९२ शांतिजिननी आरती.	८३८
१९३ आदिजिननी आरती.	८३९
१९४ मंगलदीवो.	८३९
१९५ मंगलचार.	८४१
१९६ जिन नव अंग पूजाना दोहा.	८४१
१९७ सामायक लेवानी विधि.	८४२
१९८ सामायक पारवानी विधि.	८४४
१९९ देवसि प्रतिक्रमण विधि.	८४४
२०० राइप्रतिक्रमण विधि.	८४९
२०१ पखिखप्रतिक्रमण विधि.	८५१
२०२ चउम्मासीप्रतिक्रमण विधि.	८५५
२०३ सांवत्सरि प्रतिक्रमण विधि.	८५५
२०४ चउद नियम धारवानी विगत.	८५६
२०५ समकित सहित वार व्रत उचरवानी टीप.	८५९
२०६ पञ्चखण्णना आगारनी गाथा.	८६४



॥ नै नै श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥

अथ श्री पंच प्रतिक्रमण सूत्र.

(वात्तावबोध-अर्थ सहित.)

॥ श्री ॥

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ नृ नृ
अ आ ऌ ऍ उ ऊ ऋ ॠ नृ नृ

ए ऐ औ न ओ औ अं अः
ऐ औ औ ओ औ औ अं अः

॥ क ख ग घ ङ ॥ च छ ज ङ

॥ ङ ञ ग घ ङ ॥ य छ ज ङ

ज ॥ ट ठ ड ढ ण ॥ त थ

ज ॥ ट ठ ड ढ ण ॥ त थ

द ध न ॥ प फ ब भ म

द ध न ॥ प फ ब भ म

॥ य र ल व ॥ श ष स ह

॥ य र ल व ॥ श ष स ह

हं हं हं ॥ १ ॥

हं हं हं ॥ १ ॥

(१)

क	ख	ग	घ	ङ	॥	च	छ
क	७७	७७	७७	७७	॥	२२	२७
ज	झ	झ	झ	झ	६	६	६
७७	७७	७७	७७	७७	६	६	६
झ ॥	त	थ	ड	ड	६	न	प
७७ ॥	त	२७	२७	६	६	न	७७
फ	ब	भ	म	॥	य	ल	व
६६	७७	७७	७७	॥	२७	६	७७

श ॥ ष स द ड इ ॥
 २२ ॥ ७७ २२ ६६ २२ ॥

अ आ इ ई न क ए ऐ न औ अं अः
 क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः
 ख खा खि खी खु खू खे खै खो खौ खं खः
 ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ गं गः
 घ घा घि घी घु घू घे घै घो घौ घं घः
 ङ ङा ङि ङी ङु ङू ङे ङै ङो ङौ ङं ङः
 च चा चि ची चु चू चे चै चो चौ चं चः

(३)

ब	ग	गि	गी	बु	बू	बे	बै	गो	गौ	वं	वः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
ऊ	जा	ऊि	ऊी	ऊु	ऊू	ऊे	ऊै	ऊो	ऊौ	ऊं	ऊः
अ	आ	अि	अी	अु	अू	अे	अै	अो	अौ	अं	अः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः
ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः

(४)

फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः
र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ञ	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ०

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ०

(५)

उदाहरणो.

गुण, कमल, नल, पवन, पाप, जीव, अजीव, पुण्य, दास, अपकाय, तेजकाय, त्रसकाय, पृथ्वी, बलचर, खेचर, औश्वर्य, औदार्य, स्तुति, इच्छामि, स्वमासमणो, वदिउं, मन्त्रेण, इत्यादि.

नवकारना ठुटा शब्दोना अर्थ.

नमो-नमस्कार थाओ.
अरिहंताणं-अरिहंतोने-नुं.
सिद्धाणं-सिद्धोने-नुं.
आयरियाणं-आचार्योने-नुं.
उवज्जायाणं-उपाध्यायोने-नुं.
लोए-लोकने विषे.
सव्व-सर्व.
साहूणं-साधुओने-नुं.
एसो-आ-ए

पंच-पांच
नमुक्कारो-नमस्कार
पाव-पाप.
प्पणासणो-नाश करनार
मंगलाणं-मंगलिकोनुं-(मां.)
सव्वेसि-सर्वनुं
पढमं-पहेलुं
हवइ-छे-थाय छे.
मंगलं-मंगल.

१ ॥ नवकार मंत्र. ॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो

(६)

आयस्त्रिआणं, नमो उवद्यायाणं, नमो
लोए सव साहूणं, एसो पंच नमुक्कारो,
सव पाव प्पणासणो, मंगलाणं च
सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥

अर्थः—हवे प्रथम सर्व मंगलनुं मूल, श्री जिनशा
सननो सार, अगिआर अंग अने वार उपांग तथा चौ
द पूर्वनो उद्धार, हमेशां शाश्वत एवा श्री पंच परमे
ष्ठिने नमस्कार रुप महामंत्र श्री नवकार ठे. तेनो प्रा-
रंज करीए ठीए. तेमां पहेलुं श्री अरिहंत पदनुं वर्णन
करीए ठीए. नमो अरिहंताणं के० अरि के० रागादिक
वेरी प्रते हंताणं के० हणनार एवा, वार गुणे करी स
हित चोत्रीस अतिशयवंत समवसरणने विषे विरा
जमान एवा विहरमान तीर्थंकर जे श्री वीतराग अ
रिहंत देव ते प्रत्ये, नमो के० नमस्कार आनु.

अर्हीआं नमः ए पद ड्य तथा ज्ञाव संकोचने
अर्थे ठे माटे एवमे हाथ, पग, अने माथा वने करी.
सुप्रणिधानरुप नमस्कार आनु. एटले कर, मस्तक
अने विशुद्ध मननो नियोग ते ज्ञाव संकोच जाणवो,

(૭)

એટલે હવે અને જાવથી નમસ્કાર થાનુ એવો નમસ્કાર
કોને થાનુ ? તો કે અરિહંતાદિક પંચ પરમેષ્ઠિને અ
હીંઆં પ્રથમ નમો અરિહંતાણં એ પદના ત્રણ જૂદા જૂ
દા પાઠ છે તેનાં નામ. ૧ નમો અરહંતાણં ૨ નમો અ
રિહંતાણં એવે ૩ જો નમો અરુહંતાણં.

પહેલા (નમો અરહંતાણં કેળ) નમોઽર્હન્નયઃ જે
પૂજાને યોગ્ય છે તેને અર્હંત કહિયે, અર્થાત્ દેવોએ રચે
લા એવા અશોક વૃક્ષ આદિ આઠ મહા પ્રાતિહાર્યરૂપ
પૂજાને જે યોગ્ય છે તેને અરહંત કહિયે તે વિષે આવો
પાઠ છે.—અરહંતિ વંદણ નમં, સણાઝ અરહંતિ પૂઅસ
કારં ॥ સિદ્ધિમણં ચ અરહા, અરહંતાતેણ બુઝંતિ ॥૧॥
અર્થઃ—જેનું વંદણ નમસ્કારાદિને યોગ્ય છે, જેમને પૂજા
સત્કાર કરવાં ઘટે છે અને જેનું સિદ્ધિગતિ પામવાને
યોગ્ય છે તે માટે તેમને અરહંત કહે છે.

અથવા અરહંત એટલે જેમ વાદલાં સૂર્યમંડલને
ઢાંકે છે તેમ કર્મરૂપ રજ આત્માના જ્ઞાનાદિક અનંત
ગુણોને ઢાંકી દે છે એવાં ચાર ધાતિકર્મરૂપ રજને હણ
વાથકી અરહંત કહિયે. તથા રહસ્યાજ્ઞાવાત્ અરહંત એટલે
કેવલજ્ઞાન અને કેવલદર્શનવરને કરીને રહસ્યનો અજ્ઞાવ

(८)

ठे एटले जेनाथी कंइ ठानुं नथी माटे अरहंत कहियें.

अथवा (अ के०) नथी (रह के०) एकांत प्रदेश अने (अंत के०) मध्यभाग पर्वत गुफा विगेरेनो जेने एटले समस्त वस्तु समूहना प्रबन्नपणाना अज्ञावे करी अरहंत कहिये अर्थात् कंइपण वस्तु तेमनाथी ठानी नथी सर्व वस्तुने तेनु जाणे ठे तेवा जगवंतोंने नमस्कार थानु.

अथवा (अ के०) नथी (रह के०) रथ विगेरे वधो परिग्रह अने (अंत के०) विनाशना करना एवा जरा विगेरे जेमने एवा अरहंत तेमने नमस्कार थानु.

अथवा अरहयन्त्रयः एटले प्रकृष्ट रागादि हेतुचूत एवा मनोइ अने अमनोइ विषयो तेना संपर्कथकी पण जे पोतानो स्वस्वज्ञाव ठारुता नथी ते माटे अरहंत कहिये.

हवे (नमोअरिहंताणं के०) नमो रिहद्ज्यः नमो के० नमस्कार थानु. (अरि के०) आठ कर्मरूप शत्रुलेने (हंताणं के०) हणनारा एवा श्रीअरिहंतदेव प्रत्ये नमस्कार थानु. ते श्रीअरिहंत जगवानने महागोप महामाहण,

(૯)

નિર્યામક અને સાર્થવાહ એ ચાર નપમા અપાય છે તે સાર્થકજ છે તે આ રીતે:—મહાગોપ:—જેમ ગોવાલ ગાયોને ચરાવવાને વનવગમામાં લઈ જાય છે તેમ અરિહંત જગવાન જીવોને નિર્વાણ રૂપ વન પ્રત્યે પોહોચામે છે માટે મહાગોપ કહીએ. વલી મહા માહણ એટલે અરિહંતજી પ્રાણ, જૂત, સત્વ અને જીવ એ ચાર પ્રકારના જીવોને માહણ માહણ એટલે મારો નહીં મારો નહીં એવો શબ્દ કહે, માટે મહા માહણ કહીએ. વલી એ અરિહંત જગવાનના આશ્રય થંકી સંસાર સમુદ્ધનો પાર પમાય છે માટે નિર્યામક કહીએ. વલી જેમ કોઈ સાર્થવાહની મદદથી ઇચ્છિત નગરે જવાય છે તેમ શ્રી અરિહંતની સહાયથી મોક્ષરૂપ નગરીએ પોહોંચાય છે માટે તેમને સાર્થવાહની નપમા અપાય છે. એ રીતે ચારે નપમા અપાય છે. એ ચારે નપમા સાર્થક છે અને તે શ્રી અરિહંતને જ ઠાજે છે.

વલી રાગ દ્વેષ, પરિસહ અને નપસર્ગને નમાવનાર પાંચ ઇન્દ્રિયોના ત્રેવીશ વિષય, ચાર કષાય, બાવીશ પરિસહ તથા શરીરમાં સ્વજ્ઞાવે કરીને નુત્પન્ન થયેલી અને બીજાએ કરેલી એવી બે પ્રકારની વેદના અને અનુ

लोम उपसर्ग (ते स्त्रीआदिक कामनी प्रार्थना करते) अने प्रतिलोम उपसर्ग (ते देव मनुष्य तिर्येच वीगेरे थी तामना तर्जना थाय ते) इत्यादिक शत्रुजने हण नार माटे अरिहंत कहीए ते अरिहंतने नमस्कार आ नु. एवा अरिहंतने मन वचन अने कायानी एकाग्र ताए ज्ञाव सहित नमस्कार करतां थकां जीव ज्ञवना सहस्रोथी मुकाय तथा बोधिना लाजने पामे. ए बी जा पाठनो अर्थ थयो.

हवे त्रीजो पाठ (नमो अरुहंताणं के०) नमो अरुह ज्ञयः एनो अर्थ कहे ठे:—कर्मरूप बीज नाश थवा थकी जे मने संसारमां फरी (अ के०) नथी (रुहंत के०) उपजवुं तेमने अरुहंत कहीए एटले जेमने एके ज्ञव करवो नथी. कह्युं ठे के:—दग्धे बीजे यथाऽत्यंतं, प्रादुर्भवति नांकुरः ॥ कर्मबीजे तथा दग्धे, न रोहति ज्ञवांकुरः ॥१॥ अर्थ:—जेम अत्यंतपणे बली गएला बीजने वाव वाथी अंकुरो फुटतो नथी तेम कर्मरूप बी बली ज वाथी ज्ञवरूप अंकुरो उगतो नथी. एटले नवा ज्ञव क रवा पमता नथी; माटे अरुहंत कहीए. एवा अरुहंत ज्ञगवानने नमस्कार आनु ए त्रीजा पाठनो अर्थ थयो.

अहींआ कोइ कहे के उपर वर्णवेला लक्षणवा
ला अरिहंत जगवानने शा माटे नमस्कार करवो जो
इए ? तेने उत्तर कहे ठे जे आ संसाररूप महा जयंक
र अटवीमां भ्रमण करवाने बीहीता एवा जीवोने अ
नुपम आनंद आपनार जे मोक्षपुरी तेनो मार्ग बताव
वाथी परम उपकारी ठे ते माटे तेमने नमस्कार कर
वो योग्यज ठे. अहींआं 'नमो अरिहंताणं' ए सात
अक्षरनुं पहेलुं पद अयुं. वली ते पद पहेली संपदा अ
इ. संपदा एटले ज्यां अर्थ समाप्तिनो अधिकार होय अ
थवा ज्यां विसामो लेइए तेने संपदा कहीअं. ए अरि
हंत पदने श्वेत वर्णे ध्याइए. ए प्रथम अरिहंत पदनुं
जावमंगल वर्णव्युं ॥

हवे बीजुं सिद्धपदनुं मंगल वर्णवे ठे (नमो
सिद्धाणं के०) नमः सिद्ध्यः अहींआं सित के०
चिरकालनो बांधेलो एवो आठ कर्मरूप लाकमानो
ज्जारो, तेने ज्वाजळ्यमान शुक्लध्यानरूप अग्निवमे जेणे
ध्मातं के० धम्यो ठे, बाळ्यो ठे, जस्म कीधो ठे तेने
निरुक्ते सिद्ध कहिए. एवा सर्व सिद्धने नमो के० नम
स्कार होजो. अथवा बिधु धातु, गत्यर्थवाची ठे एथी

अपुनरावृत्तिये एटले पाबुं न अवाय एवी रीते मोह
प्रत्ये गया ते सिद्ध कहेवाय, अथवा शिक्षा करनार शा
स्त्रकथक अया तेथी सिद्ध कहेवाय, अथवा शासनने
प्रवर्त्तावनार अइने सिद्धरूप मांगळ्यपणाप्रत्ये अनुभव्युं
ते सिद्ध कहियें. अथवा नित्ये नहीं बदलाय तेवी अनंत
त स्थितिने पामवाथी सिद्ध कहिये अथवा जेमनाथी
जन्म जीवोने गुणोनो समूह प्राप्त आय ठे माटे सिद्ध
कहिये. ए विषे उपर कहेला ज्ञावार्थवालो आ श्लोक
लख्यो ठे. तद्यथा ॥ ध्मातं सितं येन पुराणकर्म, यो
वा गतो निर्वृत्तिसौधमूर्ध्नि ॥ ख्यातोऽनुशास्ता परिनि
ष्ठितार्थो, यः सोऽस्तु सिद्धः कृतमंगलो मे ॥ १ ॥

ए सिद्ध परमात्माने अनंत चतुष्क एटले ज्ञान
दर्शन चारित्र तथा वीर्य ए गुण प्रगट अया ठे ते गु
णोए करी सहित होवाथी जन्म जीवोने अतिआनंद
उत्पन्न करे ठे तेथी अत्यंत उपकारी ठे माटे श्री सिद्ध
जगवान् नमस्कार करवा योग्यज ठे. एमनुं राता वणें
ध्यान करीयें. आ पंचपरमेष्टि मंगलनुं वीजुं मंगल
जाणवुं. ए नवकारनुं वीजुं पद तथा वीजी संपदा अइ.
हवे आचार्य पदनुं त्रीजुं मंगल कहे ठे. (नमो

આચરિયાણં કેળ) નમ આચાર્યેન્યઃ આ એટલે મર્યાદાણ
કરી, એટલે વિનયે કરી ચર્યતે કેળ સેવાય છે અર્થાત્
જિનશાસનના અર્થના ઉપદેશક છે અને તેથી તે ઉપ
દેશ સાંજ્ઞલવાની ઇચ્છા કરનારા જીવો જેમને સેવે છે
તેમને આચાર્ય કહિયેં તેવા આચાર્યને નમો કેળ નમ
સ્કાર થાનું. કહ્યું છે કે “સુત્તહવિક્ક લક્કણ, જુત્તો મ
હસ્સ મેઠિજૂનં અ ॥ મણતત્તિ વિપ્પમુક્કો, અત્તં વાણ
આચરિનું ॥ ૧ ॥

અથવા આ એટલે મર્યાદાણ કરી ચાર એટલે વિ
હાર તે આચાર કહિયેં તે પાંચ પ્રકારના છે. તેનાં ના
મઃ—જ્ઞાનાચાર દર્શનાચાર ચારિત્રાચાર તપાચાર અને
વીર્યાચાર એ પાંચ પ્રકારના આચાર પાલવામાં પોતે ચ
તુર છે, તથા વીજાને તે આચાર પાલવાનો ઉપદેશ કરે
છે તેથી તથા વીજા સાધુ પ્રમુખને તે આચાર દેખાશે
છે તેથી આચાર્ય કહિયેં. કહ્યું છે કે, “પંચવિહં આચારં,
આચરમાણા તદ્દા પયાસંતા ॥ આચારં દંસંતા, આચરિ
યા તેણ વુચ્ચંતિ ॥ ૧ ॥

અથવા આચારમાં યુક્તાયુક્તનો વિજ્ઞાન કરવામાં
અનિપુણ શિષ્યને જ્ઞાતા યથાર્થ શાસ્ત્રાર્થ ઉપદેશક છે

તેથી આચાર્ય કહેવાય.

એવા આચાર્ય જન્ય પ્રાણીનું આચારનો ઉપદેશ કરે છે તેથી પરોપકારી છે અને ઠત્રીશ ઠત્રીશી ગુણ કરીને વિરાજમાન યુગપ્રધાન, જન્ય જીવોને ઉપદેશ આપી પ્રતિબોધી કોઈને સર્વ વિરતિ, કોઈને દેશ વિરતિ અને કોઈને સમકીર્તી કરે છે, તથા કોઈક ઉપદેશ સાંજલીને જનક પરિણામી આપે છે, એવા ઉપકારના કરનાર શાંતમુદ્રના ધણી ક્ષણ માત્ર પણ કષ્ટ પામવાલા ન હોય; વલી આચાર્ય જગવાનું નિત્યે પ્રમાદ રહિત એકા અપ્રમત્ત ધર્મના ઉપદેશક છે; વલી રાજકથા, દેશ કથા, જનક કથા અને સ્ત્રી કથા સમ્યક્ત્વ ઢિલણીયાની અને ચારિત્ર ઢિલણીયાની કથા એવી ઠ વિ કથા કરતા નથી. વલી શિષ્યાદિકને સારણા, વારણા, ચોયણા અને પન્નિચોયણાદિકે કરી પ્રવચનનો અન્યાસ કરાવનાર છે અને સાધુજનને ક્રિયા ધરાવતા એકા છે. વલી જેમ સૂર્ય અસ્ત થયાથકી ઘરમાં ઘટ પટાદિક દેખાતાં નથી, પણ જ્યારે દીવો કરીએ ત્યારે સર્વ પદાર્થ દેખાય છે તેમ અહિયાં કેવલજ્ઞાન જ્ઞાસ્કર શ્રીતીર્થંકર દેવ મુક્તિયે પધાર્યા પઠી સકલ જૂવનના પદાર્થને પ્ર

ગટ કરવાને દીપક સમાન એવા આચાર્ય જગવાન છે
 એવા આચાર્ય જગવાનને નમસ્કાર કરવો યોગ્ય છે. એ
 શ્રી આચાર્ય જગવાનને સુવર્ણવર્ણે ધ્યાયીએ. એ પંચ પ
 રમેષ્ટિ મંગલમાં ત્રીજું મંગલ અને નવકારનું ત્રીજું પદ
 તથા ત્રીજી સંપદા થઈ.

(નમો જીવદ્યાયાણં કેળ) નમ ઉપાધ્યાયેજ્યઃ
 જુપ કેળ પાસે આવ્યા એવા જે સાધુ પ્રમુખ તેમને અ
 ધ્યાય કેળ સિદ્ધાન્તનું અધ્યયન કરાવે તથા ઉપાધ્યાય
 તે કેળ જેમની પાસે આવી જણાય તેમને ઉપાધ્યાય
 કહિયેં તે પ્રતે નમઃ કેળ નમસ્કાર થાનું.

અથવા જેમના પાસે ઘણીવાર જવાય અથવા સૂ
 ત્રનું સ્મરણ કરાય તે માટે ઉપાધ્યાય કહિયેં. તે વિષે
 કહ્યું છે કે, “વારસંગો જિણસ્કાન, સદ્યાન કહિનુ બુ
 હેહિં ॥ તે જીવજસંતિ જમ્હા, જીવદ્યાયા તેણ બુચ્ચંતિ
 ॥ ૧ ॥ અર્થઃ—શ્રી જિનેશ્વર જગવાને અર્થશ્રી જ્ઞાણ્યાં
 એવાં વાર અંગ તેનો સ્વાધ્યાય પંક્તિ પુરુષોએ કહ્યો
 તેનો ઉપદેશ કરે છે તે માટે તેમને ઉપાધ્યાય કહિયેં.

વલી જ અક્ષર તે ઉપયોગને અર્થે છે, અને વ એ
 પાપનું સમસ્ત પ્રકારે વર્જવું તેને અર્થે છે, અને દ્યા તે

ध्यान करवाने अर्थे ठे अने उ अक्षर ते कर्मथकी प
ठा हठवाने अर्थे ठे. ए रीते चार अक्षर मलवाशी
वच्चानु एटले उपाध्याय एवो शब्द आय. ए उपाध्य
य जगवान पचीस गुणे करी विराजमान ठे अने छ
दशांगीना धारक ठे तथा ते द्वादशांगी सूत्रशी साध
उने जणावे ठे एशी ए महा उपकारी ठे अने आच
र्यजी जगवान शासनना राजा ठे तेम श्री उपाध्याय
जी युवराज ठे एवा उपाध्यायजी जगवानने नमस्का
र करवो योग्यज ठे. ए श्री उपाध्यायजी जगवानने
नीलवर्णे ध्यान करीए. ए पंचपरमेष्ठी मंगलमां चोष्ट
मंगल थयुं अने नवकार मंत्रनुं चोष्टुं पद, अने चोर्थी
संपदा अइ.

(नमो लोए सब सादूणं के०) नमः लोके सर्व
साधुज्यः आ लोकमां सर्व साधु जगवानने नमस्कार
थान. जे ज्ञानादिके करी मोक्षने साधे, अथवा सर्व
प्राणीमात्र उपर समपणुं राखे, शत्रु अने मित्र समा
न गणे तेने साधु कहिये. बली साधु जगवान मोक्ष
मार्गने साधवामां सहाय करनार होवाशी उपकारी ठे
तेमने मारो नमस्कार थान.

जेम जमरो एक फूलपरशी सुगंधी लेइ बीजा फूलपर जाय पण फूलमांधी कंइ डलुं अतुं नथी, तथा ते तेने कंइ पीसा करतो नथी तेम मुनि पण एक घेरथी बेतालीस दोष रहित आहार लेइ बीजे ठेकाणे जाय पण गृहस्थने कंइ पीसा उत्पन्न करे नहि; पंच इंद्रिय ना विषयने जीते, १०००० शीलांग रथने धारण करे, तथा मुनीश्वरोने जयणा सहित वंदीने पोतानो जन्म पवित्र करे. वली नव प्रकारे ब्रह्मचर्यनी गुप्ति धारण करे एवा साधुलेने नमस्कार करवो योग्यज ठे.

पांचे इंद्रिना विषयने जीते, ने पांचे इंद्रिले वडा राखे, पृथ्वीकाय, अपकाय, तेजकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, अने त्रसकाय, ए ठ कायना जीवनी रक्षा सर्व प्रकारे पोते करे, अने बीजा पासो पोते करावे, सत्तर जेदे संजम पाले, बीजा पासो पलावे, सर्व जीवपर करुणाजाव राखे, वली नव प्रकारे ब्रह्मचर्य नी गुप्ति धारण करवामां, तथा बार जेदे तपस्या करवामां शुरा, जेमने वंदन पूजननी वांछा (इच्छा) नथी, एना मुनीनां दरशन तो पुरो पुण्यनो लक्ष्य होय तो वांछीए. ए पांचलुं अंगल अरु तथा नवकारलुं पां

चमुं पद अने पांचमी संपदा अइ.

आ पंचपरमेष्टि नमस्कारना अनुक्रम विषे आम
कह्युं ठे:—

पुद्गाणुपुष्टि न कसो, नेवय पन्नाणु पुष्टि एस न
वे ॥ सिद्धाईआ पढमा, बीआए साहुणो आई ॥ १ ॥
अरहंता नवएसेलां, सिद्धाणं जंति तेण अरिहाइ ॥ ए
वि कोइ परिसाए, पणमिता पणमइ रत्नोत्ति ॥ २ ॥

अर्थ:—आ पंच परमेष्टि नमस्कारमां पेहेला श्री
अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधु ए री
नमस्कार कस्यो ठे ए रीते नमस्कार पुर्वानुपूर्वी क
थी नथी, केसके आ सौमां सिद्ध मुख्य ठे, माटे
छने नमस्कार पहेलो करवो जोइए. तेसज आ बी
पश्चानुपूर्वी क्रमथी पण नमस्कार नथी, केसके ते
पहेलो साधुने नमस्कार करवो जोइए, आ ४ संका
समाधान ए ठे के अरिहंतनेज प्रथम नमस्कार
योग्य ठे केसके श्री अरिहंत जगवानना उपदेश
ज सिद्धने जाणीए ठीए अने वली अरिहंते तीर्थ
तीर्थी उपदेश आव्यो तेथी जीवो चारित्र आदरी क
रहित अइ सिद्ध अया तेथी अरिहंतनेज प्रथम न

(૧૯)

ર કરવો યોગ્ય છે, બલી કોઈ પરિદાને નમસ્કાર કરી રાજાને નમસ્કાર કરતું નથી પણ રાજાનેજ પ્રથમ નમસ્કાર કરે છે તેમ અરિહંત જગવાન પણ રાજા સમાન છે, તેથી તેમને પ્રથમ નમસ્કાર કરવો યોગ્ય છે.

(એસો પંચ નમુક્કારો કેળ) એષ પંચ નમસ્કારઃ એટલે એ પાંચનો નમસ્કાર એ નવકારનું ઠટું પદ અને ઠઠી સંપદા થઈ.

(સદ્વપાવપ્પણાસણો કેળ) સર્વ પાપ પ્રણાશનઃ એટલે સર્વ પાપને નાશ કરનારો છે એ સાતમું પદ અને સાતમી સંપદા થઈ.

(મંગલાણં ચ સવ્વેસિં કેળ) મંગલાનાં ચ સર્વેષાં એટલે સર્વ મંગલોને વિષે, એ આઠમું પદ થયું.

(પઠમં હવઈ મંગલં કેળ) પ્રથમં જાવતિ મંગલં એટલે પેહેલું મંગલીક છે, એટલે એ મુખ્ય યા નુત્કષ્ટ મંગલ છે. મંગલ બે કારનાં છે. ડબ્બ મંગલ તે દહીં, અક્ષત, દૂર્વા, ચંદન, કનક, કલશ વગેરે લૌકિક મંગલ આ લોકમાં અલ્પ સુખ સાધક છે, પણ જાવ મંગલ જે પંચપરમેષ્ટી નમસ્કાર રૂપ જે લોકોત્તર મંગલ, તે આ લોકમાં સુખ તથા પરલોકમાં પરંપરાય મોક્ષ પ્રા

ત્રિ રૂપ નૃત્કૃષ્ટ સુખ આપનાર છે તેથી અવશ્ય કરવા યોગ્ય છે. એ નવમું પદ યયું અને આઠમા તથા નવમા પદની એક આઠમી સંપદા થઈ. આ નવકાર મંત્રના એકસઠ લઘુ તથા સાત ગુરુ અક્ષર મલી અદસઠ અક્ષર થયા.

હવે મહામંત્ર શ્રી નવકાર મંત્રમાં પંચ પરમેષ્ઠીને નમસ્કાર કરીને તે પંચપરમેષ્ઠીના ૧૦૮ગુણ વર્ણાણે છે.

શ્રીઅરિહંતના ગુણ ૧૨

૧ અશોકવૃક્ષ:—જ્યાં જગવાન સમોસરે ત્યાં જગવાનના દેહમાનથી બાર ગુણો. બુંચો અશોકવૃક્ષ એટલે આસોપાલવનું ખારુ દેવતા રહે તે નીચે બેસીને જગવાન દેશના દે.

૨ સુરપુષ્પવૃષ્ટિ:—જગવાનના એક જોજન પ્રમાણ સમોસરણની પૃથ્વી ઉપર જલ અને યલમાં નિપજેલાં સુગંધીદાર પંચવર્ણી સંચિત ફુલની વૃષ્ટિ ઢીંચણ પ્રમાણ દેવતા કરે.

૩ દિવ્યધ્વનિ:—દેવતાહ જગવાનની વાણીનો માલવકોશરાગ વીણા વાંસલી આદિકના સ્વરદમે પૂરે

૪ ચામરમ્:—દેવોરત્ને જડીત સોનાની ઢાંકીવાળા

धोला चार जोमी चामरो समोसरण मध्ये जगवंतने वीजे ठे.

५ आसनं=सिंहासनः—जगवंतने वेसवा सारु रत्ने जमीत सुवर्णमय सिंहासन देवतांनु रचे ठे.

६ जामंरुलंः—(जा के० तेजनुं, मंरुलं के० मांरु लुं) जगवानना मस्तकनी पूंठे शरद तुना सूर्यना किरण जेवुं आकरा तेजवालुं जामंरुल एटले कांति नुं मंरुल देवता रचे. ते न होय तो जगवानना मां सा सुं जोवाय नहीं.

७ डुंडुजिः—देवतांनु आकाशमां देवडुंडुजि वि गेरे कोरोगमे वार्जीत्रो वगामे ठे तेथी जाणे ते एम कहेता न होय के जो जव्यो ! प्रमादने ठांमीने मुक्तिपू रीना सार्थवाह समान आ जगवानने सेवो.

८ ठत्रः—जगवानना मस्तक उपर उपरा उपरी शरदपूनमना चंड जेवां त्रण धोलां ठत्रो मोतीनी मा लाए विराजमान एवां देवतांनु धरे—समोसरणनी नि आए वार ठत्र धरे ते जाणे एम जणावतां न होय के त्रण जुवनना परमेश्वर एवा जगवानने सेवो. ए रीते आठ प्रातिहार्यना आठ गुण अया, तद्यथा॥अशोकवृक्षः

सुरपुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनिश्रवणमासनं च ॥ ज्ञानमूलं
 डुंडुनिरातपत्रं, सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥१॥

हवे जगवानना चार मूल अतिशय रूप चार
 गुणो ठे ते आ प्रमाणे:-

ए अपायापगमातिशय:- (अपाय के० उपज्व
 अने अपगम के० नाश=उपज्वनो नाश) ते बे प्रकारे
 ठे; १ स्वसंबंधि अने २ परसंबंधि. १ स्वसंबंधि अपाया
 पगमातिशय बे प्रकारे ठे. इव्य अने ज्ञाव. इव्यथकी
 जगवानने सर्व रोगनो नाश अयो ठे अने ज्ञाव थकी
 जगवान अठारदोष रहित अया ठे ते अठार दोषनां ना
 म:- १ अज्ञान २ क्रोध, ३ मद, ४ मान, ५ माया,
 ६ लोभ, ७ रति, ८ अरति, ९ निडा, १० शोक, ११
 जुहुं, १२ चोरी, १३ मत्सर, १४ जय, १५ जीव
 हिंसा, १६ राग, १७ क्रीडा प्रसंग, १८ हास्य ए अ
 ठार दोष रहित जगवान ठे ते विषे आ बे गाथांनु लखी
 ठे ॥ अन्नाण कोह मय माण, माया लोहो रई अरई अ ॥
 निहा सोय अलियवयण, चोरिआ मन्हर जया य ॥१॥
 पाणिवह पेम कीला, पसंग हासाय जस्स ए दोसा,
 अठारस विपणठा, नमामि देवाहिदेवं तं ॥ २ ॥ व

(२३)

की पाठांतरे अठार दोष कहेवे. १ दानांतराय, २ लाज्जांतराय, ३ वीर्यांतराय, ४ ज्ञोगांतराय, ५ उपज्ञोगांतराय, ६ हास्य, ७ रति, ८ अरति, ९ ज्ञय, १० शोक, ११ जुगुप्सा एटले निंदा, १२ काम, १३ मिथ्यात्व, १४ अज्ञान, १५ निंदा, १६ अविरति, १७ राग, १८ द्वेष, ९ दोष रहित वीतराग जगवान ठे. ए स्वाश्रयी जगवान नो अपायापगमातिशय थयो. हवे पर संबंधि अपायापगमातिशय कहेवे. ज्यां जगवान विहार करे त्यां चारे दिशाए सवासो जोजनमां प्राये करी सात इतिना उपडव जेवा के अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बंदर, शुक अने तीरुना उपडव, मरकी, स्वचक्र एटले पोताना राजाना सैन्यनो ज्ञय अने परचक्र एटले पारकाना सैन्यनो ज्ञय; रोग तथा वैर विगेरे होय नहीं. ए परसंबंधि 'अपायापगमातिशय' जाणवो.

१० ज्ञानातिशयः—जगवान केवलज्ञान केवल दर्शने करी सर्व लोकालोकना ज्ञाव जाणे देखेवे, एमना थि कांड ठानुं नथी.

११—पूजातिशयः—जगवानने बलदेव, वासुदेव, चक्रवर्ती तथा चारुनिकायना देवता ते जगवनपति, व्यं

तर, ज्योतषी अने वैमानिक देवता तथा तेमना इंडो वगेरे जगत्रयवासी नव्य जीवो तेमनी सेवा करे ठे ते त्रीजो पूजातिशयनामा अग्यारमो गुण थयो.

१२ वचनातिशयः—जगवंतनी वाणी संस्कारादि क गुणे सहित होवार्थी देव, मनुष्य अने तिर्यंच पोत पोतानी ज्ञापामां समजे ठे ते विषे एक जिह्मनुं उष्टां त कहेठे. कोइ एक जिह्म पोतानी त्रण स्त्रीसाथे एक दिवस वनमां जतो हतो ते बखते पहेली स्त्रीए कहुं मने हरण हणी आंणी आपो; बीजीए कहुं मने तर स लागी ठे तेथी पाणी लावी आपो; त्रीजीए कहुं मने कांइ सारुं गीत संजलावो. आ त्रणेना उत्तर ते जिह्मे एक जवाबथी बाढ्या के 'सरो नहि,' एथी पहेली समजी के तीर नथी ते हरणने मारीने झीरीते लावी आपे; बीजी समजी के सरोवर नथी ते पाणी केम लावी आपे; त्रीजी समजी के तेमनो राग नथी ते सारुं गीत केम करी संजलावे. एम एक जवाबथी त्रणे स्त्री जे समजी गइ तेम जगवाननी वाणी सर्वे कोइ पोत पोतानी ज्ञापामां समजी जाय, ए तेमनो चोओ अति शय अने वारमो गुण थयो.

सिद्ध जगवानना आठ गुण.

१ ज्ञानगुणः—ज्ञानावरणीय कर्म हय जवाथी केवलज्ञाने करी सिद्ध जगवान लोका लोकना स्वरूपने समस्त प्रकारे जाणे ठे.

२ दर्शनगुणः—दर्शनावरणीय कर्म हय जवाथी केवलदर्शन प्राप्त थयुं ठे तेशी सिद्ध जगवान लोका लोकना ज्ञाव समस्त प्रकारे देखी रह्या ठे.

३ अव्याबाध सुखः—वेदनीय कर्म हय जवाथी अव्याबाध (सर्व प्रकारनी पीडा रहित) अनंत सुख सिद्ध जगवानने प्राप्त थयुं ठे. ते सुख, बलदेव, वासुदेव, चक्रवर्ती, चार निकायना देवो, ए सरवेनां सुख ए कठां करीए तेशी अनंतगुणुं ठे. जेभ सुंगो माणस गोल खाय अने तेनो स्वाद जाणे पण कही शके न हीं तेम ते सिद्धनां सुख केवलज्ञानी जगवान जाणे ठे पण कही शके नहीं, केमके वचनातीत ठे.

४ हायक समकीतः—मोहनीय कर्म हय जवाथी हायक सम्यक्त्व प्राप्त थयुं ठे, ते सिद्धने विषे यथावस्थितपणे होय ठे.

५ अक्षय स्थितिः—आयु कर्मना हय जवाथी

सिद्धना जीवोने सादि अनंत स्थिति ठे. एटले सिद्ध गतिमां गयानी आदि ठे, पण अंत नथी.

६ अरुपीगुणः—नाभ कर्म कय जवा थकी सिद्ध ना जीव, वर्ण, गंध, रस, तथा फरस रहित ठे, तेथी अरुपी ठे.

७ अगुरुलघुः—गोत्र कर्म कय जवा थकी, अगुरु लघु (नहीं हलवो तथा नहीं जारे एवो तथा नहीं नीच कुलना तथा नहीं उंच कुलना एवों) गुण प्राप्त थयो ठे.

८ वीर्य गुणः—अंतराय कर्म कय जवा थकी, सिद्ध जगवान अनंतदान, लाज, जोग, उपजोग वीर्यमय होय. तेमनुं स्वजाविक आत्मानुं वीर्य एवं अयुं ठे के लोकनुं अलोक करे अने अलोकनुं लोक करे परंतु एवं वीर्य कदी फोरव्युं नथी, फोरवता नथी, अने फोर वशे नहीं. ए रीते सिद्धना आठ गुण थया.

आचार्यना त्रवीस गुण.

१—५ फरसइंदि १ रसइंदि २ घ्राणइंदि ३ चक्षु इंदि ४ श्रोतइंदि ५ ए पांचे इंडीना त्रवीस विषयोमां जे मनगमता होय तेना उपर राग नहीं अने अणगम

ता होय तेना उपर छेब नहीं ते माटे पांच इंडियोना
विषयने रोकनार कहेवाय.

६ स्त्री पशु अने नपुंसक थकी रहित एवा स्था
नकमां रहे.

७ स्त्रीनी साथे सरागपणे कथा वारता करे नहीं.

८ स्त्री बेठी होय ते आसने पुरुष बे घनी सुधी
बेसे नहीं ने पुरुष बेठी होय ते आसने स्त्री त्रण पढो
र सुधी बेसे नहीं.

९ स्त्रीनां अंगोपांग सरागपणे निरखे नहीं.

१० ज्यां स्त्री पुरुष सूतां होय, तथा काम क्रीडा
विषे वातो करतां होय त्यां जीतना आंतरे रहे नहीं.

११ पूर्वे पोते स्त्री साथे जोगवेलां सुखने सं
जारे नहीं.

१२ सरस स्निग्ध आहार करे नहीं केमके तेम
करवाथी विकार जागे.

१३ नीरस एवो पण अधिक आहार ले नहीं.

१४ शरीरनी शोभा न करे.

ए उपर कहेली नव ब्रह्मचर्यनी गुप्ति पाले.

१५ क्रोध न करे.

होय तेपर राग धरे.

१५ दर्शनाचारः—ते पोते समकीत पाले, पलावे अने समकीतथी पमता जीवने हेतु युक्तिवने स्थिर करे.

१६ चारित्राचारः—ते पोते शुद्ध चारित्र पाले, पलावे अने पालताने अनुमोदे.

१७ तपाचारः—ठ बाह्य अने ठ अन्त्यंतर ए रीते बार जेदे तप पोते करे, करावे अने करताने अनुमोदे.

१८ वीर्याचारः—धर्मानुष्ठान जेवां के पम्कमणु, प मिलेहण, देववंदन वीगेरे करवासां बलवीर्य गोपवे नहीं, अने उपर कहेला पंचाचार पालवासां वीर्यशक्ति फोरवे.

१९ इर्यासमितिः—बधी दीशाए नपयोग राखतो धोंसरा प्रमाणे दृष्टिए जोतो चाले.

२० ज्ञायासमितिः—सर्वथा सावध्य (पाप सहित) वचन बोले नहीं तथा नधाने मुखे बोले नहीं पण मुखे मुहपती राखी बोले अने क्रोधादिके करी रहित वचन बोले.

२१ एवणासमितिः—आधाकर्मादिक बेंतालीश दोष रहित आहार ले तथा मांसखाना पांच दोष टाले.

२२ आदान जंरुमत्त निक्षेपणासमितिः—जंरुप

ગરણ માત્રું વગેરે દષ્ટીએ જોઈ પૂંજીને લે મૂકે.

૩૩ પારિષ્ઠાપનિકા સમિતિ:—લઘુનીતિ (પેશાવ), વસીનીતિ (ઝાહો) વગેરે દૃષ્ટિએ જોઈ પૂંજીને ‘અણુ જાણહ જહસ ગો’ એમ કહી પરઠવે અને પરઠવ્યા પૂંઠે ત્રણ વાર વોસિરે કહે.

૩૪ મનોગુપ્તિ (મનો=મનની, ગુપ્તિ=દેશથી થઅ વા સર્વથી યોગની નિવૃત્તિ) તે ત્રણ પ્રકારે છે.—અસ ત્કલ્પના વિયોગિની, સમતા જ્ઞાવિની અને આત્મારામતા. ૧ અસત્કલ્પના વિયોગિની મનોગુપ્તિ એટલે માઠા વિચાર જેવા કે શત્રુહને મારવા, રોગાદિકની ચિંતા કરવી વિગેરે આર્ત ધ્યાન રૌડ ધ્યાનના પરિણામથી મનને પાહું બાલવાની વચ્ચે થાય છે, જેમ પ્રસન્નચંડ રાજાંને થયું તે. ૨ સમતાજ્ઞાવિની મનોગુપ્તિ તે સિદ્ધાંતને અનુસારે ધર્મ ધ્યાનને અનુયાયી જ્ઞાવનાએ કરી સહિત પરલોક સાધક એવી સમતા પરિણામરૂપ હોય તે. એ ગુપ્તિ શુદ્ધ જ્ઞાવના તથા શુદ્ધ ધ્યાનના સન્મુખ જીવ થયો હોય ત્યારે હોય. ૩ આત્મારામતા મનોગુપ્તિ—શૈલેશીકરણ કાલે સકલ મનોયોગની નિવૃત્તિ થાય છે તે.

(३२)

३५ वचन गुप्तिः—एनावे जेद ठे? मौनावलंविनी वचन गुप्ति=सर्व प्रकारे मौन धारण करी रहेवुं. हों-कारो, खोंखारो, कांकरो फेंकवो, संझा करवी. विगे ठांनवाथी पूजा तथा ध्याननी वखते होय ते. २ वा-धियमिनी वचन गुप्ति=ज्ञान ज्ञावुं ज्ञणावुं ते संब-धि पूठवुं, प्रश्नो उत्तर देवो, धर्मोपदेश देवो इत्यादि काम करतां शास्त्रानुसारि मुखे मुहपत्ती राखी यतना पूर्वक सावध्य वचन न बोलवुं ते.

उपाध्यायजी जगवानना २५ गुण.

११ अंग तथा १२ उपांग सम्यग् रीते ज्ञाने ज्ञा-वे. १ चरण सित्तिरी, २ करण सित्तिरी शुद्धरीते पा-ले पलावे. ए गुणो जुदा जुदा नामवार कहेवे.

अंगीयार अंग.

१ आचारांग, २ सूयनांग ३ ठाणांग, ४ समवा-यांग, ५ जगवती ६ ज्ञातासूत्र, ७ ज्ञापकाक दशांग. ८ अंतगन, ९ अदुनरोववाइ १० ज्ञानव्याकरण ११ वि-पाक सूत्र.

बार उपांग.

१ उववाइ, २ रायपसेणी, ३ जीवान्निगम, ४ पन्नवणा, ५ जंबुद्वीप पन्नत्ति, ६ चंद पन्नत्ति, ७ सूर्य पन्नत्ति, ८ कप्पिया, ९ कप्पवरुंसिया, १० पुप्फीया, ११ पुप्फचुलिया, १२ वन्हिदशांग. ए तेवीस गुण थया. २४ १चरणसित्तरी पाले. २५ २करणसित्तरी पाले.

१ चरणसित्तरीना सित्तेर भेद छे; तद्यथा:—वय समणधम्म संजम, वेयावच्चं च वंभगुत्तिओ ॥ नाणाइतियं तव कोह, निग्गहाइइ चरणमेयं ॥ १ ॥

अर्थ—वय के० ५ महाव्रत, समणधम्म के० १० प्रकारे श्रमण धर्म, संजम के० १७ प्रकारे संजम, वेयावच्चं के० १० प्रकारे वेयावच्च, वंभगुत्तिओ के० ९ प्रकारे ब्रह्मचर्यनी गुप्ति, नाणाइतियं के० ज्ञानादिक त्रिक, तव के० १२ प्रकारे तप, कोहनिग्गहाइं के० क्रोधादि ४ कपायनो निग्रह तेना छुटाछुटा ७० भेद वतावे छे.

१ प्राणातिपात विरमण, २ मृपावाद विरमण, ३ अदत्तादान विरमण, ४ मैथुन विरमण ५ परिग्रह विरमण ६ क्षमा ७ मार्दव (कोमलपणुं), ८ आर्जव (सरलपणुं), ९ मुत्ति (लोभत्याग) १० तव (तप) ११ संयम (आश्रवनो त्याग) १२ सत्य (जुठनो त्याग) १३ शौच (पवित्रता), १४ आर्किच्चन (द्रव्यरहितपणुं), १५ ब्रह्मचर्य (मैथुनत्याग), १६ पृथ्वीकाय जीवनी हिंसा न करवी, १७ अपकाय जीवनी हिंसा न करवी, १८ अग्निकाय जीवनी हिंसा न करवी, १९ वाउकाय जीवनी हिंसा न करवी, २० वनस्पतिकाय जीवनी हिंसा न करवी, २१ वेइंद्रि जीवनी हिंसा न करवी, २२ तेइंद्रि जीवनी हिंसा न करवी, २३ चउरिंद्रि जीवनी हिंसा न करवी, २४ पंचइंद्रि जीवनी हिंसा न करवी, २५ अजीव संयम

साधु जगवानना २७ गुणो.

१ प्राणातिपात विरमण, २ मृषावाद विरमण,

(सोना प्रमुख निषेध करेली अजीव वस्तुनो त्याग) २६ प्रेक्षासंयम (जयणापूर्वक वर्त्तवुं) २७ उपेक्षासंयम (आरंभ तथा उत्सृज्य प्ररूपणा न करे ते) २८ प्रमार्जन संयम (सर्व वस्तु पूंजीने वापरवीं ते) २९ परिष्ठापना संयम (जयणापूर्वक परठववुं ते) ३० मनः संयम (धर्मवृत्तिमां मन राखवुं ते) ३१ वचन संयम (सावद्य वचन न बोलवुं ते) ३२ काया संयम (उपयोगथी काम करवुं ते) ३३ अरिहंतनो वैयावच्च, ३४ सिद्धनो, ३५ जिनप्रतिमानो ३६ श्रुत सिद्धांतनो ३७ आचार्यनो ३८ उपाध्यायनो ३९ साधुनो ४० चारित्रधर्मनो ४१ संघनो ४२ समकित दर्शननो वैयावच्च, (पाठांतरे नीचे लखेला दश पण गणाय छे. १ आचार्य २ उपाध्याय ३ तपस्वी ४ शिष्य ५ ग्लान साधु ६ स्थविर ७ समनोज्ञ (सरखा समाचारीवाला) ८ चतुर्विध संघ ९ कुल, चंद्रादि १० गोत्र. ए दशनोविनय) ४३ स्त्री पशु ने नपुंसक ज्यां रहेतां होय ते जग्यानो त्याग, ४४ सरागे स्त्री साथे कथा वार्त्ता न करवी ४५ स्त्रीना आसने वे घडी सुधी बेसवुं नहीं, ४६ सरागे स्त्रीनां अंगोपांग जोवां नहीं, ४७ स्त्री पुरुष ज्यां क्रीडा करतां होय त्यां भीत प्रमुखना अंतरे रहेवुं नहीं, ४८ भोगव्यां सुख न संभारवां ४९ सरस अहार न करवो, ५० अति मात्राये अहार न करवो, ५१ शरीरनी शोभा न करवी. ५२ ज्ञान, ५३ दर्शन, ५४ चारित्र, ५५ अणसण, ५६ उणोदरी, ५७ वृत्तिसंक्षेप (अनेक प्रकारना अभिग्रह करवा ते), ५८ रसत्याग, ५९ कायक्लेश ६० संलीनता (इंद्रियोने वश राखवी ते) ६१ प्रायश्चित्त, ६२ विनय, ६३ वैयावच्च, ६४ स्वाध्याय (सज्ज्ञाध्याय न करवुं), ६५ धर्मकथा, ६६ काउसग्ग, ६७ क्रोधत्याग, ६८ मांनत्याग, ६९ मायात्याग, ७० लोभत्याग.

२ करणसित्तरीना सित्तेर भेद छे तद्यथा:—पिंडविसोही स

૩ અદત્તાદાન વિરમણ, ૪ મૈથુન વિરમણ, ૫ પરિગ્રહ

મિદ્, ભાવણ પડિમાય ઇન્દિયનિરોહો ॥ પડિલેહણ ગુત્તિઓ, અભિગ્ના હં ચેવ કરણં તુ ॥ ૧ ॥ ૪ પિંડવિશુદ્ધિ, ૫ સમિતિ, ૧૨ ભાવના, ૧૨ પડિમા, ૫ ઇન્દ્રિયોનો નિરોધ, ૨૫ પ્રતિલેખના, ૩ ગુપ્તિ, ૪ અભિગ્રહ એ સર્વ મળી સ્થિતેર થયા તે નામવાર કહે છે.

૧ આહાર. ૨ ઉપાશ્રય. ૩ વસ્ત્ર. ૪ પાત્ર. ૫ ચાર વેતાલીસ દોષ રહિત લે. ૬ ઇર્યા સમિતિ. ૬ માપાસમિતિ. ૭ ઘણાસમિતિ. ૮ આદાનમંડમત્ત નિલેખણા સમિતિ. ૯ પારિષ્ઠાપનિકા સમિતિ. ૧૦ અનિત્ય ભાવના. ૧૧ અશરણ ભાવના. ૧૨ સંસાર ભાવના. ૧૩ એકત્વ ભાવના. ૧૪ અન્યત્વ ભાવના ૧૫ અશુચિ ભાવના. ૧૬ આશ્રવ ભાવના. ૧૭ સંવર ભાવના. ૧૮ નિર્જરા ભાવના. ૧૯ લોકસ્વ ભાવ ભાવના. ૨૦ વૌધિદુર્લભ ભાવના. ૨૧ ધર્મના કથક અરિહંત છે તે ભાવના ૨૨ એક માસની પ્રતિમા. ૨૩ બે માસની પ્રતિમા. ૨૪ ત્રણ માસની પ્રતિમા. ૨૫ ચાર માસની પ્રતિમા. ૨૬ પાંચ માસની પ્રતિમા. ૨૭ છ માસની પ્રતિમા. ૨૮ સાત માસની પ્રતિમા. ૨૯ સાત દિન રાતની. ૩૦ સાત દિન રાતની. ૩૧ સાત દિન રાતની. ૩૨ એક દીન રાતની. ૩૩ એક રાતની. ૩૪ ફરસ ઇન્દ્રિનિરોધ. ૩૫ રસઇન્દ્રિ નિરોધ. ૩૬ વ્રાણ ઇન્દ્રિનિરોધ. ૩૭ ચક્ષુ ઇન્દ્રિનિરોધ. ૩૮ શ્રોત ઇન્દ્રિ નિરોધ. હવે પચીસ પડિલેહણા કહે છે. ૩૯ મુહપત્તિ. ૪૦ ચોલપટ્ટ. ૪૧ ઝનનું કલ્પ. ૪૨-૪૩ સુતરનાં બે કલ્પ. ૪૪ રજોહરણનું અંદરનું સુતરનું નિષિદ્ધ. ૪૫ વહારનું પગ લુછવાનું નિષિદ્ધ. ૪૬ ઓઘો. ૪૭ સંધારો. ૪૮ ઉત્તરપટ્ટો. ૪૯ ઢાંડો. ૫૦ થી ૪૯ સુધી ની અગિયાર ટીજોની પડિલેહણા પ્રભાતમાં સુર્ય ઉદય પેહેલાં કરા ય છે વાકીની ચૌદ ઉપગરણની પડિલેહણા. ટીજે પહોરને અંતે કરવામાં આવે છે તે કહે છે. ૫૦ મુહપત્તિ. ૫૧ ચોલપટ્ટ. ૫૨ ગોઠ્ઠક. ૫૩ પાત્ર. ૫૪ પાત્રવંધ. ૫૫ પડલાઓ. ૫૬ રજાસાણ. ૫૭ પાત્ર સ્થાપન. ૫૮ માત્રક. ૫૯ પતદગ્રાહ. ૬૦ રજોહરણ. ૬૧ ઝનનું કલ્પ. ૬૨-૬૩ સુતરનાં બે કલ્પ એ પચિસ પડિલેહણા છે તેની

विरमण, ६ रात्रि जोजन विरमण, ७ पृथ्वीकाय रक्षा,
 ८ अपकाय रक्षा, ९ तेजकाय रक्षा, १० वायुकाय रक्षा,
 ११ वनस्पतिकाय रक्षा, १२ त्रसकाय रक्षा, १३ फरस
 इंदि निग्रह (वश करवी), १४ रस इंदि निग्रह, १५ घ्राण
 इंदि निग्रह, १६ चक्षु इंदि निग्रह, १७ श्रोत इंदि निग्रह,
 १८ लोह निग्रह, १९ कृमा, २० ज्ञाव विशुद्ध ते चित्तनी
 निर्मलता, २१ वस्त्र विगेरे पमिलेहेवामां विशुद्धि, २२
 संजम जोग (५ समिति अने ३ गुप्तिने आदरवां अने
 विकथा, अविवेक, निद्रा प्रमुख ठामवां), २३ माठे ठा
 मे जतां मनने रोकवुं, २४ माठे ठामे वचन प्रवर्ततुं
 होय तेने रोकवुं, २५ माठे ठामे काया प्रवर्तती होय तेने
 रोकवी, २६ शीतादिपरिसह सहैवा, २७ मरण उपसर्ग
 सहन करवो ए सखे मली पंच परमेष्टिना १०८ गुणश्रया.

गाथा १ मूल॥मुहपोति चोलपट्टो, कप्पतिगंदोनिसिज्ज रयहरणं ॥ सं
 थारुत्तरपट्टो, दसपेहा उग्गएसुरे ॥ गा. १ ली ॥ अन्ने भणंति एका
 रसमो दंड उत्ति, ॥ गाथा २ जी मूल ॥ उवगरण चउदसंगं, पडि
 लेहिज्जइ दिणस्स पहरतिगे ॥ उग्गाडपोरिसीए उपत्तनिज्जोग पडि
 लेहा. गा. २ जी ॥ विस्तार प्रवचन सारोद्धारथी जोइ लेवो. ६४ म
 नगुप्ति. ६५ वचनगुप्ति. ६६ कायगुप्ति॥अभिग्रह. ६७ द्रव्यथी अभि
 ग्रह. ६८ क्षेत्रथी अभिग्रह. ६९ कालथी अभिग्रह. ७० भावथी अ
 भिग्रह ए चार प्रकारे अभिग्रह पट्टले प्रतिष्ठा एम सर्व मली सि
 त्तर भेद करण सित्तेरीना थया.

નવકારનો મહિમા.

નવકારના એક અક્ષરવડે સાત સાગરોપમનાં પાપનો, એક પદવડે પચાસ સાગરોપમના પાપનો, અને આ છો નવકાર જ્ઞાવાથી પાંચસે સાગરોપમનાં પાપનો નાશ થાય છે. વળી જે માણસ એક લાખ નવકાર ગણે અને જિનેશ્વર જગવાનની વિધિ સહિત પૂજા કરે તે પુરુષ તીર્થંકર નામ ગોત્ર બાંધે એમાં કાંઈ સંદેહ નથી. જો કોઈ માણસ ૮૦૦૦૦૮૦૦૮ આઠ ક્રોડ આઠ હજાર આઠસે આઠ નવકાર જ્ઞાતિ સહિત ગણે તો તે શાશ્વત સ્થાનકને (મોક્ષ) પામે. એ નવકારને જ્ઞાવ સહિત ગુરુએ આપેલી આમ્નાય સાથે વિધિ સહિત જપતાં આ લોકમાં અને પરલોકમાં વાંઝિત ફલની સિદ્ધિ થાય. આ લોકે દેવતા સાનિધ્ય કરે જેમ શ્રીમતીને દેવતાયે સાનિધ્ય કીધું તેની કથા.

આ ઝરતક્ષેત્રમાં પોતનપુર નગરમાં સુગુપ્ત નામે એક શ્રાવક રહેતો હતો તેની શ્રીમતી નામે પુત્રી હતી. તે ધર્મવંત તથા રૂપવંત હતી. તેને દેહીને, એક મિષ્ટ્યા ત્વી શેઠનો પુત્ર વ્યામોહ પામ્યો, અને તેને પરણવાની ઇચ્છા થઈ. તેથી પોતાને ઘેર જઈ, પોતાના બાપ પાસે

તે કન્યાનું માગું કરાવ્યું. પણ તે સુગુપ્ત (કન્યાનો બાપ) મિથ્યાત્વીને કન્યા આપે નહીં. પઠી તે મિથ્યાત્વી કપ ટે શ્રાવક અહ શ્રીમતીને પરણી પોતાને ઘેર લેઈ ગયો. તેને ઘેર સૌ કુટુંબ મિથ્યાત્વી છે. ત્યાં શ્રીમતી સર્વ ધરનાં કામ કરે. પણ કોઈ રીતે પોતે મિથ્યાત્વમાં પ્રવર્તે નહીં, જૈન ધર્મ પાલે, અને શંકા કેંલાદિ અતિચાર રહિત શુદ્ધ સમક્ષિત પાલે તે દેખી સાસુ નણંદ વારે ધમી એ રવીજે. પણ શ્રીમતી ધર્મ ન મૂકે, અને પોતાના કર્મને દોષ દે, અને આત્માને નિંદે; પણ ધર્મ ચુકે નહીં. કુટુંબનો પ્રેમ શ્રીમતી ઉપર નહીં હોવાથી તેનો ઝરતાર ઉદ્દેગ ધરે અને તેને મારીને બીજી પરણવાની ઇચ્છા કરે. એક દિવસ તેના ઝરતારે એક મોટા વિકરાલ સરપને ધમ્માં ઘાલી તેને ઢાંકી સૂવાના ઝરમાં એક ઠેકાણે મૂક્યો, અને સૂવાની વચ્ચે પથારી ઉપર બેઠેલા પોતાના સ્વામીએ શ્રીમતીને હુકમ કર્યો કે, પેલો ધમ્મો ઝધામ્મી ફુલની માલા લાવ. આ સાંજલી મહા વિનીત શ્રીમતી તરત ત્યાં જઈ નવકાર જપતાં ઢાંકણું ઝધામ્મી ધમ્માં હાથ ઘાલ્યો. નવકારના પ્રજાવે તુષ્ટમાન થઈ શાસન દેવીએ સરપ ફેલીને ફુલની

માલા કીધી. તે ફુલની માલા શ્રીમતીએ લેઈ ઝરતા રને આપી. તે દેખી તેનો ઝરતાર ચમત્કાર પામ્યો. જે આ શું થયું ? ઝરતારે ત્યાં જઈ ઘમો જોયો, જુએ તો ઘ મા માંહે સાપ નહીં અને ઘમો ફુલથી મહમહે છે. તે દેખીને જાણ્યું કે એને દેવતાયે સહાય કરેલી છે, અને મેં તેના ઉપર માતું ચિંતવ્યું છે. એનો ધર્મ રુનો છે. એમ વિચારી પોતાના સ્વજન કુંડુંબને સર્વ વૃતાંત કહ્યો. તે સાંજલી સર્વ કુંડુંબે શ્રીમતી આગલ પોતાનો અપરાધ સ્વમાવ્યો, અને તેની પ્રશંસા કરી તેના ગુણ ઉપર અનુરાગ ધરે. એક દિવસ અવસર પામી શ્રીમતીએ ઝર તારને જૈન ધર્મ સમજાવ્યો. પુન્ય ઉદયથી શુદ્ધ સમ કિત સહિત બાર વ્રત ધારી શ્રાવક થયો યાવત્ જીવ ધર્મ પાલી સુક્તિ પહોંચ્યો.

હવે સાધુ, સાધ્વી અને શ્રાવક શ્રાવિકાને સમ-કિતની શુદ્ધિને અર્થે ત્રિકાલ દેવ વંદન કરવું કહ્યું છે અને સાંજે તથા સવારે એ બે વખતે ઠ આવશ્યક રૂપ પ્રતિક્રમણ કરવું કહ્યું છે તેથી સર્વે દોષ દૂર ટલી જાય છે અને આત્માને ઉપકાર આવે છે. તે ઠ આવશ્યકનાં નામ :—સામાયક, ચતુવિસત્તો, વંદણ, પરિક્રમણ, કા-

હસગ્ગ અને પચ્ચસ્કાણ. એ ઠ આવશ્યકરૂપ પ્રતિક્રમણ કરવાથી આત્મા નિર્મલ થાય છે. જેમ જાંગુલિ મંત્રના પ્રજ્ઞાવથી સર્પનું વિષ હતરી જાય છે તેમ આવશ્યકનું આરાધન કરવાથી પાપ દૂર જતું રહે છે. વલી જેમ મ જુર પોતાને માથે મુકેલો જાર મુકામ આવેથી માથે થી જતારે છે ત્યારે તરત હલવો થાય છે અને સુખી થાય છે તેમ પન્નિક્કમણામાં અતિચાર આલોચતાં મનુષ્ય ના આશ્વા જન્મના દોષ જતા રહે છે અને હલુકર્મી થાય છે. એ ઠ આવશ્યકરૂપ પન્નિક્કમણું, ગુરુની સમક્ષ કરવું જોઈયે અને ગુરુજીના અજ્ઞાવે સ્થાપનાચાર્ય માંની કરવું જોઈયે; જો સ્થાપનાચાર્ય ન હોય તો નવકારવાલી અથવા પુસ્તકની સ્થાપના કરવી પડે છે તે સ્થાપનાનો પાઠ લખીએ ઠીએ.

પંચિંદિયના બુટા શબ્દના અર્થ.

પંચિંદિય-પાંચ ઇન્દ્રિયો.

ગુતિ - ગુપ્તિ.

સંવરણો-રોકનાર, વશકરનાર.

ધરો - ધારણ કરનાર.

તહ=તથા, તેમજ.

ચર - ચાર.

નવ - નવ.

કસાય - કષાય.

વિહ = વિધ, પ્રકાર.

મુક્કો = મુક્ત, મુક્તાણા.

બંમચેર - બ્રહ્મચર્ય, શીલવ્રત.

ફઅ = એ.

अठारस = अठार.

गुणेहिं = गुणोए.

संजुत्तो = सहित.

पंच = पांच.

महव्वय = महाव्रत.

जुत्तो = युक्त, सहित.

आयार = आचार.

पालण = पालवाने.

समत्थो = समर्थ, शक्तिवान.

समिओ = समितिवालो.

ति — त्रण.

गुत्तो — गुप्तिवालो.

छत्तीस — छत्रीश.

गुणो — गुणवालो, गुण.

गुरु = गुरु.

मज्झ = मारा.

१ ॥ पंचिंदिय ॥

॥ पंचिंदिय संवरणो, तह नव विह वं
 न्नेचर गुत्तिधरो ॥ चउविह कसाय मुक्को, इअ
 अठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच महव्वय
 जुत्तो, पंचविहायार पालण समत्थो, पंच समि
 उ तिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरु मच्च ॥ २ ॥

अर्थः—पंचिंदिय संवरणो के० पांच इंद्रियोने वश राख

नार एटले पांच इंद्रियोना त्रेवीश* विषय अने व
सैं बावन* विकारने रोकनार.

तहनवविह बंजचेर गुत्तिधरोः—तथा नव प्रकार
नी ब्रह्मचर्यनी गुप्तिने धारण करनार एटले शि
यलव्रतनी नव वामोने पालनार.

* ५ इंद्रियोनां नाम तथा अर्थ.	विषय २३.	विकारो २५२.
१ फरस इंद्रि=चामडी	१ हलवो, २ भारे, ३ लुखो, ४ चोपडो, ५ खडबचडो, ६ सु वालो, ७ टाढो, ८ उन्हो.	८ विषयने सचित, अचित अने मिश्र ए त्रणे गुणतां २४ थाय. ते सारा अने नरसा ए वेए गुण तां ४८, ते राग अने द्वेष ए वेए गुणतां ९६ थाय.
२ रस इंद्रि=जीभ	१ मोठो, २ खाटो, ३ खारो, ४ कडवो, ५ कपायलो, ६ तीखो.	६ रस, सारा अने नरसा मली १२, सचित, अचित, मिश्र अने ते रागद्वेषे गुणतां ७२ थाय.
३ घ्राण इंद्रि=नाक	१ सुरभिगंध=सु गंधीदार अने २ दु रभिगंध=दुरगंध वालो.	वे गंधने सचित, अचित अने मिश्र गुणतां ६ थाय, तेने राग अने द्वेष ए वेवडे गुणतां १२ थाय.
४ चक्षु इंद्रि=आंख	१ सफेद, २ कालो, ३ लीलो, ४ पीलो, ५ रातो.	ए पांच रंगने शुभ अने अशुभ ए वेए गुणतां १० थाय, तेने सचित, अचित अने मिश्र गु णतां ३० थाय. तेने राग अने द्वेष ए वेए गुणतां ६० विकार थाय.
५ श्रोत इंद्रि=कान	१ सचित, २ अचि त अने ३ मिश्रशब्द.	ए त्रण विषयने शुभ अने अशु भे गुणतां ६ थाय अने राग, द्वेषे गुणतां १२ थाय.
५ इंद्रियो.	२३ विषयो	२५२ विकारो.

चउ विह कसाय मुक्को के० क्रोध, मान, माया
अने लोअ ए चार प्रकारना कषायथी मुंकाणा
ठे एवा.

इअ अठारस गुणोहिं संजुतोः के० ए अठार
गुणे करी सहित. ॥ १ ॥

पंचमहव्य जुतो के० पांच महाव्रते करीने सहित.
पंचविहायार पालण समर्थो के० पांच प्रकारना
आचार पालवाने समर्थ.

पंचसमिअ तिगुतो के० पांच समिति अने त्रण
गुतिवाला.

बत्तीसगुणो गुरु मज्झ के० ए बत्तीस गुणे करीने
सहित मारा गुरु ठे ए बत्तीस गुणोनो विस्तार
पा. २६ थी ३२ सुधीमांथी जोइ लेवो. ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणना बुटा शब्दना अर्थ.

इच्छामि = हुं इच्छुं छुं.

निसीहिआए = शरीरवडे.

खमासमणो = क्षमावंत साधु.

मथ्थएण = मस्तकवडे.

वांदिअं = वांदवाने.

वंदामि = वांदुं छुं.

जावणिज्जाए = शक्ति सहित.

॥ ૩ ॥ ઇચ્છામિ સ્વમાસમણો વંદિતું જાવ
ણિજ્ઞાણે નિસીહિત્રાણે મચ્છયણે વંદામિ ॥

અર્થ:—હે ક્રમાદિ ગુણે કરી સહિત એવા શ્રમણ
(સાધુજી), તમને જાવણિજ્ઞાણે કેળ શક્તિ સહિત એવા
નિસીહિત્રાણે કેળ પ્રાણાતિપાતાદિક નિષેધ થયાં છે જે
માંથી એવા નૈષેધિક્યા કેળ શરીરવચ્ચે વંદિતું કેળ વાંદ
વાને ઇચ્છામિ કેળ ઇચ્છું બું.

ઉત્તા થકા હાથ જોમી જરા નીચા નમી ઉપર લ
ખ્યા પ્રમાણે કહી બે સંમાસા પમિલેહી, બે જાનુ (ઠીં
ચણ) બે હાથ, ને લલાટ (કપાલ) એ પંચાંગે કરી
જૂમિફરસતો મચ્છયણ કેળ મસ્તકે કરીને વંદામિ કેળ
વાંડુ બું એમ કહે.

પઠી ઉત્તા થઈ બે પગની વચ્ચે આગલથી ચાર આં
ગલનું અને પાઠલથી ત્રણ આંગલ જાડું અને ચાર આં
ગલ માતું એવું અંતર રાખી એમ પગે જિનમુણ સાચવ
તો તથા બે હાથની આંગલીનું એક એકમાં આપી કમ
લના દોમના આકારે હાથ જોમી મુખ આગલ રાખી
હાથની કોહોણીનું પેટ ઉપર રાખી એવી યોગ મુણ

साचवतो इच्छाकरेण संदिसह जगवन् इरिया वहियं
पन्निक्कमामि इच्छं इच्छामि पन्निक्कमिञ्चं.

इरियावहियंना छुटा शब्दना अर्थ.

इच्छाकरेण = इच्छाशी.
संदिसह = आदेश आपो.
भगवन् = हे भगवंत.
इरियावहियं = रस्ते चालतां.
पन्निक्कमामि = पाछो वलुं छुं.
इच्छं = प्रमाण.
पन्निक्कमिञ्चं = छोडवाने.
इरियावहियाए = मार्गमां चाल
तां.
विराहणाए = विराधना थइ होय
गमणागमणे = जतां आवतां.
पाण = जीव.
क्कमणे = चांपवे.
वीय = बीज.
हरिय = लीली वनस्पति.
ओसा = ठार.
उत्तिग = किडीआरुं.
पणग = पांच वर्णनी सेवाल.
दग = पाणी.

मट्टी = माटी.
मक्कडा = करोलिआनां पड.
संताणा = जाल.
संकमणे = चांप्या.
जे = जे.
मे = में.
जीवा = जीव.
विराहिया - विराध्या.
एगिंदिया - एक इंद्रिवाला.
वेइंदिया - वे इंद्रिवाला.
तेइंदिया - त्रण इंद्रिवाला.
चउरिंदिया - चार इंद्रिवाला.
पंचिंदिया - पांच इंद्रिवाला.
अभिहया - साम्रा आवता हण्या.
वत्तिया = धुलवडे ढांक्या.
लेसिया - भोंय साथे घश्या.
संघाइया - शरीरे शरीर मेलव्यां.
संघट्टिआ = पीडा करी.
परियाविया - दुखी कर्या.

કિલામિયા - થકવ્યા.
 હદવિયા-ભય પમાડ્યા.
 ઠાણાઓ-એક ઠેકાણેથી.
 ઠાણં - બીજે ઠેકાણે.
 સંકામિયા-મુક્યા.

જીવિયાઓ - આવસાથી.
 વવરોવિયા - ચુકાવ્યા.
 તસ્ત - તે.
 મિચ્છામિ - મારે મિથ્યા.
 દુક્કડં - પાપ.

શ્ચાકારેણ સંદિસહ જગવન્ શરિયાવહિયં, પન્નિ
 ક્કમામિ, (ગુરુ કહે પન્નિક્કમહ,) (શિષ્ય કહે) શ્ચં,
 શ્ચામિ, પન્નિક્કમિનં. ॥ ૪ ॥ અથ શરિયાવહિયં.

શરિયા વહિયાણ, વિરાહણાણ, ગમણાગમ
 ણે, પાણક્રમણે, બીયક્રમણે, હરિયક્રમણે, નસા
 નત્તિંગ, પાણગ દગ, મટ્ટી મક્કમા સંતાણા સંક
 મણે, જે મે જીવા વિરાહિયા, ઇગિંદિયા, વેઇ
 દિયા, તેઇંદિયા, ચનરિંદિયા, પંચિંદિયા, અન્નિ
 હયા, વત્તિયા, લેસિયા, સંઘાડયા, સંઘટ્ટિયા, પ
 રિયાવિયા, કિલામિયા, હદવિયા, ઠાણાં,
 ઠાણં, સંકામિયા, જીવિયાં વવરોવિયા, ત
 સ્સ મિચ્છામિ દુક્કમં.

વિસ્તાર અર્થ:-ઇચ્છાકારેણ કેળ તમારી ઇચ્છાપૂર્વક પણ મારી દાક્ષિણતાએ કે બલાત્કારે નહીં. જગવન્ સંદિસહ કેળ હે જગવંત આદેશ આપો. ઇરિયાવહિયં કેળ ? ચાલવાનો માર્ગ, તથા ૨ સાધુ શ્રાવકનો સર્વવિરતિ દેશવિરતિ રૂપ માર્ગ, તેને વિષે જે પાપ લાગ્યું હોય તેથી પન્નિક્કમામિ કેળ નિવર્તું ? પાઠો વલું ? ત્યારે ગુરુ કહે પન્નિક્કમહ કેળ નિવર્તો. તેવારે શિષ્ય કહે. ઇહં કેળ એમજ, આપે આજ્ઞા આપી તેમજ. ઇહામિ પન્નિક્કમિનં કેળ હું પન્નિક્કમવાને ઇહું તું. ઇરિયાવહિયાએ કેળ ? ચાલવાના માર્ગમાં, તથા ૨ સાધુ શ્રાવકના આચારમાં, જે કોઈ જીવોની, વિરાહણાએ કેળ વિરાધના અર્થ હોય, ગમ્મણાગમણે કેળ જતાં આવતાં, પાણ કેળ વિગલેંદિ જીવોને, ક્કમણે કેળ પગે કરી ચાંપવાથી, વીયક્કમણે કેળ વીજ સુકાં લીલાં ચાંપવાથી, હરિયક્કમણે કેળ હરિત એટલે લીલી વનસ્પતિ ચાંપવાથી, એ બે પદે કરી સર્વ વનસ્પતિને જીવપણું કહ્યું.

* જીવોનાં લક્ષણ સર્વ વનસ્પતિમાં દોઠામાં આવે છે તે આ પ્રમાણે મનુષ્યના શરીરની પેઠે વનસ્પતિનું શરીર કોમલ, તરુણ, તથા વૃદ્ધતા પ્રમુખ સહિત દોઠામાં આવે છે. તથા જેમ હાથ તથા પગાદિક અવયવોએ કરી મનુષ્યનો દેહ વૃદ્ધિને પામે છે તેમ શાસ્ત્રાદિક અવયવોએ કરી વૃક્ષની વૃદ્ધિ થાય છે. તથા જેમ મનુષ્યાદિ

તથા તુસા કે^૦ સર્વ ત્રેહ તે ઠાર ઇથી સૂદમ ઓ

ક પ્રાણીઓમાં જાગ્રત તથા નિદ્રા અવસ્થા દીઠામાં આવે છે તેમ પુંઆડ તથા આમલી પ્રમુખ વૃક્ષ, ચંદ્રવિકાસિક તથા સૂર્યવિકાસિકાદિકં કમલ, અને અંબાડી પુષ્પાદિકમાં નિદ્રા તથા જાગ્રત્ અવસ્થા દીઠામાં આવેછે તથા લોભ, હર્ષ, લજ્જા, ભય, મૈથુન, ક્રોધ માન, માયા, આહાર, ઓઘસંજ્ઞા, इत्यादिक સર્વ વિકાર વૃક્ષોને પણ મનુષ્યની પેઠે થતા દીઠામાં આવે છે. જેમ કે, શ્વેત આકાંડાનું વૃક્ષ પલાશાદિક વૃક્ષ, ભૂમિગત નિધાનને પોતાના મૂલને જડેકરી વીંટી લિયે છે તે લોભનો ભાવ જાણવો; વર્ષાકાલને વિષે મેઘની ગર્જના સાંભળીને શીતલ વાયુના ફરસેકરી અંકુર ઉત્પન્ન થાય છે તે હર્ષનો ભાવ જાણવો. લજ્જાલૂ વેલ મનુષ્યના હાથ વિગેરે અંગના સ્પર્શથી સંકોચાઈ જાયછે; એ લજ્જા તથા ભયનો ભાવ કહેવાય; અશોકવૃક્ષ વકુલવૃક્ષ તથા તિલકવૃક્ષાદિક નવયૌવનસ્વરૂપ સાલંકાર કામિનીના પગની પાંખિના પ્રહારેકરી; મુખનું તાંબૂલછાંટવાથી; સસ્નેહાલિંગન વડે તથા હાવભાવ કટાક્ષેકરી તત્કાલ ફલતાં દીસે છે; એ મૈથુન સંજ્ઞા જાણવી. કોકનદવૃક્ષનો કંદ મનુષ્યનો પગ લાગ્યાથી હુંકારા મૂકેછે; એ ક્રોધનો ભાવ જાણવો. રુદતી વેલ, અહો હું છતાં આ લોકો દુઃખી કાં થાયછે ? એવા અહંકારેકરી નિરંતર અશ્વપાત કરે છે કેમ કે, તેનાથી સુવર્ણની સિદ્ધિ થાય છે; માટે એ માનનો ભાવ જાણવો. ઘણું કરીને વધી વેલીઓ પોતપોતાનાં ફલોને પાંદડાં ફેંકરી ઢાંકી લિયેછે એ માયાનો ભાવ જાણવો. તથા ભૂમિકા જલાદિક આહારના યોગે વૃક્ષોની વૃદ્ધિ થાયછે; અને તે વિના કુમલ્યાઈ જાયછે. મનુષ્યની પેઠે નાગરવેલિ પ્રમુખને નિલવટ ગોમય તથા દુગ્ધાદિકના ડોહલા ઉપજે છે તે પરિપૂર્ણ થયા પછી પત્ર, ફલ, ફૂલ, તથા રસની વૃદ્ધિ થાય છે; એ પણ આહારસંજ્ઞા જાણવી. વૃક્ષને પાંદૂ, ગાંવ, સોજો તથા દુર્બલપણું પ્રમુખ રોગેકરી ફૂલ, ફલ, પાન, ત્વચાને વિકાર દીસે છે. સર્વ વનસ્પતિનાં આડંબાં પોતપોતાનાં નિયંત્રણ હોય છે; ઇષ્ટ તથા અનિષ્ટઆહારની પ્રાપ્તિ કરી વૃક્ષો અપુષ્ટ

(૪૯)

एकायनं पण ग्रहण करवું. ए सूक्ष्म अपकायनी वि
 ॥ १ ॥ ना पापनું कारण ठે. તે કહે ઠે:-एगंमि उदग बिं
 ॥ २ ॥ જે जीवा जिणवरोहिं पन्नत्ता ॥ તે जइ सरिसव
 ॥ ३ ॥ जंबु दीवे न मायंति ॥ अर्थ:-एक पाणीना बिं
 ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
 ॥ ० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
 ॥ ० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
 ॥ ० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

(૪૯૯) મનું જુઝ્યા એવું નામ હોયઠે, તે
 ગ શબ્દે કરી, કીમીનના નામરાં

૧ માર્ગને મૂકીને વૃક્ષની ઉપરજ ચઢેછે;
 ૨ ઓઘ સંજ્ઞાનો ભાવ જાણવો શ્યાદિક યુક્તિ કરી શ્રી આચારાંગ
 ના પહેલા શ્રુતસ્કંધના પહેલા અધ્યયનમાં સવિસ્તર જીવપણું થાપ્યું છે.
 અહીં કોઈ પૂછે કે, જો વનસ્પતિ જીવરૂપ હોય તો છેદન તથા
 ભેદન પ્રમુખ કરતાં કેમ રોતાં નથી અથવા નાશી જતાં નથી ?
 ૩ ૫નો ઉત્તર ૫ છે કે, મનુષ્યની પેઠે વનસ્પતિને મુલ, પગ, તથા
 હાથ પ્રમુખ અવયવોનો અભાવ છે. અને સ્થાવર કર્મના ઉદયથી ના
 સવાને વનતું નથી. તોપણ તેઓને અવ્યક્ત વેદના હોયજ છે. જેમ
 કોઈ એક આંધલો, વેહેરો, લોહડો, ઠુંઠો, પાંગલો, અને વિપ્રમ વાશુ-
 ના વિકારે કરી થંભાણો થંકો સર્વ અંગોપાંગના બ્યાપાર રહિત એવા
 પુરુષ હોય તેને કોઈ તાડન પ્રમુખ કરે તો તેનાથી તે સહન થાય
 નહીં, પણ મુલાદિકના અસાધે રોઈ શકે નહીં, તથાપિ તેને વેદના તો
 થાયજ છે. તે માટે કોઈ મોટા અવશ્યના કારણ વિના વનસ્પતિની
 વિરાધના કરવી નહીં, અને સર્વે જીવોને સરસા જાણી યતના કરવી.

पण जाणवां. पणग के० पनक एटले पांच वर्णी नी लफूल जाणवी. दग के० पाणी. मट्टी के० माटी अथवा दगमट्टी के० पाणी अने माटीना जेगा अवाथी जे कीचरु आय ठे, ते पण जाणवो. मक्कना के० मर्कट एटले करोलिआ. तेनी संताणा के० जाल. संकमणे के० पगे करी चांप्यायकी जे कांइ विराधना अइ होय.

इच्छाकरेण संदिसह जगवन् त्यांथी ते इच्छांमि पक्कमिअं सुधी पेहेली अच्युपगम संपदा जाणवी. अच्युपगम संपदा एटले आलोयणा. लक्षण रूप कार्यनुं अंगीकार करवुं ते. अने इरिया वहियाए, विराहणाए ए बे पदनी (अंगीकार करेली वस्तुने उपजवानां कारण रूप) निमित्त संपदा जाणवी. तथागमणा गमणे ए पदनी (प्रायश्चित्त उपजाववा रूप) नुघ ते सामान्य हेतु संपदा जाणवी. अने पाणकमणे त्यांथी संताणा संकमणे सुधी चार पदनी चोथी इत्वर (विशेष) हेतु संपदा जाणवी. केसके पाणकमणे वीयकमणे एम दरेकनां नाम देइ देइने विशेषे कह्युं. ते माटे ए चार पदनी विशेष हेतु संपदा जाणवी. जे मे जीवा विराहिया के० जे कोइ जीवो में विराध्या होय, उख

માંહે પામ્યા હોય, એમાં જીવ વિરાધ્યા એમ સામાન્ય
 કહ્યું. પણ વિસ્તારે નામ દેઈ દેઈને ન કહ્યું માટે એ સ-
 ઘલા જીવના પરિતાપ રૂપ એક પદની પાંચમી સંગ્રહ
 સંપદા જાણવી. એગિંદિયા કેળ જેને શરીર રૂપ એકજ
 ઇંડિય હોય તે પૃથ્વી પાણી, અગ્નિ, વાયુ, અને વનસ્પ
 તિરૂપ પાંચ પ્રકારના સ્થાવર (થિર રહે એવા) જીવને એ
 કેંડિય કહીએ. હવે ત્રણ (એક ઠેકાણેથી બીજે ઠેકાણે જઈ
 શકે તેવા) જીવ કહેવે. બે ઇંડિયા કેળ જેને શરીર અને જી
 ન એ બે ઇંડિયો જ હોય. એવા કરમીયા, શંખ, ઢોપ, જલો,
 ગંમોલા, અલસીયા, પ્રમુખ જેને પગ ન હોય તેને બેંડિય
 જીવ કહીએ. તે ઇંડિયા કેળ જેને શરીર, મુખ તથા નાક
 એ ત્રણજ ઇંડિયો હોય એવા ગદહિયા, કુંચુઆ, જૂ,
 લીંચ, માંકણ, કીમી, મંકોમા વગેરે જેને આઠથી
 અધિકા પગ હોય અથવા જેને માં આગલ શીંગ હોય
 તેવા જીવને તે ઇંડિય જાણવા. ચત્તરિંદિયા કેળ જેને
 શરીર, મુખ, નાક, અને આંખ એ ચારજ ઇંડિય હોય.
 એવા કંસારી, કરોલીઆ વીંટી તથા માચ્છી, ફુદાં મ
 હર, માંસ, ચાંચરુ, જમરી, ટીરુ વગેરે જે જે ઝરુના
 જીવ હોય. જેને ઠ અથવા આઠ પગ હોય, તથા

मस्तके शींग होय, ते चार इंडिवाला जीव जाणवा. पंचिंदिया के० जेने शरीर, जीन, नाक, आंख अने कान ए पांच इंडिय होय तेने (मनुष्य देव पशु पंखी अने नारकीने) पंचिंदिय कहिए. ए पांच बोल मध्ये सर्व संसारी जीव आवी गया. एमां ऐकेंडि बेंडिय एम जीवनां नाम कहां तेशी ए पांच पदनी बढी जीव संपदा जाणवी. अजिहया के० सामा आवता पगे करी हएया. वक्तिया के० धूलवमे ढांक्या अथवा एक ढगले कर्या, लेसिया के० ज्ञोय घश्या तथा लगार म सड्या, संधाइआ के० शरीरे शरीर मेलव्यां संघट्टिआ के० ओमो हाथ अमाफी डुख दीधुं, परियाविया के० परिताप (डुख) उपजाव्यो अथवा पीट्या, किलामिया के० अकवीने मरण तोल कर्या, उद्विआ के० त्रास पमाफी हाली चाली शके नहीं एवा कीधा, गाणा जे गाणं के० एक स्थानकेथी बीजे स्थानके संकामिया के० मुक्या, जीवियानु ववरोविया के० आवखाथी चुकव्या (मार्या) तस्स के० ते संबंधी मिहामिडुक्रम के० जे कोइ पाप लाग्युं होय ते निष्फल थानु. ए अजिहयाथी तस्स मिहामिडुक्रम सुधी विराधनानां ना

म दीधां माटे ते विराधना नामे सातमी*संपदा थइ.

तस्स उत्तरीना तुटा शब्दना अर्थ.

उत्तरी = विशेषे शुद्ध
करणेणं = करवे, करवावडे
पायच्छित=आलोयणनुं तप
विसोही = वधारे शोधवुं
विसल्ली = शल्य रहित.

पावाणं = पापोनुं
कम्माणं = कर्मोनुं
निग्घायणट्ठाए = टाळवाने अर्थे
ठामि = रहंछुं
काउस्सगं = काउस्सगमां

हवे एनी विशेष शुद्धिने अर्थे काउस्सग करवा
वांढतो थको तस्स उत्तरी कहे ठे ॥

* आ सात संपदानां नामवार अक्षरोनी गणत्रीनो कोठो.

संख्या	संपदा	लघु	गुरु	सर्व अक्षर.
१	अभ्युपगम संपदा.	६	२	८
२	निमित्त सं०	१२	०	१२
३	ओघ सं०	६	०	६
४	विशेषहेतु सं०	३२	६	३८
५	संग्रह सं०	८	०	८
६	जीव सं०	२१	०	२१
७	विराधना सं०	५१	६	५७

१३६

१४

१५०

॥ અથ તસ્સુત્તરી ॥

તસ્સુત્તરી કરણેણં, પાયશ્ચિત્ત કર
ણેણં, વિસોહી કરણેણં, વિસદ્ધી કર
ણેણં, પાવાણં કમ્માણં, નિગ્ધાયણ
ઢાણ, ઠામિ કાનુસ્સગ્ગં

અર્થ:—તસ્સુત્તરી કરણેણં એટલે જે પાપ પાઠ
લ આલોચ્યાં પમિક્કમ્યાં તેને ઉત્તરી કરણેણં કે તેની
વિશેષ શુદ્ધિ કરવા સારુ કાનુસ્સગ્ગ કરું. હું; તે શુદ્ધિ
શાસ્ત્રી થાય તે કહે છે. પાયશ્ચિત્ત કરણેણં એટલે ગુરુ
પાસે પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યાથી ગુરુએ દીધો જે આલોચણાનો
તપ તે કરિયે તેને પ્રાયશ્ચિત્ત કહિયે અને કાનુસ્સગ્ગ
તે પણ અંતરંગ તપ છે તે માટે કાનુસ્સગ્ગને કરવે ક-
રીને આત્મા પાપરહિત થાય, તથા વિસોહી કરણેણં
એટલે વિશોધી કરવાથી એટલે પાપરૂપ મલને ટાલ-
વાથી; વિસદ્ધી કરણેણં એટલે માયા શબ્દ, નિયાણ
શબ્દ, અને મિથ્યાત્વ શબ્દ એ અંતરંગ ત્રણ શબ્દને
ટાલવા અર્થે (અથવા અર્થી રહિત થવા માટે કાનુસ્સ-
ગ્ગ કરું હું.) પાવાણં કમ્માણં એટલે સંસાર હેતુ જ્ઞાના

વરણી આદિક જે પાપ કર્મો છે તેને, નિગ્ધાયણઠા
 એ એટલે નિર્ધાતન અથવા ફેરવાને અર્થે, ઠામિ કાનુસ્સ
 ગ્ગ એટલે એક ઠામે રહી કાનુસ્સગ્ગ કરું. એ પન્નિક
 મણ સંપદા આઠમી થઈ. તસ્સ નત્તરી કરણેણં ઇત્યાદિ
 કર્મ પન્નિકમવાના શબ્દો કહ્યા તે માટે એ ઠ પદની
 સંપદા આઠમી છે એ સૂત્રોનો ગદ્ય પાઠ છે, ગાથાબંધ
 નથી. એમાં સંપદા આઠ, પદ બત્રીશ, ગુરુ ચોવીશ
 લઘુ એકશો ને પંચોતેર, સર્વ મલી એક શો નવાણું
 અકારો છે.

એ ઇરિયાવહિ મન સુદે પન્નિકમતાં અઠાર લા
 ચ ચોવીશ હજાર એક સો ને વીશ *મિઘામિડુક્કમં
 દેવાય છે.

* ત્યાં પ્રથમ પાંચસે જ્ઞેશઠ સ્થાનકે જીવ ઉપજે છે તે ભેદોનું
 વિવરણ કરે છે:-પૃથ્વીકાય, અપકાય, તેડકાય તથા વાડકાય. એ
 ચાર સૂક્ષ્મ તથા વાદર મલી આઠ ભેદ થાય અને વનસ્પતિકાયના
 ત્રણ ભેદ છે:-એક સૂક્ષ્મ નિગોદ રૂપ તથા બે પ્રકારની વાદર, એક
 પ્રત્યેક ને વીજી સાધારણ. એ પાંચ સ્થાવરના મલીને અગ્યાર ભેદ
 થયા; તથા વેદંદ્રિય તેદંદ્રિય ને ચરિંદ્રિય એ વિકલેંદ્રિય કહેવાય
 છે. એ સમુર્ચ્છિમજ્જ હોય છે. એ ત્રણ પેલા અગ્યારની સાથે મેલવી
 એ, એટલે ચૌદ ભેદ થાય; તે ચતુદ પર્યાપ્તા તથા ચતુદ
 અપર્યાપ્તા મલી અઠાવીશ ભેદ થાય. હવે પંચેંદ્રિય તિર્યચ્ચના
 દશ ભેદ કહેછે:-તેમાં સર્વ પ્રકારના મત્સ્યાદિ જલચરનો

अन्नञ्ज उससिएणां तुटा शब्दना अर्थ.

अन्नञ्ज = अन्यत्र, बीजे ठेकाणे
 उससिएणं = उंचा श्वासवडे
 नीससिएणं = नीचा श्वासवडे
 खासिएणं = खांसीवडे
 छीएणं = छींकवडे
 जंभाइएणं = बगासा वडे
 उडुएणं = ओडकार वडे
 वायनिसग्गेणं = वा सरवा वडे
 भमलिए = तमर आवे, फेर आवे
 पित्त = पित्तना
 मुच्छाए = मुच्छा आवे, जोरे
 सुहुमेहिं = सूक्ष्म-रीते-वडे

अंग = शरीर
 संचालेहिं = संचारवडे
 खेल = कफ-गलफा
 दिट्ठि = दृष्टि
 एवम् = ए प्रकारे
 आइएहिं = इत्यादि लइने
 आगारेहिं = आगारोवडे
 अभग्गो = अस्वंड
 अविराहिओ = नहीं विरोधलो
 हुज्ज = होजो
 काउस्सग्गो = काउस्सग्ग
 जाव = ज्यां सुधी

एक भेद, थलचरना अण भेद तेमां एक घोडा प्रमुख चतुष्पद
 आशीविष प्रमुख उरपरि सर्प, अने गोह प्रमुख भुजपरि सर्प ए
 थलचरना अण भेद अने चार प्रकारना खेचरनो एक भेद ए म
 लीने ए पांच गर्भज अने पांच समुल्लिंम मली दश भेद थाय. ए
 दशने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता गणीए त्यारे बीश भेद थाय. ए बी
 शमां पेला अठावीश मेलवीए त्यारे अडतालीश थाय. ए तिर्यंच
 ना भेद जाणवा. हवे नारकीना भेद, रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, बालु
 का प्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमप्रभा, तथा तमतमा प्रभा, ए सात
 नरकना, नारकी पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मली चौद भेद थाय; तेमां
 पाछला अडतालीश मेलीए त्यारे वासठ थाय. हवे मनुष्यना भेद
 आ प्रमाणे:—पांच भरत, पांच ऐरवत, तथा पांच महाविदेह, ए
 कर्मभूमिना पंदर भेद; पांच हैमवंत पांच हिरण्यवंत, पांच हरिवर्ष,
 पांच रम्यक, पांच देवकुरु तथा पांच उत्तर कुरु ए अकर्मभूमिना

भगवंताणं = भगवंतोने
 नमुकारेणं = नमस्कारवडे
 न = नहीं
 पारोमि = पारुं
 ताव = त्यां सुधी
 कायं = शरीरने

ठाणेणं = स्थानक वडे
 मोणेणं = मोन वडे
 ज्ञाणेणं = ध्यान वडे
 अप्पाणं = आत्माने-मारीकायाने
 वोसिरामि = वोसराबुछुं

ब्रह्मभेद; अने छप्पन्न अंतर द्वीपो कहेवाय छे. ए छप्पन्ननी साथे पेली कर्मभूमिनां पंदर तथा अकर्मभूमिना त्रीश मेलवीए त्यारे पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मली वसें ने वे भेद थाय अने तेनी साथे एकसो एक समुच्छिन्न मनुष्यना भेद मेलवीए त्यारे त्रणसें त्रण भेद थाय. अने वासठ प्रथम तिर्यचना कहा ते सर्व एकठा कखा-थी त्रणसें पांसठ भेद थाय.

हवे देवताना एकसो अठाणुं भेद कहिये छैये:—प्रथम परमाधामांना पंदर, दश भुवनपति; आठ व्यंतर; आठ वाण व्यंतर; दश ज्योतिषी तेमां पांच चर ने पांच स्थिर जाणवा. त्रण किल्विषिया, दश तिर्यकूजंभक, नवलोकांतिक, वार देवलोकना, नव ग्रैवेयकना, पांच अनुत्तर विमानना ए सर्वमलीने नवाणुं थया ते पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता ए वे मली एकसो ने अठाणुं भेद थाय. ते पाछला त्रणसेंने पांसठमां मेलीए त्यारे पांचसें त्रैसठ सर्व जीवोनी उत्पात्ति स्थान थाय, तेने अभिहयाथी ववरोविद्या सुधीना दश पदवडे दशगुणा करिये त्यारे पांच हजार छसेंने त्रीश थाय; ते वली रागने द्वेषथी वमणा करिये त्यारे अग्यार हजार वसेंने साठ थाय; ते मन वचनने कायाए करी त्रण गुणा करिये त्यारे ते त्रीश हजार सातसें ने एंसी थाय; ते करवा कराववा तथा अनुमोदन ती त्रण गुणा करिये त्यारे एक लाख एक हजार त्रणसेंने चालीस थाय. ते अतीत अनागत तथा वर्त्तमान काले करी त्रण गुणा करिये, त्यारे त्रण लाख चार हजारने वीश थाय, ते अरिहं-

॥ अथ अन्नं नससिएणं ॥

अन्नं नससिएणं, नीससिएणं, खा
सिएणं, ठीएणं, जंजाइएणं, नडुए
णं, वायनिसग्गेणं, जमलिए पित्तमुत्ता
ए, सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं
खेल संचालेहिं, सुहुमेहिं दिठि संचा
लेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अन्न
ग्गे अविराहिं, हुज्ज मे काजस्सग्गे,
जाव अरिहंताणं, जगवंताणं, नसुक्का
रेणं, न पारेमि, ताव कायं, गणोणं, मो
णोणं, ऊणोणं, अप्पाणं वोसिरामि, ॥१॥

अर्थः—अन्नं के० अन्यत्र के० बीजे ठामे एटले
हवे जे आगारो कहेसे ते आगारो वर्जीने बीजे ठेका

तनी साखे सिद्धनी साखे, साधुनी साखे, देवनी साखे गुरुनी सा
खे तथा आत्मानी साखे ए छनी साथे छ गुणा करिये त्वारे अट्टार
लाख चोवीस हजार एकत्तौने बीस मिच्छामिदुक्कड थाय पर्या
रीते जीवने खमत खामणां कीजे, इरियावहि पडिक्कमतां शुभ ध्यामे
करी अनेक घोर पाप बिलय जाय.

(एण)

ए कायानो व्यापार करवानो नियम करुं. उससिए
 एं के० मुखे नासिकाए उंचो श्वास लेतां महारो का
 उस्सग न जांगे; नीससिएणं के० नीचो श्वास मूकतां,
 खासिएणं के० उधरस आवे, ठीएणं के० ठीक आवे,
 ऊंजाइएणं के० बगासुं आवे, उहुएणं के० उभकार आ
 वे, वायनिसग्रेणं के० अधो द्वारे वा सरवे, जमलिए
 के० ब्रमरी आवे, फेर आवे, पित्तमुच्चाए के० पित्तने
 प्रकोपे मूर्छा आवे, एटलां वानां श्रेयशी कानस्सग न
 जांगे; इहां अन्नह्नससिएणंशी आंहीसुधीमां एकेका
 आगारनां नाम दीधां ते माटे ए नव पदनी प्रथम
 आगार संपदा अइ.

सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं के० सूक्ष्मशरीरने इला
 ववेकरी शीतादिक वेदनाए रोम उजां अवाशी कान
 स्सग न जांगे, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं के० सूक्ष्म
 श्लेष्म चलाववे कफगलवादिके करी कानस्सग न
 जांगे, सुहुमेहिं दिठि संचालेहिं के० सूक्ष्म दृष्टी चलाववे
 करी मीचवा उधामवाशी कानस्सग न जांगे एमां
 सुहुमेहिं अंग संचालेहिं प्रमुख मांहे बहुआगारनां ना

મ દીધાં તેમાટે એ બહુઆગાર સંપદા બીજી જાણવી

એવમાફેહિં આગારેહિં કેળ એ પૂર્વોક્ત વાર આગાર આદે દેશને આદિ શબ્દવમે બીજા પણ આગારેહિં કેળ આગાર લેવા તે કહે છે:—વીજલીનું અથવા દીવાનું અજવાલું આતે નંદવાને વસ્ત્ર લેતાં, અને નંદર બિલાની આમી અવાથી આગલ પાઘલ થવું પમે, તથા ચોર અથવા રાજાના ઝયથી આઘા પાઘા થતાં, અગ્નિ લાગે અથવા ઝીંત પમતે તથા સર્પ મંશ મારે તેથી આઘો પાઘો થતાં, કાનસસગ્ગ પારતાં ઓમી વિરાધના થતાં અઝગ્ગો અવિરાહિન કેળ કાનસગ્ગ ઝાગે નહીં, અને વિરાધ્યો રહે, એ રીતે હુઝ્ઝમે કાનસસગ્ગો કેળ એવો મુઝપ્રતે કાનસસગ્ગ હોજો; હાં એવમાફેહિં આગાર કહ્યા માટે એ ત્રીજી આગંતુક (નવા) આગાર સંપદા જાણવી.

હવે કાનસસગ્ગનો વચત આંકે છે, એટલે એવો કાનસસગ્ગ કેટલી વાર સુધી હોય તે કહે છે. જાવ અરિહંતાણં કેળ જ્યાંલગે અરિહંત ઝગવંતાણં કેળ ઝગવં નમુક્કારેણં કેળ નમસ્કારેસહિત એટલે નમો અરિ

हंताशंनो उच्चार करी कानुस्सग्गने न पारेमि केण न
 पाहं समाप्त न करुं त्यांसुधी जाणवुं. इहां जाव अरि
 हंताणं इत्यादिकमां कानुस्सग्गनुं मान कह्युं. ए कायो
 त्सर्गविधि नामे चोथी संपदा थइ.

ताव कायं केण त्यांलग्गे शरीरने ठाणेणं केण ए
 कठामे उज्जुं राखवुं, मोणेणं केण मौनपणे रहेवे करी
 जाणेणं केण धर्मध्यान सहित रहेवे करी मनने स्थिर
 पणे राखी, अप्पाणं वोसिरामि केण (कानुस्सग्ग रहित
 पणाथकी अने सावद्य व्यापारपणाथकी) आत्माने वो
 सिरावुं. एमां तावकायं इत्यादिकमां शरीर स्थिर रा
 खवुं कह्युं माटे ए स्वरूप संपदा पांचमी जाणवी.

लोगस्सना छूटा शब्दना अर्थ.

लोगस्स-लौकिक-ना
 उज्जोअगरे-उद्योतना करनारा
 धम्मतिथयरे-धर्मतीर्थना क-
 रनारने
 जिणे-जिनेश्वरभगवानने
 अरिहंते-अरिहंत भगवानने
 कित्तइस्सं-स्तुति करीश
 चउवीसंपि-चोवीशने पण

केवली-केवलज्ञान पायेलाने
 उसमं-ऋषभ देवने
 अजियं - अजित नाथने
 वंदे - वांदुछुं
 संभवं - संभवनाथने
 अभिणंदणं - अभिनंदन
 स्वामीने
 सुमइं - सुमतिनाथने

पञ्चमप्पहं - पद्मप्रभने
 सुपासं - सुपार्श्वनाथने
 जिणं - रागद्वेष जितनारने
 चंदप्पहं - चंद्रप्रभने
 सुविहिं - सुविधिनाथने
 पुप्फदंतं - पुष्पदंतने
 सीयल - शीतलनाथने
 सिज्जंस - श्रेयांसनाथने
 वासुपुज्जं - वासुपुज्य स्वामीने
 विमलं - विमलनाथने
 अणंतं - अनंतनाथने
 धम्मं - धर्मनाथने
 सान्तिं - शान्तिनाथने
 कुंथुं - कुंथुनाथने
 अरं - अरनाथने
 मल्लिं - मल्लिनाथने
 मुणिसुव्वयं - मुनिसुव्रत

स्वामीने

नमिजिणं - नमिनाथने
 रिद्धनेमिं - अरिपूनेमिने
 पासं - पार्श्वनाथने
 वद्धमाणं - वर्द्धमान स्वामीने
 मए - महारे जीवे
 अभिथुआ - स्तुति कराया
 विहुय - टाल्या
 रय मला - रज अने मेल

पहीण - अति क्षय कर्या
 जर - जरा एटले घडपण
 मरणा - मरणो
 तित्थयरा - तीर्थकरो
 पसीयंतु - प्रसन्न थाओ
 कित्थिय - स्तव्या
 वंदिय - वांध्या
 माहिया - पूज्या
 उत्तमा - उत्तम
 आरुग्ग - रोगरहितपणुं
 बोहिलाभं - समकित बोधि
 बीजनो लाभ
 दिंतु - आपो
 चंदेसु - चंद्रयकी
 निम्मलयर - घणाज निर्मल
 आइच्चेसु - आदित्यथी-सु
 रजथी

अहियं - वधारे
 पयासयर - प्रकाश करनार
 सागर - समुद्र
 वर - प्रधान, श्रेष्ठ
 गंभीरा - गंभीर
 सिद्धि - सिद्धिने
 मम - मने
 दिसंतु - आपो

(६३)

॥ अथ लोगस्स ॥

गस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तिठ्यरे
णे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवी
पि केवली ॥ १ ॥ उसन्न मज्झिअं
वंदे ॥ संनवमज्झिणंदणां च सुमइं
॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च चं
इप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥
सीअल्ल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥ विम
लमणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वं
दामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मद्धि ॥ वंदे
मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि
रिठ्ठनेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥
एवं मए अज्झियुआ ॥ विहुयरयमला
पहीणजरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणव
रा ॥ तिठ्यरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कि
त्तिय वंदिय महिया ॥ जे ए लोगस्स

उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्गबोहिलान्नं ॥
 समाहिवरमुत्तमं दितु ॥ ૬ ॥ चंदेसु नि
 म्मल्लयरा ॥ आश्चेसु अहियं पयास
 यरा ॥ सागरवरगंजीरा ॥ सिद्धा सि
 धिं मम दिसंतु ॥ ૭ ॥

અર્થ:—લોગસ્સ કેળ પંચાસ્તિકાયાત્મક લોકમાં
 હે કેવલજ્ઞાને કરી બુદ્ધોઅગરે કેળ નુદ્યોતના કરનાર,
 ધમ્મતિબ્ધયરે કેળ ધર્મતીર્થના કરનાર, ચતુર્વિધસંઘના
 પ્રવર્ત્તાવિણહાર, જિણે કેળ રાગ દ્વેષના જીતનાર એહવા
 અરિહંત કેળ શ્રી અરિહંત જગવંત પ્રતે નામ લેશ્ને
 કિત્તિશ્સં કેળ કીર્તના સ્તવના કરીશ. ચતુર્વીસંપિ
 કેવલી કેળ ચતુર્વીસે જિનવર જે કેવલી ઠે તેમને.
 इहां अपिशब्दे ऐरवतक्षेत्रे तथा महाविदेहक्षेत्रे जे के
 वली ठे तेनुने पण स्तवुं. ॥ ૧ ॥

હવે ચોવીશ તીર્થંકરનાં નામ અનુક્રમે કરી ક
 હે ઠે. પ્રથમ નસન્ન કેળ શ્રીરૂપજીદેવ, વિનતા નગરી,
 નાત્તિરાજા પિતા, મરુદેવી માતા, વધા તીર્થંકરોની,

मातानु पहेला स्वप्ने हाथी देखे अने श्रीमरुदेवीजी ए पहेला स्वप्ने वृषज्ज दीठो एवो गर्जनो महिमा जाणी श्रीरुषज्ज नाम दीधुं, तथा धर्मनी आदिना प्रवर्त्ता वनार तेथी बीजुं आदिनाथ नाम कहिये. पांचसे धनुष्य प्रमाण शरीर, चोराशी लाख पूर्वनु आयु, सुवर्ण वर्ण, वृषज्ज लांठन.

बीजा अजियंच केण श्रीअजितनाथ, अयोध्या नगरी, जितशत्रुराजा पिता, विजयाराणी माता; प्रथम राजा राणी बाजी पासे रमतां त्यारे राणी हारी जती अने राजानी जीत यती हती अने जगवंत गर्जे आव्या पढी राणी जीते अने राजा हारे एवो गर्जनो महिमा जाणीने अजितनाथ नाम दीधुं. साढा चारसैं धनुष्यप्रमाण शरीर, बहोत्तेर लाख पूर्वनु आयु, सुवर्णवर्ण, हाथीनुं लांठन; तेमने वंदे केण हुं वांडुं.

त्रीजा संजवं केण श्रीसंजवनाथ. श्रावस्ति नगरी जितारि राजा पिता, सेना राणी माता, देशमां डुकाल हतो ते जगवंत गर्जे आव्याथी अणचिंतव्यो पृथ्वीमां धाननो संजव थयो तेथी संजवनाथ नाम

दीधुं चारसैं धनुष्य प्रमाण शरीर, साठ लाख पूर्व आयु, सुवर्ण वर्ण, अश्व (घोडा)नुं लांठन.

चोथा अन्निनंदणं च के० श्रीअन्निनंदनस्वामी. अयोध्यानगरी, संवर राजा पिता, सिद्धार्थ राणी माता, जगवंत गर्जे आव्या पढी इंड महाराज आवीने जगवंतनी माताने घणी वार स्तवीने जता हता; ते वारे राजा प्रमुखे जाण्युं जे ए गर्जनोज महिमा ठे माटे अन्निनंदन नाम दीधुं. साढात्रणसैं धनुष्य प्रमाण शरीर, पचास लाख पूर्वनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, वानरनुं लांठन.

पांचमा सुमइं च के० श्रीसुमतिनाथ. अयोध्यानगरी, मेघरथ राजा पिता, सुमंगला माता, प्रभु गर्ज मां रह्या पढी ते गाममां एक वणिकनी बे स्त्रील हती तेमां न्हानीने पुत्र हतो अने महोटी दंध्या हती यण ते ठोकरानुं प्रतिपालन बने माताल करती हती. एज करतां ते वाणीयो ज्यारे सरण पाम्यो त्यारे महोटी स्त्री धननी लालचे कहेवा लागी जे पुत्र महारो ठे, माटे जेनो पुत्र तेनुं धन आय ठे एवो चाल

ठे, तेमज न्हानीनो तो दीकरो हतो तेथी तेणे कहुं
 के ए पुत्र महारो ठे, अने धन पण महारुं ठे; एम
 बने सोक्योनो टंटो थयो. ते वढती वढती दरबारमां
 आवी तेवारे गर्जना महिमाथी राणीने चुकादो करवा
 नी जली बुद्धि उत्पन्न अइ, तेथी राणीये कहुं जे बने
 मलीने धन अर्धो अर्ध वहेंची लो अने ठोकराना पण बे
 ज्ञाग करी अर्धो अर्ध वहेंची लो. ते सांजली न्हानी स्त्री
 बोली के मारे डव्य जोशतुं नथी, अने ठोकराना कांड
 बे विज्ञाग थाय नहीं माटे ए ठोकरो एनो ठे ते महा
 रोज ठे. ते सांजली राणी बोली के ए ठोकरो न्हानी
 स्त्रीनो ठे, केमके पुत्रनुं मृत्यु थाय त्यांसुधी पण महो
 टी स्त्रीथी ना कहेवाणी नही अने न्हानी स्त्रीये मा
 खानी मनाइ करी; माटे पुत्र अने धन एने हवाले
 करो, अने महोटी स्त्रीने घरथी बाहेर काढो. ए गर्ज
 ना महिमाथी जगवंतनी माताने एवी बुद्धि उपनी,
 ते माटे सुमति नाम दीधुं. त्रणसैं धनुष्य प्रमाण श-
 रीर, चालीस लाख पूर्वनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, कौंच लांठन.

ठठा पञ्चमप्पहं के० श्री पद्मप्रज्ञस्वामी कौशां

(६७)

बी नगरी, धरराजा पिता, सुषीमा राणी माता, जगवंत गर्जे आव्या पढी माताने कमलनी सज्जाए सुवानो मोहोलो ऊपन्यो, ते देवताए पूरण कस्यो अने जगवंतनुं शरीर पद्म (कमल) सरखुं रक्तवर्णे हतुं माटे पद्मप्रज्ज नाम दीधुं. अढीसैं धनुष्य प्रमाण शरीर, त्रीश लाख पूर्वनुं आयु, रक्तवर्ण, पद्म लांठन.

सातमा सुपासं केण श्री सुपार्श्वनाथ, वणारसी नगरी, सुप्रतिष्ठराजा पिता, पृथ्वीराणी माता. माता नां बन्ने पासां रोगे करी कोढीयां हतां ते जगवंत गर्जे आव्या पढी बन्ने पासां सुवर्णवर्णे घणां सुकोमल थयां माटे सुपार्श्व नाम दीधुं. एक प्रतमां जगवंतना पितानां वे पासां कोढ रोग वालां हतां तेने जगवंत नी माताये हाथ फेरव्याथी सुकमाल निरोगी थयां ए वो पाठ लख्यो ठे. बसैं धनुष्य प्रमाण शरीर, बीश लाख पूर्व आयु, सुवर्ण वर्ण, स्वस्तिक (साथीया)नुं लांठन.

आठमा जिणं च केण बली जिन वीतराग चंद प्पहं केण श्रीचंडप्रज्जस्वामी. चंडपुरी नगरी, महसेन

(६९)

राजा पिता, लक्ष्मणा राणी माता, जगवंत गर्जे आ
व्या पढी माताने चंडमाने पान करवानो होहोलो
ऊपन्यो ते प्रधाने बुद्धिये करी पूर्ण कस्यो एवो गर्जे
नो प्रज्ञाव जाणी चंडप्रज्ञ नाम दीधुं, एकसो पचास
धनुष्य प्रमाण शरीर, दशलाख पूर्वनुं आयु, श्वेत वर्ण,
चंडनुं लांढन, तेमने वंदे केण हुं वांडुं.

नवमा सुविहिं च पुष्पदंतं केण श्री सुविधिना
थ, अने बीजुं नाम पुष्पदंत ठे. काकंदी नगरी सुग्रीव
राजा पिता, रामाराणी माता, जगवंत गर्जे आव्या
पढी माता तथा पिता जली विधिए करी धर्म करवा
लाग्या. एवो गर्जनो प्रज्ञाव जाणी सुविधिनाथ नाम
दीधुं, अने मचकुंदनां फूलनी कली सरखा प्रजुना
उज्ज्वल दांत हता. माटे बीजुं पुष्पदंत नाम दीधुं, ए
कसो धनुष्य प्रमाण शरीर, बे लाख पूर्व आयु, श्वेत
वर्ण, मगरमछनुं लांढन.

दसमा सीयल केण श्रीशीतलनाथ. जहिलपुर
नगर, दृढरथ राजा पिता, नंदाराणी माता, पिताना
शरीरे दाहज्वर हतो ते जगवंत गर्जे आव्या पढी रा

ਜਾਨਾ ਭਰੀਰਨੀ ਊਪਰ ਰਾਣੀਏ ਹਾਥ ਫੇਰਵਿਆਥੀ ਭਰੀਰੇ
 ਭੀਤਲਤਾ ਅੜ. ਏਵੋ ਗਰਜਨੋ ਮਹਿਮਾ ਜਾਣੀ ਭੀਤਲਨਾ
 ਅ ਨਾਮ ਦੀਧੁੰ. ਨੇਵੁੰ ਧਨੁਬਧ ਪ੍ਰਮਾਣ ਭਰੀਰ, ਏਕ ਲਾਖ
 ਪੂਰਵ ਆਧੁ, ਸੁਵਰਣ ਵਰਣ, ਭਰੀਵਛ ਲਾਂਭਨ.

ਅਗਿਆਰਥਾ ਸਿਯੰਸ ਕੇਭ ਭਰੀਭ੍ਰੇਧਾਂਸ ਜਿਨ. ਸਿੰਹ
 ਪੁਰ ਨਗਰ, ਵਿਭੁਰਾਜਾ ਪਿਤਾ, ਵਿਭੁਰਾਣੀ ਮਾਤਾ, ਦੇਰਾ-
 ਸਰਮਾਂ ਪਰੰਪਰਾਗਤ ਦੇਵਤਾ ਅਧਿਭਿਤ ਸਯੰਨੀ ਪੂਜਾ ਅਤੀ
 ਹਤੀ ਤੇ ਸਯੰਨਾਏ ਜੇ ਕੇਸੇ ਅਥਵਾ ਸੁਕੇ ਤੇਨੇ ਭਪਭਵ ਭਪ
 ਜੇ ਤੇ ਜਗਵੰਤ ਗਰ੍ਹੇ ਆਵਧਾ ਪਭੀ ਸਾਤਾਨਾ ਮਨਮਾਂ ਆ
 ਭਧੁੰ ਜੇ ਦੇਵਗੁਰੁਨੀ ਪ੍ਰਤਿਮਾਨੀ ਪੂਜਾ ਆਧ ਤੇ ਤੋ ਖਰੁੰ ਭੇ,
 ਪਣ ਸਯੰਨੀ ਪੂਜਾ ਤੋ ਕਧਾਂਏ ਸਾਂਜਲੀ ਨਥੀ. ਏਮ ਚਿੰ
 ਤਵੀ ਸਯੰਨੀ ਰਕਾ ਕਰਨਾਰ ਪੁਰੁਭੇ ਮਨਾੜ ਕਥਧਾ ਭਤਾਂ
 ਪਣ ਪ੍ਰਜੁਨੀ ਮਾਤਾ ਤੇ ਸਯੰਨਾ ਭਪਰ ਕੇਭਾਂ ਤਧਾ ਸੁਤਾਂ ਤੇ
 ਭਤਾਂ ਗਰ੍ਹਨਾ ਪ੍ਰਜਾਵਥੀ ਅਧਿਭਿਤ ਦੇਵਤਾ ਸਯੰਨਾ ਮੂਕੀ ਜ
 ਤੋ ਰਹੁਭੋ. ਤਧਾਰ ਪਭੀ ਰਾਜਾ ਪ੍ਰਮੁਖੇ ਤੇ ਸਯੰਨਾ ਕਪਰਾਭਮਾਂ
 ਲੀਧੀ. ਏਵੋ ਗਰ੍ਹਨੋ ਮਹਿਮਾ ਜਾਣੀ ਭ੍ਰੇਧਾਂਸ ਨਾਮ ਦੀਧੁੰ
 ਏਂਭੀ ਧਨੁਬਧ ਪ੍ਰਮਾਣ ਭਰੀਰ, ਚੋਰਾਭੀ ਲਾਖ ਕਰਨੁੰ ਆ
 ਧ, ਸੁਵਰਣ ਵਰਣ, ਗੇਂਨੀਨੁੰ ਲਾਂਭਨ.

बारमा वासुपुङ्गव च के० वली श्रीवासुपूज्यस्वामी. चंपानगरी, वसुपूज्यराजा पिता, जयाराणी माता, जगवंत गर्जे आव्या पढी इन्महाराज वारंवार आवी वसु एटले रत्ननी वृष्टी करी माता पितानी पूजा करता, तेथी वासुपूज्य नाम दीधुं, सित्तेर धनुष्य प्रमाण शरीर, बहोतेर लाख वर्षनुं आयु, रक्तवर्ण, महिष (पामा)नुं लांगन.

तेरमा विमल के० श्री विमलनाथ. कांपिलपुर नगर, कृतवर्मराजा पिता, श्यामाराणी माता, जगवंत गर्जे आव्या पढी तेमना नगरमां कोइ स्त्री जर्तार देहरे आवी उतस्यां त्यां कोइ व्यंतरी देवी रहेती, तेणे ते पुरुषनुं सुंदर रूप दीतुं तेथी कामक्रीडा करवानी अजिलाषा अइ; पढी तेनी स्त्रीना जेवुं व्यंतरिये पो तानुं रूप विकूर्वि तेनी पासे सुती. प्रजाते बन्ने स्त्री समान देखी ते पुरुषे कह्युं जे, एमां महारी स्त्री कोण ठे त्यारे पेहेली बोली के ए महारो जर्तार अने बीजी बोली के ए महारो जर्तार ठे. एम वढतां वढतां सर्व राजा पासे आव्यां. राजा तथा प्रधान बन्ने बेहु स्त्रीने

(૭૦)

જાનાં શરીરની ઉપર રાણીયે હાથ ફેરવ્યાથી શરીરે
શીતલતા થઈ. એવો ગર્જનો મહિમા જાણી શીતલતા
થ નામ દીધું. નેવું ધનુષ્ય પ્રમાણ શરીર, એક લાખ
પૂર્વ આયુ, સુવર્ણ વર્ણ, શ્રીવદ્ધ લાંઠન.

અગિયારમા સિદ્ધાંત કેળ શ્રીશ્રેયાંસ જિન. સિંહ
પુર નગર, વિષ્ણુરાજા પિતા, વિષ્ણુરાણી માતા, દેરા-
સરમાં પરંપરાગત દેવતા અધિષ્ઠિત સજ્જાની પૂજા થતી
હતી તે સજ્જાએ જે વેસે અથવા સુવે તેને નપિવ્વ ઉપ
જે તે જગવંત ગર્જે આવ્યા પછી માતાના મનમાં આ
વ્યું જે દેવગુરુની પ્રતિમાની પૂજા થાય તે તો સ્વર્ગે
પણ સજ્જાની પૂજા તો ક્યાંયે સાંજની નથી. એમ ચિં-
તવી સજ્જાની રક્ષા કરનાર પુરુષે મનાઈ કહ્યા ઠતાં
પણ પ્રજ્ઞુની માતા તે સજ્જા ઉપર વેઠાં તથા સુતાં તે
ઠતાં ગર્જના પ્રજ્ઞાવથી અધિષ્ઠિત દેવતા સજ્જા મૂકી જ
તો રહ્યો. ત્યાર પછી રાજા પ્રમુખે તે સજ્જા વપરાશમાં
લીધી. એવો ગર્જનો મહિમા જાણી શ્રેયાંસ નામ દીધું,
એંશી ધનુષ્ય પ્રમાણ શરીર, ચોરાશી લાખ વર્ષનું આ-
ય, સુવર્ણ વર્ણ, ગેંમીનું લાંઠન.

वारमा वासुपुङ्गं च के० वली श्रीवासुपूज्यस्वा
मी. चंपानगरी, वसुपूज्यराजा पिता, जयाराणी माता,
जगवंत गर्जे आव्या पढी इंडमहाराज वारंवार आवी
वसु एटले रत्ननी वृष्टी करी माता पितानी पूजा कर
ता, तेथी वासुपूज्य नाम दीधुं, सित्तेर धनुष्य प्रमाण
शरीर, बहोतेर लाख वर्षनुं आयु, रक्तवर्ण, महिष
(पासा)नुं लांगन.

तेरमा विमल के० श्री विमलनाथ. कांपिलपुर
नगर, कृतवर्मराजा पिता, श्यामाराणी माता, जग-
वंत गर्जे आव्या पढी तेमना नगरमांकोइ स्त्री जर्तारि
देहरे आवी उतस्यां त्यां कोइ व्यंतरी देवी रहेती, तेणे
ते पुरुषनुं सुंदर रूप दीठुं तेथी कामक्रीडा करवानी
अजिलाषा थइ; पढी तेनी स्त्रीना जेवुं व्यंतरिये पो
तानुं रूप विकूर्वि तेनी पासे सुती. प्रजाते बन्ने स्त्री
समान देखी ते पुरुषे कह्युं जे, एमां महारी स्त्री कोण
ठे त्यारे पेहेली बोली के ए महारो जर्तारि अने बीजी
बोली के ए महारो जर्तारि ठे. एम वढतां वढतां सर्व
राजा पासे आव्यां. राजा तथा प्रधान बन्ने बेहु स्त्रीने

(७९)

समान देखी कोइ रीते निवेमो करी शक्या नही पण
 राणीये पुरुषने दूर उज्जो राख्यो अने बन्ने स्त्रीनुने प
 ण दूर उज्जो राखी ने बोलीके जे पोताना सत्य वच
 नना प्रज्ञावथी ज्ञत्तारिने स्पर्श करे तेनो ए ज्ञत्तारि जा
 एवो. ते सांजली व्यंतरीए देवशक्तिना प्रज्ञावे पोतानो
 हाथ लांबो करी ज्ञत्तारिने स्पर्श कर्यो. तेवोज राणीये
 तेनो हाथ पकमी लेईने कह्युं के तुं तो व्यंतरी ठेमाटे
 ताहरे स्थानके जती रहे. एवी रीते चूकादो थवाथी
 विमल मतिवाली राणी कहेवाणी ते गर्जनोज प्रज्ञाव
 जाणी विमलनाथ नाम दीधुं, साठ धनुष्य प्रमाण श
 रीर, साठ लाख वर्षनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, सूकर (सु
 अर, सुंर)नुं लांगन.

चक्रदमा मणंतं च के० श्री अनंतनाथ. अयोध्या
 नगरी, सिंहसेन राजा पिता, सुयशाराणी माता, स्व
 भ्रमां जेनो अंत न आवे एवुं एक महोदुं चक्र जम
 तुं राणीए आकाशने विषे दीतुं अने अनंत रत्ननी मा
 ला दीठी तथा अनंत गांठना दोरा करी बांध्या तेथी
 लोकोना ताव गया एवो गर्जनो प्रज्ञाव जाणी अनंत

नाथ नाम दीधुं, पचास धनुष्य शरीर, त्रीस लाख वर्षनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, सिंचाणानुं लांठन.

पंदरमा जिणं केण वीतराग धम्मं केण श्रीधर्मना अस्वामी. रत्नपुर नगर, जानुराजा पिता, सुव्रताराणी माता राजा राणीने पूर्वे धर्म ऊपर अट्ठप राग हतो ते जगवंत गर्जे आव्या पढी बन्नेने धर्म ऊपर अत्यंत राग थयो एवो गर्जनो महिमा जाणी धर्मनाथ नाम दीधुं, पिस्तालीस धनुष्य प्रमाण शरीर, दश लाख वर्षनुं आयु, सुवर्णवर्ण, वज्र लांठन.

सोलमा संतिं च केण श्री शांतिनाथ. गजपुर नगर, विश्वसेन राजा पिता, अचिराराणी माता, ते दे शमां मरकीनो ऊपड्व घणो हतो ते जगवंत गर्जे आव्या पढी माताएं अमृत ठांट्युं तेश्री मरकीनी शांति थई, एवां प्रजावथी शांतिनाथ नाम दीधुं. चालीस धनुष्य प्रमाण शरीर, एक लाख वर्षनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, मृग लांठन, तेमने वंदामि केण वांडुबुं.

सत्तरमा कुंथु केण श्रीकुंथुनाथ. हस्तिनागपुर नगर, सूरराजा पिता, श्रीराणी माता. जगवंत गर्जे

आव्या पढी माताजीए स्वप्नमां रत्ननो शुभ्र पृथ्वीने वि
षे दीगो, तथा शत्रु हता ते कुंशुआनी पेठे न्हानाअया
अथवा कुंशुआ प्रमुख न्हाना महोटा जीवोनी जयणा
देशमां प्रवर्त्ति तेषी कुंशुनाथ नाम दीधुं. पांत्रीस ध-
नुष्य शरीर, पंचाणु हजार वर्षनुं आयु, सुवर्ण वर्ण,
ठाग (बोकमा)नुं लांठन.

अठारमा अरं च केण श्री अरनाथ. गजपूर नगर,
शुदर्शन राजा पिता, देवी राणी माता, जगवंत गर्जे
आव्या पढी राणीए स्वप्नमांहे रत्नमय आरो तथा शु-
भ्र दीठां. एवो गर्जनो महिमा जाणी अरनाथ नाम
दीधुं, त्रीस धनुष्य शरीरनुं मान, चोरासी हजार व
र्षनुं आयु, सुवर्णवर्ण, नंदावर्त्त लांठन.

जंगलीसमा मल्लिं केण श्रीमल्लीनाथ. मिथिलान
गरी, कुंजराराजा पिता, प्रज्ञावतीराणी माता, जगवंत
गर्जे आव्या पढी माताने एक रात्रीये, ठए रुतुना फू-
लनी शय्याए सुवानो दोहोलो उपन्यो, ते देवताए पू-
ख्यो. एवो गर्जनो प्रज्ञाव जाणी, श्रीमल्लीनाथ नाम
दीधुं, पचीश धनुष्य शरीरनु मान, पंचावन हजार

वर्षनुं आयु नील वर्ण, कुंज लांठन.

वीसमा वंदे के० वांडुं. मुणिसुवयं के० श्रीमुनि
सुव्रत स्वामीप्रते. राजगृहनगर, सुमित्रराजा पिता, प
आराणी माता, जगवंत गर्जे आव्या पढी मातापिता
मुनिराजनी पेरे सुव्रत के० जलां बारव्रत श्रावकनां
साचववा लाग्यां. एवो गर्जनो प्रज्ञाव जाणी, मुनिसु
व्रत नाम दीधुं. वीश धनुष्य शरीर मान, त्रीश हजार
वर्षनुं आयु, कृष्णवर्ण, काचबानुं लांठत.

एकवीसमा नमिजिणं च के० श्रीनमिजिनेश्वर
ने. वंदामि के० वांडुं. मिथिलानगरी, विजयराजा पिता,
वप्राराणी माता, जगवंत गर्जे आव्या पढी सीमामि
आ राजा जगवंतना पिताना शत्रु हता, ते चढी आ
व्या; गामना किछ्चाने चारे बाजु लश्करनो पन्नाव ना
खी विंटी लीधुं. राजाने घणी बीक लागी पण राणीये
किछ्चानपर चढीने शत्रुने वांकी नजरे जोया ते रा
णीनुं तेज वयरी राजालुथी खमायुं नहि, तेथी सर्व
आवीने जगवंतनी माताने नमस्कार करी कहेवा लाग्या
के अमारा उपर सौम्यदृष्टीये जून. राणीये तेमना उपर
सौम्य नजरे जोइ माथे हाथ राख्यो. सर्व राजान, अनं

एलीने पगे लागी आझा मागी पोतपोताने नगरे गया.
 एवो प्रज्ञाव जाणी नमिनाथ नाम दीधुं. पन्नर धनुष्य
 शरीरनुं मान, दश हजार वर्षनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, नीला
 कमलनुं लांढन.

बावीसमा अरिष्टनेमिके० श्रीअरिष्टनेमिप्रभु, सौ
 रीपुर नगर, समुद्रविजय राजा पिता, शिवादेवीराणी
 माता, भद्रु गर्जे आव्या पढी माताये स्वप्नमां अरिष्ट
 एटखे काला रत्ननी रेल दीठी तथा आकाशमां चक्र
 ऊढलतुं दीठुं एवो प्रज्ञाव जाणी अरिष्टनेमि नाम दीधुं.
 बीजुं नाम श्री नेमिनाथ. दस धनुष्य शरीर मान. एक
 हजार वर्षनुं आयु, श्याम वर्ण, शंख लांढन.

त्रेवीसमा पासंके० श्रीपार्श्वनाथस्वामी, वणार
 सीनगरी, अश्वसेनराजा पिता, वामाराणी माता, न
 गवंत गर्जे आव्या पढी माताये अंधारी रात्रे पोतानी
 पासे सर्प जतो दीठो ते सर्पना जवाना मार्गनी वच
 मां राजानो हाथ देखी राणीये ऊंचो कीधो तेशी रा
 जाजागी ऊढ्यो ने बोढ्यो केशा माटे हाथ ऊंचो की
 धो सर्प दीठो कहुं. राजा बोढ्यो, तमे जुठुं बो
 ढ्यो मंगावी जोयुं तो सर्प दीठो. ते वारे

विस्मय पामी राजाये विचारयुं जे में न दीछेने रा
णीये दीछे ए गर्जनो प्रज्ञाव ठे. एम जाणी श्री पा
श्वनाथ नाम दीधुं. नवहस्त प्रमाण शरीर, एकसो वर्ष
आयु, नील वर्ण, सर्प लांछन.

चोवीशमा तह केण तेमज वड्ढमाणं च केण श्री
वड्ढमानस्वामी, कन्नियकुंरु नगर, सिद्धार्थराजा पिता,
त्रिसलाराणी माता, जगवंत गर्जे आव्या पढी माता
पिता समस्त रुद्धियें वृद्धि पाम्यां. धन धान्यादिकना
जंनार तथा देश नगरादिकनी वृद्धि अई, सर्व राजा
आज्ञामां वर्तवा लाग्या. एवो प्रज्ञाव जाणी वड्ढमान
नाम दीधुं. वली बाढ्यावस्थामां मेरुपर्वत अंगुठे चां
प्यो, तथा आमल कीला करतां देवता हास्यो मोटे इ
इमहाराजे श्री महावीर एवं बीजुं नाम दीधुं. सात
हाथ शरीर, बहोतेर वर्षनुं आयु, सुवर्ण वर्ण, सिंह
लांछन. ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

एवमए केण ए रीते में चोवीश तीर्थकरने विशे
षे जुदे जुदे नामे करी अजिष्णुआ केण स्तव्या
विदुयरस्यमला केण टाढ्या ठे पापरूप रज अने मल जे
णे तेमां रज ते तत्काल आ जवनां बांध्यां कर्म, अने

मल ते घणा कालनां पूर्व ज्वनां वांध्यां कर्म जाणवां.
 वली पहीण के० कय गया ठे जरमरणा के० जरा, रो
 ग अने मरण जेमनां एवा, चनुवीसंपि जिणवरा के०
 चोवीश जिनवर वर्त्तमान काले थया ते, अपि शब्दथकी
 महाविदेह तथा ऐरवत क्षेत्रोने विषे जे तीर्थकरो ठे ते
 पण लेवा. एवा तिठ्यरा के० तीर्थकर ते मेके० मुज
 ने पसीयंतु के० प्रसन्न थानु ॥ ५ ॥

ए तीर्थकरोने नामे करी कित्तिय के० स्तव्या, वं
 दिय के० वांध्या, महिआ के० पूज्या; जे ए लोगस्स के०
 जे तीर्थकर ए लोकने विषे, उत्तमा सिद्धा के० उत्तम
 सिद्ध थया ते मुजने आरुग्ग के० आरोग्यता एटलेनी
 रोगता आपो; केमके नीरोगता होय तो धर्म साधन
 आय. वली बोहिलान्न के० बोधबीजनो लान्न एटले
 ज्ञवांतरे सम्यक्त्व रूप धर्मनी प्राप्ति आय, अने समा
 हिवरं के० प्रधान समाधि ते मननुं स्वस्थपणुं उत्तमं
 के० उत्तम ते मुऊप्रते दिंतु के० द्यो आपो ॥ ६ ॥

चंदेसुनिम्मलयरा के० चंडमाथकी अत्यंत निर्म
 ल. वली आइच्छेसु के० आदित्य जे सूर्य ते थकी पण
 हयं के० अधिक पयासयरा के० प्रकाशना करनार

ठे. सागरवरगंजीरा के० स्वयंभूरमण समुद्रात्री पण
 अत्यंत गंजीर ठे एवा सिद्धा के० सिद्ध ते सिद्धि के०
 मोक्षप्रते ममदिसंतु के० मुजने द्यो. संपदा अठावीस,
 पद अठावीस, गुरु अक्षर अठावीस, लघु अक्षर बसेंने
 बत्रीस, सर्व मली. सबलोए सहित लोगस्सना बसें
 साठ अक्षरो ठे ॥ ७ ॥

विधि.

प्रथम नुंचा आसने आचारजी पधरावीने, ते न
 होय तो पुस्तक, नवकारवाली प्रमुख बाजोठपर मू
 कीने श्रावक श्राविका कटासणुं मुहुपत्ति, चवलो लेइ
 शुद्ध वस्त्र धारण करी तथा जग्या पूंजी कटासणापर
 बेसी मुहुपत्ति नावा हाथमां मुख पास राखी जमणो
 हाथ थापनाजी सामो अवलो राखी एक नवकार ग
 एी पंचिंदिअ कही इत्तामि खमासमणो वंदिनुं जाव
 णिज्जाए निसीहिआए मथ्थएण वंदामि एम खमास
 मणुं देइ, इत्ताकारेण संदिसह जगवन् इरियावहियं
 पन्निक्कमामि, इत्तं इत्तामि पन्निक्कमिनुं एम कही इरिया
 वहिया, तस्सनुत्तरी, अन्नञ्च नससिएणं कही एक लोग
 स्सनो अथवा चार नवकारनो कानुस्सग्ग करी, पारी,

प्रगट लोगस्त कही, खमासमणुं देइ, इच्छाकारेण संदि
 सह जगवन् सामायक मुहपत्ति पमिलेहुं, इच्छं एम क
 हि मुहपत्ति पमिलेहीए, एना पचाश बोल नीचे मुजब.

अथ मुहपत्ति पमिलेहवाना ५० बोल.

१५ मुहपत्तिनी पमिलेहणाना बोल.

सूत्र अर्थ तत्व करी सर्वहुं १ समकित मोहनी २
 मिश्र मोहनी ३ मिथ्यात्व मोहनी ४ परिहरुं. काम
 राग ५ स्नेहराग ६ इष्टिराग ७ परिहरुं. सुदेव ८ सुगुरु
 ९ सुधर्म १० आदरुं. कुदेव ११ कुगुरु १२ कुधर्म १३
 परिहरुं ज्ञान १४ दर्शन १५ चारित्र १६ आदरुं. ज्ञानवि
 राधना १७ दर्शन विराधना १८ चारित्र विराधना १९
 परिहरुं. मनगुप्ति २० वचनगुप्ति २१ कायगुप्ति २२ आ
 दरुं. मनदंम २३ वचनदंम २४ कायदंम २५ परिहरुं.

२५ अंगनी पमिलेहणा.

हास्य १ रति २ अरति ३ परिहरुं. जय ४ शोक
 ५ दुर्गन्ठा ६ परिहरुं कृष्णलेश्या ७ नीललेश्या ८ का
 पोतलेश्या ९ परिहरुं रिङ्गारव १० रसगारव ११ सा
 तागारव १२ परिहरुं. मायाशब्द १३ नियाणशब्द १४
 मरुयात्वशब्द १५ परिहरुं. क्रोध १६ मान १७ परि

हरं. माया १८ लोन्न १९ परिहरं. पृथ्वीकाय २० अ
पकाय २१ तेजकाय २२ नीजयणा करं. वायुकाय २३
वनस्पतिकाय २४ त्रशकाय २५ नी रक्षा करं.

मुहपत्ति केम पन्निहेहवी तथा ते वने अंग केम
पन्निहेहवुं ते विषे विशेष विवरणनी पांच गाथा तथा
तेनो सविस्तर अर्थ लखीये ठीए.

॥ अथ मुहपत्तिनी पचीश तथा शरीरनी पची
श मलीने पचाश पन्निहेहणा विवरीने लखिये ठैये.॥

॥ सुत्तठ तत्त दिठी, दंसण मोहयतिगं च रागतिगं ॥
देवाइतत्ततिगं, तह य अदेवाइतत्ततिगं ॥ १ ॥ नाणा
इतिगं च तद्धि, राहणयं तिन्निगुत्ति दंसतिगं ॥ इअ मु
हणंतगपन्निहे, हणाइ कमसो विचिंतित्ता ॥ २ ॥ हा
सो रइ अरइ तिगं, जय सोग डुगंठया य वज्जित्ता ॥
जुअजुअलं पेहंतो, सीसे अपसत्तलेस तिगं ॥ ३ ॥ गा
रवतिगं च वयणे, उअरि सत्ततिगं कसायचउ पिठे ॥
पयजुअले ठजीववहं ॥ तणुपेहाए विजाणविणं
॥ ४ ॥ जइवि पन्निहेहणाए ॥ हेउ जिअरक्कणं जि
णाणाय ॥ तहवि इमं मण मक्करु, निजंतणहं मु
णि विति ॥ ५ ॥

અર્થ:—સુત્તઠ કેળ મુહપત્તિને પહેલે પાસે સૂત્ર અને બીજે પાસે અર્થ તત્ત કેળ સમ્યક્ પ્રકારે તેનું તત્ત્વ હૃદયને વિષે ધરું. એ પ્રથમ દિઠી કેળ દૃષ્ટી પમિલેહ એ જાણવી.

પઠી ત્રણવાર ઁંચેરિએ, ત્યાં શું ચિંતવીએ ? તે કહેઠે. દંસણમોહયતિગં કેળ સમ્યક્ત્વ મોહની, મિશ્ર મોહની, અને મિશ્ર્યાત્વ મોહની, એ ત્રણ મોહની ઠાંનું. રાગતિગં કેળ કામ રાગ, સ્નેહ રાગ અને દૃષ્ટી રાગ એ ત્રણ રાગ ઠાંનું. એવં સાત અઃ પઠી મુહપત્તિએ એકપમ વાલીને આંગુલની વચ્ચે મુહપતિ ત્રણવારની હાથ નપર પચોમા અચોમા કરે, ત્યાં જે ચિંતવે તે કહે ઠે. દેવાઈ તત્તતિગં કેળ દેવાદિક તત્ત્વ ત્રણ એટલે દેવતત્ત્વ, ગુરુત્ત્વ ને ધર્મતત્ત્વ એ ત્રણને આદરું, એ ત્રણ અચોમા હાથ નપર ત્રણ વાર ઁંચેરીએ એવં દશ અઃ. તહય કેળ તે મજ વલી અદેવાઈતત્તતિગં કેળ અદેવાદિક તત્ત્વ ત્રણ એટલે કુદેવ, કુગુરુ ને કુધર્મ એ ત્રણ તત્ત્વ ઠાંનું, એ ત્રણ પચોમા હાથ નપર પુંજીયેં એવં તેર અઃ. નાણાઈ તિગં કેળ જ્ઞાન, દર્શન ને ચારિત્ર એ ત્રણને આદરું, એ ત્રણ અચોમા હાથ નપર ત્રણવાર ઁંચેરીએ. ચ કેળ વ

ली तद्विराहणयं के० तेनीज विराधना एटले ज्ञान विराधना, दर्शन विराधना अने चारित्र विराधना, ए त्रण विराधना ठांमु. ए त्रण पखोमा हाथ उपर मुहपत्तिये करी त्रण वार पुंजीए; एवं जगणीश अइ. तिन्निगुत्ति के० मनगुत्ति, वचनगुत्ति अने कायगुत्ति आदरुं ए त्रण अखोमा हाथ उपर त्रणवार खंखेरीए. दंरुतिगं के० मनदंरु, वचनदंरु ने कायदंरु ए त्रण दंरु ठांमुं. ए त्रण पखोमा हाथ उपर त्रण वार मुहपत्तिए पुंजीये इ अमुहणंतगपमिलेहणाइ के० ए मुखानंतक एटले मुहपत्ति तेनी पचीश पमिलेहणा कही ते कमसो वि चिंतिज्ञा के० पूर्वोक्त अनुक्रमे करी मनमां चिंतववी.

हवे शरीरनी पचीश पमिलेहणा कहेठे. तेमां प्रथम बे जुजानी पमिलेहणा कहेठे; हासोरइअरइ तिगं के० हास्य, रति अने अरति ए त्रण परिहरुं. अ हीं मावा हाथनी जुजा त्रणवार पुंजीए अने जय सो ग दुगंठयायवज्जिज्ञा के० जय, शोकने दुगंठा ए त्रण वर्जुं. अहीं जमणा हाथनी जुजा त्रणवार पुंजीये. ए जुअजुअलं के० जुजा जुगलने पेहंतो के० पमिलेहतो अको ए ठ वोळ कह्या ते चिंतवे. हवे सिसे के० मस्त

કની ત્રણ પમિલેહણા કરતો યકો અપસન્નલેસતિગં
 કે૦ અપ્રશસ્ત જે ત્રણ લેશ્યા એટલે કૃષ્ણ, નીલ ને
 કાપોત એ ત્રણ માઠી લેશ્યાને ઠાંમું; એવં નવ થઈ. હવે
 વયણે કે૦ વદન જે મુખ તેની પમિલેહણ કરતો યકો
 ગારવતિગં કે૦ રુદ્ધિ ગારવ, રસ ગારવ અને સાતા ગા
 રવ એ ત્રણ ગારવને ઠાંમું. અને નઅરિ કે૦ હૃદયની પ
 મિલેહણા કરતો યકો હૃદય યકી સદ્ભવતિગં કે૦ માયા
 શલ્ય, નિયાણ શલ્ય અને મિથ્યાત્વ શલ્ય એ ત્રણ શ
 લ્ય કાઢું; એવં પંદર થઈ. તથા કસાય ચન્ન કે૦ ક્રોધ,
 માન, માયા અને લોજ્ઞ એ ચાર કષાય તે પિંદે કે૦ પુઠે
 બે પાસાંની પમિલેહણા કરતો ઠાંમું. અને પયજુઅલે
 કે૦ બે પગને પમિલેહતો યકો ષ જીવવહં કે૦ પૃથ્વી
 કાયાદિક જીવોની જે ષ નિકાય છે, તેની જયણા ક
 રું; એવં પચીશ. તે તણુ કે૦ શરીરની પેહાણ કે૦ પમિ
 લેહણા કરતો યકો વિજાણવિણં કે૦ મન ઠામે રાખ
 વાને એવી રીતે મનમાં ચિંતવે. જહવિ પમિલેહણા
 કે૦ જોપણ એ પમિલેહણા જે છે તે જિઅરસ્કણં કે૦
 જીવ રક્તાનો હેન કે૦ કારણ જ્ઞવ્ય જીવને છે. એમ જિ
 ણાણાય કે૦ તીર્થીકરની આજ્ઞા છે, તહવિ કે૦ તોપણ

ए ध्यानते मणमकर के० मनरूप मांकमाने निज्जंत
 एतं के० वश राखवाने अर्थे ठे, इमं के० ए रीते मु
 णि विंति के० पूर्वाचार्य कहे ठे.

ए शरीरनी जे पचीश पन्निहणा कही तेमा
 श्री स्त्रीनुं मस्तक ठांक्युं होय माटे मस्तकनी त्रण त
 था हृदय ठांक्युं होय माटे हृदयनी त्रण तथा बे पासां
 ठांक्यां होय माटे बे पासांनी चार, ए रीते दश पन्नि
 लेहणा शरीरनी उगी थाय ठे.

अने साध्वीनुं तो मस्तक उघामुं होय माटे म
 स्तकनी त्रण पन्निहणा करे, तेवारे साध्वीना शरी
 रनी अठार पन्निहणा थइ शकेठे. ॥ इति मुहपत्ति
 पन्निहण विचार समाप्तः ॥

विधिः—मुहपत्ति पन्निहणा पढी खमासमणुं दे
 इ पढी इच्छाकारेण संदिसह जगवन् सामायक संदि
 साहु, इच्छं एम कही खमासमणुं देइ इच्छाकारेण संदिस
 ह जगवन् सामायक ठानं, इच्छं एम कही बे हाथ जोमी
 नवकार गणी इच्छकारी जगवन् पसाय करी सामाय
 दंम उचरावोजी. पढी गुरुके वमिल करेमिजंते कहे.

करेमिज्जंतेना तुटा शब्दना अर्थ.

करेमि - करुं छुं
भंते - भदंत-कल्याणकारी
सामाइयं - सामायिक
सावज्जं - सावद्य-पापवाला
जोगं - योगने
पच्चरुक्खामि - त्याग करुं छुं
नियमं - नियमने
पज्जुवासामि - सेवीश-सेवुं
दुविहं - वे प्रकारना

तिविहेणं - त्रण प्रकारे करीने
मणेणं - मने करीने
वायाए - वचने करीने
कायेणं - कायाए करीने
कारवेमि - करावुं
निंदामि - निंदुं छुं
गरिहामि - निंदुं छुं (गुरुनी
साक्षीए)

॥ अथ करेमिज्जंते ॥

करेमि ज्जंते सामाइयं, सावज्जं जो
गं, पच्चरुक्खामि, जाव निअमं, पज्जु
वासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं,
वायाए, काएणं, न करेमि, न का
रवेमि, तस्स ज्जंते, पम्भिकमामि, निं
दामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसि
रामि, इति ॥

अर्थ:-करेमिज्जंते सामाइयं केप करुंछुं हे जगवं

त (वे घनीनुं) सामायक व्रत; जीवने समता परि
 णाममां राखवुं तेने सामायक कहिये ते सामायकमां
 सावज्जं के० जेणे करी पाप लागे तेने सावद्य कहिये ते
 नो जे जोगं के० व्यापार तेने पच्चस्कामि के० पचखुं
 एट्ठे निषेधुं बुं. जाव नियमं के० ज्यां लगे सामायक
 सेववानो नियमठे त्यां लगे पज्जुवासामि के० ते सेवुं बुं
 विहंके० वे प्रकारनो सावद्य व्यापार ते तिविहेणं के०
 त्रण प्रकारे न करवो. ते त्रण प्रकार कहेठे एक मणेशं
 के० मने करी बीजो वायाए के० वचने करी त्रीजो का
 एणं के० कायार्ये करी. हवे पूर्वोक्त वे प्रकारनो सावद्य
 व्यापार जे कह्यो ते न करेमि के० सावद्य व्यापार हुं
 न करुं न कारवेमि के० बीजा पासं सावद्य व्यापार
 करावुं नहीं; पण पुत्र स्त्री वाणोतर प्रमुख जे सावद्य
 व्यापार करेठे तेमाटे अनुमति मोकली ठे ए द्विविध
 त्रिविध कहिये तस्स के० ते सावद्य व्यापारथी जंते के०
 हे जगवंत हुं पम्पिक्कमामि के० पम्पिक्कमुं निवर्तुं के
 वीरीते जे निंदामि के० आत्मानि साखे निंहुं, गरि
 हामि के० गुरुनी साखे गरहुं; अप्पाणं के० पापनो

करनार एहवो जे महारो आत्मा तेने पाप थकी वो
सिरामि के० वोसिरावुं बुं. इति ॥

विधिः—पढी खमासमणुं देइने इच्छाकारेण सं
दिसह जगवन् बेसणे संदिसाहु, इच्छं. खमासमणुं दे
इ, इच्छा० बेसणे ठानं; इच्छं. खमासमणुं देइ, इच्छा० स
ज्ञाय संदिसाहु. इच्छं खमासमणुं देइ, इच्छा० सज्ञाय
करुं एम कही बे हाथ जोमी त्रण नवकार गणवा. प
ढी बे घमी सामायकमां रहे, ज्ञान ज्ञणे, के नवकार
वाली गणे, शास्त्र सांजले वगेरे संवरमां रहे. बे घमी
थइ रहे त्यारे सामायक पारे ते वखते खमासमणुं
देइ इरियावहि पम्किमीए त्यांथी लोगस्स कहीए
त्यां सुधी सामायक लेवा प्रमाणे करवुं पढी खमास
मणुं देइ इच्छाकारेण संदिसह जगवन् मुहपत्ति पम्कि
लेहु, इच्छं एम कही मुहपत्ति पम्किलेही पढी खमासमणुं
देइ इच्छाका० सामायक पारु, यथाशक्ति; खमासमणुं
देइ इच्छाका० सामायक पार्युं, तहत्ति; एम कही ज-
मणो हाथ चरवलापर स्थापी माथुं नमावी सामाइ
अवयजुत्तो ज्ञणे.

सामाश्य वय जुत्तोना बुटा शब्दना अर्थ.

सामाश्य - सामायक-ना

वय - व्रत

मणे - मन

होइ - होय

नियम - नियम

छिन्नइ - छेदे

असुहं - अशुभ

कम्मं - कर्मने

जत्तिआ - जेटली

वारा - वार

सामाश्रंमि } सामायिकने विषे
सामायिके }

उ - तो

कए - कर्ये

इव - जेम-पेटे

सावओ - श्रावक

जम्हा - जेकारणमाटे

एएण - एणे

कारणेणं - कारणे करीने

बहुसो - घणीवार

कुज्जा - करवुं जोइए

॥ अथ सामाश्य वयजुत्तो ॥

सामाश्य वयजुत्तो, जाव मणे होइ

नियम संजुत्तो ॥ छिन्नइ असुहं कम्मं,

सामाश्य जत्तिआ वारा ॥ १ ॥

सामाश्रंमि उ कए, समणो इव सा

वउ हवइ जम्हा ॥ एएण कारणेणं,

बहुसो सामाश्यं कुज्जा ॥ ५ ॥ सा

(९०)

सायिक विधिं लीधूं, विधिं पायूं
विधि करतां जे कोइ अविधि हुन
होय॥ ते सविहुं मन वचन कायायें क
री ॥ मिच्छामिडुकमं ॥ इति

अर्थः—सामाइयवयजुत्तो के० बे घनीनुं जे सामा
यकव्रत तेणेकरीने युक्त, जाव मणे के० ज्यांतगें
मन मनमांहे नियमसंजुत्तो के० ए नियम सहित होय
त्यांतगे, ठिन्नई असुहं कम्मं के० अशुज्जकर्मने ठेदे.
सामाइअ जत्तिआ वारा के० सामायक जेटली वार करे
तेटली वार अशुज्ज कर्मने टाळे ॥ १ ॥

वली, सामाइअंमि नु कए के० सामायक कर्यें ठ
ते, समणो इव के० साधुनी परे, सावण हवइ के० श्रा
वक पण निष्पापी होय, जम्हा के० जे माटे, सामायक
करवाथी एवा परिणाम आय ठे तो, एएण कारणेणं
के० एकहुंजे कारण ते कारणे करी, बहुसो सामाइअं
कुळा के० घणां सामायक करियें ॥ २ ॥

सामाइय पोसहसं, ठिअजीवस्स

(६१)

जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बो
धवो, सेसो संसार फल हेउ ॥ १ ॥

अर्थ:—सामाइअके० सामायक अने पोसह के०
पोसह तेने विषे संविअ के० रह्यो थको जीवस्स के०
जीवनो जाइ जो कालो के० जे काल जाय ठे सो सफ
लो के० ते कालने सफल बोधवो के० जाणवो अने सा
मायक तथा पोसहविना शेष जे काल ठे ते संसार फ
लहेउ के० संसारना फलनो हेतु जाणवो ॥ ३ ॥

विधि:—देवसि पम्किमणुं करतां सामायक ली
धा पढी सञ्चाय करवानो आदेश माग्या पढी वे
हाथ जोम्नी त्रण नवकार गणी पढी पाणी पीधुं होय
ते मुहपत्ति पम्किलेहे अने खाधुं होय तो मुहपत्ति पम्कि
लेही वे वांदणां दे ते (सुगुरु) वांदणासूत्र लखीए ठीए.

वांदणाना लुटा शब्दना अर्थ:—

अणुजाणह:—आज्ञा आपो.
मिडग्गहं—मित अवग्रह.
३॥ हाथ प्रमाण जग्ग्या.
निसीहि—निषेधुं छुं.

अहो—अधो—नीची.
कायं—शरीर.
संफासं—फरस, संस्पर्श.
खमणिज्जो—खमजो.

मायिक
विधि व
होया॥ ते
री ॥ निष्ठा

अर्थ:-सामाइ

यकव्रत तेणेकरीने
मन मनसांहे नियमस
त्यांलगे, विन्नई असुहं
सामाइअ जत्तिआ वारा के
तेटली वार अशुभ कर्मने

वली, सामाइअमि उ
ते, समणो इव केण साधुनी
वक पण निष्पापी होय, जम्हा
करवाथी एवा परिणाम थाय ते
के० एकहुंजे कारण ते कारणे
कुळा के० घणां सामायक करिये

सामाइय पोसहसं, वि

अन्नवराए-अनेरी, बीजी.
जोकोवे-जे कांड.
मिच्छाए-मिथ्या (भावरूप
आशातना) वडे.
मज-मन (नी)
दुक्काए-पापरूप (आशातना)
वय-वचन (नी)
आय-शरीर (नी)
कोहाए-क्रोधे करी
माने करी
करी
करी
संबंधी

उपच

(७३)

णिजाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाण
ह, मे, मिजगहं ॥२॥ निसीहि, अहो, का
यं, काय, संफासं, खमणिज्जो, जे, कि
दामो, अप्पकिळंतणां, बहुसुत्तेण, जे,
दिवसो, वइक्कंतो ॥३॥ जत्ता, जे ॥४॥ ज, व,
णि, जं, च, जे ॥५॥ खामेमि, खमासमणो,
देवसिअं, वइक्कम्मं ॥६॥ आवसिआए,
पम्किमामि, खमासमणाणं, देवसि
आए, आसायणाए, तित्तीसन्नयरा
ए, जंकिंचि, मिच्छाए ॥ मणइक्कमाए, व
यइक्कमाए, कायइक्कडाए, कोहाए, मा
णाए, मायाए, लोच्चाए, सब्बकालिआ
ए, सब्ब मिच्छेवयाराए, सब्ब धम्माइक्क
मणाए, आसायणाए, जो मे अइआ
रो कज्ज, तस्स, खमासमणो, पम्कि
मामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं

भे-भगवंत.

किलामो-किलामणा, थाक.

अप्प-अल्प, थोडा.

किलंताणं-थाकेलाने. थोडा
श्रमवालाने.

बहु सुभेण-बहु शुभवडे, घणे
कुशलपणे.

दिवसो-दिवस.

वइक्कंतो-वीसो, गयो.

जत्ता-यात्रा (तप, संयम नि
यमरूप.)

जवणिज्जं-शरीर, (इंद्रियो अ
ने मन.)

खामेमि-खमाबुंछुं, खामुंछुं.

देवसियं-दिवस संबंधी.

वइक्कम्मं-व्यतिक्रम. अपराध.

आवसिआए-अवश्यकर्तव्यथी

खमासमणाणं-क्षमाश्रमणोनी
(संबंधी.)

देवसिआए-दिवस संबंधी.

आसायणाए-आशातनाए क
रीने.

तिच्चीस-तेत्रीश.

अन्नयराए-अनेरी, बीजी.

जंकिचि-जे कांड.

मिच्छाए-मिथ्या (भावरूप
आशातना) वडे.

मण-मन (नी)

दुक्कडाए-पापरूप (आशातनाए)

वय-वचन (नी)

काय-शरीर (नी)

कोहाए-क्रोधे करी

माणाए-माने करी

मायाए-मायाए करी

लोभाए-लोभे करी

कालिआए-काळ संबंधी

मिच्छोवयाराए-मिथ्या उपचा

रवडे, कुडकपटवडे.

सव्वधम्म-सर्व धर्म ते आठ प्र

वचन मातारूप.

अइक्कमणाए-ओळंघवा रूप.

जो-जे.

मे-में, मारे जीवे

अइआरो-अतिचार

कओ-कयों

॥ अथ सुगुरु वांदणां ॥

इत्तामि खमासमणो, वंदिनं, जाव

(७३)

णिजाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाण
ह, मे, मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि, अहो, का
यं, काय, संफासं, खमणिज्जो, जे, कि
लामो, अप्पकिलंताणं, बहुसुत्तेण, जे,
दिवसो, वइक्कंतो ॥३॥ जत्ता, जे ॥४॥ ज, व,
णि, जं, च, जे ॥५॥ खामेमि, खमासमणो,
देवसिअं, वइक्कम्मं ॥६॥ आवसिआए,
पम्भिमामि, खमासमणाणं, देवसि
आए, आसायणाए, तित्तीसन्नयरा
ए, जंकिंचि, मिह्वाए ॥ माणउक्कमाए, व
यउक्कमाए, कायउक्कडाए, कोहाए, मा
णाए, मायाए, लोअ्जाए, सबकादिआ
ए, सब मिह्वावयाराए, सब धम्माइक्क
माणाए, आसायणाए, जो मे अइआ
रो कउ, तस्स, खमासमणो, पम्भि
मामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं

वोसिरामि ॥ ७ ॥ इति ॥

बीजी वारने वांदणे 'आवसिआए' पद
न कहेवुं राइ पस्कि चनुमासी संवत्स
रीए आम पाठ कहेवो ॥ राइ वइकंता,
चनुमासी वइकंता, परको वइकंतो, सं
वत्तरो वइकंतो, एम कहेवुं.

अर्थ—इच्छामि के० इहुं तुं—वांहुं तुं. खमास
मणो के० हे कमा श्रमण तमने. वंदिनुंथी निसीहिआ
ए सुधी उज्जां थकां कहेतो थको वंदन करवानी इच्छा
जणावे; पढी ते शिष्य लगायेक नीचो नमी उज्जो रहे
त्यारे गुरु कहे के, उंदेण के० तमारी इच्छाथी वंदना
करो. पढी शिष्य कहे. अणुजाणह के० अनुमति ते
आज्ञा आपो, मे के० मने मिनुगहं के० मित एटवे
मव्यो जे अवग्रह सामात्रण हाथ रूप तेमां आववानो,
त्यारे गुरु कहे के अणुजाणामि के० आज्ञा आपुं तुं.
वली शिष्य कहे जे निसीहि के० पाप व्यापारनो नि
षेध करीने विधिए युक्त वांडुं तुं. एम कहीने जूमिने
पुंजतो थको आधो आवी संमासा पुंजीने बेसे. पढी

(६५)

शिष्य कहे के अहोकायं के० अधःकाय एटले तमारां
चरण रूप जे हेठेनी काय ठे ते, काय संफासं के०
मारा मस्तकरूप कायाये करी फरसुं; ते तमारे खम-
णिज्जो जे के० खमवुं. हे जगवन्, किलामो के० पग
फरसतां जे किलामणा उपनी होय ते. एम खमावी
माथे हाथ चढावी कुशलता पूढे; अप्पकिलंताणं के०
किलामणारहित एवा तमने थोला श्रम एटले थोला
प्रयासे करी बहुसुज्जेणं के० घणी निराबाध संयम क्रि
या समाधीए करी, जे के० जगवन् तमारो दिवसो व
इकंतो के० दिवस व्यतिक्रम्यो के० वीत्यो ते वारे गुरु
कहे, तद्वत्ति के० जेम तें कहुं तेमज अमारो दिवस
वीत्यो ठे. वली शिष्य बे हाथ जोली, जत्ता जे कहेतो
थको त्रण आवर्त्त करे. ते केम—इश आंगलीनु समी
राखी गुरुना पगने हाथ लगामतो थको पहेलो (ज)
अक्षर नीचे सादे कहे अने बीजो (ता) अक्षर मध्यम
सादे कहे. त्रीजो (जे) अक्षर निलामे के० कपाले फ
रसतो नुंचे सादे कहे. एटले त्रणे अक्षरे पहेलो आवर्त्त
जंत्ताजे के० सुखे संयमनी यात्रा ठे तमने ? तेवारे गु
रु कहे तुप्रंवि वट्टए के० तुजने पण यात्रा वर्त्ते ठे. ए

जेम त्रणे अक्षरे पहेलो आवर्त कह्यो तेम बीजो अने
 त्रीजो आवर्त पण शिष्येज कहेवो. ते आ प्रमाणे—ज
 व णि ऊं च ज्ञे के० तमारां पांच इंद्रिय अने नोइंद्रिय
 एटले मन ए ठ वानां तमारे वश ठे ? अथवा तमारुं
 शरीर निराबाध ठे ? तेवारे गुरु कहे एवं के० एमज
 निराबाध ठे—वश ठे. वली शिष्य बे हाथ अने मस्तक
 गुरुना पगे लगानीने कहे खामेमि खमासमणो के०
 खमावुं ठुं हे क्कमाश्रमण, क्कमाने विषे उद्यमवंत, दे
 वसियं वक्कमं के० दिवस व्यतिक्रम्यो ते संबंधी अप
 राध. त्यारे गुरु कहे अहमवि खामेमि तुम्हं के० हुं
 पण तमने खमावुं ठुं. पढी शिष्य उज्जो अइ अवग्रह
 घी बाहेर नीकलतो कहे आवस्सियाए के० अवश्य क्रि
 या जे पम्पिलेहणादिक ते करवाने अर्थे अवग्रह बाहेर
 नीकली उज्जो अइ कहे पम्पिक्कमामि के० पम्पिक्कमुं ठुं,
 निवर्त्तुं ठुं खमासमणाणं के० हे क्कमावंत यति तमने
 देवसिआए आसायणाए के० दिवस संबंधी आशातना,
 तित्तीसन्नयराए के० तेत्रीशमांनी अनेरी कोइ एके आ
 शातना कीधी होय, जं किंचि मिह्याए के० जे कांइ
 मिह्यात्व एटले खोटा ज्ञावघी घेयावच्च विषे सर्व बल

उतां नही करवानी बुद्धिही निर्बलपणुं देखामतो मुखे
 खोटा उपचारे करी आशातना कीधी होय, मण डु
 क्कमाए के० गुरुनी उपर मने करी मातुं चिंतव्युं होय,
 वयडुक्कमाए के० वचन डुष्कृत एटले असंबंधवचने
 करीने, कायडुक्कमाए के० कायाए करी मातुं करयुं होय,
 कोहाए के० क्रोधे करी, माणाए के० मान अहंकारे
 करी, मायाए के० मायाये करी, लोहाए के० लोभे
 करी, सब कालियाए के० सर्वकाल अतीत अनागत त
 था वर्तमान कालने विषे, मित्रोवयाराए के० सर्व मि
 थ्या उपचार जे उपाय—तेणे करी जे खोटा मने वि
 नय साचव्यो होय, सबधम्माइक्कमणाए के० जेणे क
 री सर्व जिनधर्मनो अतिक्रम थयो होय, एटले आव
 प्रवचन मातारूप सर्व धर्मने अतिक्रमवे करी, इत्यादि
 क आसायणाए के० आशातनाए करी जो मेअइयारो
 कनु के० जे में अतिचार अपराध कीधो होय, तस्स
 के० ते अपराध खमासमणो के० हे क्कमाश्रमण, क
 मावंत गुरु, पणिक्कमामि के० ते अपराधने हुं तमारी
 साखे पणिक्कमुंहुं. निंदामि के० ए पापोने आत्मानि सा
 खे निंडुंहुं. गरिहामि के० गुरुनी साखे गरहा करुंहुं,

અપ્પાણં વોસિરામિ કે^૦ પાપનો કરનારો એવો મારો
 આત્મા તેને વોસિરાવું. એટલે આશાતનાનિમિત્ત જે
 કાલે ઝપની જે મતિ તે રૂપ આત્માને ઢાંકું.

એ પ્રમાણે બે વાર વાંદણાં દેતાં ૨૫ આવશ્યક
 સાચવવા તે પચ્ચીશ આવશ્યકની ગાથા લખીએં ઢીએં.

દોવણાયમહાજાય, આવત્તા બારચઠ

સિર તિગુત્તં ॥ ડુપ્પવેસિગ નિસ્ક

મણાં, પણવીસાવસય કિઠ્ઠકમ્મે ॥૧॥

અર્થ—દોવણાય કે^૦ બે વાર શરીરને નમારું,
 ત્યાં એક તો ઇચ્છામિશ્વમાસમણો—નિસીહિઆએ એમ
 કહીને નમે તે વારે એક અવનત, એમજ બીજી વારને
 વાંદણે બીજો અવનત, એ બે અવનત એટલે નમવાના
 બે આવશ્યક થયા. અહાજાય કે^૦ યથાજાત એટલે બા
 લકને જન્મ અવસરે બે હાથ જોમીને કપાળે લગાને
 લા હોય એવી સ્થિતિમાં વાંદણાં લેવાં એ ત્રીજું યથા
 જાત આવશ્યક. આવત્તા બાર કે^૦ બાર આવર્ત તે અ-
 હો, કા-યં, કા-ય એ બે અક્ષરે ત્રણ આવર્ત થાય તે
 અ અક્ષર ત્રણતાં દશ આંગુલીનું નંધી ગુરુ ચરણે લ
 ગાને અને હો અક્ષર ત્રણતાં તે સીધી કરી પોતાનો

(एए)

ललाट देश फरसे ए रीते का-यं, का-य एम त्रण
 आवर्त थयां ते पढी संफासंथी वइकंतो सुधी यथा
 जात मुझए ज्ञणी पढी ज-ता-जे, ज-व-णि, जं,
 च,-जे ए त्रण आवर्त वांदणाना अर्थमां बताव्या प्र
 माणे करे, ए ठ आवर्त थयां; अने बीजा वांदणानां ठ
 आवर्त मळी बार आवर्तना बार आवश्यक थया ते
 पहेलाना त्रण साथे मेळवतां पंदर आवश्यक थया.
 चउसिरके० चार बार मस्तक नमामवुं एटले पहेले वांदणे
 बे बार अने बीजे वांदणे बे बार मस्तक नमामवुं, एरीते
 चार आवश्यक एवं जुगणीश. त्रण गुप्तिः-मन, वचन
 अने कायाने इव्य तथा ज्ञावथी अयत्नाए न प्रवर्ता
 वे ते त्रण आवश्यक एवं बावीश.

दुष्पवेस के० बे बार गुरुनी आज्ञा मागीने अवग्रहमां
 पेसवुं ए बे आवश्यक अने पहेला वांदणामां आवसिआ
 ए कहेतोबहार निकले ते इगनिखमणे के० एक बार नि
 कलवानो एक आवश्यक एवं पचीश आवश्यक थया. ए
 पचीश आवश्यक वांदणां देतां अवश्य साचवदा.

विधिः-बे वांदणां दीधा पढी यथाशक्ति प
 चस्काण करवुं.

सांजना पञ्चस्काणना तुटा शब्दना अर्थ.

पाणहार-उष्ण पाणीनोआहार
चरिमं-छेडो (त्याग करे)
पच्चरुखाइ-पच्चरुखाण करे,
अन्नथ-अन्यत्र, विसरी जवाथी
अणाभोगेणं-अजाणपणे
सहसा-सहसात्कारे
आगारेणं-आगारवडे

महत्तर-मोटा (रहे छते)
सव्वसमाहिवात्ति-सर्वअसमाधि
असणं-खोराक
पाणं-पाणी
खाइमं-खादिम
साइमं-स्वादिम

तिविहारा अढम, ठठ, उपवास करेते तथा आं
बिल नीवी एकासणुं बेसणुं करनार सांजे पाणहारनुं
पच्चस्काण करे. खाधुं होय ने रातरे तांबुल तथा पा
णी वापरवुं होयते डिविहारनुं, एकलुं पाणी वापरवुं हो
य ते तिविहारनुं, अने पाणीए न वापरवुं होयते चउवि
हारनुं पच्चस्काण करे.

पाणहार दिवसचरिमनुं पच्चस्काण

पाणहार १ दिवसचरिमं २ पच्चस्काइ, अन्नहणा
३ भोगेणं, ४ सहसागारेणं, ५ महत्तरागारेणं,

१ दिवस चरिमं=दिवसना छेडाथी मांडीने नवो सुरज उगे त्यां
सुधी.

सर्वसमाह्वितियागारेणं, वोसिरे ॥ १ ॥

दिवसचरिमि चनुविहार

दिवस चरिमं पञ्चस्काइ चनुविहंपि आहारं असणं
पाणं खाइमं साइमं, अन्नठणान्नोगेणं, सहसागारेणं,
महत्तरागारेणं, सर्वसमाह्वितियागारेणं वोसिरे ॥ २ ॥

तिविहार.

दिवस चरिमं पञ्चस्काइ १ तिविहंपि आहारं अस
णं, खाइमं, साइमं, अन्नठणान्नोगेणं, सहसागारेणं, म
हत्तरागारेणं, सर्वसमाह्वितियागारेणं वोसिरे ॥ ३ ॥

दुविहार.

दिवसचरिमं पञ्चस्काइ १० दुविहंपि आहारं ११ अ
सणं खाइमं अन्नठणान्नोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरा
गारेणं, सर्व समाह्वितियागारेणं, वोसिरे ॥ ४ ॥

२ पञ्चस्काइः पञ्चखुं छुं त्यागकरुंछुं. गुरु पञ्चस्काइ कहें अने
पञ्चस्काण करनार पञ्चस्कामि कहें.

३ अन्नस्थ=बीजे ठेकाणे एटले पञ्चस्काणनो उपयोग विसर-
वाथी-अणाभोगेणं=अजाणपणे अनुपयोगे कोइ वस्तु मांमां मुकवा
थी पञ्चस्काण न भांगे, परंतु वचमां पञ्चस्काण सांभरे तयारे त-
रत म्होंमांथी थुंकी काढे, म्होंथी हेठुं उतर्युं पछी तरत अथवा
मोडुं सांभरे तो पण पञ्चस्काण न भांगे. पण शुद्ध व्यवहार माटे

વિધિ:-પચ્ચક્ષાણ કર્યા પછી ઇચ્છામિશ્વમાસ-
મણો^૦ ઇચ્છાકા^૦ ચૈત્ય વંદન કરૂ, ઇચ્છં એમ કહે, વમેરા
કે પોતે ચૈત્યવંદન કરે. પ્રસંગથી ગ્રાસ્તુ ચૈત્યવંદન
શ્રોય સુધી લખીએ ઢીએ.

ફરી નિર્જીરક ન થાય, માટે યથાયોગ્ય પ્રાયશ્ચિત્ત લેવું. ૫ રીતે સ-
ર્વ આગારોને વિષે જાણી લેવું.

૪ સહસા^૦-કરેલા પચ્ચક્ષાણનો ઉપયોગ તો વિસર્યો નથી. પ-
ણ કામમાં પ્રવર્તતાં સહસાત્કારે ઇટલે એકાએક મુશ્કમાં પેસી જાય,
જેમ મેંસ દોહતાં, દહી વલોવતાં, ઘી તોલતાં અચાનક મુશ્કમાં
છાંટો પડે અથવા ચઝવિહાર ઉપવાસે ચોમાસામાં મેઘના છાંટા
મુશ્કમાં પડે તો પચ્ચક્ષાણ ન ભાંગે.

૫ મહત્તરા^૦-મોહોટી નિર્જીરાને લાભે અથવા વડેરાના કહેવાથી
બહુ નિર્જીરાના કારણે પચ્ચક્ષાણ ન ભાંગે.

૬ સન્નિવસમાહિ^૦-સર્વ પ્રકારે શરીરમાં અસમાધિ રહે, ઇટલે
પચ્ચક્ષાણ કર્યા પછી તીવ્ર શૂભાદિક રોગ ઉપને થકે અથવા સા-
પ હશ્યો હોય તેથી જીવ આર્તિમાં પડે, અથવા જ્યારે અકસ્માત્
કષ્ટ થાય ત્યારે સર્વ ઇન્દ્રિયોની સમાધિને અર્થે અપૂર્ણ પચ્ચક્ષાણે પ-
ણ પથ્યઔષધાદિક લેવાં પડે તો તેથી પચ્ચક્ષાણ ભાંગે નહીં; અને
સમાધિ થયા પછી પૂર્વની પરે રહે.

(૭) વોસિરે=ત્યાગ કરે-ગુરુ વોસિરે કહે અને પચ્ચક્ષાણ
કરનાર વોસિરામિ કહે ઇટલે હું ત્યાગ કરું છું.

(૮) ચઝવિહંપિઆહારં^૦-ચાર પ્રકારના પળ આહાર જેવા કે,
અશન, પાન, ખાદિમ અને સ્વાદિમરૂપ.

(૯) તિવિહંપિઆહારં^૦-ત્રણ પ્રકારના પળ આહાર તે અશન,
ખાદિમ, સ્વાદિમ.

(૧૦) દુવિહંપિઆહારં^૦-બે પ્રકારના પળ આહાર તે અશન અ-
સ્વાદિમ.

ચૈત્યવંદનો (૧-૨-૩-૪)ના તૂટા શબ્દાર્થ.

વિમલ-નિર્મલ
કમલા-લક્ષ્મી
કલિત-સહિત

ત્રિભુવન-ત્રણ ભુવન (સ્વર્ગ, મૃ-
ત્યુલોક, પાતાલ)
હિતકર-સુખકારક

(૧૧) અસળ=અશન તે શાલિ, જુવાર, ઘઉં બંટી પ્રમુખ સર્વ જાતિનાં ધાન્ય, ચોખા, મગ અને તૂવર પ્રમુખ સર્વ કઠોલ તથા સાથૂઆદિક સર્વ જાતિના લોટ તથા મોદકાદિક સર્વ જાતનાં પક્વાન્ન તથા સૂરણાદિક સર્વ જાતનાં કંદ, તથા માંડા પ્રમુખ સર્વ જાતની કેલવેલી વસ્તુ તેમજ વેસળ વીંગેરે તે પળ અશન કહીયે.

પાળ=પાળી-કાંજી, જવ ચોખા અને કાકડી પ્રમુખનાં ધોવણ, તથા નદી પ્રમુખ સર્વ જલાશયનાં પાળી, એ સર્વ પાળી કહીયે.

ખાદમ=ખાદિમ તે ચારેક, બદામ, શિંગોડાં, ચણ, કોપરાં, દ્રાક્ષ તથા અખોડાદિક સર્વ જાતનો મેવો, તથા કાકડી, આંવા, ફળસ, નાલિયર પ્રમુખ સર્વ જાતનાં ફલ તથા ધાણી, પહુઆ વગેરે શેકેલાં ધાન્ય, તથા પાપડ પ્રમુખ સર્વ ખાદિમ કહીયે.

સાદમ=સ્વાદિમ તે દાતળ, શુંઠ, હરડે, પીપર, મરી, જાયફલ, કાથો, ચણસ, જેઠીમય, તમાલપત્ર, તજ, ફલ્લી, લવંગ, જાવંત્રી, સોપારી, પાન વીડલવણ (વલવણ), પીપલીમૂલ, ત્રિણિકવાલા, કચુરો મોથ કાંટાશેલીઓ, કપૂર, સંચલ વેહેડાં, આંબલાં, હિંગાળાષ્ટક, હિંગ, ત્રિવિલો, પુષ્કરમૂલ, જવાસામૂલ, આપચીવાવચી, વાવલની, ધવની, ચેરની અને ચીજડાની, છાલ, પાન, તુલસી, કોઠપત્ર, કોઠવડી, આંવાગોટલી વગેરે સ્વાદિમ કહીયે.

(અળહારી વસ્તુનાં નામ.)

લિંબડાનાં ફલ, ફુલ, છાલ, મૂલ અને પત્ર તથા ગાયનું સૂત્ર ગળો, કડુ, કરીઆતું, અતિવિષ. સુખડ, રાચ, હલદર, રોહિણી, ઉપલેટ, વજ, ત્રિફલા, ધમાસો, નાહી, આસંધ, ફલીઓ, ગુગલ, કંથેરમૂલ, પૂંઆડ, મજીઠ, કુંદરૂ, તમાકુ પ્રમુખ અનિષ્ટસ્વાદવાળી વસ્તુ એ સર્વે અળહારી વસ્તુ છે એ અહીંનાં પ્રસંગથી લખી છે.

सुरराज-देवताना राजा (इंद्र)
 संस्तुत-स्तवन करे ल.
 चरण-पग
 पंकज-कमल
 आदि-पहेला
 गिरिवर-मोटो पर्वत
 शृंग-शिखर
 मंडण-शोभावनार, घरेणुं
 प्रवर-उत्तम
 गण-समुह
 भूधरं-पर्वत
 सुर-देव
 असुर-दैत्य
 किन्नर-गवैया देव
 सेवित-सेवेला
 किन्नरी-अप्सरा, गानारी देवी
 मनहर-मनने हरण करे तेवी
 निर्जरावलि-देवतानी श्रेणी
 अहनीश-रात दिवस
 पुंडरिक-रीखवदेवना पहेला ग-
 णधरनुं नाम
 गणपति-गणधर
 साध्य-साधवानुं (मोक्ष)
 साधन-साधवाने माटे
 सुर-थुरा

वर-उत्तम
 केडिनंत-अनंत क्रोड
 रमणी-स्त्री
 सुरलोक-देवलोक
 गिरिवरतो-गिरिवरथी
 अपरं-बीजुं
 तीर्थपति-तीर्थकर
 विहंडण-नाश करनार
 परम-उत्कृष्ट
 ज्योति-तेज
 निपाइए-निपजावीए
 जीत-जीखा छे
 कोह-क्रोध
 विछोह-वियोग
 निद्रा-उंघ
 परमपद-मोक्षपद
 स्थित-रहेलुं
 तत्पर-तैयार
 दोहग-दौभाग्य, दरिद्रता
 जपतां-जाप करतां
 अष्टोत्तर-आठ वधारे
 सय-सो
 प्रवचन-सिद्धांत
 थेराणं-स्थविर मुनि
 पाठक-उपाध्याय

ગરિષ્ઠ-ગરિષ્ઠ, સૌથી મોટા
 નાણસ્ત-જ્ઞાનને
 ધ્યાવ-ધ્યાન કરવું
 વંશવય-વ્રહ્મચર્યવ્રત
 ધારિણં-ધારનારને,
 કિરિયાણં-ચારિત્રની ક્રિયા
 તવસ્ત-તપને
 ગોયમ-ગૌતમ
 સુઅસ્ત-શ્રુતને
 તીર્થસ-તીર્થને
 સુખલાણી-સુખનીલાણ

પચવીશ-પચીશ
 પળવીશ-પચીશ
 અડવીસ-અઠાવીશ
 ગુણીશ-ગુણવંત
 દ્વાદશ-વાર
 સંચ-સંચય (જથ્થો)
 સંક્ષેપથી-ટુંકામાં
 લેશ-લગાર
 પદ-પગ-ચરણ
 પદ્મ-કમલ-અથવા પદ્મવિજય

॥ ૧ ॥ શ્રી શત્રુંજય તીર્થનું ચૈત્ય વંદન.

॥ *વિમલ કેવલ જ્ઞાન કમલા, કલિત ત્રિભુવન
 હિતકરં ॥ સુરરાજ સંસ્તુત ચરણ પંકજ, નમો આદિ
 જિનેશ્વરં ॥ ૧ ॥ વિમલ ગિરિવર શૃંગ મંરુણ પ્રવરગુણ
 ગણ બ્રૂધરં ॥ સુર અસુર કિન્નર કોમિ સેવિત, નમો આ
 દિજિનેશ્વરં ॥ ૨ ॥ કરતિ નાટિક કિન્નરી ગણગાય જિ
 ન ગુણ મનહરં ॥ નિર્જરાવલિ નમે અહનિસ, નમો
 આદિ જિનેશ્વરં ॥ ૩ ॥ પુંરુરીક ગણપતિ સિદ્ધિસાધિ,

* નિર્મલ કેવલ જ્ઞાનરૂપી લક્ષ્મી વડે સહિત સ્વર્ગ સૃત્યુલોક
 અને પાતાલ એ ત્રણ ભુવનને હિત કરનાર અને દેવોના રાજા જે
 ઇન્દ્રો તેમણે સમ્યક્ પ્રકારે સ્તન્યા છે ચરણ કમલ તે જેમનાં પદા
 આદિશ્વરભગવાનને નમસ્કાર થાઓ ॥ ૧ ॥

मो श्रेयाणं पांचमे, पाठक गुण ठठे ॥ नमो लोए सब
साहूणं, जे ठे गुण गरिठे ॥ ९ ॥ नमो नाणस्स आ
ठमे, दरशन मन ज्ञावो ॥ विनय करो गुणवंतनो,
चारित्रपद ध्यावो ॥ ३ ॥ ॥ नमो बंजवय धारिणं, ते
रमे किरियाणं ॥ नमो तवस्स चौदमे, गोयम नमो
जिणाणं ॥ ४ ॥ चारित्र ज्ञान सुअस्सनेंए, नमो तीठ
स्स जाणी ॥ जिन उत्तम पद पद्मनें, नमतां होय सु
ख खांणी ॥ ५ ॥

॥ ४ ॥ वीशस्थानक तपना कानस्सग्गनुं चैत्यवंदन ॥

॥ चोवीश पन्नर पिस्तालीश, ठत्रीशनो करि
ये ॥ दश पचवीश सत्तावीशनो, कानस्सग्ग मन ध
रिये ॥ १ ॥ पंच समसठि दश वली, सितेर नव पण
वीश ॥ बार अरुवीश लोगस्सतणो, कानस्सग्ग धरो गु
णीश ॥ २ ॥ वीश सत्तर एकावन्न. द्वादशने पंच ॥

॥ एणि पेरे कानस्सग्ग

॥ ३ ॥ अनुक्रमे कानस्सग्ग

श; ॥ स्थानक

ज्ञाव धरी मनमां

उत्तम पद पद्मनें

(१७६)

जंकिंचिना बुटा शब्दना अर्थ.

जं-जे
किंचि-कोइ
नाम-नाम
तिथं-तीर्थ
सग्गे-स्वर्गे-स्वर्गमां
पायालि-पातालमां

माणुसे-मनुष्यसंबंधी (मां)
जाइं-जे (बहु)
बिंवाइ-बिंबो, प्रतिमाओ.
ताइं-ते (बहु)
सच्चाइं-सर्व

॥ अथ जंकिंचि. ॥

जं किंचि नाम तिहं ॥ सग्गे पाया
लि माणुसे लोए ॥ जाइं जिण बिंवा
इं ॥ ताइं सच्चाइं वंदामि ॥ इति ॥ १७ ॥

अर्थ:-जं किंचि नाम तिहंके० जेकोई नामेकरी
तीर्थ ठे, सग्गे के० स्वर्गनेविषे पायालिके० पातालने
विषे, माणुसे लोएके० मनुष्यलोकनेविषे, जाइं जिन
बिंवाइंके. जे काइं जिन तीर्थकरना बिंब ठे ताइं स-
च्चाइं वंदामि के० ते सर्व बिंबने हुं वांछुं बुं. इति.

नमुठ्ठुणांना बुटा शब्दना अर्थ.

नमुठ्ठु-नमस्कार हो. [अव्यय]
णं-वाक्यनो अलंकार बतावनार

आइगराणं-आदिना करनार
शरुआतना करनार

मो थेरानं पांचमे, पाठक गुण ठे ॥ नमो लोए सब
 साहूणं, जे ठे गुण गरिठे ॥ २ ॥ नमो नाणस्स आ
 ठमे, दरशन मन ज्ञावो ॥ विनय करो गुणवंतनो,
 चारित्रपद ध्यावो ॥ ३ ॥ ॥ नमो बंज्रवय धारिणं, ते
 रमे किरियाणं ॥ नमो तवस्स चौदमे, गोयम नमो
 जिणाणं ॥ ४ ॥ चारित्र ज्ञान सुअस्सनेए, नमो तीठ
 स्स जाणी ॥ जिन उत्तम पद पद्दाने, नमतां होय सु
 ख खांणी ॥ ५ ॥

॥ ४ ॥ वीशस्थानक तपना कानस्सग्गनुं चैत्यवंदन ॥

॥ चोवीश पन्नर पिस्तालीश, ठत्रीशनो करि
 ये ॥ दश पचवीश सत्तावीशनो, कानस्सग्ग मन ध
 रिये ॥ १ ॥ पंच समसठि दश वली, सितेर नव पण
 वीश ॥ बार अरुवीश लोगस्सतणो, कानस्सग्ग धरो गु
 णीश ॥ २ ॥ वीश सत्तर एकावन्न. द्वादशने पंच ॥
 ॥ एणि पेरे कानस्सग्ग जो करे, तो जाये ज्ञवसंच
 ॥ ३ ॥ अनुक्रमे कानस्सग्ग मन धरो, गुणि लेजो वी
 श; ॥ स्थानक एम जाणिए, संक्षेपथी लेश. ॥ ४ ॥
 ज्ञाव धरी मनमां घणो, जो एक पद आराधे, ॥ जिन
 उत्तम पद पद्दाने. नमी निज कारज साधे ॥ ५ ॥ इति

(१०६)

जंकिंचिना ब्रुटा शब्दना अर्थ.

जं-जे
किंचि-कोइ
नाम-नाम
तिथ्यं-तीर्थ
सग्गे-स्वर्गे-स्वर्गमां
पायालि-पातालमां

माणुसे-मनुष्यसंबंधी (मां)
जाइं-जे (बहु)
विंवाइ-विंवो, प्रतिमाओ.
ताइं-ते (बहु)
सव्वाइं-सर्वे

॥ अथ जंकिंचि. ॥

जं किंचि नाम तिष्ठं ॥ सग्गे पाया
लि माणुसे लोए ॥ जाइं जिण विंवा
इं ॥ ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ इति ॥ १५ ॥

अर्थ:-जं किंचि नाम तिष्ठंके० जेकोई नामेकरी
तीर्थ ठे, सग्गे के० स्वर्गनेविषे पायालिके० पातालने
विषे, माणुसे लोएके० मनुष्यलोकनेविषे, जाइं जिन
विंवाइंके. जे काइं जिन तीर्थकरना विंव ठे ताइं स-
व्वाइं वंदामि के० ते सर्व विंवने हुं वांछुं वुं. इति.

नमुद्युणांना ब्रुटा शब्दना अर्थ.

नमुद्यु-नमस्कार हो. [अव्यय
णं-वाक्यनो अलंकार वतावनार]

आइगराणं-आदिना करनार
शरुआतना करनार

तिथ्ययराणं-तीर्थकरोने
 सयं-पोते (पोतानी मेळे
 संबुद्धाणं-बोध पाषेलाने
 पुरिस-पुरुष
 उत्तमाणं-उत्तमने
 सिंहाणं-सिंहोने
 वर-श्रेष्ठ उत्तम (जेवा) ने
 पुंडरीयाणं-पुंडरीककमळ
 गंधहृथीणं-गंधहस्ती (जेवा)ने
 लोगुत्तमाणं-लोकमां उत्तमने
 लोग-लोक(ना)
 नाहाणं-नाथोने, स्वामीने
 हिआणं-हित करनारने
 पर्ईवाणं-दीवा (समान) ने
 पज्जोअगराणं-प्रकाशकरनारने
 अभय-अभय (भयराहितपणुं),
 दयाणं-आपनाराने
 चखु-चक्षु-आंख
 मग-मार्ग-रस्ता
 सरण-शरण
 बोहि-बोधि, समकित
 धम्म-धर्म
 देसियाणं-उपदेश करनारने
 नायगाणं-नायकने (नारने)
 सारहीणं-सारथीने, रथ हांक-

चाउरंत-चार [गाति]नो अंत
 करनार]
 चक्कवट्टीणं-चक्रवर्तीने.
 अप्पडिहय-अप्रतिहत एटले
 कोइथी हणाय रोकाय नहीएवुं
 नाणं-ज्ञान
 दंसण-दर्शन
 धराणं-धारणकरनारने
 वियट्ट-निवर्त्युं छे
 छउम-छदमस्तपणुं-कपटपणुं
 आवरणपणुं
 जिणाणं-जिनोने, रागादि श-
 त्रुओने जीतनाराने
 जावयाणं-रागादि शत्रुओथी
 जीतावनारने
 तिन्नाणं-तरेलाने
 तारयाणं-तारनारने
 बुद्धाणं-[पोते] बोधपाषेलाने
 बोहयाणं-बोधकने, बोधकराव-
 नारने
 मुत्ताणं-मुक्तने, मोक्षे गेलाने
 मोअगाणं-(कर्मथी)मुकावनारने
 सव्ववुणं-सर्वज्ञोने
 दरासिणं-दर्शोने, देखनारने
 सिवं-कल्याणकारीउपद्रवाविनातुं

अयलं-अचळ, स्थिर
 अरुअं-रोग रहित
 अणंतं-अनंत
 अरुखथं-अक्षय
 अन्वावाहं-पीडारहित
 अपुणराविती-फरी पाळु आ
 वडुं नथी
 सिद्धि-मोक्ष
 गइ-गति
 नामधेयं-नामवाळुं

ठाणं-स्थानक, ठेकाणुं.
 संपत्ताणं-पामेलाने
 जिअ-जितेला(ने)
 भयाणं-भयोने
 जे-जेओ
 अईआ-अतीतकाळ. गयो
 भविस्संति-थशे.
 णागए-अनागत, भविष्यकाळे
 काले-कालने विषे
 संपइ-संप्रति-हमणां
 वट्टमाणा-वर्तता.

॥ अथ नमुत्तुणं वा शक्रस्तव ॥

नमुत्तुणं, अरिहंताणं, जगवंताणं ॥१॥
 आइगराणं, तिहयराणं, सयंसं
 बुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहा
 णं, पुरिसवर पुंमरीआणं, पुरिसवर
 गंधहत्तीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोग ना
 हाणं, लोग हिआणं, लोग पई
 वाणं, लोग पज्जोअगराणं ॥ ४ ॥
 अन्नय दयाणं, चरकु दयाणं, मग्ग

दयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं
 ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं,
 धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्म
 वरचानुरंतचक्कवट्ठीणं ॥ ६ ॥ अ
 प्पमिहय वर नाण दंसण धरा
 णं, विअट्ट ठजमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जा
 वयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं
 बोहयाणं, मुत्ताणं मोअग्गाणं ॥ ८ ॥ स
 वन्नूणं, सब्ब दरसिणं, सिव मय
 ल मरुअ मणंत मखय मवावा
 ह, मपुण्णरावित्ति सिद्धिगई, नाम
 धेयं, ठाणं संपत्ताणं नमो जिणा
 णं, जिय नयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईअ
 सिद्धा ॥ जे अ नविस्संति णागए
 काले ॥ संपइअ वट्टमाणा ॥ स
 व्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥ इति ॥

અર્થ:—નમુઘ્નું કે० નમોસ્તુ નમસ્કાર હો, ણં એ વાક્યાલંકારને વાસ્તે છે. અરિહંતાણં કે० આઠ કર્મરૂપ વૈરીને હણ્યા તે અરિહંતને તથા અરહંતાણં કે० ચોણઠ ઇંદ્રની કરેલી પૂજાને યોગ્ય તથા અરુહંતાણં કે० ફરી સંસારમાં અવતરવું નથી એવા જગવંતાણં કે० જ્ઞાનવંત જગવંત તેને નમસ્કાર થાનું. એમ એમાં વિવેકીને સ્તવવા યોગ્ય અરિહંત કહ્યા તે માટે એ બે પદની પ્રથમ સ્તોતવ્ય સંપદા જાણવી. ॥ ૧ ॥

આઙ્ગરાણં કે० ધર્મની આદિના કરનાર શ્રુત ધર્મ ને ચારિત્ર ધર્મનાં દાતારહે, તિહ્યરાણં કે० ચતુર્વિંધ સંઘરૂપ તીર્થના કરનાર છે. સયંસંબુદ્ધાણં કે० સ્વયમેવ પોતાની મેલે પ્રતિબોધ પામ્યા. ઈહાં ધર્મની આદિના કરનાર તે સામાન્યે કહ્યા. એ ત્રણ પદની બંધદેહુ સંપદા બીજી જાણવી. ॥ ૨ ॥

પુરિસુત્તમાણં કે० પુરુષમાંહે ઉત્તમ છે વલી સિંહ જેમ હસ્તિનું મર્દન કરે છે તેમ જગવંત પરદર્શનરૂપ વાદીના મદરૂપ હસ્તિનું મર્દન કરે છે માટે પુરિસસી-દ્ધાણં કે० પુરુષમાંહે સિંહસમાન કહ્યા છે. પુરિસવરપું-

રીઆણં કેળ પુરુષમાંહે વરપ્રધાન પુંઠરીક કમલ સ-
માનઠે કેમકે માતાનું રુધિર ને પિતાનું વીર્ય એને કામ
રૂપ કાઢવ કહિયેં તેમાં પરમેશ્વર આવી નુત્પન્ન થયા
અને પાંચે ઇન્ડ્રિયાના ઝોગરૂપ પાણિયે કરી વૃદ્ધિ પામ્યા
ઠતાં પણ તે કામરૂપ કાઢવથી અને ઝોગરૂપ પાણીથી
કમલનીપેરે વેગલા રહ્યા માટે. વલી પુરિસ વરગંધહઠ્ઠી-
ણં કેળ પુરુષમાંહે પ્રધાન ગંધહસ્તિ સમાન ઠે. જેમ ગંધ
હસ્તિના મદના ગંધેકરી બીજા હસ્તિના મદ ગલી
જાયઠે તેમ પરમેશ્વરથી સાતર્થિતરૂપ હસ્તિના નપડવ
રૂપ મદ તે ગલી જાયઠે. ઈહાં પુરિસુત્તમાણં ઇત્યા-
દિકમાં પુરુષમાંહે નુત્તમ ઠે એમ કહ્યું તે માટે એ ઇત્વર
હેતુ નામની ચાર પદની ત્રીજી સંપદા જાણવી.

લોગુત્તમાણં કેળ સમસ્ત લોકમાંહે નુત્તમ ઠે. અને
જ્ઞાનાદિક ગુણ અણપામ્યાને પમામે અને જે જ્ઞવ્ય
જીવો જ્ઞાનાદિક ગુણને પામ્યા હોય તેની રક્ષા કરે,
માટે; લોકનાહાણં કેળ લોકના નાથ ઠે. જ્ઞવ્યથીકી ઇહ
લોકની સંપદા આપે અને જ્ઞાવથકી પરલોકનાં સુખ
આપે માટે; લોગહિયાણં કેળ લોકના હિતના કરનાર

હે. જ્ઞવ્ય જીવોના સમૂહને મિથ્યાત્વ રૂપ અંધકારના ટાલવાથી લોગ પડવાણં કેળ લોક પ્રત્યે દેશનાદિક કરવે કરીને મિથ્યાત્વરૂપ અંધકાર ટાલવા માટે દીપક સમાન છે. જ્ઞવ્યજીવોના સમૂહને વિષે જગવંત સૂર્યનીપરે નુદ્યોતના કરનાર છે જેમ સૂર્ય સર્વ વસ્તુનો પ્રકાશ કરે છે તેમ જગવંત જીવાઽજીવાદિક પદાર્થના પ્રકાશ કરનાર હોવાથી લોગપજ્ઞોયગરાણં કેળ લોકને વિષે પ્રદ્યોત એટલે વિશેષ પ્રકાશના કરનાર છે. ઈહાં લોગુત્તમાણં ઇત્યાદિકે કરી લોકમાં ઉત્તમ કહ્યા. એ પાંચ પદે કરી ચોથી ઉપયોગ હેતુ સંપદા જાણવી. ૪

જગવંતના દર્શનથી જ્ઞવ્યજીવોને સંસારમાં જ મંવારૂપ જ્ઞયનો નાશ થાય, માટે સર્વ જીવોને અજ્ઞય દયાણં કેળ અજ્ઞયદાનના દેવાવાલા જાણવા. જેમ આંચને વિષે આવેલા પમલોને વૈદ્ય ઔષધ લગાતી સાજાં કરે છે, તેમ જગવંત જ્ઞવ્યજીવોના મિથ્યાત્વરૂપ પમલો ઉતારી સમ્યક્ત્વરૂપ ચક્રુની પ્રાપ્તિ કરી દેવતા કરે છે માટે; ચક્રુદયાણં કેળ જ્ઞાનરૂપ ચક્રુના દાતાર છે. જેમ જૂલા પમલા વટેમાર્ગનું ધન ચોર લોકોએ લુંટીને તેને ઉન્માર્ગે પામ્યો હોય, તેને કોઈ સત્પુરુષ

વસ્ત્ર ધન પ્રમુખ આપી સ્વરો માર્ગ દેવાની તેના સ્થા
ત્તકે પહોંચાને, તેમ જગવંત મિથ્યાત્વ કષાયરૂપ ચો
રેથી લુંટાયલા જનોને કુમાર્ગથી મૂકાવી જ્ઞાનાદિક
રત્નત્રયરૂપ લક્ષ્મી આપી મોક્ષમાર્ગ દેવાને છે માટે
મગ્ગદયાણં કેળ મોક્ષમાર્ગના દાતાર છે. જેમ વયરી
થી બીક પામેલા પુરુષને કોઈ ઉત્તમ પુરુષ શરણ રાખે,
તેમ હુર્ગતિથી બીક પામેલા પુરુષને જગવંત શરણના
દેવાવાલા છે; માટે સરણદયાણં કહિયે. બોધબીજ રૂપ
સમ્યક્ત્વના દાતાર છે; માટે બોહિદયાણં કહિયે. ર્હાં
અન્નયદયાણં ર્હ્યાદિકમાં જે વસ્તુ કહિ છે તેના દાતાર
છે તે માટે એ પાંચ પદની તક્તે સંપદા પાંચમી
જાણવી ॥ ૫ ॥

ધમ્મદયાણં કેળ ચારિત્રરૂપ ધર્મના આપનાર છે.
ધમ્મદેસિઆણં કેળ સર્વવિરતિ દેશવિરતિરૂપ ધર્મના ઉ
પદેશક છે. ધમ્મનાયગાણં કેળ ચતુર્વિધ સંઘના પ્રવર્ત્તાવ
નાર માટે ધર્મના નાયક છે. ધમ્મસારહીણં કેળ ધર્મરૂ
પ રચના સારથી છે કેમકે જે ધર્મથી ચૂકે તેને પાઠા
મેઘકુમારની પેરે ધર્મમાં સ્થિર કરે, માટે સારથી છે ધ

સ્મરચાનુરંતચક્કવટ્ટીણં કે० ધર્મને વિષે વરપ્રધાન છે. ચાનુરંત એટલે ચાર ગતિના અંતનું કરનાર એવું જે ધર્મ રૂપ ચક્ર તેણે કરી ધર્મની આજ્ઞા પ્રવર્ત્તાવનાર છે, અથવા ધર્મને વિષે પ્રધાન ચાર ગતિના અંતના કરનાર ચક્રવર્ત્તિ સમાન છે. इहां धम्मदयाણं इत्यादिकमां धर्मनादेवावाला एम विशेषउपयोगे कह्युं ते माटे ए पांच पदनी सविशेष उपयोग हेतु नामा ठगी संपदा थइ ॥६॥

અપ્પમિહયવરનાણદંસણધરાણં કે० અપ્રતિહત વર પ્રધાન જ્ઞાન દર્શન એટલે પર્વતાદિકે કરી જોઈ જાય નહીં, લોકાલોક સુધી વિસ્તારને પામે, એવા વર પ્રધાન કેવલ જ્ઞાન તથા કેવલ દર્શનના ધરનાર છે. વિ અટ્ટઠનમાણં કે० વ્યાવૃત્ત એટલે ગયા છે ઠગ્ગ કે० ઘનઘાતીઆં કર્મ તથા કામક્રોધાદિક ઠ અંતરંગ વચરી જેના; इहां अप्पमिहयवरनाण इत्यादिकमां अस्खलित प्रधान केवल ज्ञान तथा केवल दर्शनना धरनार कहा ते माटे ए बे पदनी स्वरूपहेतु नामे सातमी संपदा थइ.

જિણાણં કે० પોતે રાગદ્વેષથી રહિત જિન થયા છે, તથા જીવ્યજીવોના રાગદ્વેષરૂપ વચરીને ઝીપાવે, માટે

जावयाणं कहिये. तिन्नाणं के० पोते संसारसमुड् थकी
 तस्या अने बीजाने तारयाणं के० संसारसमुड् थकी
 तारवाने समर्थ ठे. बुद्धाणं के० सर्वतत्त्वना पोते जाण
 अया अने बोहयाणं के० परने तत्त्व समजाववाने समर्थ
 ठे. मुत्ताणं के० पोते आठ कर्मरूप बंधनथी मुकाणा अने
 बीजा नव्य जीवोने मोअगाणं के० आठ कर्मरूप शत्रुथी
 मूकाववाने समर्थ ठे. इहां जिणाणं इत्यादिकमां बी
 जाने पोता सरखा फलना आपनार कहा, ते माटे ए
 स्वतुल्य फलकारी चार पदनी आठमी संपदा अइ ॥७॥

सबन्नूणं के० लोकालोक सर्वने केवल ज्ञाने करी
 जाणे. सबदरिसीणं के० समस्त वस्तुननुं सामान्य स्व
 रूपकेवलदर्शने करी देखे. सिव के० उपस्वरहित. मय
 ल के० अचल एटले जेने चलायमान अहुं नथी. मरुय
 के० अरुज, रोगरहित. मणंत के० अनंतज्ञान दर्शन
 सुख वीर्य सहित, मरुय के० अक्षय. एटले जेनो हय
 नथी. मद्वाबाह के० अव्याबाध. बाधा पीडा रहित, म
 पुणरावित्ति के० अपुनरावर्ति एटले ज्यां थकी फरी आ
 वहुं नथी. ए साते गुणेकरी सिद्धिगइ नामधेयं के० सि

॥ १ ॥ अथ जेहनुं. गाणं संपत्ताणं के० एवा स्थान
 कने संप्राप्त थयां ठे एटले मोक्षनगरे पहुँच्या ठे. नमो
 जिणाणं के० एवा जिनेश्वरने महारो नमस्कार हो
 जो. जियजयाणं के० १ इहलोकजय ते मनुष्यने म
 नुष्यनो जय. २ परलोकजय ते मनुष्यने देवतादिकनो
 जय. ३ आदान जय ते रखेने महारू कोइ लेईले. ४
 आज्जीविकाजय ते रखेने महारी आज्जीविका हणाइ
 जाय. ५ अकस्मात् जय ते ज्ञांत प्रमुख पन्थाने शब्दे
 बीक राखे. ६ मरणजय ते रखेने मुज्जने मरण आवे
 ७ अपयशजय, ए सात जय जेणे जीत्या ठे. इहां सब
 नूणं इत्यादिके करी मोक्षमां तेवुं स्वरूप ठे एम कहुं
 ए त्रण पदे करी मोक्ष सिद्धावस्था नामे नवमी संप
 दा थइ ॥ ए ॥

हवे त्रिकालवर्त्ति देव वांदवाने पूर्वाचार्य कृत गा
 आ कहे ठे जेअ अईआ सिद्धा के० जे अतीतकाले तीर्थकर
 अइ सिद्धपर्यायपणुं पाम्या. जे अ ज्विस्संतिणागए का
 ले के० जे अनागतकाले तीर्थकर पर्याय पामी सिद्ध
 पणुं पामशे अने संपइ अ वट्टमाणा के० संप्रति ते ह
 मणां वर्त्तमानकाले जे अरिहंत ठे, एटले वर्त्तमाने

(१५०)

जे महाविदेहमां तिर्थंकर विचरे ढे ते. सवे के० स
र्व तीर्थंकर प्रते, तिविहेण के० मन वचन ने काया ए
त्रिविधे करी वंदामि के० हुं वांडुं बुं. ए सर्व मली नव संपदा
अइ. गाथा एक. पद तेत्रीस. गुरू अक्षर ३३ लघु अक्षर
२६४ सर्वाक्षर ९९७ इति शक्रस्तव समाप्तः

जावंतीना ठुटा शब्दना अर्थ.

जावंति-जेटला
चेइआइ-चैत्य, जिनप्रतिमा
उढे-ऊर्ध्व (लोकमां)
अहे-अधो (लोकमां)
तिरिअ-तिच्छा
इह-अहीं
संतो-छतो. रहेलो थको
तथ-त्यां
संताइ-छती, रहेली
जावंत-जेटला
केवि-कोइ

भरह-भरत
एरवय-(पांच) ऐरव्रत
महाविदेहे-(पांच) महावि-
देहमां
सव्वेसिं-सर्वेने
तेसिं-तेमने
पणओ-नमस्कार थाओ
तिदंड-त्रण दंड [मन, वचन
अने कायाना]
विरयाणं-विराम पामेला, रहित.

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

जावंति चेइआइं ॥ उढेअ अहेअ

तिरिअ लोएअ ॥ सवाइं ताइं वंदे ॥

इह संतो तन्न संताइं ॥ १ ॥ इति ॥

(૧૨૧)

અર્થ:-જાવંતિ કે० જેટલા ચેડાઈ કે० ચૈત્ય અને પ્રતિમા છે, તે ક્યાં છે નહૂંએ કે० ઝડલોકને વિષે, અદેએ કે० અધોલોકને વિષે, અને તિરિઅલોએ એ કે० તિર્હાલોક ને વિષે, એ ત્રણ લોકમાં જે જિન ચૈત્ય છે, સદાઈ તાઈ વંદે કે० તે સર્વને હું વાંડું બું. હહ સંતો કે० હું હહાં રહ્યો થકો પણ તહ સંતાઈ કે० તીર્થકરોનાં ચૈત્ય ત્યાં રહ્યાં થકાં છે તો પણ તે પ્રત્યે હું વાંડું બું. પઢી હજામિલ માસમણો કહી.

॥ અથ જાવંત કેવિસાહુ ॥

જાવંત કેવિ સાહુ ॥ ઝરહેરવય મ
હાવિદેહે એ ॥ સદેસિં તેસિં પણનું ॥
તિવિહેણ તિદંમ વિરયાણું ॥૧॥હતિ ॥

અર્થ:-જાવંતકેવિસાહુ કે० જે કોઈ સાધુ શુદ્ધ ચારિત્રના પાલનાર, ચારિત્રના રૂપ કરનાર, ઝરહેરવયમહાવિદેહે એ કે० પાંચ ઝરત, પાંચ ઐરવત, પાંચ મહાવિદેહ એ પત્રર કર્મ જૂમિને વિષે છે. સદેસિં તેસિં કે० તે સર્વ સાધુને હું, પણનું કે० પ્રણમું, નમસ્કાર

करुं तुं, तिविहेण केण मन, वचन अने काया ए त्रण
प्रकारे करी नमस्कार करुं तुं, ते साधु केवा ठे के
तिदंमविरयाणं केण मनोदंम, वचनदंम अने कायदंम ए
त्रण दंमथी विरम्या ठे. इति ॥ ॥

॥ अथ नमस्कार ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु

ज्यः ॥ इति ॥

अर्थः—अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने सर्व
साधुजने नमस्कार आन.

उवसग्गहरंना तुटा शब्दना अर्थ.

उवसग्ग—उपसर्ग, दुःख संक-
टादिक

हरं—हरण करनार
पासं—१ पार्श्वनाथने २ पार्श्व
नाथे यक्ष छे जेमने

३ आशा (तृष्णा) रहित.
कम्म—कर्मना

वण—समूहथी (ढगलाथी)

मुक्कं—मुकाएलाने

विसहर—विषधर, साप

विस—विष, झेर

निन्नासं—नाशकरनारने

मंगल—दुखनी निवृत्ति

कल्लाण—सुखनी वृद्धि

आवासं—घर

फुलिंग—फुलिंग नामनो

मंतं—मंत्रने

कंठे—कंठने विषे

धारेइ—धारण करे

जो—जे

सया-सदा-हमेशां
मणुओ-मनुष्य
गह-ग्रह (चंद्र सूर्य वगेरे नव
ग्रह)

रोग-रोग
मारी-मरकी.
दुड्ड-दुष्ट, निर्दय
जरा-ज्वरो, ताव
जंति-पामे छे
उवसामं-शांति, नाश
चिठ्ठउ-रहो
दूरे-दूर
मंतो-मंत्र
तुज्ज-तने, तारो
पणामो-प्रणाम
बहुफलो-घणा फलवालो
होइ-थाय छे
नर-पुरुष
तिरिएसु-तिर्यचने विषे
जीवा-जीवो
पावंति-पामे छे
न-नहीं
दुःख-दुख

दोगच्चं-माठीगति, दरिद्रता
तुह-तमारा
सम्मत्ते-समत्तव
लद्धे-पामे छते
चितामणि-चितामणि रत्न
कप्पपायव-कल्पवृक्ष
अप्पहिण्-अधिक (वधारे)
अविग्गेण-विघ्नरहितपणे
अयरामरं-अजरामर, जरा
अने मरणरहित
संथुओ-स्तव्यो, स्तुति कर्षो
महायस-हे मोटा यशवाला
भत्ति-भक्ति
भर-समूह
निप्भरेण-पूर्ण भरेला
हिअएण-हैयावडे
ता-ते कारण माटे
देव-हे देव
दिज्ज-आपो
वोहिं-बोधि, समकित.
भवेभवे-भवोभव
पास-हे पार्श्वनाथ
जिणचंद-हे जिनचंद्र

॥ अथ नवसग्न हरं ॥

नवसग्नहरं पासं ॥ पासं वंदामि

(૧૨૪)

કમ્મ ઘણ મુક્કં ॥ વિસહર વિસ નિ

ત્રાસં ॥ મંગલ કહ્ણાણ આવાસં ॥૧

અર્થ:—નવસગ્ગહરંપાસં કેળ જેના શાસનને વિષે
 નવસર્ગનો હરનાર પાર્શ્વનામા યક્ષ છે એવા અથવા ન
 વસર્ગના હરનાર એવા અને પાસં કેળ ગઈ છે આશા તે
 જેની એવા એટલે તૃષ્ણા રહિત એવા, પાસંવંદામિ કેળ
 શ્રી પાર્શ્વનાથ સ્વામીને હું વાંડું હું. પણ તે શ્રી પાર્શ્વ
 નાથ કેવા છે કમ્મઘણમુક્કં કેળ આઠ કર્મના ઘણ જે
 સમૂહ, તે થકી મૂકાણા છે, મુક્ત થયા છે, વલી વિસ
 હરવિસ કેળ વિષધર જે સર્પ એટલે જ્ય થકી તિયંચ
 જાતિનો સર્પ અને જાવથકી મિથ્યાત્વરૂપ સર્પ તેનું
 જે વિષ તેને, નિત્રાસં કેળ નાશના કરનાર છે. વલી મં
 ગલ કેળ વર્તમાન સુખ અને કહ્ણાણ કેળ પરંપરાયે જે
 સ્વર્ગમોક્ષાદિ સુખ તેના આવાસં કેળ સ્થાનક રૂપ છે.

વિસહર ફુલિંગ મંતં ॥ કંઠે ધારેઈ

જોસયામણુડ ॥ તસ્સ ગહ રોગ મા

રી ॥ હુઠ જરાજંતિ નવસામં ॥૨॥

(१२५)

अर्थः—विसहरफुलिंगमंतं के० विषधर स्फूलिंग
नामे मंत्र जे एजस्तोत्रमांथी निकले ठे, ते मंत्रने कंठे
धारेई जो सया मणुज के० जे मनुष्य सदैव कंठने वि
षे धारण करे, तस्स गह के० ते मनुष्यना ग्रह, रोग
मारी के० अनेक जातना रोग अने मरकीना विकार
तथा दुःखजरा के० दुष्ट एवा जे जरा के० ताव ते जंति
वसामं के० जाय नाशपामे, उपशान्त आय ॥ १ ॥

चिठ्ठन दूरे मंतो ॥ तुष्रप्पणामो वि ब
हुफलो होइ ॥ नरतिरिएसुवि जी
वा ॥ पावंति न दुःखदोगच्चं ॥ ३ ॥

अर्थः—चिठ्ठन दूरे मंतो के० ते पाठली गाथामां
कह्यो जे मंत्र तेतो चिठ्ठन एटले तिष्ठतु रहो दूरे अथवा
वेगलो रहो, पण तुष्रप्पणामोवि के० तुज्जने प्रणाम जे
नमस्कार करवो तेथी पण बहुफलो होइ के० घणां
एवां जे मोक्ष प्रमुखनां फल तेनो देनार होय ठे. नर
तिरिएसु वि जीवा के० नर ते मनुष्यने विषे तथा ती
र्थचने विषे पण जीवा जे जीव ते पावंति न दुःखदो

મગ્ન કે. દુઃખ તે રોગનાં તથા વલ્લભના વિયોગનાં ઈ
ત્યાદિક દુઃખ જાણવાં, અને દોગચ્ચં તે દરિદ્રપણું તે ન
પાવંતિ એટલે ન પામે.

તુહ સમ્મત્તે લલ્હે ॥ ચિંતામણિકપ્પ
પાયવપ્પહિ ॥ પાવંતિ અવિગ્ધેણાં ॥
જીવા અયરામરં ઠાણં ॥ ૪ ॥

અર્થ:-તુહ કેળ તાહરા ધર્મની જે આસ્થા તેને
સમ્મત્તે કેળ સમ્યક્ત્વ કહિયે. તે લલ્હે કેળ પામે થકે
તે તાહરું સમ્યક્ત્વ કેવું છે ચિંતામણિકપ્પપાયવપ્પહિ
યે કેળ ચિંતામણિરત્ન અને કલ્પપાદપ તે કલ્પવૃક્ષ તેણ
કી પણ અધિક છે, એથી પાવંતિ કેળ પામે અવિગ્ધેણાં
કે. વિગ્નરહિતપણે જીવા કેળ જ્ઞવ્ય જીવ અયરામરંઠાણં
કેળ અજરામર સ્થાનક જે મોક્ષ સ્થાનક તે પ્રતે પામે છે. ૪

ઇઅ સંયુત્ત મહાયસ ॥ જ્ઞત્તિપ્પર નિ
પ્પરેણ હિઅણ્ણા ॥ તા દેવ દિઙ્ગ બોહિં ॥
જ્ઞવે જ્ઞવે પાસ જિણચંદ ॥ ૫ ॥

અર્થ:-ઇઅ કેળ એ રીતે સંયુત્ત કેળ સંસ્તવ્યો, મ

(११७)

हायस के० त्रण जगतमां व्याप्त एवा महोटा यशनो
 धणी एवो जे श्री पार्श्वनाथ जगवंत ते प्रते केवी री
 ते स्तव्यो ते कहे ठेः—जतिजर के० जक्तिनो जर जे
 समुदाय तेणे करी निप्ररेण के० पूरीत एटले परिपूर्ण
 जरयुं एवं जे हिअएण के० हृदय तेणे करी स्तव्यो ता
 देव के० ते माटे हे देव ! हे जगवंत ! दिङ्ग बोहिं के० द्यो
 मुऊने, बोधबीज एटले धर्मनुं पामवुं ते, जवेजवे के०
 जवजवने विषे द्यो, पासजिणचंद के० हे पार्श्वनाथ
 सामान्य केवलीनुमां चंडमा समान ॥ ५ ॥ इति श्री
 जड्बाहु स्वामिविरचितं उपसर्गहरस्तोत्रं समाप्तं. ए
 मां पद वीस, संपदा वीस, गुरु अक्षर वीस, लघुअक्षर
 एकसो पांसठ सर्वाक्षर १०५ ठे.

श्री स्तवनोना ठूटा शब्दना अर्थ.

जास-जेनी

परे-पेठे

तास-तेने

नयन-आंख

भृंग-भमरो

उरग-साप

प्रतिहत-हणाएलो-हारी गएलो

प्रस्वेद-परसेवो

राग-प्रेम; लाल रंग

चित्र-अजाएव जेवुं

रुधिर-लोही

आमिष-मांस

सहोदर-जेवुं, सरखुं

लोकोत्तर-असाधारण, आश्च-

र्यकारक

निहार-झाडे फरबुं
चरमचक्षु-चामडानी आंख
अवदात-शुद्ध (गुण) आचरण
अतिशय-लोकोत्तर गुण

संकेत-वायदो
अनुसरीये-चालीए, पाळीए
भातपाणीनो-खावापीवानो
विज्जेद-वियोग-रोकबुं

श्री रुषज्जदेवनुं स्तवन.

प्रथम जिणोसर प्रणमीये, जास सुगंधी रे का
य ॥ कळपवृक्ष परे तास, इंझाणी नयन जे, जूंग परे
लपटाय ॥ १ ॥ रोग नरग तुज नवि नरे, अमृत जे
आस्वाद ॥ तेहथी प्रतिहत तेह, मानुं कोइ नवि क
रे, जगमां तुमशुं रे वाद ॥१॥ विगर धोइ तुज निरम
ली, काया कंचन वान ॥ नहिं प्रस्वेद लगार तारे तुं
तेहने, जे धरे ताहरुं रे ध्यान ॥ ३ ॥ राग गयो तुज
मनथकी, तेमां चित्र न कोइ ॥ रुधिर आमिषथी, रा
ग गयो तुज जनमथी, दूध सहोदर होय ॥४॥ श्वासो
द्वास कमल समो, तुज लोकोत्तर वात ॥ देखे न आ
हार निहार, चरम चक्षु धणी, एहवा तुज अवदाता॥
चार अतिशय मूलथी, नंगणीश देवना कीध ॥ कर्म
खप्याथी अग्यार, चोत्रीश एम अतिशया, समवायां
गे प्रसिद्ध ॥ ६ ॥ जिन उत्तम गुण गावतां, गुण आवे

(૧૬૯)

નિજ અંગ ॥ પદ્મ વિજય કહે એહ સમય પ્રભુ પાલજો,
જિમ થાનં અશ્વય અન્નંગ* ॥ ૭ ॥ ઇતિ ॥

પ્રથમ વ્રત પૂજાનું સ્વતન.૫.

આવો આવો જશોદાના કંત, અમ ઘર આવોરે ॥

નક્તિ વત્સલ નગવંત, નાથ શે નાવો રે ॥ એમ ચંદનવા

* સ્તવન ૧ નો અર્થ.

પહેલા તીર્થંકર ભગવાન જેમણું શરીર સુગંધમય છે. તેમને નમસ્કાર કરીએ. કલ્પવૃક્ષને ભમરાઓ સુગંધી લેવા આશ્રય કરે છે. તેમ તેમને નીરખવાને ઇંદ્રાણીઓના નેત્રો એક નજરે જોઈ રહે છે ! હે ભગવંત રોગરૂપી સર્પ તમને નહતા નથી, કેમકે તમને જન્મથી અમૃતનો આસ્વાદ છે. તે રોગરૂપી સર્પથી હારી ગયેલા એવા અન્ય દેહ તમારી સાથે જગતમાં વાદ કરી શકતા નથી એમ હું માનું છું. ૨ વગર ધોણી એવી પણ તમારી કાયા મેલ રહીત અને સુવર્ણ વર્ણી છે. તેમાં લગાર માત્ર પણ પરસેવો થતો નથી એવા એવા અતિશયવંત આપનું જે ધ્યાન ધરે છે, તેને આપ તારો છો. ૩. તમારું મન રાગરાહિત છે, ઇંદ્રલુન્ગ નહીં પણ તમારાં રુધિર અને માંસમાંથી પણ જન્મથીજ રાગ (લાલ રંગ) ગયો છે, તેથી દૂધના જેવાં છે. ૪ તમારો શ્વાસોશ્વાસ કમલ જેવો છે. એવું તમારું લોકોત્તર ચરિત્ર છે. વઢી ચર્મચક્રવાલા પ્રાણી તમારો આહાર અને નિહાર જોઈ શકતા નથી-એ તમારા અતિશયનું મહાત્મ્ય છે. ૫. ચાર અતિશય મૂલથીજ હોય છે. તથા દેવતાના કરેલા ઓગણીશ તથા, જ્ઞાનાવરણી આદિ ચાર ઘન ઘાતીઆં કર્મ સ્વપ્નાથી અગીયાર અતિશય એ રીતે વધા મઢીને ચોત્રીશ અતિશયો સમવાયાંગ સૂત્રમાં વર્ણવેલા છે. ૬ ઉત્તમ તીર્થંકર ભગવાનના ગુણ ગાતાં આપણા અંગમાં ગુણ આવે. પદ્મ વિજયજી મહારાજ કહે છે કે આ વાંચતે હે પ્રભુ મને પાલજો, કે જેથી હું અશ્વય અને અન્નંગ થાઉં અર્થાત્ મોક્ષ મેળવું.

લાના બોલમે, પ્રજ્ઞુ આવીરે ॥ મુઠી વાકુલ માટે પાઠા,
વલીને બોલાવી રે* ॥ આળ ॥ ૧ ॥ સંકેત કરીને સ્વા

* સ્તવન ૨ ના અર્થ.

જ્યારે ચંદનવાલાને ઘેરથી ભગવાન પોતાના સર્વ અભિગ્રહમાં
રુદન ન દેખાવાથી પાછા વળ્યા, ત્યારે હે જસોદાના કંત ! મારે
ઘેર પ્રધારો. હે ભક્તવત્સલ ભગવંત, શા માટે તમે નથી આવતા ? એવું
ચંદનવાલાનું રુદન યુક્ત બોલવું સાંભળી પોતાના સર્વ અભિગ્રહ
પૂરણ થયેલા જોઈ મુઠી વાકલા માટે પાછા વળીને બોલાવી. પછી
જાણે આજ વચ્ચે તમે વાયદો કરી વનમાં ગયા હો નહીં ! તેમ જો
ચંદન વાલાને પોતે (આ મારી પહેલી સાધવી થશે એમ) મનમાં
રાખી તો જ્યારે તમને કેવલજ્ઞાન થયું ત્યારે તમે દીક્ષા આપી છે
વટ કેવલજ્ઞાની કરી. હું કેસરના કાંચ કરી પુજું છું તોપણ પહેલા
વ્રતના અતિચાર થકી હું ધ્રુજું. ૨ વળી જીવ હિંસાના પચ્ચણ
ન થૂલથી કરું છું. અને મન, વચન, અને કાયાએ કરવું નહીં, ક
રાવવું નહીં, એ છ કોટિ પચ્ચણ હમેશાં પાળું છું. વાસી, વોલો,
વિદલ, રાત્રીભોજન એ હિંસા ટાલું છું, અને સવાવિશ્વાની જીવદયા
નિત્ય પાળું છું. ૩ વળી ચુલાપર (૧) પાણીયારે (૨) શ્યાંયનીયાંપર
(૩) ઘંટી ઉપર. (૪) સુવાના ઓરડામાં (૫) જમવાને ઠેકાણે (૬)
દેરાસરમાં (૭) પોષધશાલામાં (૮) નહાવાને ઠેકાણે (૯) વલો
ના ઉપર. (૧૦) એ રીતે દશ ઠેકાણે દશ ચંદરુઆ વાંધીને રહું છું. અને
જીવ જાય એવી વાત કોઈને કહેવી નહીં. તે વ્રતના પાંચ અતિચાર
કહે છે, વધ કે ૦ મારવું. (૧) ગાઢે વંધને વાંધવું (૨) છવિછેદ-વ
ઝડને નાથવો શ્યાંસી કરવો વગેરે અંગનો છેદ કરવો. ૩, અતિશય
ગજા ઉપરાંત ભાર ભરવો. (૪) તેને ચારો પાણી ન નીરવું (૫)
એ રીતે પશુને પીડા ન કરવી. ૪ લૌકિક દેવગત, ગુરુગત એ
ત્યાગી ભેદે મિથ્યાત્વ છે. તે તમારું આગમ સાંભળતાં આજ તેનો
નાશ થાય છે. વળી ચોમાસામાં ઘણાં કામોમાં જતના પાળું અને

मी गया तुमे वनमां रे ॥ अइ केवली केवली कीध,
 धरी जो मनमां रे ॥ अमे केसर केरा कीच, करिने
 पूजुं रे ॥ तोहे पहिले व्रत अतिचार, थकी हुं धूजूं रे ॥
 आप ॥ २ ॥ जीव हिंसानां पञ्चरक्षाण, शूलथी करियें
 रे ॥ दुविहं तिविहेणं पाठ, सदा अनुसरियें रे ॥ वासी
 बोलो विदल निशिज्जक, हिंसा टालुं रे ॥ सवा विश्वा
 केरी जीव, दया नित्य पालुं रे ॥ आप ॥ ३ ॥ दश चं
 दरुआ दश ठाण, बांधीने रहियें रे ॥ जीव जाये एह
 वी वात, केने न कहियें रे ॥ वध बंधनने ठविछेद, ज्ञा
 र न ज्ञरियें रे ॥ ज्ञात पाणीनो विछेद, पशुने न करि-
 यें रे ॥ आप ॥ ४ ॥ लौकिक देव गुरु मिथ्यात्व, त्र्या
 शी जेदे रे ॥ तुज आगम सुणतां आज, होय विछेदे
 रे ॥ चोमासे पण बहु काज, जयणा पालुं रे ॥ पगले
 पगले महाराज, व्रत अजुवाळुं रे ॥ आप ॥ ५ ॥ एक

आ रीते डगले डगले मारा व्रतने निरमळ करुं. ५ एक श्वास
 लेउं तेदलामां सो वार तमने याद करुं अने विनंति करुंलुं के चं
 दनवाळानी पेठे अमने पण मोक्ष आपो, माछी हरिबळे एक मा
 छलानी दया पाळी तेथी तेने ए व्रत फळदाता थयुं, तेम हुं ए
 व्रत पालुं, अने शुभ वीर स्वामीना चरण कमळना पसायथी नि
 त्य मारे दीवाळी हो. ६

(१३२)

सास मांहे सो वार, समरुं तुमने रे ॥ चंदन बाला
ज्युं सार, आपो अमने रे ॥ माढी हरिवल फलदाय,
ए व्रत पाली रे ॥ शुभ वीर चरण सुपसाय, नित्य
दीवाली रे ॥ आप ॥ ६ ॥

जयवीयरायना तुटा शब्दना अर्थ.

जय-जयवंता वतों

वीयराय-वीतराग

जग-जगत

गुरु-गुरु

होउ-होजो

ममं-महारे

तुह-तारा

पभावओ-प्रभावथी

भयवं-हे भगवन्

भव-संसारनो

निव्वेओ-निर्वेद-उदासीपणुं

मग्गणुसारिआ-मार्गानुसारि-
पणुं

इड्ड-इष्ट, इच्छित (वांछित)

फल-फल

सिद्धि-सिद्धि (प्राप्ति)

विरुद्ध-अवलुं, उलटुं.

चाओ-त्याग

गुरुजण-मातापितादि वडेरा

पूआ-पूजा

परय्य-बीजानो अर्थ

करणं-करवुं

सुह-सारा

तव्वयण-तेमनां वचन

सेवणा-सेवा

आभवं-महारे संसार होय त्य
सुधी

अखंडा-निरंतर-हमेशां

वारिज्जइ-वार्युं छे

जइवि-जोपण

निआण-नियाणा (नुं)

बंधणं-बांधवुं, करवुं.

समय-सिद्धांतने विषे

तह-तो

सेवा-भक्ति

तुम्ह-तमारा

चलणाणं-पगनी, चरणनी

दुखख-दुःख (नो)

खखओ-क्षय
 कम्म-कर्म (नो)
 समाहि-समाधि
 मरणं-मरण
 बोहिलाभो-बोधिबीजनो लाभ
 संपज्जओ-थाओ
 मह-महारे
 एअं-ए (चार)
 नाह-नाथ
 पणाम-प्रणाम

सर्व-सर्व
 मंगल-मंगल
 मांगलयं-मांगलिक
 कारणं-कारण
 प्रधानं-मुख्य, उत्तम
 धर्माणां-धर्मोंमां
 जैनं-जिनदेवतुं
 जयति-जयवंतु वर्त्ते छे
 शासनं-शासन-हुकम

॥ अथ जयवीयराय. ॥

जय वीयराय जगगुरु ॥ होउ ममं
 तुह पन्नावन जयवं ॥ जवनिवेन म
 ग्गा, णुसारिअ्या इठ फल सिद्धी॥१॥

अर्थ:-जय के० जयवंता वर्त्तो वीयराय के० श्री
 वीतराग राग द्वेषरहित, जगगुरु के० त्रण जगतना
 गुरु; ए जगवंतने आशीष दीधी. हवे पोताना मननो
 अन्निप्राय कहे ठे. होउममं के० होजो मुजने तुहप
 जनावन के० तमारा पन्नावथी जयवं के० हे जगवन्
 जवनिवेन के० जवनो निर्वेद एटले जवरूप बंदीखाना
 श्री विरक्तपणुं, मग्गाणुसारिया के० (कदाग्रहनो त्या

ગ કરી) તાહરા માર્ગને અનુસારે ચાલવું. તથા ૬૪ફલ
સિદ્ધિ કે૦ ૬૪ફલ વાંચિત ફલની સિદ્ધિ એટલે પ્રાપ્તિ
આનં. ॥ ૧ ॥

**લોગવિરુદ્ધ જ્ઞાન ॥ ગુરુજણપૂઆ
પરત્તકરણંચ ॥ સુહગુરુજોગો તવ
ય ॥ ણ સેવણા આજ્ઞવમર્શમા ॥૨॥**

અર્થ:—લોગવિરુદ્ધ કે૦ લોક વિરુદ્ધ કર્તવ્ય એવી
જે પરનિંદા, ચોરી, પરસ્ત્રીગમનાદિક તેનો જ્ઞાન કે૦
ત્યાગ એટલે ઠાંકવું આનં, વલી ગુરુજણપૂઆ કે૦ મા
તાપિતા તથા ધર્મના દાતા જે સજુરુ તેમની પૂજા ન
ક્તિ કરવી અને પરત્તકરણંચ કે૦ પરોપકાર કરવો ત
થા પરના અર્થનું કરવું. સુહગુરુજોગો કે૦ સજુરુ જે શુદ્ધ
પ્રરૂપક કાલાનુસારે શુદ્ધ ક્રિયાના સ્વરૂપ કરનારા ગુરુ
તેનો જોગ એટલે સમાગમ આનં, અને તવયણ સેવણા
તેજ રૂપ ગુરુના વચનની સેવા એટલાં વાનાં તે આજ્ઞ
વમર્શમા કે૦ આજ્ઞવ જે સંસાર એટલે સંસારાવસ્થાલ
મે જ્યાંસુધી સંસારમાં રહું ત્યાંસુધી મુક્તિને અર્થમા કે૦
અર્થમા પરિપૂર્ણ હોજો. ॥ ૨ ॥ એ પ્રણિધાન મનની સ

(૧૩૫)

માધિની યાચના કરી. એ વેળાથી ગણધરજીની કરે
લી છે. હવે આગલી ત્રણ ગાથા પૂર્વાચાર્યકૃત છે. તેનો
અર્થ લખીએ છે.

વારિજ્ઞ જહ્વિ નિઝ્રા, એ બંધણં વી
અરાય તુહ સમએ ॥ તહવિ મમ હુજ્ઞ
સેવા ॥ જવે જવે તુમ્હ ચલણાણં ॥૩॥

અર્થ:—વારિજ્ઞ કેળ વાર્યું છે એટલે નિવારણ ક
ર્યું છે જહ્વિ કેળ યદ્યપિ નિયાણાનું બાંધવું, વીયરાય
કેળ હે વીતરાગ તુહસમએ કેળ તાહરા સિદ્ધાંતને વિષે,
એટલે હે વીતરાગ તારા સિદ્ધાંતોમાં નિયાણાનું બાંધવું
નિષેધ્યું છે, તહવિ કેળ તથાપિ એટલે તોપણ એટલું મા
ગુંબું કે મમ કેળ મુજને હુજ્ઞ સેવા કેળ હોજો સેવા જ
વેજવે કેળ જવજવને વિષે તુમ્હચલણાણં કેળ તમારા
ચરણકમલની સેવા તે મને જવજવમાં હોજો એટલું
માંગુ. ॥ ૩ ॥

હુસ્કરકન કમ્મસ્કન ॥ સમાહિ મર
ણંચ બોહિલાન્નો અ ॥ સંપજન મહ

અર્ચ્ય ॥ તુહ નાહ પણામ કરણેણં ॥૪॥

અર્થ:-દુઃસ્કરકન કેળ મનનાં દુઃખ તથા શરીર સંબંધી જે સંસારાદિક દુઃખ તેનો ક્ષય, કમ્મસ્કન કેળ અશુભ કર્મનો ક્ષય. સમાહિમરણં ચ કેળસમાધિ મરણ, બોહિલાન્નો અ કેળ વલી બોધબીજનો લાગ્ન. તે જ્ઞવાંતેરે જિનધર્મની પ્રાપ્તિનું આવું તે સંપજ્ઞન કેળ સંપજો, પ્રાપ્ત થાન. મહકેળ મુજને અર્ચ્ય કેળ એ પાઠલ કહ્યા જે બોલ તે, તુહ કેળ તુજને નાહ કેળ હે નાથ, પણામકરણેણં કેળ પ્રણામ કરવે કરીને. ॥ ૪ ॥

સર્વ મંગલ માંગલ્યં ॥ સર્વ કલ્યા

ણ કારણં ॥ પ્રધાનં સર્વધર્માણાં ॥

જૈનં જયતિ શાસનં ॥ ૫ ॥ ઇતિ ॥

અર્થ:-હવે જિનશાસનને મંગલિકને અર્થે સંસ્કૃત શ્લોકે કરી આશીર્વાદ આપે છે. સર્વ મંગલમાંગલ્યં કેળ સર્વ મંગલિકમાં નુત્કૃષ્ટ મંગલિક, અને સર્વ કલ્યાણનું કારણ છે, અને જેમાં જીવ દયાની મુખ્યતા છે માટે સર્વ ધર્મોમાં પ્રધાન છે, એવું જિનેશ્વરનું શાસન જયવંતુ ઈર્ષ્યો ॥૫॥ એમાં પદ સોલ, શ્લોક એક, ગુરુ અક્ષર વા

(१३७)

वीस, लघु अक्षर १४० सर्वाक्षर १६९.

अरिहंत चेइआणांना तुटा शब्दना अर्थ.

अरिहंत-अरिहंत प्रभु
चेइआणं-चैत्योनां
वंदण-नमस्कारना
वत्तिआए-फलने अर्थे
पूअण-पूजन
सक्कार-सत्कार
सम्माण-सन्मान

निरुवसग्ग-उपसर्ग रहीत
सद्धाए-श्रद्धा वडे
मेहाए-बुद्धि वडे
धीईए-धीरज वडे
धारणाए-धारणा वडे
अणुप्पेहाए-वारंवारसंभारवावडे.
वड्ढमाणीए-वधवी

॥ अथ अरिहंतचेइआणं. ॥

अरिहंतचेइआणं ॥ करेमि कांउस्स.
ग्गं ॥ १ ॥ वंदण वत्तिआए ॥ पूअ
ण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए ॥
सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिद्वान्न व
त्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥
सद्धाए, मेहाए, धीईए ॥ धारणाए,
अणुप्पेहाए ॥ वड्ढमाणीए, ठामि का
उस्सग्गं ॥ ३ ॥ इति ॥ अन्नवृण ॥

(१३८)

अर्थः—अरिहंत चेइआणं के० श्री अरिहंत तीर्थ
करनां जे चैत्य प्रतिमा ठे. ते निमित्ते, करेमि कानस्स
ग्गं के० हुं कानस्सग्गं करुं, ते वास्ते तेनां कारण क
हेठे. ईहां अरिहंत चैत्य वांदवा निमित्त कानस्सग्ग कर
शे. ते माटे अन्युपगम एटले अंगीकार संपदा वे प
दनी प्रथम संपदा अई.

वंदणवत्तिआए के० मनशुद्धे प्रणामनुं करवुं ते
निमित्ते एटले तीर्थकरना चैत्यने वांदतां जे फल होय
ते फल कानस्सग्ग कख्याथी अजो. पूअणवत्तिआए के०
फूलचंदनादिके करी पूजा कख्याथी जे फल होय तेने
अर्थे, सक्कारवत्तिआए के० वस्त्र आभरणदिके करी स
त्कार करवाथी जे निर्झरा आय तेने अर्थे, सम्माणव
त्तिआए के० सन्मान ते स्तवन स्तोत्रादिक गुण वर्ण
व्याथी जे फल आय तेने अर्थे, बोहिलान्नवत्तिआए के०
इहज्जवे तथा परज्जवे श्री जिनधर्मनी प्राप्ति सुखे आय
तेने अर्थे, निरुवसग्गवत्तिआए के० ज्यां जन्म जरा ने
मरणरूप उपसर्गनो नाश अइ गयो ठे एवुं जे मोक्ष
ते पामवाने अर्थे कानस्सग्ग करुं, एमां वंदणवत्तिआए
इत्यादिक कानस्सग्ग करवानां निमित्त कहां ते माटे

(१३ए)

ए बीजी निमित्त संपदा ठ पदनी जाणवी.

हवे कानस्सग्ग जे रीते सफल आय ते रीत क हे ठे. ए कानस्सग्ग हुं सद्धाएकेण श्रद्धाये करी सहित, ज्ञावें करुं, पण कोईना बलात्कारे न करुं. मेहाएकेण मेधा ते रुमी बुद्धिये करी लाज्जालाज्ज जाणी करुं, पण माठी बुद्धिये नही करुं. धीईएकेण धृति ते मननी समाधिये करुं, पण राग द्वेषे करी करुं नही, धारणा एकेण अरिहंतना गुण हृदयमां धारण करतो ठतो कानस्सग्ग करुं. अणुप्पेहाएकेण अरिहंतना गुण मनने विषे वारंवार संज्जारतो थको कानस्सग्ग करुं. ए म वरूमाणीएकेण ए श्रद्धा, मेधा धृति, धारणा ने अनुप्रेक्षा ए पांच बोल वृद्धिवंत आय एम ज्ञावनी विशेषे वृद्धि कस्वाने अर्थे. ठामि कानस्सग्गं केण हुं कानस्सग्ग करुंवुं. ईहां श्रद्धादिक पांच बोल वृद्धिवंत थवाने अर्थे कानस्सग्ग करुं. ते माटे ए सात पदनी त्रीजी हेतु संपदा थई. बधां मली पद १५, संपदा ३, गुरुअक्षर १६, लघु अक्षर ७३, सर्वाक्षर ८९. ईहां अन्नं उप्पसिएणं इत्यादिक केहवुं तेना अर्थ आगल कहा ठे. तेनी पांच संपदा एनी साथे मेलवीये त्यारे

वधी मली आठ संपदा आय, ने तेतालीस पद आय
गुरुअक्षर १९ आय लघुअक्षर १०० आय. सर्वाक्षर
११९ आय.

विधि:-अरिहंत चेइआणं पढी अन्नथ नससि-
एणं कहेवुं पढी एक नवकारनो कानस्सग्ग करी पारी
नमोऽर्हत० कही एकओय कहेवी इति चैत्यवंदन विधि.

कद्धाण कंदंना बुटा शब्दना अर्थ.

कंदं-मूल
जिणंदं-जिनेन्द्रने
तओ-ते पछी
मुणिंदं-मुनिओना इंदने
पयासं-प्रकाश करनारने
सुगुण-उत्तम गुण
ठाणं-स्थानकने
भत्तीइ-भक्तिये करीने
सिरि-श्री
समुद्द-समुद्र
पत्ता-पाम्या
दिंतु-आपो
सुइ-थुचि. पवित्र
मारं-सारने
विद-वृंद

वंदा-वांदवा योग्य
वल्लीण-वेलोना
विसाल-विशाल-मोटा
निव्वाण-निर्वाण
जाण-रथ
कप्पं-जेवुं
पणासिय-नाश कर्याछे
असेस-समस्त
कुवाइ-कुवादि (पाखंडी)
दप्पं-दर्प (अहंकार)
मयं-मत
बुहाणं-पंडितोना
निच्चं-नित्य, हमेशां
जग-जगत्

पहाणं-प्रधान
 कुंद-मचकुंदनुं फुल
 इंदु-चंद्र
 गो-गाय
 खखीर-दूध
 तुसार-हिम
 वन्ना-वर्णवाली
 सरोज-कमल
 हृथ्या-हाथ वाली

कमले-कमलने विषे
 निसत्रा-बेठेली
 वा एसिरि-वागीश्वरी
 पुध्थय-पुस्तक
 वग्न-वर्ग (समूह)
 सुहाय-सुखने माटे
 सा-ते
 अम्ह-अमने
 पसध्या-उत्तम

॥ अथ कल्लाणकंदंती स्तुतिः ॥

कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं ॥ संतिं
 तन नेमिजिणं मुणिंदं ॥ पासं पया
 सं सुगुणिककठाणं ॥ जत्तीइ वंदे सि
 रि वद्धमाणां ॥ १ ॥

अर्थः—कल्लाणकंदं के० मंगलिकना कंदं रूप एवा
 प्रथम जिनेंइ श्री रुषज्जदेव प्रत्ये तथा श्री शांतिनाथ
 तन के० तेवारपढी नेमिजिणंद मुनींइ प्रत्ये, वली श्री
 पार्श्वनाथ ते लोकालोकना पयासं के० प्रकाश करना
 र, तथा सुगुणिककठाणं के० ज्ञाज्ञानादिक गुणना ए
 क अहितीय स्थानक ठे ते प्रत्ये, अने शासनाधीश्वर

(૧૪૨)

શ્રી વર્ધમાનસ્વામી પ્રત્યે જતીશ્વંદે કેળ જતિયે કરી
ને વાંડુલું. ॥ ૧ ॥

અપાર સંસાર સમુદ્ધપારં ॥ પત્તા સિ
વં દિંતુ સુશ્કસારં ॥ સઘે જિણંદા
સુરવિંદવંદા ॥ કલ્હાણ વલ્હીણ વિ
સાલકંદા ॥ ૨ ॥

અર્થ:—હવે સમસ્ત તીર્થંકરની બીજી ઘોય કહે
ઠે. અપાર કેળ નથી જેહનો ઠેમો એવો જે સંસારરૂપ
સમુદ્ધ તેના પારને પત્તા કેળ પામ્યા ઠે તે સુજ પ્રતે સુ
શ્કસારં કેળ જાલું જે અનુષ્ઠાનનું એક અદ્વિતીય ફલરૂ
પ સિવં કેળ મોક્ષ ઠે તે દિંતુ કેળ યો. સઘેજિણંદા કેળ
તે સમસ્ત જિનેંડો કહેવા ઠે ? સુરવિંદવંદા કેળ દેવતા
જના વૃંદ તેને વાંદવા યોગ્ય ઠે, વલી કલ્હાણરૂપ વેલી
ના વિસાલ કેળ મહોટા કંદ ઠે. ॥ ૨ ॥

નિઘ્વાણમગ્ગે વર જાણ કપ્પં ॥ પાણા
સિયાસેસકુવાશ્દપ્પં ॥ મયં જિણા
ણં સરણં બુહાણં ॥ નમામિ નિચ્ચં તિ
જગપ્પહાણં ॥ ૩ ॥

(૧૪૩)

અર્થ:-હવે જ્ઞાન વર્ણનરૂપ ત્રીજી શ્રોય કહે છે. જે નિવાણમર્ગે કેળ મોક્ષમાર્ગ તેને વિષે વર કેળ પ્રધાન, જાણકપ્પં કેળ યાનકલ્પ એટલે રથ સદૃશ છે અને જેણે પણાસિયાસેસકુવાઈદપ્પં કેળ અશોષ સમસ્ત કુવાદિક અન્યદર્શનીનો જે દર્પ એટલે અહંકાર તેને પણાસિય એટલે નાશ પમાય્થો છે. એવો મયં કેળ મત એ શ્રી સિદ્ધાંત તે જિણાણં કેળ જિન શ્રીવીતરાગનો નાષેલો તે સરણં બુદ્ધાણં કેળ પંમિતોને આધારજૂત અને તિજગ કેળ ત્રણ જગતને વિષે પ્પહાણં કેળ પ્રધાન એવું જે જ્ઞાન તેને હું નિચ્છં કેળ નિત્યપ્રત્યે સદૈવ નમામિ કેળ નમસ્કાર કરુંબું. ॥ ૩ ॥

કુંદિંડુ ગોસ્કીર તુસાર વન્ના ॥ સરો
જ હન્ના કમલે નિસન્ના ॥ વાણસિરી
પુન્નય વગ્ગ હન્ના ॥ સુહાય સા અ
મ્હ સયા પસન્ના ॥ ૪ ॥ ઇતિ ॥

અર્થ:-હવે શાસનના અધિષ્ઠાયક દેવ દેવીના વર્ણનની ચોથી શ્રોય કહે છે. કુંદ કેળ મચકુંદનું ફૂલ, હિંડુ કેળ ચંડમા, ગોસ્કીર કેળ ગાયનું હુધ અને તુસાર કેળ હિમ, એના સરખો જેના શરીરનો વન્ના કેળ વર્ણ

(૧૪૪)

હે. જેના હઠા કેળ હાથને વિષે સરોજ કેળ કમલ છે,
વલી કમલેનિસન્ના કેળ કમલને વિષે બિરાજમાન છે.
વલી પુઢયવગ્ગ હઠા કેળ હાથને વિષે પુસ્તકોનો
સમુહ છે જેને એવી વાણસિરી કેળ વાગીશ્વરી નામે
દેવી તે અમ્હ કેળ અમને સુહાય કેળ સુખને અર્થે સયા
કેળ સદા સર્વદા પસઠા કેળ પ્રશસ્ત છે પ્રધાન છે. ઇતિ
પંચતીર્થિની સ્તુતિ સમાપ્ત. ॥ ૪ ॥

અથ—સિદ્ધચક્રની થોય.

સિદ્ધચક્ર નમી પૂજી યૂણીઝેં, અરિહંતાદિક
નવ પદ જાણિયેં, શ્રીપાલ ચરિત્ર સદા સૂણી
ઝેં, વિમલેસર વીર વિઘન હાણિયેં ॥ ૧ ॥
॥ ઇતિ ॥ આ થોય ચાર વાર કહી શકાય ॥

અર્થ:—સિદ્ધચક્રજીને નમી પૂજીને સ્તવના કરી
અને અરિહંત, સિદ્ધ, આચાર્ય, નપાધ્યાય, સાધુ, દર્શન
જ્ઞાન, ચારિત્ર અને તપ એ નવ પદનો જાપ કરીએ
હમેશાં શ્રીપાલ ચરિત્ર સાંજાળીએ તો સિદ્ધ ચક્ર
અવિષ્ણાયક શ્રી વિમલેશ્વર દેવ શ્રીપાલ અને મયા
સુંદરીની પેઠે વિઘ્નનો નાશ કરે અને સુખ સંપત્તિ આ

संसारदावाना बुटा शब्दना अर्थ.

संसार-संसार
 दाव-वन (नो)
 अनल-अग्नि
 दाह-ताप
 नीरं-पाणी
 संमोह-मोह
 धूली-रज-धूल
 हरणे-काढवामां
 समीरं-वायरो
 माया-कपट
 रसा-पृथ्वी
 दारण-उखेडवाने
 सीरं-हल
 वीरं-महावीरने
 गिरिसार-मेरु पर्वत
 धीरं-धीर-अचल
 भाव-भाव
 अवनाम-नमवुं
 मानव-माणस (ना)
 न-स्वामी
 झूला-मुगट
 वलोल-देदीप्यमान
 गावलि-श्रेणी

मालितानि-पूजेला
 संपूरित-पूर्णा
 अभिनत-नमेला
 लोक-लोक (भक्तलोक)
 समीहितानि-मनोवांछित
 कायं-यथेच्छपणे
 पदानि-पग
 बोध-ज्ञान (वडे)
 अगाधं-गंभीर
 सुपद-सुंदर पद
 पदवी-रचना
 पूर-समूह
 अभिराम-मनोहर
 जीव-जीव (नी)
 अहिंसा-दया, रक्षा.
 अविरल-अंतररहित
 लहरी-लेहेर, तरंग
 संगम-मलवे
 अगाह-अगाध, अपार
 देहं-शरीर
 चूला-चूलिका
 वेलं-वेली
 गुरु-मोटा

गम-सरखा पाठ
 मणि-रत्न
 संकुलं-भरेलुं
 दूर-छेटे
 पारं-पार
 आगम-सिद्धांत
 जलनिधि-समुद्र
 सादरं-आदरसहित
 साधु-रुडे प्रकारे
 सेवे-सेवुंछुं
 आमूल-मूलसुधी
 आलोल-चपल, डोलतुं.
 बहुल-घणा
 परिमल-सुगंध
 आलीढ-आसक्त
 लोल-चपल
 अलि-भमरो
 माला-श्रेणी

झंकार-गुंजार
 आराव-शब्द
 अमल-निर्मल
 दल-पांदडुं
 आगार-भुवन
 भूमि-जमीन
 निवासे-निवास (वसवुं)
 छाया-कांति
 संभार-समूह
 करे-हाथवाली
 तार-देदीप्यमान
 हार-हार
 वाणी-जिनवाणी
 संदोह-समूह
 देहे-देहवाली
 विरह-वियोग, विरह
 वरं-वरदान
 देहि-आप

॥ अथ संसारदावानी स्तुति. ॥

संसारदावानलदाहनीरं, संमोह
 धूळीहरणे समीरम् ॥ माया
 रसादारणसारसीरं, नमामिवीरं

गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ ज्ञा
 वावनामसुरदानवमानवेन, चूलावि
 लोलकमलावलिमालितानि ॥ संप्र
 स्तिताञ्जिनतल्लोकसमीहितानि, का
 मं नमामि जिनराजपदानितानि ॥ २ ॥
 बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराञ्जि
 रामं, जीवाहिंसाविरललहरीसंग
 मागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरुगम
 मणीसंकुलं दूरपारं, सारं वीरागम
 जलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥
 आमूलालोलधूलीबहुलपरिमला
 लीढलोलालिमाला, ऊंकारारा
 वसारामलदलकमलागारचूमीनि
 वासे ॥ लायासंज्ञारसारे वरकद
 लकरे तारहाराञ्जिरामे, वाणीसंदो
 हदेहे जवविरहवरं देहि मे देवि

સારં ॥ ૪ ॥ ઇતિ ॥

અર્થ:—સંસારદાવાનલ કેળ સંસારરૂપ વનનો જે અગ્નિ, તેના તાપને બલવવાને પાણી સમાન, અજ્ઞાનરૂપ રજને હરવાને વાયુ સમાન, કપટરૂપ જે પૃથ્વી તેને ઝલેલવાને તીક્ષ્ણ હલ સમાન અને મેરુ પર્વતની પેઠે અચલ, એવા શ્રી વીર જગવાન પ્રત્યે હું નમસ્કાર કરું.

જાવાવનામ કેળ જાવે કરીને નમ્યા એવા જે સુર (વૈમાનિક અને જ્યોતિષિક દેવતા), દાનવ (જનપતિ તથા વ્યંતર દેવતા) અને મનુષ્ય, તેના જે ફન કેળ સ્વામી, તેના મુકુટ ઉપર રહેલી દેદીપ્યમાન એવી જે કમલની શ્રેણિ તેણે પૂજ્યાં છે એવાં, વલી ત્રિકરણ શુદ્ધિ કરી નમનાર જીવ્યજીવોનાં મનોવાંચિત જેણે સમ્યક્ પ્રકારે પૂજ્યાં છે એવાં, તે શ્રી જિનરાજનાં ચરણ પ્રત્યે યથેચ્છપણે હું નમું. ॥ ૫ ॥

બોધાગાધં કેળ જ્ઞાને કરીને ગંતીર છે, તથા મંગલમુક્તિં ઇત્યાદિ સુંદર પદોની શ્રેણી રચનારૂપ વાણીનો જે સમૂહ, તેણે કરીને મનોહર છે એવા, તથા

(૧૪૯)

જીવોની રક્ષારૂપ અંતર રહીત એવા જે તરંગો, તેના પરસ્પર મલવે કરીને અપાર ઠે દેહસ્વરૂપ જેનું એવો, તથા સિદ્ધાંતની ચૂલિકારૂપિણી વેલો ઠે જે સમુદ્રને વિષે એવો, તથા મોટા એવા સરસા પાઠરૂપ જે રત્નો તેણે કરી ઝરેલો ઠે એવો, તથા જેનો કાંઠો ઘણો દૂર ઠે (એટલે સમુદ્રની પેઠે સિદ્ધાંતનો પાર પામવો મહા ડુર્લભ ઠે. એટલે સંપૂર્ણ શ્રુતજ્ઞાની અથવા કેવલજ્ઞાની સિવાય કી જાથી જેનો પાર પમાય નહીં) એવો, તથા પ્રધાન ઠે, પૂજ્ય ઠે, એવો જે શ્રી વીરજિન સંવંધી સિદ્ધાંતરૂપ સમુદ્ર તે પ્રત્યે આદર સહીત સમ્યક્ પ્રકારે હું સેવુંતું. ॥ ૩ ॥

આમૂલાલોકે મૂલલગે મોલતું એવું, વલી મકરંદ સુગંધના કણીયા તેમાં ઘણા સુગંધને વિષે મગ્ન એવા ચપલ જમરાનુંની શ્રેણીના ગુંજાર તેના શબ્દો કરીને જે પ્રધાન ઠે એવું; તથા નિર્મલ પાંદમાં કરી સહિત એવા કમલની ઉપર ઘર ઠે જેનું, તેના મધ્ય જાગની જૂમિ ને વિષે શય્યા ઠે, તેને વિષે વસવું ઠે જેનું એવી, (૧) વલી કાંતિના સમૂદ્ધે કરી પ્રધાન ઠે એવી, (૨) વલી પ્રધાન કમલ ઠે જેના હાથને વિષે એવી, (૩) વલી

दीप्यमान हारे करीने सुंदर ठे हृदय जेनुं अथवा जे
ना नेत्रनी कीकी सुरनरने हरावनारी ठे एवी, (४) त
था छादशांगी रूप वाणीनो समूह एज ठे शरीर जेनुं
एवी, (५) हे श्रुत देवि ? मुजने प्रधान एवं जे मोक्ष
ते संबंधी वरदान आप. ॥ ४ ॥

स्नातस्याना लुटा शब्दना अर्थ.

स्नातस्य-नवरावेला, नाहेला-ना

अप्रतिमस्य-निरूपम

शिखरे-शीखर उपर

शच्या-इंद्राणीए.

विभोः-प्रभुना

शैशवे-बालपणमां

रूप-रूप

आलोकन-जोवुं

विस्मय-आश्चर्य

आहत-भोगव्यो

रस-रस, पारो.

भ्रांत्या-भ्रांतिवडे

भ्रमत्-भ्रमती

चक्षुषा-आंखवडे

उन्मृष्ट-लूछ्युं

नयन-नेत्र, आंख

प्रभा-कांति

धवलितं-धोलुं करेलुं

क्षीर-क्षीरसमुद्र

उदक-पाणी

आशंकया-आशंकावडे

वक्त्रं-मुख

यस्य-जेनुं

पुनःपुनः-वारंवार

हंस-राजहंस

अंस-पांख, खभो.

आहत-उडाडी

पद्म-कमल

रेणु-रज

कपिश-रातुं पीळुं

अर्णव-समुद्र

अंभो-जल

भृतैः-भस्त्रा
 कुम्भैः-कलशोए, घडाओए
 अप्सरसां-अप्सराओंनां
 पयोधर-स्तन
 भर-समूह
 प्र-अति
 स्पर्द्धाभिः-स्पर्द्धा करनारा
 कांचनैः-सोनाना
 येषां-जेमना
 मंदररत्न-मेरु
 शैल-पर्वत
 जन्म-जन्म
 अभिषेक-अभिषेक
 कृतः-करेलो
 तेषां-तेमना
 नतोऽहं-नमेलो हुं
 क्रमान्-चरण कमलोंने
 प्रसूतं-उत्पन्न थयुं
 गणधर-गणधरे
 रचितं-रचयुं, रचेलुं
 द्वादश-वार
 अंगं-अंग (सूत्र) } द्वादशांगी
 चित्रं-आश्चर्यकारक
 वह्नर्थ-घणा अर्थ (वडे)
 युक्तं-सहित

दृषभैः-नायकोए, धोरीओए
 धारितं-धारण करेलुं
 बुद्धिमद्भिः-बुद्धिवानोए
 अग्र-मुख्य
 द्वार-वारणुं
 भूतं-समान
 फलं-फल
 ज्ञेय-जाणवायोग्य
 भाव-भाव, पदार्थ
 प्रदीपं-दीवो (तेने)
 भक्त्या-भक्तिये
 नित्यं-सदा, हमेशां
 प्रपद्ये-अंगीकार करेलुं
 श्रुतं-सिद्धांत
 अहं-हुं
 अखिलं-समस्त, आखुं
 निष्पंक-वादलरहित
 व्योम-आकाश
 नील-श्याम
 द्युति-कांति
 अलस-मदगूर्णिणत
 दृशं-आंखवाला
 बाल-नानो (बीजनो)
 चंद्र-चंद्र, चांदो
 आभ-कांतिवाला

देष्टुं-दाढोवाला
 मत्तं-मदोन्मत्त
 घंट-घंट (जा)
 रवेण-शब्द
 प्रसृत-प्रसरतुं
 मद-मद (नुं)
 जलं-पाणी
 पूरयंतं-पूरतो
 समंतात्-सर्व ठेकाणे
 आरूढो-उपर वेढेलो. चढेलो
 दिव्य-दिव्य

नागं-हाथी (उपर)
 विचराति-विचरे छे, चाले
 गगने-आकाशमां
 काम-इच्छा, मनोरथ.
 दः-देनारो
 कामरूपी-स्वेच्छाचारी
 यक्षः--जक्ष
 सर्वानुभूति-सर्वानुभूति(वि.)
 दिशतु-वतावे, आपे
 कार्येषु-कार्योमां

॥ अथ स्नातस्यानी स्तुति. ॥

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे श
 च्या विज्ञोः शैशवे, रूपालोकनवि
 स्मयाहतरसत्रांत्या च्रमच्चक्षुषा ॥
 जुन्मृष्टं नयनप्रज्ञाधवलितं ह्रीरोद
 काशंकया, वक्त्रं यस्य पुनःपुनः स
 जयति श्री वर्धमानो जिनः ॥ १ ॥
 हसांसाहतपद्मेणुकपिशक्षीराणां
 वांजोभृतैः, कुंजैरप्सरसां पयोधर

(१५३)

अरप्रस्पर्धिन्निः कांचनैः ॥ येषां
मंदररत्नशैलशिखरे जन्माग्निषेकः
कृतः, सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषां
नतोऽहं क्रमान् ॥ ५ ॥ अर्हद्वक्त्र
प्रसूतं गणधररचितं द्वादशांगं वि
शालं, चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगण
वृषजैर्धारितं बुद्धिमन्निः ॥ मोक्षा
ग्रन्थारज्जुतं व्रतचरणफलं ज्ञेयज्ञाव
प्रदीपं, ज्ञत्तया नित्यं प्रपद्ये श्रुत
महमखिलं सर्वलोकैकसारम् ॥ ३ ॥
निष्पंकव्योमनील द्युतिमलसदृशं
बालचंद्राज्जदंष्ट्रं, मत्तं घंटारवेण प्रसू
तमदजलं पूरयंतं समंतात् ॥ आ
रूढो दिव्यनागं विचरति गगने
कामदः कामरूपी, यद्गः सर्वानुज्ज
तिर्दिशतु मम सदा सर्वकार्येषु

(૧૫૪)

સિદ્ધિમ્ ॥ ૪ ॥ ઇતિ ॥

અર્થ:-સ્નાતસ્યા કે^૦ ઇંડાણીએ મેરુ પર્વતના શિ
શ્વર નુપર ન્હવરાવ્યા એવા, અને નપમા નહીં આપી
શકાય એવા, પ્રત્નુ વીર જગવાનના બાલપણાને વિષે,
તેમના રૂપને જોવાથી નપજેલો જે આશ્ચર્ય તડૂપ જો
ગવ્યો એવો જે રસ તેની આંતિથી જેની આંખો જામી
રહી છે, એવી ઇંડાણીએ નેત્રની કાંતિથી ઝજલું કર્યું
એવું જે પ્રત્નુનું મુખ, તે ક્ષીર સાગરના જલની આશં-
કાએ કરીને લુઘું હોયની એવું લાગે છે એવાશ્રી વીર
જગવાન વારંવાર જયવંતા વર્તે છે ॥ ૧ ॥

હંસાંસાહત કે^૦ રાજહંસની પાંખોથી ઝમામેલી
કમલની રજથી રાતું પીલું અણલું એવું ક્ષીરસાગરનું
જલ તે વમે જાહેલા, અને અપ્સરાનના સ્તનના સમૂહો
ની સાથે સ્પર્શ કરનાર એવા સોનાના કલશો વમે મે
રુ પર્વતના શિશ્વર નુપર જે તીર્થકરોનો જન્માન્નિષેક
સુર અસૂરના ઇંડોના સમૂહોએ કરેલો છે, તે સર્વ તીર્થ
કરોના ચરણકમલ પ્રત્યે હું નમેલો છું. ॥ ૨ ॥

(૧૫૫)

અર્હદ્વક કેળ અરિહંત પ્રજ્ઞના મુખથી પ્રગટ થ
યું, અને ગણધરોએ રચેલું તથા આશ્ચર્યકારક અને ઘ
ણા અર્થોએ કરી સહિત, તથા બુદ્ધિમંત એવા સાધુજના
સમુદાય તેના નાયકોએ ધારણ કર્યું એવું, અને મોક્ષ
રૂપી ઘરના મુખ્ય દ્વાર સમાન તથા વ્રત અને ચારિત્ર
નું ફલ છે જેમાં એવું, અને જાણવા યોગ્ય જે જ્ઞાવ તેને
વિષે દીવા સમાન એવું, તથા સર્વ લોકને વિષે સારજૂત
એવું મોટું દ્વાદશાંગ રૂપ સમસ્ત સિદ્ધાંત તેને જ્ઞાતિયે
કરીને નિરંતર હું અંગીકાર કરુવું. ॥ ૩ ॥

નિષ્પંકવ્યોમ કેળ વાદલે રહિત એવું જે આકા
શ તેની કાંતિના જેવી શ્યામ છે કાંતિ જેની એવો,
તથા મદધૂર્ણિત છે નેત્ર જેનાં, તથા બીજનાચંદ્રમાની
કાંતિ સરખી માઠો છે જેની એવો, મદોન્મત અને ઘં
ટના શબ્દની સાથે પ્રસરતું એવું જે મદવારિ તે પ્રત્યે
સર્વ જગાયે પૂરતો એવો દિવ્યસ્વરૂપી જે હાથી તે ઉપર
બેઠો એવો સ્વેચ્છાચારી તથા મનોરથને આપનારો એવો
સર્વાનુજૂતિ નામા યક્ષ આકાશને વિષે વિચરે છે તે મ
ને નિરંતર સર્વ કાયાન વિષે સિદ્ધિ દેશ્વામો. ॥ ૪ ॥

पुष्करवरदीवधूना लुटा शब्दना अर्थः

पुष्करवर-पुष्करवर

दीवधू-अरधा द्वीपमां

धायङ्-धातकी

संडे-खंडमां

जंबुदीवे-जंबुद्वीपमां

विदेहे-महाविदेह क्षेत्रमां

धन्माङ्गरे-धर्मनी आदिना

करनारने

नमस्तामि-नमस्कार करुंछुं

तम-अज्ञान (रूप)

तिमिर-अंधकार

पडल-समूह

विद्धंसणस्स-नाश करनारने

सुरगण-देवसमूह

नरिंद-चक्रवर्त्ती (ओए)

महिअस्स-पूजेलाने

सीमा-मर्यादाने

धरस्स-धारण करनारने

पप्फोडिअ-अत्यंत तोडी नाखी

मोहजालस्स-मोहजालने

जाइ-जन्म, जाति

सोग-शोक

पणासणस्स-नाश करनारने

पुष्कल-पुष्कल, घणुं.

विसाल-विशाल

आवहस्स-लावनार, करनारने.

को-कोण

दाणव-दानव

अच्चिअस्स-पूजेल

उवलम्भ-पामीने

करे-करे

प्रमायं-प्रमाद, आलस

सिद्धे-सिद्ध एवा

भो-हे (लोको)

पयओ-आदरवालो

जिणमए-जिनमतने

नंदी-सन्तुष्टि

देवं-वैमानिक देवने

नाग-नागदेव

सुवन्न-ज्योतिषिदेव

किन्नर-व्यंतरदेव

स्सप्भूय-सद्भूत, सत्य

लोगो-लोक, प्रकाश, त्रिकालज्ञान

जथथ-ज्यां

पइठिओ-रहेछुं

जगमिणं-आ जगत

तेलुक्क-त्रण लोक
मच्च-मनुष्य
अंसुर-भवनपाति
वड्ड-वृद्धि पापो
सामओ-शाश्वत

विजयओ-विजयवंत थाओ
उत्तरं-प्रधान
सुअस्स-श्रुत सिद्धांतने
भगवओ-भगवंत

॥ अथ पुरस्करवरदीवमे लिख्यते ॥
पुरस्करवरदीवडे, धायइसंमे अ जं
बुदीवेअ ॥ जरहेरवयविदेहे, धम्मा
इगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिर
पमल्लविद्धं, सणस्स सुरगण नरिं
दमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, प
प्फोमिअ मोहजालस्स ॥ २ ॥
जाई जरामरणसोगपणासणस्स,
कह्वाणपुस्कल विसालसुहावह
स्स ॥ को देवदाणवनरिंदगणचि
अस्स, धम्मस्ससारमुवल्ल करे
पमायं ॥ ३ ॥ सिधे जो पयत्त णमो
जिणमए, नंदी सया संजये ॥ देवं

(૧૫૬)

નાગ સુવન્ન કિન્નરગણ, સપ્તૂય જાવ
 ચિણ ॥ લોગો જન્મ પદ્ધિન જગમિ
 ણં, તેલુક મન્નાસુરં ॥ ધમ્મો વહુન
 સાસન વિજયન, ધમ્મુત્તરં વહુન
 ॥ ૪ ॥ સુઅસ્સ જગવન ॥ કરેમિ
 કાનસસગ્ગં વંદણ વત્તિઆણ ॥

અર્થ:-પુસ્કરવર દીવદ્દે કેળ અરધા પુસ્કરવર દ્વી
 પને વિષે વેવે, ધાતકિ સ્વંરુને વિષે વેવે, તથા જંબુ દ્વીપ
 ને વિષે એક એક એ રીતે અઢીદ્વીપને વિષે પાંચ જાત,
 પાંચ ઐરવત, અને પાંચ મહાવિદેહ ક્ષેત્ર. સર્વ મહા
 પંદર કર્મજૂમિ ક્ષેત્રને વિષે ધર્મની આદિના કરનાર એવા
 શ્રી તીર્થંકર દેવને હું નમસ્કાર કરું છું. ॥ ૧ ॥

તમતિમિર કેળ અજ્ઞાન રૂપ જે અંધકાર, તેનો સ્વ
 મૂહ તેનો વિનાશ કરનાર એવો, વલી દેવતાના સમૂહ
 અને રાજાનું તેમણે પૂજ્યો એવો, અને મોહમિશ્ર્યાત્વ
 રૂપ જાલના સુત્ર જે તાંબુલે નેણે ફોડ્યો છે એવો,

(૧૫૯)

અને નય નિદ્દેષાદિક મર્યાદાનો ધરનાર. એવો જે સિદ્ધાંત
તે પ્રત્યે હું વાંડુ હું. ॥ ૨ ॥

જાડ જરા કેળ જન્મ, જરા, મરણ અને શોગ. તે
નો નાશ કરનાર, વલી મંગલિકનો કરનાર અને સં
પૂર્ણ વિશાલ એવા આનંદરૂપ મોહ સુખનો કરનાર છે.
વલી વૈમાનિક અને પાતાલ વાસી દેવો તથા રાજા તે
મના જે સમૂહ તેમણે પૂજ્યો એવો જે શ્રી સિદ્ધાંત, તે
નો રહસ્યપામીને કોણ જ્ઞવ્ય જીવ (વિવેકી પુરુષ)
પ્રમાદ કરે. ॥ ૩ ॥

સિદ્ધેન્દ્રો કેળ હે જ્ઞાનવંત લોકો ઉપર વર્ણવેલો
એવો નયનિદ્દેષ પ્રમાણાદિકે કરી જે સિદ્ધ એટલે નિ
ષ્પન્ન કરેલો એવો જિનમત એટલે શ્રી તીર્થંકરનો પ્રકા
શેલો જે સિદ્ધાંત, તે જિનમતના પ્રસાદથી મારે ચારિ
ત્રને વિષે હમેશાં સદા સમૃદ્ધિ આનં. તે સંયમ કેવું છે
કે વૈમાનિક દેવતા, પાતાલ વાસી નાગેન્ડ, જેનો સુવ
ર્ણ જેવો વર્ણ છે એવા જ્યોતષી, તથા વ્યંતરના જે સમૂહ,
તેમણે સાચા જ્ઞાવે કરીને પૂજ્યો એવો છે. વલી લોકો

લોકનું ત્રિકાલ વિષયી જ્ઞાન, જે સિદ્ધાંતને વિષે રહ્યું
 છે એવો, ત્રણે જગ એટલે ઉર્ધ્વ, અધો, અને તિર્થો એ
 ત્રણ લોક મધ્યે મનુષ્ય, દેવ, તિર્યંચ, અને નારકી
 इत्यादिकं આ જગમિણં કેળ આ સર્વ જગત જે સિદ્ધાં
 તના વલે કરી જણાય છે, એવો સિદ્ધાંત રૂપ ધર્મ વૃદ્ધિ
 ને પામો. તે શ્રુત ધર્મ અર્થથી સદૈવ શાશ્વતો છે. પર
 વાદીનું જીતવાથી વિશેષપણે કરી વિજયવંતો છે
 વલી જેમ ચારિત્ર ધર્મને ઘણું ઉત્તરોત્તર પ્રધાનપણું
 આય, તેમ સિદ્ધાંત વૃદ્ધિને પામો. સુઅસ્સ કેળ (૧) વ
 લી તે શ્રુતજ્ઞાન કેવું છે ? મહિમાવંત છે. તેને આરાધ
 વાને અર્થે કાનસ્સગ્ગ કરું તું; (૨) હે જગવંત શ્રુત સિ
 દ્ધાંતને આરાધવા ત્રણી કાનસ્સગ્ગ કરું તું; (૩) એવા
 શ્રુત સિદ્ધાંત રૂપ જગવંતને આરાધવાને અર્થે કાન
 સ્સગ્ગ કરું તું. ॥ ૪ ॥

॥ સિદ્ધાણં બુદ્ધાણાંના બુદ્ધા શબ્દના અર્થ ॥

ગયાણં-ગણલાને, પામેલાને
 પરંપર-પરંપરાએ
 લોઅ-લોક (ના)

અગ્ગ-અગ્રભાગને
 ઉવગયાણં-પામેલાને
 દેવાણ-દેવતાઓના

वि-पण
 पंजलि-हाथ जोडीने
 तं-तेने
 देवदेव-देवताना राजा
 महिअं-पूजेलाने
 सिरसा-माथावडे
 महावीर-महावीरस्वामीने
 इक्को-एक
 वसहस्त-वृषभ सरखाने
 वद्धमाणस्त-वर्द्धमानस्वामीने
 सागराओ-समुद्रथी
 तारेइ-तारे छे
 नरं-पुरुष
 व-वली
 नारिं-नारीने, स्त्रीने.

उज्जित-गिरनार
 सेल-पर्वतना
 सिहरे-शिखर उपर
 दिख्खा-दिक्षा
 नाणं-केवल ज्ञान
 निसीहिआ-मोक्ष कल्याणक
 जस्त-जेमनुं
 अरिठ्ठनेमि-अरिष्टनेमि
 चत्तारि-चार
 अठ्ठ-आठ
 दो-वे
 परमठ्ठ-परमार्थे करी
 निष्ठिअठ्ठा-सिद्ध थया छे अर्थ
 जेमना
 दिसंतु-आपो

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंप
 रगयाणं ॥ लोअग्रग मुवगयाणं
 नमो सया सबसिद्धाणं ॥ १ ॥
 जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली
 नमंसंति तं देवदेवमहिअं, सिरसा

(१६९)

वंदे महावीरं ॥ १ ॥ इकोवि नमु
 कारो, जिणवरवसहस्स वध्मा
 णस्स ॥ संसारसागरान्, तारेइ
 नरं व नारीं वा ॥ ३ ॥ उज्झित से
 लसिहरे, दिस्का नाणं निसीहि
 आ जस्स ॥ तं धम्मवक्कवाटिं, अरि
 ठनेमिं नमंसासि ॥ ४ ॥ चत्तारि
 अठ दस दो, अ वंदिआ जिणव
 रा चउवीसं ॥ परमठनिठिअठा,
 सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥

अर्थः—सिद्धाणं बुद्धाणं के० सिद्ध थया वे तेमने,
 ज्ञान वने समस्त वस्तु तत्त्वना जाणनारा, संसार स
 मुझना पारने पामेला, पेहेला मिळ्यात्व गुणगणा
 श्री अनुक्रमे चौदमा गुणगणा सुधी चमवुं अथवा
 हपक श्रेणीश्री शुद्ध, ज्ञान, दर्शन, चारित्र्यने अ
 पामवुं तेने परंपरा कहीए. ते परंपराए करी सिद्ध

યા છે, અને ચૌદ રાજલોકના અગ્રજાગને વિષે એટલે સિદ્ધશિલાની ઉપર યોજનને ચોવીસમે જાગે પહોંચ્યા છે. એવા સર્વ સિદ્ધોને નિરંતર નમસ્કાર હોજો. ॥ ૧ ॥

જો દેવાણવિ દેવો કેળ જે દેવોના પણ દેવ છે, જેમને દેવતાનું હાથ જોમી નમસ્કાર કરે છે. તે દેવ તાનના ૬૬ વમે પૂજાએલા એવા શ્રી મહાવીર સ્વામી ને હું મસ્તકે કરી વાંડું બું. ॥ ૨ ॥

ફક્કોવિ કેળ જિણવર એટલે સામાન્ય કેવલીને વિષે વૃષજ્ઞ સમાન એટલે પ્રધાન એવા શ્રી વર્ધમાન સ્વામીને એક પણ નમસ્કાર જાવે કરીને કયોં ઠતો સંસાર રૂપી સમુદ્રથી પુરુષોને, વલી સ્ત્રી પ્રત્યે, નપલ કણથી કૃત્રિમ નપુંસક પ્રત્યે તારે છે. અહીંઆં જે દિ ગંવરો કહે છે કે સ્ત્રીને મોક્ષ નથી પણ તે જૂવું છે, કે મકે જ્ઞાન, દરશન, ચારિત્ર આરાધવા આશ્રી સ્ત્રી પણ પુરુષની પેરેજ છે એમ સમજવું. ॥ ૩ ॥

ઝજ્ઞિંત સેલ સિહરે કેળ ગિરનાર પર્વતના શિખ ને વિષે સહસ્રાબ્રવનમાંહે દિક્ષા કલ્યાણક, તથા

જ્ઞાન કહ્યાણક અને નિર્વાણ કહ્યાણક એ ત્રણે ક
હ્યાણક જે સ્વામીનાં ઘ્યાં છે, તે ધર્મને વિષે ચક્રવ
ર્તી સમાન, એવા વાવીસમા શ્રી અરિષ્ટેનમિનાથ જગ
વાનને હું નમસ્કાર કરું હું. ॥ ૪ ॥

ચત્તારિઅઠ કેળ હવે અષ્ટાપદ તીર્થને વિષે નમ
વાને અર્થે કહે છે. અષ્ટાપદ પર્વતને વિષે જ્ઞરત ચક્રવ
ર્તિંએ જે ચતુર્મુખ પ્રસાદ કરાવ્યો છે, તેને વિષે થાપ્યા
છે દક્ષિણ દિશાએ ચાર, પશ્ચિમ દિશાએ આઠ, ઉત્તર
દિશિને વિષે દશ, અને પૂર્વ દિશાને વિષે બે, સર્વ
મલી વર્તમાન ચોવીસ તીર્થકરો તે પરમાર્થે કરી નિ
ષ્ટિતાર્થ થયા એવા રુષ્ઙાદિ ચોવીસ તીર્થકર જગ
તે મને મોક્ષ દ્યો. ॥ ૫ ॥

એ ગાથા જે પ્રકારે શ્રી ગૌતમ સ્વામીએ
પદ હપર દેવની વંદના કરતાં કરી છે, તે
નિબંધન અણલી છે આ સિદ્ધસ્તવની વધી મલી
ગાથા, વીસ પદ, વીસ સંપદા, લઘુઅક્ષર એકસો
વન, અને ગુરુ અક્ષર પચીસ, મલી કુલ
હોતેર અક્ષરો છે.

॥ વેદ્યાવચ્ચગરાણંના તુટા શબ્દના અર્થ ॥

વેયાવચ્ચ-વૈઆવચ્ચ
ગરાણં-કરનારને
સંતિ-શાંતિ

સમાદિષ્ટિ-સમકિત દૃષ્ટિ
સમાહિ-ચિત્તની સમાધિ

॥ અથ વેદ્યાવચ્ચગરાણં ॥

વેદ્યાવચ્ચગરાણં, સંતિગરાણં, સમ્મ

દિઠિસમાહિગરાણં, ॥ ૧ ॥ ઇતિ ॥

કરેમિ કાનસ્સગ્ગં અન્નહ ॥

અર્થ:-સવન્ન ઉચ્ચિઅ કરણં એમ જ્ઞગવંતે કહ્યું
ઠે. તે માટે ઉચિત કરવા જ્ઞણી શ્રી વીતરાગના વૈ
આવચ્ચ કરનાર દેવતાના પ્રત્યયને અર્થે કાનસ્સગ્ગ ક
રવા સારુ આવી રીતે કહેવું, તે કહે ઠે. વેદ્યાવચ્ચ ગરાણં
કેળ વીતરાગના શાસનની જ્ઞક્તિ કરનાર ગોમુખ યદ્દ
આદિ દેહને રક્ષારૂપ જે વેયાવચ્ચ સાનિધ્યના કરનાર,
તથા સર્વ સંઘને શાંતિના કરનાર તથા સમ્યક્ દૃષ્ટિ
જ્ઞવ્ય જીવોને સમાધિના કરનાર, તે દેવોને આશ્રયીને
તેને નિમિત્તે હું કાનસ્સગ્ગ કરુંવું. અહીંયાં અન્નહ નસ
સિણં કહીએ, કેમકે દેવતા અવિરતિ ઠે, તેથી વાંદવા

पूजवा योग्य नहीं. भाटे.

विधि:—पञ्चरक्षण कर्मा पढी खमासमण देइ
 इच्छाकारेण कही, वमेरा अथवा पोते चैत्यवन्दन कहीने
 पढी जंकिंचि नमुहुणं कही उज्जा अइने अरिहंत चेइआ
 णं कहीने एक नवकारनो कानुस्सग्ग करी नमोऽर्हत्तु
 कहीने प्रथम श्रोत्र कहेवी. पढी लोगस्स, सब्बलोए,
 अरिहंत चेइआणं कहीने एक नवकारनो कानुस्सग्ग
 पारीने बीजी श्रोत्र कहेवी. पढी पुस्करवरदी कही सु
 अस्स जगवन्त करेमि कानुस्सग्गं वंदणं कही एक
 नवकारनो कानुस्सग्ग पारी त्रीजी श्रोत्र कहेवी. पढी
 सिद्धाणं बुद्धाणं कही वेयावच्चगराणं करेमि कानु
 स्सग्गं अन्नत्तु कही-एक नवकारनो कानुस्सग्ग
 पारी, नमोऽर्हत्तु कही चोथी श्रोत्र कहेवी. पढी वे
 सी हाथ जोम्मी नमुहुणं कहेवुं, पढी चार खमासमण
 देवा पूर्वक जगवान्, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु
 प्रत्ये श्रोत्र वंदन करीए. पढी इच्छा कारेण ॥ देवसि प्र
 तिक्रमणे ठानं, एम कही जमणो हाथ चवला कटास
 णा उपर आपीने इत्तं सब्बसवि देवसिअणं कहेवुं.

देवसिञ्च पम्किमणो गानं नाबुटा शब्दना अर्थ.

सव्वस्स-सर्वने
दुच्चित्तिअ-माठुं चित्तवेलुं
दुप्पासिअ-माठुं बोलेलुं

दुच्चिट्ठिअ-माठी चेष्टारूप
इच्छं-हुं इच्छुंछुं

॥ अथ देवसिञ्च प्रतिक्रमणे गानं ॥

इच्छाकारेण संदिसह जगवन्

देवसिञ्च पम्किमणो गानं ॥

इत्थं सव्वस्सवि, देवसिञ्च, दुच्चित्तिञ्च,

दुप्पासिञ्च, दुच्चिट्ठिञ्च, तस्स

मिञ्चामि इकमं ॥

अर्थः—इच्छाकारेण के० आपनी इच्छाए करीने हे जगवन्त आदेश आपो के हुं देवसिञ्च पम्किमणामां रहुं. एम कहे एटले गुरु आदेश आपे, त्यारे इत्थं एम कही चवला कटासणापर जमणो हाथ आपी नीचो नमी सव्वस्सवि कहे.

सव्वस्सवि के० दिवस संबंधी अतिचार ते दुश्चिं

तित जे दुष्ट काम तेने चिंतववाथी थयो, वली दुर्ज्ञा
 षित ते उपयोग रहित माठी ज्ञाषा बोलवा अकी थ
 यो होय ते, तथा दुश्चेष्टित जे उपयोग रहित हालवा
 चालवा अकी तथा कामासनादिक एवी कायानी दुष्ट
 चेष्टा रूप प्रवृत्ति करवा अकी अयो होय, ते सर्व पण
 अतिचारने मिथ्या दुष्कृत देनं हुं.

विधि:-पढी उच्चा अशने करेमिज्जंते कहेवुं पढी
 इहामि ठामि काजस्सग्गं जो मे देवसिन्नु कहेवुं.

जो मे देवसिन्नुना ठुटा शब्दना अर्थ.

जो-जे
 मे-महारे जीवे
 देवसिओ-दिवस संबंधी
 अइआरो-अतिचार
 कओ-करीं
 काईओ-काया संबंधी
 वाईओ-वचन संबंधी
 माणसिओ-मन संबंधी
 उस्सुत्तो-उत्सूत्र संबंधी
 उमग्गो-अवला मार्गथी
 अकप्पो-अविधिथी करेलुं
 अकरणिज्जो-नहीं करवायोग्य

दुज्जाओ-दुर्ध्यान
 दुविचिंतिओ-माहुंकार्यविचारुं
 अणायारो-अनाचार
 अण-नहीं
 इच्छियव्वो-इच्छवा योग्य
 अ-नहीं
 सावग-श्रावक
 पाउग्गो-प्रायोग्य, उचित.
 नाणे-ज्ञानने विपे
 दंसणे-दर्शनने विपे
 चरित्ताचरित्ते-देश विरति व
 रित्रने विपे

(१६९)

सुए-सूत्रने विषे
तिण्हं-त्रण(तुं)
गुत्तिणं-गुप्तिओना
चउण्हं-चार (ना, मां)
कसायाणं-कषायोनो
पंचण्हं-पांच(नो)
अणुव्वयाणं-अणुव्रतोनुं

गुणव्वयाणं-गुणव्रतोनुं
सिख्खा-शिक्षा
वारस-वार
विहस्स-प्रकारना
खंडियं-खंडयुं
विराहियं-विराध्युं

॥ अथ इहामि ठामि कान्हस्सगं जो मे देवसिन् ॥

इहामि ठामि कान्हस्सगं जो मे
देवसिन् अईयारो कन् काईन्
वाईन् माणसिन् उस्सुत्तो उम्मग्गो
अकप्पो अकरणिज्जो उज्जान् उ
व्विचिंतिन् अणायारो अणिन्ति
अव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंस
णे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए
तिएहं गुत्तीणं चउएहं कसायाणं
पंचएहमाणुव्वयाणं तिएहं गुणव्व
याणं चउएहं सिक्खावयाणं वार

तित जे दुष्ट काम तेने चिंतववाथी थयो, वली दुर्ज्ञा
षित ते उपयोग रहित माठी ज्ञाषा बोलवा अकी थ
यो होय ते, तथा दुश्चेष्टित जे उपयोग रहित हालवा
चालवा अकी तथा कामासनादिक एवी कायानी दुष्ट
चेष्टा रूप प्रवृत्ति करवा अकी थयो होय, ते सर्व पण
अतिचारने मिथ्या दुष्कृत देनं हुं.

विधि:-पढी उज्जा अज्ञे करेमिज्जंते कहेवुं पढी
इहामि ठामि कान्हस्सगं जो मे देवसिन्नु कहेवुं.

जो मे देवसिन्नुना तुटा शब्दना अर्थ.

जो-जे

मे-महारे जीवे

देवसिओ-दिवस संबंधी

अइआरो-अतिचार

कओ-क्यों

काईओ-काया संबंधी

वाईओ-वचन संबंधी

माणसिओ-मन संबंधी

उस्सुत्तो-उत्सूत्र संबंधी

उमगो-अवला मार्गथी

अकप्पो-अविधिथी करेलुं

अकरणिज्जो-नहीं करवायोग्य

दुज्जाओ-दुध्यान

दुविच्चित्तिओ-माहुंकार्यविचारुं

अणायारो-अनाचार

अण-नहीं

इच्छियव्वो-इच्छवा योग्य

अ-नहीं

सावग-श्रावक

पाउग्गो-प्रायोग्य, उचित.

नाणे-ज्ञानने विषे

दंसणे-दर्शनने विषे

चरित्ताचरिज्जे-देश विरति च

रित्रने विषे

(१६९)

सुए-सूत्रने विषे
तिण्हं-त्रण(तुं)
गुत्तिणं-गुप्तिओना
चउण्हं-चार (ना, मां)
कसायाणं-कषायोनो
पंचण्हं-पांच(नो)
अणुव्वयाणं-अणुव्रतोनुं

गुणव्वयाणं-गुणव्रतोनुं
सिख्खा-शिक्षा
वारस-वार
विहस्स-प्रकारना
खंडियं-खंडयुं
विराहियं-विराध्युं

॥ अथ इत्थामि ठामि कान्हस्सग्गं जो मे देवसिन् ॥

इत्थामि ठामि कान्हस्सग्गं जो मे
देवसिन् अईयारो कन् काईन्
वाईन् माणसिन् उस्सुत्तो उम्मग्गो
अकप्पो अकरणिज्जो डुज्जान् डु
विचिंतिन् अणायारो अणिन्ति
अवो असावगपाउग्गो नाणे दंस
णे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए
तिएहं गुत्तीणं चउएहं कसायाणं
पंचएहमणुव्वयाणं तिएहं गुणव्व
याणं चउएहं सिक्खावयाणं वार

सविहस्स सावगधम्मस्स जं खंमि
अं जं विराहिअं तस्स मिच्चामि
उक्कमं ॥ १ ॥ इति ॥

अर्थः—जोमे देवसिउ के० जे में दिवस संबंधी
अतिचार कर्यो होय, ते अतिचार केवी रीते लाग्यो,
ते कहे ठे. काया संबंधी, वचन संबंधी, अने मन संबंधी,
ते अतिचार विगते करीने कहे ठे. जे कांइ सिद्धांत
विरुद्ध बोलायुं, तेणे करीने उत्पन्न अयुं जे उन्मार्गनुं प्र
वर्त्ताववुं, तेथी नीपनो जे अकळप एटले अकळपनीय
कार्य करवे करीने अकरणिज्जो एटले जे नहीं करवा
योग्य तेवा कार्यने करवे करीने जे अतिचार लाग्यो.
ते रीते काया अने वचन संबंधी अतिचारनुं स्वरूप
कह्युं. हवे मन संबंधी अतिचारनुं स्वरूप कहे ठे. उपर
कहेलुं नहीं करवा योग्य काम करवाथी दुध्यान ते चि
त्तनुं एकाग्रपणे आर्त्त, रौड ध्याननुं ध्याववुं, जे माटे उ
ध्यान, ते माटेज डुर्विचिंतित एटले चल चित्तपणे करी
अशुभ कार्यने मनमां चिंतववुं, जे माटे ते डुर्विचिंतित,
ते माटेज अनाचार कहीए. एटले जे अंकी व्रत्तादि

કનો સર્વથા જંગ થાય, જે માટે તે અનાચાર, તે માટે જ ઇહવા વાંઠવા યોગ્ય નથી; જે માટે તે વાંઠવા યોગ્ય નથી તે માટેજ તે શ્રાવકને પ્રાયોગ્ય એટલે યોગ્ય નથી, ઇતિ મન સંબંધી અતિચાર. એ સર્વ અતિચાર જ્ઞાને વિષે લગામથા હોય ? તે કહે બે.

નાણે કેળવસ્તુનું યથાર્થ જાણપણારૂપ જે જ્ઞાન તેને વિષે, દેવાદિક ત્રણ તત્ત્વનું સાચું શ્રદ્ધાન રૂપ જે દરજ્જાન તેને વિષે, ચરિત્તાચરિતે કેળવવાં એક વિરતિ રૂપ કાંઈ એક અવિરતિરૂપ એવું જે દેશવિરતિરૂપ શ્રાવકનું ચારિત્ર તેને વિષે, અથવા જ્ઞાનાદિક નિજ ગુણ માંહે દેશ થકી જે સ્થિરતા, તે રૂપ જે ચારિત્રા ચારિત્ર તેને વિષે. સુએ કેળવ શ્રુત સિદ્ધાંતને વિષે અકાલે જાણવાથી અતિચાર લગાડ્યો હોય, સમ્યક્ત્વરૂપ સામાયકને વિષે જિન વચનમાં શંકાદિક અતિચાર લગાડ્યો હોય, મનો ગુપ્તિ, વચન ગુપ્તિ, અને કાય ગુપ્તિ એ ત્રણ ગુપ્તિને અણપાલવે કરી, ક્રોધ, માન, માયા, અને લોભ એ ચાર કષાયને કરવે કરી, પાંચ અણુવ્રતમાંથી તથા ત્રણ ગુણવ્રતમાંથી તથા ચાર શિક્ષાવ્રતમાં

हेथी घणुं शुं कहीए ? ए पूर्वोक्त बार प्रकारना व्रत रूप, श्रावक संबंधी जे धर्म ते मांहेथी मारे जीवे जे खंरुचुं एटले देश थकी जाग्युं, जे विराध्युं एटले सर्व थकी विराध्युं, तेनुं दुष्कृत एटले पाप जे मने लाग्युं होय ते मिच्छा केण मिछ्या आन एटले निष्फल आन.

विधि:-पढी तस्सनत्तरी, अन्नह नससिएण कही अतिचारनी आठगाथानो कानस्सग्ग करवो ना आवमे तेणे आठ नवकारनो कानस्सग्ग करवो.

नाणंमि दंसणंमिअना बुटा शब्दना अर्थ.

नाणंमि-ज्ञानने विषे
दंसणंमि-दर्शनने विषे
चरणंमि-चारित्रने विषे
तवंमि-तपने विषे
तह-तेमज
विरियंमि-वीर्यने विषे
आयरणं-आचरण, व्यापार
आयारो-आचार
पंचहा-पांच प्रकारे
भणिओ-कह्यो
काले-काल
विणये-विनय

बहुमाणे-बहुमाने
उवहाणे-उपधान
अनिन्हवणे-(गुरु)तहींओळववा
वंजण-शुद्ध उच्चार
अथ-अर्थ
तदुभये-ते वे
अट्टविहो-आठ प्रकार
निसंकिअ-शंकारहीत
निक्कंखिअ-वांछारहीत
निव्वित्तिगिच्छा-फलना संदे
रहीत
अमूढदिट्ठीअ-अमूढ द्रष्टि

उववूह-प्रशंसा करवी
 थिरीकरणे-स्थिर करवुं
 वच्छल-भक्तिभाव, मैत्रीभाव
 प्पभावणे-प्रभावना
 पणिहाण-प्रणिधान
 जोग-योग
 पंचहिं-पांचवडे
 समिईहिं-समितिंवडे
 तिहिं-त्रणवडे
 गुत्तीहिं-गुप्तिओवडे
 चरित्तायारो-चारित्राचार
 नायव्वो-जाणवो
 वारस-वार
 विहंमि-प्रकारने विषे
 तवे-तपने विषे
 सभ्यंतर-अभ्यंतर साथे
 वाहिरे-वाह्यने विषे
 कुसल-तीर्थकरोए
 दिठ्ठे-प्रकाश्युं
 अगिलाइ-दुगंच्छारहीत
 अणाजीवि-आजीविकारहीत
 सो-ते
 तवायारो-तपाचार

अणसणं-अनशन
 ऊणोवारिया-ऊणोदरी
 विच्ची-वृत्ति, आजीविका
 संखेवणं-संक्षेप, संकोच
 रस-रस
 चाओ-साग
 किलेसो-क्लेश, दमयुं
 संलीणया-संलीनता
 वज्जो-वाह्य
 पायच्छित्तं-प्रायश्चित्त
 विणओ-विनय
 सज्झाओ-सज्झाय
 ज्ञाणं-ध्यान
 उस्सग्गो-काउस्सग्ग
 अण्णितरओ-अभ्यंतर
 अणिगूहिअ-अण्ठांकेलुं
 वल-वल
 पडिक्कमइ-उद्यम करे छे
 जहुत्तं-यथोक्त
 आउत्तो-सावधान धको
 जुंजइ-जोडे
 जहाथामं-यथाशक्ति

(१७४)

॥ अथ अतिचारनी आठ गाथा ॥

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि त
वंमि तहय विरियंमि ॥ आयरणं
आयारो, इअ एसो पंचहा जणि
उ ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे,
उवहाणे तह अनिएहवणे ॥ वंज
ण अठ तडुअए, अठविहो नाण
मायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ नि
कंसिअ, निव्वितिगिह्वा असूढ दि
ठीअ ॥ उववूह थिरीकरणे, व
ठल प्पन्नावणे अठ ॥ ३ ॥ पणि
हाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं
तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो,
अठविहो होइ नायवो ॥ ४ ॥
बारसविहंमि वि तवे, सप्पितर बा
हिरे कुसलदिठे ॥ अगिलाइ अ

જાજીવી, નાયઘો સો તવાયારો ॥ ૫ ॥

અણસણ મૂળોયરિઆ, વિત્તી સં
સ્વેવણં રસચ્છાન કાયકિલ્લેસો સં
લિ, ણયાય બઘો તવો હોઈ ॥ ૬ ॥

પાયહિતં વિણન, વેયાવચ્ચં તહેવ
સઘાન ॥ ઝાણં હસ્સગ્ગો વિઅ,

અપિંતરન તવો હોઈ ॥ ૭ ॥ અ

ણિગૂહિઅ બલ વિરિન, પમ્મિક્કમ

ઈ જો જહુત્તમાહંતો ॥ જુંજઈ અ

જહાયામં, નાયઘો વીરિઆયારો ॥ ૮ ॥

અર્થ:—નાણંમિ કેળ જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર, તપ
અને વીર્ય એ પાંચને વિષે આચરવું તેને આંચાર કહીએ.
એમ તે આચાર પાંચ પ્રકારે જ્ઞાનીએ કહ્યો છે. એટલે જ્ઞા
નાચાર, દર્શનાચાર, ચારિત્રાચાર, તપાચાર અને વીર્યા
ચાર. ૧૧. તેમાં પ્રથમ જ્ઞાનાચાર કહે છે. કાલે વિણે કેળ
જે અવસરે જે જ્ઞાણવાનું હોય તેજ જ્ઞાણવું તેને કાલ ક
હીએ, વિનય પૂર્વક જ્ઞાન જ્ઞાણવું, જ્ઞાન તથા જ્ઞાનીને વિષે

अंतरंग प्रेम करवो तेने बहुमान कहीए, नवकारादि सूत्रोना तपो विशेष उपधान योगनुं वेहेवुं तेने उपधान कहीए, तेमज जणावनार गुरुने उलववो नहीं; सूत्रनो अक्षर शुद्ध जणवो, खोटुं न जणवुं, शुद्ध उच्चार करवो, अर्थ शुद्ध जणवो, सूत्र अने अर्थ ए बने शुद्ध जणवां, ए आठ प्रकारे ज्ञानना आचार जेम कह्या ठे तेमज करीए, तेने ज्ञानाचार कहीए. अने तेथी विपरीत करीए ते वारे अतिचार लागे. ॥१॥ हवे दर्शनाचार कहेठे.

निस्संकिय केण जगवंते कहेलां जे तत्त्व तेने विषे शंका करवी नहीं, एकांते साचुं मानवुं ते पहेलो निःशंकित गुण. बीजो बीजा दर्शननी वांछा करवी नहीं, लगायेक तप, कृमादिकनो गुण देखी पर दर्शननो अनिलाष करवो नहीं, ए निकांक्षित गुण. जिनधर्मने विषे क्रियानुष्ठानादिकना फलने विषे संदेह करवो नहीं, अथवा साधु साधवीना मल मलीन शरीर तथा वस्त्र देखी निंदा करवी नहीं, ए त्रीजो निर्विजीगुप्सा गुण कहीए. चोथो अमूढ दृष्टिपणुं एटले मिथ्यात्वीना धर्मनो प्रज्ञाव देखीने आज धर्म साचो हशे एवुं मनमां

ચિંતવન કરવું નહીં, એટલે એવા મૂઢ દૃષ્ટિ ન થવું. પાંચમો નપવુંહણા એટલે સમ્યક્ત્વ ધારી ગુણવંતના થોડા પણ ગુણની પ્રશંસા કરવી. ઊઠો સ્થિરિકરણ એટલે જિનધર્મથી પરુતા પ્રાણીને સહાય આપી ધર્મને વિષે સ્થિર કરવો તે. સાતમો વ્રાત્સલ્ય એટલે સાધર્મીની નુપર એકાંતપણે હિત અને નીતિ કરવી તે. આઠમો જેણે કરી જિનશાસન દીપે એવાં કામ કરવાથી ઘણા લોકો બોધિબીજ પામે, તેમ કરવું, જે દેહીને મિથ્યાત્વી પણ પુણ્ય નુપાર્જે તેને પ્રજ્ઞાવના કહીએ. એ આઠ પ્રકારે દર્શનાચાર જાણવો તેથી વિપરીત ચાલે તો દર્શનાચારના અતિચાર લાગે. ॥ ૩ ॥

હવે ચારિત્રાચાર કહે છે:—પણિહાણ કેળવવાનું એકાગ્ર સાવધાનપણે કરી, મન વચન તથા કાયાના યોગયુક્ત એવો, પાંચ સમિતિ અને ત્રણ ગુણિય કરી આઠ પ્રકારે એ ચારિત્રાચાર આપે છે, એમ જાણવું. એ આઠ વોલે પ્રવર્તે ત્યારે ચારિત્રાચારના અતિચાર ન લાગે, અને તેથી વિપરીત કરે તો લાગે. તે માટે સાધુને નિરંતર અને શ્રાવકને સામાયિક પોસહ લીધે અવશ્ય પાંચ સમિતિ અને ત્રણ ગુણિ પાલવી ॥ ૪ ॥

(१७८)

हवे तपाचार कहे ठे. बारस विहंमि वि तवे के
बार प्रकारनुं तप ठे. ठ जेदे अज्यंतर अने ठ जेदे
बाह्य तप वे मली बार प्रकारनुं तप तीर्थकरे कहेलुं
ठे. ते तप, ग्लानी जावे एटले डुगंठा जावे रहित करे,
आजीविकाने अर्थे तप करे नहीं, एटले जो हुं तप करूं
तो तपस्वी कहेवां पेट जराइ चाले, मने लोको त
पसी जाणी धन प्रमुखवने मारी नक्ति करे, एवी बु
द्धि तप न करवुं, एम शुद्ध रीते करे तेने तपाचार
जाणवो, एथी विपरीतपणे प्रवर्त्ते तो अतिचार लागो।५।

हवे बाह्य तपना ठ जेद कहे ठे. अणसण के
पहेलुं अनशन ते, उपवासादि करवुं ते आहारनो त्या
ग श्रोमा वखत सुधी, अथवा जावजीव सुधी ते अणस
ण, बीजुं पांच सात कोलीआ नुंठा जमवा, वस्त्र पात्र
नुंठां राखवां वगेरे ते नणोदरि. त्रीजुं वोहोरवा जतां
साधु घरनी संख्या नकी करे, एटले पांच सात के आट
लांज घेरथी सूऊतो आहार मले तो लेवो नहीं तो उ
पवास करवो, तेने वृत्तिसंक्षेप कहीए, अने
तो सवारे पञ्चक्राण करतां दश के पंदर जेटलां
मोकलां राख्यां होय, तेनुमांथी वे अथवा त्रण के

(१७ए)

धारे उठां करे तेने वृत्तिसंक्षेप कहीए. ठ विगयमांथी
एक बे विगय तथा लीलोतरी प्रमुखना जे नियम ल
इए तेने रस त्याग तप कहीए. टाढ तथा तापनी आ
तापना लेवी, लोच कराववो, उधामा पगे चालवुं, जू
मि उपर सूवुं एम शरीरने कष्ट देवुं तेने कायक्लेश
तप कहीए. कूकनीनी पेठे हाथ, पग, प्रमुख अंगो
पांग संवरी राखवां, विषय कषायने उदीरवा नहीं, उ
दय आवे तेने निष्फल करवा, तेने संलीनता तप क
हीए, ए ठ प्रकारनुं बाह्य तप ठे. ॥ ६ ॥

हवे अभ्यंतर तपना ठ जेद कहे ठे. पायश्रित्तं केण
गुरुनी पासै पाप अपराधनुं प्रकाशवुं, ते निवारण क
रवाने अर्थे गुरुनुं कहेलुं जे तप ते करवुं तेने प्रथम प्राय
श्रित्त तप कहीए. बीजो विनयतप ते गुरुनो विनय आठ
प्रकारे करवो, (१) गुरुने देखीने उज्जा अरुं, (२) गुरुने
आवता देखी सामा जवुं, (३) गुरुने देखीने हाथ जोमी
मस्तके चढावीए, (४) गुरुने बेसवाने आसन आपवुं
अने पोते आसने बेसवानुं मूकी देवुं, (५) ज्यां सुधी
गुरु उज्जा होय त्यां सुधी बेसवुं नहीं, (६) गुरुने वांढ
गां देवां, (७) गुरुनी पर्युपासना करवी, सेवा करवी,

વિસામણ કરવા, (૬) તથા ગુરુ જાય ત્યારે તેમની પા
શ્વલ વોલાવવા જવું, એ આઠ પ્રકારે વિનય તપ કહીએ.

વૈયાવૃત્ય તપ તે આહારાદિક આણી આપવાં કે
રૂ પગ ચાંપવા પ્રમુખ આચાર્યાદિક દશ પુરુષની જ
ક્તિ કરવી એટલે આચાર્ય, ગ્લાન, બાલ, વૃદ્ધ, તપ
સ્વી, નવદીક્ષિત સાધુ, સાધર્મી, કુલ (એક આચાર્ય
ના સંતાનને કુલ કહે છે), ગૃહ (ઘણા આચાર્યના સં
તાન એકઠા થયેલા હોય તે), અને સંઘ (સાધુ, સા
ધવી, શ્રાવક, શ્રાવિકા). એ દશનું જે વૈયાવચ્ચ કરવું
તેને વૈયાવચ્ચ તપ કહીએ.

તેમજ ચલી સજ્જાય તપ પાંચ પ્રકારે છે. વાંચના
(જાણવું) પૃઢના (સંશય ટાલવાને પૂઠવું), પરાવર્તના
(વિસરેલું સંજ્ઞારવું), અનુપ્રેક્ષા, (તત્ત્વચિંતવના કરવી)
અને ધર્મકથા, (ગુણીજનની કથા કરવી) એ પાંચ જ્ઞેદ
સજ્જાય તપના જાણવા.

પાંચમું ધ્યાન તપ તેના બે જ્ઞેદ છે. આર્ત ર
ધ્યાન નિવારીએ (૧) ધર્મ ધ્યાન (૨) શુક્લ ધ્યાન એ
શુદ્ધ ધ્યાન ધ્યાઈએ.

ઘડું કર્મના ક્ષય નિમિત્તે કાનસ્સગ્ગ કરવો.

(१८१)

कायोत्सर्ग तप. एठ प्रकारे अर्च्यंतर तप आयवे. ॥७॥

हवे वीर्याचार कहे ठे. अणिगुहिअ के० अणढां
केलुं एटले प्रगट ठे बल वीर्य जेनुं, वली जे मनमां उ
त्साह धरतो अको अने वचने धर्मव्याख्यान करतो
ठतो, खेद न पामे एवो ठतो, धर्मने विषे पराक्रमफो
रवतो वर्त्ते; जे अवसरे जे क्रिया करवानुं जेम जगवंते
कहुं ठे तेम करवाने उद्यमवंत अयो अको वर्त्ते, अने
वली जुंजइ के० जोमे जहाधामं के० बलने अनुसारे
यथाशक्ति धर्मने विषे मन वचन तथा कायानो व्या
पार प्रयुंजे, ए त्रण जेदे वीर्याचार जाणवो. एशी विप
रीत जो धर्मने विषे बलवीर्य गोपवे तो अतिचार लागे. ८

विधि:-कानस्सग्ग पारी प्रगट लोगस्स कही
बेसीने त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पमिलेहवी. पठी
वांदणां बे देइने उज्जा थइने इच्छा० देवसिअं आलोउं
इहं आलोएमि जो मे देवसिउ कहेवा.

इच्छाकारेण संदिसह जगवन् देव
सिअं आलोउं ॥ इहं आलोए
मि जो मे देवसिउ अइअपारो ॥

(१८१)

अर्थ:-इच्छाकारेण के० पोतानी इच्छाए करी पण कोइना बलात्कारे नहीं. संदिसह जगवन् के० हे जग-वंत मने आदेश आपो. देवसिअं आलोअं के० दिवस संबंधी जे अतिचार लाग्या होय ते प्रत्ये समस्तपणे करी प्रकाशुं ? ए रीते शिष्य कहे ते वारे गुरु कहेके आलोह एटले आलोचो प्रकाशो, पढी शिष्य कहे इअं के० हुं पण इअुं तुं, तमारुं वचन प्रमाण ठे, आलोएमि जो मे देवसिअ के० हुं आलोअं तुं संपूर्ण ज्ञावे प्रकाशुं तुं जे मारे जीवे दिवस संबंधी वगेरे.

विधि:-ए संपूर्ण कह्या पढी सात लाख कहीने अठार पापस्थानक कहेवां.

सात लाखना तुटा शब्दना अर्थ.

पृथिवीकाय-माटी पाषाणा-

दिकना जीव

अप्पकाय-पाणीनाजीव

तेउकाय-अग्निना जीव

वाउकाय-वायराना जीव

प्रत्येक-एक शरीरमां एक जी

ववाली

साधारण-एक शरीरमां अनंत

जीववाली

वनस्पतिकाय-शाक, भाजीपा

ला वीगेरेना जीव

योनि-उत्पत्तिस्थान

हण्यो-मायो

हणाव्यो-मराव्यो

अनुमोद्यो-वखाण्यो

(१७३)

॥ अथ सात लाख ॥

सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्पकाय, सात लाख तेनकाय, सात लाख वाजकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौद लाख साधारण वनस्पतिकाय, बे लाख बैंजिय, बे लाख तेंजिय, बे लाख चौरिंजिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंजिय, चौद लाख मनुष्य, एवंकारे चोराशी लाख जीवायोनिमांहे महारे जीवे जे कोइ जीव हणयो होय, हणाव्यो होय, हणता प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सर्वे मने, वचने, कायाये करी तस्स मिह्मा मि उक्कमं ॥ इति ॥ एनो अर्थ सुगम ठे.

અઠાર પાપસ્થાનકના તુટા શબ્દના અર્થ.

પ્રાણાતિપાત-જીવહિંસા
મૃષાવાદ-જૂઠું બોલવું
અદત્તાદાન-ચોરી
મૈથુન-વિષય સેવવો
પરિગ્રહ-ધન, ધાન્ય સંઘરવું
ક્રોધ-ગુસ્સો
માન-અહંકાર
માયા-કપટ
લોભ-તૃષ્ણા
રાગ-હેત
દ્વેષ-તિરસ્કાર

કલહ-કજીઓ
અભ્યાસ્યાન-આલ ચઢાવવું
પૈશુન્ય-ચાઢી
રતિ-મુલ
અરતિ-દુલ
પર-પારકી
પરિવાદ-નિંદા
૧માયામૃષાવાદ-કપટસાથે જૂઠું
મિથ્યાત્વ-દેવગુરુ ધર્મની અ-
શ્રદ્ધા
૨શલ્ય-સાલ

॥ અથ અઠાર પાપસ્થાનક ॥

પહેલે પ્રાણાતિપાત, બીજે મૃષાવા
દ, ત્રીજે અદત્તાદાન, ચોથે મૈથુન
પાંચમે પરિગ્રહ, ષઠે ક્રોધ, સાતમે
માન, આઠમે માયા, નવમે લોભ,
દશમે રાગ, ઇગિયારમે દ્વેષ, બારમે

૧ અંતરમાં વીજી વાત હોય અને બાહ્ય મુલ્યથી મીઠું બોલવું
જિત્યાદિક અનેક પ્રકારે કરી લોકોને ઠગવાના પરિણામ.

૨ પાંચ પ્રકારે મિથ્યાત્વ સેવવારૂપ પરિણામ તે રૂપ સાલ.

कलह, तेरमे अज्याख्यान, चौद
 मे पैशुन्य, पन्नरमे रति अरति,
 सोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया
 मृषावाद, अठारमे मिथ्यात्वशल्य,
 ए अठार पापस्थानक मांहे महा
 रे जीवे जे कोइ सेव्युं होय, सेव
 राव्युं होय, सेवता प्रत्ये अनुमोद्युं
 होय, ते सर्वे मनै, वचनै, कायाये
 करी तस्स मिहामि डुक्कमं ॥इति॥
 एनो अर्थ सुगम ठे ॥

विधि:—पढी सवस्सवि, देवसिअ, डुच्चिंतिअ डुप्पा
 सिअ, डुच्चिठिअ, इह्वाकारेण संदिसह जगवन् इहं त
 स्समिहामि डुक्कमं. एम कहीने बेसी जमणो पंग पूंजी
 (नज्जो राखी) एक नवकार गणी करेमिज्जंते कही इ
 ह्वामि पम्पिक्कमिज्जं जोमें देवसिज्जं कही वंदित्तु कहेवुं.

(१८६)

वंदिता सूत्रना लुटा शब्दना अर्थ गाथा १ थी ५ सुधी.

वंदित्तु-वांदिने
सव्व-सर्व (सर्वज्ञ)
सिद्धे-सिद्धोने
धम्मायरिये-धर्माचार्य
अ-अने, वली
अइआरस्स-अतिचारने
सुहुमो-सुक्ष्म
वायरो-बादर, मोटो
निंदे-निंदुछुं
दुविहे-बेप्रकारना
परिग्गहंमि-परिग्रहने विषे
सावज्जे-पापसहित, सावद्य
बहुविहेअ-घणा प्रकारना
आरंभे-आरंभने विषे
कारावणे-कराववाथी
करणे-करवाथी

पडिक्कमे-प्रतिक्रमुंछुं
देसिअं-दिवससंबंधी
वद्धं-वांध्युं होय
इंदिएहिं-इंद्रियोवडे
चउहिं-चार (वडे)
कसाएहिं-कषायोवडे
अप्पसथ्येहिं-माठाभावे करी
रागेण-रागे करीने
दोसेण-द्वेषे करीने
आगमणे-आवतां
निग्गमणे-जतां
ठाणे-स्थानके
चंकमणे-फरतां
अणाभोगे-अनुपयोगे
अभिओगे-आग्रहथी
निओगे-आज्ञाथी

॥ अथ वंदित्ता सूत्र ॥

वंदित्तु सव्व सिद्धे, धम्मायरिए अ
सव्वसाहू अ ॥ इहामि पम्किमि

जं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥

जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंस
णे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो

वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥

डुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुवि

हे अ आरंज्जे ॥ कारावणे अ

करणे, पम्भिकमे देसिअं सव्वं ॥ ३ ॥

जं बध्मिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं

अप्पसत्तेहिं ॥ रागेण व दोसेण व,

तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥

आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंक्रम

णे अणान्नोगे ॥ अज्जिउगे अ नि

उगे, पम्भिकमे देसिअं सव्वं ॥ ५ ॥

अर्थः—वंदितु सव्वसिद्धे केण सर्व तीर्थंकर, अने
सिद्ध जे मोक्षे पहुँच्या ठे, तथा श्रुत चारित्ररूप धर्म
ना पालक, तथा धर्मना दातार ते धर्माचार्य, अने उ

પાધ્યાય, તથા મોક્ષના સાધક સર્વ સાધુ એ પંચપરમે
ષ્ટિને વાંદીને શ્રાવક ધર્મને વિષે જે અતિચાર (આત્માના
ગુણને મલીન કરનાર) લાગ્યા હોય, તેથી પશ્ચિમવા
ને હું હું હું ॥ ૧ ॥

હવે સામાન્ય પ્રકારે સર્વ અતિચાર પશ્ચિમને છે.
જોમે વયાઙ્યારો કેળ જે મુજને વ્રત આશ્રી અતિચાર
લાગ્યા હોય, તેમજ જ્ઞાનાચાર, દર્શનાચાર, ચારિત્રાચાર,
અને અ કેળ ચ શબ્દ અકી તપાચાર, વીર્યાચાર ત
થા સંલેખના એટલે મરણાંત આરાધના સંબંધી નાનો
અથવા મોટો અતિચાર, એ સર્વ એકસો ચોવીસ અતિચારો
માંથી નાનો અથવા મોટો જે અતિચાર લાગ્યો હોય, તે
પ્રતે આત્માની સાથે નિંડુ હું, અને ગુરુની સાથે ગરહું હું. ૧

હવે પરિગ્રહમિ કેળ પ્રાયે પરિગ્રહજ પાપનું
મૂલ છે, માટે પ્રથમ પરિગ્રહ આશ્રયી કહે છે. તે બે પ્રકારનો છે.
૧. એક સચિત્ત, (જાનવર તે છીપદચતુષ્પદરૂપ)
અને બીજો અચિત્ત, (હવ્ય, આન્નુષણાદિ) અથવા
૨. એક અન્યંતર, (કષાયાદિ ચૌદ પ્રકારે) અને બીજો વાહ્ય,
(ધનધાન્યાદિ નવ પ્રકારે) જેની નુત્પત્તિને વિષે પા
હિત અનેક પ્રકારે જીવહિંસાદિક આરંભ છે એવા

आरंभ करतां, करावतां अने अनुमोदना करतां जे दि
वस संबंधी अतिचार लाग्यो होय ते हुं पम्किमुं ॥३॥

हवे ज्ञानाचारना अतिचार आलोवे ठे.

जंबझमिंदिएहिं केण जे अशुभ कर्म पांच इंडि
ये करीने तथा चार कषाये करी बांध्युं ते कषाय घणा
माठा ठे तेणे करी तथा रागे करी अने द्वेष करी
ज्ञानाचारना जे अतिचार रूप अशुभ कर्म बांध्युं
होय, ते प्रत्ये हुं आत्मानી साखे निंडुं बुं, वली गुरुनी
साखे गरहुं बुं. ॥ ४ ॥

हवे दर्शनाचारना अतिचार आलोवे ठे.

आगमणे निग्गमणे केण अणउपयोगथी, अथवा
राजाना हुकमथी तथा घणा लोकना आयह वगेरे अ
नियोग आगारथी, वली पराधीन नोकरी करतां पोता
ना शेठनी आझाथी, मिण्या दष्टि संबंधी स्थयात्रा वगेरे
कौतूक जोवाने जवुं आववुं करवुं परुयुं होय, तेथी,
तथा मिण्यात्वीना ठेकाणे उन्नां रहेतां आम तेम फ
रतां जे अतिचार रूप पाप बांध्युं होय ते दिवस संव
धी सर्व पापने हुं पम्किमुं बुं. ॥ ५ ॥

अर्हीआं सर्वत्र देसिअं सब, कहेवुं एम कहुं ठे,

पण देवसिञ्चं सञ्चं एम कहुं नथी कारण के प्राकृत
 ज्ञापाना वशथकी वकारनो लोप थाय ठे माटे. अहीअ
 प्रज्ञातना पस्किमणमां राइयं सञ्चं कहेवुं, अने पस्कि
 पस्किमणमां पस्किअं सञ्चं, तथा चउमासिए चउम्म
 सियं तथा संवञ्जरिए संवञ्जरियं सञ्चं एवा पाठ कहीए
 गाथा ५ थी १० सुधीना ठुटा शब्दना अर्थ

संका-शंका
 कंख-कांक्षा, इच्छा
 विगिच्छा-फलनो संदेह, दुगंच्छा
 पसंस-वखाण, प्रशंसा
 संथवो-स्तुति
 कुलिंगीसु-मिथ्यात्वीने विषे
 सम्मत्तस्स-समकितना
 छक्काय-छ काय
 समारंभे-आरंभने विषे
 पयणे-रांधवामां
 पयावणे-रंधावतां
 दोसा-दोषो
 अत्तट्ठा-पोताने अर्थे
 परट्ठा-पारकाने अर्थे
 उभयट्ठा-वेने अर्थे
 चेव-निश्चे
 थूलग-मोटा

अणुव्वयंमि-अणुव्रतने विषे
 पाणाइवाय-प्राणातिपात
 विरइओ-विरतिथी
 आयरिअं-उलंघवुं, आचर्युं
 अप्पसत्थे-माठाभावे
 इत्थ-अहींआं
 प्पसंगेणं-प्रसंगवहे
 वह-वध
 वंध-वांधवुं
 छवि-शरीरनां अंग
 छेए-छेदवाथी
 अइ-अति, घणां
 भारे-भारवहे
 भत्त-खोराक
 पाण-पाणी
 वुच्छेये-अंतराय
 वयस्स-व्रतना

(१९१)

संका कंख विगिह्वा, पसंस तह
संथवो कुलिगीसु ॥ सम्मत्तस्स इ
आरे, पम्भिकमे देसियं सव्वं ॥ ६ ॥
ठक्काय ससारंजे, पयणे अ पयाव
णे अ जे दोसा ॥ अतथा य पर
ठा, उज्जयथा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥
पंचन्हमणुवयाणां, गुणवयाणां च
तिन्हमइयारे ॥ सिस्काणां च चउ
न्हं, पम्भिकमे देसिअं सव्वं ॥ ८ ॥
पढमे अणुवयंमि, थूलग पाणाइ
वाय विरईउ ॥ आयरिअमप्पसत्ते,
इउ पमायप्पसंगेण ॥ ९ ॥ वह
बंध ठवि ठेए, अइजारे जत्तपा
ण वुत्तेए ॥ पढमवयस्स इआरे,
पम्भिकमे देसियं सव्वं ॥ १० ॥

अर्थ—संका कंख के० प्रथम जिन वचनने विषे सं

देह करवो तेने शंका कहीए, बीजो अन्य दर्शनीमां ओ
कीक कृमा, अहिंसादिक गुण देखी तेना पर अज्जिलाष
धरे तेने कंखा कहीए, त्रीजुं दानादिक धर्म कर्यानुं फ
ल दृशे के नहीं एवो संदेह धरवो तथा साधु साधवी
नां शरीर बस्त्र मलीन देखी दुगंठा करे तेने विगिञ्जा क
हीए, चोथो मिथ्यात्वीनी प्रशंसा करे तेने प्रशंसा
कहीए, तथा पांचमो तेनो संस्तव परिचय करे तेने
संस्तव कहीए.

ए दर्शन मोहनीय कर्मना कयोपशमादिकपणा
थी उत्पन्न अयो जे जिनप्रणीत तत्त्वश्रद्धानरूप आत्मा
नो शुद्धपरिणाम. तेने सम्यक्त्व कहीए, तेना उपर क
ह्या ते पांच अतिचार ठे. ते आश्रयी जे दिवस संबंधी
पाप बांध्युं होय ते सर्व हुं पम्किमु तुं. ॥ ६ ॥

इवे चारित्राचारना अतिचार आलोवे ठे.

उकाय के० पृथ्वीकायादिक ठ कायजीवनो सं
घट, परिताप, उपड्व, ते समारंज कहीए ते पोताने अर्थे
तथा परने (बीजाने) अर्थे. तथा पोताना अने परनावे
उना अर्थे रांधतां, रंधावतां तथा रांधनारने अनुमोदन
करते निरर्थक राग द्वेषादिके करी जे दोष लाग्या होय ।

(१९३)

ते दोषने चेव के ० निश्चे हुं निहुं तुं. ॥ ७ ॥

हवे बारे व्रतना अतिचार कहे ठे. पंचन्हमणुव
याणं के ० पांच अणुव्रतने विषे, वली त्रण गुणव्रतने विषे,
तथा चार शिक्काव्रतने विषे, वली तप संलेषणादिक
ने विषे आ बार व्रत संबंधी जे अतिचार लाग्या होय
ते आश्रयी दिवस संबंधी सर्व पापने पम्किमुं तुं. ॥ ८ ॥

पढमे अणुव्रयंमि के ० पहेला अणुव्रतने विषे मो
टा प्राणातिपातनी विरति थकी जे पांच प्रकारना प्र
मादना प्रसंगवमे माठा ज्ञावे उल्लंघन थयुं होय, अथ
वा माठा ज्ञावे जे आचर्युं होय, ते अहींआं अतिचा
र जाणवो, ते आगली गाथामां पम्किमीश. ॥ ९ ॥

वहबंध के ० कषायने वश थको द्विपद चतुष्प
दादि जीवोने निर्दयपणे लाकमी पाटुं प्रमुखे करी मा
रे तेने वध कहीए, बीजो दोरनादिके करी बांधवुं, त्री
जो बलद समारवा, तथा नाक कानादि शरीरना अ
थवोने ठेढ़वा, चोथो लोत्तना वशथकी गजा उपरांत
तार नरवो, पांचमो ज्ञात पाणीनो अंतराय करवो, ए
खे वरावर बेलासर चारो पाणी न आपे, ए प्रथम व्र
तना पांच अतिचार आश्री जे कांइ दिवस संबंधी अ

तिचार लाग्यो होय ते सर्व पम्किमुं हुं निंडु हुं ॥१७॥

आ ठेकाणे कोइ शंका करे के. प्राणातिपात विरमण वालाने वधादिकनो अतिचार लागे नहि, कारण के प्राणातिपात शब्दे करी वधादिक आवी जता नथी, तेथी वधादिक करे तो पण पेहेला व्रतना अतिचार लागे नहीं. तेनो उत्तर के मुख्यताए तो प्राणातिपात नुंज पञ्चस्काण कर्युं ठे वधादिकनुं कर्युं नथी, तो पण परमार्थ करी वधादिकनुंज पञ्चस्काण जाणवुं; केमके ते वधादिक प्राणातिपातनुं कारण ठे, माटे ते करवा थी प्राणातिपात व्रतनो जंग आय ठे तेथी ते व्रत वालाने वधादिकनुं पञ्चस्काण करवुं योग्य ठे.

वंदितानी गाथा ११ थी १५ सुधी बुढा

शब्दना अर्थ.

वीण-बीजा (मां)

परि-समस्त प्रकारे, अतिशय

अलिय-जूठुं

वयण-वचन

सहस्ता-अणविचार्युं

रहस्त-छानुं

दारे-स्त्री

मोस-मृषा, जूठो

उवएसे-उपदेशे

कूड-जूठा

लेहे-लेखने विषे

तइए-त्रीजा (मां)

पर-पारकुं

दव्व-द्रव्य, धन.

(१९५)

तेन-चोरे

आहड-चोरी आणेली

प्पओगे-प्रयोगे

तप्पडिरूव-तत्प्रतिरूप, तेना जेवी

विरुद्ध-उलटुं

गमणे-आचरवामां

तुल-तोल

माणे-माप

चउथ्ये-चोथा (मां)

परदार-परस्त्री

हवे बीजुं अणुव्रत कहे ठे.

बीए अणुवयंमि, परिथूलग अ
लिअवयण विरईउ ॥ आयरिअ

मप्पसत्ते, इत्त पमायप्पसंगेणं

॥११॥ सहस्सा रहस्स दारे, मोसुव

एसे अ कूमलेहे अ॥बीअ वयस्स

इअारे, पमिक्कमे देसियं सवं ॥ १२ ॥

तइए अणुवयंमि, थूलगपरदवह

रण विरईउ ॥ आयरिअमप्पस

त्ते, इत्त पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥

तेनाहमप्पउगे, तप्पमिरूवे विरुद्ध

गमाणे अ ॥ कूमतुलकूममाणे,

पमिक्कमे देसियं सवं ॥१४॥ चउठे

(૧૯૬)

અણુવ્યંમિ, નિચ્ચં પરદારગમણ
વિરઈત ॥ આયરિઅમપ્પસન્ને,
ઇન્નપમાયપ્પસંગેણં ॥ ૧૫ ॥

અર્થ:—બીએ અણુવ્યંમિ કે ૦ એક કન્યાલિક
એટલે જે નિર્દોષ કન્યાને સદોષ કહે, એમાં વેપગાં સંબંધી
જે જૂઠું બોલવું તે સર્વ જાણી લેવું. બીજું ગોવાલિક
એટલે ઓમા ડુધવાલી ગાયને ઘણા ડુધવાલી કહેવી
અને ઘણા ડુધવાલીને ઓમા ડુધવાલી કહેવી, એમાં
કોઈ પણ ચોપગા જાનવર સંબંધી જૂઠું બોલવું તે સર્વ
જાણી લેવું. ત્રીજું મૂમ્યાલિક તે પારકી જમીનને પોતા
ની કહેવી, તથા ડબ્યાદિક સંબંધી જે જૂઠું બોલવું તે
સર્વનો એમાં સમાવેશ થાય છે. ચોથો ન્યાસાપહાર એ
ટલે પારકી આપણ રાખીને જૂઠું બોલવું જે મેં તો નથી
રાખી. અને પાંચમું કૂમી સાલ તે મત્સરને લીધે અ
થવા લાંચ લઈને જૂઠી સાક્ષી આપે, તથા કુમાકરદા
કાઢે, તથા વિશ્વાસઘાત કરે, એ સર્વ એમાં આવ્યું
દિક જેમાં રાજા દંમે, લોક ઝંમે, એવા અતિશયે કરી
મોટા અલિક વચન મૃષાવાદ તેની વિરતિ તે થકી

मादना प्रसंगे करी माठा जावे जे कांइ आचरण कयुं
होय अथवा नुल्लंधन कयुं होय तेथी जे अतिचार
लाग्यो होय, ते आगली गाथाए पम्किमीश ॥ ११ ॥

सहस्सा रहस्स केण सहसात्कारे अणविचार्युं को
इने जूठुं आल देवुं एटले कलंक चढाववुं ते प्रथम स
हसाज्याख्यान अतिचार. कोइने गानी वात करतां दे
खीने कहे के तमे अमुक अमुक राज्य विरुद्ध विचार
करो ठो ? ते बीजो रहस्याज्याख्यान नामे अ
तिचार, पोतानी स्त्रीए अथवा मित्रादिके पोतानी कांइ
गानी वात कही होय, ते वात बीजा आगल
प्रगट करे एटले साचुं वचन पण परने पीमाकारी
थवाथी जूठुं जाणवुं, ए त्रीजो स्वदारमंत्रज्ञेद अति
चार, तथा मंत्र उषधादिक वतावे अथवा कोइने क
ष्टमां पामवा कूनी बुद्धि आपे, ए चोथो मृषाउपदेश
अतिचार. तथा कूना लेख लखवा, खोटां खत करवां,
इत्यादि सर्व मपिज्ञेद एमां आवे ठे, ते पांचमो कूट ले
ख अतिचार कहीए. ते पांच बीजा व्रतना अतिचार
आश्रयी जे मने अतिचार लाग्यो होय ते दिवस संवंधी
सर्व अतिचार प्रत्ये हुं पम्किमुं वुं ॥ १२ ॥

तइए अणुवयंमि केण जेथी राजा दंमे एवी चोरी, गांठ ठोरुवी, तालां तोरुवां, जमेली वस्तु धणी जाणी राखवी, मार्गे जताने लूटवो, ए रीते प्रमाद तथा कषायादिने वशथका पारकुं धन हरण करवानी विरतिने बुद्धंघवाथी त्रीजा अणुव्रतने विषे जे अतिचार आय ते आगली गाथाये कहे ठे. ॥१३॥

तेनाहरूपपुंगे केण चोरनी चोरेली वस्तु सोंघी जाणी लेवी, ते प्रथम स्तेनाहत अतिचार, तथा चोरने सहाय संबल आपवुं ते बीजो प्रयोगातिचार, तथा खोटी वस्तुने खरी करीने वेचवी, तथा सारी खोटी वस्तु जेल संजेल करीने साराना जावे वेचवी, जूनुं वस्त्र नीखरावी रंगावी नवाने मूले वेचे, सूत्र कपासा दिक पाणीए त्रीजावीने वेचे, लविंग जायफलादिक मांहे डुधनुं पोतुं दीए ए त्रीजो तत्प्रतिरूप अतिचार. तथा दाण चोरी, राजा दंमे एवं राज्य विरुद्ध आचरवुं, ए चोथो विरुद्धगमन अतिचार, तथा पांचमो तोल तथा माप जुठां वत्तां राखवां एटले वधारे लेवुं, नुवुं आपवुं, ए क्रुतोलक्रुमाण अतिचार. ए त्रीजा व्रत ना पांच अतिचार आश्री जे कांइ दिवस संबंधी अ

(१एए)

तिचार लाग्यो होय ते सर्वहुं पम्किंसुं हुं निंडुहुं॥१४॥

चउठे अणुद्वयंमि केण निरंतर बीजानी स्त्री सा
थे कामजोग जोगववानी विरति तेने प्रमादना प्रसंगे
करी तथा अशुन ज्ञावे करी उद्धंघन करवाथी चोथा
अणुव्रतने विषे जे अतिचार लाग्या होय ते आगली
गाथामां नाम लेइने पम्किमीश. ॥१५॥

गाथा १६ थी ५० सुधी ठुटा शब्दना अर्थ.

अ-नही
परिगहिआ-परणेली, राखेली
इत्तर-इत्तर, थोडा कालने
वास्ते राखेली
अणंग-कामक्रीडा
विवाह-विवाह
तिव्व-तिव्व, आकरो
अणुरागे-अनुराग; अभिलाष
इत्तो-ए उपरांत
पंचमंमि-पांचमामां
अप्पसथंमि-माठा (मां)
परिमाण-परिमाण
परिच्छेए-ओलंगवाथी
धण-धन
धन्न-धान्य,

खित्त-खेतर
वथु-घर, हाट (वास्तु)
रुप्प-रुपुं
सुवन्ने-सोनुं
कुविअ-हलकी धातु
दुपये-वे पगवाळामां
चउप्पय-चार पगवाळा
गमणस्स-जवाना
उ-तो
दिसासु-दिशाओमां
उड्डं-उंची
बुड्डि-टोडि, बंधारो
सइ-स्मृति यादि
अंतरद्धा-मार्गमां
मज्जंमि-मदिरा, दारु (मां)

मंसमि-मांस (मां)

पुष्पे-फूल,

फले-फलमां

गंध-सुगंधी पदार्थ

मल्ले-माला

उवभोग-उपभोग

परिभोग-परिभोग

अपरिगृहित्रा इतर, अणंग वी
 वाह तिष्ठ अणुरागे ॥ चउत्त वय
 स्स इत्रारे, पम्किमे देसियं सव्वं
 ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पं, चमंमि
 आयरिअ मप्पसत्तंमि ॥ परि
 माण परिच्छेए, इत्त पमायप्पसंगे
 णं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्तू
 रूप्प सुवन्नेअ कुविअ परिमाणे ॥
 दुपए चउप्पयंमि, पम्किमे देसियं
 सव्वं ॥ १८ ॥ गमाणस्स उ परिमाणे,
 दिसासु नमूं अहेअ तिरिअंच ॥
 बुद्धि सइ अंतरा, पढमंमि गुण
 व्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्झंमि अ,

(२०१)

मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंध
मह्ने अ ॥ उवन्नोगपरिन्नोगे,
बीअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥

अर्थः—अपरिगृहिता के प्रथम अपरिगृहिता ते
कोइए परणेली न होय एटले कुमारिका अथवा विध
वा होय तेनी साथे मैथुन सेववुं तेमज श्राविका पण
कुंवारा अथवा रांमेला पुरुषनी वांठा करे तो पेहेलो
अतिचार लागे. बीजो इत्वर एटले कोइ पुरुषे वेइया
दिकने स्त्रीने स्थानके राखेली होय तेनी साथे मैथुन
सेववुं, तेमज स्त्री पोतानी शोक्यनो दिवस होय तेनुं
निवारण करी नर्त्तारने सेवे तेने बीजो अतिचार ला
गे. त्रीजुं कामक्रीडा ते परस्त्रीनी साथे हास्य, कूतुह
ल करवां तथा तेनुं कुच मर्दन, मुखचुंबन, उष्ट्रदशन
आलिंगनादिक कामनां चोरासी आसन सेववां, तथा
पुरुष चिन्ह टाली साथल अंगुष्ठादिके करी मैथुन से
ववुं ते त्रीजो. चोथो विवाहकरण ते पोतानां ठेरु
टाली पराया विवाह जोलाववा. पांचमुं कामन्नोगने
विषे अति अज्जिलापनुं करवुं, तथा काम दीपाववाने

માટે ધાતુ પુષ્ટી પદાર્થો (ડુધ, દહીં, ઘી ત્રાંબું, બંગ)
 खावा, ए पांच चौथा व्रतना अतिचार आश्रयी जे मा
 रे अतिचार लाग्यो होय ते सर्व दिवस संबंधी अति
 चार हुं पम्किमुं बुं. ॥ १६ ॥

इतो अणुव्रत के० ए चौथा व्रत उपरांत स्थूल
 परिग्रह परिमाण नामे पांचमुं अणुव्रत कहिए ठीए.
 ए पांचमा धनधान्यादिक नव विध परिग्रहना परिमाण
 रूप अणुव्रतने विषे प्रमादने प्रसंगे करीने अशुभ जाव
 अये ठते जे अतिचार आचर्यो होय, ते आगली गाथा
 मां पम्किमीश ॥ १७ ॥

धણ धन्न के० चार प्रकारનાં ધન છે. પ્રથમ ગણિ
 મ તે ગણવારૂપ ધન, નાલીઆદિક જે ગણીને વેચા
 ય તે. બીજું ધરિમ એટલે ગોલ, ચાંદ્રરૂપ તોલીને વેચા
 ય તે. ત્રીજું મેય એટલે કાપડ, જમીન, તેલ, ડુધ, વગેરે
 જે માપીને વેચાય તે. ચોથું પરિઘેય એટલે સોનું, રુપુ,
 નાણું, ધન, રત્નાદિક મોતી પ્રમુખ કસીને તથા ઠેકથી
 પરીક્ષા કરી શકાય તે જાણવાં, એ ચાર પ્રકારે ધન.
 અને ધાન્ય તે ગહૂં, ચોખા, અમદ પ્રમુખ જાણવાં. એ વે
 ન પરિમાણ ઉપરાંત અયાં દેખીને જ્યાં સુધી આગલું

वेचायनहीं त्यां सुधी वीजाने घेर रखावे, अथवा कोठा को ठीतनुं परिमाण कीधुं होय तो न्हानाने बदले महोटा बंधावे, ते प्रथम धनधान्य परिमाणातिक्रम अतिचार जाणवो.

बीजो खित के० क्षेत्र, ते त्रण प्रकारे ठे. एक रेंटना पाणीए नीपजे ते सेतु क्षेत्र. बीजुं वरसादना पाणीए नीपजे ते केतु क्षेत्र. बीजुं वेहुना पाणीथी नीपजे ते उन्नय क्षेत्र. ए त्रण प्रकारनां क्षेत्र जाणवां. वहु के० वास्तु ते, घर, हाट, वखार प्रमुखनी जूमि ते त्रण प्रकारे ठे. एक जमीन अंदर जोंयरु करीए ते खात जूमि. बीजी मालियादिक जे उंचां चमावीए ते उन्नित जूमि. बीजी ज्यां जोंयरु पण करीए अने उपर माल पण चणावीए. तेमां गामनगरादिक पण आवे ते खा तोन्नित जूमि जाणवी. ए वेहुना परिमाणथी उलंघवुं ते आवी रीते के:-एक क्षेत्र मोकलुं होय ने बीजुं लेवरावे ते वखते नियम जंगना जयथी प्रथमना खेत रनी वारु जागी बेउनुं एक करावे तथा घर, हाट प्रमुखनुं पण तेज प्रमाणे वचमांनी जोंत अथवा मोन्न पानीने एक करी मूके. ए क्षेत्रवास्तुपरिमाणातिक्रम बीजो अतिचार जाणवो. बीजो रुपुं सोनुं ए वे

ना परिमाणथी नलंघवुं एटले रुपुं सोनुं अधिक थतुं देखी स्त्री पुत्र आदिना नामनुं करे, ते रूपसुवन्नपरिमाणातिक्रम नामा त्रीजो अतिचार जाणवो. वली आल कचोलां प्रमुख एटले सोना रुपा सिवायनी धातुनां वासण आली, वारुका, खाटला, पाटला प्रमुख घरवाखरानी वस्तुन नियम उपरांत अतां देखी नानां जंगीवी मोटां करावे अने संख्याए तेटलां राखे ते कुवियपरिमाणातिक्रम चोथो अतिचार जाणवो. पांचमो द्विपद ते दासी, दास, वाणोतर प्रमुख, अने चतुष्पद ते गाय, घोडा, जैस प्रमुख जाणवां. तेने नियम उपरांत अता देखी गर्ज ग्रहण घणुं मोरुं करावे, तथा वेचे ते पांचमो द्विपदचतुः पद परिमाणातिक्रम अतिचार जाणवो. ए पांचमा व्रतना पांच अतिचार आश्रयी माहारे जे कोइ अतिचार लाग्यो होय ते सर्व दिवस संबंधी अतिचार प्रते हुं पम्किमुं वुं. ॥ १० ॥

गमणस्स के० उर्ध्व दिशि, अधो दिशि अने पूर्व पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, ए चार दिशि तथा चार विदिशि ए आठने तीर्णि दिशि कहीयें, तेने विषे अमुक जो जन सुधी जवानुं परिमाण करेलुं होय, ए रूप प्रथम

गुणव्रतने विषे तु शब्द अकी जे अतिचार लाग्यो हो
 य ते आगल निंदिये ठैए, प्रथम नुंची दिशिना परिमा
 ण प्रते नलंघवुं, बीजुं अधो एटले नीची दिशिना प
 रिमाण प्रत्ये नलंघवुं, वली त्रीजुं तीर्थि दिशिना परि
 माण प्रते नल्लंघवुं अथवा नियमन्नंगनी बीकथी वा
 णोतर प्रमुखने मोकलवो. चोथुं दिशिनने विषे जवा
 नुं जेटलुं परिमाण कीधुं होय तेथी कोइ कार्य पमे
 आधुं जवुं होय त्यारे एक तरफ नुठी करी बीजी त
 रफ वधारे ते क्षेत्रवृद्धिनामा अतिचार जाणवो. पांच
 मो स्मृत्यंतर्ह एटले मार्गने विषे संदेहकारी विचार
 उपजे के आ दिशि मारे सो योजन मोकली राखी ठे?
 के पञ्चास जोजन मोकली राखी ठे? एवी शंका ठे
 पञ्चास जोजन उपरांत जवुं ए पांचमो अतिचार अने
 सो योजन उपरांत जवुं ए अनाचार व्रतन्नंग जाण
 वो. ए पांचमो स्मृत्यंतर्ह अतिचार जाणवो. ए प्रथम
 गुणव्रतने विषे उपर कहेला पांच अतिचार मांहेलो
 जे अतिचार लाग्यो होय ते हुं निंडुवुं. ॥ १९ ॥

मज्झिमे के० खान पान फूल विलेपन प्रमुख जे
 वस्तु मुखादिकमां तथा शरीरमां प्रवेश कराय एटले

एकवार सेवाय एवी वस्तु तेनो जोग ते उपजोग क
 हेवाय, तथा परि एटले बहारथी वारंवार सेविये ते
 परिजोग वस्तु ते वस्त्र, आभरण, घर, स्त्री प्रमुख
 जाणवां. ए उपजोग परिजोग परिमाणनामा बीजुं
 गुणवत्त वे प्रकारे ठे. एक जोजनथी; बीजुं कर्मथी.
 तेना वीश अतिचारने प्रथम सामान्यपणे निंदिये ठी
 ए. मज्झिमिअ केण मदिरा तथा मंसंमिअ केण मांस
 वीगेरे बीजां पण अन्नह जेवां के मध, मांखण, अनं
 तकाय प्रमुख. पुप्फे केण महुमादिकनां फूल तथा कुं
 शुआदिक त्रसकाय जीवे करीने सहित नागरवेलीनां
 पान प्रमुख जाणवां, तथा फले केण जांबू, बीलां, पी
 लूमां, पीचु, बोर, पाकां करमदां, ए अन्नहय वस्तु
 श्रावकने खावा पीवा योग्य नथी, ए खाधामां आवे
 माटे अंतर्जोगनी वस्तु कही. हवे बहारना जोगमां
 आवे ते वस्तु कहे ठे. गंध केण वरास, अत्तर, अवीर,
 कपूर, धूपादि जाणवां, तथा मद्धेअ केण फूलनी माला
 ए वगेरे जाणवी, तथा च शब्दथी बीजी सर्व जोग्य
 वस्तु जेवी के सचित्तकाय विगयादि वस्तु करेला प्र
 माणथी वधारे जोगवतां उपजोगपरिजोग नामे बी

जा गुण व्रतने विषे जे अतिचार लाग्यो होय ते सर्व
प्रत्ये निंदुहुं. ॥ १० ॥

गाथा ११ यी १५ सुधी ठुटा शब्दना अर्थ.

सच्चित्ते-सचित्त
पडिवद्धे-लागेली, बळगेली
अपोल-काची
दुण्पोलिअं-काचुंपाकुं
आहारे-भक्षण
तुच्छ-हलकी
ओसहि-औषधि
भरखणया-भक्षण
इंगालि-अंगार कर्म
वण-वनकर्म
साडी-शकटकर्म
भाडी-भाडुं खावुं
फोडी-जमीन फोडवी ते
सु-अत्यंत
वज्जए-छोडे
वाणिज्जं-वेपार
दंत-दांत
लखख-लाख
रस-रस
केश-वाल

विस-झेर
विसयं-शास्त्रादिकनो विषय
खु-निश्चे
जंत-यंत्र
पिल्लण-पीलवानुं
निल्लंछणं-निर्दयपणानां काम
दव-दव, अग्नि.
दाणं-आपवुं
सर-सरोवर
दह-धरा, द्रह
तलाय-तलाव
सोसं-शोषण करवुं
असई-असति
पोसं-पोषण
वज्जिजा-वर्जवुं
सथथ-शास्त्र
अग्गि-अग्नि
मुसल-सांवेळु
जंतग-यंत्र (घंटीप्रमुख)
तण-तरणां

कट्टे-काष्ठ

मंत-मंत्र

मूल-मूल, जडीबूटी

भेसज्जे-ओसड

दिन्ने-देवा थकी

दवाविए-अपाववाभां

वा-अथवा

न्हाण-न्हावुं, स्नान

उवट्टण-पीठीए मेल उतारवो

वन्नग-अलतो वगेरे

विलेवणे-विलेपन

सद्द-शब्द

वथ्थ-वस्त्र

आसण-आसन

सच्चित्ते पम्बिद्धे, अपोल दुप्पो
 लिअं च आहारे ॥ तुत्तोसहि न
 रक्काया, पम्बिक्रमे देसियं सव्वं ॥
 ॥ २१ ॥ इंगाली वण सामी, जामी
 फोमी सुवज्जए कम्मं ॥ वाणिज्जं
 चेव य दं, त लक्क रस केस विस
 विसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिद्ध
 ण, कम्मं निद्धंणं च दवदाणं
 सरदह तलाय सोसं, असई पोसं
 च वज्जिजा ॥ २३ ॥ सव्वग्गिमु
 सल्लजंतग, तण कट्टेमंत मूल ने

(३०९)

सज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पम्किमे
देसियं सव्वं ॥ १४ ॥ न्हाणुवट्टण
वन्नग, विलेवणे सहूरुवरसगंधे ॥
वन्हासण आन्नरणे, पम्किमे दे
सियं सव्वं ॥ १५ ॥

अर्थः—सच्चित्ते केण सचित्तनो त्याग करीने अथ
वा सचित्तनुं परिमाण करीने प्रमादने वशे तेथी उप
रांत ते वस्तुनो आहार करे, ते प्रथम सचित्ताहार ना
मे अतिचार जाणवो. बीजो सचित्तप्रतिबद्ध ते सचि
त्तनी साथे बांधेली वस्तु एटले जोमे लागेलो गुंदर,
ठलिया सहित रायण, अने गोठली सहित केरी प्रसु
ख सुखमां घाले, तथा ऊरुमांथी गुंदर उखेलीने अ
चित्तनी बुद्धिये वापरे ते. त्रीजो अपोल केण अपक्वहार
एटले रांध्या वगरनी होय एवी सचित्त मिश्रित काची
वस्तु जेवी के तुरतनो दलेलो तथा अणचालेलो
लोठ, ए विषे सिद्धांतमां कहुं ठे के अणचाल्यो लोठ
श्रावण अने ज्ञादरवा महीनामां पांच दिवस मिश्र रहे,
आसो मासमां चार दिवस मिश्र रहे, कार्तिक मागश

र अने पोस मासमां त्रण दिवस मिश्र रहे, माहा अने
 फागणमां पांच पहोर, चैत्र वैशाखे चार पहोर, तथा
 जेठ अशामे त्रण पहोर मिश्र रहे, अने तयार पढी अ
 चित्त आय; ते लोटने अचित्त जाणी वापरे. इत्यादि
 सचित्त शंकित वस्तुनुं न्हण करवुं ते अपक्वौषधि न
 हण नामे त्रीजो अतिचार जाणवो. चोथो दुःपक्वौ
 षधिन्हण एटले अरधी काची अने अरधी पाकी ते
 उला, उंबी, पुंख, पापनी प्रमुख वस्तु खावी ते अ
 तिचार. पांचमो तुह्यौषधि न्हण ते मग प्रमुखनी को
 मल शींग तथा बोर प्रमुख तुह्य एटले घणी खावाथी
 पण संतोष न आय, एवी वस्तुने अचित्त करी वापरे
 ते पांचमो अतिचार जाणवो, जेने सचित्त खावानो
 नियम होय तेने ए पांच अतिचार लागे. ए बीजा गुण
 व्रतना नोजन संबंधी पांच अतिचार ते आश्रयी दिवस
 संबंधी जे अतिचार लाग्यो होय ते सर्वेने हुं पम्किमुं.
 हवे जे गृहस्थ आजीविकाने अर्थे कुव्यापार करे
 ते पण नोगोपनोगज कहिए ते पांच (इंगलादि) कर्म,
 पांच (दंतादि) वाणिज्य अने (यंत्रादि) पांच सामान्य,
 एम पंदर कर्मादान ठे तेने आवके जाणवां, पण आच

रवां नहीं. ते आश्रयी पंदर अतिचार बे गाथाए कहे ठे.

इंगाली के० प्रथम काष्ठ वाली अंगारा करी बे चवा, तथा सोनी, कुंजार, जामुंजादिकनां जे अग्नि संबंधी कर्म ते अंगारकर्म; बीजुं वण के० वाली, वन, वनस्पति नीपजाववां, तथा तेनां फल फुल बेचवां; तथा आखां वन बेचवां, तथा दांणा दलाववा ते वनकर्म; त्रीजुं शकटकर्म ते गारां तथा तेनां अवयव धोंसरा, समोल, प्रमुख बनावीने बेचे बेचावे ते सामी के० शकट कर्म; चोथुं जाम्नी के० बलद घोडा, घर, हाट प्रमुख राखी ने आजीविका निमित्ते जामे आपवानुं करे ते जामा टिक कर्म; पांचमुं फोमी के० जव चणा तुवेर प्रमुख अनाजनो साथवो करवो तथा तेनी दाल करवी, तथा मांगर प्रमुखना चोखा काढवा, तथा जमीन फोरवी ते कूदा वाव तलाव विगेरे कराववां, तथा उरु, सलाट विगेरेनुं काम करवुं, तथा हल प्रमुखे करी जमीन खेरवी इत्यादि जेटलो पृथ्वीनो आरंज ते सर्व स्फोटिक कर्म जाणवुं. ए पांच सामान्य कर्म ते श्रावक अत्यंतपणे वर्जे.

हवे पांच कुवाणिज्य कहे ठे:—प्रथम दांत, नख,

ચામડું, શિંગડાદિકના વ્યાપાર એટલે હાથીદાંત, ચમ
 રી ગાયના વાલના ચમર, મત્સ્યાદિકના નર, શંખ,
 મોતી, તથા વાઘ મૃગાદિનાં ચામડાં, હિંગ, હાંસ રૂપ
 મુખ રોમ ઇત્યાદિ ત્રસ જીવોના અંગનો જેમાં વેપાર
 આવે છે, તેને જો દેશાંતર જઈ વેચોરે તો તેમાં ઘણો
 દોષ લાગે, તેને દંત કુવાણિજ્ય કહે છે. બીજું લાલ,
 ધાવડીનાં ફુલ, કસુંબો, હરતાલ, ગલી તથા ટંકણ
 ચારાદિકનો વ્યાપાર જે શ્રી વહારના જીવોનું મૃત્યુ
 થાય તે સર્વ લશ્ક કેળાવવા કુવાણિજ્ય જાણવું. ત્રીજું
 વિગય મહાવિગય એટલે ઘી, તેલ, ગોલ, મધ, દૂધ,
 બહીં વિગેરેનો વેપાર તે સર્વ રસકુવાણિજ્ય જાણવું.
 ચોથું દ્વિપદ તે મોર, સૂડા, તથા મનુષ્ય પ્રમુખના
 વ્યાપાર અને ગાય ઘોડા પ્રમુખ ચતુષ્પદના વેપાર તે
 કેશકુવાણિજ્ય. પાંચમું અફીણ, સોમલ વિગેરે જેરી
 ચીજ, તથા ઠરી કઢારી વિગેરે શસ્ત્ર, જેના વલે કરી
 ઘણા જીવોનો સંહાર થાય તથા હલ કોદાલાદિક જે સર્વ
 કુવસ્તુનો વેપાર તે વિસવિસય કેળાવવા એટલે જેર ના
 લક્ષણથી શસ્ત્રાદિકનો વિસય કેળાવવો જેમાં, તેને
 વિસવિસય કુવાણિજ્ય કહીએ; એ પાંચ કુવાણિજ્યને

श्रावके वर्जवां. ॥११॥

एवं खु के० हवे पांच सामान्य कहै ठे. एवं खु के० एम निश्चे शिला, लोढी, उखल, मुसल, घंटी, चरखो आदि अनेक जातिनां यंत्र करी वेचे ते सर्व यंत्र कर्म, तथा सेलमी प्रमुख पीलवानां कोहलुं, घाणी प्रमुख यंत्रथी जे कर्म लागे तेने जंतपिछ्छण के० यंत्रपीलन कर्म कहि ए. बीजुं बालकनां नाक कान वींधाववा, नपुंसक करवा, जुंढ बलद घोडा प्रमुखनां नाक वींधवां, आंक पमाववा, समराववा, कर्ण कंवल पूठनां ठेदावे, इजारे गाम लेइ आकरा कर करे, कोटवालपणुं करवुं इत्यादि जेटलां निर्दयपणानां काम ठे तेने निर्दंडन कर्म जाणवुं. त्रीजुं धरमनी बुझिए अथवा मोकली नूमिने विषे सुखथी सग्रांम आय, अथवा स्वप्नावे अथवा तृणादिक वाव्या पढी नवा अंकुरा जुगे तो गायो चरे, एवा हेतुथी वन जामी प्रमुखने दव लगामे, तथा कोइने अग्नि आपे तेने दवदान कर्म कहि ए. चोशुं सरोवर खोदाया विना जे जग्यामां पाणी रहे तेवा ठेकाणाने सर कहै, ते सर तथा इह तथा तलाव कुवा वाव इत्यादि पाणीनां स्थानको शोषण करवां,

તેમાંનું પાણી જલેલાવે, ત્યાં અનેક જલચર પંચેંડિ
 જીવની હિંસા થાય છે તથા નીલ ફુલ પ્રમુખ ઘણા
 જીવોનો વિનાશ થાય છે તેને સરદહતલાયસોસણ કર્મ
 કહીએ. પાંચમું અસર પોસં કેળ અસતી પોષણ કર્મ તે
 કુતરાં, બિલાડાં, મોર, કૂકડા, મેનાં, સિંચાણા, સૂડા
 પ્રમુખ હિંસક જીવોનું પોષણ કરવું, અથવા વ્યક્તિચા
 રિણી સ્ત્રીનું, તથા હુષ્ટ પુત્રાદિક, હુષ્ટ દાસ દાસીનું
 પોષણ કરવું, તથા કસાડ, માઠી, વાઘરી, તેલીની
 સાથે વેપાર કરવો; એ વગેરે જે અધર્મી જીવોનું પોષણ
 કરવું તેને અસતી પોષણ કર્મ કહીએ. એ પાંચ સામા
 ન્ય કર્મ કહ્યાં. એમ સર્વે મલીને પન્નર કર્માદાન જે
 છે તેને નિશ્ચે કરી શ્રાવકે વર્જવાં. એ પંદર અતિચારમાં
 જે કોઈ અતિચાર જાણતાં અજાણતાં લાગ્યો હોય તે
 સર્વને હું નિંહું તું.

હવે અનર્થ દંડ વિરમણ નામા ત્રીજું ગુણવ્રત
 કહે છે. જે થકી નિરર્થક આત્મા દંડાય, પાપ લાગે તેને
 અનર્થ દંડ કહીએ. તે ચાર પ્રકારે છે; પ્રથમ અપધ્યાના
 ચરિત તે મનમાં એવી ચિંતવના કરે કે વૈરીને વાંધું
 મારી નાંચું, અને રાજા થાજું તો વૈરીનાં ગામ વાલી

नाखुं, विद्याधर थाजं तो स्वेच्छाए ज्यां ज्ञावे त्यां जानं,
मन मानती स्त्रीनी साथे विलास करुं, इत्यादिक जे
मातुं ध्यान धरे ते अपध्यानाचरित अनर्थ दंम कहिए.
बीजो प्रमादाचरित अनर्थदंम ते पापविक्रया करवी,
दूध, दही, तेल इत्यादि वस्तुने ठांकवानुं आलस करवुं
ते. त्रीजो हिंसप्रदान अनर्थदंम ते घंटी, मूशल,
चाकु प्रमुख पाप अधिकरण कोइने आपवां ते हिंस
प्रदान अनर्थदंमनो त्रीजो जेद. चोथो पापकर्मोप
देशअनर्थदंम ते न्हाज, अग्नि जलावो, वस्त्र धोवो,
खेती करो, वाठमाने समरावो अमुकने कूटो, मारो,
वांधो, इत्यादिक उपदेश देवा ते चोथो जेद. तेमां
पोतानी नातनाने, गोत्रीने अर्थे पाप करवुं ते व्यवहा
रदृष्टिए अर्थदंम ते; माटे अहींआं तेनो त्याग नथी,
एन अनर्थदंमविरमण नामे त्रीजुं गुणव्रत कहिए. ॥१३॥

सहस्रिगमुसल के० शस्त्र, अग्नि, मुशल, घंटी,
सावरणी, लाकमी, मंत्र ते (साप खीलवा प्रमुखना)
नागदमणी प्रमुख जमी बूट्टी तथा गर्जपातन प्रमुख
जाणवा, तथा वे आदि वस्तुना मेलापथी जे वस्तु उ
पजे एटले गोली, चूर्ण, तंत्रविद्या इत्यादिक उपद्रवका

री वस्तु जाणवी. इत्यादिक वस्तु दाक्षिणता टाली
बीजाने आपवाथी, अपाववाथी, आपनारने अनुमोद
वाथी जे अतिचार लाग्या होय ते सर्व दिवस संबंधी
अतिचार प्रत्ये हुं प्रतिक्रमुं हुं. ॥ १४ ॥

न्हाणुवट्टण के० स्नान ते अज्यंग करीने तेल
चोपनीने नाहीये, त्यां अजयणाए जीवाकूल नूमिका
ए न्हाय, अथवा अणगल पाणीए न्हाय तथा नवट्टण
के० पीठी प्रमुखे करी शरीरनो मेल उतारे. अवील,
गुलाल, केसर, चंदन, कंकु वगेरेनुं विलेपन जाणवुं,
तथा वांसली विणादिकना शब्द कौतुकें सांजलवा, त
था पहोर रात उपरांत नंचे शब्दे बोलवुं, रूप के० स्त्री
प्रमुखनां रूप जोवां, वेश्यादिकनां नाटक जोवां, रस
के० मीठो खाटो वगेरे रस, गंध के० वास एटले सुगंध
कपूर, कस्तूरी, प्रमुखना जाणवा. वट्ट के० वस्त्र आस
ण के० बेसवानां आसन तेने संबंधे शय्या पण जाण
वी. तथा आसन एटले कामशास्त्र, कोक, वात्स्यायना
दिक विषयज्ञोग संबंधी चोराशी आसन जाणवां. आ
ज्जरण ते नूषण, मुकुट, कुंमल वगेरे तथा जूगटुं, म
दिरापान, हीचका खावा वगेरे दुष्ट काम करवां, जो

वां, एम अनेक उपज्ञोग परिज्ञोग वस्तुन संबंधी अ
जयणाए अण उपयोगे जे अतिचार मारे लाग्यो होय
ते सर्व दिवस संबंधी अतिचारप्रते हुं पम्किमुंहुं। १५॥

गाथा २६ थी ३० सुधीना तुटा

शब्दना अर्थ.

कंदप्पे-कंदर्प	सइ-स्मृति, यादी	भोअण-भोजन
कुकुइए-कुचेष्टा,	विहूणे-रहित	आभोए-चितवहुं
भांडचेष्टा.	वितह-खोटुं	पोसह-पोषध
मोहरि-वाचालपणुं	आणवणे-अणाववामां	विवरीए-विपरीते
अहिगरण-घंटीगमु-	पेसवणे-मोकलवामां	निखिखवणे-मूकबुं
ख अधिकरण	सदे-शब्द करवो	पिहिणे-ढांकबुं
भोग-भोगनी वस्तु	रूवे-रूप देखाडबुं	ववएस-व्यपदेशकरवो
अइरित्ते-खपथीवधारे	पुगल-पुद्गल	फेरफार बोलबुं.
दंडंमिअणट्टाए-अन-	खखेवे-नांखबुं	मच्छरे-मत्सर, इप्या
र्थ दंडने विषे	देसावगासिअंमि-दे-	अइकम-आतिक्रम, ओ
दुप्पणिहाणे-दुःप्रणि-	शावकासिकमां	लंघबुं
धान, सावद्य वेपार	संधार-शय्या वीगेरे	दाणे-दानने विषे
अणवट्टाणे - अनव-	संधारो	
स्थान, सामायक व-	उच्चार-झाडो पेसाव	
रावर न पारबुं.	परठववो	
तहा-तथा	विहि-विधि	

(११८)

कंदप्पे कुकुइए, मोहरि अहिगर
ए नोगअइरित्ते ॥ दंमि अण
ठाए, तइअंमि गुणवए निंदे ॥ १६ ॥
तिविहे डप्पणिहाणे, अणवठाणे
तहा सइविहूणे, सामाइअवितह
कए, पढमे सिस्कावए निंदे ॥ १७ ॥
आणवणे पेसवणे, सहे रूवे अ पु
गलस्केवे ॥ देसावगासिअंमि, बी
ए सिस्कावए निंदे ॥ १८ ॥ संथा
रुच्चारविहि, पमाय तह चेव नो
अणानोए पोसहविहि विवरीए,
तइए सिस्कावए निंदे ॥ १९ ॥
सच्चिते निस्किवणे, पिहिणे ववएस
मत्तरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे,
चउत्ते सिस्कावए निंदे ॥ २० ॥

कंदप्पे के० कंदर्प एटले जे थकी कामविकार

(११९)

जागे एवं बोलवुं ते प्रथम कंदर्प अतिचार जाणवो. कु
कुइए के० ज्ञांमनी पेरे शरीरना अवयवोनी कुचेष्टा
ए करीने लोकोने अत्यंत हसाववा तथा कोइना चाला
पामवा ते बीजो काकैच्य अतिचार. विचार रहित घणुं
बबमवुं तथा अधटित वचन बोलवां ते त्रीजो मुखरी
अतिचार जाणवो. तथा अहिगरण के० शस्त्र, अग्नि,
मूशल, घंटी प्रमुख अधिकरण तैयार करी माग्यां
आपवां तेमज अग्निप्रमुख सौथी पेहेलां सलगववां ते
चोथो अधिकरण अतिचार जाणवो. तथा उपजोग
परिजोगनी वस्तु अइरित्ते के० खप करतां वधारे रा
खवी एटले जोगनी वस्तु जेवी के तेल, कंकोरी, पा
णी, प्रमुख वस्तु अधिक राखे जे देखीने बीजाने न्हा
वा प्रमुखनी वांठा थाय तेथी जोग वस्तुनो दोष लागे,
अने उपजोग वस्तु ते जो एक घरनो खप होय तो प
ए बे चार सामटां करावे तेथी उपजोग वस्तुनो अधि
क दोष लागे ते पांचमो जोगातिरिक्त अतिचार, एरी
ते अनर्थ दंमविरमण नामे त्रीजा गुणव्रतने विषे पुर्वो
क्त जे अतिचार लाग्यो होय ते प्रते हुं-निंडु हुं. ॥१६॥

तिविहे डुप्पणिहाणे के० त्रण प्रकारे सावध

व्यापार ठे तेना त्रण अतिचार जाणवा. तेमां प्रथम घर, हाट, प्रमुख संबंधी जे सावद्य व्यापारनुं मनमां चिंतवन करवुं ते मनोदुःप्रणिधान अतिचार जाणवो. तथा कर्कश एटले कठोर सावद्य जाणवा करी बोलवुं ते बीजो वचनदुःप्रणिधान अतिचार. त्रीजो अण उपयोगे कायाने जोया पूंज्या विना वे सवुं, उठवुं, उगीगवुं वगैरे पाप व्यापारमां प्रवर्त्ताववी, ते कायदुःप्रणिधान नामा त्रीजो अतिचार जाणवो. तथा जधन्य वे घमी सामायकनुं कालमान ठे तेटलो काल पूर्ण कर्या विना सामायिक पारवुं, तथा आदर रहितपणे सामायिक करवुं तथा पारवुं ते चोथो अनवस्थान अतिचार जाणवो. तथा निडादि प्रमादशी में सामायिक कर्युं के नथी कर्युं, एवं उपयोगनुं शुन्यपणुं ते पांचमो अतिचार, एरीते सामायिक प्रत्ये वितह केण जूहुं, कए नाम करे थके प्रथम सामायिक नामे शिक्ताव्रतने विषे पूर्वोक्त पांच अतिचार मांहेलो जे अतिचार लाग्यो होय ते प्रते हुं निंडुं तुं. ॥ १७ ॥

आणवणे पेसवणे केण हवे बीजा देशावकाशिक शिक्ताव्रतने विषे परिमाण कीधेली नूमिनी बाहा

रथी कांइ वस्तु मंगाववी, ते आनयननामा पेहेलो अतिचार जाणवो. बीजो परिमाण उपरांतनी जूमिने विषे चाकर प्रमुखने मोकलवो, वेचवा लेवा आदेश आपवो, ते प्रेषवणनामा अतिचार जाणवो. तथा कोइ कामपमे अके नीमेली जूमिकाथी बाहार रहेला मनुष्यने खुंवारादिक शब्दे करी पोतानुं ठतापणुं जणावुं ते त्रीजो शब्दानुपातिनामा अतिचार जाणवो. तथा नंचो अइ पोतानुं रूप देखामीने बोना पण जेने बोलावुं होय तेनी नजरे पमे, निथकी तेनी पासे जाय ए चोथो रूपानुपा अतिचार जाणवो. तथा नीमेली जूमिकाथी रहेला पुरुषने कांकरादिक नांखी पोतानुं ठताववुं, ते पांचमो पुद्गलोत्क्षेपनामा अतिचार जाणवो. ए पांच अतिचार मांहेथी देशावकाशिकनामा अतिचार जाणवो. जा शिक्षाव्रतने विषे जे अतिचार लाग्यो होय, ते प्रत्ये हुं निंडुं हुं. ॥ १८ ॥

संथारुच्चारविही केण शय्या संथारो तथा वसी नीति अने लघु नीतिना ठंमिल, एना प्रकारने विषे जे प्रमाद करवो ते अतिचार चतुष्क जाणवो. तेने विवरी

ने कहे ठे, तेमां शय्या संधाराने न पमिलेहे, अथवा प
 मिलेहण करे, तो कांश्क करे कांश्क न करे ते पहेलो
 अप्पमिलेहिअडुप्पमिलेहिअसव्यासंधारे नामा अति
 चार जाणवो. तथा शय्या संधाराने न पूंजे प्रमार्जे,
 अथवा पूंजे तो कांश्क पूंजे कांश्क न पूंजे ते बीजो
 अप्पमच्चिअडुप्पमच्चिअशय्यासंधारे नामे बीजो अ
 तिचार जाणवो. तथा वस्तीनीति लघुनीति परठववानी
 नूमिने न पमिलेहेवी अथवा पमिलेहवी तो कांश्क प
 मिलेहवी कांश्क न पमिलेहवी. ते त्रीजो अप्पमिलेहि
 अडुप्पमिलेहिअनच्चारपासवणनूमिनामा त्रीजो अ
 तिचार जाणवो, तेमज ते नूमिने न प्रमार्जवी, अथवा
 प्रमार्जवी तो कांश्क प्रमार्जवी अने कांश्क न प्रमार्ज
 वी, ए अप्पमच्चिअडुप्पच्चिअनच्चारपासवणनूमिनामे
 चोथो अतिचार जाणवो. ए रीते शय्यासंधार तथा
 ठंमिलनूमि संबंधी अतिचार चतुष्क अयुं, तेमज नोअ
 णान्नोए केण पोसह लीधा पठी क्यारे पारणुं करीशुं
 अथवा पारणे अमुक न्नोजन करीशुं एवी चिंतवना
 करवी, ते पांचमो न्नोअणान्नोएनामा अतिचार जाण
 वो. आ पांच अतिचारोए करीने पोषधव्रतनी विधि विप

रीत करे अके पोषधोपवासव्रतनामा त्रीजा शिक्षाव्रतने विषे जे कोइ अतिचार लाग्यो होय तेने हुं निंउवुं । १९॥

सच्चित्ते निस्क्रियणे केण साधुने देवा योग्य नि दोष वस्तुने सचित्त उपर मूकवी ते प्रथम सचित्त नि केषण नामा अतिचार जाणवो, तथा तेवी वस्तुने स चित्त वस्तुए (कंद, पत्रे) करी ढांकवी, ते सचित्तपि हिए नामा बीजो अतिचार, तथा पोतानी वस्तुने अ ए देवानी बुद्धिए पारकी केहेवी तथा देवानी बुद्धिए पारकीने पोतानी केहेवी, ते व्यपदेश नामा त्रीजो अतिचार, तथा कोपजावे दान आपवुं, तथा पारकुं सारुं दान न जोइ शकवुं तथा परनी इष्यां करतां मा न धरतां मुनिने दान आपवुं ते मस्तरनामा चोथो अतिचार, तथा निश्चे गोचरीनो काल वीत्या पठी मु निराजने तेरे केमके हवे मुनिराज वोहोरशे पण न हीं अने भारो नियम पण जंग नहीं आय, ते पांचमो कालातिक्रमदान अतिचार जाणवो ए अतिथिसंवि ज्ञागनामे चोथा शिक्षाव्रतने विषे जे अतिचार ला ग्यो होय ते प्रत्ये हुं निंउवुं ॥ ३० ॥

(११४)

गाथा ३१ थी ३५ सुधीना ठुटा

शब्दना अर्थ.

सुहिएसु-सुहित उपर, सुखीआ उपर दुहिएसु-दुखीआ उ- पर जा-जे अ-नही स्सं-पोताने छंदे, रुडे प्रकारे जएसु-विचरता अस्संजएसु-गुरुनी आज्ञा प्रमाणे विच- रता, असंजती अणुकंपा-दया साहूसु-साधुने विषे	संविभागो-संविभाग, वोहोरावबुं चरण-चरण सित्तरी करण-करण सित्तरी जुत्तेसु-सहित, वाळा. संते-छते फासुअ-निर्दोष जीविअ-जीववामां मरणे-मरवामां आसंस-वांछा मा-नहीं मरणंते-मरणना अंते काइअस्स-काया सं- बंधी.	वाइअस्स-वचन सं- बंधी. मणसा-मनवडे क- रीने माणसिअस्स-मन सं- बंधी वय-व्रत गारवेसु-अहंकारने विषे सन्ना-संज्ञा दंडेसु-दंडने विषे गुत्तिसु-(त्रण)गुत्तिमां समिईसु-(पांच) म- मितिमां
---	---	--

सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे
अस्संजएसु अणुकंपा ॥ रागेण व
दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि
॥३१॥ साहूसु संविजागो, न कउ

(૨૨૫)

તવ ચરણકરણજુત્તેસુ ॥ સંતે ફાસુ
 અ દાણે, તં નિંદે તં ચ ગરિહામિ
 ॥૩૨॥ ઇહ લોએ પરલોએ, જીવિઅ
 મરણે અ આસંસપનગે ॥ પંચવિહો
 અઈઆરો, મા મઝં હુઝ મરણંતે
 ॥૩૩॥ કાણા કાઈઅસ્સ, પમ્મિક
 મે વાઈઅસ્સ વાયાએ ॥ મણસા મા
 ણસિઅસ્સ, સવ્વસ્સ વયાઈઆરસ્સ
 ॥૩૪॥ વંદણ વય સિસ્સા ગા, રવેસુ
 સન્ના કસાય દંમેસુ ॥ ગુત્તીસુ અ
 સામઈસુ અ, જો અઈઆરો અ
 તં નિંદે ॥ ૩૫ ॥

સુહિએસુ અ કેળ સમ્યક્ જ્ઞાન, દર્શન, અને ચા
 રિત્રનું જેમને સારી રીતે હિત છે, તેમને સુહિત કહીએ,
 વલ્લી ડુઃખિત તે રોગે કરીને પીમિત, તપે કરીને ડુ
 ર્બલ, તુષ્ટ, જીર્ણ, નપાધિયે કરીને ડુઃખિયા એવા, પોતાના
 બંદે વિચરતા નથી, પણ ગુરુ આજ્ઞાએ વિચરે છે એવા સુ

साधु उपर पुत्रादिकना रागे करी एटले आ मारो पुत्र
 ठे के बाप ठे, एवा रागे करी दान दीधुं, पण गुणवंत
 नी बुद्धिए नहीं दीधुं, अथवा द्वेषे करीने एटले आ
 साधुने नातना लोकोए बहार काढ्यो ठे, ए झूख्यो ठे,
 ए बापमाने आपणे आहार पाणी आपवुं जोइए, नहीं
 आपीए तो ते झूखे मरइो एम द्वेषे करी एटले डुगंठा
 जावनी बुद्धिए करी मोरे जीवे अन्नपानादिकना दाने करी
 दया भक्ति कीधी होय, ते प्रत्ये आत्म साखे हुं निंडुं
 अथवा गुरुनी साखे हुं विशेषे निंडुं. ए पेहेलो अर्थ थयो.

बीजो सुखी एटले वस्त्र पात्रादिके करी सुखीआ
 अने रोग प्रमुखे करी दुखीआ एवा असंयत एटले जे
 रुनो उद्यम नथी करता परंतु जीवहिंसादिक कर्म पा
 शमां पढवाना उद्यम करवावाला वेष विमंक्क, अ
 संयती, पासङ्गा, नसन्ना वगेरेने, राग अथवा द्वेषे क
 रीने जे अनुकंपादान आप्युं होय, ते आत्म साखे
 निंडुं अने गुरुनी साखे गरहुं. बीजो जे असंयत ते
 ठकायना जीवनो आरंज करनार अथवा अन्य दर्शनी
 कुलिंगी, तेने रागे करीने जेमके आ मारा गामना रे
 नारा ठे तथा मारा जाइ ठे, मारी ओलखाणना ठे.

इत्यादि राग ज्ञावे करी दान दीधुं, तथा आ जिनशा-
सननी हेतना करनारा ठे, द्वेषी ठे, निर्लज्ज ठे, जंरुक
ठे, इत्यादि द्वेष उपन्यो, तो पण घेर आव्या माटे दान
आप्युं इत्यादि मारे जीवे जे दया कीधी होय तेने
हुं निंडुबुं अश्रवा गुरुनी साखे गरहुं बुं ॥ ३१ ॥

साहसु संविज्ञागो केण तपे करीने तथा चरण
सित्तरी अने करण सित्तरीये करीने सहित एवा सु-
साधु, तेने विषे देवा योग्य फासु निर्दोष एवं अन्नपा-
नादिकना दान ठते महारे जीवे जो संविज्ञाग न
कीधी होय, तेथी जे अतिचार हुवो होय, ते प्रते हुं
आत्म साखे निंडुबुं वली ते प्रत्ये गुरुनी साखे गरहुं बुं.
ए त्रण गाथाये करीने चोथुं शिक्षाव्रत थयुं ॥ ३२ ॥

हवे संलेखणाना पांच अतिचारनो परिहार क-
रता ठता कहे ठे. इहलोए परलोए केण आ लोकने
विषे आ धर्मना प्रज्ञावे शेठ, सेनापति, राजा प्रमुख
शुद्धिंत अवानो जे अजिलाष तेनो प्रयोग जे मननो
व्यापार ते इहलोकाशंस प्रयोग नामे पेहेलो अतिचार
जाणवो. आ धर्मना प्रज्ञावे परलोक मध्ये देव देवेंड

(११८)

अथानो अज्जिलाष तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार ते परलोकाशंसप्रयोग नामा बीजो अतिचार जाणवो. अनशनने लीधे सन्मान सत्कार देखी घणा काल जीववानी जे इहा तेनो प्रयोग जे मननो वेपार ते त्रीजो जीविआशंसप्रयोग अतिचार जाणवो. कठण क्षेत्रने विषे अनशन लेइने कोइ पूजा अर्चा न करता होय तेणे करी अथवा जूखादिके करी पीर्यां थकां उतावली मरणनी जे इहा तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार ते मरणाशंसप्रयोग नामा चोथो अतिचार जाणवो. तथा अ के० च शब्द थकी आ धर्मने प्रज्ञावे आवते जेवे रुमा शब्द, रूप, रसादिक जे कामजोग तेनो जे अज्जिलाष तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार ते पांचमो कामजोगाशंसप्रयोग नामा अतिचार जाणवो. ए रीते संक्षेपणा संबंधि ए पांचप्रकारना अतिचार मरणने अंते महारे न थान ॥ ३३ ॥

काएण काइअस्स के० वधाधिकारी एवा शरीरे करी करेला जे अतिचार ते अतिचारने कायोत्सर्गादिक तप अनुष्ठानादिक कायाना शुभ व्यापारे करी युक्त एवा शरीरे करीने तथा सहस्राज्याख्यानदानादि

(३३९)

रूप वाणीए करीने करयो एवो जे वचन संबंधी अतिचार तेने वचने करीने मिथ्याडुक्कम देवुं, जिनस्तवन करवुं, इत्यादिक जे शुभ वचननो व्यापार, तेणे करीने, तथा मानसिक एटले देवतत्त्वादिकने विषे मने करी शंकादिकने करवे करी करया एवा जे अतिचार तेने मने करी अनित्य ज्ञावनादिक जे मनना शुभ व्यापार तेणे करीने, तथा “ हा ! में दुष्टकाम कर्युं ? ” इत्यादिक आत्मनिंदाए करीने, एम सर्व व्रतना अतिचार प्रत्ये त्रिकरण शुद्धे करीने हुं पम्पिक्कमुहुं निवर्त्तुं ॥३४॥

वंदणवय के० वंदण बे प्रकारे ठे; एक देववंदन, बीजुं गुरुवंदन. बीजुं श्रावकनां स्थूल प्राणातिपात विरमणादिक व्रत बार प्रकारे ठे. त्रीजी शिक्षा बे जेदे ठे. त्यां श्रावकने सामायिक सूत्रार्थनुं ग्रहण, तेने ग्रहण शिक्षा कहीए. ते जघन्य नवकारथी मांसीने अष्ट प्रवचन माता गुरु पासेथी जणे अने उत्कृष्टो दशवै कालिक सूत्रना पांचमा ठज्जिवणिया अध्ययन पर्यंत सूत्र ने अर्थ बेहु जणे, ग्रहे, धारे, शीखे, त्यां लगे प्रथम ग्रहणशिक्षा जाणवी; अने जे अर्थ सहित नमुकारसहियं प्रमुख दिनकृत्य एवी श्रावक संबंधि क्रि

યા અનુષ્ઠાનની જે સમાચારી છે, એટલે પહેલો નવકાર
 ર ગણતો થકોજ નહે, પઢી પોતાનું સ્વરૂપ વિચારે જે
 હું શ્રાવકહું, મારે કેટલાં વ્રત છે, इत्यादि શ્રાદ્ધદિન
 કૃત્ય પ્રકરણ તથા શ્રાદ્ધવિધિમાં જે સમાચારી કહી
 છે તે સર્વ જાણે, આચરે, આસેવે, તે બીજી આસેવના
 શિક્ષા કહીએ. હવે રુદ્ધિગારવ રસગારવ અને શાતાગારવ
 એ ત્રણ પ્રકારના ગારવ છે; તેમાં પહેલો ધન, સગાં સંવં
 ધી પરિવાર ઘણો દેખીને મનમાં અહંકાર આણે તે રુ
 દ્ધિગારવ, અને જે સારું खावापीवानે લોલુપી થાય તે
 રસગારવ, તથા જે વસ્ત્ર ઘર પ્રમુખને મોહને લીધે
 ઢોમી શકે નહીં તેને શાતા ગારવ કહીએ. એ ત્રણ પ્ર
 કારના ગારવનું સેવન કરવાથી, તથા પાંચમો સન્ના
 કેળ આહાર, જ્ઞય, મૈથુન અને પરિગ્રહ, એ ચાર સંજ્ઞા
 નું; બીજી ક્રોધ, માન માયા, લોભ, લોક, ઝંઘ, એ
 સંજ્ઞાનું, તે એકેંડિયાદિ સર્વ જીવોને હોય છે, તથા ઠ
 ઠો કસાય કેળ ક્રોધાદિ ચાર કપાય, તથા સાતમો દંમે
 સુકેળ ધર્મ ધનથી જેણે કરી આત્મા દંભાય તે દંભ, અ
 શુભ મનાદિક ત્રણ જ્ઞેદે છે. આઠમો ગુત્તીસુ અ કેળ મ
 નાદિક ત્રણ ગુત્તિ, નવમો સમિર્સુ કેળ ઈર્યાદિક પાંચ

(૨૩૧)

સમિતિ, અને અ કેળ ચ શબ્દથી શ્રાવકની અગિઆર પદ્ધિમા. એ નવ બોલ મધ્યે જે બોલ નિષેધ કરવા યોગ્ય છે તેના કરવાથી અને જે બોલ કરવા યોગ્ય છે તેના ન કરવાથી જે અતિચાર મને લાગ્યો હોય. તે પ્રત્યે હું નિંડુહું. ॥ ૩૫ ॥

ગાથા ૩૬ થી ૪૦ શુધીના લુટા

શબ્દોના અર્થ.

હુ-તો પણ
સમાયરડ-સમાચરે,
કરે.
કિંચિ-થોહું
અપ્યો-અલ્પ, થોહું.
સિ-તેને
વંધો-વંધ
જેણ-જે માટે
નિહંધસં-નિર્દયપણે
કુણઈ-કરે
તંપિ-તે પણ
સપઢિક્કમણં-પઢિક્ક-
મણ સહિત
સપરિઆવં-પરિતાપ

સહિત, પશ્ચાત્તાપ સ-
હિત
સઉત્તરગુણં-ઉત્તર ગુ-
ણ સહિત
ચિપ્પં-ક્ષિપ્ત, ઉતાવળો
ઉવસામેઈ-ઉપશમાવે,
ટાઢે.
વાહિ-વ્યાધિ
વ્વ-જેમ
સુસિચ્છિઓ-સારો
શીચ્છેલો
ચિજ્જો-વૈદ્ય
કુદ્ધગયં-કોઠામાં ગ-
યેલું.

વિસારયા-વિશારદ,
જાણનાર.
હણંતિ-હણે છે, દૂર
કરે.
મંતોહિ-મંત્રોણ કરીને
તો-સારે
નિચ્ચિસં-વિષ રહિત
સમજ્જિઅં-મેઢવેલું
આલોઅંતો-આલોવ-
તો
નિંદંતો-નિંદતો
સુ-સારો
કયપાવો-પાપ કર-
નારો

मणुस्सो-माणस	होइ-थाय	भरु-भार
आलोइअ-आलोइने	अइरेग-अतिरेक, घणो	भार-बोज, भार.
निंदिअ-निंदिने	लहुओ-हळवो	वहो-वेहेनार, लेइ ज-
सगासे-समीपे, पासे	ओहारिअ-उतारीने	नार.

सम्महिंठी जीवो, जइवि हु पावं
 समायरइ किंचि ॥ अण्पो सि होइ
 बंधो, जेण न निधंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥
 तंपि हु सपम्किमणं, सप्परिअ्यावं
 सन्नत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेई,
 वाहि व सुसिखिन्न विज्जो ॥ ३७ ॥
 जहा विसं कुठगयं, मंत मूल वि
 सारया ॥ विद्या हणंति मंतेहिं, तो
 तं हवइ निविसं ॥ ३८ ॥ एवं अ
 ठविहं कम्मं, रागदोससमच्चिअं ॥
 आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं ह
 णइ सुसावन्न ॥ ३९ ॥ कयपावोवि
 मणुस्सो, आलोइय निंदिअ गुरु

(૨૩૩)

સગાસે ॥ હોઈ અફરેગ લહુન, નહ
રિઅ જરુથ જારવહો ॥ ૪૦ ॥

સમ્મદિઠી કેળ જો પણ સમ્યક્દૃષ્ટિ ઇટલે યથા
અવસ્થિત સ્વરૂપનો જાણ એવો જીવ તે થોમો રહેતો
પ્રમુખ આરંજરૂપ પાપ ગુજરાન ચલાવવાને માટે કરે
ઢે, તો પણ તે સમ્યક્દૃષ્ટિ જીવને અટપ તે પૂર્વ ગુણ
ઠાણાની અપેક્ષાએ કરી થોમો કર્મનો બંધ હોય; જે
કારણ માટે, સમ્યક્દૃષ્ટિ જે શ્રાવક ઢે તે નિર્દયપણે
પાપ વ્યાપાર ન કરે, અને કરે તો પણ શંકા રાખીને
કરે, વલી મનમાં વિચારે કે ધિક્કાર પમો આ ગૃહ
સ્થાશ્રમને કે જેને વિષે કેટલાં પાપ કરવાં પમે ઢે ?
એવી લીક રાખીને કરે, પણ નિર્દય પરિણામ રાખીને
ન કરે તેથી તેને પાપ થોમું લાગે ઢે. ॥૩૬॥

અહીંઆં કોઈ આશંકા કરે કે, જેમ થોમું પણ
વિષ સ્વાવાથી જીવ જાય ઢે, તેમ થોમું પણ પાપ કર
વાથી ડુર્ગતિની પ્રાપ્તિ ન થાય ? આ આશંકાનો ઉત્તર
આગલી ગાથાએ આપે ઢે.

તંપિ હુ સપન્નિક્કમણં કેળ પ્રતિક્રમણ જે ઠ આવશ્ય

ક તેણે કરી સહિત થકો, એટલે પ્રતિક્રમણ કરવે કરી
 ને, વલી પરિતાપ સહિત થકો, એટલે પશ્ચાત્તાપ કરવે
 કરી વલી ઉત્તરગુણે સહિત થકો, એટલે ગુરુએ દીધું
 જે પ્રાયશ્ચિત્ત તપ, તે તપ કરવે કરી યુક્ત, એવો શ્રાવક
 નિશ્ચે તે ઓમા કર્મના બંધને પણ ઉતાવલો ઉપશમા
 વે છે, ટાલે છે. કોની પેરે? તો કે સારો શીખેલો વૈદ
 જેમ રોગોને તરત ટાલે છે તેમ એ પણ જાણવું. ॥૩૭॥

વલી જહાવિસં કેળ જેમ મંત્ર મૂલમાં પ્રવીણ
 એવા જે વૈદ્ય તે શરીરને વિષે વ્યાપેલા સર્પાદિકના જે
 રને મંત્રવડે દૂર કરે છે તે વારે તે શરીર વિષરહિત
 થાય છે. જો કે વિષે પીમાણલો પુરુષ સર્પની મણિ મં
 ત્રાક્ષર ઔષધિનો પ્રજ્ઞાવ જાણતો નથી તો પણ તેમનો
 પ્રજ્ઞાવ અચિંત્ય છે તેથી તેનું વિષ નિવૃત્ત થાય છે, તેમ
 અહીં પણ શ્રાવકને ગુરુવાક્યના અનુસારે તે અક્ષરના
 સાંજલવાથી લાજ્ઞ થાય છે. ॥૩૮॥

એવં અઠવિહં કેળ એ રીતે ગુરુ પાસે પોતાનાં પાપ
 આલોવતો તથા નિંદતો થકો, સાચા મનથી મિઠામિ
 હુક્કમં દેતો થકો, જલો શ્રાવક જે છે, તે રાગદ્વેષે કરીને
 બાંધેલું આઠ પ્રકારનું કર્મ, તેને તરત દેશે છે. ॥ ૩૯ ॥

कय पावोविकेण पापनो करनार एवो पण मनुष्य.
 गुरु पासे करेला पापने प्रकाश करतो थको, तथा
 पापनी निंदा करतो थको, एटले मिहामि डक्क
 देतो थको, घणा पापणी हलवो आय. जेम नार लेइ
 जनार पुरुष नार उतारीने हलवो आय ठे तेम ते प
 पा कर्मरूप नारे करीने हलवो आय ठे. ॥ ४० ॥

गाथा ४१ थी ४५ सुधीना बुटा

शब्दना अर्थ.

आवस्सएण-आवश्य	अचिरेण-थोडा	खेलो
के करीने	कालेण-काले करी	अप्पुट्ठिओमि-उठयो
एएण-एणे करी	आलोअणा-आलोच	हुं
बहुरओ-बहुरजवालो,	ना, आलोयण.	आराहणाए-आराध-
घणा पाप वाळो.	न-न	नाने माटे
दुरुखाणं-दुखोनी	य-वळी	विरओमि-निवत्त्योछुं
अंतकिरिअं-अंतकि-	संभरिआ-सांभरी	पडिक्कंतो-पाप थकी
या, नाशक्रिया.	मूलगुण-मूळ गुण	निवत्त्यो.
काही-करशे	पन्नत्तस-कहेलो, भा-	

आवस्सएण एएण, सावउ जइवि
 बहुरउ होइ ॥ डस्काणमंतकिरि

(१३६)

अं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥
आलोअणा बहुविहा, न य संज
रिआ पम्किमणकाले ॥ मूलगु
णउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहा
मि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केव
लिपन्नत्तस्स ॥ अप्पुठ्ठिमि आरा
हणाए विरुमि विराहणाए ॥ ति
विहेण पम्किंतो, वंदामि जिणे
चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआ
इं, उड्डेअ अहे अ तिरिअ लो
ए अ ॥ सवाइं ताइं वंदे, इह सं
तो तन्न संताइ ॥ ४४ ॥ जावंत के
वि साहू, ज्ञरहेरवयमहाविदेहे अ ॥
सवेसिं तेसिं पणन, तिविहेण ति
दंमविरयाणं ॥ ४५ ॥

आवस्सएण के० जो पण श्रावक घणो कर्म वं

रूप रजवालो एटले आरंभ परिग्रहे करी घणा पाप सहित होय तो पण ए पम्क्कमणादि आवश्यके करीने शारीरिक तथा मानसिक दुःखोनो थोडा कालमां विनाश करशे. ॥ ४१ ॥

आलोअणा के० आलोचना एटले गुरु आगल पाप प्रमाद आलोववानी रीत ते घणा प्रकारनी ठे, ते मारा पम्क्कमणा करवाना अवसरे न सांझरी होय ते न सांझरवाथी सम्यक्त्व पूर्वक पांच अणुव्रत तेने विषे, तथा त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत तेने विषे, जे अतिचार लाग्यो होय, तेने हुं आत्म साखेनिंडुं, वली ते प्रत्ये गुरु साखे गरहुं ॥ ४२ ॥

एबेतालीस गाथांन बेगं कहेवी पढी तस्सधम्मस्स एम कहेतो उज्जो अइ बे हाथ जोमीने आगली मंग लगर्जित आठ गाथाओ कहे. तस्स धम्मस्स के० ते गुरु पासेथी मलेलो एवो अने केवली ज्ञापित एवो श्रावक धर्म तेनी आराधनाने माटे हुं सारी रीते पालन करवाने उठयोहुं. ते धर्मनी विराधना थकी हुं निवर्त्यो हुं. त्रिविधे करी एटले मन, वचन, अने कायाए करी अतिचार पाप थकी निवर्त्यो थको चौवीश

જિનને હું વાંડું ॥ ૪૩ ॥

જાવંતિ ચેઝાઝંકે ॥ નર્ધ્વલોકને વિષે વલી અ
ધો લોકને વિષે વલી તિર્ઘા લોકને વિષે જેટલાં ચૈ
ત્ય એટલે જિનબિંબ છે તે સર્વને અહીંઆં રહ્યો થકો હું
વાંડું. ॥ ૪૪ ॥

જાવંત કેવિસાહુ કે ॥ પાંચ ઝરતક્ષેત્રને વિષે, પાં
ચ ઐરવત ક્ષેત્રને વિષે, તથા પાંચ મહાવિદેહ ક્ષેત્રને વિ
ષે, અને ચ શબ્દથી અકર્મજૂમિ ક્ષેત્રાદિકને વિષે જ
બન્ય બે હજાર કોમી અને જુલ્કષ્ટા નવ હજાર કોમી
સાધુન છે તે સર્વ સાધુ પ્રતે ત્રિવિધે એટલે મન, વચન
અને કાયાએ કરી હું પ્રણમું. તે સર્વ સાધુ કેવા છે તો
કે ત્રણ દંડ થકી એટલે અશુભ મન, વચન અને કા
યાના વ્યાપારથી વિરામ પામેલા છે. ॥ ૪૫ ॥

ગાથા ૪૬ થી ૫૦ સુધીના ભુટા

શબ્દના અર્થ.

ચિર-ઘણા કાલનાં	સય-સો	કહાઈ-કથાઓ
સંચિય-એકઠાં કરેલાં	સહસ્ત-હજાર	બોલંતુ-જાઓ
પણાસળીઈ-નાશ ક-	મહળીએ-મથનારી	દિઅદા-દિવસો
રનારી	વિણિગાય-નીકલેલી	પડિસિદ્ધાણં-નિષેધ

(२३ए)

करेलुं
किच्चाणं-करवा जोग
अकरणे-नहीं करवा
थी
असदहणे-अश्रद्धामां
परूवणाए-प्ररूपणाए

खामेमि खमावुं छुं
खमंतु-खमो
मे-मने
मिच्ची-मैत्रीभावे
भूएसु-प्राणीओमां
वेरं-वेरभाव

केणइ-कोइनी साथे
गरहिअ-गुरुनी साथें
निंदीने
दुगंछिअ-घणुं खोटुं
जाण्युं.
सम्मं-सम्यक्प्रकारे

चिरसंचियपावपणासणीइ, जवस
यसहस्समहणीए ॥ चउवीस जि
णविणिग्गय कहाइं, वोळंतु मे
दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरि
हंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो
अ ॥ सम्मद्विठी देवा, दिंतु समा
हिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पमिसिद्धा
णं करणे, किच्चाणमकरणे पमि
क्रमणं ॥ असदहणे अ. तथा,
विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥
खामेमि सब जीवे, सबे जीवा ख

મંતુ મે ॥ મિત્તી મે સઘજૂણસુ, વેરં
મઘં ન કેણશ ॥ ૪૯ ॥ એવમહં આલો
ઇત્થ, નિંદિત્થ ગરહિત્થ ડુગંઠિત્થં
સમ્મં ॥ તિવિહેણ પમિકંતો, વંદા
મિ જિણે ચત્તવીસં ॥ ૫૦ ॥ ઇતિ ॥

અર્થ:—ચિર સંચિય કેળ ઘણા કાલનાં એકઠાં ક
રેલાં જે પાપો તેને વિનાશ કરનારી એવી, સંસારના
લક્ષ જાવ જે કરવા તેને હણનારી એવી, ચોવીશ તીર્થ
કરોથી નીકલી જે જિનગુણોની કથા, તે કરવે કરીને
મારા દિવસો જાન. એ પ્રાર્થના કરી છે. ॥ ૪૬ ॥

મમ મંગલમરિહંતા કેળ એક શ્રી અરિહંત, વીજા
સિદ્ધ જગવાન્, વલી ત્રીજા સાધુ મુનિરાજ, ચોથો
શ્રુત ધર્મ, તે અંગોપાંગાદિક આગમ, વલી ચારિત્ર
ધર્મ પણ લેવો; એ શ્રુત ધર્મ અને ચારિત્ર ધર્મ એ
મ બે પ્રકારે કેવલીએ પ્રરૂપ્યો જે ધર્મ તે; એ ચાર વા
નાં મારે મંગલિક છે. અ શબ્દ થકી એ ચારવાનાં લો
કને વિષે ઉત્તમ છે, શરણજૂત છે, વલી પણ એમ પ્રા

धना करीए ठीए जे सम्यक् दृष्टि देवतानु जे ठे, ते मुजने शुभ कार्यने विषे जे चित्तनी स्थिरता ते प्रत्ये वली बोधि प्रत्ये एटले परजवे श्री जिनधर्मनी प्राप्ति प्रत्ये आपो. ॥ ४७ ॥

पसिखिणं—के० प्रतिषेध करेलां एटले निषेधे लां काम ते समकित अने अणुव्रत वगैरेने मलिन करवानां हेतु एवां शंका वधादिक अठार पापस्थानादिक अशुभ कार्य करवे करी, तथा बीजो विधि एटले कखा योग्य कामो जेवां के, देवपूजा, सामायक, विनय, दानादिक अरिहंतनी जक्ति प्रमुख जे शुभ कार्य ठे ते शुभ कार्यने नहीं करवा थकी, वली त्रीजा अश्रद्धाने विषे एटले निगोदादि सूक्ष्म विचारने नहीं सर्वहवे करी, वली तेमज चोथो विपरीत प्ररूपणा के तां जिनागमथी बुलटी प्ररूपणा करवे करीने एटले उत्सूत्र बोलवे करीने, आ जे विपरीत प्ररूपणा ठे ते अत्यंत नवन्नमणुं कारण रूप ठे, ते विपरीत प्ररूपणा तो अनाज्ञोगादिके कर्ये ठते पण प्रतिक्रमण कराय ठे, तेथी ए चार प्रकारे करीने जे पाप लाग्युं होय, अतिचार थयो होय, ते पाप ठर करवाने अर्थे प

(૩૫૯)

સીલંગધારા ॥ અરક્કયાયારચરિ
તા, તે સવે સિરસા મણસા મઠ
ણ વંદામિ ॥ ૫ ॥ ઇતિ ॥

અર્થ:—અઢ્ઢાઢ્ઢેસુ કેઢ અઢી ઢ્ઢીપ, વે સમુઢ સં
વંધી જે પંઢર કર્મજુમિ ઢ્ઢેત્રને વિષે જેટલા કોઢ પણ
સાધુ, રજોઢરણ ંટલે ઢધો, અને ગુઢ્ઢો તે પાતરાની
ઝોલી ઢપરનું ઢપકરણ, અને પાત્રું, ડત્યાઢિ ઢર્મોપ
કરણના ઢારણ કરનારા ં. ॥ ૧ ॥

ં સાધુનો વેષ કહ્યો, હવે ગુણ કહે ં. તે સાધુ
કેવા ં ? તો કે પાંચ મહાવ્રતના ઢરનાર ં. વલી અ
ઢાર હજાર ડીલનાં (ચારિત્રનાં) જે ંંગ તેના ઢરનાર.

ણ ઠે, અને મિથ્યામિ હુક્કર ઠે. ॥ ૪૮ ॥

સ્વામેમિ સર્વ જીવે કેળ સર્વ જીવો પ્રત્યે હું સ્વમા
વું વું, એટલે અનંત જીવોને વિષે પણ અજ્ઞાનને મોહથી
આવૃત થવા થકી, જીવોને જે પીડા કીધી હોય, તે
સ્વમાવું વું, અને તે સર્વ જીવો મ્હારા અપરાધને સ્વમો
(માફ કરો), કેમ કે સર્વ જીવોને વિષે મારે મૈત્રી
જાવઠે, કોઈ જીવની સાથે મારે વૈર જાવ નથી ॥ ૪૯ ॥

એવમહં આલોહ્ય કેળ એ પ્રકારે મેં સમ્યક્ પ્ર
કારે આલોચ્યું, સમ્યક્ પ્રકારે અત્યંત સ્વોદું જાણ્યું,
આત્મ સાથે નિંદ્યું, સમ્યક્ પ્રકારે ગહ્યું, અને સમ્યક્
પ્રકારે હુગંઢ્યું, તે માટે ત્રિવિધે કરી એટલે મન વચન
અને કાયાએ કરી અતિચારાદિક પાપ થકી પાઠો પ
રતો થકો એટલે પાપને પશ્ચિમતો એવો જે હું તે ચો
વીસ જિનને વાંડું વું. ॥ ૫૦ ॥ इति वंदिता सूत्र ॥

વિધિ:—પઠી લે વાંદણાં દેશને ગુરુને અપરાધ સ્વ
માવવાને આ રીતે કહે.

અપ્પુઠિહમિના હુટા શબ્દના અર્થ.

અપ્પુઠિહમિ-હું	ઉ-	અપત્તિઅં-અપ્રીતિ	ઉ	પરપત્તિઅં-વિશેષ	અ
ઠ્યો હું		પજાવી		પ્રીતિ	ઉપજાવી

(५४३)

आलावे-एकवार वो	अंतर भासाए-वच्चे	सुहुमं-सूक्ष्म
लाववे	बोलतां	वायरं-मोडुं
संलावे-वारंवार वो	उवरिभासाए-कहेली	तुप्पे-तमे
लाववे	वात फरीने विशेष	जाणह-जाणो छो
उच्च-उंचा	पणे कहेवार्थी	याणामि-जाणुंछुं
सम-सरखा	परिहीणं-रहित	

॥ अथ अप्रुठिनि गुरुखामणां ॥

इत्थाकारेण संदिसह जगवन् अप्रुठिनिमि अप्रिंतर देवसिअं खा मेनुं०॥इत्तं०॥ खामेमि देवसिअं॥ जं किंचि, अपत्तिअं, परपत्तिअं, जत्ते पाणे विणए वेआवच्चे आ लावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरजासाए उवरिजासाए जंकिं चि मप्प विणयपरिहीणं सुहुमं वा वायरं वा तुप्पे जाणह अहं न

याणामि तस्स मिच्छामि उक्कमं

॥ १ ॥ इति ॥

अर्थः—इच्छाकारेण के० हे जगवन ! दिवस मांहे कीधेला अपराध खमाववाने हुं उज्जो अयो हुं, ते खमाववानो मुजने तमारी इच्छाए करी आदेश आपो. ते वारे गुरु कहे, खामेह (खमावो); ते वारे शिष्य कहे इहं, एटले एज इहुंहुं. दीवस संवंधी अपराध प्रत्ये खामुंहुं. पढी पंचांगे प्रणाम करी, मुखे मुहपत्ति राखी एम कहे के जं किंचि के० जे कांइ अप्रीति उपजावी होय, विशेषथी अप्रीति उपजावी होय, शाने विषे ? तो के ज्ञातपाणीने विषे, विनयने विषे, (गुरु आवे उज्जा अयुं, गुरुने वेसवा आसन आपवुं तेने विनय कहीए) वेआवच्च (औपधपथ्य आणी विसामणां प्रमुख ते)ने विषे, एक वार बोलाववुं, वारंवार बोलाववुं तेने विषे, विनय चुक्यो होउं, वली गुरुथी उंचे आसने वेसतां, वली गुरुनी पासे सरखा तथा वरावर आसने वेसतां, वली गुरुना वात करतां, बोलतां, वचमां बोली उठ्याथी, वली गुरु वात करी

(१४५)

रह्या पढी तेज वात पोतानी चतुराई देखामवाने विशेष
पपणे कहेवाची इत्यादि जे कांई में विनय रहितपणे
कीधुं होय, एटले जे कांई नानो अथवा मोटो अविनय,
अपराध, माराची अयो होय, ते सर्व हे ज्ञानवंत ! त
मे ज्ञाने करी जाणो गो अने हुं नथी जाणतो, ते मा
रुं सर्व पाप मिळ्या श्रांत. ए अपराध विधि पूर्वक
खमावतां चंडरौडाचार्यादिक अनेक जीवोने केवल
ज्ञान उपज्युं ठे. ॥ इति ॥

विधि:-ए रीते अष्टाष्टिनिखामि खामीने वांदणा वे
देवां, पढी नज्जा अशने आयरिअ उवद्याए कहे ते
लखीए ठीए.

आयरिय उवद्याएना बुटा शब्दना अर्थ.

सीसे-शिष्यने विषे	समण-श्रमण, साधु	अहयंपि-हुं पण
साहार्मिण-साधर्मिक	संघस्त-संघने [डबुं	रासिस्त-समूहने
ने विषे [शिष्य	अंजलि-वे हाथनुं जो	भावओ-भावथी
कुल-एक आचार्यना	सीसे-मस्तके	निहिय-स्थाप्युं छे
गणे-घणा आचार्यना	खमावइत्ता-खमावीने	निय-निज, पोतानुं
परिवार		चित्तो-चित, मन

(१४६)

॥ अथ आयरिय उवच्चाए ॥

आयरिय उवच्चाए, सीसे साह
म्मिए कुलगाणे अ ॥ जे मे केइ
कसाया, सबे तिविहेण खामेमि
॥ १ ॥ सबस्स समणसंघस्स, ज
गवउ अंजलिं करिय सीसे ॥ स
वं खमावइत्ता, खमामि सबस्स अ
हयंपि ॥ २ ॥ सबस्स जीवरासि
स्स, ज्ञावउ धम्म निहिय नियचि
तो ॥ सवं खमावइत्ता, खमामि स
बस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

अर्थः—आयरिअ के० आचार्य, उपाध्याय, शिष्य,
साधर्मिक, (पोताना सरखा धर्म पालनारा तेने साव
र्मिक कहिए) कुल (एक आचार्यना संतान), अने
गण (गठ, घणा आचार्योनो परिवार), एछने विषे
जे कांइ मारे जीवे क्रोधादि कपाय कीवा होय ते

सर्वे मन, वचन, अने कायाए करी खमावुं तुं. ॥१॥

सबस्स समण संघस्स के० सर्व श्रमण संघरूप
जगवंतना कीधा जे अपराध, ते सर्व अपराध प्रत्ये
बे हाथ जोमी मस्तके चढावीने खमावुं तुं अने ते
सर्वना करेला अपराध प्रत्ये हुं पण खमुं तुं. ॥ २ ॥

सबस्स जीव रासिस्स के० सर्व जीवना समूहना
जे अपराध में कीधो ते ज्ञावे करी धर्मेने विषे पो-
तानुं चित्तयाप्युं ठे एवो हुं ते सर्व अपराध खमा
वुं तुं अने हुं पण तेमना अपराध प्रत्ये खमुं तुं. ॥३॥

विधि:—पढी करेमि जंतु कही इत्थामिगमि का
उस्सग्गं जोमे देवसिनु० कही तस्स उत्तरी कही अन्न
ठ उल्लसिएणं कही, बे लोगस्स अथवा आठ नवका
रनो कानुस्सग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स केहेवो. पढी
सबलोए अरिहंत चेइआणं, वंदण वत्तिआए० कही,
एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो कानुस्सग्ग करी
पारी पुक्कवरदी० सुअस्स जगवन्नु० करेमि० वंदण०
कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो कानुस्स
ग्ग करी पारीने, सिद्धाणं बुद्धाणं० कही सुअदेवयाए
करेमिकानुस्सग्गं अन्नत्त० कही एक नवकारनो कानु

स्सग्ग करी पारी नमोऽर्हत्त० कही पुरुषे सुअदेवया
 नी पेहेली थोय कहेवी अने स्त्रीए कमलदलनी पेहे
 ली थोय कहेवी. पढी खित्तदेवयाए करेमि कान्ठस्सग्गं
 अन्नत्त, कही एक नवकारनो कान्ठस्सग्ग करी पारी
 नमोऽर्हत्त० कही क्षेत्र देवतानी बीजी थोय पुरुषे
 जीसे खित्ते साहूनी कहेवी अने वाइत्तए यस्थाः
 क्षेत्रं नी थोय कहेवी.

॥ अथ सुअदेवयादि थोयोना बुटा शब्दना अर्थ ॥

सुअ-श्रुत	जीसे-जेना	दल-पांखडी
देवयाए-देवताने अर्थे	खित्ते-क्षेत्रमां	विपुल-विशाल
देवया-देवता	नाणोहिं-ज्ञाने करीने	नयना-आंखवाली
भगवई-भगवती	चरण-चारित्र	मुखी-म्होंवाली
नाणावरणीय-ज्ञाना	सहिणहिं-सहित एवां	गर्भ-गर्भ
वरणीय	साहांति-साधे छे	सम-सरस्वी
संघायं-समूह	मुख-मोक्ष	गौरी-गोरावर्णवाली
तेसिं-तेमनां	मग्गं-मार्ग	स्थिता-रहेली
खवेउ-खपावो	सा-ते	भगवती-भाग्यशाली
सययं-निरंतर	देवी-देवी	युनानां-वालाने
सायरे-सागरमां	हरउ-हरो	
भक्ति-भक्ति	दुरियाइ-पापोने	

(२४६)

स्वाध्याय-सज्जाय
संयम-चारित्र
रतानां-रागी
विदधातु-करो
मुवन-घरनी

यस्याः-जेणीना
क्षेत्रं-क्षेत्रने
सं-सम्यक् प्रकारे
आश्रित्य-आश्रयीने
साधुभिः-साधुओए

साध्यते-सधाय छे
क्रिया-क्रिया
भूयात्-हो
नः-अमने
दायिनी-आपनारी

अथ श्रुत देवतानी थोय.

सुअदेवयाए करेमि काजस्सग्गं
॥ सुअदेवया जगवई, नाणावर
णीय कम्म संघायं ॥ तेसिं खवे
उ सययं, जेसिं सुय सायरे जत्ति
॥ १ ॥ इति ॥

अर्थ-श्रुतदेवताने आराधवा अर्थे हुं काजस्सग्ग
करु तुं. सुअदेवया केण जव्य पुरुषोनी निरंतर श्रुत सा
गरने विषे जत्ति छे, तेमना ज्ञानावरणीय कर्मना स
मूहने जगवती एवी श्रुत देवता अथवा सरस्वती
खपावो. ॥ १ ॥

अथ क्षेत्रदेवतानी थोय.

जीसे जित्ते साहू, दंसण नाणेहिं

(३५०)

चरण सहिएहिं ॥ साहंति मुस्क म
गंग, सा देवी हरज डुरियाइ ॥५॥

अर्थ:-जीसे खिते के० जे देवीना क्षेत्रने विषे
चारित्र सहित एवां दर्शन अने ज्ञाने करीने, साधु मु
निराज मोक्षना मार्गने साधे ठे ते देवी पापने दूर करो.
॥ ५ ॥ आ बे श्रोयो पुरुषने कहेवानी ठे.

॥ अथ कमलदलनी श्रोय. ॥

कमलदलविपुलनयना, कमलमु
खी कमलगर्जसमगौरी ॥ कमले
स्थिता जगवती, ददातु श्रुतदेव
ता सिद्धिम्. ॥ १ ॥

अर्थ:-कमलदल विपुलनयना के० कमलनी पां
खमी जेवां विशाल नेत्रवाली, तथा कमलना जेवा
सुशोन्नित मुखवाली, तथा कमलना मध्यजागना ग
र्ज जेनी गौरवर्णवाली, तथा कमलने विषे रहेली,
एवी ठकुराइ प्रमुख गुणनी धरनारी, एवी जे सिद्धांत
नी अधिष्टायिका श्रुतदेवी ते अमने सिद्धि प्रत्ये आपो॥१॥

(१५१)

॥ अथ यस्याः क्षेत्रं नी शोय ॥

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः
साध्यते क्रिया ॥ सा क्षेत्रदेवता नि
त्यं, नूयान्नः सुखदायिनी ॥ १॥ इति ॥

अर्थः—यस्याः क्षेत्रं के० जेना क्षेत्रने अंगीकार क
रीने साधुनुश्री धर्मक्रिया सधाय ठे, ते क्षेत्रदेवी अमने
निरंतर सुखनी देवावाली हो. ॥ १ ॥ इति ॥ आ वे
शोयो स्त्रीनुने कहेवानी ठे.

अथ नुवनदेवतानी शोय.

नुवणदेवया एकरेमि कानुस्सग्गं ०
॥ ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वा
ध्यायसंयमरतानां ॥ विदधातु नुव
नदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनां ॥ १॥

अर्थः—नुवनदेवताने आराधवा अर्थे कानुस्सग्ग
करुं ठुं: ज्ञानादिगुणयुतानां के० ज्ञानादि गुणे करीने
सहित तथा निरंतर स्वाध्याय अने संयमने विषे रागी
एवा सर्व साधुनुने नुवन देवी हमेशां कळयाण करो

॥१॥इति॥ आ थोय अने यस्याःक्षेत्रंनी थोय पाखी पन्नि कमणामां सुअदेवयानी वे थोयने बदले कहेवाय ठे.

विधिः--पढी प्रगट नवकार गणी वेसीने, ठा आवश्यकनी मुहपत्ती पन्निहेही, वांदणांवे दीजे, पढी सामायिक चउविसठो, वंदनक, पन्निक्कमणुं, काउस्स ग, पच्चरकाण कर्युं ठे जी एम कही पढी इछामो अ णुसठिं नमो खमासमणाणं कहीं नमोऽर्हत्तु कहीने पुरुष नमोस्तु वर्द्धमानाय कहे, अने स्त्रीउ संसारदा वानी त्रण गाथा कहे.

॥ नमोस्तु वर्द्धमानायना बुटा शब्दना अर्थ ॥

इच्छामो-अमे इच्छि	तव-ते (नी)	राज्या-श्रेणीवडे
ये छीए	जय-जीत (थी)	ज्यायः-वधारे सारु
अणुसठि-शिक्षा, शि	अवाप्त मोक्षाय-मोक्षने	क्रम-पग
खामण	पामेलाने	दधत्या-धारण करती
नमः-नमस्कार	परोक्षाय-दृष्टिथी दूर	सद्वैः-सरस्वानी साथे
अस्तु-हो	कुतीर्थिनां-मिथ्यादृष्टि	इति-ए प्रकारे
वर्द्धमानाय-वीरस्वा	ओनी-ने	संगतं-मेलाप [एक
मीने.	येपां-जेमना	प्रशस्यं-वखाणवा ला
स्पर्द्धमानाय-इष्या	विकच-विकस्वर	काथितं-कथुं ठे
करनारने	अरविंद-कमल	संतु-थाओ

शिवाय-मोक्षने अर्थे	यो-जे	दृष्टि-वरसाद
ते-तेओ [डाएला	जैनमुख-जिननुंमुख	सन्निभो-सरस्वो
तापादित-तामथी पी	अंबुद-मेघ	दवातु-करो
जंतु-प्राणीओने	उदगतः-नीकलेखं	तुष्टि-संतोष
निवृत्ति-मुख	शुक्रमास-जेठ महिनो	मायि-मारे विपे
करोति-करे छे	उद्भव-उपजेला	विस्तरो-विस्तार
		गिरां-वाणीओनो

॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥

इहामो अणुसठिं ॥ नमो खमा
समणाणं ॥ नमोऽहर्तुण नमोऽस्तु
वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्माणा ॥
तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कु
तीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विक
चारविंदराज्या, ज्यायःक्रमकमत्ता
वलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संग
तं प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते
जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापादित
जंतु निवृत्तिं, करोति यो जैनमुखां

(૩૫૪)

બુદોક્તઃ ॥ સ શુક્રમાસોન્નવવૃષ્ટિ
સંનિષ્ઠો, દધાતુ તુષ્ટિં મયિ વિસ્તરો
ગિરાં ॥ ૩ ॥ ઇતિ ॥

અર્થઃ--ઈચ્છામો અણુસદ્ધિં કેળવું અમો શિક્ષા પ્રત્યે
વંઢીએ ઢીએ, ક્રમા શ્રમણોને નમસ્કાર. નમોસ્તુ વર્ધ
માનાય કેળવું જે કર્મોની સાથે ઇર્ષ્યા કરનાર છે એવા,
વલી તે કર્મોને જીતીને મોક્ષ પામ્યા છે એવા, વલી
મિથ્યા દૃષ્ટિ જીવોને દૃષ્ટિથી જે દૂર છે એવા, શ્રી વ
ર્ધમાન સ્વામીને નમસ્કાર આનં. ॥ ૧ ॥

યેષાંવિકચારવિંદ કેળવું તે જિનેંડો મોક્ષને અર્થે
આનં. તે જિનેંડો કેવા છે ? તો કે જેમના જ્યાયઃ--કેળવું
અતિપ્રશંસવા યોગ્ય એવા ચરણ કમલની શ્રેણીને ધાર
ણ કરતી એવી, વિકચારવિંદરાજ્યા કેળવું વિકસ્વર એ
વા દેવોએ રચેલા અરવિંદ નામે કમલ તેની શ્રેણીએ ક
રીને સરખાની સાથે મલવું તે પ્રશંસા કરવા યોગ્ય છે.
ઇતિ કેળવું એ પ્રકારે કથિતં કેળવું કહ્યું છે એટલે સરખે
સરખા મલે તે શોષે માટે તે સુવર્ણમય નવ કમલ
અને પ્રજ્ઞના ચરણકમલ એ વંનેના મલવાથી અ

त्यंत शोभा प्रद. ॥ २ ॥

कषायतापादित के० जे वाणीजनो विस्तार क
षाय रूप तापे पीमित एवा प्राणीजने शांति समाधि
प्रत्ये करे ठे. वली जे जिनराजना मुखरूप मेघघ्नी न
पज्यो ठे, वली जेठ मासघ्नी उपज्या एवा वरसाद
जेवो ठे, ते सिद्धांतरूप वाणीजनो विस्तार मारे विषे
संतोष करो. ॥ ३ ॥ इति ॥

विधि:-पढी नमुहुणं कही, खमासमणुं देइ
इच्छाकारेण० स्तवन जणुं एम कही स्तवन कहेवुं.
॥ स्तवनना बुटा शब्दना अर्थ ॥

पंचम-पांचमा
सुरलोक-देवलोक
वासी-रहेनार
लोकांतिक-नाम छे
सु-घणा
विलासी-सुखी
राशी-ढगलो
उद्धार-रक्षण
संवत्सरि-वरसी
दारिद्र-गरीबाइ

भव्यत्व-भव्यपणुं
सुरपति-इंद्र
रयण-रत्न
सोवन-सोनुं
तीर्थ-तीरथनां
उदक-पाणीना
कुंभा-घडा
ठावे-थापे
आभरण-घरेणां
उवारे-उवारणां ले

मद-गर्व
मोडी-काढीने
मृगशिर-मागशर
आली-श्रेणी
वर्या-पाम्या
संयम-चारित्र
वधु-वहु
रेह-रेख, रजे.

॥ अथ स्तवन ॥

सखी आवी देवदीवालीरे ॥ ए देशी ॥ पंचम
 सुरलोकना वासीरे, नव लोकांतिक सुविलासीरे, करे
 विनति गुणनी राशी ॥ १ ॥ मद्धिजिन नाथजी व्रत
 बीजेरे ॥ जवि जीवने शिवसुख दीजे ॥ मद्धिजिन ॥
 ए आंकणी ॥ तुमे करुणा रस जंमाररे, पाम्या ठो
 जवजल पाररे, सेवकनो करो नद्वार ॥ मद्धिण ॥ २ ॥
 जविण ॥ प्रभु दान संवत्सरी आपेरे, जगनां दारिद्र दुःख
 कापेरे, जव्यत्वपणे तस ठाणे ॥ मद्धिण ॥ ३ ॥ ज
 विण ॥ सुरपति सयला मलि आवेरे, मणि रयण सो
 वन वरसावेरे, प्रभुचरणे शीश नमावे ॥ मद्धिण ॥ ४ ॥
 जविण ॥ तीर्थोदक कुंजा लावेरे, प्रभुने सिंहासन ठा
 वेरे, सुरपति जक्ते नवरावे ॥ मद्धिण ॥ ५ ॥ जविण ॥
 वस्त्राज्जरणे शणगारेरे, फूल माला हृदय पर धारेरे,
 दुःखमां इंझणी नवारे ॥ मद्धिण ॥ ६ ॥ जवि ॥ म
 द्या सुरनर कोमा कोमीरे, प्रभु आगे रह्या कर जो
 मीरे, करे जक्ति युक्ति मद मोमी ॥ मद्धिण ॥ ७ ॥
 जवि ॥ मृगशिर शुदिनी अजुवालीरे, एकादशी गु

(१५७)

एनी आलीरे, वर्या संयम वधु लटकाली ॥ मल्लि० ॥
॥ ८ ॥ नवि० ॥ दिक्का कळ्याणक एहरे, गातां दुःख
न रहे रेहरे, लहे रूपविजय जस नेह ॥ मल्लि० ॥ ए॥
नवि० ॥ इतिश्री मल्लि जिन स्तवनम् ॥

विधिः—पढी वरकनक कही जगवान् आदे वां
दवा. पढी जमणो हाथ चवला नपर श्यापी अद्दाइ
जेसु कहेवुं.

॥ वरकनकना ठुटा शब्दना अर्थ ॥

कनक—सोनं

शंख—शंख

विद्रुम—परवालां

मरकत—पानां

घन—मेघ

सन्निभं—सरखुं [हित

विगत मोहं—मोहयी र

[तेर

सप्ततिशतं—एकसोसी-

जिनानां—जिनोनुं

सर्व्व—सर्व्व

अमर—देवता

पूजितं पूजायेलुं

॥ अथ वरकनक ॥

वरकनक शंखविद्रुम, मरकतघन
सन्निभं विगतमोहं ॥ सप्ततिशतं
जिनानां, सर्व्वामर पूजितं वेदा॥१॥

(१५८)

अर्थः—वरकनक के० जिनेंझे संबंधि सप्ततिशत एटले एकसो सीत्तेरना समूह एटले एकसो सीत्तेर जिनेंझेने हुं वांडुं; ते सप्ततिशत केवुं ठे ? तो के प्रधान एवं सुवर्ण, शंख, प्रवालां, पानां, तथा सजल मेघ तेना जेवुं पांच वर्णवालुं ठे, वली मोहादिके रहित ठे. वली सर्व देवता जेने पूजे ठे एवं ठे.

॥ अट्टाइज्जेसुना ठुटा शब्दना अर्थ ॥

अट्टाइज्जेसु—अढीमां	मिमां	सीलंग—शीयळनां अंग
दीव—द्वीप	रयहरण—रजोहरण	अखत्तय—संपूर्ण
समुद्देसु—समुद्रोमां	गुच्छ—गुच्छो	सिरसा—ललाटे (कपा-
पनरससु—पंदर(मां)	पडिग्गह—पात्रुं	ले) करी
कम्मभूमिसु—कर्मभू-	धारा—धारण करनार	मणसा—मनवडे करीने

॥ अथ अट्टाइज्जेसु ॥

अट्टाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पनरससु
कम्मभूमीसु ॥ जावंत केवि साहू,
रयहरण गुत्त पडिग्गहधारा ॥१॥
पंचमहवयधारा, अठारस सहस्स

(१५९)

सीलंगधारा ॥ अस्त्रयायारचरि
ता, ते सबे सिरसा मणसा मन्त्र
एण वंदामि ॥ ५ ॥ इति ॥

अर्थः—अष्टाशक्त्यो के० अढी छीप, वे समुद्र सं
बन्धी जे पंदर कर्मभूमि क्षेत्रने विषे जेटला कोइ पण
साधु, रजोहरण एटले नुघो, अने गुह्यो ते पातरानी
जोली उपरनुं उपकरण, अने पात्रुं, इत्यादि धर्मोप
करणना धारण करनारा ठे. ॥ १ ॥

ए साधुनो वेष कह्यो, हवे गुण कहे ठे. ते साधु
केवा ठे ? तो के पांच महाव्रतना धरनार ठे. वली अ
ठार हजार शीलनां (चारित्रनां) जे अंग तेना धरनार.
वली संपूर्ण आचार रूप चारित्र तेना धरनार ठे. ते स
र्वने ललाटे तथा मने तथा मस्तके करीने हुं वांडुं तुं
अथवा पंचांग प्रणामे करी वांडुं तुं. ॥ १ ॥

विधिः—इच्छाकरेण संदिसह जगवन् देवसिअ
पायञ्चित्त विसोद्वणत्थं कानस्सग्ग करुं ? इच्चं करेमि
कानस्सग्गं; अन्नत्तण- कही, चार लोगस्सनो अथवा सो

ल नवकारनो कानुस्सग्ग करी पारी, प्रगट लोगस्स
 कहेवो, पवी खमासमण देइ इत्थाकारेण संदिसह न
 गवन् सज्जाय संदिसाहु ? इत्थं. खमासमण देइ इत्था
 का० सज्जाय करुं ? इत्थं कही एक नवकार गणी स
 ज्जाय. कहेवी.

॥ सज्जायना ठुटा शब्दना अर्थ ॥

रयवांडी-वनक्रीडा(रे वाडी)	परिघल-घणुं घूरे-संपूर्ण	चरचीया-चोपड्या उपशमे-मटे
पेखीयो-जोयो	समाधी-मुख	अणगार-साधु
विरतंत-हकीकत	गोरडी-स्त्री	पुढतो-पढोच्यो
अनाथी-नाथविनाना	कोरडी-कोरी	गणि-गच्छनाआधि-
निग्रंथ-मुनि	मोरडी-मारी	पति
पंथ-रस्तो	सार-संभाल	

अथ श्री अनाथी मुनिनी सज्जाय.

श्रेणिक रयवामी चढ्यो, पेखियो मुनि एकांत॥
 वररूप कांते मोहीउ, राय पूठेरे कहेने विरतंत
 ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुंरे अनाथी निग्रंथ ॥ तिणे में
 लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रेण ॥ ए आंकणी ॥ इण

(५६१)

कोसंबी नयरी वसेरै, मुज पिता परिघल धन ॥
 परिवार पूरे परिवयों, हुं हुं तेनोरे पुत्र रतन ॥ श्रे० ॥
 ॥२॥ एक दिवस मुज वेदना, उपनी ते में न खमाय ॥
 मातपिता जुरी मरे, पिण समाधि किये नवि आय ॥
 श्रे० ॥३॥ गोरमी गुण मणी नरमी, चोरमी अवला नार ॥
 कोरमी पीमा में सही, न कोणे कीधी मोरमी सार ॥
 श्रे० ॥४॥ बहु राजे वैद्य बोलावीया, कीधला क्रोम
 उपाय ॥ बावनाचंदन चरचीया, तो ए पिणरे समाधि न
 आय ॥ श्रे० ॥५॥ जगमांहि को केहनो नहिरे, ते जणी हुं
 रे अनाथ ॥ वीतरागना धर्म सारीखो, नहीं कोइ बीजो
 रे मुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥६॥ वेदना जो मुज उपशमे
 तो, लेजं संजम नार ॥ इम चिंतवतां वेदन गइ, व्रत
 लीधो में हर्ष अपार ॥ श्रे० ॥७॥ करजोमी राजा गुण
 स्तवे, धन धन एह अणगार ॥ श्रेणिक समकित पामी
 यो, वांदी पुहतोरे नगर मोजार ॥ श्रे० ॥ ८ ॥ मुनि
 अनाथी गावतां, तुटे कर्मनी कोम ॥ गणि समय सुंदर ते
 हना, पाय वंदेरे वे कर जोम ॥ श्रे० ॥ ९ ॥ इति ॥

एनो अर्थ सुगम ठे.

विधिः—पठी नवकार गणी खमासमण देइ इ
 छाका० डुरककठ कम्मरकठ निमित्तं कानुस्सग्ग करुं ?
 इहं करेमि कानुस्सग्गं, अन्नत्त० कही चार लोगस्स सं
 पूर्ण अथवा सोल नवकारनो कानुस्सग्ग करी पारी न
 मोईहत्त० कही लघुशांति कहेवी.

लघुशांतिना गाथा ? श्री ५ सुधीना ठुटा शब्दना अर्थ.

शांति—शांतिनाथने	इति—ए प्रकारे	समन्विताय—सहित
शांति—शांति	निश्चित-निश्चय करेलुं	शस्याय-प्रशंसवायोग्य
निशांत—घर	वचसे-वचनवाला	त्रैलोक्य त्रणलोके
शांत—रागद्वेष रहित	नमो—नमस्कार थाओ	पूजिताय—पूजेला
शांत—शांत पामेला	भगवते—भगवानने	देवाय—देवने
अशिवं—उपद्रव	अर्हते—योग्यने	ससमूह—समूह सहित
नमस्कृत्य—नमस्कार	पूजां—पूजाने	स्वामिक—स्वामि (ओण)
करीने	जिनाय—जिनने	सं—सम्यक् प्रकारे
स्तोतुः—स्तुतिकरनारना	जयवते जयवंतने	निजिताय—नहीं जी-
निमित्तं—हेतु	यशस्विने—जशवंतने	तायेला
मंत्र—मंत्रो (नां)	स्वामिने—नाथने	भुवन—त्रण भुवन
पदैः—पदोवडे	दमिनां—मुनिओनां	जन—लोक
शांतये—शांतिने (माटे)	सकल—सबळा	पालन—पालवामां
स्तौमि—स्तुति करुंलुं	अनिशेषक—अतिशय	उद्यततमाय—यणा मा
ॐ—रक्षण करवुं; हा.	संपत्ति—संपदा	बधान (ने)

(२६३)

सततं-नित्य
तस्मै-तेने
दुरित-पाप
ओघ-समूह
नाशन-नाश

कराय-करनारने
प्र-प्रकर्षे करी
प्रशमनाय-शमावनार
दुष्ट-दुष्ट
ग्रह-ग्रह

भूत-भूत
पिशाच-राक्षस[ओने
शाकिनीनां-शाकणी
प्रमथनाय-अत्यंत ना-
श करनार, मटाडनार

॥ अथ लघुशांतिस्तव प्रारंभ ॥

शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशि
वं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनि
मित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥
उमिति निश्चितवचसे, नमो नमो
ऋगवते ऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जि
नाय जयवते, यशस्विने स्वामिने
दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेष
कमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्या
य ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो
नमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामि
रससमूह, स्वामिकसंपूजिताय नि

विधिः—पढी नवकार गणी खमासमण देइ इ
 छाका० डुरकस्कन कम्मस्कन निमित्तं कानस्सग्ग करुं?
 इच्छं करेमि कानस्सग्गं. अन्नत्त० कही चार लोगस्स सं
 पूर्ण अथवा सोल नवकारनो कानस्सग्ग करी पारी न
 मोऽहत्त० कही लघुशांति कहेवी.

लघुशांतिना गाथा ? थी ५ सुधीना बुटा शब्दना अर्थ.

शांति—शांतिनाथने	इति—ए प्रकारे	समन्विताय—सहित
शांति—शांति	निश्चित—निश्चय करेलुं	शस्याय—प्रशंसवायोग्य
निशांत—घर	वचसे—वचनवाला	त्रैलोक्य त्रणलोके
शांत—रागद्वेष रहित	नमो—नमस्कार थाओ	पूजिताय—पूजेला
शांत—शांत पामेला	भगवते—भगवानने	देवाय—देवने
अशिवं—उपद्रव	अर्हते—योग्यने	ससमूह—समूह सहित
नमस्कृत्य—नमस्कार	पूजां—पूजाने	स्वामिक—स्वामि(ओए)
करीने	जिनाय—जिनने	सं—सम्यक् प्रकारे
स्तोतुः—स्तुतिकरनारना	जयवते जयवतने	निजिताय—नहींजी-
निमित्तं—हेतु	यशस्विने—जशवंतने	तायेला
मंत्र—मंत्रो(नां)	स्वामिने—नाथने	भुवन—त्रण भुवन
पदैः—पदोवडे	दमिनां—मुनिओनां	जन—लोक
शांतये—शांतिने(माटे)	सकल—सघळा	पालन—पालवामां
स्तौमि—स्तुति करुंछुं	अतिशेपक—अतिशय	उद्यततमाय—घणा सा
ॐ—रक्षण करवुं; हा.	संपत्ति—संपदा	वधान(ने)

सततं-नित्य
तस्मै-तेने
दुरित-पाप
ओघ-समूह
नाशन-नाश

कराय-करनारने
प्र-प्रकर्षे करी
प्रशमनाय-शमावनार
दुष्ट-दुष्ट
ग्रह-ग्रह

भूत-भूत
पिशाच-राक्षस[ओने
शाकिनीनां-शाकणी
प्रमथनाय-अत्यंत ना-
श करनार, मटाडनार

॥ अथ लघुशांतिस्तव प्रारंभ ॥

शांतिंशांतिनिशांतं, शांतं शांताशि
वं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनि
मित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि॥१॥
उमिति निश्चितवचसे, नमो नमो
ऋगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जि
नाय जयवते, यशस्विने स्वामिने
दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेष
कमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्या
य ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो
नमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वाम
रससमूह, स्वामिकसंपूजिताय नि

जिताय ॥ ज्ञुवनजनपालनोद्यत, त
 माय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्व
 दुस्तौघनाशन, कराय सर्वाऽशिव
 प्रशमनाय ॥ दुष्टग्रहज्जुतपिशाच,
 शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥

अर्थः—शांतिं शांतिनिशांतं के० शांतिना घर
 अथवा स्थानक रूप एवा तथा रागद्वेष रहित एवा, व
 ली अरिष्ट उपद्रवो जेनाथी उपशमने पाम्या ठे एवा,
 श्रीशांति जिन प्रत्ये नमस्कार करीने, स्तुतिना करना
 रने शांतिना हेतु एवा शांतिनाथने अक्षर गर्जित मंत्रो
 नां पदोये करीने उपसर्गनी शांतिने माटे स्तुति करुं ठुं.

उमिति के० रक्षण करे ठे तेने नुँ कहीए अने
 नुँ एटले परम ज्योति ए रीते निश्चित वचनवाला एवा
 अने पूजाने योग्य एवा जगवंत वली जेने रागादि परा
 जव करी शकता नथी माटे जयवंत, वली प्रसिद्ध ज
 श ठे जेमनो माटे यशस्वी एवा, वली दमिनां के० इं
 दियोने दमी ठे वश करी ठे जेमणे एवा जे मुनिउ,

તેમના સ્વામિને કે० નાયક એવા શ્રીશાંતિનાથને નમસ્કાર થાનું, નમસ્કાર થાનું. ॥ ૨ ॥

સકલાતિશેષક કે० સમસ્ત ચોત્રીસ અતિશય રૂપ મોટી સંપદાએ કરીને સહિત એવા તથા વચ્ચા એવા યોગ્ય એવા, વલી સ્વર્ગ મૃત્યુ અને પાતાલ રૂપ ત્રણ લોક તેણે પૂજિત એવા શ્રી શાંતિદેવ પ્રત્યે નમસ્કાર થાનું. ॥ ૩ ॥

સર્વામર સસમૂહ કે० સપરિવાર એવા સર્વ દેવતાના સ્વામી જે ચોસઠ ઈંડો છે, તેમણે સમ્યક્ પ્રકારે પૂજેલા તથા કોઈથી નહીં જીતાયેલા એવા તથા ત્રણ જીવનના લોકોનું પાલન કરવાને અત્યંત સાવધાન એવા તે શાંતિનાથજીને નિરંતર મારો નમસ્કાર થાનું. ॥૪॥

સર્વ દુરિતોઘનાશન કે० સર્વ પાપનો જે સમૂહ તેનો નાશ કરનાર, વલી સર્વ ઉપડવને શમાવનાર, વલી આકરા એવા જે ગ્રહ, જૂત, રાક્ષસ તથા શાકિની એ સર્વ(થી થતા ઉપડવો)ને પ્રમથનાય એટલે અતિશે નાશ કરનાર છે અર્થાત્ મટામનાર છે, તેમને નમસ્કાર થાનું. ॥ ૫ ॥

॥ गाथा ६ श्री १० सुधी बुटा शब्दना अर्थ ॥

यस्य-जेनुं	अजिते-नहीं जीताय	निर्वाण-मोक्ष
इति-ए रीति	एवी	जननि-करनारी
नाममंत्र-नामरूपी मंत्र	अपराजिते-हे देवी	सत्त्वानां-भव्यजीवोने
प्रधान-उत्तम	जगत्यां-जगतमां	अभय-निर्भयपणुं
वाक्य-वचन	जयावहे-हे जयावहा	प्रदान-अतिशे देवुं
उपयोग-यादी	भवाते-हे तमे	निरते-तत्पर
कृत-करेलो	सर्वस्य-सर्वने	स्वस्ति-कल्याण
तोषा-संतोष	अपि-पण	तुभ्यं-तने
विजया-विजयादेवी	संघस्य-संघने	भक्तानां-भक्तोने
कुरुते-करे छे	भद्र-सुख	जंतूनां जीवोने
हितं-सुखने	प्रददे-हे देनारी	शुभावहे-शुभ पमाह-
नुता-स्तवेली	सु-सारी	नारने
नमत-नमो	तुष्टि-शांति	नित्यं-हमेशां
भवतु-थाओ	पुष्टि-पुष्टि	उद्यते-सावधान
नमः-नमस्कार	प्रदे-देनारी	सम्यग्दृष्टि-समाकित
ते-तने	जीयाः-तुं जयवंती हो	दृष्टिओने
विजये-हे विजया	भव्यानां-भव्योने	धृति-धीरज
सुजये-हे सुजया	कृत-करी छे	रति-प्रीति
पर-मोटा	सिद्धे-सिद्धि जेणे	प्रदानाय-आपवाने
अपर-बीजा देवोए	निवृत्ति-चित्त समाधि	

(३६७)

यस्येति नाममंत्र, प्रधानवाक्योप
योगकृततोषा ॥ विजया कुरुते जन
हित, मिति च नुता नमत तं शां
तिं ॥ ६ ॥ न्नवतु नमस्ते न्नगव
ति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥
अपराजिते जगत्यां, जयतीति
जयावहे न्नवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि
च संघस्य, न्नङ्कल्याणमंगलप्र
ददे ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतु
ष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ न्नव्या
नां कृतसिद्धे, निवृत्तिनिर्वाणज
ननि सत्त्वानां ॥ अन्नयप्रदाननि
रते, नमोऽस्तु स्वस्ति प्रदे तुभ्यं
॥ ९ ॥ न्नक्तानां जंतूनां, शुक्तावहे
नित्यमुद्यते देवि ॥ सम्यग् दृष्टीना

(२६८)

धृति, रतिमतिबुद्धिप्रदानाय. ॥१०॥

अर्थः—यस्येतिनाम मंत्र के० हे जगव्यजनो ! त
मे ते शांतिजिनने प्रणाम करो. क्या शांतिजिन ?
तो के जे शांतिजिननो ए पूर्वोक्त नाम रूप महा मंत्र
तेणे करीने सर्वोत्तम पवित्र एवं जे वचन तेना उप
योग एटले यादीवने करीने जेणे चितने विषे संतोष
क्यों ठे, एवी विजया नामे जे देवी ठे, ते शांतिजि
ननुं स्मरण करनारा मनुष्यनुं हित करे ठे. वली ते
विजयादेवी केवी ठे ? तो के पूर्वे कहेला प्रकारे करी
ने शांतिनाथने नमेली ठे. स्तुति करेली ठे. ॥ ६ ॥

जगवतु नमस्ते जगवति के० हे जगवति ! वि
जयोदवि ! सुजयोदेवि ! मोटा एवा बीजादेवोए नहीं
जीतायेली एवी अजिता देवि ! तथा कोइ ठेकाणे प
राजव नहीं पामेली एवी हे अपराजिता देवि ! पृथ्वी
ने विषे जयवंति वर्त्तो. एम स्तुति करनारने जयनी
लावनारी हे दरेक देवी ? तमने नमस्कार आन ॥७॥

सर्वस्यापि च संघस्य के० चतुर्विध एवा सर्व

(१६९)

पण संघने सुख, कल्याण तथा मंगलने आपनार हे देवि ! वली मुनिजने सदा निरुपड्वपणुं, सारी चित्तनी शांति तथा धर्मनी वृद्धिने देनारी एवी हे देवि ! तुं जयवंती हो. ॥ ८ ॥

जग्यानां कृत सिद्धे के० जग्य जीवोने सर्व कार्योंनी निर्विघ्नपणे सिद्धि करी आपी ठे जेणे एवी, वली सत्त्वानां के० जग्य प्राणीजने चित्त समाधि तथा मोक्षने उत्पन्न करनारी तथा अजयपणुं देवाने विषे तत्पर एवी तथा कल्याणने देनारी एवी, ए सर्व गुण युक्त हे देवि ! तने नमस्कार हो. ॥ ९ ॥

जक्तानां जंतूनां के० जक्तिवंत एवा जीवोने सर्व प्रकारे शुद्धनी आपनारी, तथा वली सम्यक् दृष्टि जीवोने संतोष, प्रीति, मतिके० जविष्यकालने जाणनारी बुद्धि, तथा बुद्धि के० वर्तमानकालना विषयने जाणनारी बुद्धि, ते प्रत्ये अतिशयपणे देवाने निरंतर सावधान, हे देवि ! तमे गो. ॥ १० ॥

(२७०)

॥ गाथा ११ थी १४ सुधी बुटा शब्दना अर्थ ॥

निरतानां-रागवंत	अनल-अग्नि	श्वापद-शीकारी पशु
नतानां नमेलाने	विषधर-सर्प	आदिभ्यः-वगेरेथी
जगति-जगतमां [योने	दुष्ट-माठा	अथ-हवे
जनतानां-जनसमुदा-	ग्रह-ग्रह	रक्ष-रक्षण कर
श्री-लक्ष्मी	राज-राजा	सु-अतिशय
संपत्-ऋद्धि	रण-संग्राम	शिवं-कल्याण
कीर्त्ति-कीर्त्ति	भयतः-भयथी	कुरु-कर
यश-जश	रिपु-वैरी	सदेति-सदा एम
वर्द्धनि-वधारनार	गण-समूह	गुणवति-गुणवाली
विजयस्व-विजयपामो	मारी-मरकी	स्वस्ति-क्षेम
सलिल-पाणी	चौर-चोर	इह-अहींआं

जिनशासननिरतानां, शांतिनता
नां च जगति जनतानाम् ॥ श्री
संपत्कीर्त्तियशो, वर्द्धनि जय देवि
विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल
विषविषधर, दुष्टग्रहराजरोगरण
जयतः ॥ राक्षसरिपुगणमारी, चौ
रेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ

(२७१)

रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांतिं
च कुरु कुरु सदेति॥ तुष्टिं कुरु कुरु
पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु
त्वं॥१३॥ जगवति गुणवति शिव
शां, तितुष्टिपुष्टिस्वस्तीह कुरु कुरु
जनानां॥ नमिति नमोनमो ज्ञाँ, ज्ञी,
ज्ञँ ज्ञः यः क्षः क्षीं फुट् फुट् स्वाहा॥

अर्थः—जिनशासन के० श्रीवीतरागना शासने
विषे रागवंत एवा, वली श्री शांतिनाथने नमेला ए
वा, जगतने विषे जे जनसमुदायो ठे, तेमने लक्ष्मी,
रुद्रिविस्तार, एक दिशा व्यापि कीर्त्ति अने सर्व दिशा
व्यापि जश, तेने वधारनारी एवी हे जयानामा देवि !
तुं जय पाम, विजय पाम. ॥ ११ ॥

सलिलानलविषविषधर के० पाणीना, अग्निना,
जेरना, सर्पना, कठण ग्रहना, दुष्ट राजाना, रोगना
अने रण संग्रामना, ए सर्व जयथी रक्षण कर, रक्ष
ण कर, वली राक्षस, शत्रुना समूह, मरकी

व, चोरना, सात ईतिना जय, हाथी, सिंहादि दुष्ट जीवो, वगेरे सर्वना जयथी रक्षण कर, रक्षण कर.

अथ रक्षरक्ष सुशिवं के० ए उपर कहेला एवा जयथकी हे विजया माता ! तुं रक्षण कर, रक्षण कर. वली रुमा एवा निरुपड्वपणाने कर वली निरंतर शांतिने कर कर. ए प्रकारे वली संतोषपणाने कर कर, तथा पुष्टि एटले शरीरनी पुष्टि कर कर, तथा कढ्याण प्रत्ये कर कर. ॥ १३ ॥

जगवति के० हे जगवति ! हे गुणवति ! एवी हे देवि ! तुं आ पृथ्वीने विषे सर्व लोकोने, कढ्याण, रोगनी शांति, मननो संतोष, शरिरादिकनी वृद्धि, दृढपणुं, हेम ते कढ्याण, तेने आ जगतने विषे कर, कर. हवे मंत्राकरे करीने विजयादेविने स्तवेठे. ज्योतिः स्वरूपिणी एवी हे देवी ! तने नमस्कार थाउं; तथा ॐ ॐ ॐ ॐ यः कः ॐ फुट् फुट् स्वाहा, ए प्रकारना मंत्र स्वरूपिणी एवी हे देवि ! तने नमस्कार थाउं. अहीं फुट् फुट् ए जे शब्द लख्या ठे ते विघ्नना शक मंत्राकर ठे अने आ ॐ ॐ इत्यादि अकरो जे ठे ते शांतिनो मूलमंत्र जाणवो. ॥ १४ ॥

(१७३)

॥ गाथा १५ श्री १९ सुधी तुटा शब्दना अर्थ ॥

यत्-जेना	आदि-वगेरे	पदं-ठेकाणुं
नामाक्षर-नामाक्षरमंत्र	भय-वीक	यायात्-पामे
पुरस्सरं-पूर्वक	विनाशी-नाशकरनार	मानदेवः-मानदेव(ना
संस्तुता-स्तवेली	करः-करनारो	म छे)
नमतां-नमताने	भक्तिमतां-भक्ताने	हृपसर्गाः-कष्टो
निमित्तं-हेतुने	यः-जे	क्षयं-नाशने
शांतये-शांतिनायने	एनं-एने	यांति-पामे छे
तस्मै-तेने	पठति-भणे छे	च्छिद्यंते-छेदाय छे
पूर्व-पेहेलांना	बृणोति-सांभले छे	विघ्न-अहचण
सूरि-आचार्य	भावयति-भावे छे	वल्लयः-वेलीयो
दर्शित-वतावेला	वा-अथवा	मनः-मन
विदर्भितः-रचेलो	यथायोगम्-योगने	प्रसन्नता-प्रसन्नपणाने
स्तवः-स्तोत्र	नही ओलंघीने	एति-पामे छे
शांतेः-शांतिनाथनो	हि-निश्चे	पूज्यमाने-पूजे छेने
	शांति-शांतिनुं	

एवं यन्नामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता
जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां,
(पाठांतरे कुरुते शांति निमित्तं) न
मोनमः शांतये तस्मै ॥१५॥ इति
पूर्वसूरिदर्शित, मंत्रपदविदर्भितः

(१७४)

स्तवः शान्तेः ॥ सलिलादिजयवि
नाशी, शान्त्यादिकरश्च नक्तिमता
म् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा,
शृणोति ज्ञावयति वा यथायोगं
॥ स हि शान्तिपदं यायात्, (पा
ठांतरे शिवशान्तिपदं यायात्) सू
रिश्चीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपस
र्गाः क्षयं यांति, ह्रियन्ते विघ्नव
द्भयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्य
माने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगल
मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणं ॥
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति
शासनं ॥ १९ ॥

एवं यन्नामाक्षर के० ते शान्तिनाथने फरी फरी
नमस्कार थाउ, ते कया शान्तिनाथने? तो के ए पूर्वोक्त
प्रकारे जेना नामाक्षरमंत्र पूर्वक स्तुति करेली एवी

જયાનામા દેવી, તે શાંતિનાથ પ્રત્યે નમસ્કાર કરના-
રા જીવ્ય જીવોને શાંતિ કરે છે. પાઠાંતરે શાંતિ જે
સર્વોપદ્રવ નિવૃત્તિ રૂપ તેના હેતુને ઉત્પન્ન કરે છે. ॥૧૫॥

અર્થ:-इति पूर्वसूरिदर्शित के० ए श्रीशांतिनाथ
जीनुं स्तव अथवा स्तोत्र जक्तिमान प्राणीजने समुद्र,
वगेरे प्राणीना जय, दुष्ट दार्थी, सिद्ध, संग्राम, शत्रु,
चोर, शाकिनी, जूत, प्रेत, पिशाच, रोग, शोकादिक
एवा जयनुं विनाश करनारुं, वली शांति, सुख, सौ
भाग्य, रुद्धि, वृद्धि कल्याण अने जय ए सर्वने करना
रुं आनु. वली ते केवुं ठे ? तो के आ प्रकारे पूर्वाचार्ये
उपदेश करेलां एवां मंत्र पदवसे रचेलुं ठे. ॥ १६ ॥

यश्चैनं पठति सदा के० जे पुरुष योगને ડલંઘન
નહીં કરીને આ સ્તોત્રને હમેશાં જણે, સાંજળે અથવા
જાવે તો તે નિશ્ચે શાંતિના સ્થાન પ્રત્યે પામે. વલી શ્રી
માનદેવસૂરિ પણ શાંતિ પદને પામે આ પદે કરીને
સ્તોત્ર કર્તાં પોતાનું નામ પણ સૂચવ્યું છે પાઠાંતરે
શીવશાંતિપદં યાયાતુ કે० શિવ જે કલ્યાણ, શાંતિ જે
સર્વોપદ્રવ વગેરેની નિવૃત્તિ તેનું સ્થાનક પામે. ॥૧૭॥

(२७६)

उपगर्गाः कथं यांति के० श्रीजिनेश्वरने पूजे ठते
देवादिकृत उपसर्गो नाश पामे ठे, अने विघ्ननी वेलो
ते ठेदाय ठे; तथा मन प्रसन्नताने पामे ठे. ॥ १८ ॥

सर्व मंगल मांगल्यं के० सर्व मंगल मांहे मांग
लिक तथा सर्व कल्याणनुं कारण, तथा सर्व धर्मोमां
प्रधान एवं जिन शासन जयवतुं वर्त्ते ठे. ॥ १९ ॥
॥ इति शांतिना अर्थ ॥

विधिः—पढी लोगस्स कही खमासमणुं देइ
इरियावही, तस्सनुत्तरी अन्नठण कही, एक लोगस्स
अथवा चार नवकारनो कानुस्सग्ग करी पारी प्रगट
लोगस्स कहेवो. पढी चउक्कसाय कहेवा.

॥ चउक्कसायना ठुटा शब्दना अर्थ ॥

पढिमल्ल-वेरी	गय-हाथी	कंति-कांति
उल्लूरणुं-उछेदनार	गामिउ-गतिवाला	कडप्प-समूह
दुज्झय-दुर्जय	जयउ-जय पामो	सिणिद्धउ-स्निग्ध
मयण-मदन (ना)	पासु-पार्श्वनाथ	सोहइ-शोभे ठे
बाण-बाण	भुवण-भुवन	फणि-फेणनुं
मुसुमूरणुं-भागनार	त्तय-त्रण	मणि-मणि (रत्न)
सरस-रसवालो	सामिउ-स्वाधी	आलिद्धउ-सीहित
पिअंशु-रायण	जमु-जेना	नं-प्रशंसनीय
वन्नु-वर्ण, रंग	तणु-शरीर	नव-नवो

(२७७)

जलहर-मेघ
तडित्त-विजली
लय-लता

लंछित-सहित
सो-ते
जिणु-जिन

पासु-पार्श्व
पयच्छउ-आपो
वंछित-वांछित

॥ अथ चञ्कसाय ॥

चञ्कसाय पन्निमल्लुल्लूराणु, डुव
यमयणवाणमुसुमूराणु ॥ सरस
पिअंगु वन्नु गयगामिन्, जयन्
पासु जुवणत्तय सामिन् ॥ १ ॥
जसु तणु कंति कमप्प सिणिद्ध
न्, सोहइफणिमणि किरणादिद्ध
न् ॥ नं नवजलहर तन्निमल्लयलं
ठिन्, सो जीणु पासु पयच्छउ
वंठिन् ॥ २ ॥ इति ॥

अर्थः—चञ्कसाय पन्निमल्लुल्लूराणु केण त्रण जु
वनना स्वामी श्रीपार्श्वनाथ जयवन्ता वन्तो ते पार्श्व
नाथ केवा ठे तो के चार कपाय रूप वेरीना उठेदना

ઠે, તથા હુલે જીતાય એવો મદન જે કામદેવ તેના
 બાણને જાગનાર ઠે, તથા રસવાલો લીલો એવો રાય
 ણનો વૃહ તેના જેવા વર્ણવાલા ઠે. તથા હાથીના જે
 વી ગતિ વાલા ઠે. ॥ ૧ ॥

અર્થ:-જસુ તણુ કંતિ કેળ જેના શરીરની કાં
 તિનો સમૂહ ચીકાશ સહિત ઠે તેવા પાર્શ્વજિન મહારા
 વાંઠિત પ્રત્યે આપો, તે કેવા ઠે? તો કેનાગેંડની ફણી
 ડપરના મણી રત્ન તેના કિરણોએ કરી સહિત ઠે;
 તથા નવામેઘની વિજલીની લતાએ લંઘિત એવા ઠે. ॥૧॥

વિધિ:-નમુહુણં જાવંતિ વે કહી નવસગ્ગહરં,
 જયવીયરાય કહી મુહપત્તી પમિલેહવી પઠી સ્વમાસ
 મણ દેશ્ શ્ચાં સામાયક પારું, યશ્ચાશક્તિ; પઠી સ્વમા
 સમણ દેશ્ શ્ચાં. સામાયિક પાર્યું, તદ્વત્તિ કહી, જમ
 ણો હાથ ડપધી ડપર આપી એક નવકાર ગણીને સા
 માશ્ચવયજુત્તો કહેવો. પઠી આપના હોય તો એક
 નવકાર ગણી બઠે એ દેવસિ પ્રતિક્રમણનો વિધિ ક
 હ્યો. બાકી અંતર વિધિ વમેરાથી સમજવો.

॥ अथ राक्षपनिक्रमण प्रारंभ ॥

विधिः—प्रथम पूर्ववती रीते सामायिक लक्ष्यावत् सङ्काय करुं एवो आदेश मागी त्रण नवकार गणीए त्यां सुधी कहेवुं, पढी इच्छा० कही कुसुमिण दुसुमिण उद्भावणार्थं राक्षप्रायश्चित्तविसोहणहं कानुस्सग्ग करुं ? इहं, करेमि कानुस्सग्गं कही जो खराव स्वप्न आव्युं होय तो चार लोगस्सनो कानुस्सग्ग सागरवर गंज्जीरा सुधी करवो, नहीं तो चंदेसु निम्मत्तयरा सुधी करवो; पढी कानुस्सग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स कही एक खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह जगवन् चैत्यवंदन करुं एम कही जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन कहे.

॥ अथ जगचिंतामणिना ठुटा शब्दना अर्थ ॥

जग-जगत	अट्ठावय-अष्टापद	अप्पडिहय-हणाय न
नाह-नाथ	संठविय-स्थापेलां	हीं तेहुं
रखखण-रखवाल	रूप-रूप, प्रतिमा.	सासन-शासन
बंधव-भाइ	कम्मठ-आठ कर्म	संघयणि-संघयण
सद्धदाह-सार्थदाह	विणासन-नाश कर	उक्कोसय-उत्कृष्ट पद
विअरुखण-विचक्षण,	नार	सत्तरि-सीत्तर
हाहा	जयंतु-जयवंता वत्तो	सय-सो

जिणवराण-जिनव	रिसह-ऋषभ	केवि-कोइ पण
रोना	सचुंजि-शेत्रुंजय उपर	तीअ-अतीतकाल
विहरंत-विचारता	पहु-प्रभु	अणागय-अनागत
लप्भइ-लाभे	नेमि-नेमिनाथ	सत्ताणवइ-सताणुं
कोडि-क्रोड	सच्चउरी-सत्यपुरी	लख्खा-लाख
केवालण-केवल ज्ञा	महण-आभूषण	छप्पन्न-छप्पन
नीओनी	भरुअच्छहिं-भरुच	वत्तीस-वत्तीसैं
सहस्स-हजार	नगरमां	वासिआइं-व्याशी
गम्मइ-जाणिये	मुहारि-मुहरि (गाम)	चेइए-चैत्योने
मुणि-मुनि	दुह-दुख	पनरस-पन्नर
विहुं-वे	दुरिय-पाप	सयाइं-सेकडा
समणह-साधु	खंडण-नाश करनार	वायाल-वेंतालीस
दुअ-वे	अवर-बीजा	अडवन्ना-अट्टावन
थुणिजिअ-स्तविये	विदेहिं-महाविदेहमां	असिई-एंशी
निच्च-नित्य	चिहुं-चारे	सासय-शाश्वतां
विहाणि-वहाणामां	दिसि-दिशाओमां	पणमामि-प्रणमुं लुं
साधी-स्वामी	जिं-जे	

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

इच्छाकारेण संदिसह जगवन् चै
त्यवंदन करुं ॥ इच्छं ॥ जग चिं
तामणि जगनाह, जगगुरु जगर

(१७१)

स्फण॥ जगबंधव जगसन्धवाह, ज
गन्नावविअस्फण ॥ अघावय सं
ठविय, रूव कम्मठ विणासण ॥
चउवीसंपि जिणवर, जयंतु अ
प्पमिहयसासण ॥ १ ॥ कम्मजू
मिहिं कम्मजूमिहिं ॥ पढम संघ
यणि ॥ उक्कोसय सत्तरि सय ॥
जिणवराण विहरंत लप्पइ ॥ नव
कोमिहिंकेवल्लिण ॥ कोमि सह
स्स नवसाहु गम्मइ ॥ संपइजिण
वर वीसमुणि ॥ बिहुं कोमिहिं
वरणाण ॥ समणह कोमिसहस
उअ ॥ थुणिजिअ निच्चविहाणि
॥ २ ॥ जयउ सामी जयउ सामी
॥ रिसह सत्तुंजि ॥ उज्झित पहु ने
मिजिण ॥ जयउ वीर सच्चरि

(१८१)

मंमण ॥ नरुअच्छहिं मुणिसुवय ॥
 मुहरि पास डुह डुरिअ खंमण ॥
 अवरविदेहिं तिन्नयरा ॥ चिहुंदिसि
 विदिसि जिं केवि ॥ तीआणागय
 संपइअ, वंडु जिणसवेवि ॥ ३ ॥

सत्ताणवइ सहस्सा, लस्का ठप्पन्न
 अठ कोमील ॥ बत्तीस बासिआ
 इं ॥ पाठांतरं ॥ बत्तीसय बासि
 आइं, तिअ लोए वेइए वंदे ॥ प
 नरस कोमि सयाइं, कोमी बायाल
 लस्कअमवन्ना ॥ ठत्तीस सहस अ
 सिई ॥ पाठांतरं ॥ असिआइं,
 सासयबिंबाइं पणमामि ॥ ४ ॥ इति ॥

अर्थः—इच्छा करेण केण इच्छाए करीने हे जगवन्
 चैत्यवंदन करवानो आदेश आपो. इत्थं केण प्रमाण. ज
 गचिंतामणि केण श्रीवीतराग देव केवा ठे ? तो के

જવ્યજીવોને ચિંતામણિ રત્નસમાન મનોરથ પૂરનાર
 છે, વલી નિકટ જવ્ય જીવોના નાથ છે, વલી સઘલા
 લોકમાં મોટા છે, વલી ઠ જીવ નિકાયના રક્ષક છે, વલી
 સર્વ જીવોના જાણની પેરે જાણ છે, વલી મોહાન્નિલા
 પી જીવોના મોટા સાર્થવાહ છે, વલી ષટ્ દ્રવ્ય તથા
 જીવાદિક નવ પદાર્થના જાવ દર્શાવવાને વિચક્ષણ છે,
 માહ્યા છે; વલી અષ્ટાપદ પર્વતની ઉપર ઋરતેશ્વરે સ્થા
 પ્યાં છે વિંબ જેમનાં, વલી આઠ કર્મોનો વિનાશ કીધો
 છે જેમણે, કોઈથી હણાય રોકાય નહીં એવું જેમનું શા
 સન છે, એવા ચોવીશ જિનવર નિશ્ચે જયવંતા વર્તો. ॥૧૧॥

કર્મજૂમિહિં કર્મજૂમિહિં કેળ અસિ, મપી, અ
 ને કૃષિ રૂપ કર્મ વરુ કરી જ્યાં આજિવીકા ચાલે
 છે, તેને કર્મજૂમિકા કહીએ. તે કર્મજૂમિનાં પંદર ક્ષેત્ર
 ને વિષે પ્રથમ સંઘયણ જે વજ્રરૂપજ્ઞનારાચ તેના ધ
 ણી એવા ઉત્કૃષ્ટપદે સપ્તતિશત એટલે એકસોને સીત્તેર
 તીર્થકરોનો સમુદાય વિચરતો લાન્ને, તે શ્રી અજિતના
 ધને વારે એટલા લાન્ને, વલી કેવલજ્ઞાની જગવાનની
 નવકોટિ હોય તથા નવ સહસ્ર કોમી સાધુ જિનાગ

મશી જાણીયે અને વર્તમાનકાલે વીશ જિનવર વિચરતા પામીએ, તથા બે કોમુ મુનિ પ્રધાન કેવલજ્ઞાનના ધરનાર, વલી બે સહસ્ત્ર કોમિ સાધુ વિચરે છે, તે સર્વ ને નિત્યે પ્રજ્ઞાતે થુણીયે સ્તવિયે. ॥ ૨ ॥

જયન્ત સામી જયન્ત સામી કેળ શ્રી શત્રુંજય તીર્થ ઉપર શ્રી રૂપન્ન સ્વામી જયવંતા વર્તો, વલી શ્રી ગિરનારજી ઉપર પ્રજ્ઞુ શ્રી નેમિજિનેશ્વર સ્વામી જયવંતા વર્તો, વલી સત્યપુરી એટલે સાચોર નગરના આઝૂષણ રૂપ શ્રી મહાવીર સ્વામી જયવંતા વર્તો, વલી જ્ઞરૂચ નગરને વિષે શ્રી મુનિસુવ્રત સ્વામી, અને મુદ્ધરિ ગામના નાયક શ્રી પાર્શ્વનાથ; એ જિન પંચક કેવું છે ? તો કે દુઃખ અને પાપનું વિનાશ કરનારું છે. વીજાં પાંચ મહા વિદેહને વિષે જે તીર્થકર છે, ચાર દિશિ અને ચાર વિદિશિને વિષે જે કોઈ પણ અતીત અનાગત અને વર્તમાન કાલ સંબંધી સર્વે જિનેશ્વર, તે પ્રત્યે પણ હું વાંડું તું. ॥ ૩ ॥

સતાણવશ સહસ્તા કેળ આઠ ક્રોમ ઠપ્પન લાઘ સત્તાણું હજાર વત્રીસેને વ્યાશી, એટલાં ત્રણ લોક

ने विषे जिन प्रासाद ठे, ते सर्व प्रत्ये हुं वांडुं हुं॥४॥

पनरस कोरि सयाइ केण पंदर अबज बैतालीस
कोरि, अठावन लाख ठत्रीश हजार अने उपर एंशी
(१५४१५८३६०८०) एटला पूर्वोक्त जिन प्रासादने विषे
शाश्वतां जिन विंव ठे. ते सर्व प्रत्ये हुं प्रणमुं हुं. ॥५॥

विधिःपढी जंकिचि, नमुहुणं कही, जावंति बे
कही, नवसगहरं कही, जयवीयराय केहेवा; पढी
चार खमासमण देइ जगवान्, आचार्य, नपाध्याय अ
ने सर्व साधुने वांदवा; पढी खमासमण देइ इच्छाण स
ज्जाय संदिसाहु, इच्छं. पढी खमासमण देइ इच्छाण स
ज्जाय करुं; एम कही एक नवकार गणी नरहेस
रनी सज्जाय केहवी.

॥ अथ नरहेसरनी सज्जायना बुटा शब्दना अर्थ ॥

भरहेसर-भरतेश्वर	कापुत्र	नंदिसेण-नंदिपेण
बाहुवली-बाहुवल	अइमुत्तो-अतिमुक्त	सीहगिरी-सिंहगिरि
कुमारो-कुमार	नागदत्तो-नागदत्त	कयवन्नो-कृतवर्णकु
सिरिओ-श्रीयक, स	मेअज्ज-मेतार्यमुनि	मार
रैओ	धूलिभदो-धूलिभद्र	पुंडरिओ-पुंडरिकजी
अणियाउत्तो-अनि	वयररिसी-वज्ररूप	केसि-केशिकुमार

हल्ल-हल्यकुमार	उदायगो-उदायी	मूह
विहल्ल-विहल्यकुमार	राजा	विलय-विनाश
सुदंसण-सुदर्शनशेठ	मणगो-मनकपुत्र	जंति-पामे छे
सालिभदो-शालिभद्र	कालयसूरि-कालका	मणोरमा-मनोरमा
भदो-भद्रबाहु साभी	चार्य	मयणरेहा-मदनरेखा
दसन्नभदो-दशार्णभद्र	संवो-सांवकुमार	नमया-नर्मदा
पसन्नचंदो-प्रसन्नचंद्र	पज्जुनो-प्रद्युन्नकु	सीया-सीता
राजर्षि	मार	नंदा-नंदा
जसभदो-यशोभद्रसूरि	मूलदेवो-मूलदेवराजा	भदा-भद्रा
जंबुपहु-जंबुप्रभुस्वामी	पभवो-प्रभव स्वामी	सुभदा-सुभद्रा
वंकचूलो-वंकचूल	विन्हु-विष्णु	रायमइ-राजेमति
सुकुमालो-सुकुमार	अइ-आर्द्र	रिसिदत्ता-ऋषिदत्ता
धन्नो-धन्नाशा	दढप्पहारी-द्रढप्रहारी	पऊमावइ-पन्नावती
इलाइ-इलाची	सिज्जंस-श्रेयांसकुमार	अंजणा-अंजना
पुत्तो-पुत्र	मेह-मेध	सिरीदेवी-श्रीदेवी
चिलाइ-चिलाती	एमाइ-इत्यादि	जिठ्ठ-ज्येष्ठा
वाहुमुणि-युगवाहु	महा-मोटा	सुजिठ्ठ-सुज्येष्ठा
मुनि	सत्ता-सता	मिगावइ-मृगावती
अज्ज-आर्य	सुहँ-शुभ, सुख	पभावइ-प्रभावती
गिरि-महागिरि	गणेहिं-समूहवडे	चिल्लणा-चेलणा
रखिखअ-रक्षित	गहणे-ग्रहणकरवायी	वंभी-वाह्नी
सुहस्थी-सुहस्ती	पावपवंधा-पापना स	सुंदरी-सुंदरी

रुप्पिणि-रुक्मिणि	सच्चभामा-सत्यभामा	सइओ-सतीओ
रेवइ-रेवती	कन्ह-श्रीकृष्ण	अकलंक-निर्मल
सिवा-शिवा	अट्ट-आठ	सील-शीयल
देवइ-देवकी	महिर्सीओ-पटराणी	कलिआओ-सहीत
दोवइ-द्रौपदी	ओ	अज्जवि-आजपण
कलावई-कलावती	जरुखा-जक्षा	वज्जइ-वाजे छे
पुप्फचूला-पुष्पचूला	जरुखदिन्ना-यक्षादिन्ना	जासि-जेमनो
गोरी-गौरी	भूआ-भूता	जस-जश
गंधारी-गांधारी	भूआदिन्ना-भूतदिन्ना	पडहो-ढोल
लरुखमणा-लक्ष्मणा	भयणीओ-वेनो	तिहूअणे-त्रणभुवने
जंबुवइ-जंबुवती	इच्चाइ-इत्यादि	सयले-सकल

॥ अथ नरहेसरनी सज्जाय. ॥

नरहेसर बाहुबली, अन्नय कुमा
रो अ ठंढणकुमारो ॥ सिरिठ
अणियाउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो
अ ॥ १ ॥ मेअज्ज यूद्धिज्जदो, व
यररिसी नंदिसेण सीहगिरी ॥
कयवन्नो अ सुकोसल, पुंमरिठके
सि करकंरु ॥ २ ॥ हह्व विहह्व

सुंदसण, साल महासाल सालि
 जहो अ ॥ जहो दसनजहो, पस
 नचंदो अ जसजहो ॥ ३ ॥ जंबु
 पहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अ
 वांतसुकुमालो ॥ धनो इलाइपुत्तो
 चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी ॥ ४ ॥
 अऊगिरि अऊरखिअ, अऊ
 सुहवी उदायगो मणगो ॥ कालय
 सूरि संबो, पऊनो मूलदेवो अ
 ॥ ५ ॥ पऊवो विन्दुकुमारो, अह
 कुमारो अ दहप्पहारी अ ॥
 सिऊंस कूरगळूअ, सिऊंनव मे
 हकुमारो अ ॥ ६ ॥ एमाइ महा
 सत्ता दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजु
 ता जोसिं नामगहणे, पावपबंधा
 विलय जंति ॥ ७ ॥ सुखसा चंद

(३७७)

नवाला, मणोरमा मयणरेहा दम
यंती ॥ नमयासुंदरी सीया, नंदा
नदा सुनदा य ॥ ७ ॥ रायमई
रिसिदत्ता, पञ्मावई अंजणा सि
री देवी ॥ जिठ सुजिठ मिगाव
ई, पञ्मावई चिह्ना देवी ॥ ८ ॥
बंजी सुंदरी रुपिणि, रेवई कुंती
सिवा जयंती य ॥ देवई दोवई
धारणी, कलावई पुष्पचूला या ॥ ९ ॥
पञ्मावई य गौरी, गंधारी ल
स्कमणा सुसीमा य ॥ जंबुवई स
चन्नामा, रुपिणि कन्हठमहिंसीन
॥ १० ॥ जस्का य जस्कादिन्ना, नूत्रा
तह चैव नूत्रादिन्ना य ॥ सेणा वे
णा रेणा, नयणीन थूलिजदस्स

(१६०)

॥ १२ ॥ इच्छा इ महासंज्ञ, जयंति
अकलंकसील कलिआण ॥ अ
ऊवि वज्जइ जासिं, जस पमहो ति
हुअणे सयले ॥ १३ ॥ इति नर
हेसरनी सजाय ॥

अर्थ:-नरहेसर बाहुवली के० श्री नरतेश्वर पेहेला
चक्रवर्ती श्री रुषनदेवना पुत्र, बीजा बाहुवली ते पण
रुषनदेवना पुत्र, नरतेश्वर करतां पण वधारे बलवान,
त्रीजा अन्नय कुमार, श्रेणिक राजाना पुत्र, वली चो
आ ठंढण कुमार ते श्री कृष्णजीना पुत्र, पांचमा श्री
क, (सरैयो) ते श्री शूलिन्नइजीना नानाज्ञा, ठठा
अन्निका पुत्र आचार्य, जे गंगा नदी उतरतां केवलज्ञा
न पाण्या, सातमा अतिमुक्तकुमार, जेणे ठ वरसनी
उमरे श्री वीर पासेशी दिक्षा लीधी, वली आवमाना
गदत्त, श्रेष्ठी पुत्र, अदत्तादानना त्यागी जाणवा. ॥१॥

मेअऊ शूलिन्नदो के० नवमा मेतार्य मुनि, जेने
माथे सोनीए वाधर एटले आलां चांवमां वीट्यां, दश

(३९१)

१। शूलिन्नङ् मुनि जेणे कोश्या वेश्याने घेर चो
 कर्पु, अने वेश्याने श्राविका कीधी, अगीआर
 ज्ञस्वामी, वारमा नंदिषेणजी, जेणे वेश्याने घेर
 ने वार वर्ष पर्यंत रोज दश दश जणने प्रतिबोध्या,
 २। श्री सिंहगिरिजी महाराज ते वज्रस्वामीना
 ३, चौदमा कृतवर्ण कुमार ए श्रेष्ठी पुत्र, वली पंदर
 ४। सुकोसल मुनि, जेमचुं शरीर वाघणीए नक्षत्र की
 ५, सोलमा श्री पुंनरिकजी, श्री प्रथम तीर्थकरना
 ६। अम गणधर, सत्तरमा केशी कुमार, ते प्रदेशी राजा
 ७। गुरु, अठारमा करकंठु, प्रत्येक बुरु मुनि जे घरमा
 ८। लद प्रत्ये जोशने साधु थया. ॥ ९ ॥

हल्लविहल्ल के० नंगणीसमा हल्लय कुमार, ची
 १। समा विहल्लय कुमार, ए वे श्रेणिक राजाना पुत्र; एक
 २। वीसमा सुदर्शन शेठ, जेना शीलने प्रजावे शूलिमां
 ३। श्री सिंहासन थयुं; बावीसमा सालमुनि, तेवीसमा
 ४। महासाल मुनि, ए वे श्री गौतम स्वामीजीए प्रति
 ५। बोध्या; चोवीसमा शालिन्नङ् प्रसिद्धनोगी, श्रेष्ठीपुत्र;
 ६। पच्चीसमा नङ्वाहु स्वामी चौदपूर्वना जाण, ठवीस

(३९४)

जे पूर्वजन्मे संयम विराधवाथी अनार्य देशमां उपन्या
अने अजय कुमारे सोकलेली जिन प्रतिमा देखीने
जेने पूर्वजन्म सांजख्यो, साधु अया, उगणपच्चासमा
दृढप्रहारी चोर, चार हत्याना करनार, मुनि अशने
मोढे गया; वली पचासमा श्रेयांसकुमार, जेणे श्री
ऋषजदेवने सेलमीना रसनं दान दीधुं, एकावनमा
कूरगरू साधु, जेणे गुरुना थुंक साथे खीचमी खातां
केवल ज्ञान उपाज्युं, बावनमा सिद्धजन्म आचार्य, जे
णे पूर्व अकी श्रीदशवैकालिक सूत्र उद्धर्युं, त्रेपन
मा मेघकुमार, श्रेणिक राजाना पुत्र, जेने वीर प्रभु
जीए हाथीनो पूर्वलो जन्म संजलावीने संयममां
स्थिर कर्या. ॥ ६ ॥

ए माइ महासत्ता के० इत्यादि बीजा पण खंध
कुमार, खंधक मुनि, कपिल मुनि, हरिकेशी मुनि,
संयत मुनि, दमदंत मुनीश्वर, दमसार मुनीश्वर प्रमु
ख महा सत्त्वना धरनार केटलाक ते जन्मेज मोढे ग
या, केटलाक आगल मोढे जशे, ते सर्वे मने शिव
ते आपो, ते महासत्ता केवा ठे ? तो के ज्ञा

(૨૫)

નાદિ ગુણોના સમૂહે કરીને સંયુક્ત છે, વલી કેવા છે ?
તો કે જેના નામ ગ્રહણ કરવા થકી પાપના સમૂહ
વિનાશ પામે છે. ॥ ૭ ॥

સુલસાચંદન વાલા કેળે એક સુલસા, શ્રી વીર
સ્વામીની મુખ્ય શ્રાવિકા, વીજીચંદનવાલા, શ્રી વીર
સ્વામીની પ્રથમ સાધવી, ત્રીજી મનોરમા, સુદર્શન
શેઠની સ્ત્રી, ચોથી મદનરેખા, નમિરાજર્ણિની માતા,
પાંચમી દમયંતિ નલરાજાની રાણી, જેનું મસ્તક દી
વાની પેરે પ્રકાશકારી થતું હતું, ઠઠી નર્મદાસુંદરી,
સાતમી સીતા સતી, આઠમી નંદા, અન્નય કુમારની
માતા, તથા નવમી વજ્રસ્વામીની માતા પણ નંદા
જાણવી, દશમી જ્ઞા શેઠાણી, શાલિજ્ઞાની માતા,
અગીયારમી અવંતિસુકુમારની માતા પણ જ્ઞા જા
ણવી, ચારમી સુજ્ઞા જેણે કાચે તાંતણે ચારણી વાં
ધી કૂવામાંથી જલ કાઢી ચંપાનગરીની પોલ ડધા
મી, તથા તેરમી શ્રી કૃષ્ણજીની ઝરમાન જગિની
પણ સુજ્ઞા જાણવી. ॥ ૮ ॥

રાયમર્શિસિદ્ધતાં કેળે ચૌદમી રાજેમતિ, જેણે

(१६)

गिरि गुफामांहे संयमशकी पमता रथनेमिने प्रतिवो
धी स्थिर कीधा. पंदरमी रुषिदत्ता सती, सोलमी प
द्मावती, करकंजुजीनी माता, सत्तरमी अंजना सुंदरी,
हनुमंत वीरनी माता, अठारमी श्री देवी, अतिमुक्त
कुमारनी माता, उगणीसमी ज्येष्ठा, वीसमी सुज्ये
ष्ठा, एकवीसमी मृगावती, बावीसमी प्रज्ञावती, त्रेवी
समी चेलणाराणी, ए पांचे चेम्हा महाराजानी
पुत्रीज जाणवी. ॥ ए ॥

बंज्री सुंदरी रुषिणि केण चोवीसमी ब्राह्मी, ज
रतनी बेन, पच्चीशमी सुंदरी ते बाहुबलनी बेन, ब्धी
शमी रुक्मिणी, जेणे वज्रस्वामीनी पासे कुमारिका
पणामां दिक्ता लीधी, सत्तावीशमी रेवती श्राविका, जे
णे जगवानने कोलापाक वोहोराव्यो, अठावीशमी कुं
ती, पांढवोनी माता, उगणत्रीसमी शीवा, ते चेम्हा
राजानी पुत्री, त्रीसमी जयंति, श्री वीर स्वामीनी
श्राविका, एकत्रीसमी देवकी, श्री कृष्णजीनी माता,
वत्रीसमी डौपदी, पांढवोनी राणी, तेत्रीसमी धारणी
माता, चोत्रीसमी मेघकुमारनी मा

ता पण धारणी जाणवी, पांत्रीसमी जंबु कुमारनी
 माता पण धारणी जाणवी, ठत्रीसमी कलावती, शी
 लना प्रज्ञावे जेना कापेला हाथ नवपद्धव थया, वली
 साम्त्रीसमी पुष्पचूला नामे साधवी, अन्निकापुत्र
 आचार्यनी न्क्तिना उद्धासथी जेने केवलज्ञान उप
 ज्युं, जे वर्षादि वरसते आहार लावी. ॥ १० ॥

पञ्चमावर्ण्य गोरी के० आम्त्रीसमी पद्मावती,
 ङगणचालीसमी गौरी, चालीसमी गांधारी, एकताली
 समी लक्ष्मणा, वेहंतालीसमी सुसीमा, वली त्रेताली
 समी जांबुवती, चुम्मालीसमी सत्यनामा, पीस्ताली
 समी रुक्मिणी ए आठ कृष्णनी पटराणी. ॥ ११ ॥

जस्काय जस्कदिना के० वेंतालीसमी यक्षा, सु
 मतालीसमी यक्षदिना, अमतालीसमी नूता, ङगण
 पञ्चासमी नूतदिना, पञ्चासमी सेना, एकावनमी वेणा.
 बावनमी रेणा, ए सात थूलीनडनी वेनो जाणवी. १२

इच्चाइ महासइत्त के० इत्यादिक बीजी पण क
 मलावती, लीलावती, मानवती, मृगांकलेखा, चंड
 लेखा, मयणासुंदरी, कौशल्या प्रमुख जे महोटी स

(१६८)

तीयो ते सर्वे जयवंती ठे, एटले सर्व स्त्रीयोमां प्रधान
थती हवी. केवी होती हवी ? तो के निर्मल शील गुणे
करीने सहित होती हवी. वली जेनो जसनो पमहो
सकल त्रिजुवनने विषे आजे पण वाजे ठे. ॥ १३ ॥

विधि:—पढी एक नवकार गणी इच्छकार सुह
राइनो पाठ कहेवो.

॥ इच्छाकार सुहराइनो बुटा शब्दना अर्थ ॥

इच्छकार-इच्छाकरुं	सुख-सुखे	संजम-चारित्र (रूप)
सुह-सुखे	तप-तप	जात्रा-जात्रा (मां)
राइ-रात	शरीर-शरीर	निर्वहो-प्रवर्त्तो
देवसि-दिवस	निराबाध-रोगरहित	शाता-सुख

इच्छकार सुहराइ, (सुहदेवसि) सु
खतप, शरीर निराबाध, सुख सं
जम जात्रा, निर्वहो ठो जी, स्वामी
शाता ठे जी, ज्ञात पाणीनो ला
न देजो जी ॥ इति ॥

अर्थ:—इच्छा करुं तुं सुखे रात्रि, सुखे दिवस, सु
तपमां, शरीरना रोग रहितपणामां, सुखे संजम

(३९९)

जात्रामां प्रवर्त्तो ठो जी, स्वामी शाता ठेजी ॥ दीव
सना बार वागतां सुधी गुरुजीने वांदतां सुहराइनो
पाठ बोलवो अने ते पढी वांदतां सांजे सुहदेवसि
नो पाठ बोलवो.

विधि:—पढी इच्छा० राइ प्रतिक्रमणे ठानं ? क
हीने जमणो हाथ चरवला उपर स्थापीने इच्छं सबस
वि राइय डुच्चितिय० कही, नमुबुणं कही उज्जा थइ
करेमिज्जंते कही इच्छामि ठामि कानस्सग्गं जोमे राइयो०
कही तस्सउत्तरी अन्नत्त० कही, एक लोगस्स अथवा चार
नवकारनो कानस्सग्ग कही पारी प्रगट लोगस्स कही
सबलोए अरिहंत० कही, एक लोगस्स अथवा चार
नवकारनो कानस्सग्ग करी पारी, पुरकर वरदी० सु
अस्स० वंदण० कही अतिचारनी आठ गाथानो अथवा
गाथा ना आवरे तेणे आठ नवकारनो कानस्सग्ग करी
पारी सिद्धाणं बुद्धाणं कहीने वेसी त्रीजा आवश्यक
नी सुहपत्ति पम्हिलेही वांदणां वे देवां त्यांशी ते अप्पुठ्ठि
खामी वांदणां वे दीजे त्यां सुधी देवसिनी रीत प्रमाणे
करवुं, पण जे ठेकाणे देवसिअं आवे ते ठेकाणे राइयं

कहेवुं, पढी आयरिअ नवझाएण करेमिज्जंतेण इव्वामि
 ठामि कानस्सग्गं तस्सउत्तरी कही तपचिंतामणी का
 नस्सग्ग करतां ना आवमे तो चार लोगस्स अथवा
 सोल नवकारनो कानस्सग्ग करवो, ते पारी प्रगट लो
 गस्स कही, बेसी ठठा आवश्यकनी मुहपति पणिलेही
 वांदणां बे देवां पढी तीर्थवंदन करवुं.

॥ तीर्थवंदनाना ठुटा शब्दना अर्थ ॥

चैत्य-देरासर	सहस-हजार	विहरमान-विचरता
निशि-रात	प्रासाद-देरासर	धार-धरनार
दीस-दहाडो	शत-सो	सार-सारी
अड-आठ	शाश्वता-हमेशांस्थायी	सायर-समुद्र

॥ तीर्थ वंदना ॥

सकल तीर्थ वंदू करजोड्य, जिनवरनामैं मंगल
 कोड्य ॥ पेहेले स्वर्गे लाख वत्रीस, जिनवर चैत्य नमुं
 निशि दीस ॥ १ ॥ बीजे लाख अठावीश कक्षां, त्री
 जे बार लाख सदह्यां ॥ चोथे स्वर्गे अमलख धार, पां
 चमे वंदू लाखज चार ॥ २ ॥ ठठे स्वर्गे सहस पञ्चा
 स, सातमे चालिश सहस प्रासाद ॥ आठमे स्वर्गे ८

हजार, नव दशमे वंदू शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार बार
 मे त्रणसैं सार, नव ग्रैवेयके त्रणसैं अठार ॥ पांच अ
 नुत्तर सर्वे मली, लाख चोराशी अधिकांवली ॥ ४ ॥
 सहस सत्ताणुं त्रेविश सार, जिनवर जुवन तणो अ
 धिकार ॥ लांबां शो जोजन विस्तार, पचास उंचां व
 होंतेर धार ॥ ५ ॥ एकशो एंशी बिंब प्रमाण, सत्ता
 सहित एक चैत्ये जाण ॥ शो कोरु बावन कोरु सं
 जाल, लाख चोराणुं सहस चौआल ॥ ६ ॥ सातसैं
 उपर साठ विशाल, सबी बिंब प्रणमुं त्रण काल ॥
 सात कोरुने बहोंतेर लाख, जुवनपतिमां देवलजा
 ख ॥ ७ ॥ एकशो एंशी बिंब प्रमाण, एक एक चैत्यें
 संख्या जाण ॥ तेरशें कोरु नव्याशी कोरु, शाठ लाख
 वंदू करजोरु ॥ ८ ॥ वत्रीशेंने जंगणशाठ तीर्था लोक
 मां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशें
 वीश ते बिंब जुहार ॥ ९ ॥ व्यंतर जयोतिपीमां व
 लि जेह, शाश्वता जिन वंदूं तेह ॥ रूपन्न चंशनन वा
 रिषेण, वर्द्धमान नामे गुण सेण ॥ १० ॥ समेतशि
 खर वंदूं जिन वीश, अष्टापद वंदू चोवीश ॥ विमला
 चलने गढ गिरनार, आबु उपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥

संखेश्वर केसरियो सार, तारंगे श्री अजित जुहार ॥
 अंतरिक वरकाणो पास, जीरावलोने धंजन पास
 ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवर चैत्य
 नमुं गुणगेह ॥ विहरमान वंदूं जिन वीश, सिद्धअनंत
 नमुं निशदीस ॥ १३ अढी छीपमां जे अणगार, अ
 ढार सहस शीलांगना धार ॥ पंच महाव्रत समितिसा
 र, पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अर्च्यंतर तप
 उजमाल, ते मुनि वंदूं गुण मणिमाल ॥ नित नित
 उठी कीर्ति करूं, जीव कहें जवसायर तरूं ॥ १५ ॥
 इति ॥ एनो अर्थ सुगम ठे.

विधि:—इच्छकारि जगवन् पसाय करी पञ्चस्का
 एनी आश देजोजी एम कही पढी यथाशक्ति नव
 कारसि आदी पञ्चस्काण करवुं.

पञ्चस्काणना तुटा शब्दना अर्थ.

उगए—उगेछते	पच्छन्न—ढंकाएला	पुरिमढूं—पेहेलोअरधो
सूरे—सूर्य	कालेणं—वखत वडे	(दियस) वे सहोर
नमुकार—नवकार	साढ—दोढ	अवढूं—त्रणपहोरसुधी
सहिअं—सहित	दिसा—दिशा (ना)	विगड़—विगय(घी, दुध
मुठ्ठि—मुठि [सुधी	मोहेणं—मोहवडे	वगेरे)
पोरिसिं—पहोरदिवस	वयणेणं—वचने	

सोदराः-सरस्वी
चेतो-चित

नैर्मल्य-निर्मलपणुं
हेतवः-हेतु

करामलकवद्विश्वं, कलयन् केव
लश्रिया॥ अचिंत्यमाहात्म्यनिधिः
सुविधिर्बोधयेऽस्तु वः ॥ ११ ॥ स
त्त्वानां परमानंद, कंदोद्भेदनवांबुदः
॥ स्याद्वादाभृतनिस्यंदी, शीतलः
पातु वो जिनः ॥ १२ ॥ नवरोगा
र्तजंतूना, भगदंकारदर्शनः ॥ निः
श्रेयसश्रीरमणः, श्रेयांसः श्रेयसेऽ
स्तु वः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकीचू
त, तीर्थकृत्कर्मनिर्मातः ॥ सुरा
ऽसुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यः पुनातु
वः ॥ १४ ॥ विमलस्वामिनो वा
चः, कतकहोदसोदराः ॥ जयंत
त्रिजगच्चेतो, जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥

अर्थः-करामलकवद्विश्वं के० श्री सुविधिनाथ

તમોને સમ્યક્ત્વને અર્થે થાનું. તે સુવિધિનાથ કેવાઠે ?
તો કે હાથને વિષે રહેલા નિર્મલ પાણીની પેઠે સર્વ
પ્રાણીનું કેવલ જ્ઞાન રૂપ લક્ષ્મીએ કરી જાણતા
એવા તથા ન ચિંતવીશકવા યોગ્ય એવું જે મોહોટાપ
ણું તેના નિધાન ઠે. ॥ ૧૧ ॥

સત્વાનાં પરમાનંદ કેળ પ્રાણીનું નૃત્કૃષ્ટ આનંદ
ના અંકુરને પ્રગટ થવામાં નવા મેઘ સરસા તથા અને
કાંત શાસનરૂપ અમૃત રસના ઝરનારા, એવા શીતલ
નાથનામા જિન તમોને રક્ષણ કરો ॥ ૧૨ ॥

જ્વરોગાર્તિજંતનાં કેળ સંસારરૂપ રોગે કરી પી
માએલા પ્રાણીનું. વૈદ્યસમાન ઠે સમ્યક્ત્વ દર્શન જે
મનું એવા, અથવા દર્શન એટલે દેખવું જેમનું એવા, તથા
મોક્ષ રૂપ લક્ષ્મીના સ્વામી એવા શ્રેયાંસનામા જિન
તમારા કલ્યાણને અર્થે થાનું. ॥ ૧૩ ॥

વિશ્વોપકારકીજૂત કેળ શ્રીવાસુપૂજ્યનામા જિ
ન તમોને પવિત્ર કરો. તે વાસુપૂજ્ય કેવા ઠે ? તો કે
વિશ્વના ઉપકાર જૂત તીર્થંકરનામકર્મની નિષ્પત્તિ
કરી ઠે જેમણે, વલી વૈમાનિક, જ્વનપતિ આદિ દેવતા
તથા મનુષ્ય તેમણે પૂજવા યોગ્ય ઠે. ॥ ૧૪ ॥

(३३ए)

विमलस्वामिनो वाचः के० श्री विमलस्वामीनी
वाणीनु जयवन्ती वर्त्ते ठे; ते वाणीनु केवी ठे ? तो के
कतकफलना चूर्ण सरखी ठे. तथा त्रण जगतना चि
त्तरूप जलने निर्मल करवाना हेतु (कारण) ठे. ॥१५॥

गाथा १६ थी १० सुधीना ठुटा शब्दना अर्थ

स्वयंभूरमण-सौथी	प्र.सौ-प्राप्तिपां	मृग-मृग, हरण.
मोटो समुद्र	शरीरिणां-देह धारी	लक्ष्मा-लक्षण, चिन्ह
स्पर्द्धि-वरोवरी कर	ओने	सनाथ-सहित
नारा	चतुर्द्धा-चारप्रकारनो	अतिशयार्द्धिभिः-अ
करुणा-दया	देष्टारं-देखाडनार	तिशय रूपकृद्धिवडे
वारिणा-पाणीवडे	उपासमहे-उपासना	नृ-मनुष्य
अनंतजित्-अनंतनाथ	करीए छीए	चतुर्थार-चोथो आगे
अनंतां-अंतनहीं एवी	मुधा-अमृत	नभः-आकाश(पां)
प्रयच्छतु-आपो	वाक्-वाणी	रवि-सूर्य
कल्पद्रुम-कल्पवृक्ष	ज्योत्स्ना-चांदनी	विश्रामं-सुप्तने
इष्ट-वांछित	दिह्-दिग्वासी	वितनोतु-विस्तारो

स्वयंभूरमणस्पर्द्धि, करुणारसवा
रिणा ॥ अनंतजिदनंतां वः, प्रय
छतु सुखश्रियस् ॥ १६ ॥ कल्प

ડુમસધર્માણ, મિષ્ટપ્રાપ્તૌ શરીરિણામ્
 ॥ ચતુર્ધા ધર્મ દેષ્ટારં, ધર્મનાથમુપા
 સ્મહે ॥ ૧૭ ॥ સુધાસૌદરવાગ્જ્યો
 ત્સ્ના, નિર્મલીકૃતદિહ્મુખઃ ॥મૃગ
 લક્ષ્મા તમઃશાંત્યૈ, શાંતિનાથજિ
 નૌ ઽસ્તુ વઃ ॥ ૧૮ ॥ શ્રીકુંથુના
 થો જ્ઞગવાન, સનાથોઽતિશયર્ધિ
 ન્નિઃ ॥ સુરાસુરનૃનાથાના, મેકના
 થોઽસ્તુ વઃ શ્રિયે ॥ ૧૯ ॥ અ
 રનાથસ્તુ જ્ઞગવાં, શ્વતુર્થારનન્નોર
 વિઃ ॥ ચતુર્થપુરુષાર્થશ્રી, વિલાસં
 વિતનોતુ વઃ ॥ ૨૦ ॥

અર્થઃ—સ્વયંજૂરમણસ્પર્ધિ કેળ અંતિમસમુદ્ગની
 સ્પર્ધા કરે એવું કરુણારસરૂપ જે જલ, તેણે કરી યુક્ત
 એવા શ્રી અંનંતનાથ પરમેશ્વર, જેનો અંત નથી એવી મો
 ક સુખ રૂપ લક્ષ્મીને આપો. ॥ ૧૬ ॥

(૩૪૧)

કલ્પદુમસધર્માણ કેળ ધર્મનાથ જિનને અમે સેવિયે
ઢીએ તે ધર્મનાથ જિન કેવા ઢે ? તો કે શરીરધારી
પ્રાણીનુંને વાંઘિત ફલની પ્રાપ્તિને વિષે કલ્પદુમ સમા
ન ઢે ધર્મ જેમનો એવા ઢે, તથા દાન, શીયલ, તપ ત
થા જ્ઞાવરૂપ ચાર પ્રકારના ધર્મને દેશ્વામનારા ઢે । ૧૭ ।

સુધાસોદરવાગ્ જ્યોત્સ્ના કેળ અમૃત સરસ્વી વા
ણીરૂપ ચંડિકાએ કરી, દિગ્વાસી જનોનાં મુખ જેમ
ણે નિર્મલ કર્યાં ઢે એવા, તથા મૃગનું ચિન્હ ઢે જેમને
એવા શ્રી શાંતિનાથનામા જિન તમારી અજ્ઞાનની શાં
તિને અર્થે થાનું. ॥ ૧૮ ॥

શ્રી કુંથુનાથો જગવાન્ કેળ શ્રી કુંથુનાથ જગ
વાન તમોને કલ્યાણરૂપ લક્ષ્મીને અર્થે થાનું. તે કુંથુ
નાથ જગવાન કેવા ઢે ? તો કે ચોત્રીસ અતિશયરૂપ
રુદ્ધિએ કરી સહિત ઢે. વલી વૈમાનિક તથા જીવનપત્યા
દિક દેવતા અને મનુષ્ય તેમના સ્વામી જે શંડ તથા ચ
ક્રવર્ત્યાદિક તેમના એક નાથ ઢે. ॥ ૧૯ ॥

અરનાથસ્તુ જગવાં કેળ પરમેશ્વરને ઘટિત એવા
જગ શબ્દના વાર અર્થે કરી સહિત એવા અરનાથ ના
મા જિન તે તમોને ચોથો પુરુષાર્થ જે મોક્ષ તેની લ

हमीना जोग विलासने विस्तारो. ते अरनाथ जगवान
केवा ठे ? तो के चोथा आरारूप आकाशने विषे सू
र्य समान ठे. ॥ ५० ॥

गाथा ५१ थी ५५ सुधीना बुटा शब्दना अर्थ

अधीश-इंद्र

मयूर-भोर

वारिदं-मेघ

द्रु-झाड

उन्मूलने-उखेडवाने

हस्तिमल्ल-औरावतहाथी

अभिष्टुमः-स्तवना क

रीए छीए

जगत्-जगत(नी)

निद्रा-उंघ

प्रत्यूष-मभात

समय-वखत

उपमं-उपमा (वाली)

देशना-उपदेश

वचनं-वचनने

स्तुमः-स्तवीएछीए

लुठंतः-लोटता

मूर्ध्नि-मस्तकने विषे

कारणं-हेतु

वारि-पाणी

प्लवा-प्रवाह

इव-पेठे

अंशवः-किरणो

यदुवंश-यादव वंश

इंदु-चंद्र

कक्ष-वनखंड

हुताशन-अग्नि

अरिष्ट-नामछे; उपद्रव

कमठे-कमठ उपर

धरणेंद्रे-धरणेंद्रउपर

उचित-योग्य

कुर्वति-करता

तुल्य-सरस्वी

सुराऽसुरनराधीश, मयूर नववारि

दम् ॥ कर्मउन्मूलने हस्ति, मल्लं

मल्लिमभिष्टुमः ॥ ५१ ॥ जगन्म

हामोहनिद्रा, प्रत्यूषसमयोपमम् ॥

मुनिमुव्रतनाथस्य, देशनावचनं स्तु

(३४३)

मः ॥ २२ ॥ लुठंतो नमतां मूर्ध्नि,
निर्मलीकारकारणम् ॥ वारिष्ठ
वा इव नमेः, पांतु पाद नखांशवः
॥ २३ ॥ यडवंशसमुद्धुः, कर्मक
कहुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्जगवान्,
ज्यूयादोऽरिष्टनाशनः ॥ २४ ॥ क
मठे धरणे च, स्वोचितं कर्म कु
र्वति ॥ प्रज्जुस्तुल्यमनोवृत्तिः, पा
श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ॥ २५ ॥

अर्थः—सुराऽसुरनराधीश के० हमे श्री मद्धिनाथ
प्रत्ये स्तवना करीए ठीए. ते मद्धिजिन केवा ठे? तो
के वैमानिक तथा जवनपति आदि देवता तथा मनु
ष्य, तेना इंड, उपेंड अने चक्रवर्त्यादिकरूप मोरने उ
द्धास करवाने नवीन अयारुना मेघ समान ठे; बली
कर्मरूप वृद्धने उखेली नांखवाने हस्ती समान ठे ॥ २१ ॥

जगन्महामोहनिज्ञ के० मुनिसुव्रतनाथना धर्मोप
देशने अमे स्तविये ठीए, ते देशना वचनकेवुं ठे? तो के

જગતને વિષે રહેલા એવા જે પ્રાણીનું તેનો જે મહામોહ તે રૂપ જે નિષા, તેને દૂર કરવાને પ્રજ્ઞાત કાલની ઝપ મા ઠે જેને એવું ઠે. ॥ ૨૨ ॥

લુઠંતો નમતાં મૂર્ધ્ધિ કેળ નમિનાથના ચરણના નચનાં જે કીરણો ઠે તે તમારું રક્ષણ કરો. તે કીરણો કેવાં ઠે ? તો કે નમસ્કાર કરનાર જે પ્રાણીનું તેના મસ્તક ને વિષે લુઠાયમાન ઠે, તથા પાણીના પ્રવાહની પેઠે નિર્મલ એટલે પાપરહિત કરવાનાં હેતુજૂત ઠે. ॥ ૨૩ ॥

યદુવંશસમુદ્દેહુઃ યાદવવંશ રૂપ સમુદ્દેને ઉદ્ધાસ પમારવાને ચંદ્રમાસમાન એવા, તથા કર્મરૂપ જે વનચંદ્ર તેને બાલવાને અગ્નિ સમાન એવા, અરિષ્ટનેમિનામા જગવાનું તે તમારા ઝપડવને નાશ કરનારા થાનું. ॥ ૨૪ ॥

કમઠે ધરણેંડે ચ કેળ શ્રી પાર્શ્વનાથ તે તમારી જ્ઞાનાદિ લક્ષ્મીને અર્થે થાનું. તે પાર્શ્વનાથ કેવા ઠે ? તો કે પોતપોતાનું યચિત્ત કર્મ કરે ઠે એવા કમઠ અને ધરણેંડે એ બેના ઝપર વરાવરમનની વૃત્તિ ઠે જેમની એવા સમદૃષ્ટિવાલા ઠે. એટલે કમઠ ઝપસર્ગ કરે ઠે અને ધરણેંડે તે નિવારે ઠે, તો પણ શ્રી પાર્શ્વનાથજી સમર્થ થતાં પણ બંનેની ઝપર સમદૃષ્ટિવાલા ઠે. ॥ ૨૫ ॥

गाथा १६ थी १ए सुधी लुटा शब्दना अर्थ

श्रीमते-केवलज्ञानरू
पलक्ष्मीवान(ने)

सनाथ-सहित

अद्भुत-नवाइ जेवुं

श्रिया-लक्ष्मीवडे

सरो-सरोवर(मां)

राजमरालाय-राजहं
स(ने)

विजित-जीतेला

तेजा:-कांति

सेवित:-सेवाएला

विमल-निर्मल

चूडामणि-मुकुट

महितो-पूजाएला

बुधा:-पंडितो

संश्रिता-आश्रय करी

रह्या

वीरेण-वीरस्वामीए

अधिहत:-दृण्यो

निचय:-समुदाय

वीराय-वीरस्वामीने

वीराव-वीरथी

प्रवृत्त-चाल्युं

अतुलं-निरुपम

वीरस्य-वीरनुं

घोरं-कठण

तपो-तप

वीरे-वीरमां

दिश-आपो,वतावो

अवांन-पृथ्वी

तल-सपाटी

गतानां-रहेला

कृत्रिम-करेलां

अशाश्वतां

अकृत्रिमानां-नर्हो क

रेलां, शाश्वतः

कृतानां-करायेलां

अर्चितानां-पूजाएल

ओनां

भावतः-भावथी

श्रीमते वीरनाथाय, सनाथाया

द्भुतश्रिया ॥ महानंदसरोराज, म

रालायाहते नमः ॥ १६ ॥ जय

ति विजितान्यतेजाः, सुरासुराधी .

श सेवितः श्रीमान् ॥ विमलस्त्रा
 सविरहित, स्त्रिजुवन चूमामणि
 र्जगवान् ॥ ५७ ॥ वीरः सर्वसुरा
 सुरेन्द्रमहितो वीरं बुधाः संश्रिताः
 वीरेणाग्निहतः स्वकर्मनिचयो, वी
 राय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं
 प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपो, वी
 रेश्री धृतिकीर्त्तिकांतिनिचयः श्री
 वीर जङ्ग दिश ॥ ५८ ॥ अवनितल
 गतानां कृत्रिमा कृत्रिमानां, वरजुव
 नगतानां दिव्य वैमानिकानाम् ॥ ५
 ह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां,
 जिनवर जुवनानां ज्ञावतोऽहं न
 मामि ॥ २९ ॥

अर्थः—श्रीमते वीरनाथाय के० केवलज्ञानरूप ल
 क्स्मी ठे जेमने एवा तथा आठ महाप्रातिहार्य तथा

ચોત્રીશ અતિશયાદિ અનુત લક્ષ્મીયે કરીને સહિત છે, તથા મહાનંદરૂપ સરોવરને વિષે ક્રીમા કરવાને રાજ હંસ નામા પક્ષીની સમાન છે એવા અરિહંતશ્રી મહા વીર સ્વામીને નમસ્કાર થાનું ॥ ૨૬ ॥

જયતિ વિજિતાન્યતેજાઃ કેળ જેમણે વીજાનું તેજ વિશેષે કરીને જીત્યું છે, તથા જેમને સુર અસુરના ઇંડોએ સેવેલા છે, તથા જે કેવલજ્ઞાનરૂપ લક્ષ્મીવંત છે, વલી નિર્મલ છે, વલી સાત પ્રકારના ઝયશ્રી વિશેષે કરી રહિત છે, વલી ત્રણ ઝુવનને વિષે મુકુટ સમાન એવા પ્રજ્ઞુ જયવંતા વર્તે છે ॥ ૨૭ ॥

વીરઃ સર્વ સુરાસુરેંદ્ર કેળ શ્રી વીર સ્વામી જે સર્વે વૈમાનિક તથા ઝુવનપત્યાદિક દેવતાનું ઇંડોએ પૂજાએલા છે, જે વીર સ્વામીપ્રત્યે પંક્તિતો આશ્રય કરી રહેલા છે તથા જે વીરસ્વામીએ પોતાના કર્મનો સમુદાય સમસ્ત પ્રકારે હાણ્યો છે, એવા વીરસ્વામીને નિરંતર નમસ્કાર થાનું. તથા જેને ઝપમા નથી એવું ચતુર્વિંશ સંઘરૂપ તીર્થ, જે વીર શ્રી પ્રવર્ત્યું છે, તથા જે વીર ગવાનનું તપ ઘણું કઠણ છે તથા જે શ્રી વીરસ્વામીને

વિષે કેવલજ્ઞાનરૂપ લક્ષ્મી, ધૈર્ય, કીર્તિ તથા અજ્ઞુત
રૂપ તેનો સમૂહ વર્તે છે. એવા હે શ્રી વીરસ્વામિનૂ! ત
મો કલ્યાણપ્રત્યે દેશ્વામો અર્થાત્ આપો ॥ ૨૮ ॥

અવનિતલગતાનાં કેળ પૃથ્વીના તલને વિષે રહે
લાં અશાશ્વતાં અને શાશ્વતાં એવાં જે ચૈત્ય તથા જીવ
નપતિ અને વ્યંતરાદિક દેવોના જીવનોને વિષે રહ્યાં એવાં
તથા દિવ્ય વૈમાનિકોનાં (વિમાનોમાંના) તથા શ્રા
મનુષ્ય લોકને વિષે મનુષ્ય એટલે જીરતાદિક રાજાનાં
કરાવેલાં એવાં, અને જેમને દેવતાના રાજા એટલે ઇંદ્રો
તેમણે પૂજ્યાં એવાં, સામાન્ય કેવલીને વિષે પ્રધાન એવા
જે શ્રી તીર્થંકર તેમનાં જીવન એટલે ચૈત્યો છે તેમને
જાવથી હું નમસ્કાર કરુંતું ॥ ૨૯ ॥

ગાથા ૩૦ થી ૩૨ સુધીના ત્રણ શબ્દના અર્થ

વેદતાં-પંડિતોના(માં)	સિદ્ધિવધૂ-મોક્ષરૂપસ્ત્રી	ઘટા-ઘટા
આશ્વ-પેહેલા(ને)	હૃદય-અંતઃકરણ	નિર્ભેદ-ભેદવાને
સર્વજ્ઞ-કેવલી(ને)	અલંકાર-શણગાર	પંચાનનો-કેસરીસિંહ
અર્જિત-મેલવેલા	ઉપમઃ-ઉપમાવાલો	રુચ્યાતઃ-પ્રરુચ્યાત
ર્જિત-ઘણાં આકરાં	અષ્ટાદશ-અઠાર	અષ્ટાપદ ૧ પર્વતોનાં
પ્રદીપ-ચાલવાને	સિંધુર-હાથી	ગજપદઃ ૨ નામઢે

(३४ए)

सम्मेतशैल-समेतशिखर	वेभार-वैभार पर्वत	तत्र-तेषां
अभिघः-नामवालो	कनकाचल-मेरु(पर्वत)	कुर्वतु-करो
रवतकः-गिरनार	अर्बुद-आबु [पर्वत	
	चित्रकूट-चीतोडनो	

सर्वेषां वेधसामाद्य, मादिमं परमे
 छिनम् ॥ देवाधिदेवं सर्वज्ञं, श्री
 वीरं प्रणिदध्महे ॥ ३० ॥ देवोऽने
 क ज्वार्जितोर्जित महापापप्रदी
 पानलो, देवः सिद्धिवधूविशालह
 दयाऽलंकार हारोपमः ॥ देवोऽष्टा
 दशदोषसिंधुरघटा निर्जेद पंचान
 नो, ज्व्यानां विदधातु वांछितफलं
 श्रीवीतरागोजिनः ॥ ३१ ॥ ख्या
 तोऽष्टापदपर्वतोगजपदः सम्मेतशै
 लान्निधः, श्रीमान्, रैवतकः प्र
 सिद्धमहिमा शत्रुंजयो मंमपः ॥

(૩૫૦)

વૈજ્ઞારઃકનકાચલોઽર્બુદગિરિઃશ્રી
ચિત્રકૂટાદય, સ્તત્ર શ્રીરુષ્ણાદયો
જિનવરાઃ કુર્વંતુ વો મંગલમ્ ॥૩૫॥

અર્થઃ—સર્વેષાં વેધસામાયં કેળ સર્વ જ્ઞાતા પુરુષો
માં પ્રથમ સુખ્ય એવા, તથા આદિમ પરમેષ્ઠિરૂપ તથા
દેવતાત્ત્વના દેવ જે ઇંદ્ર તેના પણ દેવ એવા, તથા સર્વ
પદાર્થને જાણનારા એવા, શ્રી વીરજગવાનનું પ્રકર્ષ
કરી ધ્યાન ધરીએ ઠીએ ॥ ૩૦ ॥

દેવોઽનેક કેળ શ્રી વીતરાગજિન તે જ્ઞવ્ય જીવો
ને વાંઠિત ફલને આપો. તે વીતરાગ દેવ કેવા છે ? તો
કે અનેક જીવને વિષે સંચેલાં ઘણાં આકરાં મોટાં પા
પ તેને પ્રકર્ષે કરી બાલવાને અગ્નિ સમાન છે, વલી જે
દેવ સ્મોહરૂપ સ્ત્રીના વિશાલ હૃદયને વિષે અલંકાર એ
ટલે હારની ભૂષમા છે જેમને એવા છે, વલીદેવ કેવા છે ?
તો કે અઢાર દોષરૂપ હાથીની ઘટાને જેદવાને કેસરી
સિંહ સમાન છે ॥ ૩૧ ॥

રુચાતોઽષ્ટાપદ કેળ પ્રરુચાત એવો અષ્ટાપદ પર્વત
તથા ગજપદ પર્વત, વલી સમ્મેતશિખર નામા પર્વત,

तथा लक्ष्मीवंत एवो गिरनार पर्वत, तथा प्रसिद्ध ठे
महिमा जेनो एवो सिद्धगिरि पर्वतरूप मंरुप, वली वैज्जा
र पर्वत, तथा मेरुपर्वत, तथा आबु पर्वत, तथा श्री
चित्रकूटादिक पर्वतो ठे तेमने विषे जे श्रीरूपज्ञादिक
जिनवरो ठे, ते तमारुं कढ्याण करो ॥ ३२ ॥

विधि:-वंदिता पढी खमासमण देइने इच्छाकारेण
संदिसइ जगवन् देवसिअं^१ आलोइअ पस्किंता इच्छाकारे
ण सदिसइ जगवन् पस्किमुहपत्ति पस्किहेहुं एम कही मुह
पत्ति पस्किहेहि ए पढी वांइणां वेदीजे पढी इच्छाकारेण.
संबुद्धाखामणेणं अणुठिन्हं अप्रिंतर पस्किअं खामेउं; इहं
खामेमि पस्किअं. (पंचांग नमस्कार पूर्वक चरवला न
पर जयणो हाथ स्थापी) पन्नरस दिवसाणं पन्नरस
राइआणं जंकिंचि अपत्तिअं^० कही इच्छाकारेण^० कही
पस्किअं आलोएमि इहं आलोएमि जोमे पस्किउ अइ
आरो कउ कही इच्छाका^० कही पस्किअतिचार आलोउं
एम कहीने अतिचार कहीए.

१ दिवस संवधि अतिचार आलोइने पापयो पाछो ओसरलो.

॥ अथ श्री श्रावकपाक्षिकादि संक्षिप्ता अतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह य
विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा ज्ञणि
उ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपा
घार, वीर्याचार, ए पंचविध आचारमांहि अनेरो जे
कोइ अतिचार, पक्क दिवसमांहे सूद्धम, वादरजाणतां,
अज्जाणतां, हुउं हुइ, ते सविहुं मन, वचन, कायार्य
करी तस्स मिच्छामि उक्कमं ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचार आठ अतिचार ॥ काले विणएव
हुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अठ तडुज
ए, अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञान कालवेलायें ज्ञ
एयो, गणयो विनयहीन, बहुमानहीन, योग उपधान
हीन, अनेरा कन्हें ज्ञणी, अनेरो गुरु कह्यो. देववंदन
वांदणे, पम्पिक्कमणे, सञ्चाय करतां, ज्ञणतां गुणतां, कू
मो अद्धर, कान्हा, मात्रें, आगलो उठो ज्ञणयो. सूत्र
अर्थ विहुं कूमां कहां. साधु तणे धर्म काजो मांमो, अ
णपम्पिलेह्यां, काजो अण उद्धरिठ, असञ्चाइ अणोज्जा

मांदि दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत ज्ञायो, गुणयो,
 श्रावकतणं धर्मे अविरावलि, पम्किमणासूत्र, उपदेश
 माला प्रमुख कालवेला काजो अणउरियें पढियो.
 ज्ञानइव्य ज्ञित, उपेक्षित प्रज्ञापराध विणासियो,
 विणसतां उवेखियो, सार संज्ञाल न कीधी, तथा ज्ञा
 नोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकरवाली,
 सांपना, सांपनी, दस्तरी, वही, नुदिया प्रत्ये पग ला
 गो, थूके करी अक्षर मांज्यो, कन्हें ठते आहार निहार
 कीधी. ज्ञानवंत प्रत्ये छेप, मत्सर, अंतराय, अवज्ञा
 कीधी. आपणा जाणवा तणो गर्व चिंतव्यो ॥ ज्ञाना
 चारवत विषइउं अनेरो जे कोई अतिचार पक्क ॥१॥

दंसणाचार आठ अतिचार ॥ निस्तंकिय निरसि
 य, निद्वितिगिष्ठा अमूढ दिष्टी अ ॥ उवबूह शिरीकाणे,
 वच्चलप्पजावणे अठ ॥ ३ ॥ देव गुरु धर्मतणे विषे निः
 शंकपणुं न कीधुं तथा एकांत निश्चय न कीधो. धर्म
 संबंधिया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि करी नहीं, त
 पोधन, तपोधनी प्रत्ये मलमलिन गात्र देखी दुगंगा
 कीधी. मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रज्ञावना देखी नुवहटि

पणुं कीधुं, तथा संघमांहि गुणवंत तणी अनुपवृंहणा
 कीधी अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अन्नक्ति
 कीधी, तथा देवड्य, गुरुड्य, साधारण ड्य, ज्ञति
 त, उपेक्षित, प्रज्ञापराध विणास्यो, विणसतो नवेख्यो;
 उती शक्तिए सार, संज्ञाल न कीधी, तथा साधर्मिक
 शुं कलहकर्म बंध कीधो, अधोती अष्टपट मुखकोश
 पाखें देवपूजा कीधी. वासकूंपी धूपधाणुं कलशतणो
 ठवको लागो. देहरा पोसालमांहि मल श्लेष्म लूह्यां.
 हास्य, केलि^१, कुतूहल कीधां. जिनजुवनें चोराशी आ
 शातना, गुरुप्रत्ये तेत्रीश आशातना, ठवणहारी हाथ
 थकुं पक्युं, पणिलेहवुं विसार्युं. गुरुवचन तहत्ति^२ क
 री ३पनिवज्युं नहीं ॥ दंसणाचार व्रत विषइयो अनेरो
 जे कोई अतिचार पक्ष ॥ ९ ॥

चारित्राचार आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोग
 जुत्तो, पंचहिं समिइहिं तिहिं गुत्तिहिं ॥ एस चरित्ता
 यारो, अठविहो होइ नायवो ॥ ४ ॥ इयासमिति, ज्ञा
 यासमिति, एणयासमिति, आदानज्ज्ञान निस्केवणासमि

ति, पारिष्ठावणियासमिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, काय
गुप्ति, ए अष्टप्रवचन माता, साधु तणे धर्मे सदेव, आ
वक तणे धर्मे सामायिक पोसह लीधे, रुकी पेरे चिं
तव्युं नहीं. खंरुण, विराधना कीधी ॥ चारित्राधारव्र
त विषयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष ॥ ३ ॥

विशेषतः आवकतणे धर्मे सम्यक्त्व मूल वारव्रत
सम्यक्त्व तणा पांच अतिचार ॥ संका कंखविगिद्याण॥
संकाः—श्री अरिहंत तणां वल, अतिशय, ज्ञान, लक्ष्मी,
गांज्जीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रियानां चा
रित्र, जिनवचनतणो संदेह कीधो ॥ ? ॥ आकांक्षाः—
ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आलपाल पादर
देवता, गोत्र देवता, देवदेहरानो प्रज्ञाव देखी रोग आवे,
इह लोक परलोकार्थे पूज्या, मान्या, बौद्ध, सांख्य, संन्या
सी, ज्ञरुता, जगत, लिंगीया, योगी, दरवेश, अनेरा
ए दर्शनीयानुं कष्ट, मंत्र, चमत्कार देखी, परमार्थ जा
ण्या विण जूट्या व्यामोह्या, कुशाख्ख शीख्यां सांज्जट्या,
आद्ध, संवत्सरी, होली, बलेव, माही पूनम, अजा प
रुवो, प्रेतबीज, गौरीबीज, विणायगचोथ, नागपं

जीह्मणावठी, शीयलसप्तमी, ध्रुवअष्टमी, नोलीनवमी, अहवदशमी, व्रतइग्यारसी, वत्सवारसी, धनतेरसी, अनंतचौदसी, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायण, नैवेद्य, याग, जोग, मान्या. पींपले पाणी रेक्यां, रेकाव्यां; घर, बाहिर, कूड, तलाव, नदी, इह, कुंरु, वाव्य, समुदे पुण्य हेतु स्नान कीधां ॥ ९ ॥ वितिगि
 ङ्गाः—धर्म संबंधीयां फलतणो संदेह कीधो. जिनअरि हंत धर्मना आगार, विश्वोपकारसागर, मोक्षमार्गना दातार, इस्या गुण ज्ञानी पूज्या नहि. इहलोक परलोक संबंधीया जोगवंठित पूजा कीधी रोग आतंककष्ट आवे खीण वचन याग मान्या, महात्माना ज्ञात, पाणी, मल शोभातणी निंद्या कीधी ॥३॥ प्रीति मांमी ॥ ४ ॥ तेहनी दाक्षिण लगे, तेहनो धर्म मान्यो ॥५॥ श्री सम्यक्त्व व्रत विषयो अनेरो जे कोइ अ० प० ॥४॥

पहेले स्थूल प्राणातिपातविरमण व्रते पांच अतिचार ॥ वहबंध ठविठेए ॥ द्विपद चतुष्पद प्रत्येरीशवशे गाढो घाय घाल्यो. गाढ बंधण बांध्युं, घषे जारे पीन्यो. निह्वंण कर्म कीधुं. चारापाणी तणी

वेलाये सार संज्ञाल न कीधी. लेणे, देणे कुणहने न
 ढ्युं, लंघाव्युं, तेणे झूखे आपण जम्या, शब्दयां धान्य
 रूमी पेरे जोयां नहीं, पाणी गलतां ढोळ्युं, जीवाणी
 शूकव्युं. गलतां जालक नांखी, गलणुं रुं न कीधुं.
 इंधण, ठाणां, अणशोध्यां वाढ्यां. तें मांही साप, ख
 जूरा, विंठी, सरोला, मांकरु, जूवा, गींगोमा, साहतां
 मूआ, दूहव्या, रूमे स्थानके न मूक्या. कीमी, मंको
 मी, उधेही, धीमेल, कातरा, चूमेल, पतंगीया, देरु
 कां, अलसीयां, इयल प्रमुख जे कोइ जीव विणठा, वि
 णसतां उवेख्या, चांप्या, दूहव्या, हलावतां, चलावतां
 पाणी ठांटतां, अनेराइ कामकाज करतां, ^१निध्वंसपणुं
 कीधुं. जीवरक्षा रूमी न कीधी ॥ पहेले स्थूल प्राणा
 तिपात व्रत विपश्च अनेरो जे कोइ अतिचार पण ॥५॥

वीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रते पांच अतिचा
 र ॥ सहस्सा रहस्सदारेण ॥ सहसात्कारें कुणहप्रत्ये
 अयुक्त आल दीधुं. ^२स्वदारा मंत्रज्ञेद कीधो. अनेराइ
 कुणहनो मंत्र आलोच मर्मप्रकाशयो. कुणहने ^३अपाय
 पारुवा कूमी बुद्धि धरी. कूमो लेख लख्यो, जूठी सा

ख जरी, आपण मोसो कीधो. कन्या, ढोर, जूमि सं
बंधिया लेहेणे, देहेणे, वाद वढवाम करतां मोटकुं जू
तुं बोड्या ॥ बीजे स्थूलमृषावादव्रत विषयो अनेरो
जे कोइण ॥ पद्ददिण ॥ ६ ॥

त्रीजे स्थूलअदत्तादान विरमणव्रतें पांच अतिचा
र ॥ तेनाहरूपपुण्येण ॥ घर बाहिर, खेत्रे खले, परायुं
अण मोकळ्युं लीधुं, दावरयुं. चोराइ वस्तु लीधी, चोर
प्रत्ये संवल दीधुं, विरुद्ध राज्यादि कर्म कीधुं. कूमा
मान, मापां कीधां. माता, पिता, पुत्र, मित्र कलत्र,
३वंची कुणहने दीधुं. जूदी गांठ कीधी. नवा जुना स
रस, नीरस वस्तु तणा जेल संजेल कीधा ॥ त्रीजे अ
दत्तादानव्रत विषयो अनेरो जे कोइ अतिचार पद्दण ॥ ७ ॥

चोणे स्वदारासंतोष परस्त्री विरमणव्रतें पांच अ
तिचार ॥ अपरिगृहीया इत्तरण ॥ अपरिगृहीतागमन
कीधुं, अनंगक्रीडा कीधी, विवाह कारण कीधुं, काम
जोगतणे विषे अति अजिलाप कीधो, दृष्टिविपर्यास
कीधो, आठम, चनदशी तणा नियम लइ जांग्या. अ

तिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, सुहृणे स्वप्नो
तरे हूआ ॥ चोथे मैथुनविरमणव्रत विपश्यो अनेरो जे
कोइ अतिचार पक्ष दिवस ॥ ८ ॥

पांचमे स्थूलपरिग्रह परिमाणव्रते पांच अतिचा
र ॥ धण धन्न खित्तवत्तू ॥ धण धन्ननुं परिमाण उपरुं
रखाव्युं. सोनुं, रुपुं, नवविध परिग्रह प्रमाण लीधुं न
हीं. पढवुं विसार्युं ॥ पांचमे परिग्रह परिमाणव्रत वि
पश्यो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस ॥ ९ ॥

ठठे दिग्‌विरमणव्रते पांच अतिचार ॥ गमणस्स
य परिमाणे ॥ उरुदिशें, अहोदिशें, तिर्यग्‌दिशें, जावा
आववा तणा नियम लेइ ज्ञांग्या. एक दिशि संक्षेपी,
बीजी दिशि वधारी. १ विस्मृत लगे अधिक झूमि गया.
२ पाठवणी आधी मोकली. वाहाण व्यवसाय कीधो.
वर्षाकाले ३ गामंतरुं कीधुं ॥ ठठे दिग्‌विरमणव्रत विप
श्यो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष ॥ १० ॥

सातमे जोगोपजोगव्रते पांच अतिचार ॥ सञ्चिते
पमित्रे ॥ सञ्चित आहारें, सञ्चित प्रतिवद्ध आहारें,
अप्पोलसहिन्नरक्षणया, उप्पोलसहिन्नरक्षणया, तुठो

सहिज्रकणया, सच्चित्तज्रकणया, अपक्काहारे, दुः
 काहारे तुष्ठश्रौषधि कुली आंवली, नंला, नंबी, पहूंक.
 पापस्तीतणां ज्रकण कीधां, अनंतकाय, अथाणां तण
 ज्रकण कीधां, तथा रिंगण, विंगण, पीलू, पीचू, पं
 पोटा, महूमां, वरुबोर, प्रसुख बहुबीज तणां ज्रकण
 कीधां ॥ गाथा ॥ सच्चित्त दध विगइ, वाणह तंबोल वठ
 कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, वंज दिसी न्हाण
 जत्तेसु ॥१॥ ए चउद नियम दिनप्रत्ये लीधानहीं. लेइ सं
 केप्या नहीं. सच्चित्त, डव्य, विगय, खासमां, वाहन, तंबो
 ल, फोफल, बेसण, शयन, पाणी, अंधोलण, फल फू
 ल, जोजन, आछादनें, जे कोइ नियम लेइ ज्ञांग्या.
 बावीश अज्जक्य, वत्रीश अनंतकाय मांहि आदू, मूला
 गाजर, पिंरु, पिंमालु, कचूरो, सूरण, खिलोमां, मो
 रमा, सेलरां, कुली आंवली, वाधरमां, गिरमर, नीली
 गलो. वाळ्होल खाधी. वाशी कठोल, पोली, रोटली,
 त्रण दिवसना नंदन, मधु, महूमां, विष, हिम, करहा,
 धोलवमां, अजाण्यां फल, टीवरुं, गुंदां, वोर, अथाणुं,
 काचुं मीठुं, तिल, खसखस, कोठिवमां खाधां. लगज्ज

ग वेलायें वालू कीधां. दिन उग्याविण शीराव्या. जे कोइ अनेरो अतिचार हुनु होय ॥ तथा कर्मतः इंगाल कस्मे, वणकस्मे, सामीकस्मे, ज्ञामीकस्मे, फोमीकस्मे ए पांच कर्म ॥ दंतवाणिज्य, लस्कवाणिज्य, रसवाणिज्य, विषवाणिज्य, केशवाणिज्य, ए पांच वाणिज्य ॥ जंतपिच्छणकस्मे, निह्वंणकस्मे, दवग्गिदावणया, स रद्धतलायसोसणया, असइपोसणया ॥ ए पांच सामान्य, ए पन्नर कर्मादानमांहि कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां, अनेरां कांइ सावद्य कर्म समाचर्यां होय ॥ सा तमे जोगोपजोग व्रतविषयो अनेरो ॥ ५० ॥ ११ ॥

आठमे अनर्थदंरुव्रते पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए ॥ अनर्थदंरु जे कहियें, कामकाज पाखें मुधा पाप लाग्यां. मुखहास्य, खेल, कुतूहल, अंगकुचेष्टा कीधी. निरर्थक लोकने कर्पण, गामां वाही, ग्रामां तरे कमावानी बुद्धि दीधी. कण, वस्तु, ढोर लेवराव्यां अनेराइ पापोपदेश दीधा. कोश, कूहामा, रथ, मुखल, मूशल, घर, घंटी प्रमुख सस्य करी मेढ्यां. माग्यां

१ फोगट. २ खेंती. ३ चलावी. ४ खांयणीओ, खांयणी. ५. सांघेलें, मुशली. ६ तैयार.

आप्या. अंधोल नाहणे, पग धोयणे, खालें पाणी हो
 ल्यां अथवा जीलणां जील्यां. जूवटुं रम्या. नाटक १ पे
 खणां जोयां. पुरुष स्त्रीनारूप, शृंगार बखाण्या. राज
 कथा, देशकथा, नक्तकथा, स्त्रीकथा, पराई तांत कीधी.
 २ कर्कश वचन बोल्या, ३ संज्ञेना लगारुया. ४ शरन्न,
 कूकना, प्रसुख ५ ऊऊता जोया. कलह करता जोया,
 लोकतणी उपार्जना कीधी, सुख कीर्ति देश लई चिं
 तवी. लूण, पाणी, माटी, कण, कपाशिया, काजविए
 चांप्या. ते उपर वेठा, ६ आली वनस्पति चूटी, अंगी
 ठा काष्ठवणिज कीधां. ठाश, पाणी, घी, तेल, गोल,
 आम्बवेतस, वेरंजातणां नाजन उघासां मेहेल्यां ते
 मांहे कीमी, अंकोमी, कुंशुआ, उदेही, घीमेल, गिरो
 ली प्रसुख जे कोइ जीव ७ विणगा. शूमा. सालही,
 क्रीडाहेतु पांजरे घाल्या ॥ अनेराइ जीवने रागेंद्वय ल
 गें एकने ऋद्धि परिवार बांठी. एकने मृत्यु हाणी बां
 ठी ॥ आठमे अनर्घदंमव्रत विपश्यो अनेरो जे कोइ अ
 तिचार पक्ष ॥ १९ ॥

१ जोवानां. २ आकरां, कठोर, ३ साचांजुयां करी लडावयां.

४ हाथी, अष्टपद. ५ लडता. ६ फोकट, कामबगर. ७ नाश पाण्या.

नवमे सामायिकव्रते पांच अतिचार ॥ तिविद्दे
 दुप्पणिहाणे ॥ सामायिकमांहि मन आहट्ट दोहट्ट
 चिंतव्युं. वचन सावद्य बोड्युं. शरीर अणपमिलेहुं
 हलाव्युं. उती शक्तिए सामायिक लीधुं नहीं, उघामे
 मुखें बोडया, सामायिकमांहि उंघ आवी, ^१वीज दीवा
 तणी ^२उजेही लागी, विकथा कीधी. कण, कपाशि
 या, माटी, पाणी तणा संघट्ट हुआ. मुहपत्ती संघट्टी,
 सामायिक अण पूगे पारखुं, पारखुं विसारखुं ॥ नवमे
 सामायिकव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार ॥ पण ॥

दशमे देशावगाशिक व्रतें पांच अतिचार ॥ आ
 एवणे पेसवणे ॥ आणवणप्पलुगे, पेसवणप्पलुगे, स
 दाणुवाइ, रुवाणुवाइ, वहियापुग्गलक्केवे ॥ नीमीन्नु
 भिकामांहिणी बाहिर अणाव्युं. आपण कन्हेणी वाई
 र मोकल्युं. शब्द संजलावी, रूप देखामी, कांकरो नां
 खयो. आपणपणुं उतुं जणाव्युं. पुट्गलतणो अक्केप की
 धो ॥ दशमे देशावगाशिकव्रत विषइयो अनेरो ॥ पण

अग्यारमे पोषधोपवासव्रतें पांच अतिचार ॥ सं

आरुच्चारविहिण ॥ पोसह लीधे संधारातणी जूमि वा
 हिरलां थंमिलां संदीसे रुमां शोध्यां नहीं, पमिलेह्यां
 नहीं, थंमिल वावरतां, मात्रुं परठवतां, चिंतवणी न
 कीधी. 'अणुजाणहजस्सगो' न कह्यो, परठव्यां पूर्वे
 वार त्रण वोसिरे वोसिरे न कह्युं. देहरा पोसालमांहे
 पेसतां, निसरतां, निसीहि आवस्सहि कहेवी विसारी.
 पुढवी, अण्ण, तेज, वान, वनस्पति, त्रसकायतणा संघ
 द, परिताप, उण्डव कीधा. संधारापोरिसीतणो विधि
 जणवो विसाख्यो. अविधियें संधाख्या. पारणादिक त
 णी चिंता निपजावी. कालवेलाये देव न वांध्या. पोस
 ह असूरो लीधो. सवारों पाख्यो. पर्वतिथें पोसह ली
 धो नहीं ॥ अग्यारमे पोषधोपवासव्रत विपश्यो अने
 रो जे कोइ अतिचार ॥ ५० ॥ १५ ॥

वारमे अतिप्रिसंविज्ञागव्रतें पांच अतिचार ॥ स
 चित्ते निस्क्रवणे ॥ सचित्त वस्तु देहां उपर ठतां अ
 सूजतुं दान दीधुं. वहोरवा बेला टली रह्या. मत्सरज
 गें दान दीधुं. देवातणी बुद्धें पराइ वस्तु धणीने अण
 कहे दीधी, अण्णवा आपणी करी दीधी. अणोदेवा तणी

बुद्धे सृजतुं फेदी, असृजतुं कीधुं, गुणवंत आवे नक्ति
न साचवी, अनेराइ धर्मक्षेत्र सीदातां ठती इत्तें नउ
ख्यां नहीं, दीन, खीन प्रत्ये अनुकंपा दान दीधुं नहीं.
देतां वास्युं ॥ वारमे अतिश्रिसंविज्ञाग व्रत विपइयो
अनेरो जे कोइ अतिचारण पण ॥ १६ ॥

संक्षेपणातणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलो
एण ॥ इहलोगासंसप्पज्जे, परलोगासंसप्पज्जे, जी
वियासंसप्पज्जे, मरणासंसप्पज्जे, कामजोगासंस
प्पज्जे. इह लोके धर्मतणा प्रज्ञाव लगे राजक्रांतिजो
ग वांठ्या, पर लोकें देव, देवइ चक्रवर्त्ती तणी पदवी
वांठि. सुख आवे जीववातणी वांठा कीधी. दुःख आ
वे मरवातणी वांठा कीधी. काम जोगतणी वांठा की
धी. ॥ संक्षेपणा व्रत विपइयो अनेरो जे कोइ अ
तिचार ॥ पण ॥ १७ ॥

तपाचार वार जेद ॥ ठ वाह्य, ठ अच्यंतर ॥
अणसणमूणोअरिया० ॥ अणसण ज्ञणी उपवासादि
क पर्वतिश्रि तप न कीधुं. नणोदरी वे चार कवल नणा
न नठ्या. इअ ज्ञणी सर्व वस्तु तणो संक्षेप? न की

धो. रस त्याग न कीधो. कायक्लेश-लोचादि कष्ट कस्या नहीं. संलीणता-अंगोपांग संकोची राख्यां नहीं. पञ्च स्काण जांग्यां, पाटलो रगतो फेरयो नहीं, गंठसही पञ्चस्काण जांग्युं. उपवास, आंबील, नीवि कीधे मुखें सचित्त पाणी धाल्युं. विमन हुनु ॥ बाह्य तपव्रत विष इयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ १८ ॥

अन्यंतर तप ॥ पायङ्गित्तं विणनु० ॥ सूधुं प्रायश्चित्त पक्खिज्युं नहीं, आलोयण तणी सूधि टीप की धी नहीं, सूधो तप पहोंचारयो नहीं, साते जेदें विनय न कीधो, दश जेदें वैयावच्च न कीधो, पंचविध सज्जा य न कीधो, कषाय वोसरायो नहीं, दुस्करकय कम्म रकय निमित्त कानुस्सग्ग न कीधो, शुक्लध्यान, धर्म ध्यान, ध्यायां नहीं. आर्त्त, रौड, ध्यान ध्यायां ॥ अन्यंतर तपव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पढ़ दिवसमांहि ॥ १९ ॥

वीर्याचार त्रण अतिचार ॥ अणिगूहिय बलविरि यो० ॥ मनोवीर्य, धर्म ध्यान तणे विषे उदयस न की धो, पक्खिमणें देवपूजा, धर्मानुष्ठान, दान, शील, तप

(३६७)

जावना, ठती शक्तियें गोपवी, आलसैं नचम न की
घो. वेठां पन्तिकमणुं कीधुं. रुतां खमासमण न दीधां
॥ वीर्याचार विषयइल अनेरो ॥ २० ॥

पन्तिकमणुं करणे ॥ प्रतिषेध, अन्नद्वय, अनं
तकाय, महापरिग्रह, जे कोइ प्राणातिपात मृषावाद,
अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ,
राग, द्वेष, कलह, अन्याख्यान, पैशुन्य, रति अरति,
परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वशाल्य, ए अहार
पाप स्थानक मांहे कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां होय ते
सविहुं मन, वचन कायायें करी मिठासि डुकमं ॥ २१ ॥

॥ अथ श्रावकपाह्निकादि विस्तारातिचार
प्रारंभः ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमि तवंमि तद्व य
विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा जणि
ल ॥ १ ॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचा
र, वीर्याचार, ए पंचविध आचार मांहे अनेरो जे कोइ
अतिचार, पढ़ दिवस मांहे सूक्ष्म, वादर, जाणतां, अ
जाणतां हुल होय, ते सविहु मनें, वचनें, कायायें करी

तस्मिन् मिच्छामि दुःखम् ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचार आठ अतिचार ॥ काले विणए व
हुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजणअठ तडुज
ए, अठविहो नाणमायारो ॥ १ ॥ ज्ञान कालवेलामांहे
जणित गुणीत नहीं. अकाले जणयो. विनयहीन, व
हुमानहीन, योग उपधानहीन, अनेरा कन्हे जणी अ
नेरो गुरु कह्यो, देव गुरु वांदणे, पम्पिकमणें सच्चाय
करतां, जणतां, गुणतां, कूम्हो अकर, कान्हे, मात्रें अ
धिक जुगो जणयो. सूत्र कूम्हं कह्युं. अर्थ कूम्हो कह्यो.
तडुजय कूम्हां कहां, जणीने विसाख्यां. साधु तणे धर्म
काजे, काजो अणउद्धरयें, मांमो अणपम्पिलेहे, वस्ती
अणशोधे, अणपवेत्ते, असच्चाय, अणोजा मांहे श्री द
शवैकालिक प्रमुख सिद्धांत जणयो, गुणयो. श्रावकतणे
धर्मे अविरावलि, पम्पिकमणासूत्र, उपदेशमाला. प्रमुख
सिद्धांत जणयो गुणयो. कालवेला काजो अणउद्धखे पढि
यो. ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकर
वाली, सांपमा, सांपनी, दस्तरी, वही, जलिया प्रमुख
प्रत्यें पण लाग्यो. थूंक लाग्युं, थूंकें करी अकर मांज्यो.
जशीशें धख्यो. कन्हे उतां आहार ? निहार कीधो, ज्ञा

नङ्ग्य १ ज्ञतां, २ ज्ञेया कीधी. ३ प्रज्ञापराधें ४ विणस
तो ५ विणास्यो. विणासतो नवेख्यो. ठती शक्तियें सार
संज्ञाव न कीधी. ज्ञानवंत प्रत्यें छेप मत्सर चिंतव्यो.
अवज्ञा, आज्ञातना कीधी. कौंइप्रत्यें ज्ञतां, गतां,
अंतराय कीधी. आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो.
मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनः पर्यवज्ञान, के
वलज्ञान, ए पंचविध ज्ञानतणी ६ असद्वहणा कीधी.
कोइ तोतमो, वोवमो दस्यो, ७ वितकर्यो; अन्यथा
प्ररूपणा कीधी ॥ ज्ञानाचारव्रत विपइउ अनेरो जे को
इ अतिचार पद ॥ १ ॥

दर्शनाचारे आठ अतिचार ॥ निस्संक्रिय निक्कं
खिय, निव्रित्तिगिह्वा अमूढदिठीअ ॥ नवबूढधिरीकर
णे, वल्लपपज्ञावणे अठ ॥ ३ ॥ देव, गुरु, धर्म तणे
विषे ८ निःशंकपणुं न कीधुं. तथा एकांत निश्चय न की
धो. धर्म संबंधिया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी
नहिं. साधु, साधवीनां मल मलिन गात्र देखी दुगं
हा निपजावी. कुचारित्रिया देखी चारित्रिया उपर

१ खातां, २ अखाडा. ३ बुद्धिना छेपे, छेप बुद्धियें. ४ नाश,
पामतो. ५ नाश पमाइयो. ६ अध्रदा. ७ खोटो तर्क कर्को. ८
बहेम रहीतपणुं.

अज्ञाव हुन. मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रज्ञावना देखी
 १ मूढदृष्टिपणुं कीधुं. तथा संघमांहे गुणवंत तणी २ अनु
 पबृंहणा कीधी. अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति,
 अज्ञक्ति निपजावी. अबहुमान कीधो. तथा देवड्य,
 गुरुड्य, ज्ञानड्य. साधारण ड्य, ज्ञकित, उपेक्षि
 त, प्रज्ञापराधें विणाशुं. विषयतां नवेखुं. उती श
 क्तियें सार, संज्ञाल न कीधी; तथा ३ साधर्मिक साधें
 कलह कर्म बंध कीधो. ४ अधोती, अष्टपट मुखकोश
 पाखें देवपूजा कीधी. ५ बिंब प्रत्यें ६ वासकूपी, धूपघाणुं,
 कलशतणो ठवको लाग्यो. बिंब हाथथकी पाम्युं.
 ७ उन्मत्त, ८ निःश्वास लाग्यो. देहरे, उपासरे, ९ मलश्ले
 षमादिक लोह्युं. देहरामांहे हास्य, खेल, केलि, कुतूह
 ल, आहार, निहार कीधो. पान सोपारी १० निवेदित्रां,
 खाधां, ११ ठवणहारि हाथथकी पानी पमिलेहवुं विसारचुं
 जिनजुवनें चोराशी आशातना गुरु, गुरुणी प्रत्यें ते

१ मुखपणुं. मुखनी पेठे तेमने गुरु मानवा. २ निंदा. ३
 एकज धर्मना, सरखा धर्मवाला. ४ धोया विनाना आठ पडवाला.
 ५ प्रतिमाजी. ६ वासखेपनी दावडी. ७ उंचो श्वास. ८. नीचो
 श्वास. ९ कान वगेरेनो मेल, शलेखम. १० नीवेदनी चीजो. ११
 स्थापनाचार्य.

त्रीश आशातना कीधी होय. गुरु वचन १तद्वत्ति क
री २पनिवज्युं नहिं ॥ दर्शनाचार व्रत विषइतु अने
रो जे कोइ अति० ॥ १ ॥

चारित्राचारे आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोगजु
त्तो, पंचहिं समिइहिं तिहिंगुत्तिहिं ॥ एस्त चरिचाया
रो, अठविहो होइ नायबो ॥ ४ ॥ इयासमिति ते अ
णजोए हिंरुथा. ज्ञाप्तासमिति, ते ३सावद्यवचन वोढ्या.
एषणा समिति, ते ४तृण, ५रुगल, अन्न, पाणी असूऊतुं
लीधुं. ६आदानजंममत्त ७निर्वेवणासमिति, ते अज्ञान, अ
यन, उपगरण, मातरुं प्रसुख अणपूंजी जीवाकुल नृ
मिकायें मूक्युं, लीधुं. पारिष्ठापनिकासमिति, ते मल.
मूत्र, श्लेष्मादिक अणपूंजी जीवाकुलनृमिकायें परठ
व्युं. मनोगुप्ति, मनसां आर्त्त, रौड, ध्यान ध्यायां. वच
नगुप्ति, सावद्यवचन वोढ्या. कायगुप्ति, शरीर अणप
निवेहुं हलाव्युं, अणपूंजे वेठा. ए अष्ट प्रवचन माता.
ते साधुतणोधर्मे ८सदैव अने श्रावकतणे धर्मे सामा

१. प्रमाण तेमज २ अंगीकार कर्युं. ३ पापवातुं. आरंभयातुं.

४ तरणां. ५ डगळां. ६ मातरुं (पेसाद). ७ मुकधुं. ८ निरंतर, ब्रह्मेशांज.

धिक पोसह लीधे, रूमी पेरें पाढ्यां नही. १ खंरणा वि
राधना हुइ॥ चारित्राचार व्रत विषइनु अनेरो जे कोइ.

विशेषतः श्रावकतणे धर्म श्रीसम्यक्तवमूल बार
व्रत सम्यक्तव तणा पांच अतिचार ॥ संका कंखविगि
हाण ॥ संकाः—श्री अरिहंत तणां बल, अतिशय ज्ञान
लक्ष्मी, २ गांन्तीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारि
त्रियानां चारित्र, श्री जिनवचन तणो संदेह कीधो.
आकांक्षाः—ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, ३ गोगो,
४ आसपाल, पादरदेवता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, ५ विना
यक, हनुमंत, सुग्रीव, वालीनाह, इत्येवमादिक देश,
नगर, गाम, गोत्र, नगरी, जूजूवा देव देहेरांना प्रजा
व देखी, रोग ६ आतंक कष्ट आवे, इह लोक परलोका
र्थ पूज्या; मान्या. सिद्ध, विनायक, ७ जीराबलाने मा
न्युं; इच्छुं. बौध सांख्यादिक, संन्यासी, ज्ञरमा, जग
त, लिंगीया, जोगिया, जोगि, ८ दरवेश, ९ अनेरा दर्श

-
- १ तोडभांग. २ गंभीरता वीगेरे. ३ सापने उतारवानो देव.
४ दशाना रक्षक देवता जे दिक्पाल प नामथी ओलखाय छे.
५ गणपति. ६ मंदवाड, पीडा. ७ जीराबला पार्श्वनाथ. ८ फकीर.
९ बीजा.

(३७३)

निया तणो कष्ट, मंत्र, चमत्कार देखी, परमार्थ जा
 एया विना नूढ्या, व्यामोह्या. कुशास्त्र शिख्यां; सांन
 द्यां. श्राद्ध, संवत्सरी, होली, बलेव, माहिपूनेम, अजा
 परुवो, प्रेत वीज, गौरी त्रीज, विनायक चौथ, नाग
 पांचमी, जिलणा ठी, शील सातमी, ध्रुव आठमी,
 नौली नोमी, अहवा दशमी, व्रत इग्यास्सी, वत्स वा
 रसी, धनतेरसी, अनंत चतुदशी अने अमावास्या, आ
 दित्यवार, उत्तरायण, नैवेद्य कीधां, नवोदकयाग, ज्ञो
 ग, उत्तराणां कीधां, कराव्यां. अनुसोद्यां. पिंपले पाणी
 घाढ्यां, घलाव्यां. घर वाहिर क्षेत्रे, खले, कूवे, तला
 वे, नदीये, इहे, वावीये, समुडे, कुंमे, पुण्यहेतु स्नान
 कीधां, कराव्यां, अनुसोद्यां, दान दीधां ॥ ग्रहण, श
 निश्वर, माहासासें, नवरात्री नाहाया. अजाणनां आ
 प्यां ॥ अनेराइ व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां ॥ विति
 गिन्नाः—धर्म संबंधीआ फल तणे विषे संदेइ कीधो.
 जिनअरिहंत धर्मना आगर, विश्वोपकारसागर, मो
 क्क मार्गना दातार, इस्या गुण जणी न मान्या, न पू
 १ नवां जलाशय करतां करेलां होम. २ खाण. ३ सघला
 उपकारना समुद्र.

ज्या. महासती माहात्माना इह लोक, परलोक संबं
धिया जोगवांछित पूजा कीधी. रोग, आतंक, कष्ट आ
वे, खिन्न वचन जोग मान्या. महात्माना ज्ञात, पाणी
मलशोभा तणी निंदा कीधी. कुचारित्रिया देखी चा
रित्रिया उपर कुजाव हुन्न. मिष्ट्यात्वी तणी पूजा, प्र
जावना देखी प्रशंसा कीधी. प्रीति मांन्नी. १ दाक्षिण
लगे तेहनो धर्म मान्यो; कीधी ॥ श्री सम्यक्त्व व्रत
विषय २ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि
हुवो हुइ ॥ ४ ॥

पेहेले ३ स्थूलप्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अति
चार ॥ वह बंध ठविछेए ॥ ४ छिपद, ५ चतुष्पद प्रत्ये
रीशवशें, गाढो घाव घाड्यो. गाढे बंधने बांध्यां. अधिक
ज्जार घाड्यो. निर्लाभन कर्म कीधां. चारा पाणी तणी
वेलायें सार, संजाल न कीवी. लेहणे, देहेणे, किएही
प्रत्ये लंघाव्यो. तेणें चूखें आपण जम्या. कन्हें रही
मराव्यो. बंधीखाने घलाव्यो. शल्यो धान्य ६ तावने ना
ख्यां. दलाव्यां, जरमाव्यां, शोधी न वावख्यां, इंधण,

गणां, अणशोध्यां, वाढ्यां. ते मांहे साप, विंठी, ख
 जूरा, सरवलां, मांकरु, जूआ, गिंगोमा, साहतां मुआ.
 उहव्या. रूमे स्थानके न मूक्या. कीनी, मंकोनीनां इं
 मां विगोह्यां. लीख, फोदी. उदेही, कीनी, मंकोनी,
 धीमेल, कातरां, चुमेल, पतंगिया, देरुकां, अलसीयां,
 इअल, कुंता, रुंस, सला, वगतरा, मांखी, तीरु प्र
 मुख जीव ^१विणठ्या. माला हलावतां, चलावतां, पं
 खी, चरुकलां तथा काम तणां इंसां फोम्यां. अनेरा
 एकेंडियादिक जीव विणार्या, चांप्या, उहव्या. कांड
 हलावतां, चलावतां, पाणी ठांटतां, अनेरा कांड काम
 काज करतां ^२निदंतपणुं कीधुं. जीवरुदा रूमी न की
 धी. संखारो गूकव्यो. रूमुं गलणुं न कीधुं. अणगल पा
 णी वावरथुं. रूमी जयणा न कीधी. अणगल पाणीचें
 जीढ्या, लूगनां धोयां. खाटदा लावने नाख्या. जाट
 क्या. ^३जीवाकूलभूमि लींपी. वादी गार राखी. दल
 णे, खांरुणे, लींपणे, रूमी जयणा न कीयी. आवम
 चउदशना नियम ज्ञांग्या. धूली करावी ॥ पेदेले स्थू
 लप्राणातिरात विरमणव्रत विपडुं अनेरो जे कोड अ

तिचार पक्ष दिवस मांहे सूक्ष्मण ॥ ५ ॥

बीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रते पांच अतिचार ॥ सहस्सा रहस्सदारेण ॥ सहसात्कारें कुणही प्रत्ये अजुगतुं आल, अज्याख्यान दीधुं. १स्वदारामंत्रने द कीधो. अनेरा कुणहीनो मंत्र २आलोच, मर्म प्रकाशयो. कुणहीने अनर्थमां पारुवा कूमी बुद्धि दीधी. कूमी लेख लखाव्यो. कूमी साख जरी. आपणमोसो कीधो. कन्या, ३गौ, जूमि संबंधी लेहेणें, देहेणें, व्यवसाय वाद वढवारु करतां मोटकुं जूतुं बोड्या. हाथ, पग तणी गाल दीधी. करुकरु मोरुचा. मर्म वचन बोड्यां ॥ बीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रत विषइल अनेण

त्रीजे स्थूल अदत्तादान विरमण व्रतें पांच अतिचार ॥ तेना हरुप्पज्जेण ॥ घर, बाहिर, खेत्र, खले, पराइ वस्तु अणमोकली लीधी, वावरी. चोराइ वस्तु वोहोरी. चोर धारु प्रत्ये संकेत कीधो. तेने ४सं बल दीधुं. तेहनी वस्तु लीधी. विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो. नवा, ५पूराणा सरस, विरस, सजीव, निर्जी

१ पोतानी खानी छानी वात कही दीधी. २ विचार. ३ गाय.

४ भातु. ५ जुना.

व वस्तुना जेल संजेल कीधा. कूमे काटले, तोलें, मा
 नें, मापें, वोहोखां. दाण चोरी कीधी, कुणहीने ले
 खे वरांस्यो, साटे लांच लीधी. कूमो ३करहो काढ्यो
 विश्वासघात कीधो. ३परवंचना कीधी; ४पासंग कू
 मा कीधा. मांमी चढावी. लहके, त्रहके, कूमां काट
 लां, मानमापां कीधां. माता, पिता, पुत्र, कलत्र वंची
 कोझे दीधुं. जूदी गांठ कीधी. आपण डलवी. कुण
 हीने लेखे पलेखे जोलव्युं. पमी वस्तु उलवी लीधी ॥
 त्रीजे स्थूल अदत्तादान वि० ॥ ७ ॥

चोथे स्वदारासंतोष परस्त्रीगमन विरमणग्रतें पां
 च अतिचार ॥ अपरिगृहीतागमन ॥ अपरिगृहीताग
 मन ॥ इत्वर परिगृहीतागमन कीधुं. विधवा, वेइया,
 परस्त्री, कुलांगना स्वदाराशोकतणे विपे दृष्टिविपर्यास
 कीधो. सराग वचन वोढ्यां. आठम चउदश, अनेरायें
 पर्दतिथें नियम जांग्या. घर घरेणां कीधां. कराव्यां.
 वर वहु वखाण्यां. कुविकल्प चिंतव्यो. ५अनंग क्रीमा
 कीधी. स्त्रीनां अंगोपांग निरख्यां. पराया विवाह जो

१ हिसाबमां छेतयों. २ करज, देयुं. ३ बीजाने टगहुं. ४
 धडो ५ कामक्रोडा.

मृचा. ढिंगला, ढिंगली परणाव्यां. कामभोगतणे विषे तीव्र अजिलाख कीधो. अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार सुहणे स्वप्नांतरे हुवा. कुस्वप्न लाघां. नट, विट, स्त्रीसुं हांसुं कीधुं ॥ चोथा स्वदारासंतोषत्र त विषइलु अनेरो जे कोइ अतिचार पद ॥ ८ ॥

पांचमे स्थूलपरिग्रह परिमाणव्रते पांच अतिचार ॥ धणधन खित्तबहु ॥ धन, धान्य, खेष्ट, स्वास्तु, रूप्य, सुवर्ण, कुप्य, द्विपद, चतुःपद, नवविध परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी, मूर्छा लगे संक्षेप न कीधो. माता, पिता, पुत्र, स्त्री तणे लेखे कीधो. परिग्रह परिमाण लीधुं नही. लेइने पढीजं नहिं. पढजुं विसारयुं. अलीधुं मेढयुं. नियम विसाखा ॥ पांचमे परिग्रह परिमाणव्रत विषइलु अनेरो जे कोइ अतिचार पद ॥ ९ ॥

ठठे दिक्परिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमण स्तय परिमाणे ॥ उर्ध्वदिशि, अधोदिशि, तिर्यग्दिशि ये जावा, आववा तणा नियम लइ जांग्या. अनाज्ञो

गे १ विस्मृत लगे अधिक झूमि गया. पाठवणी आ
धी पाठो मोकली. बहाण व्यवसाय कीधो. वर्षाकाले
गामतरुं कीधुं. झूमिका एक गमां २ संकेपी. बीजी
गमां बधारी ॥ ठठे दिग्परिमाणव्रत विषइनु अनेरो
जे कोइ अति ॥ १० ॥

सातमे जोगोपजोग विरमणव्रतें जोजन आश्री
पांच अतिचार अने कर्म हुंती पंदर, एवं बीश अति
चार ॥ सच्चित्ते पद्विब्रहेण ॥ सच्चित्त नियम लीधे अदि
क सच्चित्त लीधुं. ३ अपक्वाहार, ४ दुःपदवाहार, ५ तु
होषधि तणुं जक्षण कीधुं. उदा, उंबी, पोंक, पापरी,
कीधां ॥ सच्चित्त दव्व दिगइ, वाणह तंबोल बठ कुमुमे
सु ॥ वाहण सयण विलेवण, वंज दित्ती न्हाण जने
सु ॥ ए चौद नियम दिनगत रात्रिगत लीधा नही. ले
इने ज्ञांग्या. बाबीश अज्जदय, वत्रीश अनंतकायमां
हि आहुं, मूला, गाजर, पिंरु, पिंरालु, कचूरो, सूरण,
कुली आंवली, गलो तथा बाघरसां, खायां. वाशी क

१ ज्यां सुधी भूल्यो त्यां सुधी. २ ओछी करी. ३ काचुं क
धवा नहीं चढेलुं. ४ काचुं पाहुं. ५ खायाहुं थोइं तथा नांसी
देवानुं वणुं जेवां के घोर शेरडो वगेरे.

ठोल, पोली, रोटली, त्रण दिवसनं उदन लीधुं. म
 धु, महुमां, माखण, माटी, वेंगण, पीचु, पंपोटा, वि
 ष, हिम, करहा, घोलवमां, अजाण्यां फल, टिंबरु,
 गुदां, महोर, अथाणुं, आमण बोर, काचुं मीठुं, तिल,
 खसखस तथा कोठिंबमां खावां. रात्रिज्जोजन कीधां.
 लगज्जग वेलायें वालु कीधुं. दिवस विण उगे शीराज्य,
 तथा कर्मतः पन्नर कर्मादान ॥ इंगालकम्मे, वणकम्मे,
 सामीकम्मे, ज्ञामीकम्मे, फोमीकम्मे, ए पांच कर्म ॥
 दंतवाणिज्जे, लस्कवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, वि
 सवाणिज्जे ए पांच वाणिज्ज ॥ जतंपित्तणकम्मे, निद्धं
 णकम्मे, दवग्गिदावणया, सरद्धहतलायसोसणया,
 असइपोसणया, ए पांच सामान्य, ए पांच कर्म, पांच
 वाणिज्ज, पांच सामान्य, एवं पन्नर कर्मादान, बहु सावद्य
 महारंज, रांगणी, लीहाला कराव्या. इंट, निंजामा प
 चाव्या. धाणी चणा, पकवान करी वेच्यां. वाशी माखण
 तपाव्यां. तिल वोहोस्या. फागुण मास उपरांत राख्या.
 दलीदो कीधो. अंगीठा कराव्या. श्वान, बीलामां, शूमा.
 सालहि, शपोश्या. अनेरा जे कांइ बहु सावद्य खरकर्मा

दिक समाचर्यां. वाशी गार राखी. लीपणे, धूपणे, म
 हारंज कीधी. अणशोध्या चूला संधूक्या. घी, तेल, गो
 ल तथा ठाश तणां ज्ञाजन उघासां मूक्यां. ते मांदि
 माखी, कुंती, उंदर, के गिरोली पमी. कीमी चमी. ते
 नी जयणा न कीधी ॥ सातमे जोगोपजोग विरमण
 व्रत विषइलण ॥ ११ ॥

आठमे अनर्थदंम विरमणव्रते पांच अतिचार ॥
 कंदप्पे कुक्कुशण ॥ कंदर्पलगे विटचेष्टा, हास्य, खेल,
 कुतूहल कीधी, पुरुष स्त्रीना हाव, ज्ञाव, रूप, गुंगार,
 विषयरस वखाण्या. राजकथा, ज्ञातकथा, देशकथा,
 स्त्रीकथा कीधी. पराइ तांत कीधी. तथा पैशूःपणुं
 कीधुं. आर्त्त रौइ ध्यान ध्यायां. खांसां, कटार, कोश,
 कूहासा, रश्म, उखल, मूहाल, अग्नि, घंटी, निसाद,
 दातरसां प्रमुख १अधिकरण सेली, दाक्षिण लगे मा
 ग्यां आप्यां. पापोपदेश दीधी. अष्टमी, चतुर्दशीए खां
 म्वा, दलवा तणा नियम ज्ञांग्या. मूरखपणालगे अ
 संबंध वाक्य बोळ्या. प्रमादाचरण सेव्यां. २अंधोले,
 नाहाणे, दातणे, पगघोअणे, खेलपाणी तेल ठांट्यां.

जोलणे जीड्या. जूवटे रम्या. हिंचोले हिंच्या. नाट
 क प्रेक्षणाक जोयां. कण, कुवस्तु, ढोर लेवराव्यां. क
 केश वचन बोड्या. आकौश कीधा. अवोला लीधा.
 करकमा मोरुया. मत्सर धस्यो. संज्ञेमा लगाव्या. श
 राप दीधा. जेंसा, सांढ, डुरु, कूकमा, श्वानादिक जू
 जास्यां; जूजतां जोया. खादि लगे अदेखाइ चिंतवी.
 माटी, मीतुं, कण, कपाशीया काज विण चांप्या. ते
 उपर बेठा. आली वनस्पति खूंदी. सूइ शस्त्रादिक
 निपजाव्यां, घणी निझा कीधी. राग, द्वेष लगे एकने
 ऋद्धि परिवार वांढी. एकने मृत्यु हानि वांढी॥ एआ
 ठमे अनर्थदंरु विरमणव्रत विषइलु अने० ॥ १२ ॥

नवमे सामायिक व्रतें पांच अतिचार ॥ तिविहे
 दुप्पणिहाणे० ॥ सामायिक लीधे मन आहट्ट दोहट्ट
 चिंतव्युं. सावद्य वचन बोड्या. शरीर अणपमिलेहुं
 हलाव्युं. उती वेलाये सामायिक न लीधो. सामायिक
 लेइ उघामे मुखे बेला. नंध आवी. वात. विकथा,
 घर तणी चिंता कीधी. बीज दीवा तणी उजेहि दुइ.
 कण, कपाशीया, माटी, मीतुं, खमी, धावमी, अरणे

टो पाषाण प्रमुख चांप्या. पाणी, नील, फूल, सेवाल
हरिकाय, बीयकाय, इत्यादिक आज्ञायां. स्त्री, तिर्य
च तणा निरंतर परस्पर संघट्ट हुआ. मुहपत्नीयो संघ
ट्टी. सामायिक अणपूज्युं पारयुं, पारयुं विसारयुं ॥ न
वमे सामायिकव्रत विषइलु अनेरो जे कोइ अतिचार
पक दिवस ॥ १३ ॥

दशमे देशावगाशिकव्रते पांच अतिचार ॥ आण
वणे पेसवणे ॥ आणवणप्पलुगे, पेसवणप्पलुगे, तदा
णुवाइ, रुवाणुवाइ, वहिया पुग्गल पस्केवे ॥ नियमित
जूमिकामांहि वाहेरयी कांइ अणाव्युं, आपण कन्देश
की वाहेर कांइ भोकल्युं, अथवा रूप देखानी, कांकोरो
नाखी, साइ करी, आपणपणुं ठतुं जणाव्युं ॥ दशमे
देशावगाशिक व्रतविषइलु अनेरो जे कोइअति ॥ १४ ॥

अग्वारमे पोपधोपवासव्रते पांच अतिचार ॥ सं
थारुच्चारुविहि ॥ अप्पमिलेहिय, डुप्पमिलेहिय, सया
संथारण ॥ अप्पमिलेहिय, डुप्पमिलेहिय, उच्चार पास
वणजूमि ॥ पोसह लीधे संथारातणी जूमि न पूंजी.
बाहिरलां लहुमां, वमां स्थंमिल, दिवसे, शोष्यां नही.
पमिलेह्यां नही. मातरुं अणपूज्युं हलाव्युं. अणपूंजी

जूमिकाय परवव्युं. परववतां अणुजाणह जस्सग्गो,
 न कह्यो. परवव्या पूंठे वार त्रण वोसिरे वोसिरे न क
 ह्यो. पोसइसालामांहि पेसतां निसहि, निसरतां आव
 सहि, वार त्रण जणी नहीं. पुढवी, अप्प, तेउ, वाउ,
 वनस्पति, त्रसकाय तणा संघट्ट, परिताप उपप्प हुआ
 संथारा पोरिसीतणो विधि जणवो विसाख्यो. पोरिसि
 मांहे जंघ्या. अविधे संथारो पाथरयुं. पारणादिक त
 णी चिंता कीधी. कालवेलायें देव न वांद्या. पन्निक्कम
 णुं न कीधुं. पोसइ असूरो लीधो. सवेरो पाढ्यो. पर्व
 तिथें पोसइ लीधो नहीं ॥ इग्यारमें पोषधोपवासव्रत
 विषइल अनेरो जे कोइ अतिचार पढ़ण ॥ १५ ॥

बारमे अतिथिसंविज्ञागव्रतें पांच अतिचार ॥ स
 चित्ते निस्किवणे ॥ सचित्त वस्तु हेठे उपर उतां म
 हात्मा महासती प्रत्ये असूजतुं दान दीधुं. देवानी बुद्धें
 असूजतुं फेनी सूजतुं कीधुं. देवानी बुद्धें परायुं फेनी
 आपणुं कीधुं. अणदेवानी बुद्धें सूजतुं फेनी असूजतुं
 कीधुं. अणदेवानी बुद्धें आपणुं फेनी परायुं कीधुं. वो
 होरवा वेला टली रह्यां. असूरें करी महात्मा तेम्या.
 मत्सर धरी दान दीधुं. गुणवंत आवे जक्ति न साचवी

(३८५)

ठती शक्तें स्वाभिवात्सल्य न कीधुं. अनेराइ धर्मक्षेत्र
 १सीदातां ठती शक्तिथें उरुच्या नहि. २दीन, ३ही
 ए प्रत्यें अनुकंपादान न दीधुं ॥ वारमेअतिप्रिसंविज्ञा
 गत्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमां
 हि हुवो हुइ ॥ १६ ॥

संलेषणातणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलो
 ए ॥ इहलोया संसप्पजुगे, परलोयासंसप्पजुगे, जीवि
 या संसप्पजुगे, मरणा संसप्पजुगे, कामजोगा संसप्प
 जुगे ॥ इहलोकें धर्मना प्रज्ञाव लगें राजश्रद्धि, सुख,
 सौजाग्य, परिवार, वांठयो. परलोकें देव, देवइ, विद्या
 धर, चक्रवर्ती तणी पदवी वांठी. सुख आवे जीवित
 व्य वांठ्युं. दुःख आवे मरण वांठ्युं. कामजोगतणी
 वांठा कीधी. संलेषणात्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अति
 चार पक्ष दिवस मांहि हुवो हुइ ॥ १७ ॥

तपाचारना वार जेद; ठ बाह्य, ठ अन्तर ॥ अ
 णसणमूणोरिआण ॥ अणसण जणी उपवास विशेष
 प पर्वतिथें ठती शक्तें कीधो नही. उणोदरी व्रत को

लिया पांच, सात, उणा रखा नहिं. वृत्तिसंक्षेप, ते इ
 व्य ज्ञानी सर्व वस्तुनो संक्षेप कीधो नहिं. रसत्याग
 तथा विगय त्याग न कीधो. कायक्लेश, लोचादिक
 कष्ट कस्यां नहिं. संलीनता ते अंगोपांग संकोचि रा
 ख्यां नहिं, पञ्चस्काण ज्ञाग्यां. पाटलो रुगतो फेरयो^१
 नहिं. गंठसी पोरिसी, साढ पोरिसी, पुरिमद्व, एका
 सणुं, बेआसणुं, नीवि, आंबिल प्रमुख पञ्चस्काण पा
 रबुं विसारयुं. बेसतां नोकार न ज्ञायो उठतां पञ्च
 स्काण करबुं विसारयुं, गंठसीनं ज्ञाग्युं. नीवि, आंबि
 ल, उपवासादिक तप करी काबुं पाणी पीधुं. वमन
 हुन ॥ बाह्यतप विषइनु अनेरो जे कोइ अतिचार प
 ह दिवस मांहे ॥ १८ ॥

अन्यंतर तप ॥ पायच्चित्तं विणनु ॥ मनशुद्धे
 गुरुकन्हें आलोयणा लीधी नहिं. गुरुदत्त^२ प्रायश्चित्त
 तप, लेखाशुद्धे पहुंचारयुं नहिं. देव, गुरु, संघ, साह
 मी प्रत्ये विनय साचव्यो नहिं. बाल, वृद्ध, ग्लान, त
 पस्वी प्रमुखनुं वैयावच्च न कीधुं. वांचना, स्पृहना,

१परावर्त्तना, २अनुप्रेक्षा, धर्मकथा लक्षण पंचविध स्वा
ध्याय न कीधो. धर्मध्यान, शुक्लध्यान न ध्यायां. आ
र्त्तध्यान तथा रौद्रध्यान ध्यायां. कर्मक्षय निमित्तं लो
गस्स दश वीशनो कालस्सग्ग न कीधो॥ अन्यंतरतप
विपश्च अनेरो जे कोइ अतिचार पक्क दिवसमांण॥१९॥

वीर्याचारना त्रण अतिचार ॥ अणिगूहिअ बल
विरिनुं ॥ पढवे, गणवे, विनय, वैयावच्च, देवपूजा,
सामायिक, पोसह, दान, शील, तप, ज्ञावनादिक ध
र्मकृत्यने विषे मन, वचन, काया तणुं ठतुं बल, वीर्य,
३गोपव्युं. रूमां पंचांग खजासमण न दीधां. वांदणात
णा आवर्त्त विधि साचव्या नहिं. अन्यचित्त निरादरपणे
वेठा. उतावलुं देववंदन, पत्तिकमणुं कीधुं ॥ वीर्याचा
र विपश्च अनेरो जे कोइ अतिचार पक्क दिवसमां दे
हुवो होय ते सण ॥ २० ॥

नाणाइ अठ पइवय, समसंलेइण पन्नर कम्मं
सु ॥ वारस तव विरिअ तिगं, चउवीसं सय अइयारा
॥ १ ॥ पत्तिशिखाणंकरणं:-प्रतिपेय, अन्नदप, अनंत

काय, बहुबीज जकण, महारंज परिग्रहादिक कीधा. जीवा जीवादिक सूक्ष्म विचार १सर्दह्या नहिं. आपणी कुमति लगे उत्सूत्र २प्ररुपणा कीधी. तथा प्राणा तिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह अन्याख्यान, पै शुन्य, रति, अरति, परपरिवाद, माया मृषावाद, मिथ्यात्व शब्द, ए अठार पापस्थानक कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां होय. दिनकृत्य प्रतिक्रमण, विनय, वैयावञ्चन कीधां. अनेरुं जे कांइ बीतरागनी आज्ञा विरुद्ध कीधुं, कराव्युं, अनुमोद्युं होय. ए चिहुं प्रकार मांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पढ़ दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां हुल होय, ते सवि हुं मनै, वचनै, कायायें करी तस्स मिहामि डुकमं ॥

एवंकारे श्रावकतणे धर्मे श्री समकितमूल वारव्रत, एक शो चोवीश अतिचार मांहि अनेरो जे कोइ अतिचार पढ़ दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां, हुल होय, ते सवि हुं मनै, वचनै, कायायें

(३७ए)

करी तस्स मिञ्चामि डुक्कं ॥ इति श्री श्रावक परकी
चनमासी संवत्सरि अतिचाराः ॥

अथ श्री पाक्षिकादि श्रावकना अतिचार.

नालंमि दंसणंमिय ॥ चरणंसि तवंमि तहय वि
रियंमि ॥ आयरणं आयारो ॥ इअ एसो पंचहा ज्ञणि
नु ॥ १ ॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपा
चार, विर्याचार, ए पंचविध आचार मांहि अनेरो जे
को अतिचार पक्क दिवसमांहि सूद्धम वादर जाणतां
अजाणतां हुन होय ते सविहं मन वचन कायाए करी
मिञ्चामि डुक्कं ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचार आठ अतिचार ॥ काले विणए
बहुमाणे ॥ उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अन्न त
उत्तये ॥ अठविहो नाण मायारो ॥ २ ॥ ज्ञान काल वे
लाये ज्ञणयो गुणयो ॥ विनयहीन, बहु मानहीन, योग
उपधानहीन ॥ अनेरा कन्हे ज्ञणी अनेरो गुरु कह्यो ॥
देववंदन वांदणे पम्पिकमणे सप्पाय करतां ज्ञणतां गु
णतां कून्तो अहर काना मात्रे आगदो उठो ज्ञणयो
सूत्र अर्थ विहु कुमां कहां ॥ साधु तणे धर्मे काजो मां

(३७०)

नो अणपमिलेह्यो, काजो अण उधरे, ^१असजाइ, ^२अ
णोजा मांहि दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत जणयो गु
णयो ॥ श्रावकतणे धर्मे शिविरावली, पम्किमणासूत्र,
उपदेशमाला प्रमुख, कालवेला काजो अणउधस्थि प
ढियो ॥ ज्ञानउभय ज्ञकित उपेक्षित प्रज्ञापराध विणा
सियो, विणसतां नवेखीयो, सार संजाल न कीधी ॥
तथा ज्ञानोपगरण, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नो
कारवाली, सांपना, सांपनी, दस्तरी वही, नुलीया
प्रत्ये पग लाग्यो थुंक लाग्यो थुंके करी अक्षर मांज्यो,
कन्हे उतां आहार नीहार कीधी ॥ ज्ञानवंत प्रत्ये द्वेष
मस्तर अंतराय अवज्ञा कीधी ॥ आपणा जाणवा त
णो गर्व चिंतव्यो ॥ ज्ञानाचारव्रत विषइनु अनेरो जे

१ असज्ञाइना दीनः—कारतक शुदी १४ ना मध्यानथी कारतक
वदी २ ना सवार सुधी दीवस २॥, फागण शुदी १४ ना मध्या
नथी फागण वदी २ ना सवार सुधी दिवस २॥ असाड शुद १४
ना मध्यानथी असाड वदी २ ना सवार सुधी दिवस २॥, चइतर
शुदी ५ ना मध्यानथी चइतर वदी २ ना सवार पर्यंत १२॥ दि
वस, आसो शुदी ५ ना मध्यानथी आसो वदी २ ना सवार सुधी
१२॥ दिवस, आसो शुदी १० थी मांडीने आदरा न देसे त्यां सुधी
मां वरसादना छांटा थाय तो असज्ञाइ. जे दीवसे छांटा थाय ते
दिवस असज्ञाइ. २ जे गाममां जे दिवसो अणोजाना गणाता होय
अणोजा.

(३९१)

को अतिचार पढ़ ॥ १ ॥

दंसणाचार आठ अतिचार ॥ निस्संकिय निक्कं
खिय, निव्वित्तिगिन्ना अमूढ दिठ्ठिअ ॥ उववूह थिरीकर
णे, वञ्चलप्पजावणे अठ ॥ ३ ॥ देवगुरु धर्मतणे विषे
निःशंकपणुं न कीधुं ॥ धर्म संबंधिया फल तणे विषे
निःसंदेह बुद्धि धरी नहीं ॥ तपोधन तपोधनी प्रत्ये
मल मलीन गात्र देखी दुगंठा कीधी ॥ मिश्यात्वी
तणी पूजा प्रजावना देखी मूढ दृष्टिपणुं कीधुं ॥ तथा
संघमांदि गुणवंत तणी अनूपवृहणा कीधी ॥ अस्मिन्
रीकरण, अवाठल्लय, अप्रीति, अज्जक्ति कीधी ॥ तथा
देवइव्य, गुरुइव्य, साधारण इव्य, ज्ञहित उपेक्षित
प्रज्ञापराध विणास्यो, विणसतां उवेख्यो, उती शक्तिये
सार संजाल न कीधी ॥ तथा साधर्मीकस्युं कलह
कर्मबंध कीधो ॥ अधोती अष्टपट मुखकोश पाखे देव
पूजा कीधी, वासकूंपी, धूपघाणुं, कलश तणो ठवको
लाग्यो, देहरा पोसालमांदि मलश्लेष्म दुह्यां हास्य,
केली, कूतुहल कीधां, जिनजुवने चोरासी आसातना ॥
गुरु प्रत्ये तेत्रीस आसातना ॥ ठवणहारी द्वाअशकुं प
रुथुं, पमिलेहवो विसायो ॥ गुरु वचन तद्वत्ति करी प

निवज्युं नहीं ॥ दंसणाचारव्रत विषइनु अनेरो जे को
इ अतिचार पकण ॥ २ ॥

चारित्राचार आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोग
जुतो ॥ पंचहिं समिइहिं तिहिंगुत्तीहिं ॥ एस चरित्ता
यारो ॥ अठविहो होइ नायवो ॥ ४ ॥ इर्या सुमति,
जाषा सुमति, एषणा सुमति, आदानजांरुनिखेवणा
सुमति, पारीठावणिका सुमति ॥ मनोगुप्ति, वचन
गुप्ति, कायगुप्ति ॥ ए अष्टप्रवचन माता तणे धर्मे स
दैव साधु, श्रावकतणे धर्मे सामायक पोसइ लीधे, रु
मीपेरे चिंतव्युं नहीं, खंरुण विराधना कीधी ॥ चारि
त्राचारव्रत विषइनु ॥ अनेरो जे को अतिचार पकण ॥

विशेषतः श्रावकतणे धर्मे ॥ सम्यक्त्व मूल वार
व्रत ॥ सम्यक्त्वतणा पांच अतिचार ॥ संका कंख

१ समकितना अतिचार तो कहेवाय के पोताना देव गुरु
धर्मनी पक्की आस्ता छतां कोइ देवी देवलांनी मानता पूजना वगेरे
करे छे तेने अतिचार कहे छे.

चार व्रतोमां पोतानुं व्रत जालवतां छतां एण व्रत राखधानी
बुद्धिए जे कोइ व्रतमां दुषण लगाववा जेवुं दोष सेवे छे तेने अ-
तिचार कहेवाय छे. तेम जो न होय तो अनाचार थइ जाय. ए
विषे अर्थदीपिकामां जोवुं.

(३९३)

विगिष्ठा ॥ संका श्रीअरिहंत तणा वल अतिशय ॥ झा
नलक्ष्मी गंजीर्यादिक गुण शाश्वति प्रतिमा चारित्री
यानां चारित्र, जिन वचन तणो संदेह कीधो ॥ आ
कांक्षा बह्मा, विष्णुं, महेश्वर क्षेत्रपाल, योगो, आसपा
ल, पादरदेवती, गोत्रदेवती, देव देहेरांनो प्रज्ञाव दे
खी रोग आवे इहलोक परलोकार्थे पूज्या, मान्या, बोड
सांख्य, संन्यासी, ज्ञरमा, जगत, लिंगिया, योगी, द
रवेश, अनेराइ दर्शनीयानो कष्ट मंत्र चमत्कार देखी
परमार्थ जाणया विण जूड्या, व्यामोह्या, कुशास्त्रशी
ख्या, सांजड्यां श्राद्ध, संवत्तरी, होली, वलेव, माहि
पूनेम, अजापरुवे, प्रेतवीज, गुरित्रीज, विनायकचोथ,
नागपंचमी, जीलणाठठी, शीयलसातमी, दोआठमी,
नोलीनुमी, अहवादशमी, व्रतइग्यारसी, बहवारसी,
धनतेरसी, अनंतचौदशी, अमावास्या, आदितवार, न
तरायन, नैवेद, याग, जोग मान्या, पीपले पाली रे
म्यां रेमाव्यां, घर बाहिर, कूड, तलाव, नदी, इह, कुं
रु, वाव्य, समुद्र पुन्यहेतु स्नान कीधां, वित्तिगिष्ठा
धर्म संबंधिया फल तणो संदेह कीधो, जिन अरिहंत
धर्मना आगार विश्वोपकार सागर मोक्षमार्गना दातार

इस्यागुण ज्ञानी पूज्या नहीं, इहलोक परलोक संबंधि
या जोगवांछित पूजा कीधी. रोग आतंक कष्ट आवे
खीण वचन याग मान्या, महात्माना ज्ञातपाणी मल
शोभा तणी निया कीधी, प्रीति मांसी, तेहनी बाहि
ए लगे तेहनो धर्म मान्यो, श्री सम्यक्त्व व्रत विषइ
उ अनेरो जे कोइ अतिचार पढ़ ॥ ४ ॥

पहेले थूलप्राणातिपात विरमणव्रत पांच अतिचा
र ॥ वहबंध ठविछेए ॥ छीपद चतुष्पद प्रत्ये रीसवशे
गाढो घाय घाट्यो, गाढि बंधण बांध्युं, घणे जारे पी
र्युं, निद्वंद्वण कर्म कीधुं. चारे पाणी तणी वेलाये
सार संज्ञाल न कीधी, लेहणे देणे कुणहने लढ्युं, लं
घाव्युं, तेने जूखे आपण जम्या, सढ्यां धान रूमि पेरे
जोयां नहीं, पाणी गलतां ढोढ्युं. जीवाणी सूकव्युं. ग
लतां जालक नांखी. गलणुं रूमि न कीधुं. इंधण ठाणां
अणशोध्यं बाढ्यां. ते मांही साप, खजुरा, वींठि सरो
ला, मांकण, जुआ, गींगोमा, साइतां मुआ दूहव्या.
रूमि स्थानके ना मूक्या. कीसी मंकोमी उदेही, धीमे
ल, कातरा, चुमेल, पतंगीआ, देरुकां, अलसियां, इअ
ल, प्रमुख, जे कोइ जीव विणवा, विणसतां नवेख्या,

(३९५)

चांप्या. दूहव्या, हलावतां चलावतां पाणी ठांटतां अ
नेराइ कामकाज करतां निध्वंसपणुं कीधुं. जीवरक्षा
रुमी न कीधी पहेले शूलप्राणातिपात व्रत विपश्च अ
नेरो जे कोइ अतिचार पकण ॥ ५ ॥

बीजे शूलमृषावाद विरमणव्रत ॥ पांच अतिचा
र ॥ सहस्सा रहस्सदारे ॥ सहसात्कारे कुणह प्रत्ये
अयुक्त आल दीधुं, स्वदारामंत्र जेद कीधो. अनेरा कु
णहनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो, कुणहने अपाय पा
मवा कुमी बुद्धि धरी, कूमो लेख लख्यो, जूठी ताख
जरी, आंपण मोसो कीधो, कन्या ढोर जूमि संबंधि
या लेहणे देहणे वाद वढवारु करतां मोटकुं जूठुं वो
दया. बीजे शूल मृषावाद व्रत विपश्च अनेरो जे
कोइ अतिचार पकण ॥ ६ ॥

त्रीजे शूल अदत्तादान विरमणव्रत पांच अतिचा
र ॥ तेनाहरुप्पनुगे ॥ घर, बाहिर, खेत्रखले, परायु
अण मोकळ्युं लीधुं वावर्युं, चोरान वस्तु लीधी. चोर
प्रत्ये संबल दीधां. विरुद्ध राज्यादिक कर्म कीधुं. कूमां
मान मापां कीधां. माता, पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र

वंची कुणहने दीधुं. जूदी गांठ कीधी. नवां जूनां सरस नीरस वस्तुतणुं जेल संजेल कीधुं. त्रीजे अदत्ता दान व्रत विषइनुं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्षणा॥७॥

चोथे स्वदारा संतोष परस्त्री विरमणव्रत पांच अतिचार ॥ अपरिग्रहिया इत्तर ॥ अपरगृहिता गमन कीधुं ॥ अनंग कीटा कीधी, वीवाह कारण कीधुं, कामजोग तणे विषे अति अजिलाष कीधो, दृष्टि विपर्यास कीधो, आठिम चण्डसी तणा नेम लेइ जाग्यां ॥ अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, सुहणे सुपनांतरे हुआ. चोथे मैथुन विरमणव्रत विषइनुं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्षण ॥ ८ ॥

पांचमे शूल परिग्रह परिमाणव्रत पांच अतिचार ॥ धण धन खेतवतू ॥ धण धननुं परिमाण उपरुं रखाव्युं ॥ सोनुं, रुपुं नव वीध परिग्रह प्रमाण लीधुं नहीं, पढवुं विसारयुं. पांचमे परिग्रह परिमाणव्रत विषइनुं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्षण ॥ ९ ॥

ठेठे दिग्विरमणव्रत पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परिमाणे ॥ उहदिशे, अहोदिशे, तिर्यग्दिशे, जावा आववा तणा नेम लेइ जाग्या. एकदिशी संक्षेपी वी

जी दिशी वधारी. विस्मृत लगे अधिक जूमि गया.
पाठवारी आधी मोकली. वहाण व्यवसाय कीधुं, व
गकाले गामतरुं कीधुं ॥ ठेठे दिगूविरमणव्रत विपश्य
अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष ॥ १० ॥

सातमे जोगोपजोगव्रत पांचअतिचार ॥ सचित्ते
पनिवदे ॥ सचित्त आहारे ॥ सचित्त प्रतिबद्ध आहारे ॥
अप्पोलसहि ज्ञस्करणया, दुप्पोलसहि ज्ञस्करणया, तुच्छोल
हि ज्ञस्करणया, सचित्त ज्ञस्करणया ॥ अपक्क आहारे, दुपक्क
आहारे, तुच्छजपधी, कुली, आंवली, उला, उंवी, पुहुंक,
पापनी तणां ज्ञस्करण कीधां. अनंतकाय, अश्राणां तणां
ज्ञस्करण कीधां, तथा रींगण, वींगण, पीलू, पीनू, पंपो
टा, महुकां, वरुवोर प्रमुख बहुवीज तणां ज्ञस्करण की
धां ॥ गाथा ॥ सचित्त दद्विगइ, बाहण तं वोलवठ कु
सुमेसु ॥ बाणही सयण विलेवण, वंजदित्ति नाण ज्ञ
तेसु ॥ १ ॥ ए चउद नियम दिनप्रती लीधा नहीं, लेइ सं
खेप्या नहीं ॥ सचित्त, इव्य विगय, खासम, बाहण, तं
वोल, फोफल, वेसण, सयन, पाली, अंधोलणि, फल,
फूल, जोजन, आठादनि जे कोइ नेम लेइ जाग्या ॥

बावीस अन्नक, बत्रीस अनंतकायमांहि आडुं, मूला, गाजर, पिंन, पिंनलू, कचूरो, सूरण, खीलोकां, मोरनी, सेलरां, कुंली, आंबली, वाघरमां, गीरमर, नीलीगलो, वाडहोल खाधी, वासी कठोल, पोली रोटली, त्रण दिवसना नुदन, मधु, महुमां, विस, हेम, करहा, घोलवमां, अजाण्यां फल, टींबरुं, गुदां, बोर, अधाणुं, काचुमीतुं, तील, खसखस, कोठंबमां खाधां, लगन्नग वेलाये वालू कीधां, दिन उग्या विण सिराव्यां, जे कोइ अनेरो अतिचार हुज होय ॥ तथा कर्मतः ॥ इंगा लकम्मे, वन्नकम्मे, सामीकम्मे, ज्ञामीकम्मे, फोमीकम्मे, ए पंचकर्म ॥ दंतवाणिज्य, लक्ष्वाणिज्य, रसवाणिज्य, विषवाणिज्य, केसवाणिज्य, ए पांच वाणिज्य ॥ जंतपिच्छणकम्मे, निच्छंठणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदह तलाय सोसणया, असइपोसणया, ए पांच सामान्य ॥ ए पंतर कर्मादान मांहि कीधां कराव्यां अनुसोद्यां, अनेराइ कांइ सावद्य कर्म समाचख्यां होय ॥ सातमे जोगोपजोगव्रत विषइज अनेरो जे कोइ अतिचार पक्क ॥ ११ ॥

आठमे अनर्थदंरु व्रत पांच अतिचार ॥ कंदण्णे

(३९९)

कुक्कुड़ ॥ अनर्थदंष्ट्र जे कहिए, कांसकाज पाखे सु
 हीयां पाप लाग्यां, मुखहास्यखेल, कुतुहल, अंगकुचे
 काष्टा कीधी. निरर्थक लोकने करसण गामां वाही
 गामांतरे कमावानी बुद्धि दीधी. कणवस्तु, ढोर लेव
 राव्यां अनेराइ पापोपदशे दीधा. कोसि, कुहामा, रथ
 जखल, मुशल, घर, घंटी, प्रमुख सज्ज करी मेढ्यां,
 माग्यां आप्यां. अंधोल, नाहणे, पग धोयण, खाले
 पाणी ढोढ्यां. अथवा जीलणांजीढ्यां, जूवटुं रज्या,
 नाटिक पेखणां जोयां. पुरुष स्त्रीना रूप शृंगार वखा
 एया, राजकथा, देशकथा, ज्ञातकथा, स्त्रीकथा पराइ
 तात कीधी. कर्कस वचन वोढ्या, संज्ञेमा लगाम्या.
 सरज, कुकमा प्रमुख जुजतां जोया, कलह करतां
 जोया, लोकतणी उपार्जना कीधी, सुख कीर्ति देश
 लेइ चिंतवी. लुण, पाणी, माटी, कण, कपासिया
 काजविण चांप्यां, ते उपर वेठा, आलि वनस्पति
 चुंटी अंगीठा काष्ट वणिज कीधा. ठास, पाणी, घी,
 तेल, गोल, आम्र, वेतल, वेरंजा तणां ज्ञाजन जया
 मां मेढ्यां, ते मांदि कीमी, मंकोमी, कंधुआ, उधेही,
 धीमेल, गिरोली प्रमुख जे कोइ जीव विणवा, सुना,

सालही क्रीडा हेतु पांजरे घाट्या, अनेराइ जीवने राग द्वेष लगे, एकनी ऋद्धि परिवार वंढी, एकनी मृत्यु हानी वंढी. आठमे अनर्थदंरुव्रत विषइलु अनेरो जे कोइ अतिचार पढ़० ॥ १२ ॥

नवमे सामायकव्रत पांच अतिचार ॥ तिविहे दुष्पणिहाणे ॥ सामायक मांहि मन आहट दोहट चिंत व्युं. वचन सावद्य बोळ्युं, शरीर अणपमिलेहुं हलाव्युं ठती शक्ति सामायक लीधुं नहीं. उघामे मुखे बोळ्या, सामायिक मांहि उंघ आवी, बीज दीवा तणी नजेही लागी, विकथा कीधी, कण कपासीया, माटी, पाणी तणा संघट हुआ, सुहपत्ति संघटी, सामायक अणपूगे पारयुं, पारयुं विसारयुं. नवमे सामायकव्रत विषइलु अनेरो जे कोइ अतिचार पढ़० ॥ १३ ॥

दशमे दिशावगाशिक व्रत पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे ॥ आणवणपयोगे, पेसवणपयोगे, सदा णुं द्वए, रुवाणुं द्वए, बीयापुग्गलखेवे, नीमी जूमिका मांहिथी बाहिर अणाव्युं, आपण कन्हेथी बाहिर मो कळ्युं, शब्द संजलावी, रूप देखामी, कांकरुं नांख्युं, आपणपणुं ठतुं जणाव्युं, पुद्गल तणो संक्षेप की

धो. दशमे देशावगासिकव्रत विप्रश्नु अनेरो जे कोइ
अतिचार पक्ष ॥ १४ ॥

इग्यारमे पौषधोपवासव्रत पांच अतिचार ॥ सं
आरुच्चार विहि ॥ पोसह लीधे संश्रारा तणी जूमि, वा
हिरलां अंमिलां संदिसे रूमां सोध्यां नहीं, पमिलेह्यां
नहीं, अंमिल वावरतां; माघू परठवतां चिंतवणी न
कीधी, अणुजाणह जस्सगो न कह्यो. परठव्या पुंठे वार
त्रण वोसिरे वोसिरे न कह्यो. देहरा पोसालमांहि पेसतां
नीसरतां निसिही आवस्तही कहेवी विसारी, पुढवी,
अप, तेज, वाज, वनस्पति, त्रसकाय तणा संघट्ट परि
ताप उपड्व कीधा. संश्रारा पोरिसी तणो विधि ज्ञण
वो विसाख्यो, अविधि संश्राख्या, पारणादिक तणी चिं
ता नीपजावी, काल वेलाये देव न वांध्या, पोसह अ
सुरो लीधो, सवारो पाख्यो, पर्वतिथे पोसह लीधो न
ही. इग्यारमे पौषधोपवासव्रत विप्रश्नु अनेरो जे कोइ
अतिचार पक्ष ॥ १५ ॥

वारमे अतिथि संविज्ञागव्रत पांच अतिचार ॥
सचित्ते निरिक्खवणे ॥ सचित्त वस्तु हेठां उपर ठतां अ

सुऊतु दान दीधुं, वहोरवा वेला टली रह्या, मत्सर
 लगे दान दीधां, देवा तणी बुद्धि पराइ वस्तु धणीने
 अण कहे दीधी अथवा आपणी करी दीधी. अणदेवा
 तणी बुद्धि सुऊतुं फेकी असुऊतुं कीधुं. गुणवंत आवे
 जक्ति न साचवी. अनेराइ धर्म क्षेत्र सीदातां नती
 शक्तिये नुहस्यां नहीं, दीन खीन प्रत्ये अनुकंपादान
 दीधुं नहीं, देतां वारयुं, वारमे अतिथिसंविज्ञाग्रत वि
 षइनु अनेरो जे कोइ अतिचार पढ़ण ॥ १६ ॥

संलेषणातणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलो
 ए ॥ इहलोकासंस्सपणुगे परलोकासंस्सपणुगे, जीवि
 यासंस्सपयोगे, मरणासंस्सपणुगे ॥ इहलोके धर्मना
 प्रज्ञाव लगे राजकृद्धि जोग बांढ्या, परलोके देवदेवेंड
 चक्रवर्तीतणी पदवी वंढी, सुख आवे जीववातणी बांढा
 कीधी, दुःख आवे मरवातणी बांढा कीधी, कायजो
 ग तणी बांढा कीधी, संलेषणाग्रत विषइनु अनेरो जे
 कोइ अतिचार पढ़ण ॥ १७ ॥

तपाचार बार जेद ॥ ठ वाह्य जेद, ठ अच्यंत
 र ॥ अससणसुणोअरिया ॥ अणलण जणी उपवा

सादिक पर्व तिथि तप न कीधो. उणोदरी ते वे चार
 कवल उणा न उठ्या, ड्य जणी सर्व वस्तु तणो
 संक्षेप न कीधो. रसत्याग न कीधो. कायक्लेश लो
 चादिक कष्ट सहन कस्यां नहीं. संलीणता अंगोपांग
 संकोची राख्यां नहीं, पञ्चस्काण चांग्यां, पाटलो रुग
 तो फेरुयो नहीं, गंठसही पञ्चस्काण चांग्युं, उपवास,
 आंबिल, नीवी कीधे सुखे सचित पाणी घाळ्युं, री
 मन हुं, बाह्य तपव्रत विपड़ अनेरो जे कोइ अति
 चार पक्ष ॥ १८ ॥

अन्यंतर तप ॥ पायजितं विणल ॥ सुखे प्राय
 श्रित पणिवज्युं नहीं, आलोयण तणी सुखी दीप की
 धी नहीं, सुखे तप पसाखो नहीं. नाति जेदे विनाय
 न कीधो. दस जेदे वैयावज न कीधो, पंचविध सजा
 य न कीधो, कपाय दोतराव्यो नहीं, दुखदाय कर्म
 दाय निमित्त काउस्तग न कीधो, शुक्लध्यान धर्म
 ध्यान ध्याया नहीं, आर्त रौं ध्यान ध्यायां. अन्यंतर
 तपव्रत विपड़ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष ॥ १९ ॥

वीर्याचार अण्य अतिचार ॥ अग्निगुहिय वलवी

रियो ॥ मनवीर्य धर्मध्यान तणे विषे उद्यम न कीधो,
 पम्किमणे, देवपूजा, धर्मानुष्ठान, दान, शील, तप,
 ज्ञावना, ठती शक्ति गोपवी. आलसे उद्यम न कीधो.
 बेठां पम्किमणुं कीधुं. रूमां खमासमण न दीधां. वी
 र्याचार व्रत विषइनु अनेरो जे कोइ अतिचार पक्षण २०

पम्सिद्धाणं करणे ॥ प्रतिषेध, अज्जह अनंत
 काय, महापरिग्रह जे कोइ प्राणातिपात, मृषावाद,
 अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लो
 ज्ञ, राग, द्वेष, कलह, अज्याख्यान, पैशुन्य, रति, अ
 रति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वशब्द, ए
 अठार पापस्थानक मांहे कीधां कराव्यां अनुमोद्यां
 होयते सविहुं मन वचन कायाये करी मिच्छामि दुक्कमं ॥

एवंकारे श्रावक तणे धर्मे सम्यक्त्वमूल वार
 व्रत एकसो चौवीस अतिचार पक्ष दिवस मांहे सूक्ष्म
 वादर जाणतां अजाणतां हुनु होय ते सविहुं मन व
 चन कायाए करी मिच्छामि दुक्कमं ॥ इति समाप्तम् ॥

विधिः—पढी सवस्सवि, पम्किअ, दुच्चिंतिअ, उ
 प्राप्तिअ, दुच्चिठिअ, इच्छाकारेण संदिसह जगवन्, त

स्स मिहामि डुक्कमं. इहकारि जगवन् पसान् करी प
 र्कि तप प्रसाद करोजी. एम उच्चार करीने आवी रीते
 कहीए. चन्नेणं एक उपवास, वे आयंविज, त्रण नि
 वि, चार एकासणां, आठ वियासणां, वे हजार सज्जा
 य, यथाशक्ति तप करी प्रवेश कर्यो होय तो पइणीन
 कहीए, अने करवो होय तो तद्धन्ति कहीए. तथा न
 करवो होय तो अणवोढया रहीए. पठी वांदणां वे
 दीजे. पठी इच्छा पत्तेय खामणेणं अप्पुठ्ठिहं अप्पिंतर
 पक्खिअं खामेनं इहं खामेमि पक्खिअं. पन्नरस दिवसा
 णं पन्नरस राइआणं जं किंचि अपत्तिअं कही वांद
 णां वे दीजे, पठी देवसिअं आलोइअ पम्किंता इच्छा
 कारेण संदिसह जगवन्, पक्खिअं पम्किमुं. समं पम्कि
 कमामि इहं; एम कही करेमिज्जंते सामाइयं कही, इ
 च्छामि पम्किमिजं जोमे पक्खिअं कह्या पठी खमासम
 ण देइ इच्छाकारेण कही पक्खिसूत्र पढुं एम कही त्रण
 नवकार गणी साधु होय तो पक्खिसूत्र कहे. अने सा
 धु न होय तो त्रण नवकार गणीने आवक वंदिनुं कहे,
 पठी प्रथम सुअ देवयानी थोय कहेवी, पठी देवा वे
 सी जमणो ठीचण उज्जो राखी एक नवकार गणी

करेमिजंते इच्छामि पस्किमिजं कही, वंदितुं कहेवुं प
 ठी करेमिजंते, इच्छामि ठामि कानुस्सग्गं, जोमे पस्कि
 ज, तस्स उत्तरी, अन्नञ्चण कहीने बार लोगस्सनो अ
 थवा अरुतालीस नवकारनो कानुस्सग्ग करवो ते लो
 गस्स चंदेसु निम्मलयरा सुधी कहेवा. ते पारीने प्रगट
 लोगस्स कहेवो. पठी सुहपत्ति पस्किहेहीने, वांदणां वे
 दीजे. पठी इच्छाण समाप्त खामणेणं अप्रुठिनुहं अप्पिं
 तर पस्किअं खामेज इच्छं खामेमि पस्किअं एक पस्का
 णं पन्नरस दिवसाणं पन्नरस राइआणं जंकिंचि अपत्ति
 अंण कही पठी खमासमण देइने इच्छाण कही, पस्कि
 खामणां खामु. एम कहीने चार खामणां खामवां प
 ठी देवसि प्रतिक्रमणमां वंदितुं कह्या पठी वांदणां वे
 देइने त्यांशी सामायक पारीए त्यांसुधी देवसिनी पेठे
 जाणवुं. पण सुअ देवयानी ओयोने ठेकाणे ज्ञानादि
 कनी ओयो कहेवी, स्तवन अजित शांतिनुं कहेवुं, स
 व्यायने ठेकाणे उवस्सग्गहरं तथा संसारदावानी चा
 र ओयो कहेवी, अने लघु शांतिने ठेकाणे मोटी शां
 ति कहेवी ॥ इति ॥

अजितंशांति स्तवनना ठुटा शब्दना अर्थ.

गाथा १ थी ५ सुधीना.

अजिअं-अजितनाथ	निम्मल-निर्यल	कित्तणं-कीर्त्तन
जिअ-जीत्या छे	सहावे-स्वभाव	मइ-मति
भयं-भयने	निरुवम-निरुपम	मागहिआ-मागधिका
पसंत-उपशांत थयाछे	प्पभावे-प्रभाव	छंद
गय-रोग	थोसाभि-स्तुतिकरीश	किरिआ-क्रिया
करे-करनारने	सु-छडे प्रकारे	किलेस-कपाय
पणिवयायिं-नमस्कार	दिट्ठ-दीठा छे	विगुस्सवयरं-विशेष
करुंछुं	सप्भावे-छता भायो	णे सुकावतारा
गाहा-गाथा छंद	प्पसंतीणं-प्रशांति थ	निचिअं-व्यापेला
ववगय-गयो छे	इ छे	गयं-गया, पासया
संगुल-माठो	अजिअ-नहीं जीताए	मुणिणां-मुनिआंने
ते-ते बे तीर्थकरोने	ल, अजितनाथ	निज्जुइ-निज्जित्त
(अ)हं-हुं	संतिणं-शांतिवाला,	नमंसणयं-नमस्कार
विउल-विशाल	शांतिनाथ	आळिगणयं-आळिग
तव-तप	प्पवत्तणं-प्रवर्त्तन कर	आळिगणयं-आळिग
	नासं	नका छंद

॥ अथ श्री अजितशांति स्तवन ॥

अजिअं जिअ सव जयं, संति

च पसंत सव गय पावं ॥ जय गुरु

संतिगुण करे, दोवि जिणवरे पणिव

यामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगय मंगुल
 ज्ञावे, तेहं विञ्जल तव निम्मल स
 हावे ॥ निरुवम महप्पज्ञावे, थोसा
 मि सुदिठ सप्पावे ॥ २ ॥ गाहा ॥
 सब्ब डुक्क प्पसंतीणं, सब्ब पावप्प
 संतिणं ॥ सया अजिय संतीणं,
 नमो अजिय संतिणं ॥ ३ ॥ सिलो
 गो ॥ अजिय जिण सुह प्पवत्तणं,
 तव पुरिसुत्तम नाम कित्तणं ॥ तह
 य धिइ मइ प्पवत्तणं, तव य जि
 णुत्तम संति कित्तणं ॥ ४ ॥ मागहि
 या ॥ किरिअ्पा विहि संचिअ्क
 म्म किल्लेस विमुखयरं, अजिअं
 निचिअं च गुणेहिं महामुणि सि
 धि गयं ॥ अजिअस्सय संति म
 हामुणिणोवि अ संतिकरं, सययं

(४०९)

मम निवृद्ध कारणं च नमंसण
यं ॥ ५ ॥ आर्लिङ्गणं ॥

अर्थः—अजिअं जिअ के० सर्व ज्ञयने जीतनारा
एवा बीजा तीर्थकर अजितनाथ, वली अपुनर्जावे क
रीने सर्व रोग अने पाप निवृत्त अयां ठे जेमनां एवा
सोलमा तीर्थकर श्री शांतिनाथ, ते वे पण जिनवर
ने नमस्कार करुं. ते वे जिनवर केवा ठे ? तो के
जयगुरु के० जगतना गुरु ठे. अथवा जयगुरुशांति गु
ण करे के० जगतनी मोटी शांतिना तथा ज्ञानादि
गुणने करनारा ठे. ॥ १ ॥ आ गाथा ठंद ठे ॥

ववगय मंगुल ज्ञावे के० गयो ठे मागे ज्ञावजे
मनो एवा, वली विस्तीर्ण एवा वार प्रकारना तपवरे
करीने निर्मल अयो ठे स्वज्ञाव जेमनो एवा, निरुपम,
अने मोहोढो ठे प्रज्ञाव एटले शक्ति जेमनी एवा, व
ली केवलज्ञान अने केवलदर्शने करी रुमे प्रकारे दी
ठा ठे जीवाऽजीवादिक ठता ज्ञावो ते जेमणे एवा ते
वे तीर्थकर श्री अजितनाथ अने श्री शांतिनाथ जग
वान प्रत्ये हुं नन्दिप्रेणनामासूरि स्तुति करीश ॥ २ ॥
आ गाथा ठंद ठे ॥

સવ દુઃકપ્પસંતિણં કેળ જન્મ, જરા, અને મરણ વિગેરેથી થતાં સર્વ દુઃખની અતિશયે કરી શાંતિ થઈ છે જેમને એવા, તથા સર્વ યોગ્ય જીવોના દુઃખની અતિશયે કરી શાંતિ કરી છે જેમણે એવા, તથા સર્વ પાપોની અતિશયે કરી શાંતિ થઈ છે જેમને એવા, તથા નહીં જીતાય એવો ઉપશમ છે જેમનો એવા શ્રી અજિતનાથજી તથા શ્રી શાંતિનાથજીને સદા નમસ્કાર આનંદ ॥ ૩ ॥ એ શ્લોક ટંદ છે ॥

અજિઅ જિણ કેળ હે અજિત જિન ! તથા હે પુરુષોત્તમ ! તમારા નામનું જે કીર્તન, તે મોક્ષ સુખનું પ્રવર્તન કરનારું વર્તે છે, તથા વલી ચિત્તની સમાધિ, બુદ્ધિ તેનું અતિશયે કરી વર્તન કરનારું છે. તથા સામાન્ય કેવલીને વિષે શ્રેષ્ઠ એવા હે શ્રી શાંતિનાથ ! વલી તમારા નામનું જે કીર્તન છે તે પૂર્વોક્ત ગુણયુક્ત છે ॥૪॥ આ માગધિકા ટંદ છે ॥

કિરિઆવિહિ કેળ પચીશ ક્રિયાના જોડે કરી એ કઠાં કરેલાં એવાં જે જ્ઞાનાવરણાદિ આઠ કર્મ, તથા કષાયથી વિશેષપણે મૂકાવનારા છે, તથા અજિત છે; તથા ચારિત્રાદિક ગુણે કરીને પ્રાપ્ત એવા છે, તથા મો

હોટા મુનિહની આઠ અણિમાદિક સિદ્ધિને પ્રાપ્ત થ
યા એવા છે, એવા અજિતનાથને અને શાંતિનાથ જે મહા
મુનિહને શાંતિના કરનાર તેમને, જે વિશિષ્ટ પ્રણમન
કરવું તે મુજને નિરંતર શાંતિ કરવાનું અને વલી મો
ક્ત સુખનું કારણ હો૥૥૥આ આલિંગનકનામા ઠંદ છે૥

ગાથા ૬ થી ૧૦ સુધીના તુટા શબ્દના અર્થ.

પુરિસા-મનુષ્યો	વહ-પતિ, સ્વામી	સંગયય-સંગતક છંદ
વારણ-વારવું	પયય-રૂઢે પ્રકારે, શુ	નિત્તમ-અજ્ઞાનરાહિત,
વિમગ્ગહ-શોધોછો	હતાણ	અંધકારરાહિત, ઇચ્છા
અભય-નિર્ભય	પણિવહ-અં-નમસ્કાર	રાહિત.
કરે-કરનારા	અવિય-વલી પળ	સત્ત-સત્ર, યજ્ઞ
પવજ્જહા-પ્રાપ્ત થાઓ	મુ-સુંદર નૈગમાદિક	ધરં-ધારણ કરનારા
અરહ-અરતિ, દુઃખ	નય	અજ્જવ-આર્જવ
રહ-રતિ, સમાધિ	નય-નિશ્ચય	મદ્વ-માર્દવ
વિરહિઅં-વિરહિત	નિહણ-નિપુણ, ઢાહ્યા	સ્વંતિ-ક્ષમા
ઝવરય-નાશ પામે છે	ઝવસરિઅ-પામીને	વિમુત્તિ-નિર્લોભતાં
જર-ઘટપળ	મુવિ-પૃથ્વી ઉપર	નિર્હિ-નિધિ, મંડાર
અરણં-યુદ્ધ રહિત	દિવિ-દેવલોકમાં	દમ-દમન
મરુલ-૧. સુવર્ણકુમાર	જ-ઉત્પન્ન થણા	દિસહ-આપો
૨. જ્યોતિષિદેવ	ઝવળમે-સમીપે નમ	સોવાણયં-સોપાનક
મુયગ-૧. નાગકુમાર	સ્કાર કરુંહું	નામ છંદ.
વ્યંતરદેવ		

सावधिथ-श्रावस्ति
 पुव्व-पहेलां
 पधिथवं-राजा
 हधिथ-हाथी
 मध्थय-मस्तक
 विच्छिन्न-विस्तीर्ण
 सांथिअं-संस्थान
 थिर-स्थिर
 सरिच्छ-सरखुं
 वच्छं-हृदय, छातो
 मयगल-मदोन्मत
 लीलायमाण-लीला
 करतो
 पध्थाण-प्रस्थान
 पधिथअं-नीकलवुं

संथवारिहं-वर्णन कर
 वा योग्य
 बाहु-हाथ, बाहु
 भंत-धमेलुं
 कणग-सोनुं
 रुअग-वासण, घरेणुं
 निरुवहय-निष्कलंक
 पिंजर-पीलुं
 पवर-श्रेष्ठ
 लख्खण-लक्षण
 उवचिय-सहित
 सोम-सौम्य
 चारु-मनोहर
 सुइ-कान
 परम-असंत

रमणिज्ज-रमणिक
 दुंदुहि-दुंदुभि
 निनाय-शब्द
 महुर-मधुर
 यर-वधारे
 गिरं-वाणी
 वेहुओ-वेष्टक छंद
 जिअ-जिसा छे
 अरि-शत्रु
 भवोह-भवना सलुह
 रिउ-रिपु, बेरी
 पयओ-प्रयत्नथी
 पसमेउ-अतिशय श
 मावो
 भयवं-भगवंत

पुरिसा जइ डुक्कवारणां, जइअ वि
 मग्गह सुक्ककारणां ॥ अजिअं
 संतिं च ज्ञावउ, अज्जयकरे सर
 णं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिअ्या ॥
 अरइ रइ तिमिर विरहिअ सुवर

यजरमरणां, सुरअसुर गरुल जुय
 गवइ पयय पणिवइअं॥अजिअ
 महमविअ सुनयनय निजण म
 ज्ञयकरं, सरण भुवसरिअ जुवि
 दिविज महिअं सययमुवणमे॥७॥
 संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम
 नित्तम सत्तधरं, अऊव मद्दव खंति
 विमुत्ति समाहि निहिं॥ संतिकरं
 पणमामि दमुत्तम तिज्जयरं, संति
 मुणी मम संति समाहि वरं दिस
 उ ॥ ७ ॥ सोवाणयं ॥ सावन्ति
 पुव पन्निवं च वर हन्ति मज्जय प
 सत्त विज्जिन्न संथियं, थिरसरिज्ज
 वत्तं मयगल लीलायमाण वर गं
 धहन्ति पत्ताण पन्थियं संथवारिहं॥
 हन्तिहत्त बाहु धंत कणग रुअग

નિરુવહય પિંજરં પવર લક્ષ્મણો વ
 ચિય સોમચારુરૂવં, સુદ્ સુહમણા
 જિરામ પરમરમણિશ્ચ વરદેવ હુંહ
 હિ નિનાય મહુરયર સુહગિરં ॥૯૫॥
 વેદુત ॥ અજિત્રં જિત્રારિણં,
 જિત્ર સધ્વજનયં જવોહરિતં ॥ પણ
 મામિત્રાહં પયતુ, પાવં પસમેતુ મે
 જયવં ॥૧૦॥ રાસાલુદ્ધતુ ॥ યુગ્મમ્ ॥

અર્થ:—પુરિસા જર હુલ્કવારણં કેળ હે મનુષ્યો !
 જો તમે હુ:સ્વનું નિવારણ કરવાનું અને જો સુસ્વનું કા
 રણ એ વે શોધો ઠો તો અજિતનાથનું તથા શાંતિનાથ
 નું જે શરણ તેને જાવથી કરીને મેલવો. એ વેદુ તીર્થ
 કર નિર્જય કરે એવા ઠે. ॥ ૬ ॥ આ માગધિકા ઠંદ ॥

અરહરહિતિમિર કેળ અરતિ, રતિ, તથા અજ્ઞાને
 કરી વિરહિત એવા, તથા જેનાં જરા અને મરણ નાશ
 પામ્યાં ઠે એવા, વલી વૈમાનિક દેવો, જીવનપતિ, સુવ
 કુમાર, નામકુમાર, તથા વીજા પણ દેવોના ઈંદોળ

રૂપે પ્રકારે જેમ યાચતેમ નમસ્કાર કર્યો છે જેમને એવા, અથવા બીજી રીતે વૈમાનિક, જ્વનપતિ, જ્યોતિષિ તથા વ્યંતર તેમના સ્વામી એટલે ઇંડો એ શુદ્ધતા એ કરીને નમસ્કાર કર્યો છે જેમને એવા છે. વલી કેવા છે ? તો કે સર્વ સમીચીન એવાં અન્ય વિશેષણોયે યુક્ત એવાં, તથા સુંદર એવા અનેકાંત રૂપ નૈગમાદિક જે નય તેમની પ્રતીતિને વિષે માહ્યા છે તથા નિર્જયપણાના કરનાર અથવા જ્વરહિત સુખના આપનારા, તથા મનુષ્યો એ અને દેવો એ પૂજિત એવા શ્રી અજિતનાથ જગવાનનું શરણ પામીને નિરંતર હું સમીપે રહીને નમસ્કાર કરુંબું ॥ ૭ ॥ આ સંગતક ઠંદ છે ॥

તંચ જિણુત્તમ સુત્તમ કેળ તે શ્રી શાંતિનામે જે સુનિ તેને શ્રદ્ધાપૂર્વક પ્રણામ કરુંબું, તે શાંતિસુનિ કેવા છે ? તો કે સામાન્ય કેવલીને વિષે શ્રેષ્ઠ છે, અને પ્રધાન, અને અજ્ઞાનરહિત એવા જાવ યજ્ઞને ધારણ કરનાર છે, વલી આર્જવ, (સરલપણું) માર્દવ (અહંકારરહિતપણું) ક્રમા, નિર્લોજ્જતા, તથા સમાધિ તેના જંમર છે. તથા શાંતિના કરનાર છે. વલી જે ઇંડિબને દસન કરવામાં પ્રધાન છે, એવા તે તીર્થંકર સુજને શાં

તિ અને પ્રધાન સમાધિ તેને આપો ॥ ૫ ॥ આ સો
પાનક ઢંદ છે ॥

સાવત્રિપુલ કેળ શ્રાવસ્તિ એટલે અયોધ્યા નગરી
ને વિષે દિક્ષા લીધા પેહેલાં રાજા હતા તથા શ્રેષ્ઠ વન
હસ્તીના મસ્તક સરખું પ્રશંસા કરવા યોગ્ય અને વિ
સ્તીર્ણ એવું છે શરીરનું શુભ સંસ્થાન જેમનું, તથા ક
ઠિન અને સરખું છે હૃદય જેમનું, અથવા નિશ્ચલ શ્રીવ
ત્સનામા લક્ષણ વક્ત્રસ્થલને વિષે છે જેમને એવા, તથા
મદોન્મત્ત અને લીલા કરતા એવા પ્રધાન ગંધ હસ્તીના
ગમનની પેરે ગતિ છે જેમની એવા, તથા સ્તુતિ કરવા
ને યોગ્ય તથા હાથીની સુંઢ જેવા સરલ તથા લાંબા
છે હાથ જેમના એવા, તથા ધમેલા સોનાના રુચક કેળ
જાજન અથવા આત્મરણ વિશેષ તેના જેવો નિષ્કલંક
પીલો છે વર્ણ જેમનો એવા, તથા શ્રેષ્ઠ એવા (શંખ, ચ
ક્ર, અકુંડાદિક) લક્ષણોએ કરીને સહિત એવા, તથા
સૌમ્યાકાર એવું, દેખનારાને મનોહર સુખદાયક છે રૂપ
જેમનું એવા, તથા કાનને સુખની દાયક, તથા મનને
મનોહર, અત્યંત રમણિક અથવા પર કેળ નુત્કૃષ્ટ છે
કેળ લક્ષ્મી જેને એવા રાજા અને પર કેળ દુર છે

મા કેળ લક્ષ્મી જેને એવા રંક જનો, તે બેહુને સંતોષ
પમારુનાર તથા શ્રેષ્ઠ એવી દેવડુંડુજી તેના શબ્દસરસ્વી
ઘણી મધુર અને કલ્યાણકારી હે વાણી જેમની એવા
હે ॥ ૯ ॥ આ વેષ્ટકનામા ઠંદ હે ॥

અજિઅં જિઆરિગણં કેળ અષ્ટ કર્મરૂપ શત્રુના
સમૂહ જેણે જીત્યા હે, તથા જિઅ સઘજનયં કેળ સર્વ
જન્ય જેણે જીત્યા હે એવા અથવા વીજી રીતે પંચેંડિ
જીવને સાંજલવા યોગ્ય હે જ્ઞાગ્ય જેમનું એવા, તથા
સંસાર સમૂહના શત્રુ એવા શ્રી અજિતનાથ પ્રત્યે મન,
વચન કાયાએ કરી હપયુક્ત એવો હતો હું પ્રણામ કરું
હું, અને તે જગવાન્ મારા પાપને પ્રકર્ષે કરી શમાવો
॥ ૧૦ ॥ આ રાસાલુબ્ધક ઠંદ હે ॥

ગાથા ૧૧ થી ૧૬ સુધીના છુટા શબ્દના અર્થ.

કુરુ-નામ હે	મહાપ્રભાવો-મહિમા,	રાયવર-શ્રેષ્ઠરાજા
જનવય-દેશ	મોટો પ્રભાવ	અણુયાય-અનુસરાણ
હથિયળાહર-હસ્તિના	વાવત્તરિ-વોતેર	લો
પુર	પુરવર-નગર	મગ્ગો-માર્ગ
નરિસરો-મોટો રાજા	નગર-નગર	ચહદસ-ચહદ
મોણ-રાજ્યને વિષે	વત્તીસા-વત્તીસ	રયણ-રત્ન

चउसठि-चोसठ
 जुवईण-खीओना
 सुंदरवइ-सरस पति
 चुलसी-चोरासी
 हय-घोडा
 गय-हाथी
 रह-रथ
 छणवइ-छलु
 गाम-गाम
 आसिज्जो-होताहवा
 भारहम्मि-भरतक्षेत्रमां
 थुणामि-स्तुति करंछुं
 वेहेउ-करवाने अर्थे
 इख्खाग-इक्ष्वाकु
 विदेह-देशनुं नाम छे
 वसहा-वृषभ (श्रेष्ठ)
 नव-नवो
 सारय-शरदरुतुनो
 ससि-चंद्रमा
 सकल-शोभावंत, क
 लाओए सहित
 आणण-मुख
 वे छे

तमा-अंधारु, अज्ञान
 तेअ-तेज
 आमिअ-अमित, नहीं
 मापी शकाय एवुं.
 बला-बलवाला
 विउल-विपुल
 कुला-कुल
 मूरण-भागनार
 मम-मार्ह
 अमम-ममत्वरहित
 चित्तलेहा-चित्रलेखा
 दाणविंद-दानवानो
 इंद्रो
 वंद-वांदवालायक
 हठ-आरोग्यवंत, ह
 रखीत
 तुठ-प्रमोदवंत, तुष्टमान
 जिठ्ठ-सौथी वधारे,
 प्रशंसवा योग्य
 परम-असंत
 लठ्ठ-कांतिवालुं
 पट्ट-पाटो
 सेय-घन

निद्ध-स्निग्ध
 धवल-उज्ज्वल
 दंत-दांत
 पंति-पंक्ति
 सात्ति-शक्ति
 मुत्ति-मुक्ति
 जुत्ति-युक्ति
 दित्त-दिप्त
 वंद-वांदवायोग्य
 धेय-ध्यानकरवायोग्य
 भाविय-भावित
 णेअ-जाणवायोग्य
 पइस-आपो
 कला-कला
 अइरेअ-अधिक
 सूरकर-सूर्यनां किरण
 तिअस-देवता
 धराणिधर-पर्वतो
 सारं-धैर्य
 कुसुमलया-कुसुमल
 ता छंद

(४१ए)

कुरु जणवय हन्तिणाउर, नरी
सरो पढमं तन महा चक्कवट्टि जो
ए महप्पजावो, जो बावत्तरि पुर
वर सहस्स वर नगर निगम जण
वयवई, बत्तीसा राय वर सहसा
णुयाय मग्गो ॥ चउदस वर रयण
नव महानिहि चउसठि सहस्स
पवर जुवईण सुंदरवइ, चुलसी
हय गय रह सय सहस्स सामी,
ठसुवइ गाम कोमि सामी आसि
जो जारहम्मि ज्ञयवं ॥ ११ ॥ वे
हुउ ॥ तं संतिं संतिकरं, संतिणं सब
जया, संतिं थुणामि जिणं, संतिं
वेहेउ मे ॥ १२ ॥ रासानंदियं ॥
युग्मम ॥ इस्काग विदेह नरीसर
नर वसहा मुणि वसहा ॥ नवसा

रय ससि सकलाण्ण विगय त
 मा विहुअरया ॥ अजि उत्तम ते
 अ गुणेहिं, महामुणि अमिअ
 बला विजल कुला ॥ पणमामि
 ते जवजय मूरण, जगसरणा मम
 सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलोहा ॥ देव
 दाणाविंद चंद सूरवंद हठ तुठ जि
 ठ परम ॥ लठरुव धंत रूप पट्ट
 सेय सुद्ध निद्ध धवल ॥ दंत पंति
 संति सति किति मुत्ति जुत्ति गु
 ति पवर ॥ दित्त तेअ वंद धेअ
 सब लोअ जाविअ प्पजावणे
 अ पइ समे समाहिं ॥ १४ ॥ ना
 रायण ॥ विमल ससि कलाइरेअ
 सोमं, वितिमिर सूर कराइरेअ
 तेअं ॥ तिअस वइ गणाइरेअ

(४२१)

रूवं, धरणिधर प्पवराइरेअ सारं

॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥

अर्थः—कुरु जणवय हठिणा नर केण कुरु माम्हे
देशने विषे हस्तिनापुर नगर तेना प्रथम ते राजा थ
या, तयारपणी मोटा चक्रवर्तीना राज्यने विषे जेमनो
महोदो महिमा ठे एवा चक्रवर्ती थया, वली केवा ठे?
तो के जे बहोतेर हजार एवां पुरवर (धरोए करीने
श्रेष्ठ शेहेस्) अने जेमां कर नहीं एवां श्रेष्ठ गजपुरा
दि नगर, अने ज्यां मोहोटा रुखिवंत बेपारीनुनी ड
कानो होय तेवां शेहेरो, तथा देशविदेशाना स्वामी
एवा, अने बत्तीस हजार मुकुटबद्ध राजा जेनी पठवा
ने चालनारा ठे एवा, तथा वली जेने चौद श्रेष्ठ रत्न
ठे एवा, तथा जेने नव मोटा निधि एटले जंभार अ
खुट ठे एवा, तथा चोसठ हजार श्रेष्ठ एवी स्त्रीनुना
जे सुंदर नरथार ठे, वली चोरासी लाख घोमा तथा
चोरासी लाख हाथी तथा चोरासी लाख रथ तेना
स्वामी तथा वली बन्नुक्रोम गामना स्वामी एवा जग
वान् नरतक्षेत्रने विषे होता हवा ॥११॥ आवेष्टक ठंद ठे.

(४९९)

तं संतिं संतिकरं के० ते पूर्वोक्त मूर्तिमान् उप
शमरूप एवा तथा पोताना समीप मोक्ष लक्षण तेने
आपनार एवा, अने रूपे प्रकारे जे थकी सर्व मृत्यु न
य तरे ठे एवा श्री शान्तिनाथ तीर्थकर तेमने हुं स्तु
ति करुं. शा माटे ? तो के मारा उपसर्गनी शान्ति
करवाने अर्थे करुं ॥ १२ ॥ आ रासानंदित ठंद ठे ॥

इरकाग विदेह के० हे इक्ष्वाकु कुल वासी ! त
था हे विदेह देशना नरेश्वर, तथा हे (मनुष्योमां श्रेष्ठ
माटे हे) नरवृषज, तथा (मुनिधर्ममां धोरी माटे
हे) हे मुनिवृषज ! तथा नवा शरद ऋतुना चंडमानी
पेरे सकल कलाए संपूर्ण एवा मुखवाला, बली जेना
थी अज्ञानरूप अंधकार गयुं ठे. माटे हे विगततमः !
तथा जेणे कर्मरूप रजने काढी नांखी ठे माटे विधुत
रज ! तथा रागादिके न जीताय माटे हे अजित !
तथा गुणोए करी श्रेष्ठ ठे तेज जेमनुं माटे हे उत्तम
तेज ! तथा जे मोटा मुनिन ठे तेजुथी पण प्रमाण
न अइ शके एवुं जेनुं अपरिमित बल ठे माटे हे महा
मन्यमितबल, तथा विस्तीर्ण ठे वंश जेमनो माटे हे

વિપુલકુલ ! તથા સંસારના ત્રય જાગનાર માટે હે જ
વજ્રયમૂરણ ! તથા જગતના રક્ષણ કરનાર માટે હે જ
ગચ્છરણ ! તમે મારા પણ રક્ષણ કરનાર ઠો અથવા મમ
ત્વરહિત ઠો માટે હે અમમ ॥ ૧૩ ॥ આ ચિત્રલેખા
ઠંદ છે ॥

દેવ દાણવિંદ ચંદ કેળુ સુર અસુરના ઇંડ તથા ચં
ડમા અને સૂર્ય તેમને વંદન કરવા યોગ્ય, તથા આરોગ્ય
વંત, પ્રમોદવંત, તથા સૌથી વધારે પ્રશંસવા યોગ્ય અને
અત્યંત કાંતિવાલું છે રૂપ જેમનું તથા ધમેલા રૂપાના
પાટાની પેરે ઘન, નિર્મલ, સ્નિગ્ધ અને બુદ્ધિવાળું છે તે
તની પંક્તિ જેમની, તથા શક્તિ, કીર્તિ, મુક્તિ (નિર્લો
જતા), યુક્તિ (ન્યાયવાલું વચન) અને ગુણ તેણે કરી
શ્રેષ્ઠ છે, તથા દીપ્ત છે તેજનું વૃંદ જેમનું, અથવા સુરેંડા
દિકે વાંદવા યોગ્ય છે. તથા પ્રકારાંતરે વાંદવા યોગ્ય
જે મહા મુનિનું તેમને ધ્યાન કરવા યોગ્ય છે એવા,
તથા સર્વ લોકે જાણેલો છે પ્રજાવ જેમનો તેણે કરી
જાણવા યોગ્ય એવા હે શ્રી શાંતિનાથ ! તમે મને સ
માધિ દેશ્વામી એટલે આપો ॥૧૪॥ આ નારાચક ઠંદ છે ॥

વિમલ સસિ કલાશરેઅ સોમં કેળુ નિર્મલ એવી

ચંદ્રમાની કલાથી અધિક છે સૌમ્યતા જેની, તથા વા
દલના અંધકારથી રહિત એવાં સૂર્યનાં કિરણોથી પણ
અધિક છે તેજ જેનું એવા છે. તથા દેવતાના પતિ ઇં
ંદ્રોના સમૂહથી પણ અધિક છે રૂપ જેનું (એટલે સર્વ
દેવતાનું રૂપ જગવાનની ટચલી આંગલીના રૂપ પાસે
સુકે તો પણ સોના અને ત્રાંબા જેટલો ફેર દેખાય)
એવા છે, તથા પર્વતો માંહે શ્રેષ્ઠ જે મેરુપર્વત તેથી પણ
અધિક છે સાર કેળવેર્ય જેમનું એવા છે ॥ ૧૫ ॥ આ
કુસુમલતા નામે બંદ જાણવો ॥ આ ગાથાનો સંબંધ
આગલી ગાથા-જોમે છે.

ગાથા ૧૬ થી ૨૦ સુધીના છુટા શબ્દના અર્થ.

સત્તે અ-સત્ત્વમાં વલી	રહિઅં-રહિત	ગરણ-કરણ
સારીરે-શરીરસંબંધી	ધીર-ઢાહ્યા	ઉવળમે જાહેલું
એસ-આ	થુઅ-સ્તુતિકર્યા	લલિઅયં-લલિતક
પાવડ-પામે	અન્નિઅં-પૂજ્યા	વિણઓ-વિનયેકરી
સરય-શરદ ઋતુનો	ચુઅ-છાંડયું	ળય-નમ્યા
રવી-સૂર્ય	કલિ-વેર	સિરિ-મરતકમાં
તિઅસ-દેવતા	કલુસં-પાપ	રહ-રહી, જોડી
તિથ્યવર-ઉત્તમ તીર્થ	સંતિ-મોક્ષ	રિસિ-ઋષિઓ
વ - પ્રવર્તક	તિ-ત્રણ	સંથુઅં-સ્તવાણા

(४२५)

थिमिअं-निश्चल
विबुह-देवता
अहिव-अधिप (इंद्रो)
थुअ-स्तव्या
अइर-थोडा बखतमां
उगय-उगेलो
दिवायर-सूर्य
समाहिय-अधिक

सप्पभं-पोतानी कांति
तवसा-तपे करीने
गयणंगण-आकाश
वियरण-चालवुं
समुइअ-एकठा थएला
चारण-चारणमुनि
किसलयमाला-किस
लयमाला छंद

परिवंदिअं-समस्त थ
कारे वंदाएला
उरग-व्यंतर देव
णमंसिअं-नमस्कार
कराएला
समणसंघ-साधुओनो
संघ, चतुर्विध संघ,
सुमुहं-सुमुत्त छंद

सत्ते अ सया अजिअं, सारिरे अ
बले अजिअं, तव संजमे अ अ
जिअं, एस थुणामि जिणं अजि
अं ॥ १६ ॥ नुअग परिरंगिअं॥
सोम गुणेहिं पावइ न तं, नव स
इय ससी ॥ तेअ गुणेहिं पावइ
न तं, नव सरय रवी ॥ रूव गुणे
हिं पावइ न तं, तिअस गण व
इ ॥ सार गुणेहिं पावइ न तं ॥
धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं॥

(४२६)

तिष्ठवर पवत्तयं तमरय रहिञ्चं,
धीरजण थुञ्च चिञ्चं चुञ्च कलि
कलुसं ॥ संति सुह प्पवत्तयं ति
गरण पयञ्च, संति महं महामुणिं
सरण सुवण्णमे ॥ १८ ॥ ललिञ्च
यं ॥ विण्णत्तय सिरि रइ अञ्ज
लि रिसिगण संथुञ्चं यिमिञ्चं ॥
विबुहाहिव धणवइ नरवइ थुय
महिञ्चचिञ्चं बहुसो ॥ अइरुगय
सरय दिवायर समंहिञ्च सप्पन्नं
तवसा ॥ गयणंगण वियरण समु
इञ्च चारण वंदिञ्चं सिरसा ॥ १९ ॥
किसलयमाला ॥ असुर गरुल
परिवंदिञ्चं, किंनरोरग णमंसिञ्चं ॥
देवकोल्लिसय संथुञ्चं, समणसंघ
परिवंदिञ्चं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥

અ સયા અજિઅં કેળ તથા સત્ત્વને
 જિત છે, તથા વહી શરીરના બલને વિષે
 છે, તથા બાર પ્રકારના તપ અને સત્તર
 સંયમને વિષે પણ બીજા પુરુષોથી જીતાય
 શ્રી અજિતનાથ જિનવરની આ હું નંદિષે
 બાર સ્તુતિ કરુંબું ॥ ૧૬ ॥ આ ઝુજંગપરિરંગિત
 મા ંદ છે ॥

સોમ ગુણેહિં પાવડ ન તં કેળ સૌમ્ય એટલે શાં
 તે ગુણે કરીને નવો શરદ ઋતુનો ચંડમા પણ શ્રી અ
 જિતનાથની સૌમ્યતા પ્રત્યે પામી ન શકે, તથા તેજ
 (કાંતિ)ના ગુણે કરીને નવો શરદ ઋતુનો સૂર્ય પણ
 શ્રી અજિતનાથના તેજ ગુણને પામી ન શકે, તથા
 રૂપ ગુણે કરીને દેવતાના જે સમૂહ તેના પતિ ઇંડ પણ
 અજિતનાથના રૂપ ગુણની તુલના પ્રત્યે પામી ન શકે,
 તથા સ્થિરતા ગુણે કરીને પર્વતનો પતિ જે મેરુ પ
 વર્ત તે પણ ઝગવંતના સ્થિરતા ગુણ પ્રત્યે પામી ન શકે
 ॥ ૧૭ ॥ આ ચિહ્નિતક ંદ છે ॥

તિલ્લવર પવત્તયં કેળ શ્રેષ્ઠ તીર્થ જે ચતુર્વિધ સંઘ

અથવા પ્રથમ ગણધર તેના પ્રવર્તક અથવા તીર્થમાં શ્રે
ષ્ઠ એવો જે ધર્મ તેને તિઠ્ઠવર કહીએ તે ધર્મરૂપ તીર્થના
પ્રવર્તક એવા, તથા અજ્ઞાન, રજ એટલે બંધાતાં કર્મ
તેથી રહિત એવા, તથા માહ્યા પુરુષોએ વાણીએ કરી
સ્તવ્યા અને ફુલે કરી પૂજ્યા એવા, તથા જેણે વૈર અ
થવા કજીઆનું પાપ ઠાંક્યું છે એવા, તથા મોક્ષ સુખ
ને અર્થે પ્રવર્તતા એવા જે સાધુનું તેને પાલન કરનાર
અથવા મોક્ષ સુખના કરનાર એવા, મોટા મુનિ જે
શાંતિનાથજી તે પ્રત્યે ત્રણ કરણ કેળ મન વચન અને
કાયાએ કરી પવિત્ર એવો હતો હું શરણ પ્રત્યે જાણુંતું
॥ ૧૮ ॥ આ લલિતક નામા હંદ છે ॥

વિણનુંણય સિરિરડ કેળ વિનયે કરી નમ્યા એવા
મસ્તકને વિષે રચી છે કરની અંજલી જેમણે એવા,
ઋષિનુંના સમૂહ તેમણે રૂઢે પ્રકારે સ્તુતિ કરી છે જે
મની એવા, તથા (કર્મકૃત હંચનોચપણાના અજ્ઞાવ
થી તરંગ રહિત સમુદ્રની પેઠે) નિશ્ચલ એવા, તથા દે
વતાના અધિપ જે ઇંડો અને ધનપતિ (ધનદ, કુબેર,
લોકપાલજે) તેમણે તથા રાજાનું અને ચક્રવર્તીએ ધ

शीवार स्तव्या, पूज्या, अर्च्या एवा, तथा तपे करीने
तरतना नगेला शरद ऋतुना सूर्यशी पण अधिक ठे
पोतांनी कांति जेमनी एवा तथा आकाशने विषे विच
रवे करीने एकठा आणला एवा जंधाचारणादिक सुनि
जुए मस्तके करीने वंदन कर्युं ठे जेमने एवाठो ॥१९॥
आ किसलयमाला ठंद ठे ॥

असुर गरुड परिवंदिअं के० वली केवा ठे ? तो
के असुरकुमार, सुवर्ण कुमार तथा बीजा पण सर्व दे
वोए समस्त प्रकारे वंदन कर्या एवा, तथा किन्नर अ
नि व्यंतर विशेष एमणे नमस्कार कर्यो ठे जेमने ए
वा, तथा वैमानिक देवोना सेंकना गमे कोटिजुए स्तु
ति करी ठे जेमनी एवा, तथा चतुर्विध संघे चोतरफ
जावे करीने वंदन कर्युं ठे जेमने एवा ठे ॥ २० ॥ आ
सुमुख नामा ठंद जाणवो ॥

गाथा २१ थी २५ सुधीना तुटा शब्दना अर्थ.

अणहं-पापरहित

अरयं-मैथुन रहित

अरुयं-रोगरहित

पयओ-आदर सहित

पणमे-प्रणाम करुंछुं

विज्जुविलसितं-वि

द्युद्विलसित छंद

आगया-आव्या

विमाण-विमान

दिव्य-मनोहर

तुरय-घोडा

पहकर-समूह

सएहि-सकेंडोएकरीने
 हुलिअं-उतावले
 ससंभम-सत्वर
 उअरण-उतरवुं
 रुखुभिअ-धुभिअ
 लुलिअ-अरहांपरहां
 चल-चपल [हालतां
 कुंडल-काननांकुंडल
 अंगय-बाजुबंध
 तिरीड-मुकुट
 सोहंत-शोभती
 मउलीमाला-मस्तक
 नी माला
 संघा-समूहो
 स-साथे
 असुर-भुवनपाति वगे
 रे देवो
 वेर-वेर
 विउत्ता-रहित
 भक्ति-भक्ति
 मुजुत्ता-सहित

आयर-आदर
 भूसिय-शोभित
 संभम-उतावले
 पिंडिअ-एकठामलेला
 मुट्टु-सारी रीते
 सुविम्हिअ-सुविस्मित
 बलोघा-लशकरनो स
 मूह
 परूविअ-घणारूप
 वाला
 भासूर-जलहलता
 भुसण-आभरण
 भासूरिय-देदीप्यमान
 अंगा-अंग
 गाय-गात्र,शरीर
 समोणय-सम्यक् प्र
 कारे नमेल
 वस-वशे
 आगय-आवेला
 पेसिय-करेलो
 पणामा-नमस्कार

रयणमाला-रत्नमाला
 वंदिउण-वांदीने
 थोऊण-स्तुति करीने
 तिगुणं-त्रणवार
 एव--जे
 पुणो--फरीने
 पयाहिणं--प्रदक्षिणा
 पणामिउण--प्रणाम
 करीने
 पमुइआ--हरखीत
 थएला
 सभवणाइं-पोताना
 स्थानक प्रत्ये
 तो-त्यांथी
 गया-गया
 मोह-अज्ञान
 वज्जिअं-दर्जित
 खित्तयं--क्षिप्तक छंद

अन्नयं अणहं, अरयं अरुयं ॥
 अजियं अजिअं, पयउ पणमे
 ॥ ११ ॥ विङ्गुविलसिअं ॥ आग
 या वर विमाण दिव कणग रह
 तुरय पहकर सण्हिं हुलिअं ॥ स
 संजमो अरण, खुजिअ लुलि
 अ चल कुमलं गय तिरीरु सोहं
 त मण्डलिमाला ॥ १२ ॥ वेहउ ॥
 जं सुरसंधा सासुरसंधा वेर विउ
 ता नति सुजुता ॥ आयर नूसि
 अ संजम पिंमिअ, सुहु सुविमिहि
 अ सब बलोधा ॥ उत्तम कंचण
 रयण परुविअ, नासुर नूसण
 नासुरिअंग ॥ गाय समोणय न
 ति वसागय, पंजलि पेसिअ सी
 स पणामा ॥ १३ ॥ रयणमाला ॥

(४३२)

वंदिकण थोऊण तो जिणं, तिगुण
मेव य पुणो पयाहिणं ॥ पणमि
ऊण य जिणं सुरासुरा, पमुद्धया
सन्नवणाइं तो गया ॥ १४ ॥ खि
त्तयं ॥ तं महासुणि महंपि पंज
ली, राग दोस ज्ञय मोह वज्जि
अं ॥ देव दाणव नरिंद वंदिअं,
संति सुत्तम महातवं नमे ॥ १५ ॥
खित्तयं ॥

अर्थ:-वली केवा ठे ? तो के अन्नयं अणहं केण
सात प्रकारना ज्ञये करी रहित एवा, तथा पापरहित
एवा, तथा विषय (मैयुन) रहित एवा, तथा रोगरहि
त एवा, तथा कोइथी नहीं जीताएला एवा, श्री अ
जितनाथ तेमने सादरपणे हुं नमस्कार करुहुं ॥२१॥
आ विद्युद्धिललित ठंद ठे ॥

आगया वर विमाण केण आव्या ठे देवताना स
सुदाय श्री शांतिनाथनी समीपे ते केवी रीते ? तो के

श्रेष्ठ विमान, मनोहर सोनामय रथ तथा घोड़ाना स
 मूहना सैंकरोए करीने उतावला वेगे, तथा सत्वर आ
 काशघ्नी उतरवुं तेणे करीने खलजलवाघी अरहां परहां
 हालतां चंचल एवां काननांकुंरुल तथा बाजुबंध तथा
 सुकुटे कर्णी शोजायमान शर एवी ठे मस्तकनी माला
 जेमनी एवा देवो ठे ॥११॥ आ वेष्टकनामा बंद ठे.

जं सुरसंधा सासुरसंधा के० जे जगवंतने समी
 पे वैमानिक देवलमूह आव्या ठे ते केवा ठे ? तो के
 जवनपति आदिक देवना समूहे करी सहित एवा ठे,
 तथा वेररहित ठे, तथा सद्व्रजक्तिये करीने सहित अ
 ने आदरे करी शोजित तथा उतावले करी एकठा म
 ट्या एवा रुढ़ी रीते अतिहाये करी सुविस्मितज जेम
 होय तेम सर्व हाथी घोड़ा वगेरे लश्करना समूहवा
 ला, तथा श्रेष्ठ एवा सोने तथा रत्ने करीने प्रकृष्ट रूप
 युक्त कर्ण एवां जलहलतां आजरणे करी देदीप्यमान
 ठे अंगो जेमनां एवा, तथा शरीरे करीने सम्यक् प्र
 कारे नमेला तथा जक्तिने वशो आवेला एवा, तथा बे
 हाथ जोड़ी कपाले लगासीने कर्णो ठे मस्तके करीने

પ્રણામ જેમણે એવા હે ॥ ૨૩ ॥ આ રત્નમાલા હંદ હે.

વંદિક્ષણ યોજ્જણતો જિણં કેળ એવી રીતે વંદન કરીને તેવાર પઠી વલી ત્રણવારજ પ્રદક્ષિણા કરી હે જેને, અર્થાત્ ત્રણ પ્રદક્ષિણા કરીને બપાસિત એવા દેવો તે શ્રી શાંતિ જિન તે પ્રત્યે વલી સ્તુતિ કરીને ફરી ને પોતાને સ્થાનકે જવાના અવસરે શ્રી શાંતિજિન પ્રત્યે પ્રણામ કરીને સુર અસુર જે દેવો હે તે હર્ષિત થયા અકા પોતાના જીવન પ્રત્યે તે સ્થાનકથી જાતા હવા ॥ ૨૪ ॥ આ ક્ષિત્તકનામા હંદ હે.

તં મહાસુણિમહંપિ પંજલી કેળ તે શાંતિ જિનને હું પણ જોમયા હે હાથ જેણે એવો હતો નમસ્કાર કરું. તે શાંતિજિન કેવા હે ? તો કે મોટા મુનિ હે શિષ્ય જેમના એવા હે, તથા રાગ કેળ માયા અને લોજીરૂપ રાગ તથા દોષ કેળ ક્રોધ અને માનરૂપ દ્વેષ, જય, અને મોહ કેળ અજ્ઞાને કરી વર્જિત હે, અથવા દેવદાનવ અને નરેન્દ્રોવદે વંદિત હે અથવા દેવદાનવ અને નરેન્દ્ર તથા તેના આશ્રિત લોકોને વંદિ કેળ વંદિલાનારૂપ સંસાર તેને અં કેળ દં એટલે સ્વંન કરે એવા હે, તથા પ્ર

धान एवं मोहोदुं ठे तप जेमनुं एवा ठे ॥ २५ ॥ आ
क्षितक नामा ठंद ठे ॥

गाथा ५६ थी ३० सुधीना लुटा शब्दना अर्थ.

अंबर-आकाश	गायलआहिं-शरीर	चित्तरुखरा-चित्रा
अंतर-अंदर, वचमां	वाली	क्षर
विआरणिआहिं-वि	पसिठिल-घणी ढीली	पाय-किरण, पग
चरवावालावडे	मेइल-मेखला	वंदिआहिं-समूहवा
ललिय-रमणिक	सोदिअ-शोभित	ला, नमेला
हंसवहु-हंसी	तडाहिं-भागवल्ली	जस्स-जेना
गामिणिआहिं-जला	खिखिणि-किंकिणी	ते-ते वे
री वडे	नेउर-नेपुर	सुविलया-अतिशे प
पीण-पुष्ट	स-रुडुं	राक्रमवाला, रुडी
सोणि-केहेडनो भाग	तिलय-तिलक	गति वाला
थण-स्तन	वलय-कंकण	अप्पणो-पोतालां
सालिणिआहिं-शो	भूसणिआहिं-शोभा	निहालएहिं-ललाट
भती	वाली	वडे
लोअणिआहिं-आं	रइकर-प्रीतिकरनार	मंडण-आभूषण
खोवाली	चउर-चतुर	उड्डण-रचना
दीवयं-दीपक छंद	मणोहर-मन हरनारी	पगारएहिं-प्रकारो
भर-भार	दंसणिआहिं-दर्शन	वडे
विणमिअ-वधारेनमेला	वाली	केहिं केहिंवि-केवाकेवा

अवंग-अपांग(वे आं खोना अंतरमां अथ वा वचेना भागमां पत्तलेह-पत्र लेख (क स्तुरीनां टपकां वगेरे) नामएहिं-नामवाला चिल्लएहिं-देदीप्यमा न शणगारनी रचनाए संगय-सहित अंगआहिं-अंगवाली तन्निविट्ट-व्याप्त	आगयाहिं-आवेलीओ पुणोपुणो-वारंवार नारायओ-नाराचक धुअ-खंखेरी काढी नांखेलो किलेसं-कलेश वंदिअस्सा-वंदन करे ला एवा जस्स-जेथी देववहुहिं-देवांगनाओ पणमिअस्सा-प्रणाम करेला एवा	सासणयस्सा-शासन वाला पिडिअआहिं-एकठी थएली देववर-नर्तक वादक देवो छरसा-अप्पराओ बहुयाहिं-घणीओए पंडियआहिं-डाहीओ वहे भासुरयं-भासुरक
--	---	--

अंवरंतर विअारणिआहिं, ललि
अ हंसवहु गामिणिआहिं ॥ पी
ण सोणि यण सालिणिआहिं,
सकल कमल दल लोअणिआ
हिं ॥ ५६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरं
तर यणन्नर विणमिअ गायलआ
हिं ॥ मणि कंचण पसिठिल महे

ल सोहिअ सोणितमाहिं ॥ वर
 खिखिणि नेउर सतिलय वलय
 विजूसणिआहिं ॥ रझकर चउर
 मणोहरसुंदर दंसणिआहिं ॥ १७ ॥
 चित्तरा ॥ देव सुदरीहिं पाय
 वंदिआहिं वंदिया य जस्स ते सु
 विक्कमा कमा अप्पणो निमालए
 हिं मंमणोद्धण पगारएहिं केहिं
 केहिंवि अवंग तिलय पत्तलेह ना
 मएहिं चिद्धएहिं संगयंगयाहिं न
 ति संनिविठ वंदणागयाहिं हुंति
 ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ १८ ॥
 नारायण ॥ तमहं जिणचंदं, अ
 जिअं जिअ मोहं ॥ धुय सव
 किलेसं, पयउ पणमामि ॥ १९ ॥

नंदित्रयं॥थुअ वंदिअस्सा रिसी
 गण देवगणोहिं, तो देववहूहिं पय
 उ पणमिअस्सा ॥ जस्स जगुत्तम
 सासण यस्सा, जति वसागय
 पिमिअयाहिं॥ देव वर चरसा व
 हुयाहिं, सुरवररइगुण पंमियआ
 हिं ॥ ३० ॥ ज्ञासुरयं ॥

अर्थः—अंबरंतर विआरणिआहिं केण्आ आगलनी
 गाथामां कहेशे एवा प्रकारनी देवांगनानुए जेमना
 चरणकमलमां वंदन करयुं ठे, तेम ठतां पण जेमनुं
 मन किंचित् पण विकारने पास्युं नहीं, एवा श्री अ
 जितनाथ जगवानने हुं नमस्कार करुंठुं. ते देवांगना
 नु केवी ठे ? तो के आकाश मार्गने विषे विचरवानुं
 ठे शील जेमनुं एवी, तथा रमणिय एवी हंसीउनी
 पेरे गमन करवानुं ठे शील जेमनुं एवी, तथा पुष्ट ए
 वा केहेरुना ज्ञाग अने स्तने करी शोचती एवी त
 था संपूर्ण कमलनां पत्र समान ठे लोचन जेमनां ए

વી છે ॥ ૨૬ ॥ આ દીપક હંદ છે.

પીણ નિરંતર યણનર કેળ વલી તે દેવાંગનાહ કેવી છે ? તો કે મોહોટા અને કામી પુરુષના હૃદયને આહ્વાદકારી એવા અને નિબિડ ગાઢ એવા સ્તનોના ખારે કરીને વિશેષે કરી નમેલાં છે ગાત્રો જેમનાં એવી, તથા મણિ અને સુવર્ણની કરેલી એવી અને પ્રકર્ષે કરી શિથિલ એવી મેઘલાલે કરી સુશોભિત છે કેહેરુ નો પ્રદેશ જેમનો એવી, તથા શ્રેષ્ઠ એવી કિંકિણી અને નેપુર વલી મનોહર તિલક તથા કંકણ એવાં આઝૂળણે કરીને વધારે સુશોભિત એવી, તથા પ્રીતિ કરનાર એવું અને ચતુર પુરુષના મનને દરણ કરનારું એવું સુંદર છે દર્શન જેમનું એવી, તે દેવીનું છે ॥ ૨૭ ॥ આ ચિત્રાકર હંદ છે ॥

દેવ સુંદરીહિં પાથવંદિઆહિં કેળ પોતાના શરીરને વિષે પહેરેલાં ઝૂળણોના અગ્રવા શરીરના કિરણોના સમૂહ છે જેમને એવી દેવાંગનાહ છે તેમણે વંદન કર્યાં, તે શું વંદન કર્યાં ? તો કે જે જગવંતનાં તે પ્રસિદ્ધ અગ્રવા રૂઢી છે ગતિ જેમની એવાં, અને રૂઢું છે પરાક્ર

મ જેમનું એવાં ચરણાર્વિંદ તેને વંદન કર્યો; તે શેણે કરી વંદન કર્યો ? તો કે પોતાના લલાટોએ કરી. તે દેવીનું કેવી છે ? તો કે જેમના શરીરને વિષે આત્મુષણની રચનાના પ્રકારો, તે કેવા કેવા અપૂર્વ પ્રકારો ? તે કહે છે. અપાંગ જે નેત્રના પ્રાંતને વિષે જે અંજનની રચના તથા ટીલાં તથા શરીરને વિષે કસ્તુરી વગેરેએ કરેલાં ટવકાંં ઇત્યાદિક નામ છે જેનાં એવા, દેવીપ્યમાન સંસ્કૃતિની રચનાયે કરી સહિત છે શરીરનાં અવયવ જેમનાં એવી દેવાંગનાનું તે જ્ઞાતિયે કરી વ્યાપ્ત થકી વંદનને માટે આવેલી એવી છે, તે દેવાંગનાનું તે પૂર્વોક્ત તમારાં ચરણાર્વિંદને અતિશય શ્રદ્ધાએ કરી વારં વાર વંદન કરે છે ॥ ૨૮ ॥ આ નારાયણક હંદ છે ॥

તમહં જિણચંદં કેળુ એ પૂર્વોક્ત સામાન્ય કેવલીને વિષે ચંડમા સમાન એવા, તથા જીત્યો છે મોહ એ ટલે અજ્ઞાન જેમણે એવા, તથા ટાલ્યા છે શારીરિક અને માનસિક સર્વ ક્લેશ જેમણે એવા શ્રી અજિત નાથ નામા વીજા તીર્થંકર તેમને પ્રયત્ને (મન, વચન, અને કાયાના ઉદ્યમે) કરી યુક્ત થકો એવો હું નમ

સ્કાર કરું ॥ ૨૯ ॥ આ નંદિતક નામા હંદ છે ॥

થુઅ વંદિઅસ્સા કે ॥ ઋષિભૂના સમૂહ તથા દેવ
તાલના સમૂહ તેણે સ્તુતિ કરેલા અને વંદન કરેલા એ
વા, અને તે પછી દેવ વધુએ પ્રણામ કરેલા એવા, તથા
જે ઇક્રી જગત્ સુક્તિ પામવાને શક્તિમાન થાય છે
માટે હત્તમ છે શાસન જેમનું એવા શ્રી શાંતિનાથ જે
તેમનાં ચરણાવિંદને દેવ નર્તકિભૂ જે છે તેણે નાચ ક
રી વંદન કર્યાં, તેને હું પણ નમસ્કાર કરું. હવે તે દેવ
નર્તકિભૂ કેવી છે ? તો કે જ્ઞાતિ વડો કરી દેવલોકથી
આવીને એકઠી મલેલી એવી, અને નર્તકવાદક દેવો અને
નાચમાં કુશલ એવી અન્સરાભૂ તેમના ઘણાભૂએ મલેલી
એવી, અને દેવતાભૂને જે ઇક્રી પ્રીતિ થાય એવા ગુણોને
વિશે માહી એવીભૂ છે ॥ ૩૦ ॥ આ જ્ઞાસુરક હંદ છે ॥

ગાથા ૩૧ થી ૩૫ સુધીના ભૂટા શબ્દના અર્થ.

વંસ-વાંસ

તંતિ-વીણા

તાલ-ચપટી, પહ્લ

મેલિએ-મલેછતે

તિહરુસર-ત્રિપુષ્કર

વાજિત્ર

મિસએ-મિશ્રિત

સમાળણે-સમાન ક-

રવામાં

सज्ज-बहुज, अधिक
गुणवालुं
गीय-गीत
जाल-जाल
घांटेआहिं-घुघरीओ
कलाव-अलंकार
देवनहिआहिं-देवन
टिओ वडे
हाव-बहु कामविकार
भाव-अल्पविकार
विभ्रम-विलास
नच्चिऊण-नाचीने
हारएहिं-विक्षेपेकरीने
तयं-ते
तिलोय-त्रिभुवन
कारयं-करनार
पसंत-प्रशांत थया छे
एस हं-आ हुं
छस-छस
चामर-चामर
पहाग-पताका(धजा)

जूव-यूप(यग्ननो स्थं
भ)
जव-जव
मंडिया-सुशोभित
झयवर-श्रेष्ठ ध्वज
मगर-मगरमच्छ
सिरिवच्छ-श्रीवत्स
सुलंछणा-सारालंछन
मंदर-मेरुपर्वत [वाला
दिसागय-दिग्गज
सस्थिअ-साथीआ
चक्र-चक्र
अंकिया-आंकेला
लढा-शोभायमान
सम-सरस्वी रीते
प्पइहा-रहेला
असम-निरुपम
प्पइहा-प्रतिष्ठा
दुठ-दुष्ट
जिहा-मोटा
पसाय-प्रसाद

सिद्धा-श्रेष्ठ
तवेण-तपेकरी
पुहां-पुष्ट
सिरीहिं-रुक्मी वडे
इहा-इष्ट
रिसीहिं-ऋषिओए
जुहा-सेवाएला
बाणवासिआ-वनवा
सिका छंद
पावया-पाप, पमाड
नारा
सं-सुखने माटे, सम्य
क प्रकारे
थुया-स्तवाएला
हुंतु-थाओ
सुहाण-सुखना
दायया-देनारा
अपरांतिका-अपरां
तिका छंद
जुअलं-जुगल, जोडहुं
गइं-गति
सासयं-शाश्वती

वंस सह तंति ताल मेलिए तिज

स्कराजिराम सह मिसए कए
 अ सुइ समाणणे अ सुछ सज्ज
 गीअ पायजाल घंटीआहिं ॥ व
 लय मेहला कलाव नेनराजिराम
 सह मिसए कए अ देव नटिआ
 हिं हाव जाव विप्रम प्पगारएहिं ॥
 नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआ
 य जस्स ते सुविक्रमा कमा तयं
 तिलोय सच्च सत्त सांत कारयं ॥
 पसंत सच्च पाव दोसमेसहं नमामि
 संति सुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारा
 यण ॥ उत चामर पद्माग जूव ज
 व मंदिआ, ऊयवर मगर तुरय
 सिरिच्छ सुलंठणा ॥ दीव समु
 ह मंदर दिसागय सोहिआ, सत्ति
 अ वसह सीह रहचक्क वरं किया

॥ पाठांतर सिखिन्न सुलंठणा

॥ ३२ ॥ ललित्रयं ॥ सहाव लघा

समप्पइघा, अदोस डघा गुणेहिं

जिघा ॥ पसाय सिघा तवेण पु

घा, सिरीहिं इघा रिसीहिं जुघा

॥ ३३ ॥ वाणवासिअ ॥ ते तवे

ण धुअ सव पावया, सव लोअ

हिअ मूल पावया संधुअ अजि

अ संति पायया, हुंतु मे सिव सु

हाण दायया ॥ ३४ ॥ अपरांति

का ॥ एवं तव बल विजलं, युअं

मए अजिअ संति जिण जुअलं

॥ ववगय कम्म रय मलं, गइं ग

यं सासयं विजलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥

अर्थः—वंस सह तंति केण इवे ते देव नर्त्तकिणए

केवा प्रकारना गीत नृत्यशी प्रभुना चरणानुं वंदन क

થું ? તે કહે છે. વાંસનો શબ્દ, વીણા, ચપટી અથવા
 પરુહાદિક મલે બંતે એટલે એકાકાર થયે બંતે, વલી
 ત્રિપુસ્કરનામા વાજિત્ર વિશેષ તેના મનોહર શબ્દે ક
 રીતે મિશ્રિત કરે બંતે, વલી તે સાંજલવાને કાન સ
 માન કરે થકે શુદ્ધ પ્રજ્ઞ તે મોર કેકા વગેરેના શ
 બ્દે કરીને, અથવા સજ્જ એટલે અધિક ગુણવાળા એવા
 ગીતે કરી સહિત એવી જે પગને વિષે જાલના આકાર
 વાલી ઘુઘરીતું કરી નિપલક્ષિત બંતે, તથા સોનાનું કં
 કણ, કેરુના કંદોરા, કલાવ અલંકાર વિશેષ, જાંઝરના
 મનોહર શબ્દે કરી મિશ્રિત કરે બંતે, વલી હાવ, જાવ,
 વિચ્રમ એટલે વિલાસ, તેમના પ્રકારો છે જેને વિષે એ
 વા જાલા અંગના વિક્ષેપે કરીને દેવનર્તકિનું જે દેવાં
 ગના તેમણે પૂર્વોક્ત પ્રકારે નાચ કરીને, નૃત્યપરાક્રમ
 વાળા શાંતિનાથજીના તે પરાક્રમે કરી સહિત એવા
 ચરણોને વંદન કર્યા છે એવા, તે ત્રિજુવનના સર્વે પ્રા
 ણીનું શાંતિના કરનાર એવા, અને પ્રશાંત (ધણા શાંત)
 થયા છે સર્વ પાપ તથા રાગાદિક દોષ જોષી, એવા ન
 ત્યમ શાંતિજિન પ્રત્યે આ પ્રત્યંક હું નમસ્કાર કરું તું
 ॥ ૩૧ ॥ આ નારાચક હંદ જાણવો ॥

ઉત્તચામર પદ્માગ કેળ ઉત્ત, ચામર, પતાકા, (ધજા) ચૂપ, જવ એવાં લક્ષણોએ કરીને મંજિત (સુશોજિત) એવા, તથા સિંહાદિ રૂપના લક્ષણવાલા ધ્વજવર, મગરમંત્ર, ધોના, શ્રીવત્સ, તે ઉત્તમ પુરુષોના બહુસ્થાનમાં હોય છે અને પગમાં પણ ચવાનો સંજવ છે. તે સર્વ શોભાયમાન છે લાંઠન જેમને એવા, તથા દ્વીપ સમુદ્ર મેરૂ પર્વત, પ્રધાન હસ્તી એવા લક્ષણો કરી શોજિત એવા છે. તથા શ્રેષ્ઠ એવા સાધિઆ, વૃષજન, સિંહ, રથ અને ચક્ર તેણે કરી અંકિત એવા, પાઠાંતરે લક્ષ્મી, વૃક્ષ (કલ્પવૃક્ષાદિક) તેનાં જલાં લાંઠનો છે જે શ્રી શાંતિનાથના હાથ પગાદિ અંગોને વિષે એવા છે ॥૩૧॥ આ લલિતક હંદ છે ॥

સહાવ લઠા સમ પ્પદ્ધા કેળ વલી કેવા છે ? તો કે સ્વચ્છાવે કરીને શોભાયમાન છે તથા નિરૂપમ છે પ્રતિષ્ઠા જેમની એવા, અથવા સરસ્વી જ્ઞમિને વિષે રહેલા એવા છે, તથા રાગાદિ દોષે કરી અદુષ્ટ એટલે વિકારે રહિત છે, તથા ગુણે કરીને મોહોટા છે, તથા પ્રસાદે (રાગાદિકના ક્ષયથી નિર્મલપણે) કરી શ્રેષ્ઠ છે,

તથા તપે કરીને પુષ્ટ છે તથા લહમીએ કરીને છદ્ધ છે, અથવા લહમી દેવીએ જેને પૂજ્યા એવા છે, તથા મુનિભૂએ જેમને નિરંતર સેવ્યા એવા છે ॥૩૩॥ આ વનવાસિકા ઠંદ છે ॥

તે તવેણ ધ્રુવ સદ્ધ કેળ તે પૂર્વે કહ્યા એવા, તથા તપે કરીને ટાલ્યું છે કર્મરૂપ સર્વ પાપ જેમણે એવા, વલી કેવા છે ? તો કે સર્વ લોકને હિતકારક જે મોહ તેનું મૂલ કારણ જે જ્ઞાન, દર્શન અને ચારિત્ર તેને પમાડનારા છે, તથા સુખને અર્થે સ્તવન કર્યું છે જે મનું એવા, જે શ્રી અજિત શાંતિ પૂજ્યપાદ, તે મને શીવ સુખના દેનારા થાલું. ॥૩૪॥ આ અપરાંતિકા ઠંદ છે ॥

એવં તવ વલ વિઝલં કેળ એ પ્રકારે તપોવલે કરીને વિજાલ એવું, અને ગયું છે કર્મરૂપ રજ અને મલ જેમને એવું, તથા શાશ્વતી એવી અને વિસ્તીર્ણ સુખ છે જેને વિષે એવી જે ગતિ, તેને પ્રાપ્ત થયું એવું અજિત શાંતિ જિન યુગલ એટલે બીજા અને સોલમા તીર્થકરનું યુગલ તેને સેં સ્તુતિ કર્યું છે ॥૩૫॥ આ ગાથાનામક ઠંદ છે ॥

गाथा ३६ थी ४० सुधीना बुटा शब्दना अर्थ.

मुख-मोक्ष	चाउम्मासे-चोमासी	हु-निश्चे
सुहेण-सुखवडे	पडिक्कमणामां	पुव्व-पूर्वना
परमेण-उत्कृष्ट [हित	संवच्छरिण-संवच्छरि	उप्पन्ना-उत्पन्नथएला
अविसायं-विषाद र	पडिक्कमणामां	विनासंति-नाश पा
नासेउ-नाश करी	अवस्स-निश्चे	मे छे
कुणउ-करो	भणिअव्वो-भणवो	इच्छह-इच्छोछो
परिसा-सभा	सोअव्वो-सांभलवो	परमपयं-मोक्षपद
वि-पण	सव्वेहिं-सर्व संघे	अहवा-अथवा
पसायं-प्रसाद	निवारणो-निवारण	कीर्त्ति-कीर्त्ति
मोएउ-हरख आपो	करनार	सुविथयडं-अतिविस्ता
नंदि-समाधि		र पामेली
पावेउ-प्राप्त करो	पढइ-भणे	भुव्वणे-जगतमां
नंदिसेण-नंदिवेणकावि	निसुणइ-निरंतर सां	उद्धरणे-उद्धार कर
अभिनंदि-सर्व प्रका	भले	नार
रना आणंदने	उभओ-वे	वयणे-वचने
सुहनंदि-सुख वृद्धि	काले-वखत	आयरं-आदर
परिखअ-पाखीपडि	थअं-स्तवनने	कुणह-करो
क्कमणामां	न-नथी	

तं बहु गुणप्पसायं, सुख सुहेण
परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे वि

(४४ए)

सायं कुणञ्ज अ परिसा वि अ
पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोए
उ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेण
मज्जिनंदिं परिसा वि अ सुह
नंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं
॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पस्किअ चान
म्मासिय, संवत्तरिण, अवस्स न
णिअव्वो ॥ सो अव्वो सब्बेहिं, उ
वसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥
गाहा ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ,
उत्तन कालंपि अजिअ संति
थयं ॥ न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्व
प्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ गाहा ॥
जइ इत्तह परम पयं, अहवा की
तिं सुविठ्ठं नुवणे ॥ ता तेत्थुक्कु
धरणे, जिण वयणे आयरं कुण

હ ॥ ૪૦ ॥ ગાથા ॥

અર્થ:-તં બહુ ગુણપ્પસાયં કેળ વલી તે પૂર્વોક્ત જિનયુગલ કેવું છે? તોકે અનેક ગુણોના પ્રસાદ છે જે મને એવું, તથા પરમ ઉત્કૃષ્ટ એવા મોક્ષ સુખ જે તેણે કરી નથી વિષાદ જેમને એવું જિનયુગલ તે મારા વિષાદને નાશ કરો. વલી આ પ્રસ્તુત સ્તવ સાંજલનારી જે વિદ્વાનોની સજ્ઞા તે પણ મહારી ઉપર પ્રસાદ કરો ॥ ૩૬ ॥ આ ગાથાઠંદ જાણવો ॥

તં મોણ્ણ અ નંદિં કેળ તે અજિતશાંતિયુગલ મને હર્ષ આપો અને સર્વ લોકોને સમાધિને પ્રાપ્ત કરો વલી આ સ્તવન કરનાર નંદિષેણ કવિ તેને સર્વ પ્રકારે સાનંદ સમૃદ્ધિને પમાણો, તથા આ સ્તવન સાંજલનાર જે શ્રોતાજનની પર્ષદા તેને પણ સુખ વૃદ્ધિ આપો. વલી મને સત્તર પ્રકારનો જે સંયમ તેને વિષે આનંદને આપો ॥ ૩૭ ॥ આ ગાથા ઠંદ છે ॥

પશ્ચિમ ચાન્દમાસે કેળ પાશ્વી પશ્ચિમણાને વિષે તથા ચોમાસી પશ્ચિમણાને વિષે તથા સાંવત્સરી પશ્ચિમણાની રાત્રીને વિષે નિશ્ચે જાણવો તે એક જણે કહેલો એવો જે આ સ્તવ તેને સર્વ સંધે સાંજલવો

(४५१)
 कारणके ए स्तव जे ठे ते विघ्न निवारण करनार ठे
 ॥ ३७ ॥ गाथा ॥

जो पढइ केण जे कोइ पुरुष अजितशांतिना
 स्तवनने बे कालने विषे जणो ठे, तथा जे वढी निरंत
 र सांजले ठे, तो ते जणनार अने सांजलनार पुरुषने
 रोग निश्चे होता नथी अने पूर्वे उत्पन्न भएला रोग प
 ण विशेषेकरीने नाश पामे ठे ॥ ३८ ॥ आ गाथा ठंड ॥

जइ इच्छा परमपयं केण जो मोक्षनी इच्छा क
 रो गो. अथवा त्रण जुवनने विषे विस्तार पामेली ए
 वी कीर्तिनी इच्छा करो गो तो त्रण लोकना उद्धार क
 रनारां एवां जिन वचनोने विषे आदरसत्कार करो
 ॥ ४० ॥ गाथा ठंड ॥

॥ अथ श्री बृहत्पांति स्तवना बुटा
 शब्दना अथ ॥

भो भो-हे, अरे
 वृणुत-सांभलो
 वचन-वचनने
 प्रस्तुत-अवसर योग्य

सर्व-सबलुं
 एतत्-आ
 ये-जे
 यात्रायां-जात्रामां

गुरोः-गुरु (नी)
 आर्हतां-वितराग
 भाजः-भजनारा
 तेषां-तेमनी

भवतां-आप (नी)
अर्हद्-अरिहंत
प्रभावात्-प्रभावथी
आरोग्य-रोगरहित
पणुं

करी-करनारी
विध्वंस-नाश
हि-जे माटे
संभवानां-उत्पन्न थ
एला (नी)

तीर्थकृतां-तीर्थकरना
जन्मनि-जन्म वखते
प्रकंप-कांपवुं
अनंतरं-पछी
अवधिना-अवधिज्ञाने
विज्ञाय-जाणीने
सौधर्म-पेहेला देवलो
क (नो)

अधिपति:-इंद्र
सुघोषा-सुघोषा
घंटा-घंट
चालन-वगाड्या
सह-साथे

समागत्य-आवीने
भट्टारक-भट्टारक(ने)
कनकाद्रि-मेरु पर्वत
(ना)

शृंगे-शिखर उपर
विहित-करेल
उद्धोषयति-उद्धोष
णा करे छे, जाहेर,
पोकारे छे

यथा-जेम
तत:-तेम
कृत-करेली
अनुकार-नकल
महाजन:-देवसमूह
गत:-प्रवर्यो, गयो
स:-ते
पंथा:-मार्ग
समेल-आवीने
स्नात्र-न्हवण, न्हवा
डवुं

पीठे-आसनपर
उद्धोषयामि-जाहेर
करुं छुं

तत्-ते, तेथी
महोत्सव-मोटो ओ
छव

इति-एम
कृत्वा-करीने
करणं-कान
दत्वा-देइने
निशम्यतां-सांभलो
पुण्याहं-पवित्र दिक्
प्रीयंतां-खुशी थाओ
भगवंत:-भगवंत
अर्हन्त:-अरिहंतो
सर्वज्ञ-सर्व जाणनार
दर्शिन:-देखनार
त्रि-त्रण
लोक-जगत्
नाथा-स्वामीओ
महिता-पूजाएला
लोकेश्वरा-जगतना
इश्वर

उद्योत्करा:-उद्योत
ना करनारा

॥ अथ बृहन्नाति ॥

ज्ञो ज्ञो ज्ञव्याः शृणुत वचनं, प्र
 स्तुतं सर्वमेतत्; येयात्रायां त्रिन्नु
 वनगुरोरार्हतां ज्ञक्तिज्ञाजः ॥ तेषां
 शांतिर्नैवतु ज्ञवतामर्हदादिप्रज्ञा
 वा; दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्ले
 शविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ गद्यं ॥ ज्ञो
 ज्ञो ज्ञव्यलोका इह हि ज्ञरतैरा
 वत विदेह संज्ञवानां समस्ततीर्थ
 कृतां जन्मन्यासनप्रकंपानंतरमव
 धिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सु
 घोषाघंटाचालनानंतरं सकलसुरा
 सुरैर्दैः सह समागत्य सविनयमर्ह
 द्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकादि
 शृंगे विहित जन्मान्निषेकः शांति

मुद्घोषयति यथा ततोऽहं कृतानु
कारमिति कृत्वा महाजनो येन
गतः स पंथाः इति ज्ञव्य जनैः
सह समेत्य स्नात्र पीठे स्नात्रं वि
धाय शान्तिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजा
यात्रास्नात्रादिमहोत्सवानंतरमिति
कृत्वा कर्णदत्वा निशम्यतां निश
म्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं, पु
ण्याहं, प्रीयंतां, प्रीयंतां, जगवंतो
हंतः, सर्वज्ञाः, सर्व दर्शिनस्त्रिलो
कनाथास्त्रिलोकमहिता स्त्रिलोक
पूज्यास्त्रिलोकेश्वरा स्त्रिलोकोद्यो
तकराः ॥

अर्थः--जो जो ज्ञव्या के० हे ज्ञव्य प्राणीन ? तमे
अवसरने योग्य एवं अने साद्यंत एवं तथा आ समीप
तरबर्त्ति एवं वचन जे ठे तेने सांजलो ! ते समीपतर

વર્તિ એવું કયું વચન ? તોકે વીતરાગ તે છે દેવ જેમ
 ને એવા પ્રસિદ્ધ તમે, તે તમારી શાંતિ હો. તે શાંતિ
 શેણે કરીને આય તો કે અર્હત્, સિદ્ધ, આચાર્ય ઝપા
 ધ્યાય, સાધુ, તેમના પ્રજ્ઞાવ ધકી, વલી તે કેવા જ
 વ્યપ્રાણીક ? તોકે ત્રણ જીવનના ગુરુ જે જગવાન તે
 મની યાત્રાને વિષે જક્તિના જજનારા છે. તે જવ્યપ્રા
 ણીકને શાંતિ આય. તે કેવી શાંતિ ? તો કે આરોગ્ય લ
 દ્ધમી, ધીરજ અને બુદ્ધિ એ ચાર વાનાંને કરનારી તથા
 ક્લેશના નાશની કારણ જૂત એવી છે ॥ ૧ ॥

જો જો જવ્યલોકાઃ કેળ હે જવ્યલોકો જે કાર
 ણ માટે આ જરત, ઐરાવત અને મહાવિદેહને વિષે જ
 ત્પન્ન થયા એવા સઘલા તીર્થકરોના જન્મને વચ્ચે સૌ
 ધર્માધિપતિનું આસન કંપાયમાન થયું તે પછી તે સૌ
 ધર્મેન્દ્ર અવધિજ્ઞાને કરીને જિન જન્મને જાણીને સુઘોષા
 ઘંટાના વગારુયા પછી સર્વ દેવતા તથા પાતાલવાસી
 દેવોના ઇંડોની સાથે ત્યાં આવીને સ્તુતિયે કરીને અર્હ
 ત્ રૂપ જદ્વારક તેને ગ્રહણ કરીને મેરુપવતના શિખર
 ઉપર જઈને નિર્માણ કર્યો છે સ્નાત્ર મહોત્સવ જેણે એ
 વો ઠતો તે સ્નાત્રની સમાપ્તિ થયે ઠતે મોટા શબ્દે

शांतिने पठन करे ठे. ते माटे हुं पण तेवीज नकल
 जेभ आय ए प्रकारे करीने तथा इन्द्रादिक देव समूह
 जे मार्गे प्रवर्त्यो, तेज मार्गने आपणे पण अनुसरवुं
 एम विचारीने ज्ञव्य प्राणीनु जिनालयने विषे रूमी
 रीते एकठा मलीने स्नात्र पीठने विषे श्रीजिनने स्ना
 त्र करावीने शांतिना पाठने हुं जे मोटा शब्दे ज्ञणुं
 (उद्घोषणा करुं). ते तेमनी पूजा यात्रा, स्नात्रादि,
 महोत्सवानंतर ए प्रकारे करीने ते उद्घोषणा कान देइ
 (सावधान अइ) सांजलो सांजलो. स्वाहा ए मंत्राकर
 ठे लँकार पंच परमेष्टि वाचक ठे. तेने उच्चार करीने
 कहे ठे, के हे ज्ञव्य प्राणीनु! आज पुण्यनो दिवस ठे,
 पुण्यनो दिवस ठे, (तथा) जगवंत तीर्थकरो ते अति
 संतुष्ट आनु, अति संतुष्ट थानु, ते अर्हत जगवान् कहे
 वा ठे ? तो के सर्वज्ञ ठे. केवलदर्शने करीने सर्वने
 जुए ठे तथा त्रणलोकना नाथ एवा तथा त्रणलोके पु
 ष्पादिके करी अर्चित एवा, अने वली त्रण लोकने पू
 जन करवा योग्य एवा, तथा त्रण लोकोना स्वामी
 एवा, तथा त्रणलोकना प्रकाशकारक ठे ॥

तुटा शब्दना अर्थ

अंताः-अंतमां जेमेते	करनारा	मार्गेषु-मार्गमां
एवा	मुनयः-साधुओ	रक्षंतु-रक्षणकरो
जिनाः-तीर्थकरो	प्रवरा-श्रेष्ठ	कांतारेषु-वनोष्मां
शांताः-शांत थएला	दुर्मिह-दुकाल	
शांतिकराः-शांतिना	दुर्ग-विकट	

ॐ ऋषज्ञ अजित संज्ञव अग्नि
 नंदन सुमति पद्मप्रज्ञ सुपार्श्व चंश्
 प्रज्ञ सुविधि शीतल श्रेयांस वा
 सुपूज्य विमल अनंत धर्म शांति
 कुंथु अर महि मुनिसुव्रत नमि ने
 मि पार्श्व वर्द्धमानांता जिनाःशांताः
 शांतिकरा ज्वंतु स्वाहा ॐ मुन
 यो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्निह
 कांतारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नि
 त्यं स्वाहा ॥

अर्थः-ॐ ऋषज्ञ अजित के० वली ते केवा ठे ?

तो के शांतिने पामेला तथा श्री ऋषभदेवजी जेमां
 आदि ठे अने श्री वीरस्वामी अंतमां ठे, एवा चोवीश
 तीर्थकरो शांतिना करनारा हो. लँ कार मंगलार्थक्षण
 वो. तथा मुनियोने विषे श्रेष्ठ साधुज जेने शत्रुनो क
 रेखो पराजव तथा दुष्काल तथा चोर कांटादिके नग
 रा मार्गने विषे, तथा अरण्य मार्गने विषे तमोने निरं
 तर रक्षण करो ॥

बुटा शब्दना अर्थ

मेधा-धारण करवा	निवेशनेषु-मुकाम	ग्रहित-लीधेलुं
नी बुद्धि	(करवा)मां	नामानः-नामवाला
प्रवेशन-गृह प्रवेश	सु-रुडुं	

लँ ह्रीं श्री धृति मति कीर्ति कां
 ति बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्यासाध
 न प्रवेशननिवेशनेषु सुगृहीतनामा
 नो जयंतु तेजिनैः ॥

अर्थ:-लँ ह्रीं श्री के० लँ कार परमात्मा वाचक
 प्रणवबीज ठे ह्रीं कार मायाबीज ते वश करनार ठे.
 श्री कार लक्ष्मीबीज ते इव्यागमन कारण ठे. धैर्य,

(४५६)

मति, यश, शोभा, बुद्धि, संपत्ति, धारण करवानी
बुद्धि, चौद विद्यानुं साधन, तथा गृह प्रवेश तथा
सुकामने विषे रूढुं ग्रहवा योग्य नाम छे जेमनुं एवा
ते पूर्वोक्त तीर्थकरो ते सदैव जयवंता वर्त्तो ॥

तुटा शब्दना अर्थ

रोहिणी१-देवीनुं नाम छे
षोडस-शोल
प्रभृति-विगेरे

चातुर्वर्ण्यस्य-चार प्रकारना
श्रमण-साधु

ॐ रोहिणी प्रज्ञप्ति वज्रशृंगला व
ज्जांकुशी अप्रतिचक्रा पुरुषदत्ता का
ली महाकाली गौरी गांधारी स
र्वास्त्रा महाज्वाला मानवी वैरुद्ध्या
अक्षुप्ता मानसी महामानसी षो
डश विद्या देव्यो रक्षंतु वो नित्यं
स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृ

१ रोहिणीथी महामानसी सुधी सोल देवीयोनां नाम छे.

ति चातुर्वर्ण्यस्य श्री श्रमण संघ

स्य शांतिर्नवतु तुष्टिर्नवतु पुष्टिर्नवतु॥

अर्थः--लुँ रोहिणी के० वली रोहिणीथी आरंजी

ने मूलमां लखेली एवी महामानसी देवीपर्यंत शोल
विद्याधिष्ठात्री देवीयो तमोने निरंतर रहण करो. ए
ठेकाणे स्वाहा जणवुं. कोइ ठेकाणे लुँ स्वाहा एवो पण
पाठ ठे. अहीआं लुँ कार ते मंगलार्थ जाणवो. पढी आचा
र्यने उपाध्याय प्रमुख चार प्रकारवाला सुशोजित एवा
श्रमण (जे श्री वीर जगवान् तेमनो आचार्य उपाध्या
य, साधु अने साध्वी ए रूप) संघने शांति हो, तुष्टि
आल धर्मनी पुष्टि आल ॥

बूटा शब्दना अर्थ

ग्रहाः-नवग्रहो
अंगारक-मंगल
बुध-बुध
बृहस्पति-गुरु
शुक्र-शुक्र
शनिश्चर-शनि
राहु-राहु

केतु-केतु
सहिताः-परस्परमल्या
लोकपाला-लोकपाल
साथे
सोभ, }
यम }
वरुण }
कुवेर }

वासव-इंद्र
आदिस-सूर्य
स्कंद-स्कंद देव
विनायक-गणेश
उपेताः-सहीत
अन्येऽपि-बीजा पण
ग्राम-गाम

देवतादय-देवता वि	अक्षीण-अखुट	कोष्ठागारा-कोठार
गेरे	कोश-भंडार	नरपतयः-राजाओ

ॐ ग्रहाश्चंद्र सूर्यांगारक बुध बृह
 स्पति शुक्र शनैश्वर राहु केतु स
 हिताः सलोकपालाः सोम यम
 वरुण कुबेर वासवादित्य स्कंद वि
 नायकोपेताः ये चान्येऽपि ग्राम न
 गर क्षेत्र देवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां
 प्रीयंतां अक्षीण कोश कोष्ठागा
 रा नरपतयश्च ज्वंतु स्वाहा ॥

अर्थः--ॐ ग्रहाश्चंद्र के० हवे पूर्वाक्त संघने चंद्र,
 सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्वर, राहु अने केतु
 ए नवग्रहो, परस्पर मढ्या तेवा, सोम, यम, वरुण, अने
 कुबेर ए चार लोकपाले सहित तथा इंद्र वार प्रकारना
 सूर्य, स्कंद अने गणेश तेणे करी मढ्या एवा सर्व देव
 तानु. वली बीजा पण गाम, नगर, तथा क्षेत्रना देवतादिक
 जे ठे. ते सर्वे प्रसन्न थान प्रसन्न थान; तथा राजान न

श्री कृप पाश्या जंमार जेमना तथा धान्यनां घर जे
मनां एवा थाल ! स्वाहानो अर्थ पूर्वनीपेरे जाणवो ॥

तुटा शब्दना अर्थ

भ्रातृ-भाइ	भूमंडल-पृथ्वीमंडल	धया
कलत्र-स्त्री	आयतन-ठेकाणुं	पापानि-पापो
सुहृद्-गोठीआ	निवासि-वसनारा	शाम्यंतु--शांतिने
संबंधि-सासरीआं	दुर्भिक्ष-दुकाल	दुरितानि--अशुभ
बंधुवर्ग-गोत्रीया	दौर्मनस्य-दुर्मनपणुं	शत्रवः--वेरीओ
आमोद-हर्ष	उपशमनाय-उपशमने	पराङ्--अवला
प्रमोद-चित्तप्रसन्नता	माटे	मुखाः--मुखवाला
अस्मिन्-आ (मां)	प्रादुर्भूतानि-उत्पन्न	

ॐ पुत्रमित्र भ्रातृ कलत्र सुहृद्
स्वजन संबंधि बंधु वर्गसहिता नि
त्यं चामोद प्रमोदकारिणः अस्मिँ
श्च जूमंमल्लायतननिवासिसाधुसा
ध्वी श्रावकश्राविकाणां रोगोपस
र्गव्याधि दुःखदुर्निद्वदौर्मनस्योप
शमनाय शांतिर्नवतु ॥ ॐ तुष्टि

(૪૬૩)

પુષ્ટિ ક્ષત્તિ વૃદ્ધિ માંગલ્યોત્સવાઃ,
સદા પ્રાહુર્જૂતાનિ પાપાનિ શામ્યં
તુ, હુરિતાનિ શત્રવઃ પરાઙ્ મુખ્યા
જનંતુ સ્વાહા ॥

અર્થઃ--હું પુત્ર મિત્ર કેળ પુત્ર, મિત્ર, જ્ઞાન, સ્ત્રી,
સરસ્વી નમ્મર વાલા, જ્ઞાતિ વાલા, સાસરીયાં કુટુંબી
એ વ્રાતે સર્વ નિરંતર વલી હર્ષ અને ચિત્ત પ્રસન્નતા તેને
કરનારા હો, તથા આ મૃત્યુ લોકને વિષે પૃથિવીમાં
પોતાના સ્થાનકોને વિષે નિવાસ કરનારા એવા સાધુ,
સાધ્વી, શ્રાવક અને શ્રાવિકા તેમના રોગ, ઉપસર્ગ,
વ્યાધિ, દુઃખ, હુર્નિક્ક અને હુર્મનપણું તેમના ઉપશામ
ને અર્થે શાંતિ જે હે તે હો. ॥

હું તુષ્ટિ પુષ્ટિ કેળ હુંકાર મંગલાર્થ હે. સંતોષ, પુ
ષ્ટિ, સંપત્તિ પરિવારનો વિસ્તાર, કલ્યાણ અને મહો
ત્સવ તે સર્વ આનંદ તથા નિરંતર ઉત્પન્ન થયાં એવા જે
પાપો હુરિતો તે શાંતિને પામો અને તમારા વેરીનું જે
હે તે સર્વ અવલું હે મુખ જેમનું એવા આનંદ, સ્વાહા શુ
ભ સૂચક હે. ॥

(४६४)

बुटा शब्दना अर्थ

विधायिने-करनारने
अमराधीश-इंद्रो
अभ्यर्चित-पूजित
दुःस्वप्न-खोटुं स्वप्न

निमित्त-कारण
संपादित-संपादन करी छे
हितसंपत्त-हितनीसंपत्ति

श्रीमते शांतिनाथाय, नमः शांति
विधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधी
श, मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शां
तिः शांतिकरःश्रीमान, शांतिं दि
शतु मे गुरुः ॥ शांतिरेव सदा ते
षां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥
जन्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रहगतिदुःस्वप्नदु
र्निमितादि ॥ संपादितहित संप,
न्नामग्रहणं जयति शांतेः ॥ ३ ॥
श्री संघजगज्जनपद, राजाधिपरा
जसन्निवेशानाम् ॥ गोष्टिकपुर

मुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेत्वांतिम्॥

अर्थः--श्रीमते शांतिनाथाय के० शांतिनाथ
नमस्कार आन ते शांतिनाथ केवा ठे ? तो के सम
सरणादि ऋद्धि वाला ठे तथा शांतिने करनारा एव
ठे ते शांति कोने करनारा ? तो के त्रण लोकने, तथा
वली केवा ठे ? तो के चोसठ इंझेना सुकुट तेमणे
जित ठे चरण जेमना एवा ठे. ॥ १ ॥

शांतिः शांतिकरः के० शांतिना करनार एव
शांतिनाथ मने शांतिने आपो. कारण के जेमना घ
ने विषे यथार्थ उपदेशना करनार सुशोजित एवा श्री
शांतिनाथनामा जिननुं पूजन आय ठे तेमना घरने गि
षे निरंतर शांतिज आय ठे. ॥ २ ॥

उन्मृष्टरिष्ट दुष्ट के० श्री शांतिनाथनुं नाम ग्रह
ण पण उत्कृष्ट वर्त्ते ठे ते नाम ग्रहण केवुं ठे ? तो के
उपड्व तथा दुष्ट ग्रहनी गतिने दूर करनारुं ठे तथा
खोटं स्वप्न जे दुःखोनां कारण ठे तेने दूर करनारुं ठे,
तथा हितनी संपत्ति संपादन करनारुं ठे ॥ ३ ॥

श्री संघजगज्जनपदके० श्रीसंघजगज्जनपद के०

(४६६)

जगतना देश, राजाधिपराज्य सन्निवेशानां के
राजानु तथा अधिपतिन, राज्यना मुकामो ए सर्वना
नाम ग्रहणे करीने, तथा नगरना मुख्य पुरुषना पण
नाम ग्रहणे करीने (ए सौनां नाम लेइने) शांतिने
नुंचे स्वरे करीने बुद्धोषणा करे ॥ ४ ॥

बुटा शब्दना अर्थ.

पौर-शेहेरी	ब्रह्मलोकस्य-ब्रह्मलो	वपुः-शरीर
जनपदा-देश	कनी	पुष्प-फूल
अधिपानां-अधिपतिनां	ॐ स्वाहा-मंगलवा	चंदन-केसर
सन्निवेश-मुकाम	च्य वचन	आभरण-शणगारयी
गोष्ठिकानां-कंपनी	अवसानेषु-अंतने विषे	अलंकृतः-शोभतो
ओनां	चतुष्किकायां-मंडप	पानीयं-पाणीने
मुख्याणां-मुख्य पुरु	मां, चोकीमां	दातव्यं-आपवुं, देवुं,
षोनां	समेत-सहित	मुकवुं
	शुचि-पवित्र	

श्री श्रमणसंघस्य शांतिर्नवतु, श्री

पौरजनस्य शांतिर्नवतु, श्री जन

पदानां शांतिर्नवतु, श्री राजाधि

(४६७)

पानां शांतिर्जवतु, श्री राजसन्निवे
शानां शांतिर्जवतु, श्रीगोष्ठिकानां
शांतिर्जवतु, श्रीपुर मुख्याणां शां
तिर्जवतु, श्री ब्रह्मलोकस्य शांति
र्जवतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्री
पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शा
तिप्रतिष्ठा यात्रा स्नात्राद्यवसानेषु
शांतिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदन
कर्पूरागरु धूपवासकुसुमांजलि स
मेतः स्नात्रचतुष्किकायां श्री संघ
समेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्र चं
दनाभरणालंकृतः पुष्पमालां कंठे
कृत्वा शांतिमुद्घोषयित्वा शांतिपा
नीयं मस्तके दातव्यमिति ॥

अर्थः--श्री श्रमणसंघस्य के० सुशोभित एवा
श्रमण संघनी शांति थान, तथा पुरमां वसनारा लो

कनी शांति थान. तथा देशनी शांति थान तथा राजा अने अधिपति तेमनी शांति थान. तथा राजाना मुकामनां स्थानक जे सन्निवेश, तेनी शांति थान, तथा धर्मसन्नास्थ जनो एटले न्याय सन्ना तेमनी शांति थान तथा पुरना मुख्य माणसोनी शांति थान, तथा ब्रह्मलोकनी शांति थान. पहेली वखेतनुं नै स्वाहा पद मंगलार्थ ठे, तथा बीजीवारनुं नै स्वाहा ए पद ते रूमे प्रकारे देवोने कहे ठे. तथा धूप दीपादिक पूजानां उपकरण श्री पार्श्वनाथने संतोषने माटे थान ॥

एषा शांतिप्रतिष्ठा केण आ शांतिपाठ ते प्रतिष्ठाना तथा यात्राना तथा स्नात्रना अंतने विप्रे ज्ञानवो तथा पाक्षिक, सांवत्सरिक प्रतिक्रमणना अंतमां अवश्य पाठ करवो, तथा बीजां पण धर्मकार्योनी समाप्तिमां पण अवश्य उद्घोषण करवा योग्य ठे. हवे 'ते केवी रीते उद्घोषण करवुं ? ते कहे ठे. कोइपण विशिष्ट गुणवान् श्रावक भज्जो अइने शांतिने माटे शांति कलशने जावा हाथे पकसीने, तेना उपर जमणो हाथ स्थापन करीने, कुंकुम, चंदन, कर्पूर, अगरु, धूप, वास, कुसुमांजली, तेणे सहित स्नात्र

(४६ए)

मंरुपमां चतुर्विध संघयुक्त ठतो मेल रहित पवित्र ठे
शरीर जेनुं एवो पुष्प, वस्त्र, चंदन तथा आन्नरणे सु
शोजित ठतो पुष्पनी जे माला तेने पोताना कंठने वि
षे धारण करीने, मोटा शब्दे शांतिनो उद्घोष करी
ने पढी ते महान् पुरुष तथा बीजानुये शांति कलश
ना जलने मस्तकने विषे ह्मेपन करवुं. इति के० एसमा
तिना अर्थमां ठे

बुटा शब्दना अर्थ.

नृत्यंति-नाचे छे	हि-निश्चे	सर्वत्र-सर्व ठेकाणे
मणि-रत्न	परहित-पारकुं भलुं	तिथ्ययर-तीर्थकर
वर्ष-वरसाद, वृष्टि	करवामां	माया-माता
सृजंति-करे छे	निरता-प्रीतिवाला,	सिवादेवी-नेमिनाथ
गायंति-गाय छे	सावधान	नी माता
मंगलानि-मंगलगीतोने	भूतगणाः-प्राणीऔं	नयर-नगर
स्तोत्राणि-स्तोत्रने	ना समूह	आसिव-उपद्रव, अ
गोत्राणि-वंशोने	दोषाः-दोषो	कल्याण
पठंति-भणे छे	प्रयांतु-पामो	उवसमं-उपशम
मंत्रान्-मंत्रोने	नाशं-नाशप्रते	

नृत्यंति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजं

ति गायति च मंगलानि ॥ स्तोत्रा
 णि गोत्राणि पठन्ति मंत्रान्, कल्या
 णज्ञाजो हि जिनान्निषेके ॥ १ ॥
 शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिर
 ता ज्वन्तु जूतगणाः ॥ दोषाः प्रयां
 तु नाशं, सर्वत्र सुखी ज्वन्तु लो
 काः ॥ २ ॥ अहं तिष्ठयस्माया,
 सिवा देवी तुम्ह नयर निवासि
 नी ॥ अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, अ
 सिवो वसमं सिवं ज्वन्तु ॥ स्वाहा
 ॥ ३ ॥ उपसर्गाः क्लयंयांति, हिंयं
 ते विघ्न वल्लयः ॥ मनः प्रसन्नता
 मेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ स
 र्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण
 कारणं ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जै
 नं जयति शासनं ॥ ५ ॥

અર્થ:--નૃત્યંતિ નિત્યં કેળવે જિનના અન્નિષેકને વિષે જે જ્ઞવ્યજનો નિરંતર નાચે છે, રત્ન, મોતી અને પાંચ વર્ણનાં ફૂલોની વૃષ્ટિ કરે છે, વલી મંગલ એવાં ગીત અને ધવલ તેને ગાન કરે છે, તથા સ્તોત્રને તથા તેમના વંશને પઠન કરે છે, વલી મંત્ર ગર્જિત એવા પાઠો ને જ્ઞણે છે, અને ઉપલક્ષણથી બીજા જનોયે પઠન કરેલા મંત્રોને સાંજીલે છે. તે જ્ઞવ્ય જીવો નિશ્ચે કલ્યાણ ને જ્ઞજનારા એવા થાય છે.

શિવમસ્તુ સર્વ જગતઃ કેળવે સર્વ જગતનું કલ્યાણ થાનું. તથા પ્રાણી સમૂહ પારકું હિત કરવામાં સાવધાન થાનું, તથા દોષ જે તે નાશને પામો તથા સર્વ સ્થાનકને વિષે સર્વ લોક સુખી થાનું ॥૧॥

અહં તિહ્યર માયા કેળવું હું, તીર્થંકર શ્રી નેમિ નાથની માતા જે શિવાદેવી હું તે કેવી હું ! તો કે તમારા નગરને વિષે નિવાસ કરનારી હું એટલે સાનિધ્યકારી હું. એ કારણ માટે અમારું કલ્યાણ હો અને નામોચ્ચાર માત્રે કરી તમારું કલ્યાણ હો. અશિવનો હાથમ છે જેમાં એવું કલ્યાણ હો. સ્વાહા એ પદનો અર્થ

થ પૂર્વની પેરે જાણવો ॥ ૩ ॥

નપસર્ગાઃ ક્યંયાંતિ કેળ જિનેશ્વર તે પૂજ્યે ઠતે વિ
ગ્ન વહ્નિયો જે છે તે ઠેદાય છે અને મન પ્રસન્નતાને પામે
છે અને નપસર્ગો ક્યને પામે છે ॥ ૪ ॥

સર્વ મંગલ માંગલ્યં કેળ સર્વ મંગલને વિષે મં
ગલ કરનારું તથા સંપૂર્ણ આરોગ્યતાનું કારણ સર્વ ધ
ર્મોને વિષે શ્રેષ્ઠ એવું જિન સંબંધિ શાસન તે સર્વોત્કૃષ્ઠ
વર્તે છે ॥ ॥ ૬ ॥

સંતિકર સ્તોત્રના ગાથા ૧ થી ૭ સુધીના

તુટા શબ્દના અર્થ.

દાયારં-દાતારને	સ-સહિત	મંતેળ-મંત્રેકરી
સમરામિ-સ્મરુંછું	વિ-વિષ્ટા	અસિવ-ઉપદ્રવ
ભક્ત-ભક્ત	પ્પ-લઘુનીતિ	હરણાણં-હરણ કર
પાલગ-પાલનાર	ઓસહિ-ઔષધિ	નારાને
નિઘ્વાણી-નિર્વાણી	પત્તાણં-પ્રાપ્ત થયા	
દેવી	સંતિસામિ-શાંતિસ્વા	ખેલ-શ્લેષ્મ
ગરુડ-યક્ષનું નામ છે	મી	લાદિ-લઘ્વિ
કય-કરેલી છે	પાયાણં-પાદને [જ છે	સૌંદ્રી-મંત્રવીજ
સેવં-સેવા (જેની)	શૌસ્વાહા-૯ મંત્રવી	દેઈ-આપો

वाणी-वाग्देवता	पन्नती-प्रज्ञप्ति(नामछे)	महामाणसिआ-महा
सामिणि-स्वामिनी	वज्जशिखला-वज्जशृं	मानसिका
जख्ख-जक्ष	खला	गोमुह-गोमुख
राय-राजा	वज्जंकुसि-वज्जंकुशी	महजख्ख-महायक्ष
गणिपिडगा-गणिपी	चक्केसरि-चक्केश्वरी	तिमुह-त्रिमुख
टक यक्ष	नरदत्ता-नरदत्ता	तुंवखु-तुंवखु
ग्रह-ग्रह	गोरी-गौरी	कुसुमो-कुसुम
दिसिपाल-दिकूपाल	गंधारी-गांधारी	मायंगो-मातंग
इंदा-इंद्र	महजाला-महाज्वाला	विजय-विजय
रख्खंतु-रक्षण करो	माणवी-मानवी	अजिय-अजित
भक्ते-भक्तोंने	वइरुद्धा-वैरुद्ध्या	वंभो-ब्रह्म
रोहिणी-नाम छे	माणसिआ-मानसिका	मणुओ-मनुज
		सुरकुमारो-सुरकुमार

॥ अथ संतिकरस्तोत्र ॥

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं ज
यसिरिइ दायारं ॥ समरामि जत्त
पालग, निघाणी गरुमकयसेवं॥१॥
जुँ सनमो विप्पोसहि, पत्ताणं सं
तिसामि पायाणं ॥ जौँ स्वाहा मं
तेणं, सवासिव डुरिअ हरणाणं

॥ १ ॥ नै संति नमुक्कारो, खेळो
 सहिमाइ लक्षिपत्ताणं ॥ सौ झी
 नमो सबो, सहि पत्ताणं च देइ
 सिरिं ॥ ३ ॥ वाणी तिहुअणसा
 मिणि, सिरिदेवी जस्कराय गणि
 पिम्मा ॥ गह दिसिपाल सुरिंदा,
 सयावि रक्कंतु जिणज्जत्ते ॥ ४ ॥
 रक्कंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्ज
 सिंखला य सया ॥ वज्जंकुसि च
 केसरि, नरदत्ता कालि महाका
 ली ॥ ५ ॥ गोरी तह गंधारी, म
 हजाला माणवी अ वइरुद्धा ॥
 अहुत्ता माणसिआ, महामाण
 सिआन देवीन ॥ ६ ॥ जस्का
 गोमुह महज, स्क तिमुह जस्केस

तुंबरु कुसुमो ॥ मायंगो विजया
जिय, बंजो मणुज सुरकुमारो॥९॥

अर्थः—संतिकरं संतिजिणं के० हुं शांतिनाथने
मनमां समरुं, ते केवा ठे ? तो के शांतिना करना
रा ठे, तथा जगतना लोकने शरण जय निवारण क
रनार ठे, वली जय अने लक्ष्मीना दातार ठे, वली
ज्ञातोने पालन करनारा ठे, वली निर्वाणी नामे देवी
तथा गरुड नामे यह ए बेहुए जेमनी सेवा करेली ठे
एवा ठे ॥ १ ॥

ॐ नमो विष्णोसहि के० श्री शांति स्वामीना
पादने नैकारे सहित नमस्कार आन ते शांतिस्वामी
पाद केवा ठे ? तो के जेनां विष्टा अने लघुनीति ते
औषधिरूप ठे, वली केवा ठे ? तो के ॐ स्वाहा ए
मंत्र बीजे करी युक्त ठे, वली ॐ नमो विष्णोसहिप
ताणं ॐ स्वाहा एवा मंत्रपदे करीने सकल जगत्ना
मरकी आदि उपद्रवो तथा पापने हरण करनार ठे॥१॥

ॐ संति नमुकारो के० ॐ एटले शोभायमान
एवा, शांतिस्वामी पादने नमस्कार आन, ते शांतिस्वा

मीपाद केवा ठे ? तो के सलेखम कफ ते आदि पर
म औषधिपणाये करीने प्राप्त थयां ठे जेमने एवा ठे
वली तेने सौँ ङ्गी सहित नमस्कार हो. वली केवा
ठे ? तो के जेमना दांत केश वगेरे सर्वे अंग औषधि
पणाने पासयां ठे जेमने एवा ठे, अने तेनुने करेलो जे
नमस्कार ठे ते ज्ञव्योने लक्ष्मी आपो आंहिं “ नुँ ङ्गी
नमो खेतोसहि लक्ष्मिपत्ताणं तथा नुँ ङ्गी नमो सवोस
हि पत्ताणं ” ए बे मंत्रो सर्व उपड्व नाशकारक ठे ॥३॥

वाणी तिहुअणसामिणि केण वाणी जे श्रुत अधि
ष्टायिका देवी ठे ते त्रण जुवननी स्वामिनी, अने पद्म
ह निवासिनी व्यंतर जातिवाली लक्ष्मीनामा देवी, अ
ने यक्षराज, अने गणिपीटक नामे द्वादशांगीनो अधि
ष्टायक तथा सूर्यादि नव ग्रह तथा दश दिक्पाल तथा
देवताना चोसठ इंडो ते सर्वे निरंतर श्री तीर्थकरोना
जक्तजनोनुं रक्षण करो ॥ ४ ॥

रस्कंतु मम रोहिणी केण मने तथा बीजा जी
वोने पण सर्वोपड्वथी निरंतर रक्षण करो. हवे ते को
ण रक्षण करो ? ते कहे ठे. एक पुण्यरूप बीजने उ
त्पन्न करनारी रोहिणीनामा देवी, बीजी वली अति

ज्ञानवंत प्रज्ञप्ति, त्रीजी वज्र जेवी शांकल धारण क
 रनारी वज्रशृंखला, चोथी वज्र तथा अंकुश धारण
 करनारी वज्रांकुशी, पांचमी चक्र धारण करनारी च
 क्केसरि, ठढी मनुष्यने वरदान आपनारी नरदत्ता, सा
 तमी श्यामवर्णवाली काली, आठमी विशेष श्यामव
 र्णवाली महाकाली ॥ ५ ॥

गोरी तहगंधारी के० नवमी गौरवर्णवाली गोरी,
 दशमी गायना वाहनवाली गांधारी, अगीआरमी मो
 टी ज्वालावाली महाजाला, बारमी माणसनी माता
 तुल्य मानवी, तेरमी वेर शमावनारी वैरुट्या, चौदमी
 पापनो जेने स्पर्श नथी ते अतुत्ता, पंदरमी मनने सा
 निध्यकारी मानसिका, तथा तेवीज सोलमी पल मा
 नसिका ए शोल देवीनु जे ठे ते रक्षण करो, विद्या प्र
 धानपणाने लीधे ए शोले विद्या देवीनु कहेवाय ठे ॥ ६ ॥

हवे चोवीस तीर्थकरोना य्होनां नाम अनुक्रमे
 कहे ठे. जरका गोमुह के० प्रथम गोमुखनामा यहु, बी
 जो महायहु, त्रीजो त्रिमुख, चोथो इश्वर, पांचमो
 तुमरु, ठढो कुसुम, सातमो मातंग, आठमो विजय,

नवमो अजित, दशमो ब्रह्म, अगीआरमो मनुज, बार
मो सुरकुमार नामे यह ठे ॥ ७ ॥

गाथा ८ थी १४ सुधीना ठुटा शब्दना अर्थ.

छम्मुह-षण्मुख	सिरिवच्छा-श्रीवत्सा	रखखं-रक्षा
पयाल-पाताल	चंडा-चंडा	सुदिष्टि-सम्यक्दृष्टि
किन्नर-किन्नर	विजया-विजया	सहिओ-सहित
गरुडो-गरुड	अंकुसि-अंकुशी	मज्जवि-मनेपण
गंधव्व-गंधर्व	पन्नइति-पन्नगा	मुणिसुंदर-नाम छे
जखिखदो-यक्षेद्र	निव्वाणि-निर्वाणी	महिमा-माहात्म्य
कूबर-कूबर	अच्चुआ-अच्युत्ता	सरइ-स्मरण करे छे
वरुणो-वरुण	धरणी-धारिणी	उवदव-उपद्रव
भिउडी-भृकुटी	वइरुइ-वैरोद्या	रहिओ-रहित
गोमेहो-गोमेध	अछुत्त-अछुत्ता	स-ते
पास-पार्श्व	अंब-अंबा	लहइ-पामे छे
अजिआ-अजिता	सिद्धा-सिद्धादेवी	संपयं-संपत्
दुरिआरि-दुरितारि	तिथ्य-तीर्थ	तवगच्छ-तपोगच्छ
अच्चुअ-अच्युत	रखखण-रक्षण	गयण-गगन
संता-शांता	रया-तत्पर	दिणयर-दिनकर
जाला-ज्वाला	अन्ने-अन्य (वीजा)	जुगवर-युगप्रधान
सुतारया-सुतारा	जोइणि-योगिनी	सिरि-श्री
असोय-अशोका	कुणंतु-करो	सोमसुंदर-नाम छे

गुरुणं-गुरुना
लद्ध-प्राप्त थइ

गणहर-गणधर
विज्जा-विद्या

भणइ-भणे छे
सीसो-शिष्य

ठम्ममुह पयाल किन्नर, गरुमो गंध
व तहय जरिंदो ॥ कूबर वरुणो
जिनमी, गोमेहो पासमायंगो ॥७॥
देवीन चक्केसरि, अजिआ डुरि
आरि काली महाकाली ॥ अ
चुअ संता जाला, सुतारयासोय
सिखिन्हा ॥ ए ॥ चंमा विजयं
कुसि, पन्नइति निवाणि अचुआ
धरणी ॥ वइरुद्ध तुत्तगंधा, रि अं
व पनुमावई सिद्धा ॥ १० ॥ इअ
तिठ रक्कण रया, अन्नेवि सुरासु
रि चउहावि ॥ वंतर जोइणि पमु
हा, कुणंतु रक्कं सया अम्हं ॥११॥
एवं सुदिठि सुरगण, सहिन संघ

स्स संति जिणचंदो ॥ मज्झवि क
 रेण रक्कं, मुणिसुंदरसुरिथुअम
 हिमा ॥ १२ ॥ इअ संति नाह
 सम्म, दिठ्ठि रक्कं सरइ तिकालं
 जो ॥ सवोवद्वरहिउ, स लहइ
 सुहसंपयं परमं ॥ १३ ॥ तवगह
 गयण दिणयर, जुगवर सिरि सो
 मसुंदरगुरूणं ॥ सुपसाय लद्धगण
 हर, विद्यासिद्धिं जणइ सीसो
 ॥ ४ ॥ इति ॥

ठम्मुह पयाल के० तेरमो षण्मुख नामा यक्क, चौ
 दमो पाताल, पन्नरमो किन्नर, सोलमो गरुड, सत्तरमो
 गंधर्व, तथा बली अठारमो यक्षेइ, उगणीसमो कूव
 रनामा यक्क, वीशमो वरुण, एकवीसमो ऋकुटी, वा
 वीसमो गोमेध, त्रेवीसमो पार्श्व अने चोवीसमो मातं
 गनामा यक्क ठे. ए प्रमाणे प्रत्येक तीर्थकरनो प्रत्येक

यह अनुक्रमे जाणवो तेमनां वाहन अने सविस्तर वर्णन प्रवचन सारोद्धारथी जाणवुं ॥ ८ ॥

देवीनु चक्रेशरि के० हवे चोवीस तीर्थकरनी चो वीस देवीनुनां नाम कहे ठे प्रथम चक्रेश्वरी नामादेवी, बीजो अजिता नामादेवी, त्रीजो डुरितारि, चोथी काली, पांचमी महाकाली, छठी अच्युत नामा देवी, सातमी शांता, आठमी ज्वाला, नवमी सुतारा, दशमी अशोका, अगीआरमी श्रीवत्सा ए श्री तीर्थकरनी देवीनु ठे ॥ ए ॥

चंदा विजयंकुलि के० बारमी चंदा नामा देवी, तेरमी विजया, चौदमी अंकुशा, पन्नरमी पन्नगा, सोलसी निर्वाणी सत्तरमी अच्युता, अठारमी धारिणी, लुगणीसमी वैरोट्या नामादेवी, बीशमी अबुत्ता नामा देवी, एकवीसमी गांधारि नामादेवी, बावीसमी अंबा नामा देवी, त्रेवीसमी पद्मावती नामा देवी, चोवीसमी सिद्धा नामादेवी ए प्रकारे चोवीस देवीनु अनुक्रमे चो वीस तीर्थकरनी जाणवी, तेमनां वर्ण, वाहन, आयुधादि प्रवचन सारोद्धारथी जाणवां ॥ १० ॥

इअ तिष्ठ रक्षणा रया के० ए प्रकारे यह, य

હિણી તમે સકલ સંઘરૂપ તીર્થનું પાલણ કરવાને ત
ત્પર થાનું, તથા બીજા પણ ચાર નિકાયના જીવનપ
ત્યાદિક દેવતા, દેવીનું, વ્યંતર, તથા જીડકાલી પ્રમુખ
ચોસઠ યોગિની તે અમોને નિરંતર રક્ષા પ્રત્યે કરો ॥૧૧॥

এবং সুদিষ্টি সুরগণ কেণ এম পূর্বোক্ত সম্যক্ দৃষ্টি
দেবতানা সমূহ সহিত এবা সংঘনে সামান্য কেবলীনে
বিষে আড়হাদকারী মাটে জিনচંড় কহীএ এবা শ্রী
শান্তি জিনচংড়, তমে মনে পণ রক্ষা প্রত্যে করো, এ
শান্তি জিনচংড় কেবা ঠে? তো কে মুনিনে বিধে প্রধান এ
বা জে শ্রুত কেবলী, মন: পর্যবজ্ঞানীন তেমনে তথা
পঁমিতোএ স্তুতি কর্যুঁ ঠে মাহাत्म্য জেমনুঁ এবা ঠে. অ
থবা শ্রীমুণিসুন্দরসূরি জে আ স্তোত্রনা কর্তা ঠে তে
মণে স্তব্যো ঠে মহিমা জেমনো এবা ঠে ॥ ১২ ॥

इअ संति नाह सम्म, केण ए प्रकारे रूमी दृष्टि
वालो जे कोइ मनुष्य श्री शान्तिनाथ तेमनी रक्षा जे
ठे ते सवार बपोर अने सांजे ए त्रणे काले स्मरण करेठे,
ते मनुष्य सर्वोपद्वरहित आयठे अने ते मनुष्य स
र्वोत्कृष्ट एवी सुखसंपदाने पामे ठे. ॥ १३ ॥

तवगङ्ग गयण के० श्रीतपोगङ्ग रूप गगनने विषे
सूर्यसमान युगप्रधान श्री सोमसुंदर नामना गुरु, ते
मना सुप्रसादे करीने प्राप्त अइ एवी गणधर विद्या
सिद्धिने शिष्य जे मुनिसुंदरसूरिते जणे ठे॥१४॥इति॥

तिजय पहुत्तना ठुटा शब्दना अर्थ

गाथा १ थी ८ सुधीना.

जय-जगत्	भविआणं-भविक जी	पणतीसा-पांत्रीस
पहुत्त-प्रभुपणुं	बोना	सट्ठी-साठ
पाडिहेर-प्रातिहार्य	वीसा-वीस	वाहि-व्याधि
समय-काल	पणयाला-पीस्तालीस	जलण-अग्नि
खित्त-क्षेत्र	तीसा-त्रीस	हरि-वाघ, सिंह
ठिआणं-वर्त्तता(ना)	पन्नत्तरी-पंचोतेर	करि-हाथी
सरोमि-ध्यान करुछुं	जिणवरिंदा-जिनवरेंदे	पणपन्ना-पंचावन
चक्कं-चक्र(ने)	भूअ-व्यंतर, भूत	दसेव-दश
जिणंदाणं-जिनेंद्रोना	रख्ख-राक्षस	पन्नट्ठी-पांसठ
पणवीसा-पचीस	साइणि-शाकिनी	चालीसा-चालीस
असिआ-एंशी	घोर-मोटा	पणमिआ-प्रणामकर्या
पन्नास-पचास	पणासंतु-नाश करो	हरहुहः-बीजअक्षर छे
नासेउ-नाश करो	सित्तिरि-सित्तेर	सरसुंसः-बीजअक्षर

आलिहिय-समस्त प्र	किर-निश्चे	सन्वओ-सर्व प्रकारे
कारे लख्युं	सन्वओभदं-सर्वतो	भदं-कल्याण
गम्भं-मध्य भागमां	भद्र	

॥ अथ तिजयपहुत्त नामा चोथुं स्मरण ॥

तिजय पहुत्त पयासय, अथ महा
 पानिहेरजुत्ताणं ॥ समयस्मित ठि
 आणं, सरेमि चक्रं जिणंदाणं
 ॥ १ ॥ पणवीसा य असिआ,
 पन्नरस पन्नास जिणवर समूहो ॥
 नासेन सयल डुरिअं, नविआणं
 नत्तिजुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पण
 याद्धाविय, तीसा पन्नत्तरी जिण
 वरिंदा ॥ गह नूअ रक्क साइणि,
 घोरुवसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥ सि
 त्तिरि पणतीसाविय, सठी पंचेव
 जिणगणो एसो ॥ वाहिजल जलण

(४८५)

हरि, करि चोरारिमहान्नयं हरज

॥ ४ ॥ पणपन्नाय दसेव य, पन्नठि

तहय चेव चालीसा ॥ रस्कंतु मे

सरीरं, देवासुरपणमिया सिद्धा ॥ ५ ॥

ऊँ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तह

चेव सरसुंसः ॥ आलिहिय नाम

गप्पं, चक्कं किर सव्वज्जदं ॥ ६ ॥

ऊँ रोहिणि पन्नत्ती, वज्जसिंखला

तह य वज्जअंकुसिया ॥ चक्केसरी

नरदत्ता, कालि महाकालि तह

गोरि ॥ ७ ॥ गंधारि महजाला,

माणवि वड्ढरुद्ध तह य अचुत्ता ॥

माणसि महमाणसिआ, विद्धा

देविज्ज रस्कंतु ॥ ८ ॥

अर्थः--तिजयपहुत्त केण त्रण जगतना प्रभुत्वना
प्रकाशना करनार, आव महा प्रातिहार्ये करी युक्त अ

ને સમય કે० રાત દિવસ રૂપ કાલ છે પ્રધાન જેમાં એ
વા અઢી ઘીપ પ્રમાણ ક્ષેત્રમાં રહેલા એવા જિનેષોનો ચ
ક્રં કે० ચક્ર એટલે સમૂહ અથવા ચક્રં એટલે યંત્રને હું
સમરું હું, ધ્યાન કરું હું ॥ ૧ ॥

ઉત્કૃષ્ટ કાલમાં જ્યારે પંદર કર્મજૂમિ ક્ષેત્રમાં
કોઈ પણ ક્ષેત્રને વિષે તીર્થીકરનો વિરહ નથી હોતો ત્યા
રે સમકાલે એકસો સીત્તેર તીર્થીકર ઉત્કૃષ્ટા વર્તે છે.
તે તીર્થીકરોનું એકસો સીત્તેરના આંકવાલું અને મ્હોટું
છે મહાત્મ્ય જેનું એવું મહા યંત્ર છે. તે યંત્રરચના સાત
ગાથાએ કરી દેવામાં છે.

એ યંત્રમાં પાંચ કોઠા આત્મા અને પાંચ કોઠા ઝ
જ્ઞા કાઢવા ત્યારે તે પચીસ થાય તેમાં વચલા પાંચ
આત્મા કોઠામાં “ ક્ષિપૈન્ન સ્વાહા ” એ પાંચ અક્ષરમાં
નો એકેક અક્ષર એકેક ધ્વાનામાં લખવો તેમજ ઝજ્ઞા
વચલાં પાંચ ધ્વાનામાં પણ લખવા. તેમાં ક્ષિ એ પૃથ્વી
બીજ છે. પ એ અપ્ બીજ છે નૈ એ તેજો બીજ છે. સ્વા
એ વાયુ બીજ છે. હા એ આકાશ બીજ છે. હવે તે યંત્ર
ની શરૂઆતમાં જે આત્મી પંક્તિનાં પાંચ ધ્વાનાં છે તે માં

हे लखवा योग्य अंको नीचली गाथाए बतावे ठे.

पणवीसाय असिआ के० ते यंत्रनी आनी बुल
नां जे पांच खानां ठे तेना प्रथम खानामां पच्चीश
नो अंक लखवो तथा बीजा खानामां एंशीनो अंक
लखवो तथा त्रीजा खानामां तो द्वि अक्षर लखेलोज
ठे, तथा चोथा खानामां पंदर अने पांचमामां पच्चा
सनो अंक लखवो, ए प्रमाणे सामान्य केवलीमां श्रेष्ठ
एवा तीर्थं करोना समुदायनो यंत्र ते ज्ञप्तिये करी यु
क्त एवा ज्ञव्य जीवोनां सघलां पाप कर्मने नाश करो।१।

वीसा पणयालाविअ के० हवे ए यंत्रनी बीजी
आनी बुलना पेहेला खानामां वीसनो अंक लखवो
तथा बीजा खानामां पीस्तालीसनो अंक लखवो अने
त्रीजा खानामां तो प लखेलोज ठे तथा चोथा खाना
मां तीसनो अने पांचमामां पंचोतेरनो अंक लखवो. ए
प्रमाणे सरवे मली एकसो सित्तेर तीर्थं करो अया, ते
ग्रह, व्यंतर, राक्षस, शाकिनी ए सर्वथी अता घोर ल
पसर्गोने नाश पमानो ॥ ३ ॥

सित्तिरि पणतीसाविय के० हवे ए यंत्रना त्रीजी

(४८८)

आमी जलना पांचे खानामां क्षिपुंस्वाहा ए पांच अ
 करो लखेला ठे. तेशी चोथी आमी जलना पेहेला खा
 नामां सित्तेरनो अने बीजामां पांत्रीसनो अंक लखवो
 त्रीजामां स्वा लखेलो ठे. चोथामां साठ, अने पांच
 मामां पांचनो आंक लखवो, ए प्रमाणे ए तीर्थंकरनो
 समूह ते व्याधि जल के० पाणीना अथवा जर के०
 ताव सन्निपातादिक, जलण के० अग्नि वगेरेना, वाघ
 ना, दुष्ट हाथीना, चोरना, अने शत्रुना जे मोहोटा
 नय तेने हरण करो. ॥ ४ ॥

पणपन्ना य दसेव य के० एयंत्रनी पांचमी आमी
 जलना पेहेला खानामां पंचावन्न अने बीजामां दस
 नो आंक लखवो वली त्रीजामां हा अक्षर लखेलोज
 ठे चोथामां पांसठ अने पांचमामां निश्चे चालीसनो
 अंक लखवो. सर्वे अंकोना मली सरवाले एकसोसित्तेर
 जिनो ते महारा शरीरने रक्षा करो. ते जिनो केवाठे?
 तो के देवता अने असुरे प्रणाम कर्यो ठे जेमने एवा
 ठे तथा जे सिद्ध थया एवा ठे. ॥ ५ ॥

जुं हरहुंहः सरसुंसः के० हरहुंहः ए चार बीजा
 करो जे ठे तेणे करी पद्मा, जया, विजया अने अपरा

જિતા એ ચાર દેવીનનાં નામ અનુક્રમે પ્રત્યેક બીજે જાણવાં, તથા સરસુંસઃ એ ચાર બીજાકરો જે છે તે મોહોટા પ્રજાવવાલા તથા વ્યંતરાદિક હુષ્ટ દેવોએ કરેલા નુપસર્ગોના નિવારણ અર્થે છે. તથા વલી પ્રથમ લેખેલા હરહુંહઃ એ ચાર બીજાકરોને વિષે હ અક્ષર સૂર્ય બીજ છે તે હુરિતનો નાશ કરનાર છે, તથા ર અક્ષર અગ્નિબીજ છે તે પાપને બાલનાર છે, તથા હું અક્ષર જે છે તે ક્રોધબીજ છે, તથા કવચ (બચતર) પણ છે તે જૂતાદિ ત્રાસક છે અને કવચ (બચતર) પણાથી આત્મરક્ષક પણ છે, તથા હ અક્ષર સંપુટિત છે. પઢી સરસુંસઃ એ ચાર બીજાકરો જે છે તેમાં સ અક્ષર ચંડીબીજ છે, તથા ર અક્ષર અગ્નિબીજ છે, સું અક્ષર શામક બીજ એટલે સર્વ હુરિતને શાંત કરનારું છે, વલી સઃ અક્ષર સંપુટિત છે. તથા આરંજમાં હું શબ્દ છે તે પંચ પરમેષ્ઠિ વાચક છે. હવે એ આઠ બીજાકરો જાણનામાં કયે કયે ઠેકાણે લેખવા તે કહે છે.

હું શબ્દનો ઉચ્ચાર કરીને યંત્રની આમી પંક્તિમાં જ્યાં ૧૫-૮૦-૧૫-૫૦ અંકો જોરેલા છે તે જાણનામાં તે

अंको नीचे अनुक्रमे ह, र, हुं, हः, ए चार बीजो ल
 खवां, तथा बीजी पंक्तिमां १०--४५--३०--७५ ए अंको
 नीचे अनुक्रमे स, र, सुं, सः, ए चार बीजो लखवां,
 त्रीजी पंक्तिमां क्षिपुं स्वाहा लखेलुंज ठे, चोथी पं
 क्तिमां ७०--३५--६०--५ ए अंको नीचे वली बीजी
 वार अनुक्रमे ह, र, हुं, हः, ए चार बीजो लखवां, त
 था पांचमी पंक्तिमां ५५--१०--६५--४० ए अंको नीचे
 अनुक्रमे स, र, सुं, सः, ए चार बीजो लखवां, अने व
 ली समस्त प्रकारे करीने लख्युं ठे साधन करनार पु
 रुषनुं नाम नैकार सहित, जे यंत्रना मध्यज्ञागना म
 ध्य खानाने विषे एवो निश्चे सर्वतोन्नड एटले उन्नी
 लीटीनी गणनाए, तथा आमी लीटीनी गणनाए, तथा
 तीर्छी पंक्तिनी गणनाए, तथा खुणानी पंक्तिनी गण
 नाए ए पंक्तिना सर्व प्रकारे अंको गणतां १७० आय ठे
 ते माटे सर्वतोन्नड एवं नाम ठे जेनुं एवो ते यंत्र जा
 एवो, तथा वली सर्व प्रकारे कट्याण आय ठे माटे
 सर्वतोन्नडनाम जाणवुं ॥ ६ ॥

हवे ते यंत्रना चारे तरफना पार्श्व प्रदेखोने दि

(४९१)

षे रक्षां एवां जे शोल खानां तेने विषे सोल विद्यादेवी
उनां नाम लखवां ते कहे ठे.

ॐ रोहिणि पन्नति के० अर्हीं सोल विद्या देवीउनां
नाम ते ॐ (प्रणवबीज) ह्रीं (मायाबीज) श्रीं (ल
क्ष्मीबीज) एवां त्रण बीज सहित लखवां. तथा अं
तमां नमः षड् पण लखवुं; जेमेके प्रथम ॐ ह्रीं श्रीं
रोहिण्यै नमः, तेमज बीजी प्रज्ञस्यै नमः, त्रीजी वज्र
शृंगलायै नमः, तथा वलीचोथी वज्रांकुशस्यै नमः पां
चमी चक्रेश्वर्यै नमः, ठठी नरदत्तायै नमः, सातमी
काल्यै नमः, आठमी महाकाल्यै नमः, नवमी गौर्यै
नमः, दशमी गांधार्यै नमः, अगिआरमी महाज्वालायै
नमः, बारमी मानव्यै नमः, तेरमी वैरुट्यायै नमः,
चौदमी अबुप्तायै नमः, पंदरमी मानस्यै नमः, सोल
मी महामहामानस्यै नमः, एवी हे विद्यादेवीनु तमे
रक्षण करो ॥ ७ ॥ ८ ॥

(४९२)

॥ सर्वतोन्नयंत्र ॥

२५ ह ॐ श्रीरो हिएयैनमः	८० र ॐ श्रीप्र हिएयैनमः	कि	१५ हुं ॐ श्रीवज्र गृंखलायैनमः	५० हः ॐ श्रीव जांकुश्यैनमः
२० स ॐ श्रीच केश्वर्यैनमः	४५ र ॐ श्रीनर दत्तायैनमः	प	३० सुं ॐ श्रीका ल्यैनमः	७५ सः ॐ श्रीमहा काल्यै नमः
कि	प	ॐ	स्वा	हा
७० ह ॐ श्रीगौ र्यैनमः	३५ र ॐ श्रीगां धार्यैनमः	स्वा	६० हुं ॐ श्रीमहा ज्वालायैनमः	५ हः ॐ श्रीमान व्यै नमः
५५ स ॐ श्रीवैरु द्व्यायैनमः	१० र ॐ श्रीअ ब्रुतायैनमः	हा	६५ सुं ॐ श्रीमान स्यैनमः	४० सः ॐ श्रीमहा मानस्यैनमः

(४९३)

भूमिसु-भूमिमां	कणय-सोनं	लिहिरुण-लखीने
उप्पन्न-उत्पन्न थयुं	विहुम-परवालां	खालिअं-धोइने
विविह-विविध	मरणय-मरकतमणि	पीयं-पीधो होय
रयणाइ-रत्नादि	घण-मेघ	एगंतर-एकांतरीओ
वन्न-वर्ण	सन्निहं-सरखो	मुग्गं-मोगक (रोग)
उव-अति	पूइअं-पूजित	पणासेइ-नाश करे छे
सोहिअं-शोभितुं	वाणवंतर-वाणव्यंतर	जंतं-यंत्र
चउतीस-चोत्रीस	जोइस-ज्योतिषि	दुवारि-द्वारमां
अइसय-अतिशय	वासी-वसनारा	पडिलिहियं-प्रतिलेख
जुआ-युक्त	विमाण-विमान	न करेलो
कय-करी	उवसमंतु-उपशांत था	विजयवंतं-विजय क
सोहा-शोभा	ओ	रतो
झाएअव्वा-ध्यान ध	चंदण-चंदन	निम्भंतं-निःसंदेह
रवा योग्य	कप्पूरेणं-कपूरे करी	अच्चेह-अर्चन करो
पयत्तेणं-प्रयत्ने करीने	फलए-पाटीआमां	

पंचदस कम्मजूमिसु, उप्पन्नं स
त्तरिं जिणाण सयं ॥ विविह रय
णाइवन्नो, वसोहिअं हरउ डुरि
आइं ॥ ए ॥ चउतीसअइसयजु
आ, अठमहापामिहेरकयसोहा ॥

(४९४)

तिष्ठयरा गयमोहा, ऊएअवा प
यत्तेणं ॥ १० ॥ उँ वरकणय सं
खविहुम, मरगयघण सन्निहं विग
यमोहं ॥ सत्तरिसयं जिणाणं, स
वामरपूइअं वंदे ॥ स्वाहा ॥ ११ ॥
उँ नवणवइ वाणवंतर, जोइसवा
सी विमाणवासी अ ॥ जे केवि
डुठ देवा, ते सबे नवसमंतु मम॥
स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं,
फलए लिहिकण खालिअं पी
अं ॥ एगंतराइ गह नू, अ सा
इणि मुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥ इअ
सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं डुवारि
पमिलिहिअं ॥ डुरिआरि विज
यवंतं, निप्रंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥

पंचदस कम्मजूमिसुके० अढीघीपमां पंदर कम्मजूमि
 (पांचन्नरत, पांचअरव्रत, अने पांच महाविदेह) ने
 विषे उत्पन्न अएला एवा एकसो सीत्तेर तीर्थकर, विविध
 रत्नादिकना वर्णश्री उपशोजित, ते अमारा डुरितोनो
 नाश करो. ए रीते उत्कृष्टकालने विषे पांचन्नरतने वि
 षे पांच तीर्थकर, पांच अरवतने विषे पांच तीर्थकर, तथा
 एक महाविदेहने विषे बत्रीस विजयो एवां पांच महा
 विदेहनां एकसोसाठ विजय, ते दरेक विजये एकेक ती
 र्थकर आय ठे. एटले सर्व मली एकसो सीत्तेर तीर्थ
 कर आय. एम जेवारे कोइपण क्षेत्रने विषे तीर्थकर
 नो विरह न आय तेवारे उत्कृष्टा एकसो सीत्तेर तीर्थ
 कर आय ठे, ते काल श्री अजितनाथ तीर्थकरना सम
 यने विषे श्रयो ॥ ए ॥

चनतीस अइसयजुआके० चोत्रीस अतिशयोये
 करी युक्त, तथा वली केवा ठे ? तो के आठ महाप्राति
 हार्योये करी ठे शोना जेमनी एवा, वली केवा ठे ?
 तो के गयो ठे मोह जेमनो एवा तीर्थकरो प्रयत्ने करी
 ने ध्यान करवा योग्य ठे ॥ १० ॥

नँ वरकणथसंख विहुम के० केटलाक तीर्थकरो

નો શ્રેષ્ઠ સોના જેવો પીલો, કેટલાકનો શંખ જેવો ઘોલો, કેટલાકનો પ્રવાલાં જેવો રાતો, કેટલાકનો મરકત મણીના જેવો લીલો, તથા કેટલાક તીર્થંકરો નો મેઘના જેવો શ્યામ વર્ણ છે તથા ગયો છે મોહ જે થકી તેને વિગત મોહ કહીએ; અર્થાત્ આ ગાથામાં કહેલા વિવિધ વર્ણવાલા જિનોનું સમ્પત્ત્યધિક્કશત તે કેલું છે? તો કે સર્વ દેવતાનું પૂજેલું છે તેને હું પણ વંદન કરું અને સ્વાહા કે. સુ એટલે રૂઠું અને આહ નામ કહે છે તેને સ્વાહા કહીએ. અર્થાત્ એ જિનેશ્વરોને નમસ્કાર કરવાથી શોઝન સુખાદિક આય છે. અથવા બીજો અર્થ એમ કે:--“સ્વાહા દેવહવિર્દાને” એમ કહેલું છે એ શબ્દ દેવોને હોમ આપવાના દાનને વિષે પ્રવર્તે છે. તે આપવા વરુ કરીને દેવો સંતુષ્ટ આય છે ॥૧૧॥

હું જ્ઞવણવરુ વાણવંતર કે. હું તે પંચ પરમેષ્ઠિ વાચક પદ જાણું જે કોઈ પણ મિથ્યાદૃષ્ટિ હુષ્ટ દેવો છે, તે સર્વે આ સ્તવનના પ્રજ્ઞાવથી નષ્ટાંત હો. તે કયા હુષ્ટ દેવો? તો કે જ્ઞવનપતિ, વાણવ્યંતર, જ્યોતિષ્ક વાસી, તથા વિમાનવાસી દેવો છે તે સ્વાહાના અર્થ પૂ

र्व प्रमाणे जाणवो ॥ १२ ॥

चंदनकप्पूरेणं के० चंदन, अगरु, कुंकुम तथा कर्पूरादिके करी लाकमाना पाटीआने विषे लखीने, तथा कोइक पुरुषो कहे ठे के पवित्र कांसाना आलादि ने विषे कर्पूर, गोरोचन, चंदन, अगरु, कस्तूरी वगेरे नो कर्दम करीने, तेनावने सात वखत लेपन करीने ठायामां सूकवीने तेनी उपर ए यंत्रने लखी, पुष्प धू पादिके पूजन करीने प्रातःकालमां धोइने पीधो होय, तेमना एकांतरीआदि ताव तथा अशुभ ग्रह तथा झूत, व्यंतर, शाकिनी, मोगक वगेरे रोग, झूत प्रेतादि आ वेश तथा कामण आदिने नाश करे ठे ॥ १३ ॥

इअसत्तरिसयं के० आ एकसो सित्तेरिया यंत्रने रूमे प्रकारे निःसंदेहे करीने हे ज्ञव्य जीवो ! निरंतर अर्चन करो. ते यंत्र केवो ठे ? तो के बारणाने विषे वा शुद्ध स्थानकने विषे पूर्वोक्त रीते प्रतिलेखन करेलो ठे, वली कष्टो अने शत्रुजने जीतनारो ठे. केटलाक एम कहे ठे के ए यंत्रने रूपाना पत्रामां अथवा ताम्रपत्रमां लखीने घरने विषे पूजन करवुं, अने काम पमे त्यारे

शुद्ध जलश्री तेने धोइने ते धोवण पी जवुं ॥ १४ ॥

अथ श्री नमिऊणना ठुटा शब्दना अर्थ.

गाथा १ थी ५ सुधीना.

नमिऊण-नमीने

पणय-प्रणमेला

चूडा-मुकुट

मणि-मणिओ

रंजिअं-रंजित

चलण-चरण

जुअलं-युगल, जोडुं.

संथवं-संस्तव

बुच्छं-कहीश [हेलां

सडिय-सडेलां, को-

नह-नख

निव्वुडु-वेठेली

नासा-नाशिका

विवन्न-विनष्ट

लायन्ना-लावण्य

कुठ-कोठ रोग

अनल-देवता [णखा

फुलिंग-अंगाराना त

निदह-वाल्यां

सव्वंगा-सर्व अंग

आराहण-आराधन

बुद्धिय-वृद्धि पामेला

च्छाया-शोभा

उच्छाहा-उत्साह

दह्वा-दाझेला

पायव-झाड

पत्ता-पाम्या

लच्छिं-लक्ष्मीने

दुव्वाय-दुष्ट पवन

[मणा

उप्पड-उदार-वीहा

कल्लोल-लेहेरो

भीसण-भयंकर

संभंत-संभ्रांत

विसंडुल-विव्हल

निज्जामय-खलासीअं

मुक्क-मूक्यो

वावारे-व्यापार जेम

अ-नहीं

विदालिय-भाग्युं

जाणवत्ता-वद्दाण

खणेण-क्षणमां

इच्छिअं-इच्छित

कूलं-कांठो

नमांति-नमेछे

नरा-पुरुषो

॥ अथ नमिऊण स्तोत्र ॥

नमिऊण पणयसुरगण, चूमामणि

(४९९)

किरणरंजिष्ठं मुणिणो ॥ चलण
जुअलं महान्नय, पणासणं संथ
वं वुहं ॥ १ ॥ समियकरचरण न
ह मुह, निबुद्ध नासा विवन्न लाय
न्ना ॥ कुठमहारोगानल, फुल्लिग
निदहसवंगा ॥ २ ॥ ते तुह चल
णाराहण, सलिलंजलि सेय वु
हियच्चाया ॥ (उच्चाहा) ॥ वण दव
दह्वा गिरिपा, यव व पत्ता पुणो ल
हिं ॥ ३ ॥ उवायखुप्रिअजलनि
हि, उप्पम कल्लोलनीसणारावे ॥
संजंतन्नयविसंठुल, निद्वामय मु
क्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअ जा
णवत्ता, खणेण पावंति इत्थिअं
कूलं ॥ पासजिणचलण जुअलं,
निच्चं चिअ जे नमंति नरा ॥ ५ ॥

અર્થ:--નમિજ્જણપણયસુરગણ કેળ નમસ્કાર કર
 નારા દેવતાઝના સમૂહ, તેના મસ્તકને વિષે રહેલા જે
 સુગટ, તેને વિષે રહેલી જે મણિહ તેના કિરણોએ કરી
 ને રંજિત એવું, તથા રોગ, જલ, વગેરેના મોટા ઝયને
 પ્રકર્ષે કરીને નાશ કરનારું એવું, જે પાર્શ્વનાથ મુનિનું
 ચરણ યુગલ, તેને નમસ્કાર કરીને હું આ પ્રકારના સં
 સ્તવને કહીશ ॥ ૧ ॥

સક્રિયકરચરણનહમુહ કેળ સફી ગયાં ઠે હાથ, પ
 ગ, નખ, અને મુખ જેમનાં એવા, તથા વેશી ગણી ઠે
 નાશિકા જેમની એવા, તથા વિનષ્ટ અયું ઠે લાવણ્ય
 જેમનું એવા, કોમરૂપ મહાન્ રોગના અંગારાના અગ્નિ
 સમાન તણાવાઈ કરી લાલ્યાં ઠે સર્વ અંગ જેમનાં એવા ॥ ૧ ॥

તે તુહ ચલણા રાહુણ કેળ તેવા પ્રાણીહ પણ હે પાર્શ્વ
 નાથ ! તમારા ચરણોનું સેવન તે રૂપ પાણીની અંજ
 લિના સેચને કરી વધી ઠે શોઝા જેમની એવા ઠતા,
 ફરીને લક્ષ્મીને પ્રાપ્ત થાય ઠે, જેમ વનના અગ્નિએક
 રી વલેલાં પર્વતનાં વૃક્ષો ઠે, તે જેમ વૃદ્ધિ પામી ઠે શો

જા જેમની, એવાં આય છે; વલી વુદ્ધિ ઝંઘાહા એવો પણ
પાઠ છે તેનો અર્થ એમ જાણવો જે, દવથી દાઝેલાં
વૃક્ષો વરસાદના જલે કરી નવપલ્લવ આય છે; તેમ
કુષ્ઠાદિ મહારોગી તમારા ચરણારાધાન રૂપ અમૃતે સીં
ચાણા બતા પાઠા કામદેવના જેવા રૂપને પામે છે ॥૩॥

હુવાય સ્વપ્નિય કેળુ હુષ્ટ પદને કોઝિત કરેલા
સમુદ્ધના બદાર એવા કલ્પોલના ઝયંકર છે શબ્દો જેને
વિષે એવા, તથા હવે શું કરવું જોડે ? એવા વિચાર ક
રવાને વિષે મૂઠ થયેલા, તથા ઝયથી વિવ્હલ થયા એ
વા સ્વલાસીઝ, તેણે મૂક્યા છે વ્યાપાર જેને વિષે ॥૪॥

અવિદલિઅ જાણવત્તા કેળુ બપર કહ્યા તેવા સ
મુદ્ધમાં નથી જાગ્યું વહાણ જેમનું એવા બતા કણે ક
રીને શ્ચિત્ત એવા કાંઠાને પામે છે તે કયા જનો ? તો
કે પાર્શ્વજિનના ચરણ કમલને નિરંતર નમન કરે છે,
અથવા પૂજે છે, અને નમસ્કાર કરે છે તે જનો સમુદ્ધ
ના પારને પામે છે ॥ ૫ ॥

गाथा ६ थी ११ सुधी तुटा शब्दना अर्थ.

खर-आकरो

पवण-पवन

उद्धुअ-सलगावेलो

मिलिय-मलेली

हुम-झाड

गहणे-गहन जेने वि
पे

डज्झंत-दाजती

मुद्ध-मुग्ध

मयन्नहु-मृगवधु (ह
रणी)

रव-भाक्रंद

वणे-वनमां

निव्वाविअ-होलव्यो

आभोअं-आभोग (पिं
ड)

संभरंति-स्मरणकरेछे

मणुआ-मनुष्यो

जलणो-दावाग्नि

विलसंत-मुशोभित

भोग-फणा, देह

फुरिअ--चपल

अरुण-आरक्त

तरल-चंचल

जीहालं-जभि

उग्ग-उग्र

भुअंगं-भयंकर सर्प

सथ्थहं-सरखो

आयारं-आकार, चाल

मनंति-माने छे

कीड-कीडो

सरिसं-सरखो

परिच्छेद-समस्तप्रका

रे टाल्यो छे

विसम-आकरो

वेगा-वेग

नामखर-नामाक्षर

फुड-प्रगट

गुरुआ-मोटा

अडवीसु-अटवीओमां

भिछ-भिछ

तकर-चोर

पुलिंद-वनचर

सहुल-सिंह शार्दूल

भीमासु-भयंकर

विहुर-विव्हाल

बुन्न-दुःखित

अकायर-भील

उल्लूरिअ-लंठ्या

पहिअ-पंथीओना

सथ्थासु-साथो(जेमां)

विलुत्त-चोरखुं

विहव-विभव, धन

सार-उत्तम

मत्त-मात्र

ववगय-गया

विग्धा-विघ्न

सिग्धं-शिघ्र (उ
वलो)

हिभ-हृदयमां

इच्छिअं-इच्छित

टाणं-स्थानकने

खरपवणुधुअवणदव, जालावलि
 मिलिय सयलडुमगहणे ॥ मप्रंत
 मुद्ध मय बहु, जीसणारव जीसणं
 मि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कम
 जुअलं, निवाविअ सयल तिहु
 अणाओअं ॥ जे संजरंति मणु
 आ, न कुणइ जलणो जयं तेसिं
 ॥ ७ ॥ विलसंत ओग जीसण,
 फुरिआरुण नयण तरल जीहा
 लं ॥ उग्गजुअंगं नवजल, य स
 व्हं जीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नं
 ति कीरु सरिसं, दूर परिहूढ वि
 सम विसवेगा ॥ तुह नामस्करफु
 रु सि, धमंत गुरुआ नरा लोए
 ॥ ९ ॥ अमवीसु जिह्वतकर,
 पुलिंदसहुलसह जीमासु ॥ जय

(૫૦૪)

વિહુરવુન્નકાયર, નલ્લૂરિઅ પ
હિઅસન્નાસુ ॥ ૧૦ ॥ અવિલુત્ત
વિહવ સારા, તુહ નાહ પણામ
મત્તવાવારા ॥ વવગય વિઘ્ધા સિઘ્ધં,
પત્તાહિય ઇન્ધિયં ઠાણં ॥ ૧૧ ॥

અર્થ:--સ્વરપવણુદુઅ કેળ પ્રચંદ એવા વાયુએ ક
રી નક્ત એવો જે વનનો અગ્નિ તેની જ્વાલાની શ્રેણી
એ કરીને પરસ્પર એકાકારે થયા છે સમગ્ર વૃક્ષોના ગ
હન જેને વિષે તથા ઢાઝતી એવી જે મુગ્ધહરણીન
તેના જ્ઞયંકર આક્રંદ શબ્દે કરીને જ્ઞયંકર થએલા વન
ને વિષે અગ્નિ જ્ઞય કરતો નથી ॥ ૬ ॥

જગ ગુરુણો કેળ જગત્ગુરુ પાર્શ્વનાથ સ્વામી
નું ચરણ યુગલ તે ચરણ યુગલ કેવું છે ? તોકે સુગ્રી
નું કયોં છે ત્રણ જીવનના વિસ્તારને જેણે એવું છે. એવા
ચરણ કમલને જે મનુષ્યો સ્મરણ કરેછે, તે જનોને
પ્રથમ કહેલો દાવાગ્નિ જ્ઞય નથી કરતો ॥ ૭ ॥

વલી વીજો અર્થ એવો છે કે દદન થવા યોગ્ય

(૫૦૫)

એવું જે વન, તેનો અંત છે જેમાં એવા દાવાનલની સર
 લ જ્વાલાના આકુલિતપણાએ કરીને મુઠ્ઠા એવા વન
 ના પશુહના ઘણા ઝયંકર આક્રંદે કરીને ઝયન્નિત થ
 એલા એવા વનમાં ॥ ૬ ॥ જગગુરુણો કેળવતાના સા
 મર્ચ્યથી થએલા જગતના ગુરુ જે પાર્શ્વનાથ સ્વામીનું
 ચરણયુગલ કે જેણે આપત્તિના તાપને સમાવીને સુ
 સ્વી કર્યું છે પરિપૂર્ણ ત્રણ જીવન એવું જે છે, તે એવા
 ચરણયુગલને જે મનુષ્યો સંજારે છે, તેમને પૂર્વોક્ત દા
 વાગ્નિ ઝય કરતો નથી ॥ ૭ ॥

વિલસંત જોગ નિસણ કેળવતો સુશોભિત ફણા છે
 જેની એવો, તથા ઝયંકર ચપલ અને રાતાં છે નેત્ર જે
 નાં એવો, તથા ચંચલ છે જીવ્હા જેની એવો ઝયંકર
 સર્પ, વલી તે સર્પ કેવો છે ? તો કે નવીન મેઘના જે
 વો શ્યામ વર્ણો છે ॥ ૮ ॥

મન્ત્રંતિ કીરુ સરિસં કેળવતો એવા સર્પને કીન્ના સદૃ
 શ માને છે. કોણ માને છે ? તો કે દૂર કર્યો છે ચારે ત
 રફ ટાલ્યો છે, આકરો એવો વિષનો વેગ જેનું, તે કો
 ણે ટાલ્યો છે ? તો કે હે શ્રી પાર્શ્વનાથ ! તમારું ના
 માદ્ધર તેજ સ્ફુટ છે પ્રજાવ જેનો, તેણે કરીને સિદ્ધ

અયેલો એવો એટલે પાર્શ્વ એ વે અકરોએ કરીને સિદ્ધ થ
 એલા એવા ગારુડાદિક મંત્રે કરીને મોટા એવા મનુ
 ષ્યો, જે લોકને વિષે છે, તેજ પૂર્વોક્ત સર્પને કીમા સમા
 ન માને છે. ॥ ૯ ॥

અરુવીસુ નિહ્વતકર કેળ જે અટવીનમાં નીલ તથા
 ચોર લોક, વનચર જીવો અને સિંહોના મારો, હણો
 ત્યાદિ શબ્દોથી વીહામણી તથા જન્યે કરીને વિદ્વલ
 તથા હુઃસ્વિત એવા પુરુષોને નિહ્વ લોકોયેં લૂંટ્યા છે
 વટેમાર્ગના સાથો જેને વિષે એવી અટવીન છે ॥ ૧૦ ॥

અવિલુત્તવિહવસારા કેળ એવી સર્વ અટવીનમાં
 પણ હે શ્રી પાર્શ્વનાથ ! નથી ચોર્યું નુત્કુદ્ધ ધન જેનું તે
 કયા પુરુષનું ધન નથી ચોર્યું ? તોકે હે નાથ ! તમોને
 પ્રણામ માત્ર કરવાનો વ્યાપાર છે જેમને, તેમના ઉતા
 વલા વિઘ્ન સમૂહ વિશેષે કરીને ગયા છે જે અક્રી એવા
 પુરુષ, પોતાના હૃદયને વિષે ઇચ્છિત એવાં પોતાનાં નગ
 રાદિક અશ્વવા ગામ વગેરે સ્થાનકને પામે છે ॥ ૧૧ ॥

ગાથા ૧૨ થી ૧૫ સુધી તુટા શબ્દના અર્થ.

પજ્જાલિઅ-પ્રજ્વાલિત	કુલિસ-વજ્ર	ગદ્ગદ-દાથી
વિચારિય-ફાટયુંછે	પાય-યાત	[દિલું] કુંભચલ-કુંભચલ
૨-મુલ	વિચલિય-વિશેષે મે	મામોમ-વિસ્તાર

पणय-नमता
ससंभम-एकाएक
पथिव-राजा
पडिय-पडयुंछे
पडिमस्त-प्रतिविंबजेने
पहरण-शस्त्र
सीहं-सींहने
कुद्धं-क्रोधायमान

गणंति-गणे छे
धवल-धोलुं
दंत-दांत
मुसल-सांवेलुं
दीह-दीर्घ
कर-मुंढ
उल्लाल-उल्लालबुं
वाहि-वाहि

महु-मध
पिंग-पीलां [क
अच्चासनं-अति नजी
तुंगं-उंचुं
समल्लीणा-सम्यक् री
ते आश्रय करेलो
छे जेमणे एवा

पङ्कलिअनलनयणां, डुरवियारि
यमुहं महाकायं ॥ नहकुलिसघा
यविअलिअ, गइंदकुंजतला
नोअं ॥ १२ ॥ पणयससंजम प
त्तिव, नहमणिमाणिक पन्निअ प
न्निमस्स॥तुह वयणपहरणधरा, सी
हं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ स
सिधवलदंतमुसलं, दीहकरुल्लाल
वाहि जहाहं ॥ महुपिंगनयणजुअ
लं, ससलिलनवजलहरारावं॥१४॥

(૫૦૮)

ત્રીમં મહાગણ્દં, અચ્વાસત્રંપિ તે
ન વિગણંતિ ॥ જે તુમ્હ ચલણ
જુઅલં, મુણિવડ તુંગં સમહ્લીણા
॥ ૧૫ ॥

પક્કલિઆનલનયણં કે૦ પ્રજ્વલિત એવા અ
ગ્નિના જેવાં નેત્રવાલો, તથા યાવાને માટે દૂરથી જે
ણે મુખ ફાપ્યું છે એવો તથા મોટાં દેહવાલો, તથા
નલરૂપ વજ્રના પ્રહારે કરી વિશેષે ઝિત્ત કર્યા છે હા
થીનાં કુંજસ્થલના વિસ્તાર જેણે એવો ॥ ૧૨ ॥

પણયસસંનમપત્તિવ કે૦ પૂર્વે કહ્યો એ પ્રકારનો
ક્રોધાયમાન થયો એવો પણ સિંહ જે છે, તેને નથી ગ
ણતા. કોણ નથી ગણતા ? તો કે આદર સહિત નમે
લા એવા જે રાજાનું તેનું પ્રજ્ઞુના નલરૂપ મણિમાણિ
ક્યને વિષે પચ્યું છે પ્રતિબિંબ જેમને એવા તમે ઓ, તે
તમારા વચને કરી જે નામ ગ્રહણ કરવું, તે રૂપ શ
સ્ત્રોને ધારણ કરનાર એવા જનો પૂર્વોક્ત સિંહને ગણતા
૧ અર્થાત્ તેનાથી ઋરતા નથી ॥ ૧૩ ॥

ससि धवलदंतमुसलं के० हे मुनिपते ! ते नरो
 अतिशये करीने ठूकना एवा पण मोटा हाथीने नथी
 गणाता, ते गर्जेइ केवो ठे ? तो के बीहामणो तथा चं
 इमा सरखा धोला ठे दांत रूप मुशल जेने एवो, अ
 ने लांबा झुंढादंमना उंचा उमागवे करी बध्यो ठे उ
 त्साह जेनो एवो, तथा मधु एटले मधना जेवां रातां
 ने पीलां ठे नेत्र जेनां एवो तथा जले करी पूर्ण एवान
 वीन मेघनी गर्जना जेवो ठे शब्द जेनो एवो ठे, वली
 ते नरो केवा ठे ! तो के तमारा चरणयुगल प्रत्ये आ
 श्रय करीने रह्या एवा ठे. ते तमारुं चरणयुगल सर्व
 श्री गुणोए करी उन्नत एवुं ठे. सर्वनो ज्ञावार्थ एके त
 मारा चरणाश्रितनरोने उपर कहेलुं हाथीनुं जय हो
 तुं नथी ॥ १४--१५ ॥

॥ गाथा १६ थी ११ सुधी बुटा शब्दना अर्थ ॥

समरम्मि-संग्राममां
 तिख-तिक्ष्ण
 खगा-खडग
 अभिधाय-प्रहारे
 पविद्ध-विधावाथी

उद्धुय-नाचतां [धड
 कबंधे-मस्तकविनानां
 कुंत-भाला [दिलां
 विणिभिन्न-विशेषेभे
 कलह-जुवान हाथी

सिक्कार-सीत्कार
 पउरम्मि-अतिशय
 निज्जिय-जीत्याछे
 दप्प-दर्प (अहंकार)
 उद्धर-धरनारा

रिउ-शत्रु	उभारं-उदार	पथे-मार्गमां
निवहा-समूह	भविय-भव्य	उवसग्गे-उपसर्गमां
भडा-सुभटो	जण-जन [रनारु	रयणीसु-रातने विषे
जसं-जश	आणंदयरं-आनंदक	ताणं-ते वेनुं
पसामिण-समावनार	निहाणं-निदान	कइणो-कर्त्तानुं
प्पभावेण-प्रभावे	कुसुमिण-कुस्वप्न	माणतुंगस्स-मानतुंग
मइंद-सिंह	दुस्सउण-खोटाशुकन	आचार्यनुं
रण-संग्राम	रिखव-अशुभ ग्रह	अच्चिअ-अर्चित, पू
भयाइं-भयो	पीडासु-पीडामां	जित
संकित्तणेण-कीर्त्तनवडे	संज्ञासु-संध्यामां	
पसमंति-शांतिपामेछे	दोसु-वे (मां)	

समरंमि तिक्खवग्गा, जिग्घाय
 पविद्धजुयकबंधे ॥ कुंत विणि
 जिन्न करि कलह, मुक्क सिक्कार
 पन्नरंमि ॥ १६ ॥ निज्जियदप्पुद्धर
 रिउ, नरिंद निवहा जमा जसं ध
 वलं ॥ पावंति पाव पसमिण, पा
 स जिण तुह प्पज्जावेण ॥ १७ ॥

(५११)

रोग जल जलण विसहर, चोरा
रि मइंद गय रण जयाइं ॥ पास
जिण नाम संकि, तणेण पसमं
ति सव्वाइं ॥ १७ ॥ एवं महान्न
यहरं, पासजिणिंदस्स संथवमुआ
रं ॥ ज्ञविय जणाणंदयरं, कद्धा
ण परंपर निहाणं ॥ १८ ॥ राय
ज्ञय जस्क रस्कस, कुसुमिण ड
स्सनण रिस्क पीमासु संजासु दो
सु पंथे, नवसग्गे तहय रयणीसु
॥ १९ ॥ जो पढइ जो अ नि सु
णइ, ताणं कइणो य माणतुंग
स्स ॥ पासो पावं पसमेन, सयल
जुवणच्चिअ चलणो ॥ २० ॥

अर्थः--समरम्मि तिस्कखग्गा केण तीक्ष्ण खड्ग
ना प्रहारे करी कपाएलां आम तेम नाचवा लाग्यां

ठे मस्तक विनानां धरु जेने विषे एवा, तथा ज्ञाताथी
विशेषे करीने जेनां अंग जेदाएलां ठे एवा जुवान हा
थीना मुकेला अतिशय सीत्कारे करी प्रचुर एवा सं
ग्रामने विषे ॥ १६ ॥

निजिअ दप्पुहर केण जीत्या ठे अहंकारमां मदो
न्मत्त थएला शत्रु राजाजनां समूह जेमणे एवा सुन्न
टो जे ते, पापना प्रकर्षे करी शमावनार हे पार्श्वजिन!
तमारा प्रज्ञावथी बुज्ज्वल एवा जशने पामे ठे ॥ १७ ॥

रोग जल जलण विसहर केण रोग, पाणी, अ
ग्नि, चोर, सर्प, शत्रु, सिंह, हस्ती, संग्राम तेना सर्व
जय ते पार्श्वजिनना श्रद्धा पूर्वक नामनुं कीर्तन करवा
थी प्रकर्षे करी शांतिने पामे ठे, ते एवी रीते के फरी
उत्पन्न थाय नहीं. आ ठेकाणे मंत्र कहे ठे ते जेमके:-
“ नुं नमिऊण पास विसहर वसह जिण फुलिंगं ङ्गी
रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गयरण जया
इं ॥ पासजिण नाम सकित्तणेण. पसमंति ममस्वाहा”
आ महामंत्र ठे ते आ स्तोत्रना वेराएला अकरोए क
री उत्पन्न करेलो ठे ॥ १८ ॥

एवं महाज्ञय हरं के० ए पूर्वोक्त कहुं एवं पार्श्व
 जिनेइनुं स्तवन केवું ठે ? तोके मोहोटुं एवं जे ज्ञय
 तेने हरનારું છે. આ પદે કરી આ સ્તોત્રનું નામ જ્ઞયહ
 ર જાણવું. વલી કેવું છે ? તોકે અર્થ અને શબ્દથી જ
 દાર છે, વલી જ્ઞવ્ય જનને આનંદ કરનારું છે, તથા ક
 લ્યાણની સંતતિનું કારણ રૂપ છે. તથા બીજી રીતે એ
 વો અર્થ આય છે કે જવિક જનોને કલ્યાણનું એક સ્થા
 ન એવું છે; વલી શત્રુનના કપટ તથા ઝઘાટનાદિને
 બાંધનારું છે અર્થાત્ પ્રકારાંતરે કરી એમ જાણવું જે
 હુડ કર્મોને બંધન કરનારું છે. ॥ ૧૯ ॥

રાયજ્ઞયજસ્ક રસ્કસ કે० રાજજ્ઞય, યજ્ઞજ્ઞય, રા
 હસ જ્ઞય, કુસ્વપ્ન જ્ઞય, તથા દુઃશુકેન જ્ઞય, તથા અ
 શુન્ન ગ્રહ તે સર્વની પીમાનુંને વિષે, તથા બે સંખ્યાને
 વિષે, તથા માર્ગને વિષે, તથા ઉપસર્ગોને વિષે, તથા રા
 ત્રિનુંને વિષે ॥ ૨૦ ॥

જો પઢઈ જો અ નિસુણઈ કે० જે કોઈ જન આ
 પાર્શ્વનાથનું સ્તવન જાણે છે, તથા જે ઉપયોગ પૂર્વક
 સાંજલે છે, તે બેહુ જનનું તથા આ પ્રસ્તુત સ્તોત્રના

कर्ता एवा मानतुंगसूरिनुं, प्रजु जे पार्श्वजिन ते, पाप
विनाश करो. ते पार्श्वजिन केवा ठे ? तोके सर्व ज
गत्ना जनोए पूजेलां ठे चरण जेमनां एवा ठे ॥११॥

गाथा ११ थी १४ सुधीना लुटा शब्दना अर्थ.

उवसगंगंते-उपसर्ग	मइझयारे-मध्यमां	समरण-स्मरण
कारक	अरुखरोहिं-अक्षरोधे	संतुष्ट-संतुष्ट [आठ.
कमठासुरम्मि-कम	जाणइ-जाणे छे	अहुत्तरसय-एकसो
ठासुर छते	सो-ते	वाहि-व्याधि
झाणाओ-ध्यानथी	झायइ-ध्यान करे छे	नासइ-नासे छे
संचलिथो-चलावाया	पयध्यं-पदस्थ	दूरेण-दूरे
जुवइहिं-युवतिओए	फुडं-स्वरूपे	
एअस्स-एना(आना)	पासह-पार्श्वनाथनुं	

उवसगंगंते कमठा, सुरम्मि जाणा

उ जो न संचलिउ ॥ सुरनर कि

नर जुवइहिं, संथुउ जयउ पास

जिणो ॥ ११ ॥ एअस्स मझयारे,

अधारस अरकरेहिं जो मंतो ॥ जो

जाणइ सो जायइ, परम पयध्यं

ફુલં પાસં ॥ ૫૩ ॥ પાસહ સમર

ણ જો કુણહ, સંતુષ્ટે હિયયેણ ॥

અધુત્તર સય વાહિ જય, નાસહ

તસ્સ દૂરેણ ॥ ૫૪ ॥

નવસર્ગંતે કમઠા કેળ નવસર્ગ કરનાર એવા
કમઠાસુર ઠતે પણ જે જગવાન ધ્યાનથી ચલાયમાન
થયા નહીં; વલી કેવા છે ? તોકે દેવ, મનુષ્ય, કિન્નર,
અને તે સર્વની સ્ત્રીનું એ રુમે પ્રકારે સ્તુતિ કરેલા એવા
શ્રી પાર્શ્વજિન, તે જય વૃદ્ધિને પામો ॥ ૫૨ ॥

અઘ્રસ્સમપ્પયારે કેળ આ સ્તોત્રના મધ્યને વિષે
વેરેલા અદ્ધરોળ કરી “નમિઠ્ઠણપાસવિસહરવસહજિ
ણફુલિંગં ” એ અઢાર અદ્ધરોયે કરીને જે ચિંતામણિ
નામા ગુપ્ત મંત્ર છે, તેને જે ગુરુ નિપદેશથી જાણે છે, તે
આ તેવા મંત્રે કરી પાર્શ્વનાથને ધ્યાન કરે છે: તે પાર્શ્વ
નાથ કેવા છે ? તોકે સ્વરૂપે ઉત્તમ એવા સ્થાનકને
વિષે રહેનારા છે ॥ ૫૩ ॥

પાસહ સમરણ જો કુણહ કેળ જે જીવ સંતુષ્ટ
હૃદયે કરીને, પાર્શ્વનાથને સ્મરણ કરે છે તે જીવોના

एकसोने आठ एवा व्याधि संबंधि जे जय ते दूर ना
से ठे ॥ २४ ॥ इति ॥

नक्तामरना बुटा शब्दना अर्थ. गाथा

१ थी ५ सुधीना.

भक्त-भक्तिमंत
प्रणत-नमेलो
मौलि-मुकुट
प्रभाणां-कांतिओने
उद्योतकं-प्रकाश क
रनारुं
दलित-दल्युं छे
तमो-अंधारानो, अ
ज्ञाननो
वितानं-समूह
युगादौ-युगनी आ
दिमां
आलंवनं-आधार
पततां-पडेलाने
वाङ्मय-शास्त्रनुं
-रहस्य

बोधात्-जाणवाथी
उद्भूत-उत्पन्न थइ
पटुभिः-कुशल बडे
हरैः-हरण करनारां
उदारै-उदार
स्तोष्ये-स्तवीश
किल-निश्चे
बुद्ध्या-बुद्धिए
विना-रहित
विबुध-देव
पीठ-आसन
स्तोतुं-स्तुति करवा
ने माटे
समुद्यत-उद्यमवाली
वि-विशेषे
गत-गइ छे

त्रपो-लाजवालो
बालं-बालक
विहाय-विना
स्थितं-रहेछुं
इंदु-चंद्रमा
अन्य-बीजो
इच्छति-इच्छा करेछे
सहसा-ततकाल
ग्रहीतुं-पकडवाने
वक्तुं-कहेवाने
गुणान्-गुणोने
शशांक-चंद्रमा
कांतान्-मनोहर
कः-कयो
ते-तमारां
क्षमः-समर्थ

सुरगुरु-दृहस्पति
प्रतिम-जेवा
कल्पांत-प्रलयकाल
उद्धत-उछलता
नक्रचक्रं-मगरमच्छ
तरितुं-तरवानै
अंबुनिधि-समुद्र

भुजाभ्यां-बे हाथे
वशाव-वशथी
कर्तुं-करवाने
प्रीत्या-प्रीतिए करीने
आत्म-आत्मा
अविचार्य-अणवि
चारीने

मृगेंद्रं-सिंहने
अभ्येति-सामो धाय
किं-थुं
शिशोः-बालकना
परिपालन-रक्षण
अर्थ-अर्थे

अथ ऋक्तामर स्तोत्र.

ऋक्तामर प्रणत मौलि मणि प्रज्ञा
णा, मुद्योतकं दलितपापतमोवि
तानं ॥ सम्यक् प्रणम्य जिन
पादयुगं युगादा, वालंबनं ऋवजले
पततां जनानाम् ॥ १ यः संस्तुतः
सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा, उद्धृत
बुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तो
त्रैर्लङ्गत्रितय चित्तरै रुदारैः, स्तो
त्र्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनैः

(५१८)

म् ॥ २ ॥ बुद्ध्या विनापि विबु
धार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतम
तिविंगतत्रपोऽहं ॥ बालं विहाय
जलसंस्थितमिडुविंब, मन्यः क इ
च्छति जनः सहसा ग्रहीतुं ॥३॥ व
क्तुं गुणान् गुणसमुद् शशांककां
तान्, कस्ते क्लमः सुरगुरुप्रतिमोऽ
पि बुद्ध्या ॥ कल्पांतकालपवनो
द्धतनक्रचक्रं, को वा तरीतुमलमंबु
निधिं जुजान्यां ॥४॥ सोऽहं तथा
पि तव ज्ञक्तिवशान्मुनीश, कर्तुं
स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृतः ॥ प्री
त्यात्म वीर्यमविचार्य मृगो मृगं
इं, नाज्येति किं निजशिशोः प
रिपालनार्थं ॥ ५ ॥

અર્થ:-નક્તામરપ્રણતમૌલિ કેળ નક્તિમંત એવા
 દેવતાના નમેલા જે મુગટ તેને વિષે રહેલા જે મણિ
 તેની કાંતિજને પ્રકાશ કરનારું એવું, તથા દટ્યો જે
 પાપરૂપ અંધકારનો સમૂહ જેણે એવું, તથા સંસારરૂ
 પી સમુદ્માં પમેલા જ્યોત્સ્નાને યુગની આદિમાં એટલે
 ત્રીજા આરાના અંતમાં આધારજૂત એવું શ્રી તીર્થકરનું પા
 દ યુગલ તેને રૂપે પ્રકારે નમસ્કાર કરીને ॥ ૧ ॥

યઃસંસ્તુતઃ સકલવાહન્ય કેળ જે જગવાન,
 સર્વ શાસ્ત્રના રહસ્યને જાણવા થકી નૃપત્તિ થયેલી
 નિપુણ બુદ્ધિ કરી કુશલ એવા, દેવલોકના નામ જે
 ઇંડો, તેણે ત્રણ જગતનાં પ્રાણીનાં ચિત્તને હરણ કરના
 રાં તથા અર્થથી બદાર એવાં સ્તોત્રોત્તર કરીને સ્તુતિ ક
 રાયેલા જે, તેવા ચોવીશ જિનની અપેક્ષાએ સર્વ જિનોમાં
 પહેલા જિનેંડ શ્રી ઋષભસ્વામીને હું પણ નિશ્ચે કરી
 સ્તવીશ ॥ ૨ ॥

બુદ્ધ્યાવિનાપિ કેળ દેવતાનું અથવા પંક્તિતોષ પૂ
 જન કરેલું એવું જે પણ રાખવાનું આસન જેમનું, તેના
 સંબોધનને વિષે હે વિબુધાર્ચિત પાદપીઠ ! બુદ્ધિ વિના

પણ વિશેષે કરીને ગઈ છે લજ્જા જેની એવો ઠતો સ્તુતિ કરવાની રૂમે પ્રકારે પ્રયત્નવતી કરેલી છે બુદ્ધિ જેની એવો હું બું. જેમકે પાણીને વિષે પમેલું ચંડમાનું પ્રતિબિંબ તેને તરત પકડવાને બાલક વિના બીજો કયો મનુષ્ય ઇચ્છા કરે છે ? અર્થાત્ કોઈ નહીં. તેમ હું પણ તમારું સ્તોત્ર કરવાને અશક્ય ઠતો પણ સ્તુતિ કરવાને અનિલાષ કરું બું. માટે મને ગતલજ્જા બાલકજાણવો ॥ ૩ ॥

વક્તુંગુણાન્ કેળ હે ગુણસમુદ્ ! તમારા ચંડમાના જેવા નિજ્વલ જે ગુણો છે તેને કહેવાને બુદ્ધિયે કરીને બૃહસ્પતિ સમાન એવો પણ કયો પુરુષ સમર્થ થાય છે ? અર્થાત્ કોઈ નહીં. જેમ પ્રલયકાલના પવને કરીને જેને વિષે મગરમઢના સમૂહ નઢલી રહ્યા છે, એવા સમુદ્ને બે હાથે કરીને પરિપૂર્ણ તરવાને કોણ સમર્થ થાય ? અર્થાત્ કોઈ ન થાય. તેમ તમારી સ્તુતિ કરવાને બૃહસ્પતિ સમાન પુરુષ પણ સમર્થ થાય નહીં ॥૪॥

સોઽહં તથાપિ કેળ હે મુનીશ ! હું તમારું સ્તોત્ર કરવાને અસમર્થ બું, તો પણ ઝક્તિના વશ થકી,

शक्ति रहित एवो पण हुं मानतुंग नामा आचार्य
तमारी स्तुति करवाने प्रवृत्त थयोहुं; जेम हरण स्नेहे क
रीने पोताना बलने अणविचारीने पोताना बालकनुं र
क्षण करवाने अर्थे सिंह प्रत्ये शुं युद्ध माटे न जाय?॥५॥

गाथा ६ थी १० सुधीना लुटा शब्दना अर्थ.

परिहास-हांसी मश्करी	क्षणाव-घडीना छट्टा	वालाण
धाम-ठेकाणुं	भागमां, क्षणमां.	प्रभावाव-प्रभावथी
त्वव-तमारी	क्षयं-क्षयने	हरिष्यति-हरशे
मुखरी कुरुते-वाचा	उपैति-पाये छे	सतां-संतपुरुषोनां
ल करे छे	भाजां-भजनाराना	नलिनी-कमल
बलाव-बलात्कारथी,	आक्रांत-व्यापेलो	दलेषु-पत्रमां
जोरथी	अशेषं-सधलुं	ननु-निश्चे
कोकिल-कोयल	आशु-उतावळे	उद-पाणी (नुं)
किल-सत्य	सूर्य-सूरज	विंदु-टपकुं
मधौ-चैत्र मासमां	अंशु-किरण	आस्तां-दूर रहो
विरोति-बोले छे	शर्वरं-रातनुं	अस्त-नाश पाम्याछे
चारु-मनोहर	मत्वा-मानीने	दुरितानि-पाप (ने)
चूत-आंवो	मया-में	हंति-हणे छे
कलिका-मोहर, कली	इदं-आ	प्रभा-कांति
निकर-समूह	आरभ्यते-आरंभ क	आकरेषु-समूहमां
संतति-परंपरा	राय छे	पद्माकरेषु-सरोवरोमां
सन्निवद्धं-बंधायेलुं	तनुधिया-मंदबुद्धि	जलजानि-कमलोने

विकाश-विकस्वरपणुं	धर्वतं-तमोने	आत्म-पोतानी
भांजि-भजनारा	अभिष्टुवंत-स्तुति क	समं-बरावर
भूतैः-साचा	रनारा	
भुवि-जगतमां	भूत्या-संपत्तिये	

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
 त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्मां॥
 यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं वि
 रौति, तच्चारु चूत कलिकानिकरै
 कहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन नव
 संततिसन्निबद्धं, पापं क्षणात्क्षयमु
 पैति शरीरज्ञाजां ॥ आक्रांत लो
 कमलिनीलमशेषमाशु, सूर्यांशुनि
 न्नमिव शार्वरसंधकारम् ॥ ७ ॥ म
 त्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद,
 मारज्यते तनुधियापि तव प्रज्ञा
 वात् ॥ चेतो हरिष्यति सतां नलि

(५२३)

नीदलोषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननू
दबिंदुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तव
नमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि
जगतां दुरितानि हंति ॥ दूरे सह
स्रकिरणः कुरुते प्रज्ञैव, पद्माकरे
षु जलजानि विकाशजांजि ॥ ९ ॥
नात्यद्भुतं ज्ञुवनज्ञूषणज्ञूतनाथ, ज्ञू
तैर्गुणैर्जुवि ज्वंतमज्जिष्टुवंतः ॥
तुल्या ज्वंति ज्वतो ननु ते न
किं वा, ज्ञूत्याश्रितं य इह नात्म
समं करोति ॥ १० ॥

अल्पश्रुतं श्रुतवतां केऽश्रुतज्ञानवंत एवा पुरुषोने हा
स्य करवाना स्थानक रूप एवा श्रोता ज्ञानवादा मने,
तमारी ज्ञक्ति बलात्कारथी स्तोत्र करवाने वाचाल करे
वे. त्यां दृष्टांत कहे वे; जे माटे चैत्र मासमां कोयल
मधुर स्वर बोलेवे ते बोलवाने खरेखर

ના મોરનો સમૂહ તેજ એક કારણ છે; તેમ મને બોલાવવાને તમારી ઝત્તિજ એક કારણ છે ॥ ૬ ॥

ત્વત્સંસ્તવેન કે० હે જિન ! દેહધારી જીવોનું જીવરૂપ સંસારની પરંપરા કરી બંધાણું પાપ તે, તમારા રૂપા સંસ્તવને કરી ઘમ્તીના ઢઠાઝાગે ક્યને પામે છે. કોની પેઠે ? તોકે લોકમાં વ્યાપી રહેલો એવો અને જમરાના જેવો કાલો તથા અંધારી રાતથી ન્તપ્ત થયો એવો અંધકાર, તે સૂર્યના કિરણના પ્રકાશથી તરત નાશ પામે છે તેની પેઠે જાણી લેવું ॥ ૭ ॥

મત્વેતિ નાથ તવ કે० હે નાથ એમ માનીને મંદ બુલ્લિવાલો એવો પણ હું જે હું, તેણે તમારું આ સ્તવન જે છે, તે કરવાને આરંભ કરાય છે; તે, તમારા પ્રજ્ઞાવ શ્રી, સંત પુરુષોનાં ચિત્તને હરણ કરશે, પરંતુ સ્વલ પુરુષોનાં ચિત્તને હરણ નહીં કરે; એવી સૂચના કરવાને અર્થે “ સતાં ” એ પદગ્રહણ કર્યું છે. ત્રીજાં અપમાન કહે છે કે:-કમલ પત્રને વિષે પડેલો એવો જે પાણીનો વિંડુ તે કમલના પ્રજ્ઞાવે કરી મોતીની કાંતિના જેવી શોજાને નિશ્ચે પામે છે ॥૮॥

(૫૩૫)

આસ્તાં તવ સ્તવનં કેળ હે દેવ ! નાશ પામ્યા
 હે સમગ્ર દોષ જે થકી એવું તમારું સ્તવન જે હે તે
 દૂર રહો ! પરંતુ તમારી કથા માત્ર કરવી, તે પણ જ
 ગત્વાસી લોકોનાં પાપને હણે હે; તીહાં ઝપમા કહે
 હે; સૂર્ય જે હે તે તો દૂર રહો ! પરંતુ તેની પ્રજ્ઞા જે હે,
 તેજ કમલના સમૂહવાલાં સરોવરને વિષે રહેલાં કમ
 લોને વિકસ્વર કરે હે ॥ ૯ ॥

નાત્યદ્ધુતં જીવનઙ્ગૂષણઙ્ગૂત નાથ કેળ હે જગતને
 વિષે ઙ્ગૂષણરૂપ ! સત્ય એવા તમારા ગુણોએ કરીને
 જગતને વિષે તમોને સ્તુતિ કરનારા જનો, રૂપે તથા
 ગુણે કરીને તમારી બરાબર આય હે, તેમાં અતિ આ
 શ્ચર્ય નથી, પ્રશ્નમાં હે નાથ ! જે કોઈ ધનવાન સ્વામી
 આ લોકને વિષે પોતાનો આશ્રય કરીને રહ્યો એવો જે
 સેવક તેને મહત્ત્વે કરીને પોતાની બરાબર નહીં કરે,
 તો તે સ્વામીએ કરીને શું ? ॥ ૧૦ ॥

गाथा ११ थी १५ सुधीना लुटा शब्दना अर्थ.

दृष्ट्वा-जोइने	ललामभूत-तिलकस	लंघयंति-उल्लंघन करेछे
अनिमेष-एकी नजरे	मान	तान्-तेमने
विलोकनीयं-जोवा	तावन्त-तैटला	निवारयति-निवारण
योग्य	खलु-निश्चय	करे छे
तोषं-संतोषने	अणत्रः-परमाणुओं	संचरतः-विचरता
पीत्वा-पीने	पृथिव्यां-पृथ्वीमां	यथेष्टं-पोतानी इच्छाये
पयःपाणी	अपरं-बीजुं कोइ	चित्रं-आश्चर्य
कर-किरणो	अस्ति-छे	अत्र-ए ठेकाणे
दुग्धसिंधोः-क्षीरसमु	क्व-क्यां	यदि-जो
द्रना	हारि-हरण करनार	त्रिदश-देवताओं(नी)
क्षारं-खार	निःशेष-समस्त	अंगनाभिः-स्त्रीओए
अशितुं-पीवाने	निशाकरस्य-चंद्रमानुं	नीतं-पमाड्युं
इच्छेत्-इच्छा करे	वासरे-दीवसमां	मनाग्-किंचित्, लगार
रुचिभिः--छायावाला	पांडु-पीलुं	मरुता-वायरावडै
परमाणुभिः-परमाणुए	पलाश-खाखरानुंझाड	चलित--चलाव्या
निर्मापितः-निर्माण	कलाप-समूह	अचलेन--पर्वत जेणे
करेला	शुभ्रा-उजला	कदाचित्-क्यारे पण

दृष्ट्वा ज्वन्तमनिमेष विलोकनीयं,

नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य च

हुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति
 दुग्धसिंधोः क्षारं जलं जलनिधे
 रक्षितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शां
 तरागरुचिन्निः परमाणुन्निस्त्वं, नि
 र्मापितस्त्रिजुवनैकललामञ्जुत ॥
 तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
 यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति
 ॥ १२ ॥ वक्रं क ते सुरनरोरगने
 ब्रह्मरि, निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयो
 पमानम् ॥ बिम्बं कलंकमलिनं क्व
 निशाकरस्य, यद्वासरे ज्वति पांशु
 पलाशकल्पम् ॥ १३ ॥ संपूर्णमं
 मलशशांककलाकलाप, शुद्धा
 गुणास्त्रिजुवनं तव लंघयन्ति ॥ ये
 संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, क

(५१७)

स्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम्
॥१४॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रि
दशांगनान्नि, नीतं मनागपिमनो
न विकारमार्गम् ॥ कल्पांतका
लमरुता चलिताचलेन, किं मंदरा
द्विशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥

अर्थः—दृष्ट्वा ज्वलन्तमनिमेष के० मिषोन्मिष रहि
तपणे करीने जोवा लायक एवा तमोने जोशने ते जो
नारा लोकोनी आंखो बीजा देवोने विषे संतोष न पा
मे; जेम चंडमाना किरणनी कांति जेवी उज्ज्वल कां
तिवाला क्षीर समुद्रनुं पाणी पीने कयो पुरुष लवण
समुद्रनुं खारुं पाणी पीवानी इच्छा करे ? ॥ ११ ॥

यैः शान्तरागरुचिभिः के० त्रण जुवनने विषे ए
कज तीलक समान माटे हे त्रिजुवनैकललाम जूत !
जे शान्त रसना जावनी ठाया ठे जेमने विषे, एवा प
रमाणुए करीने निर्माण करेला शरीरवाला तमे ठे,
अने ते परमाणुज जगतमां तेढलाज ठे; कारण के पृ

(૫૨૯)

જીવીને વિષે તમારા સરસું બીજું કોઈરૂપ નથી ॥૧૭॥

વક્ત્રં કવ તે કેળ હે નાથ ! દેવતાનું, મનુષ્યો તથા નાગકુમાર પ્રમુખ દેવતાનના ચક્ષુને હરણ કરવાનું છે શીલ જેનું એવું, વલી સમસ્ત ત્રણ જીવનને વિષે જે ની ઉપમા દેવાય (એવાં કમલ, ચંદ્ર, દર્પણ) એવા પદાર્થ ના સૌંદર્યને જીત્યું છે જેણે એવું તમારું મુખ તે ક્યાં ? અને કલંકે કરી મેલું, અને દિવસે ચાંચરાના ઝામના પાંદડા જેવું પીલું થઈ જાય એવું ચંદ્રમાનું વિંબ ક્યાં ? અર્થાત્ તમારા મુખને ચંદ્રમાનું ઉપમાન ઘટતું નથી. ॥૧૮॥

સંપૂર્ણ મંદલ કેળ હે ત્રણ જગતના ઈશ્વર ! સંપૂર્ણ મંદલવાલા (પૂનમના) ચંદ્રમાની કલાનો સમૂહ તેના સરસા બજ્જવલ એવા તમારા ગુણો તે ત્રણ જીવનને બહાન કરે છે, એટલે તમારા જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્રાદિ ગુણો છે તે ત્રણ જીવનથી ઉપરાંત છે. વલી જે ગુણો, એક એવા અને ત્રણ જીવનના સ્વામી એવા, જગતને આશ્રય કરી રહેલા છે, તે પોતાની ઇચ્છાએ વિચરતા એવા ગુણોને કોણ નિવારણ કરી શકે ? ॥૧૯॥

ચિત્રં કિમત્ર યદિ કેળ હે પ્રજો ! ઘડસ્ય ઇ

वस्थाए विचरता एवा तमे, तेमनुं मन जो देवतानुनी
 स्त्रीनुं किंचित् मात्र पण विकारना स्थानकने न प
 माक्युं, एटले तमारा मनने लगार मात्र होज न प
 माक्यो; तो ए ठेकाणे आश्चर्य हुं ? अर्थात् कांइ नहीं.
 केसके मोटा पर्वताने चलायमान कर्या ठे जेणे एवा
 प्रलय कालना वायुए करीने क्यारे पण मेरुपर्वतनुं
 शिखर चलायमान आय ? अर्थात् ते वायुए बीजा पर्व
 ताने चलायमान कर्या परंतु मेरुपर्वतने न कर्यो तेम ते
 देवतानो स्त्रीनुं तमोने चलायमान करी शके नहीं. । १५।

गाथा १६ थी २० सुधीना तुटा शब्दना अर्थ

निर्-गयेलो, रहित.

द्धम-धूमाडो

बर्त्ति-दीवट

अपवर्जित-वर्जित थ

एलुं, रहित.

तेल-तेल

पुरः-पूरवुं

कृत्स्नं-समग्र

प्रकटी-प्रगट

करोपि-करो छो

गम्यः-जवा योग्य

जातु-क्यारे पण

दीपः-दीवो

अपर-बीजो

असि-छो

स्पष्टिकरोपि-स्पष्ट क

रोछो

सहसा-एक दम

युगपत्-समकाले

अभोधर-मेव

उदर-मध्यभाग

निरुद्ध-रोकायो

वदनस्य-मुखने

वारिदानां-मेथोना

विभ्राजते-शोभे ठे

अवजं-कगल

विद्योतयत्-प्रकाश

करतुं

अपूर्व-अपूर्व

शर्वरीपु-रात्रिओम

अहि-दिवसे
विवस्वता-सूर्य वडे
युष्मत्-तमारा
इंदु-चंद्रमा
दलितेषु-दले छते
तमस्तु-अंधकारो(ने)
निष्पन्न-पाकेलां
शालि-डांगेर
शालिनि-शोभायमा

न (मां)
कार्य-प्रयोजन
क्रियत्-थुं, केटलुं
जलधरै-मेघवडे
नन्नैः-नमेला
त्वाये-तमारासां
यथा-जेवी रीते
विभाति-शोभे छे
अवकाश-अवकाश

हरि-कृष्ण
हरादिषु-शिववगेरेमां
स्फुरन्-देदीप्यमान
याति-पामे छे
महत्त्वं-मोटाइ
शकले-ककडामां
किरणाकुलेपि-किरणौ
ए सहितने दिधे पण,
कांतिवाळासां पण.

निर्धुनवर्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृ
त्स्नं जगत्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥
गम्यो न जातु मरुता चलताचला
नां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जग
त्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचि
दुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरो
षि सहसा युगपज्जगंति ॥ नांजो
धरोदर निरुद्धमहाप्रज्ञावः, सूर्याति
शायिमहिमासि मुनींश्च लोके

॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहम
 हांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न
 वारिदानां ॥ विद्याजते तव मुखा
 जमनलपकांति, विद्योतयज्जगदपूर्व
 शशांकविबम् ॥ १८ ॥ किं शर्व
 रीषु शशिनाहि विवस्वता वा, यु
 ष्मन्मुखेऽदलितेषु तमस्सु नाथ ॥
 निष्पन्नशालिवनशालिनि जीव
 लोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलज्जा
 रनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि
 विज्ञाति कृतावकाशं, नैवं तथा
 हरिहरदिषु नायकेषु ॥ तेजः स्फु
 रन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं
 तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥

अर्थः—निर्दुमवर्त्तिरपवर्जित के० हे नाथ ! तमे
 जगत्प्रकाशक रूप बीजा दीवा गो. ते केवी रीते

(૫૩૩)

ત્યાં કહે છે. કે ગયો છે દેવરૂપ ધુમાડો અને કામવશ
તારૂપ દીવટ જે થકી એવા અપૂર્વ દીપક તમે બો. વ
લી કેવા બો ? તો કે ગયું છે સ્નેહ પ્રકાશરૂપ તેલનું પૂર
બું જે થકી, એટલે બીજા દીવાનમાં તો તેલ પૂરબું પ
રે છે, પણ તમે તે રહિત બો. વલી કેવા દીપક બો ?
તો કે આ સમગ્ર ત્રણ જગતને પ્રગટ કરો બો એટલે કે
વલ જ્ઞાનરૂપ બુદ્ધોત્તે કરીને પ્રકાશ કરો બો. વલી કે
વાબો ? તો કે પર્વતોને ચલાયમાન કરનાર વાયરાએ ક
રીને ક્યારે પણ જાવા યોગ્ય નથી અર્થાત્ બલવાતા નથી;
અને લૌકિકદીપક તો પવનથી બલવાઈ જાય છે. ॥૧૬॥

નાસ્તં કદાચિહપયાસિ કે ૦ હે મુર્નીહ ! તમે જ
ગતને વિષે સૂર્યથકી ઘણા મહિમાવાલા બો, કેમકે સૂ
ર્ય તો અસ્ત પામે છે અને તમે કદાપિ પણ અસ્ત પા
મતા નથી; વલી સૂર્ય રાહુઅસ્ત થાય છે એટલે તેનું અ
હણ થાય છે પણ તમે રાહુઅસ્ત થતા નથી; વલી સૂ
ર્ય તો એક જંબુદ્વીપને પ્રકાશ કરે છે, અને તમે તો
ત્રણ જગતને સાથેજ પ્રકાશ કરો બો; વલી સૂર્ય તો વા
દલથી ઢંકાઈલો છે અને તમે તો જ્ઞાનાવરણાદિક પાં
ચ આવરણરૂપ મેઘ તેના મધ્ય જાગથી રોકાયો નથી

મોટો મહિમા જેનો એવા હો. ॥ ૧૭ ॥

નિત્યોદયં દલિત મોહ કેળ હે નાથ ! તમારું
મુખરૂપ કમલ અપૂર્વ ચંદ્રમાના વિંબ જેવું શોજે છે તે
કેવી રીતે ? તો કે તમારું મુખરૂપ કમલ તો નિરંતર
હૃદય પામેલું છે અને ચંદ્ર વિંબ તો નિરંતર હૃદય થવા
વાલું નથી. વલ્લી તમારું મુખ અજ્ઞાનરૂપ મોટા અંધ
કારને દલી નાંખ્યો છે જેણે એવું છે અને ચંદ્રવિંબ તે
વા ગુણવાલું નથી. તથા વલ્લી ચંદ્રમા તો રાહુના
મુખને ઘસવા યોગ્ય છે અને તમારું મુખ તેવું
નથી. તથા વલ્લી ચંદ્રવિંબ તો ક્યારેક પણ અલ્પ
કાંતિ વાલું થાય છે, અને તમારું મુખ તેમ થતું ન
થી. તથા વલ્લી મેઘ ચંદ્રવિંબને આહ્વાદન કરવાને શ
ક્તિમાન છે, અને તમારા મુખને આહ્વાદન કરવાને અ
શક્ય છે. વલ્લી ચંદ્રવિંબ તો એક જંબુહીપનેજ પ્રકાશ
કરે છે અને તમારું મુખ તો ત્રણ જગત્તે પ્રકાશિત કરે
છે માટે હે પ્રભુ ! અપૂર્વ શશાંકવિંબપણું તે તમારા
મુખકમલને યોગ્યજ છે. ॥૧૮॥

કિં શર્વરિષુ શશિનાદિ કેળ હે નાથ ! તમારા
મુખ રૂપ ચંદ્રમાએ અજ્ઞાનરૂપ અંધકારોને વલન કરે

(५३५)

उते पढी रात्रिउने विषे (जगनारा) चंडमाए करीने
अथवा दिवसे (जगनारा) सूर्य वने शु कार्य भवानुं ठे ?
कांइ नहीं. त्यां दृष्टांत कहे ठे के जेस पाकेला शाखिना
वने करी शोजायमान अएला एवा मृत्यु लोकने विषे
जलना नारे करी नमेला एवा मेघो तेमणे करी शुं
प्रयोजन ? अर्थात् कांइ नही. ॥१६॥

ज्ञानं यथा त्वयि विज्ञाति के० हे नाथ ! अनंत
पर्यायात्मक जे पदार्थो तेने विषे कयो ठे अवकाश एट
ले प्रकाश जेणे एवुं केवलज्ञान ते जेवी रीते तमारे
विषे शोजे ठे, तेवी रीते पोतपोताना शासनना स्वा
मी एवा हरिहरादिक जे देवो ठे तेने विषे ए प्रकारनुं
नथी शोजतुं. त्यां दृष्टांत कहे ठे के, जेवी रीते प्रका
श देदीप्यमान मणिलुने विषे गौरवताने पामे ठे, ते
वी रीते ते बलकता एवा पण काचना कटकाने विषे
गौरवताने नथी पामतो. अर्थात् जेवुं तमारे विषे ज्ञान
ठे तेवुं अन्य देवोमां नथी. ॥ १७ ॥

गाथा ११ थी १५ सुधीना बुटा शब्दना अर्थ.

मन्ये-हुं मानुंछुं
दृष्टा-दीठा

दृष्टेषु-दीठे छते
तोष-संतोषने

एति-पामे छे
वीक्षितेन-देखेला

भुवि-पृथ्वीमां
येन-जे कारणे
भवता-तमोए
कश्चित्-कोइ
भवांतरेऽपि-बीजा भ
वमां पण
शतानि-सैंकडो
शतशः-सैंकडो गमे
जनयंति-जन्म आपेछे
त्वदुपमं-तमाराजेवा
प्रसूता-जन्म आप्यो
दधति-धारण करेछे
भानि-नक्षत्रो
रश्मि-किरण
प्राची-पूर्व
जनयाति-उत्पन्न करेछे

स्फुरत्-प्रकाशमान
अंधु-किरण
जालं-समुह
त्वां-तमोने
आमनांति-कहेछे
परमं-मोटा
पुमांसं-पुरुष
परस्तात्-आगल
उपलभ्य-मेलवनिने
पंथाः-मार्ग
अव्ययं-क्षय रहित,
फेरफार नहीं थ
इ शके तेबुं.
असंख्यं-संख्यारहित
ब्रह्माणं-ब्रह्माने

ईश्वरं-ईश्वरने
अनंतं-अंतरहित
अनंग-कामदेव
केतुम्-बूछडीओतारो
विदित-जाण्यो
प्रवदंति-कहेछे
बुद्धः-बुद्धदेव.
बोधात्-बोधयी.
शंकरोसि-तुं शंकरहुं
धाता-विधाता
विधेः-विधिना
विधानात्-करवायी
व्यक्तं-प्रगटपणे
पुरुषोत्तम-नारायण
उत्तम पुरुष.

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु
येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं
वीक्षितेन जवता जुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ जवांतरे
पि ॥ ५१ ॥ स्त्रीणां शतानि शत

(५३४)

शो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं
त्वदुपमं जननी प्रसूता ॥ सर्वा दि
शो दधति ज्ञानि सहस्ररश्मिं, प्रा
च्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजाल
म् ॥ ११ ॥ त्वामामनन्ति मुनयः
परमं पुमांस, मादित्यवर्णममलं
तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगु
पलन्य जयन्ति मृत्युं, नान्यः शि
वः शिवपदस्य मुनींश्च पन्थाः ॥ १३ ॥
त्वामव्ययं विष्णुमचिन्त्यमसंख्यमा
द्यं, ब्रह्माण्मीश्वरभनंतमनंगकेतुम्
॥ योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति संतः
॥ १४ ॥ बुधस्त्वमेव विबुधार्चित
बुधिवोधात्, त्वं शंकरोसि भुवन

ત્રયશંકરત્વાત્ ॥ ધાતાસિ ધી
ર શિવમાર્ગવિધેર્વિધાનાત્, વ્યક્ત
ત્વમેવ જગવન્ પુરુષોત્તમોઽસિ ॥ ૫૫ ॥

અર્થ:—મન્યે વરં હરિહરાદય કેળું હું વિચાર કરું
કે હરિહરાદિક દેવો દીઠા તેજ સારું થયું. કેમકે તે
મને દીઠે ઠતે મારું ચિત્ત તે તમારે વિષે સંતોષને પા
મે છે; અને દેખેલા એવા તમારે કરીને શું ? તો
કે હે નાથ ! જે તમારા દર્શને કરીને પૃથ્વીને વિષે
કોઈ વીજો દેવ જવાંતરને વિષે પણ મારું મન હરણ
કરતો નથી અર્થાત્ મને ગમતો નથી ॥ ૨૧ ॥

સ્ત્રીણાં શતાનિ કેળું હે નાથ ! લોકને વિષે સંક્રમો
સ્ત્રીયો સંક્રમો ગમે પુત્રોને જન્મ આપે છે સ્વરી, પરંતુ
તે વીજી માતા તમારી નૃપત્તા દેવાય એવા પુત્રને જ
ન્મ આપતી ન હોય. ત્યાં દૃષ્ટાંત કહેઠે કે, સર્વ દિશાઠ
નદીઓને ધારણ કરેઠે, પરંતુ એક પૂર્વ દિશાજ દેવીપ્ય
માન કિરણના સમૂહવાળા અને હજાર ઠે કિરણ જે
નાં એવા સૂર્યને નૃપત્ત કરેઠે. અર્થાત્ જેમ એક પૂર્વ
દિશા સૂર્યની જનની છે તેમ એક તમારી માતાજ ત

(૫૩૯)

મારા સરખા સુપુત્રની જનની છે. ॥ ૨૨ ॥

ત્વામામનંતિ મુનયઃ કે० હે મુનીંડ ! જે સાધુ જનો છે તે તમને અંધકારરૂપ ડુરિતની આગલ સૂર્યના સરખા કાંતિવાલા એવા અને રાગદ્વેષ રહિત થવાથી નિર્મલ અને ઉત્તમ પુરુષ ઇટલે નિઃકર્મા સિદ્ધ એવા કહે છે; તથા તમોનેજ રૂઝે પ્રકારે પામીને તે મુનિલ મૃત્યુ ને જીતે છે, માટે બીજો કોઈ નિરૂપડવ એવો મોક્ષનો માર્ગ નથી. ॥ ૨૩ ॥

ત્વામવ્યયં વિન્નુમચિંત્ય કે० હે પ્રજ્ઞુ ! તમોને સંત પુરુષો કહે છે જે તમે ક્ષય રહિત છો, વલી પરમેશ્વર છો, વલી ચિંતવન નહીં થઈ શકે એવા મહિમાવંત છો, વલી ગુણોની સંખ્યા રહિત છો, વલી પેહેલા તીર્થંકર છો, અથવા લોક સૃષ્ટીના હેતુપણાથી સર્વની આદિમાં છો, અથવા પંચ પરમેષ્ટીમાં પેહેલા છો, વલી બ્રહ્મ (નિવૃત્તિરૂપ) છો, વલી સર્વ દેવના ઈશ્વર છો, વલી અંત રહિત છો, વલી કામદેવને નાશ કરવાને માટે કેતુ સમાન છો, વલી યોગી (સામાન્ય કેવલી) તેમના ઈશ્વર છો, વલી જ્ઞાનીપુરુષોએ અષ્ટવિધ યોગ તમારાથી જાણ્યો છે એ

वा ठो, तथा ज्ञाने करी अनेक ठो, सर्व जाणकार हो
वाथी सर्व व्यापक ठो माटे पर्यायथी अनेक ठो, वली
तमाराथी बीजुं कोइ उत्तम नथी माटे एक ठो अथवा
जीवद्रव्यनी अपेक्षाये द्रव्यथी एक ठो, द्वायिक स्वरूपी
ठो, अठार दोषरूप पापमल रहित माटे निर्मल ठो ॥ १४ ॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित के० हे नाथ ! देवतानुए
पूजित कर्यो ठे केवलज्ञाननो बोध जेमनो एवा माटे
तमेज बुद्ध देव ठो, तथा त्रण जुवनने सुखना करनार
होवाथी तमेज शंकर देव ठो, तथा हे धीर ! तमेज
मोक्ष मार्ग तेनो विधि जे ज्ञान दर्शन चारित्ररूप
रत्नत्रय तेना निष्पादन करवाथी विधाता (ब्रह्मा)
ठो, वली हे जगवंत ! तमेज प्रगटपणे पुरुषोत्तम ते
नारायण देव ठो ॥ १५ ॥

गाथा १६ थी ३० सुधीना लुटा शब्दना अर्थ

आर्त्ति-पीडा	शूषणाय-अलंकारने	को-शो, शुं
हराय-हरनारने	उदधि-महासागर	विस्मय-आश्चर्य
क्षितितल-पृथ्वीनी स	शोषणाय-शोषण क	अत्र-अहीं, एमां
पाटी	रनार (ने)	निरवकाशतया-निरं

(५४१)

तरपणे
उपात्त-ग्रहण करेलुं
विविध-जूदा जूदा
प्रकारना
जात-उत्पन्न थया
गर्वैः-गर्ववडे
स्वप्नांतरे-स्वप्नमां
ईक्षितो-जोयेलो
उच्चैः-उंचा
अशोकतरु-अशोकवृक्ष
उन्-उंचा
मयूख-किरणो
आभाति-शोभेछे

नितांतं-अत्यंत.
वितानं-समूह
रवेः-सूर्य(नुं)
पयोधर-मेघ [थकुं
पार्श्ववर्त्ति-पासे रहुं
शिखा-पंक्तिओ
वपुः-शरीर
अवदातं-मनोज्ञ
वियत्-आकाश.
विलसत्-प्रकाशता
लता-शाखाओ
तुंग-उंचो
शिरसि-माथाउपर

सहस्ररश्मेः-सूर्यना
कुंद-मोगरानां फुल
अवदात-उज्ज्वल
चामर-चामर
कलधौत-सुवर्ण
शुचि-निर्मल
निर्झर-झरण
वारि-पाणी.
धारं-धारा.
तट-शिखर
शातकौभं-सोनं

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ,
तुभ्यं नमः क्षितितत्वामखचूषणा
य ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगतःपरमेश्वरा
य, तुभ्यं नमो जिन नवोदयि
षण्णाया॥५६॥ कोविस्मयोऽत्र यदि
नाम गुणैरशेषै, स्त्वं संश्रितो निर

(५४९)

वकाशतया मुनीश ॥ दोषैरुपात्त
विविधाश्रयजात गर्वैः, स्वप्नांतरे
पि न कदाचिदपीहितोसि ॥५७॥
उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूखं, मा
जातिरूपममलं ज्वतो नितांतम् ॥
स्पष्टोद्भ्रसत्किरणमस्ततमोवितानं,
बिंबं रवेरिव पयोधर पार्श्ववर्त्ति
॥५८॥सिंहासनेमण्णिमयूख शिखा
विचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कन
कावदातम् ॥ बिंबं वियद्विहसदं
शुलतावितानं, तुंगोदयाद्दि शिर
सीव सहस्ररश्मेः ॥ ५९ ॥ कुंदा
वदातचलचामरचारुशोचं, विभ्राज
ते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्य
च्छांकशुचिनिर्जरवारिधार, मुञ्चे

(५४३)

स्तवं सुरगिरि विशातकौञ्जम् ॥३७॥

अर्थ—तुम्हें नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ के० हे नाथ
त्रय भुवननी पीना हरनार एवा तमोने नमस्कारहो,
तथा पृथ्वीतलने विषे निर्मल अलंकार रूप एवा त
मोने नमस्कार हो, अथवा पृथ्वीतल एटले पाताल
अने अमल के० स्वर्ग तेना भूषण रूप एवा तमोने
नमस्कार धानु, तथा त्रय जगतना प्रभु एवा तमोने
नमस्कार हो, तथा हे श्री वीतराग, संसार रूप तमु
झे शोषण करनारा एवा तमोने नमस्कार हो ॥२६॥

को विस्मयोऽत्र यदि के० हे मुनिजना ईश्वर !
जो तमे समग्र गुणोए निरंतरपणे रूपा प्रकारे आश्रय
कराएला ठो तो एने विषे शुं आश्चर्य ? कांइ नहीं.
अने ग्रहण करेला एवा जे विविध आश्रयो तेणे करी
ने उत्पन्न अवा एवा गर्वरूप जे अवगुण तेना दोषे
करीने सहित एवा जनोये तमो स्वप्नांतरने विषे पण
क्यारे पण जोडाएला नथी ॥२७॥

उच्चैरशोकतरु के० हे जिन ! अशोकवृक्ष नी
चे वेठेलाठो ते समये उचां ठे किरणो जेना एवुं तमारुं

શરીર તે અત્યંત નિર્મલ શોભે છે. જેમ કે પ્રગટ ઝંઘા
ગણાં છે કિરણો જેનાં એવું સૂર્યવિંવ જે છે તે મેઘના
પાસે રહ્યું શું જેમ હોય નહીં ? એટલે સૂર્ય પોતાનાં
કિરણો વરસે કરીને અંધકારના સમૂહને અસ્ત કરી
નાંખીને એટલે નાશ કરીને શોભાને પામે છે, તેમ તમે
અશોકવૃક્ષ નીચે બેઠા એકા શોભાને પામો છો. ॥૧૫॥

સિંહાસને મણિમયૂજ કેળ હે દેવ ! મણિના
કિરણોની પંક્તિબદ્ધ કરીને ચિત્ર વિચિત્ર એવા સિંહા
સનને વિશે સુવર્ણના સરખું મનોહર એવું તમારું વિચિત્ર
શરીર તે વિશેષે કરીને શોભે છે. ત્યાં દૃષ્ટાંત કહેવે:-
ઝંઘા એવા ઝડપાચલ પર્વતના શિખર ઉપર જે આકાશ
તેને વિશે ઝડપોત્તમાન કિરણોની શાખાનના સમૂ
હ છે જેને એવા સૂર્યનું વિંવ તે જેમ શોભાને પામે છે.
તેમ પ્રજ્વળત શરીર સિંહાસન ઉપર શોભા પામે છે ॥૧૬॥

કુંદાવદાત્મચલચામર કેળ હે નાથ ! મોઘરાના
ફુલ જેવાં ઝજ્જલ અને ચંચલ એટલે રંગાદિકે વીંજે
લા એવા બે ચામરો કરીને મનોહર શોભાવાળું અને
સુવર્ણના સરખું મનોહર એવું તમારું શરીર તે વિશેષે

(५४५)

करिने शोने ठे. त्यां दृष्टांत कहे ठे के उदय पामेल
चंडमा सरखुं निर्मल, अने निऊरणाना पाणीनी जल
धारा जेने विषे वही रही ठे एवुं सुवर्णमय, जे मेरुप
वतनुं जंचुं शिखर जेम शोने ठे, तेम तमारुं शरीरप
ण शोने ठे ॥ ३० ॥

गाथा ३१ थी ३५ सुधीना लुटा शब्दना अर्थ.

विभाति-विशेषेशोभेछे

स्थितं-रहेलुं

स्थगित-ढांकयो छे

मुक्ताफल-मोती

प्रकर-समूह

जाल-रचना

वृद्ध-वृद्धिपामेली छे

शोभं-शोभा जेनी

प्रख्यापयत्-प्रख्यात

करतुं

उन्निद्र-विकसित

हैम-सोलुं

पुंज-ढगलो

पर्युल्लसत्-चारे तर

३५

फ उछलतुं

पदानि-पगलां

धत्तः-मूके छे

पद्मानि-कमलोने

परिकल्पयंति-रचना

करे छे

इत्थं-एवी रीते

विभूतिः-अतिशयनी

संपदा

अभूत्-थइ

परस्य-बीनानी

यादृक्-जेवी

दिनकृतः-सूर्यनी

हत-हण्यो

तादृक्-तेवी

कुतः-क्यांथी

श्रयोतव-झरतो

आविल-कलुष थए

लुं एहुं

कपोलमूल-गंडस्थल

भ्रमर-भमराना

नाद-शब्द

कोपं-कोप

औरावत्-हाथी

आभं-कांति

इभं-हाथी

आपतंतं-सामो आ

वतो

गलत्-नीचे पड्या

शोणिताक्त-लोही

थी खरडाएला

भूषित-शोभाव्यो

वद्ध-बांधेली छे

क्रम-फाल

क्रम-पग

गतं-गएलु

हरिण-हरण

अधिप-राजा

नाक्रामति-दवावतो

नथी

तत्रत्रयं तव विज्ञाति शशांककांत,
 मुञ्चैः स्थितं स्थगितज्ञानुकरप्रता
 पम् ॥ सुक्ताफलप्रकरजालविवृद्ध
 शोचं, प्रख्यापयन्निजगतः परमेश्व
 रत्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्धमेनवपंक
 जपुंजकांति, पर्युद्धसन्नखमयुखशि
 खान्निरामौ ॥ पादौ पदानि तव
 यत्र जिनेन्द्र धत्तः, पद्मानि तत्र वि
 बुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इ
 त्वं यथा तव विज्ञूतिरज्ञूज्जिनेन्द्र, ध
 र्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥
 यादृक्प्रज्ञा दिनकृतः प्रहतांधका

रा, तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशि
 नोपि ॥ ३३ ॥ श्रयोतन्मदाविल
 विलोलकपोलमूल, मत्तन्नमद्भ्रम
 रनाद विवृद्धकोपम् ॥ अत्रैरा
 वतान्नमिन्नमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा नयं
 न्नवति नो न्नवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥
 निन्नेन्नकुंजगलडुज्ज्वलशोणिता
 क्त, मुक्ताफलप्रकर नूषितनूभिन्ना
 गः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधि
 पोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसं
 श्रितं ते ॥ ३५ ॥

अर्थः—उत्रत्रयं त्वं विज्ञाति केण हे प्रजो ! चंद्रमाना
 सरखुं मनोहर एवं तमारा उपर रह्युं अने ठांकी दी
 वो ठे सूर्यना किरणोनो प्रताप जेणे एवं, तथा यो
 तीना समूहनी रचनाए करीने विशेषे करी वृद्धि पा
 मी ठे शोजा जेनी एवं, त्रण जगतनुं परमेश्वरपणुं

તેને પ્રકર્ષે કરીને જણાવનારું એવું, તમારું ઠત્રત્રય જે
 ઢે તે શોજે ઢે; એટલે તમોને એક ઝપર એક એમ ત્રણ
 ઠત્ર ધરાય ઢે, તે ત્રણ જગત્તનું સ્વામીપણું જાહેર કરે
 ઢે. તેમાં એક ઠત્રે પાતાલ લોકનું સ્વામીપણું, બીજા
 ઠત્રે મૃત્યુલોકનું સ્વામીપણું અને ત્રીજા ઠત્રે કરી દે
 વલોકનું સ્વામીપણું સૂચવાય ઢે ॥ ૩૧ ॥

ઝનિહ્મેનવપંકજ કેળ હે જિનેંડ ! પ્રફુલ્લિત
 સોનાનાં નવ કેળ નવ સંખ્યા ઢે જેની અશ્વના નવ કેળ
 નવીન એવાં કમલના સમૂહની કાંતિએ કરીને ચારે
 તરફ ઝબલતાં એવાં પરમેશ્વરના પગના નલનાં કિર
 ણોની પ્રકાશપંક્તિ જેની ચારે તરફના જાગમાં ફેલી
 રહી ઢે, તેણે કરીને મનોહર એવાં તમારાં ચરણો તે
 જે જ્ઞૂમિને વિષે પગલાં મૂકે ઢે ત્યાં દેવતાનું કમલો
 ની રચના કરે ઢે; એટલે બે કમલ પગલાંની નીચે અને
 સાત કમલ માર્ગમાં રહે ઢે. અહીંંઆં ચરણકમલના
 નલની કાંતિ દર્પણ જેવી ઢે અને દેવતાનું રચેલાં
 સોનાનાં કમલની કાંતિ પીલી ઢે, તે બેના મલવાશ્રી
 ચરણોનો વિચિત્ર વર્ણ અયો ॥ ૩૨ ॥

(૫૪૯)

इहं यथा तव के० हे जिनेन्द्र ! दुर्गतिए पमता
 प्राणीने धारी राखे एवો जे श्रुत चारित्र लक्षण धर्म,
 तेना उपदेश विधिने विषे, ए पूर्वे कही एवी तमारी
 अतिशयनी संपदा ते जे प्रकारे अती हवी, तेवी बीजा
 जे हरिहरादिक देवो ठे, तेनी न अइ. त्यां दृष्टાંત કહે
 ठે કે જેમ પ્રકર્ષે કરી હાણ્યો ઠે અંધકાર જેણે એવી
 સૂર્યની જેવી કાંતિ ઠે તેવી કાંતિ પ્રકાશિત થયેલા
 એવા ગ્રહોના સમૂહની ક્યાંથી હોય ? એટલે સર્વ
 આ પ્રકારે નજ હોય. એટલે આઠ મહા પ્રાતિહાર્ય ત
 યા ચોત્રીસ અતિશયવાલી તમारी સમૃદ્ધિ જેવી હરિ
 હરાદિક દેવોની સમૃદ્ધિ ક્યાંથી હોય ? કારણકે તે સ
 રાગી ઠે અને તેમનાં કર્મ ક્ષય થયાં નથી અને તમારાં
 ધાતીઆં કર્મક્ષય ગયાં ઠે તેથી ઉત્તમોત્તમતાના પ્રજ્ઞા
 વથી પ્રાતિહાર્યાદિક સમૃદ્ધિ પ્રાપ્ત અઈ ઠે ॥ ૩૩ ॥

શ્ચ્યોતન્મદાવિલવિલોલ કેળ હે નાથ ! ઝરતા
 મદે કરી કલુષ થયેલા અને ચંચલ એવા ગંડસ્થલના
 પ્રદેશે કરી મદોન્મત્ત થયેલો એવો અને અહીં તહીં ઝ્રમ
 ણ કરનારા એવા જમરાનના ઝંકાર શબ્દે કરીને વૃદ્ધિ

(५५०)

पाम्यो ठे क्रोध जेनो एवो, अने औरावण हाथीना सर
खी कांति ठे जेनी एवो, अने अंकुशादिक शस्त्रोने
नहीं गणतो एवो जे हाथी तेने सन्मुख आवता एवा
जे जोइने तमारा आश्रय करीने रहेला एवा (प्रक्त)
जनोने ज्ञय नथी अतुं ॥ ३४ ॥

जिन्नेजकुंज के० जेदन करेला एवा हाथीना कुं
जस्थल अकी नीचे परुया एवा उज्ज्वल वर्णयुक्त ए
वा लोहीथी खरमाएला मोतीना समूहे करी शोभा
व्यो ठे पृथ्वीनो ज्ञाय जेणे तथा कीलित ठे पग जेना
एवो हरिणोनो अधिप जे सिंह ते पण तमारा चरण
युगरूप पर्वत तेने आश्रय करीने रह्यो एवो पुरुष जो
ते सिंहनी फाल तेने विषे प्राप्त अएलो होय, तोपण ते
ने ते सिंह प्रहार करवाने दोस्तो नथी; एटले हे प्रभु!
तमारा आश्रित जनोने पूर्वे कहेलो एवो सिंह पण प
राज्यव करतो नथी ॥ ३५ ॥

गाथा ३६ थी ४० सुधीना तुटा शब्दना अर्थ

वन्धि-आग्ने
कल्प-सरखो
ज्वलित-सलगेलुं

उत्फुल्लिगं-उंचा ग
या छे तणखा जेना
जिघत्सु-खाइ जवा

नी इच्छावा
संमुख-सन्मुख
आपतंत-अ

शमयाति-शांति करेछे
रक्तेक्षणं-राती आं
खवालुं

समद-मंदोन्मत्त
नीलं-कालुं, श्याम.
फणिनं-सर्प

उत्फणं-उंची फणा
वालो

आक्रामति-उल्लंघन
करेछे

निरस्तशंक-शंका र-
हित

नागदमनी-औषधीछे

हृदि-हृदयमां

पुंसः-पुरुषना

वल्गव-युद्ध करता

तुरंग-घोडा

गर्जित-गर्जनाए

आजौ-संग्राममां

वलं-सैन्य

वलवतां-वलवान्

भूपंतीनां-राजानां

दीवाकर-सूर्य

अपविद्धं-भेदाएलुं

कीर्त्तनात्-कीर्त्तनथी

आशु-उतावले

भिदां-भेदनने

वाह-प्रवाह

वेगावतार-उतावले

तरण-तरवाने

योध-सुभट

युद्धे-संग्राममां

विजित-जीत्या

जेयपक्षा-शत्रुनां वर्ग

लभंते-प्राप्ते छे

अंभोनिधौ-समुद्रमां

पाठीनपीठ-मच्छवि-

शेष

भयद-भय करनारो

उलवण-मोटो, भारे

वाडवाग्नौ-वडवानल

रंगत्-उछलता[जेमनां

यानपात्राः-वहाण छे

त्रासं-भयने

विहाय-त्याग करीने

व्रजंति-पामे छे

कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्फुल्लिं
गम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमुख
मापतंतं, त्वन्नामकीर्त्तनं जलं शम

(५५२)

यत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं सम
दकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं
फणिनमुत्फणमापतंतं ॥ आक्राम
ति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नाम
नागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥
वल्गुत्तुरंगगजगर्जितज्जीमनाद, मा
जौ बलं बलवतामपि जूपतीनां ॥
उद्यद्दिवाकर मयूखशिखापविधं,
त्वत्कीर्तनात्तमश्वाशु त्रिदामुपैति
॥ ३८ ॥ कुंताग्रन्निन्नगजशोणित
वारिवाह, वेगावतारतरणातुरयोध
ज्जीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजे
यपक्षा, स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो
लज्जन्ते ॥ ३९ ॥ अञ्जोनिधौ हु
न्निजन्नीषण नक्रचक्र, पाठीनपीठ

જયદોહવણવામ્વામૌ ॥ રંગતરંગ
શિશ્વર સ્થિતયાનપાત્રા, સ્વાસં વિ
હાય જ્વતઃ સ્મરણાદ્વ્રજંતિ ॥૪૦॥

અર્થ:-કલ્પાંતકાલ પવનોદ્ધત કેળ પ્રલયકાલનો જે
વાયરો તેની સહાયતાથી જોરમાં આવી ગયેલો એવો
જે અગ્નિ તેના જેવો, અને જાણ્વલ્લયમાન થયેલો, ઝૂજ
લો, અને ઝૂંચા ગયા છે તણાવા જેના એવો, તથા સઘલા
જગત્ત્રને ગલી જવાની જાણે ઇચ્છા કરતો હોય નહીં એ
વો, જે વનમાં લાગેલો અગ્નિ તે અચાનક સામો આવી
પ્રાપ્ત થયો તેને, તમારા નામનું કિર્તનરૂપ પાણી તે નિ
રવશેષ એવા અગ્નિને શાંત કરી મૂકે છે ॥ ૩૬ ॥

રક્તેક્ષણં સમદ કેળ રાતાં છે નેત્ર જેનાં એવો અ
ને મદોન્મત્ત એવો તથા કોયલના કંઠ જેવો કાલા રં
ગવાલો અને ક્રોધે કરીને ઝુલ્લત થયેલો તથા ઝૂંચી કં
રી છે પણ જેણે એવો જે સર્પ તે ઝૂતાવલો સામો આ
વતો હોય તેને પણ શંકારહિત થયો થકો પોતાના ચ
રણ યુગલે કરીને ઝલ્લંઘન કરે છે તે કયો પુરુષ ઝલ્લંઘ
ન કરે છે ? તો કે જે પુરુષના હૃદયને વિષે તમારા ના

મરૂપ જે નાગદમની નામે ઔષધી છે, તે ઔષધીએ
કરીને ઝગ્ર સર્પના ઝયથી પણ નિઃશંક થાય છે ॥ ૩૭ ॥

વલ્ગચુરંગ ગજગર્જિત કેળું સંગ્રામને વિષે યુદ્ધક
રતા એવા ઘોમ્મા જેને વિષે દોમ્મી રહ્યા છે, અને હાથી
ની ગર્જનાએ કરી ઝયંકર શબ્દો છે જેને વિષે એવું, અ
તિશય બલવાન રાજાનું તેનું પણ સૈન્ય તે, તમારા કી
ર્તનથી શીઘ્ર (ઝતાવલે) જેદનને પામે છે એટલે તરત
નાશી જાય છે. તે કોની પેઠે ? તો કે ઝગતા સૂર્યનાં
કિરણોની શિખાએ કરીને જેદન પામેલો એવો અંધકા
રજ જેમ હોય નહીં અર્થાત્ જેમ સૂર્યના કિરણોથી અં
ધકાર નાશ પામે છે તેમ તમારા નામના પ્રજાવથી
સંગ્રામમાં શત્રુનું સૈન્ય નાશી જાય છે ॥ ૩૮ ॥

કુંતાગ્રજિન્ન કેળું વરઘીની અણીથી જેદેલા એવા
હાથીના લોહીરૂપ જલના પ્રવાહને વિષે ઝતાવલું પ્રવે
શ થવું એટલે તે રુધિરરૂપ પાણીમાં તણાઈ જવાને તે
યાર થએલા તેમાંથી ફરી પાઠા તરી નીકલવાને આ
તુર થએલા એવા જે સુઝટો તેણે કરીને ઝયંકર દેખા
વું યુદ્ધતેને વિષે પણ તમારાં ચરણારવિંદ તે રૂપ

जे कमलवन तेने आश्रय करीने रहेला पुरुषो, ते न
हीं जीताय एवा जे शत्रुना वर्गो ते जेमणे जीत्या ठे
एवा ठता जयने पामे ठे ॥ ३९ ॥

अंजोनिधौ कुजित के० होज पमारुया ठे महा
जयंकर एवा नक्रचक्र अने पाठीनपीठ एटले मत्स्य
विशेष जीव जेने विषे एवा तथा जय उत्पन्न करना
रो एवो जयंकर ठे वरुवानल अग्नि जेने विषे एवा स
मुझे विषे उबलता एवा तरंगो तेना शृंगोनी उपर
रह्युं ठे वहाण जेमनुं एवा पुरुषो जे ठे ते तमारा स्म
रणथी त्रासने त्याग करीने समुझपारने पामे ठे एटले
इहेला द्वीपने विषे पहोंचे ठे ॥ ४० ॥

गाथा ४१ थी ४४ सुधी ठुटा शब्दना अर्थ.

मुग्धाः-वांका
शोच्यां-शोचनीय
दशां-दशाने
उपगताः-प्राप्त थया
च्युत-छोडी छे
जीवित-जीववानी
दिग्ध-लेपाएलुं

मर्त्या-माणसो
मकरध्वज-कामदेव
आपाद कंठं-पगथी
गला सुधी
वेष्टित-वीटाएलुं
गाढं-अत्यंत
वृहत्-मोटी

निगड-वेडी
कोटि-झीणी अणी
निवृष्ट-घसाएली
जंघा-जंघाओ
अनिशं-निरंतर
द्विपेद्र-मोहोदो हाथी
मृगराज-सिंह

अहि-सर्प	मतिमान्-बुद्धिमान	कंठगतां-कंठमां र
महोदर-जलोदर	अधीते-भण्णे छे	हेली
उत्थं-उपन्युं	सजं-माला	अजस्रं-निरंतर
भिया-बीके करीने	मया-हुं जे तेणे	मानतुंगम्-मानतुंगने,
तावकं-तमारुं	रुचिर-मनोहर	उंचा मानने
इमं-आ	वर्ण-अक्षर, रंग	अवशा-स्वतंत्र

उद्धूतनीषणजलोदरजारनुग्राः,
 शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविता
 शाः ॥ त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्ध
 देहा, मर्त्या ज्वंति मकरध्वज तु
 द्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठमु
 रुशंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निग
 म् कोटिनिघृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्र
 मनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्व
 यं विगतबंधज्ञया ज्वंति ॥ ४२ ॥
 मत्तद्विपेक्षमृगराजदवानलाहि, सं
 ग्रामवारिधिमहोदरबंधनोद्ध ॥ त

સ્યાશુ નાશમુપયાતિ જ્ઞયં જ્ઞિયેવ,
 યસ્તાવકં સ્તવમિમં મતિમાનધીતે
 ॥ ૪૩ ॥ સ્તોત્રસ્રજં તવ જિનેન્દ્ર
 ગુણેર્નિવદ્ધાં, જ્ઞત્તયામયારુચિરવાણ
 વિચિત્રપુષ્પાં ॥ ધત્તે જનો ય હ્ર
 કંઠગતામજસ્રં, તં માનહુંગમવશા
 સમુપૈતિ લક્ષ્મીઃ ॥ ૪૪ ॥ ઇતિ॥

અર્થ:-નજૂત જીવણ જલોદર કેળ હે જગન્નાથ! ઉત્પ
 ન્ન થયા એવા, જ્ઞયંકર જલોદર રોગના ખારે કરીને વાં
 કા થયા એવા અને જીવવાની આશા જેમણે ઢોમી ઢે
 એવા, અને શોક કરવા યોગ્ય એવી દશાને પ્રાપ્ત થયા
 એવા, મનુષ્યો તમારાં ચરણકમલનું જે રજતે રૂપ અમૃ
 તે કરી સ્વરૂપાણાં ઢે અંગ જેમનાં એવા ઠતા
 કામદેવ સમાન ઢે રૂપ જેમનું એવા થાય ઢે ॥ ૪૧ ॥

આપાદકંઠમુરુશૃંગલ કેળ હે કર્મબંધનરહિત !
 જેના પગથી માંમી ગલા સુધી મોટી શૃંગલાનું (સાં
 કલોણ) કરી નિવહ (વીંટાણાં) ઢે સર્વ અંગો જેમનાં

એવા અને અત્યંત મોટી વેમીયો તેની કોટિયો જે ઝી
 લી અણીયો તેણે કરીને નિઃશેષપણાએ ઘસાતી છે જં
 ઘાનું જેમની એવા હુઃખિત અથેલા પુરુષો ઠતાં, તમારા
 નામરૂપ મંત્રને રાત્ર દિવસ સ્મરણ કરતા એવા મનુષ્યો
 તે તરત પોતાની મેલે વિશેષે કરીને ગયું છે વંધન જ
 ય જેમનું એવા આવે છે ॥ ૪૨ ॥

મત્તલ્પિંડમૃગરાજ કેળ હે પ્રજ્ઞો ! જે બુદ્ધિમાન
 પુરુષ તમારા આ સ્તવનને જાણે છે તે પુરુષને મદોન્મ
 ત્ત એવા અહાન હસ્તી અને સિંહ, તથા વનાશ્વિ, તથા
 સર્પ, અને સંગ્રામ, તથા સસુહ, તથા જલોદરાદિરોગ,
 અને વંધીલાનું એ આઠવાનાં થકી નુત્પન્ન થાણું એવું
 જે જાય તે બીકે કરીનેજ જેમ હોય નહીં ? તેમ ન
 તાવણું નાશને પામે છે. અર્થાત્ આ તમારા સ્તોત્રના
 પાઠ કરનારને પૂર્વોક્ત આઠ પ્રકારના જાયનો નાશ
 આવે છે ॥ ૪૩ ॥

સ્તોત્રસ્રજં તવ કેળ હે જિનેંડ ! તમારી આ લો
 કને વિષે જે પુરુષ, સ્તોત્રરૂપ ફુલની માલાને પોતા
 ના કંઠને વિષે નિરંતર ધારણ કરે છે તે ચિત્તની ઉન્ન

(૫૫૯)

તિણ કરીને અત્યંત ઉન્નત થણો એવો પુરુષ અથવા
સ્તોત્રના કર્તાશ્રી માનતુંગાચાર્ય છે તે અસ્વતંત્ર એવી
જે સ્વર્ગાપવર્ગ અને સત્કાવ્યરૂપ (મોક્ષ) લક્ષ્મીને
પામે છે. હવે તે સ્તોત્રરૂપ માલા કેવી છે ? તોકે માન
તુંગાચાર્ય નામક એવો હું જે તેણે જ્ઞાતિ જે શ્રદ્ધા, અથ
વા પુષ્પમાલા પદ્ધતિ જે વિચિત્ર રચના તેણે કરી
ને અને પ્રજ્ઞના ગુણે કરીને અથવા પુષ્પમાલા પદ્ધતિ
જે સૂત્ર તેણે કરીને બાંધેલી છે, ગુંથેલી છે. વલી
કેવી છે ? તોકે મનોહર એવા બાબન અક્ષર તેજ છે ચિ
ત્ર વિચિત્ર પુષ્પો જેને વિષે, અને પુષ્પમાલા પદ્ધતિમાં
મનોહર છે વર્ણ જેનાં એવાં વિચિત્ર પુષ્પો છે જેમાં એવી
છે ॥ ઇતિ જ્ઞાતામર સ્તોત્ર ॥

॥ અથ શ્રી કલ્યાણ મંદિર ॥

॥ ગાથા ૧ થી ૫ સુધીના તુટાશબ્દના અર્થ ॥

મંદિર-ઘર
ઉદાર-મોટું, ઉદાર
અવચ-પાપ
મેદિ-મેદમારું

ભીત-ભય પામેલા
પદ-આપનારું
અનિદિત-નહીંનિદા
છલું

નિમજ્જત-બૂડતા
અશેષ-સમસ્ત
પોતાયમાન-વહાણ
જેવું

अभिनम्य-नमस्कार
करीने

जिनेश्वरस्य-जिनेश्व
रना

गरिमा-महिमा

अंबुराशेः-समुद्रतुं

सु-अतिशय

विस्तृत-विस्तार पा
मेली

विभुः-समर्थ शक्ति
वान

विधातुं-करवाने

तीर्थेश्वरस्य-तीर्थकरतुं

स्मय-अहंकार

धूमकेतोः-पूछडीआ
तारानुं

किल-निश्चे

करिष्ये-करीश

वर्णयितुं-वर्णन कर
वाने

अस्मादृशा-अमारा
जेवा

कथं-केम

अधीश-हे स्वामी !

अधीशाः-समर्थ

घृष्ट-धीठो

कौशिक-घूड

शिशुः-बालक

यदिवा-जो पण

दिवांधो-दिवसे आं
धलो

प्ररूपयति-कहे

घर्मरश्मेः-सूर्यना

क्षयात्-क्षयथी

अनुभवं-अनुभववालो

मर्त्यः-मनुष्य

नूनं-निश्चे

गणयितुं-गणवाने

क्षमेत-समर्थ थाय

वांत-वमेलुं

पयस-जल

प्रकटो-प्रगट

यस्मात्-जे माटे

मीयेत-मापी शकाय

केन-कोना वडे

जलधेः-समुद्रतुं

ननु-आशंकाने विपे

राशिः-ढगलो

अभ्युद्यतः-उद्यमवालो,
सावधान

अस्मि-हुंहुं

जड-मूरख

आशय-अभिप्राय

लसत्-देदीप्यमान

आकरस्य-खाणतुं

वितत्य-विस्तारीने

स्वधिया-पोतानी तु
द्विये

(५६१)

॥ अथश्री कल्याणमंदिर ॥

॥ वसंत तिलकावृतम् ॥

कल्याणमंदिरमुदारमवद्यजेदि, न्री

ताज्ञयप्रदमनिंदितमंघ्रिपद्मं ॥ सं

सारसागरनिमज्जदशेषजंतु, पोता

यमानमज्जिनस्य जिनेश्वरस्य ॥१॥

यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः,

स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विन्नुर्विधा

तुं ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूम

केतो, स्तस्याहमेष किल संस्तव

नं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सा

मान्यतोऽपि तत्र वर्णयितुं स्वरू

प, मस्मादृशाः कथमधीश ज्ञवं

त्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशि

शुर्यदिवा दिवांधो, रूपं प्ररूपय

ति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥

मोहक्षयादनुन्नवन्नपि नाथ मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमे
त ॥ कल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽ
पि यस्मा, न्मीयेत केन जलधेर्न
नु रत्नराशिः ॥४॥ अग्न्युद्यतोऽस्मि
तव नाथ जमाशयोऽपि, कर्तुं स्तवं
लसदसंख्यगुणाकरस्य ॥ वालोऽपि
किं न निजबाहुयुगं वितत्य, विस्ती
र्णातां कथयति स्वधियांबुराशेः ॥५॥

अर्थः—कल्याणमंदिरमुदारमवद्यजेदि केण आ प्र
त्यह मूर्ख एवो हुं सिद्धसेन दिवाकर नामा आचार्यते
श्री पार्श्वनाथ एवा, तीर्थ जे चतुर्विध संघ तेना ईश्वरनुं
निश्चे स्तवन करीश. हवे ते श्रीपार्श्वनाथ तीर्थेश्वर के
वा ठे ? तो के कसठनामा दैत्यना अहंकारनो नाश
करवाने विषे पूंठमीआ तारा सरखा ठे, बली केवा ठे ?

(૫૬૩)

તો કે વિસ્તાર પામી છે બુદ્ધિ જેની એવો વૃદ્ધસ્પતિ પોતે
પણ જે શ્રીપાર્શ્વનાથના મહિમાના સમુદ્ધનું જે સ્તવન
તેને કરવાને સમર્થ થતો નથી. તો હું ક્યાંથી પ્રાપ્ત ! ત
આપિ સ્તવના કરું; તે શું કરીને સ્તવના કરું ? તો
કે તે શ્રી જિનેશ્વરના ચરણકમલને નમસ્કાર કરીને
સ્તવના કરું. હવે તે ચરણકમલ કેવું છે ? તો કે માં
ગલિકનું ઘર છે, તથા નદાર કેળ મોટું છે અથવા નદા
ર કેળ જવ્ય જીવોના મનોવાંચિત અર્થ દેવાને નદાર
છે, તથા અસત્ય જે પાપ તેને નેદનારું છે. વલી સંસાર
જયે ત્રાસ પામતા જીવોને પ્રકર્ષે કરી મોક્ષને દેનારું
છે, તથા નિંદારહિત છે, તથા સંસારરૂપ સમુદ્ધને વિષે
વૃન્તા સઘલા પ્રાણીનું વાહાણ સરખું એવું શ્રીજિને
શ્વરનું ચરણકમલ છે. આ બે શ્લોકનો અર્થ એકઠો છે ? ૧૧

સામાન્યતોઽપિ કેળે સ્વામિન્ ! અમારા
સરસ્વા મંદ બુદ્ધિવાલા પુરુષો જે છે તે સામાન્યપણે પ
ણ તમારા સ્વરૂપને વર્ણન કરવાને કેમ સમર્થ થાય ?
અર્થાત્ થતા નથી. ત્યાં દૃષ્ટાંત કહે છે. જેમ કે:- જો પણ
ધૂમનો બાલક સૂર્યના સ્વરૂપને સ્વરેશ્વર શું કહી શકે ?
અર્થાત્ નથી કહી શકતો. હવે તે ધૂમનો બાલક

ક કેવો છે, તોંકે દૃઢ હૃદય પણાયે કરીને પ્રગલ્ભ છે તો
પણ દિવસને વિષે અંધ છે ॥ ૩ ॥

મોહકયાદનુજવન્નપિ કેળ હે નાથ ! મોહનીયાદિ
ક કર્મના કૃપ થકી તમારા ગુણોને અનુજવ કરતો
ઠાણે જાણતો હતો પણ મનુષ્ય અર્થાત્ કેવલી જે છે તે
નિશ્ચે તમારા ગુણોને ગણવાને સમર્થ ન થાય, ત્યાં દૃષ્ટાંત
કહે છે, જે માટે પ્રલય કાલને વિષે વિક્ષિપ્ત થયું છે જ
લ જેને વિષે એવો સમુદ્ર જે છે તેનો પ્રત્યક્ષ એવો પણ
રત્નનો સમૂહ છે, નનુ એ આશંકાને વિષે, કોણ પુરુષે
માપી શકાય ? અર્થાત્ કોશ્ચી પણ પ્રમાણ કરી શ
કાય નહીં ॥ ૪ ॥

અન્યુચ્યતોસ્મિ તવ નાથ કેળ હે નાથ ! હું જન
અંતઃકરણવાલો હું, તો પણ તમારું સ્તવન જે છે તેને
કરવાને યથમવંત થયો હું, ઠાણે સાવધાન થયો હું
તે તમે કેવા છો ? તોંકે દેદીપ્યમાન એવા અનંત ગુ
ણોના નિધાન રૂપ છો, તેજ અર્થ દૃષ્ટાંતે કરી દૃઢ કરે
છે; જેમકે બાલક પણ પોતાનાં હાથને વિસ્તારીને પો
તાની બુદ્ધિયે કરીને સમુદ્રની વિસ્તારતા જે છે તેને શું
કેહતો ? અર્થાત્ કહે છે જ. ॥ ૫ ॥

गाथा ६ थी १० सुधी तुटा शब्दना अर्थ.

योगिनां-योगीओने	सरसः-ठंडा पाणीना	स्फुरित-देदिप्यमान
यांति-जाय छे	कणीआवालो	तेजसि-तेज वालो
अवकाशः-बोलवानी	अनिलो-वायरो	दृष्टमात्रे-जोवाये
शक्ति	हृद्गर्त्तनि-हृदयमां व	चौरैः-चोरोथी
जाता-थइ	तत्ते छते	पशवः-पशुओ
असमीक्षित-अविचारी	त्वयि-तमे	पलायमानैः-नासता
कारिता-काम	शिथिली-शिथिल	तारकः-तारक
जल्पंति-बोल छे	जंतोः-प्राणीना	भविनां-भवीओनां
पक्षिणो-पक्षियो	क्षणेन-क्षणमात्रे	त एव-तेओज
पाति-रक्षण करे छे	निविडा-दृढ	त्वां-तमोने
भवतः-तमारु	बंधाः-बंध	उद्वहंति-वहन करेछे
भवतः-संसारथी	भुजंगममया-साप म	उत्तरंतः-उतरता.
जगंति-त्रण जगतने	य एवा	यद्वा-युक्त छे
तीव्र-आकरो	अभ्यागते-आवे छते	दृतिः-मसक
आतप-तडको	शिखंडिनि-मयूर	तरति-तरे छे
उपहत-हणाणा	चंदनस्य-चंदनना	अंतर्गतस्य-अंदर
पांथ-पंथी	मुच्यंत-मुकाइ जाय	रहेला
निदाघे-ग्रीष्मकालमां	रौद्रैः-भयानक वडे	मरुतः-पवननो
प्रीणाति-खुशी करेछे	शतैः-सैंकडो वडे	अनुभावः-प्रभाव
पद्म-पद्म	वीक्षिते-जोये छते	
सरसः-सरोवरनो	गो-किरणो, पृथ्वी	

(५६६)

ये योगिनामपि न यांति गुणास्त
वेश, वक्तुं कथं ज्ञवति तेषु ममाव
काशः ॥ जाता तदेवमसमीक्षित
कारितेयं, जलपंति वा निजगिरा
ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्ता
मचिंत्यमहिमा जिन संस्तवस्ते, ना
मापि पाति ज्ञवतो ज्ञवतो जगंति
॥ तीव्रातपोपहतपांथजनान्निदाघे,
प्रीणाति पद्मसरसः सरसोनिहोऽ
पि ॥ ७ ॥ हृद्वर्त्तिनि त्वयि विज्ञो
शिथिलीज्वंति, जंतोः क्षणेन नि
विम्ना अपि कर्मबंधाः ॥ सद्यो नु
जंगममया इव मध्यन्ताग, मच्या
गते वनशिखंमिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥
मुच्यंत एव मनुजाः सहसा जिनैश्च,

(५६७)

रौडैरुपडवशतैस्त्वयि वीक्षितेपि॥
 गोस्वामिनि स्फुरितेतजसि दृष्ट
 मात्रे, चौरैश्वाशु पशवः प्रपलाय
 मानैः॥ ए॥ त्वं तारको जिन क
 यं जविनां त एव, त्वामुद्धंति इ
 दयेन यदुत्तरंतः॥यच्चा दृतिस्तरति
 यज्जल्लमेष नून, मंतर्गतस्य मरुतः
 स किंलानुजावः ॥ १० ॥

ये योगिनामपि के० हे स्वामिन् ! जे तमारा गु
 णो ठे ते योगीजने पण कहेवामां आवी शकता नथी तो
 ते गुणोने विषे महारी बोलवानी शक्ति केम होय ?
 ते कारण माटे ए प्रकारे आ अविचार्युं काम अयुं
 केमके अनवकाशने विषे जे स्तुति करवी ते
 अविचार्युं काम कहेवाय. अहीं दृष्टांत कहे ठे, अथ
 वा निश्चे पक्षियो पण यद्यपि मनुष्य वाणीए करी
 बोलवाने असमर्थ ठे, तो पण पोतानी वाणीयें करीने
 नथी बोलता शुं ? अर्थात् बोलैज ठे, तेम हुं पण स्तु

તિ કરવાને પ્રવચ્ચો હું ॥ ૬ ॥

આસ્તામચિંત્યમહિમા કેળ હે જિનેશ્વર ! નથી
ચિંતન કરવા યોગ્ય મહિમા જેનો એવો તમારો સ્તવ
જે છે તે તો દૂર રહો ! પરંતુ તમારું નામ પણ સંસાર
થકી ત્રણ જગતને રક્ષણ કરે છે. ત્યાં દૃષ્ટાંત કહે છે કે
પદ્મ સરોવરનું જે પાણી તે તો દૂર રહો, પરંતુ તેનો
સુંદર ઠંડા પાણીના કણીઆવાલો એવો વાયરો પણ ન
નાલાને વિષે આકરા એવા તમ્બાકુ કરીને ફાળાણા
એવા પંથી જનોને સંતોષિત કરે છે. ॥ ૭ ॥

હૃદ્ધર્ત્તિનિ ત્વયિ કેળ હે સ્વામિનૂ ! તમો હૃદયને
વિષે વર્તે છે તે પ્રાણીના દૃઢ એવા કર્મના બંધ પણ
રક્ષણમાત્રે કરીને શિથિલ થઈ જાય છે. અહીં દૃષ્ટાંત ક
હે છે:—જેમકે વનનો મોર તે વનના મધ્યભાગ પ્રત્યે
આવે છે તે ચંદનનાં ઝામનાં જે સર્પમય બંધન જે છે તે
જ જેમ તત્કાલ શિથિલ થઈ જાય છે તેની પેરે તમે
પણ પ્રાણીના હૃદય મધ્યે આવે છે તેનાં દૃઢ કર્મબંધ પણ
શિથિલ થઈ જાય છે ॥ ૮ ॥

મુચ્યંત એવ મનુજાઃ કેળ હે જિનેન્દ્ર ! તમને જો

(५६ए)

ये ठते पण मनुष्य शीघ्रपणे (उतावले) बीहामणा
एवा उपडवना सेंकमाथी मुकाइ जाय ठेज. अहीं दृष्टां
त कहे ठे:—जेमके देदीप्यमान तेज ठे जेनुं एवो गो
के० किरणो तेनो स्वामी जे सूर्य अथवा गो के० पृथ्वी
तेनो स्वामी जे राजा अथवा गो के० पशुनु तेनो स्वा
मी जे गोवालीनु ते पण स्फुरित ठे तेज जेनुं एवो ठे,
एवा ए त्रण जण ते दृष्टमात्रे एटले जोवाए थके नासता
एवा चोरोथी जेम पशुनु उतावलथी मूकाय ठे तेम
जीवो पण तेमो जोवाये थके सेंकसो उपडवोथी मू
काय ठे ॥ ए ॥

त्वं तारकोजिन कथं के० हे जिनेश्वर ! तमे सं
सारी जीवोना केम तारक ठे ? जे कारण माटे जल
टा ते संसारी जीवोज संसार समुड्ने उतरता उता
हृदये करीने तेमोने वहन करे ठे. कारण के वाह्य वा
हकमां वाह्यने तारकपणानो असंज्ञव ठे; जेम वहा
ए ठे ते पोताना मध्यमां रहेला पुरुषने तारे ठे परंतु
पुरुषो वाहाणने तारता नथी तेम ज्ञव्य जीवो पण त
मने पोताना हृदयमां राखीने तारे ठे, परंतु तमे तेज

તિ કરવાને પ્રવચ્ચો હું ॥ ૬ ॥

આસ્તામચિંત્યમહિમા કેળ હે જિનેશ્વર ! નથી
ચિંતન કરવા યોગ્ય મહિમા જેનો એવો તમારો સ્તવ
જે છે તે તો દૂર રહો ! પરંતુ તમારું નામ પણ સંસાર
થકી ત્રણ જગતને રક્ષણ કરે છે. ત્યાં દૃષ્ટાંત કહે છે કે
પદ્મ સરોવરનું જે પાણી તે તો દૂર રહો, પરંતુ તેનો
સુંદર ઠંડા પાણીના કણીઆવાલો એવો વાયરો પણ ન
નાલાને વિષે આકરા એવા તમકાદ કરીને હણાણા
એવા પંથી જનોને સંતોષિત કરે છે. ॥ ૭ ॥

હૃદ્વર્ત્તિનિ ત્વયિ કેળ હે સ્વામિન્ ! તમો હૃદયને
વિષે વર્ત્તે છે પ્રાણીના દૃઢ એવા કર્મના બંધ પણ
ક્ષણમાત્રે કરીને શિથિલ થઈ જાય છે. અહીં દૃષ્ટાંત ક
હે છે:—જેમકે વનનો મોર તે વનના મધ્યજાગ પ્રત્યે
આવે છે ચંદનનાં ઝામનાં જે સર્પમય બંધન જે છે તે
જ જેમ તત્કાલ શિથિલ થઈ જાય છે તેની પેરે તમે
પણ પ્રાણીના હૃદય મધ્યે આવે છે તેનાં દૃઢ કર્મબંધ પણ
શિથિલ થઈ જાય છે ॥ ૮ ॥

મુચ્ચંત એવ મનુજાઃ કેળ હે જિનેંડ ! તમને જો

(५६ए)

ये ठते पण मनुष्य शीघ्रपणे (उतावले) बीहामणा
एवा उपड्वना सेंकनाथी मुकाइ जाय ठेज. अहीं दृष्टां
त कहे ठे:—जेमके देदीप्यमान तेज ठे जेनुं एवो गो
केण किरणो तेनो स्वामी जे सूर्य अथवा गो के० पृथ्वी
तेनो स्वामी जे राजा अथवा गो केण पशुनु तेनो स्वा
मी जे गोवालीनु ते पण स्फुरित ठे तेज जेनुं एवो ठे,
एवा ए त्रण जण ते दृष्टमात्रे एटले जोवाए थके नासता
एवा चोरोथी जेम पशुनु उतावलथी मूकाय ठे तेम
जीवो पण तमो जोवाये थके सेंकनो उपड्वोथी मू
काय ठे ॥ ए ॥

त्वं तारकोजिन कथं केण हे जिनेश्वर ! तमे सं
सारी जीवोना केस तारक ठे ? जे कारण माटे जल
टा ते संसारी जीवोज संसार समुझे उतरता उता
हृदये करीने तमोने वहन करे ठे. कारण के वाह्य वा
हकमां वाह्यने तारकपणानो असंज्ञव ठे; जेम वहा
ण ठे ते पोताना मध्यमां रहेला पुरुषने तारे ठे परंतु
पुरुषो वाहाणने तारता नथी तेम ज्ञव्य जीवो पण त
मने पोताना हृदयमां राखीने तारे ठे, परंतु तमे तेज

વ્ય જીવોને તારો એ તો મોટું આશ્ચર્ય છે ! હવે આ તર્કનું
સમાધાન કરે છે. હે પ્રજ્ઞુ ! તમેજ જ્ઞવ્યજીવોને તારો
હો તે યુક્તજ છે. અહીં દૃષ્ટાંત કહે છે; જે કારણ માટે
જેમ ચામફાની મશક તે નિશ્ચય નદી વગેરેના પાણી
માં તરે છે તે આ અંદર રહેલા પવનનોજ સ્વરેસ્વર પ્રજ્ઞા
વ જાણવો, તેમ જ્ઞવ્યજીવોના હૃદયમાં તમે હો, માટે
તમેજ જ્ઞવ્યજનોના તારક હો એમાં કાંઈ આશ્ચર્ય નથી. ૧૦

ગાયા ૧૧ થી ૧૫ સુધીના તુટા શબ્દના અર્થ.

યસ્મિન્-જેમાં

હર-શિવ

પ્રભૃતયઃ-વગેરે

રતિપતિઃ-કામદેવ

ક્ષપિતઃ-ક્ષય પમાડ્યો

વિધ્યાપિતા-બુદ્ધાવ્યા

દુત્તમુજઃ-અગ્નિઓ

પયસા-પાણીવડે

પીતં-પીધું

દુર્દર-દુસ્તર

વાઢવેન-વડવાનલે

અનલ્પ-ઘણું

ગરિમાણં-મોહોટાઈને

પ્રપન્નાઃ-પામ્યા

જંતવઃ-પ્રાણીઓ

અહો-અરે

દધાના-ધારણ કરતા

જન્મોર્દાધિ-ભવસમુદ્ર

લઘુ-શીઘ્રપણે

તરંતિ-તરે છે

લાઘવેન-હલકાપણા

વહે

હંત-નિશ્ચે

મહતાં-મોટાનો

યદિવા-અથવા તો

નિરસ્તઃ-દૂર કર્યો

ધ્વસ્તાઃ-હણ્યા

વત-આશ્ચર્ય

ચૌરાઃ-ચોર

પ્લોષતિ-બાલે છે

અમુત્ર-આ લોકમાં

શિશિરા-શીતલ

નીલ-કાલા

दुमाणि-वृक्षवालां	रुचेः-कांतिवालानी	अनलात्-अग्निथकी
विपिनानि-वनो	अक्षस्य-कमलबीजनी	उपलभावं-पथ्यरप
हिमानी-बरफनो जथो	संभवि-संभवे	णाने
परमात्मरूप-सिद्धस्व	कर्णिकायाः-कर्णिका	अपास्य-त्यागकरीने
रूप	थी	चामीकरत्वं-सोनाप
अन्वेषयन्ति-खोले छे	ध्यानात्-ध्यानथी	णाने
अंबुज-कमल	भविनः-भव्यप्राणीओ	अचिरात्-थोडा व-
कोश-डोडो, कली	देहं-शरीरने	खतमां
देशे-मध्यभागमां	दशां-अवस्थाने	धातुभेदाः-भेगवाली
पूतस्य-पवित्र	व्रजन्ति-पामे छे	धातु

यस्मिन् हरप्रचृतयोऽपि हतप्रज्ञा
वाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः कृपि
तः कृणेन ॥ विध्यापिता हुतन्नु
जःपयसाथ येन, पीतं न किं तदपि
दुर्धरवाक्त्वेन ॥ ११ ॥ स्वामिन्नन
ल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना, स्त्वां जं
तवः कथमहो हृदये दधानाः॥ ज
न्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाधवेन,
चित्त्यो न हंत महतां यदि वा प्र

ज्ञावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि
 विज्ञो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा
 बत कथं किल कर्मचौराः॥प्लोष
 त्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके,
 नीलघुमाणि विपिनानि न किं
 हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो
 जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेषयं
 ति हृदयांबुजकोशदेशे ॥ पूतस्य
 निर्मलरूचेर्यदि वा किमन्य, दह
 स्य संज्ञवि पदं ननु कर्णिकायाः
 ॥ १४ ॥ ध्यानाज्जिनेश ज्ञवतो ज्ञ
 विनः क्षणेन, देहं विहाय परमा
 त्मदशां व्रजंति ॥ तीव्रानलाडुपल
 ज्ञावमपास्य लोके, चामीकरत्वम
 चिरादिव धातुज्ञेदाः ॥ १५ ॥

यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि केऽपि जे कामदेवने विषे

હરહરિ પ્રમુખ પણ, હણાણો છે પ્રજાવ જેમનો એવા
 થયા છે, તે કામદેવ પણ તમોયે ક્ષણમાત્રે કરીને ક
 ય પમાર્યો છે, ત્યાં દૃષ્ટાંત કહે છે જેમકે:--જે પાણી
 એ અગ્નિનું બુઝાવી દીધા, તે પાણી પણ હુસ્સહ વર
 વાનલે શું ન પીધું? અર્થાત્ પીધુંજ, એટલે અગ્નિનું બુઝા
 વનારું જલ વરવાનલે પીધું તેમજ જે હરિહરાદિકને
 જીતનાર કામદેવ તેને તમોએ જીત્યો છે. આ શ્લોક ક
 રવેશ્રી પાર્શ્વનાથની મૂર્તિ પ્રગટ અર તે સર્વત્ર પ્રસિદ્ધ છે. ૧૧

સ્વામિનનલપગરિમાણમપિ કેળ હે સ્વામિન્ ત
 મોને હૃદયને વિષે ધારણ કરતા શ્રદ્ધા અહો ઇતિ આ
 શ્ચર્યે! થોડા પણ જ્ઞારના અજ્ઞાવે કરીને જવ સમુદ્રને ઝ
 તાવલે જેમ હોય તેમ પ્રાણીનું કેમ તરે છે? એટલે ઘણા
 જ્ઞારે યુક્ત એવા તમોને હૃદયમાં ધારણ કરીને થોડા જ્ઞાર
 ની પેઠે સંસાર સમુદ્ર કેમ તરે છે? તોકે ઉત્તમ પુરુ
 ષોનો એ મહિમાજ છે, માટે તેમાં વિચારવા યોગ્ય કાં
 ઇ પણ નથી ॥ ૧૨ ॥

ક્રોધસ્ત્વયા યદિ કેળ હે સ્વામિન્ તમોયે જ્યારે ક્રોધ
 પ્રથમજ દૂર કીધો ત્યારે પઠી આશ્ચર્ય છે કે કિલ કેળ નિ

શ્વ કર્મરૂપ ચોરો કેવી રીતે હણ્યા ? તો તેના સમાધાનમાં
આ લોકમાં શીતલ એવા વરફનો સમૂહ નીલાં જાસ
વાલા વનને શું નથી બાલતો ? અર્થાત્ બાલે છે. તેમ
ક્રોધ રહિત એવા તમે પણ કર્મ ચોરોને હણો છો ॥૧૩॥

ત્વાં યોગિનો જિન સદા કેળ હે જિન ! મોટા રૂ
ષિનું જે છે તે હૃદયરૂપ જે કમલ તેની કલીના મધ્ય
જ્ઞાનમાં સિદ્ધ સ્વરૂપ એવા તમોને નિરંતર જ્ઞાન ચક્ર
એ કરીને જોવે છે, અથવા જેમ નિશ્ચે નિર્મલ છે કાંતિ
જેની એવું અને પવિત્ર એવું કમલનું બીજ જે છે, તેનું
કર્ણિકાથી બીજું એટલે કમલ મધ્ય પ્રદેશ ટાલીને
બીજું સ્થાનક શું સંજવે છે ? ના નથી સંજવતુ, ત્યારે
શું સંજવે છે ? તો કે કમલની કર્ણિકાજ સંજવે છે, તેમ
તમે પણ નિર્મલ રુચિયુક્ત તથા સકલ કર્મમલના
જવાથી પવિત્ર થાણા એવા છો, તેથી યોગિંદ્રના હૃદય
કમલની કર્ણિકાના વિષેજ તમારું રહેવું ધાય છે તે
યોગ્યજ છે. ॥ ૧૪ ॥

ધ્યાનાઝિનેશ કેળ હે જિનેશ ! જાવ્યપ્રાણીનું ત
મારા ધ્યાનથી એક ક્ષણમાત્રે કરીને શરીરને ત્યાગ

करीने सिद्धावस्थाने पामे ठे. ते जेमके लोकने विषे
 जेगवालुं सोनुं जे ठे ते प्रबल अग्निधी पाषाण जाव जे
 ठे तेने टालीने थोळा समयमां सुवर्णपणानेज जेम
 पामे ठे, तेम प्राणीयो जे ठे ते तमारा ध्यानधी देहने
 त्याग करीने सिद्धावस्थाने पामे ठे, एटले वीतरागनुं
 ध्यान करतो ठतो जीव वीतराग रूप आय ठे. जेम
 जमरीधी बीक पामती इयल ते तेना ध्यानधी जम
 री आय ठे. ॥ १५ ॥

गाथा १६ थी ५० सुधीना बुटा शब्दना अर्थ.

अंतः-हृदयमां	अयं-आ	परवादिनो-पर ती-
विभाव्यसे-विचारा-	ध्यातः-ध्यानकरायो	धिओ
ओछो	पानीयम्-पाणी	प्रपन्नाः-आश्रय क
नाशयसे-नाशकरोछो	अनुचित्यमानं-चित-	री रहेला, पाम्या.
मध्यविवर्त्तिनः-मध्य	न कराएलुं	काच कामलिभिः-
स्थ पुरुषनुं	नो-नहीं	कमलानारोगीओए
प्रक्षमयंति-उपक्षमा-	विकारं-विकारने	सितः-धोलो
वे छे	अपाकरोति-दूर क-	गृह्यते-ग्रहणकरायछे
हि-निश्चे	रेछे	विपर्ययेण-विपर्यास
अनुभावाः-प्रभाव	वीत-रहित	बडे, परावर्त्ते करीने
मनीषिभिः-पंडितोए	तमसं-अज्ञान	सविध-समीपना

अशोक-शोक रहित, आसोपालव	विवोधं-विकाश प- णाने	त्वद्गोचरे-तमारी समस्त
अभ्युद्गते-उदयपामे छते	अवाह-नीचुं बृंतं-बीटुं	सुमनसां-फुलोनां, भविजीवोनां
दिनपतौ-सूर्य स-साहित	विश्वक्-चारे तरफ अविरला-निरंतर	गच्छीत-जाय छे अथ एव-नीचेज
समहीरुहो-वृक्षोऽस हित	सुरपुष्पदृष्टिः-देवना फुलनी दृष्टि	बंधनानि-बंधन

अंतःसदैव जिन यस्य विज्ञाव्य
 से त्वं, ज्ञव्यैः कथं तदपि नाश
 यसे शरीरं ॥ एतत्स्वरूपमथ म
 ध्यविवर्तिनो हि, यद्विग्रहं प्रशम
 यंति महानुज्ञावाः ॥ १६ ॥ आ
 त्मा मनीषिज्जिरयं त्वदज्ञेदबुद्ध्या,
 ध्यातो जिनैश्च ज्ञवतीह ज्ञवत्प्र
 ज्ञावः ॥ पानीयमप्यमृतमित्यनुचिं
 त्यमानं, किं नाम नो विषविका

रमपाकरोति ॥ १७ ॥ त्वामेव वी
 ततमसं परवादिनोपि, नूनं विज्ञो !
 हरिहरादिधिया प्रपन्नाः ॥ किं
 काचकामलिज्जिरीश ! सितोपिशं
 खो, नो गृह्यते विविधवर्णविपर्य
 येण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये स
 विधानुज्जावा, दास्तां जनो ज्ञवति
 ते तरुरप्यशोकः ॥ अन्युद्गते
 दिनपतौ समहीरुहोपि, किंवा वि
 बोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥
 चित्रं विज्ञो ! कथमवाङ्मुखवृत्तमे
 व, विष्वक् पतत्यविरला सुरपु
 ष्पवृष्टिः ॥ त्वद्गोचरे सुमनसां य
 दि वा मुनीश, गच्छन्ति नूनमध एव
 हि बन्धनानि ॥ २० ॥

અર્થ:-અંતઃસદૈવજિન કેળ હે જિન ! જ્ઞવ્ય પ્રાણીન જે છે તેમણે દેહ તેના મધ્ય જાગ એટલે હૃદય ને વિષે નિરંતર તમો વિશેષે કરી ચિંતવન કરાનું છે તે પણ તે જ્ઞવ્યના શરીરને તમે કેમ નાશ કરો છો ? અર્થાત્ તે જ્ઞવ્યજીવોને મુક્તિ પમામીને શરીર રહિત કરો છો માટે જે સ્થાનમાં જ્ઞવ્ય જીવ તમને ચિંતવન કરે છે, તે સ્થાન તમારે નાશ કરવું ઘટે નહીં. તે નિરાકરણને અર્થે અહીં દૃષ્ટાંત કહે છે:-હવે આ મોટા પ્રજાવવાલા મધ્યસ્થ પુરુષોનું એવું સ્વરૂપ એટલે સ્વપ્નાવ છે કે, માંહો માંહે થતા ક્લેશને નુપશમાવે છે; તેમ તમે પણ શરીર અને જીવનો પરસ્પર વિગ્રહ ટાલવાને શરીરનો નાશ કરો છો, તે નિશ્ચે યુક્તજ છે ॥૧૬॥

આત્મા મનીષિનિરયં કેળ હે જિનૈંડ ! પંથિતો જે છે તેમણે આ જીવ તે તમારી સાથે અજોદ બુદ્ધિયે કરીને ધ્યાન કસ્યો હતો તમારા સરસ્વા મહિમાવાલો આ સંસારને વિષે થાય છે. અહીં દૃષ્ટાંત કહે છે જે મ કે:- (નામ શબ્દ કોમલ આમંત્રણમાં છે અથવા પ્રસિદ્ધ અર્થમાં છે.) પાણી જે છે તે પણ અમૃત છે એ

(५७ए)

प्रकारे चिंतन करयुं ठतुं अथवा मणिमंत्रादिके स्
स्कारित कर्युं ठतुं विषना विकारने शुं नथी दूर कर
तुं ? अर्थात् एवुं जल पण अमृत तुल्य यइने विष
विकारने टालेज ठे ॥ १७ ॥

त्वामेव वीततमसं केण हे स्वामिन् ! निश्चे अ
न्यदर्शनी (शैव, सांख्य, नैयायिकादिको) पण ब्र
ह्मा, विष्णु, महेश्वरादिकनी बुद्धि करी तमोनेज
आश्रय करी रहेला ठे, अर्थात् तेनु नामांतर परावर्ते
करीने तमारुंज आराधन करे ठे. ते तमो केवा ठे ?
तो के अज्ञान रहित ठो. अहीं दृष्टांत कहे ठे, जेम
के:-हे ईश ! कमलाना रोगवाला पुरुषोए धोलो एवो
शंख पण, लीला पीलादि विविध प्रकारना रंग परा
वर्ते करीने शुं नथी ग्रहण करातो ? अर्थात् कराय ठे,
तेम अन्य दर्शनीजुए पण तमे हरिहरादि एवी बुद्धि
करी आराधन करानु ठो ॥ १८ ॥

धर्मोपदेशसमये केण हे स्वामिन् ! धर्म दे-
शनाना वखते तमारा समीपना प्रज्ञावशी लोक जेठे
ते तो दूर रहो ! परंतु ऊरु पण शोक रहित आय ठे; अ

અવા જેમ સૂર્ય ઝગવાથી જામે કરી સહિત એવો પ
 ણ જીવલોક (સમસ્ત જગત) વિકાશપણાને શું ન
 પામે ? અર્થાત્ પામે છે; એટલે સૂર્યોદયથી એકલો લો
 કજ નિજાનો ત્યાગ કરીને વિબોધ પામે છે એટલું જ
 નહીં, પણ વનસ્પતિ પણ નિજાનો ત્યાગ કરી જાગૃત
 પણાને પામે છે, તેમ તમારા સમીપથી જામ પણ અ
 શોક થાય છે. એ રીતે પ્રથમ અશોકવૃક્ષનામા પ્રાતિ
 હાર્ય વર્ણવ્યો ॥ ૧૯ ॥

ચિત્રં વિજ્ઞો કથમવાહુ કે० હે સ્વામિન્ ! નિરં
 તર દેવતાનુએ કરેલી જે પુષ્પવૃષ્ટિ તે ચારે તરફ નીચું
 છે મુખ જેનું એવું જે બીટ (બંધન) તે જેમ હોય તે
 મજ કેમ આકાશ થકી ઝૂમિને વિષે પમે છે ? એ આ
 શ્ચર્ય છે; હવે એનું દૃષ્ટાંતે કરી સમાધાન કરે છે. અથવા
 હે મુનીશ ! તમો પ્રત્યક્ષ બતાં તમારા સમીપને વિષે
 શોજાયામાન છે મન જેમનાં એવા જીવ્યજનો તથા દે
 વતાનનાં બંધન તે નીચે જે કારણ માટે નીચે જ જાય
 છે, અર્થાત્ તમારા સમીપે સુમનસ્ જે ફુલ તેનાં બીટ
 જે બંધન તે અધોમુખ થાય છે અને સુમનસ જે જીવ્ય

જીવ તેનાં બાહ્ય અને અન્યંતર બંધન તે નીચાં જાય છે
 ઇટલે પાપ નાશ થાય છે. (આ સુરપુષ્પવૃષ્ટિ નામા
 બીજો પ્રાતિહાર્ય વર્ણવ્યો) ॥ ૨૦ ॥

ગાથા. ૨૧ થી ૨૫ સુધીના છુટા શબ્દના અર્થ.

સ્થાને-યુક્ત, ઠેકાણે	પુંગવાય-પ્રધાનને, શ્રે	લુપ્ત-લોપાળી છે
ગંભીર-ગંભીર	છુને	છદ-પાંદડા
સંભવાયા:-ઉપનેલી	ઉદ્ગતય:-ઉંચીગતિ	છાવિ:-છવી, કાંતિ
(ની)	વાલા	વભૂવ-થયો
પિયૂષતાં-અમૃતપણું	શ્યામં-શ્યામ	સાન્નિધ્યત:-સાન્નિધ્ય-
ગિર:-વાળીઓ	સ્થં-રહેલાને	થી
સમુદીરયાંતિ-કહેછે	આલોકયાંતિ-જોવેછે	નીરાગતાં-વૈરાગ્યતા
સંમદ-હર્ષ	રમસેન-ઉત્સુકપણાયે	અવધૂય-ત્યાગ કરીને
સંગ-સંયોગ	નદંતં-ગર્જના કરતો	ભજધ્વં-ભજો
તરસા-ઉતાવળે	ચામીકરાદ્રિ-મેરુપ	નિર્ઘૃતિપુરિ-મોક્ષપુરિ
સુદૂરં-અત્યંતપણે	ર્વત	સાર્થવાહમ્-સાર્થવા-
અવનમ્ય-નીચાનમીને	શિરસિ-શિખરમાં	હને
સમુત્પતંત:-ઉંચા ઉછ	નવ-નવા	નિવેદયાતિ-નિવેદન
લતા	અંબુવાહમ્-મેઘને	કરેછે
શુચય:-પવિત્ર	ઉદ્ગચ્છતા-ઉંચા જતા	નદન્-નાદ કરતું
નાતિં-નમસ્કારને	શિતિ-શ્યામ	અભિનમઃ-આકાશને
વિદધતે-કરેછે	મંદલેન-મંદલવહે	વ્યાપીને

(५८९)

स्थाने गङ्गीरहृदयोदधिसंज्ञवायाः,
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति॥
पीत्वा यतः परम संमद संगन्नाजो,
क्षव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वं
॥ ११ ॥ स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य
समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचयः सु
रचामरौघाः ॥ येऽस्मै नतिं विद
धते मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्धगतयः
खलु शुद्धजावाः ॥ १२ ॥ श्यामं
गङ्गीरगिरमुज्ज्वल हेम रत्न, सिं
हासनस्थमिह क्षव्यशिखंमनि
स्त्वां ॥ आलोकयन्ति रत्नसेन न
दन्तमुच्चै, श्यामीकराद्रिशिरसीव
नवांबुवाहम् ॥ १३ ॥ उज्ज्वलता त
व शितियुतिमंमलेन, लुप्तच्छदश्च

विरशोकतरुर्वज्रव ॥ सान्निध्यतो
 ऽपि यदि वा तव वीतराग, नीरा
 गतां व्रजति को न सचेतनोऽपि
 ॥ १४ ॥ ज्ञो ज्ञोः प्रमादमवधूय न
 जध्वमेन, मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रति
 सार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देव
 जगत्रयाय, मन्ये नदन्नजिननः सु
 रडुं डुजिस्ते ॥ १५ ॥

अर्थः--स्थाने गङ्गीरहृदयो के० हे स्वामिन् ! गं
 ग्गीर एवा हृदयरूप समुद्राणी नपनी एवी जे तमारी
 वाणी तेना अमृतपणाने श्रोतानु कहे ठे ते युक्तजबे
 कारण के अमृतनी उत्पत्ति तो समुद्र थकीज ठे अने
 आ वाणीरूप अमृतनी उत्पत्ति तो तमारा हृदयरूप
 समुद्र थकी आय ठे. हवे ए वाणीमां अमृतपणुं केम
 घटे ? ते कहे ठे, के जे कारण माटे दर्पना संयोगना
 नजनार एवा नव्य प्राणीनु जे ठे ते तमारी वाणीने पीने

ઇટલે આદરસહિત સાંજલીને ઉતાવલે પણ અજરામ
 રપણાને પામે છે. અર્થાત્ જેમ અમૃત પીનાર અજરામ
 આય છે, તેમ તમારી વાણી સાંજલવાથી પણ અજ
 રામરપણું આય છે, માટે તમારી વાણીને અમૃતપણું
 કહ્યું તે યુક્તજ છે. આ દિવ્યઘનિ નામા ત્રીજો પ્રાતિ
 હાર્ય વર્ણવ્યો ! ॥ ૨૭ ॥

સ્વામિન્ સુદૂરમવનમ્ય કેળહે સ્વામિન્ ! હું એમ મા
 નુંહું જે પવિત્ર એવા, દેવતાનું વીંજેલા ચામરોના સમૂહ તે
 અત્યંતપણે નીચા નમીને ફરી નુંચા ઉઠતતા ઠતાં આ પ્ર
 કારે કહે છે, કે જે મનુષ્યો આ પ્રત્યક્ષ મુનિનું વિષે
 પ્રધાન જે શ્રી પાર્શ્વનાથ સ્વામી તેમને નમસ્કારને કરે
 છે તે મનુષ્યો નિશ્ચે નુંચી ગતિ વાલા આય છે તથા શુદ્ધ
 જ્ઞાવવાલા થાય છે. અર્થાત્ ચામરો જાણે એમ કહે
 તા હોય નહીં કે અમે જગવાનની આગલ નીચા ન
 મીને નુંચા જણે ઢીએ તેમ તમે પણ જગવાનને નમ
 સ્કાર કરવાથી નુંચી ગતિને પામશો. આ ચામરનામા
 ચોથો પ્રાતિહાર્ય વર્ણવ્યો ॥ ૨૨ ॥

(६७५)

श्यामगंजीर के० हे स्वामिन् ! आ संसार के
त्रने विषे जव्यरूप मोर ठे ते आ समवसरणने विषे
तमोने निर्मल देदीप्यमान सुवर्ण तथा रत्ने मिश्रित
एवा सिंहासनने विषे बेठा अका अने श्यामवर्णवाला
अने गंजीरवाणीवाला तमोने उत्सुकपणाये करीने
जोवे ठे, ते केवी रीते जोवे ठे ? तो के मेरु पर्वतना
शिखरने विषे उंचे स्वरे करी शब्द करता एवा नवीन
मेघनेज जेम जोता होयनी. एटले मेरुपर्वतने ठेकाणे
सिंहासन जाणवुं अने मेघने स्थानके प्रज्जुनुं श्याम शरी
र जाणवुं तथा गर्जनाने ठेकाणे प्रज्जुनी वाणी जाणवी
आ सिंहासन नामा पांचमो प्रातिहार्य वर्णव्यो॥५३॥

उद्गच्छता तव के० हे स्वामिन् ! तमारु उंचुं
जातुं एटले प्रसरतुं एवुं श्याम प्रज्ञानुं जे मंमल अ
र्थात् ज्ञामंमले करी ठंकाणी ठे पानमानी ठवी एट
ले कांति अर्थात् रक्तता जेनी एवो अशोक वृक्ष ते हो
तो हवो. ते अर्थ युक्तज ठे केमके हे वीतराग ! तमा
रा सान्निध्यशी पण चेतना सहित जे होय ते पण

कोण वैराग्यने न पामे ? अर्थात् तमारा सान्निध्यशी
जीव अवश्य नीरागी आयज. आ ज्ञामंरुल नामा ठ
हो प्रातिहार्य वर्णव्यो ॥ २४ ॥

जो जो: प्रमादमवधूय के० हे देव ! हुं एम मानुं
हुं के तमारो देव हुंहुजि जे ठे ते आकाशने व्यापी
ने शब्द करतो थको त्रण जगतने आ प्रकारे निवेदन
करे ठे:-हे जगत्त्रयजनो ? तमे आलसने त्याग करी
ने आवीने ए जे पार्श्व प्रभु तेने नजो. ते केवा पार्श्व
प्रभु ? तो के मोक्ष पुरि प्रत्ये सार्थवाह समान ठे. अ
र्थात् ते देव हुंहुजि एम कहे ठे के तमे प्रमाद मूकीने
मोक्ष आपनार एवा श्री पार्श्व प्रभुने नजो. ॥१५॥

गाथा. ५६ थी ३० सुधीना लुटा शब्दना अर्थ.

उद्योतितेषु भुवनेषु--त्र

ण भुवन प्रकाशित

करे छते

तारान्वितः--तारामंड

ल सहित

विधुः--चंद्रमा

-आ

सुक्ता-मोती

उच्छ्वसित-उल्लसित

आतपत्र-छत्र

व्याजाव-मीशथी

त्रिधा-त्रण प्रकारे

धृत-धारण कर्युं छे

ध्रुवं-निश्चे

अभ्युपेतः--नजीक

आव्यो

स्वेन-पोतानां

पिंडितेन-पिंडीभूत य

इ रत्ना

यशसां-यशाना

संचयेन-संचय वदे

रजत-रुपुं
निर्मितेन-करेला
सालत्रयेण-त्रण गढ
वडे
अभितः-चारेपासे
दिव्यसृजः--मनोहर
मालाओ
नमत्-नमता
त्रिदशाधिपानां-इं-
द्रना
उत्सृज्य-छोडीने
मौलिवंधान्-मुकुटो
परत्र-बीजे ठेकाणे
सुमनसः-पंडित, दे-

वता.
रमंत-रमेछे.
तारयसि-तारोछो
असुमतः-प्राणीओने
लग्नान्-बलगेला
पार्थिव-माटीनुं, पृ-
थ्वीनो
निपस्य-घडाने, रा-
जाने
सतः-संत.
तवैव-तमारोज
विपाक-फल
शून्यः-रहित
दुर्गतः-दरिद्री, दुखे

जाणवा योग्य
अक्षर-मोक्ष, अक्षर
निश्चल
प्रकृति--स्वभाव
आलिपिः-लिपिरहित,
कर्मलेप रहित
अज्ञानवति--अज्ञान-
वाला
अज्ञान्-अजाणोने
अवति--बोधकरे छते.
कथंचित्-केमज
स्फुरति-स्फुरेछे

उद्योतितेषु ज्वता ज्वनेषु नाथ,
तारान्वितो विधुरयं विहताधिका
रः ॥ मुक्ताकलापकलितोद्धृति
तातपत्र, व्याजात्रिधा धृततनुर्ध्रुव
मन्युपेतः ॥ ५६ ॥ स्वेन प्रपूरित

(५८८)

जगन्नयपिर्मितेन, कांतिप्रतापयश
सामिव संचयेन ॥ माणिक्यहेम
रजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण न
गवन्नजितो विज्ञासि ॥ ५७ ॥ दि
व्यसृजो जिन! नमस्त्रिदशाधिपाना,
मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिवं
धान् ॥ पादौ श्रयंति नवतो यदि
वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमं
त एव ॥ ५८ ॥ त्वं नाथ! जन्मज
लधेर्विपराडमुखोपि, यत्तारयस्यसु
मतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्तं हि
पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं वि
जो यदसि कर्मविपाकशून्यः
॥ ५९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक
दुर्गतस्त्वं, किं बाह्यरप्रकृतिरप्यलि

પિસ્ત્વમીશ ॥ અજ્ઞાનવત્પિ સદૈ
વ કથંચિદેવ, જ્ઞાનં ત્વયિ સ્ફુરતિ
વિશ્વવિકાશહેતુઃ ॥ ૩૦ ॥

અર્થ—નયોતિતેષુ જવતા કે^૦ હે સ્વામિન્ ! આ
તમારા નપર જે ત્રણ ઢત્ર ઢે, તે ત્રણ ઢત્ર નથી પરંતુ
શું ઢે ? તો કે મોતીના સમૂહ કરી સહિત અને ઝલ્લ
સિત એવાં જે ત્રણ ઢત્ર તેના મીશે કરીને તારા મંમ
લ સહિત ઢતો, નિશ્ચયથી ત્રણ પ્રકારનું ધારણ કર્યું
ઢે શરીર જેણે એવો ચંડમા જે ઢે તે તમારી સેવા કર
વાને અર્થે જાણે તમારી પાસે આવ્યો હોય નહીં !
તે ચંડમા કેવો થકો આવ્યો ઢે, તો કે વિશેષે કરી હ
ણાણો ઢે જગતને વિષે અજવાલું કરવારૂપ વ્યાપાર
જેનો એવો ઢે; કેમકે તમોએ ત્રણ જુવનને પ્રકાશિત
કર્યાં, તેથી ચંડમાનો તે અધિકાર મિથ્યા થયો. ॥૩૬॥

સ્વેન પ્રપૂરિત કે^૦ હે જગવન્ ! તમે ચારે પાસે
નીલ રત્ન અને સુવર્ણ તથા રૂપા વસ્ત્રે પ્રકર્ષે કરીને
નિર્મિત કરેલા એવા ત્રીગુણ ગઢે કરીને શોજો ઢો.

एटले एक गढ रत्ननो, बीजो सोनानो, त्रीजो रूपान
 ए रीते त्रण गढे करीने तमे शोन्नोओ. ते कोनी पे
 शोन्नोओ ? तेनी उपर कवि उत्प्रेक्षा करे ठे, के पो
 एटले प्रभुए प्रकर्षे करी पूर्युं ठे त्रण जगत ते
 करी पिंमीनूत थइ रहेलां एवां, शरीरनो रंग प्रता
 तथा यश, तेमना संचये करीनेज जाणे होय नई
 अर्थात् कांति, प्रतापने यश तेना समूहज जाणे शं
 ने ठे. केमके नीलरत्नना गढने प्रभुना श्याम वर्णन
 सदृशता ठे, तथा सोनाना गढने प्रभुना प्रतापनी स
 दृशता ठे, तथा रूपाना गढने जगवानना यशनी स
 दृशता ठे. माटे ए उत्प्रेक्षा करी ते योग्यज ठे ॥१७॥

दिव्यसृजो जिन केण हे जिन ! मनोहर फुलनी
 मालाजु जे ठे ते तमारा चरणने नमेला देवेंडोना र
 तनोए रचेला एवा पल मुकुटोने त्याग करी तमारा
 चरणारविंदने आश्रय करे ठे. अहीं दृष्टांत कहे ठे के, सु
 मनस केण पंडित अथवा देवताजु जे ठे ते तमारा सं
 गम ठते बीजे स्थानके नश्रीजरमता, कारण के ते आ

(૫૯૧)

તમારા સંગ ઠતેજ આનંદ પામે છે, તેમનું તથા ફુલનું
નામ પણ સુમનસ છે. માટે ફુલની માલાનું જે તમા
રા ચરણારવિંદનો આશ્રય કર્યો તે યુક્તજ છે ॥ ૨૭ ॥

ત્વં નાથ જન્મજલથેઃ કેળ હે સ્વામિન્ ! તમે જ
વ સમુદ્ર થકી વિશેષે કરી પરાડ્સુખ (અવલા મુખ
વાલા) ઘયા ઠતા પણ તમારી પોતાની વાંસે વલગે
લા એવા પ્રાણીનું જે કારણ માટે તારો ઘો, તે વિશ્વ
ના સ્વામી અને સુદ્ધ એવા તમનેજ નિશ્ચે યુક્ત છે. અહીં
દૃષ્ટાંત કહે છે, કે પાર્થિવ કેળ પૃથ્વીની જે માટી તે
નાથી ઉત્પન્ન થયેલો એવો નિપ કેળ ઘમો જે છે, તે પા
ણી ઉપર રહ્યો ઠતો તેની પીઠે વલગેલા જનોને તારે
છે, તેમ તમે પણ પાર્થિવનિપ છો માટે તમારી પૂઠે વલ
ગેલા જનોને સંસારસમુદ્રથી તારો ઘો, તે યુક્તજ છે પરં
તુ અહીં એક આશ્ચર્ય છે, તે એ કે જે કારણ માટે હે
સ્વામિન્ તમો જ્ઞાનાવરણાદિ આઠ કર્મના વિપાકથી
રહિત છો, અને માટીનો ઘમો તો કુંજારાદિકે કરેલી
પકાવવાદિકની ક્રિયાએ કરી યુક્ત છે તેથી તે કર્મ વિ

पाक शून्य नथी अने तमे गो, ए आश्चर्य ठे ॥ ५९ ॥

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक केण हे जनपालक !
 तमे विश्वना ईश्वर गो तो पण दुर्गत केण दरिडी गो ए
 विरोधनो परिहार करे ठे के तमे विश्वेश्वर गो तो पण
 दुर्गत केण दुखे जाणवा योग्यगो अथवा “ जनपालक
 दुर्गत ” ए शब्दनो बीजो अर्थ एवो ठे के जनप केण हे
 जनप ! तमे अलककेण केश तेणे करी दरिडी गो एटले
 तमारे दिक्ता ग्रहण पढी केश वृद्धिनो अज्ञाव ठे अथवा
 पक्षांतरे तमे हे स्वामिन् ! अक्षर एटले मोक्षस्वज्ञावी
 गो, तो पण लिपिएकरी रहित वत्तो गो, एटले जे अक्षर
 स्वज्ञावी होय, ते तो लिपिरूप होय. ए पण विरोध ठे
 तेनो परिहार करे ठे के, स्थिर ठे स्वज्ञाव जेमनो ते
 अक्षरप्रकृति कहिए अर्थात् शाश्वतरूप गो, अथवा
 अक्षर जे मोक्ष तेज ठे प्रकृति एटले स्वज्ञाव जे
 नो एवा तथा नथी कर्मरूप लेप जेने एवा तमे गो; त
 था अज्ञानवाला एवा पण तमारे विषे निश्चय थकी
 विश्वने प्रकाश करवानुं हेतुभूत एवुं जे ज्ञान ते निरं
 तर निश्चे स्फुरे ठे ? एटले जे अज्ञानवान होय तेने

(एए३)

ज्ञान स्फुरे नहीं, ए विरोध ठे. तेना परिहार अर्थे कहे
ठे के, अज्ञान् अने अवति ए बे पद जूदां करीने अ
र्थ करवो त्यारे अज्ञान् के० ज्ञानरहित एवा सूर्खजन
तेने अवति के० सम्यक् बोध करता एवा त्वयिके० तमा
रे विषे ज्ञान स्फुरे ठे ॥ ३० ॥

गाथा ३१ थी ३५ सुधीना ठुटा शब्दना अर्थ.

प्राग्भार-अधिक भा-
र बडे

अमीभिः-आ बडे
दुरात्मा-दुष्ट आत्मा-

चारतुं

संभृत-भरेलां

तभांसि-आकाश

रजांसि-रजो

रोषात्-कोपधी

उत्थापितानि--उडा-

ढेला

शठेन-सूखें

यानि-जे

छाया-कांति

तैः-तेओ बडे

हताशः-निराश थअलो

ग्रस्तः-व्याप्त थयो

३८

अदभ्र-घणुं

भ्रश्यत्-पडती

मांसल-पुष्ट

घोर-वीहामणी

धारं-धारावालुं

दुस्तर-असह्य, दुखै त-

रवा योग्य

वारि-पाणी

दुस्तरवारि-भुंडी तर-

[वालुं

दधे-कधिं

तेनैव-ते बडेज

कृत्यं-काम

विकृताकृति-विरूप

आकृतिओ वाला.

मर्त्य-याणसना

मुंड-मार्था

मालंब-झुलतुं झुमणुं

भृत्-धारण करेछे

द-देनारा

विनिर्यत्-निकलतो

प्रेत-द्वैत्य

व्रजः-समूह

प्राति-प्रत्ये	विधुत-विशेषे टाल्या	प्रत्ये
ईरितः-प्रेर्यो	छे	गतः-प्राप्त थएला
अभवत्-होतो हवो	पुलक-रोमांच	आकर्णिते-सांभलेछं
प्रतिभवं-भवोभवमां	पक्ष्मल-व्याप्त	विपत्-आपदा
धन्याः-धन्य	देशाः-भाग	विषधरी-सर्पिणी
त एव-तेओज	पादद्वयं-बे पग	सविधं-समीप
त्रिसंध्यं-त्रण काले	जन्मभाजः-भव्यजनो	समेति-आवे ?
आराधयन्ति-आराधेछे	श्रवण-कान	
विधिवत्-विधिपूर्वक	गोचरतां-गोचरपणा	

प्राग्ज्ञारसंज्ञृतनज्ञांसि रजांसि शे
 पा, दुष्ठापितानि कमठेन शठेन
 यानि ॥ ठायापि तैस्तव न नाथ
 हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीजिरयमे
 व परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद्गर्ज्जु
 ज्जितघनौघमदञ्जनीमं, अश्यत्तमि
 न्मुसलमांसलघोरधारम् ॥ दैत्येन
 मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे, तेनैव त
 स्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥

(५९५)

ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुक्तं,
प्राज्ञं बभूव नृपदवक्त्रविनिर्यदग्निः
॥ प्रेतव्रजः प्रतिज्ञवंतमपीरितो
यः, सोऽस्याऽन्नवत्प्रतिज्ञवं न्नव
दुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त
एव नृवनाधिप ये त्रिसंध्य, मारा
धयन्ति विधिवद्विधुतान्य कृत्याः ॥
नक्त्यो ह्यसत्पुलकपद्मलदेहदेशाः
पादद्वयं तव विज्ञो नृवि जन्मज्ञा
जः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारन्नववा
रिनिधौ मुनीश, मन्ये न मे श्रव
णगोचरतां गतोऽसि ॥ आकाणि
ते तु तव गोत्रपवित्रमंत्रे, किंवा
विषद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥

अर्थः—प्राज्ञान्नसंनृतनन्नांसि केण हे नाथ ? क

મઘાસુરે કોપથી જે રજો તમારા ઉદ્દેશે કરીને ઉભા
 મી, તે રજોએ કરીને તમારી શરીરની કાંતિ પણ ન
 હણાણી. તે રજો કેવી છે ? તો કે અધિકપણાએ કરી
 ને ઝર્યા છે આકાશો જેણે એવી છે. હવે તે કમઘાસુર
 કેવો છે ? તો કે મૂર્ખ એવો છે, પરંતુ હણાણી છે આ
 શા જેની એવો, હુષ્ટ છે આત્મા જેનો એવો, એજ કમઘા
 સુર તે પોતેજ એજ રજોએ કરીને વ્યાપ્ત થયો. અર્થાત્
 રજ એટલે પાપરૂપ કર્મથી પોતેજ વ્યાપ્ત થયો ॥૩૧॥

યદ્ગર્જાહુર્જિત કેળે જિન ! કમઘાસુરે હુલે
 તરવા યોગ્ય એવું પાણી તે જે કારણે ઉપસર્ગ કર
 વાને માટે તમારા ઉપર વરસાવ્યું, એટલાથી પઠી હવે
 તેજ પાણીએ તે કમઘાસુરને ઝુંમી તરવારનું કામ કી
 ધું; એટલે માઠી તરવારે કરી જેમ હેદન જોદન થાય,
 તેમ સંસારને વિષે હેદન જોદનાદિક જે કાર્ય તે કર્યું;
 અર્થાત્ તમારા ઉપર જલ વરસાવ્યું તે સંસારીક હુલ
 નું હેતુ છે માટે હુસ્તર તરવારની પેઠે તે કમઘાસુરને
 જ હેદન જોદન વધાદિકનું હેતુ થયું. હવે તે હુસ્તર
 પાણી વરસાવ્યું તે કેવું છે ? તો કે ગર્જના કરતો અને

(૫૬૭)

પ્રબલ બલવંત એવો છે મેઘનો સમૂહ જેને વિષે એવું
 છે તથા વલી કેવું છે ? તો કે આકાશ થકી પડતી
 એવી વીજલી છે જેને વિષે એવું છે, વલી મુસલના સ
 રખી પુષ્ટ અને બીહામણી જાયંકર એવી છે ધારા જેને
 વિષે એવું છે ॥ ૩૨ ॥

ધ્વસ્તોર્ધ્વ કે૦ હે સ્વામિન્ ! કમઠે જે દૈત્યનો
 સમૂહ તમારી પ્રત્યે પ્રેર્યો, તે દૈત્ય સમૂહ પણ એ કમ
 ઠાસુરનેજ જન્મજન્મને વિષે સંસારનાં જે દુઃખ તેનું કાર
 ણ થતો હવો. તે દૈત્ય સમૂહ કેવો છે ? તો કે નીચે પ
 ણ્યા એવા જે નપરના કેશ તેણે કરીને વિરૂપ થઈ છે
 આકૃતિ જેની, એવાં જે મનુષ્યનાં માથાં તેનું જુલતું
 ઇટલે હૃદય પર્યંત લટકતું એવું જે જુમણું તેને ધારણ
 કરે છે એવો પ્રેતવ્રજ છે, વલી જાય દેનારાં મુખથી ની
 કલેલ છે અગ્નિ જેમને એવો પ્રેતવ્રજ છે ॥ ૩૩ ॥

ધન્યાસ્ત એવ કે૦ હે ત્રણ જગતના અધિપતિ !
 આ હે સ્વામિન્ ! તેજ જનો ધન્ય છે કે જે જીવ્ય
 જનો પૃથ્વીને વિષે વિધિ પૂર્વક ત્રણ કાલે તમારા ચ

रणयुगलने आराधन करे ठे. ते जन धन्य जाणवा. ते
 केवा जनो ठे ? तो के विशेषे करी टाढ्यां ठे बीजां का
 र्यो जेमणे एवा ठे, वली केवा ठे तो के नक्तिये करी
 उल्लास पामतो एवो जे रोमांच तेणे करी व्याप्त ठे
 शरीरना जाग जेमना एवा ठे ॥ ३४ ॥

अस्मिन्नपारज्व के० हे मुनीश ? हुं एम मानुं
 तुं के आ अपार एवो जे संसार समुद्र तेने विषे तमे
 मारा कानना विषय ते प्रत्ये न प्राप्त अएला एवा ठे
 एटले में आ संसार समुद्रने विषे तमोने कोइ वारे सां
 जळ्या नथी. एज वात दृढ करे ठे, ते जेमके:-तमारा
 नाम रूप जे पवित्र मंत्र ते सांजले ठते पण आपदा
 रूप जे सर्पिली ठे ते शुं समीप आवे ? अर्थात् तमा
 रुं नाम सांजळ्या पठी तो आपदा आवे नहीं अने म
 ने तो आ संसाररूप आपत्तिनु आवेली ठे, तेथी एम
 मानुंतुं के में पूर्व जवोने विषे क्यारे पण तमारुं नाम
 सांजळ्युं नथी ॥ ३५ ॥

गाथा ३६ थी ४० सुधीना तुटा शब्दना अर्थ

ईहित-वांछित
 दक्षम-चतुर

जन्मानि-जन्मने विषे	निकेतन-घर
पराभवानां-पराभवोनुं	मथित-मथन करेठुं

आशयानां-अभिप्रा
यानुं

आवृत-ढंकाएलुं

लोचनेन-आंखवडे

प्रविलोकिता-जोयेला

मर्मा-मर्म स्थानने

विधः-भेदनारा

विधुरयंति-पीडेछे

मां-मने

अनर्थाः-अनर्थो

प्रबंध-कर्म संताति

गतयः-प्राप्ति

अन्यथा-बीजी रीते

एते-आ

चेतसि-चित्तने विषे

विधृतो-धारण करेलो

प्रतिफलंति-विशेष

रीते फले छे

वत्सल-कृपावाला

कारुण्य-दयापणुं

वसति-स्थानक

वशिनां-जितेंद्रियोना

वरेण्य-श्रेष्ठ [जेणे एवा

नते-नमस्कार कर्योछे

मयि-मारे विषे

दयां-दया

विधाय-करीने

उद्वलन-खंडन

तत्परतां-तत्परपणुं

विधोहि-करो

आसाद्य-पामीने

सादित-नाश करेला

प्रथित-प्रसिद्ध

प्राणिधान-ध्यान

वन्ध्यः-वांझिओ

वन्ध्यः-हणवायोग्य

चेत्-जो

पावन-पावित्र

जन्मांतरेपि तव पादयुगं न देव, म
न्ये मया महितमीहितदानदक्षम्॥
तेनेह जन्मनि मुनीश पराज्वानां
जातो निकेतनमहं मथिताशयाना
म् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरा
वृतलोचनेन, पूर्वं विज्ञो सकृदपि

प्रविशोक्तोऽसि ॥ मर्माविधो वि
 धुरयंति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबंध
 गतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आ
 कर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षि
 तोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृ
 तोऽसि ज्ञक्त्या ॥ जातोऽस्मि तेन
 जनबांधव दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः
 प्रतिफलंति न ज्ञावशून्याः ॥ ३८ ॥
 त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हेशरण्य,
 कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य ॥
 ज्ञक्त्या नते मयि महेश दयां वि
 धाय, दुःखांकुरोद्धलन तत्परतां वि
 धेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसार शरणं
 शरणं शरण्य, मासाद्य सादितरि
 पुप्रथितावदातम् ॥ त्वत्पाद पंक

(६०१)

जमपि प्रणिधानबंध्यो, वध्योऽस्मि
चेद्भुवनपावन हा हतोऽस्मि ! ॥४०॥

अर्थः—जन्मांतरेपि तव के० हे देव हूं मानुं तुं के
जन्मांतरने विषे पण तमारुं चरणयुगल जे ठे तेने में
नथी पूज्युं, ते चरणयुगल केवुं ठे ? तो के वांछित ते
नुं जे देवुं तेने विषे चतुर एवुं ठे, हवे तेज कहे ठे,
जे हे मुनीश ! ते कारण माटे हूं आ जन्मने विषे म
थन कर्यो ठे चित्तनो आशय जेमणे एवा पराज्जवोनुं
स्थानक थयो, अर्थात् तमारा चरणारविंदनो पूज
नार तो पराज्जवनुं स्थानक होतो नथी, परंतु में
पूर्व जेवे तमारां चरणकमल क्यारे पूज्यां नथी एम
जासे ठे ॥ ३६ ॥

नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन के० हे स्वामि
न् ! निश्चे में प्रथम एक बार पण तमो जोयेला नथी,
ते हूं केवोतुं ? तो के मोहरूप तिमिर जे अंधकार ते
णे आवृत थयां ठे नेत्र जेनां एवो तुं. शा माटे नथी
जोया ? तो के जे कारण माटे जो तमारुं दरशन कर्युं

होत तो अनर्थ रूप कष्टो मुजने केम पीमे ? अर्थात्
पूर्वे जो तमारुं दरशन अयुं होत तो आ अनर्थो मुजने
पीमत नहीं. ते अनर्थो केवा ठे ? तो के मर्मस्थानने
जेदनारा ठे, वली प्रकर्षे करी प्राप्त अइ ठे सविस्तर
कर्म प्रबंध तेनी प्रवृत्ति जेने एवा ठे ॥ ३७ ॥

आकर्णितोऽपि केण हे जन बांधव ! एटले हे लो
कना हित कर्त्ता ! में पूर्वे तमने सांजल्या पण खरा, त
था पूज्या पण खरा, तथा दीगा पण खरा, परंतु नि
श्चे ज्ञप्तिये करीने चित्तने विषे धारण करेला नथी; ते
कारण माटे हुं दुःखनुं पात्र अयो हुं. जे कारण माटे
ज्ञावे करी रहित क्रियाउ विशिष्ट फल आपनारी अती
नथी ॥ ३८ ॥

त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल केण हे नाथ ! दुःखी
जनोपर दया लावनार ! वली हे शरण आवेला प्राणी
ने हित करनार ! तथा हे दयाना पवित्र स्थानक !
अथवा हे दया धर्मना घर ! तथा हे जितेंद्रिय पुरुषोमा
श्रेष्ठ ! तथा हे मोटा ईश्वर ! ज्ञप्तिये करीने नमस्कार
करों ठे जेणे एवा मारे विषे कृपा करीने दुःखनो अ

(६०३)
 कुर जे उत्पत्ति स्थानक तेना खंनने विषे तत्पर
 पणुं कर ॥ ३ए ॥

निःसंख्यसारशरणं के० हे स्वामिन् ! तथा हे
 त्रण जगतने पवित्र करनार ! तमारा चरणारविंदना
 शरणने पामीने पण तमारुं ध्यान करवुं तेणे करीने
 बांजिनुं अयो एटले शून्य अयो, एवो जो हुं हुं तो रा
 गादिक शत्रुए करी हणवा योग्य हुं, ए कारण माटे हा
 इति खेदे, उदैवे मारेलो वनं. हवे तमारुं चरणकमल
 केवुं ठे ? तो के अनंत बलनुं घर एवुं ठे तथा शरण
 करवा योग्य ठे, बली हय पमान्या ठे रागादिक वैरी
 जेणे तेणे करीने प्रसिद्ध ठे प्रज्ञाव जेनो एवुं ठे ॥४ण॥

तथा ४१ थी ४४ सुधीना बुटा शब्दना अर्थ.

विदित-जाण्यो छे
 अखिल-समग्र
 त्रायस्व-रक्षणकरो
 इद-द्रव, सरोवर.
 नीहि-पवित्र कर
 सीदतं-सीदातो

अद्य-आज
 भक्तेः-भक्तिनुं
 संचितायाः-संचेली
 त्वदेक-तमारुं एक
 भूयाः-थाओ
 समाहित-समाधिका-

ली, ध्यान युक्त
 धियः-बुद्धियो
 सांद्र-आकरो
 उल्लसव-उल्लास पा-
 मतो
 कंचुकित-कंचुके सकि-

भागाः-भागो	शि कमलमां चंद्रस-	निचयाः-समूह
वद्धलक्षा-बांध्युंछे	मान	अचिरात्-थोडा व-
ध्यान जेमणे एवा	प्रभास्वराः-अत्यंत	खतमां
कुमुदचंद्र-सिद्धसेन	देदीप्यमान	प्रपद्यंते-पामे छे
दिवाकर	भुक्त्वा-भोगवीने	
कुमुदचंद्र-चंद्रविका-	गलित-गलेलो	

देवेऽवंद्य विदिताखिलवस्तुसार,
 संसारतारक विज्ञो नृवनाधिनाथ॥
 त्रायस्व देव करुणाहृद मां पुनी
 हि, सीदंतमद्य नयदव्यसनांबुरां
 शेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति नाथ नवंद
 घिसरोरुहाणां, नक्तेः फलं किमपि
 संततिसंचितायाः॥ तन्मे त्वदेकशर
 णस्य शरण्य नूयाः, स्वामी त्व
 मेव नृवनेऽत्र नवांतरेऽपि ॥ ४२ ॥
 इत्वं समाहितधियो विधिवज्जि
 नंश्च, सांशोद्धसत्पुलककंचुकितांग

(६७५)

ज्ञागाः ॥ त्वर्ध्वनिर्मलमुखांबुज
वधलक्ष्मा, ये संस्तवं तव विन्नो
रचयन्ति ज्ञव्याः ॥ ४३ ॥ जननय
नकुमुदचंद्र, प्रज्ञास्वराः स्वर्गसंप
दो नुत्त्वा ॥ ते विगलितमलनि
चया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥ ४४ ॥
युग्मम् ॥ इति श्रीकल्याणमंदिर
नामकं अष्टमस्मरणं समाप्तम् ॥

अर्थः--देवेंद्रवंध केण देवताना ईंझेण वंदवा यो
ग्य माटे हे देवेंद्रवंध ! वली जाण्युं ठे सधली वस्तुनुं
रहस्य जेणे माटे हे विदिताखिलवस्तुसार ! तथा
हे संसार समुद्रकी तारनार ! हे समर्थ ! तथा हे
त्रिभुवन नाथ ! तथा हे देव ! तथा हे करुणाना इह !
आज सीदाता एवा मने जय देनारो एवो व्यसननो
जे समुद्र तेथी रक्षण करो अने (पापनो नाश करी)
प्रवित्र करो ॥ ४१ ॥

યદ્યસ્તિ નાથ કેળ હે નાથ ! જો તમારાં ચરણ
કમલની ઝક્તિનું કાંઈ પણ ફલ હે તો હે શરણાગત
વત્સલ ! જેને તમારુંજ એક શરણ હે એવા મને આ
લોકને વિષે, તથા જીવાંતરને વિષે તમેજ સ્વામી થાન.
હવે પૂર્વોક્ત ઝક્તિ કેવી હે ? તો કે નિરંતર સંતાનની
પરંપરાએ સંચેલી એટલે વૃદ્ધિગત થઈ એવી હે ॥ ૪૨ ॥

ઈત્થં સમાહિતધિયો કેળ હે જિનેંડ ! તથા હે
સ્વામિન્ ! તથા મનુષ્યના નેત્રરૂપ જે ચંડવિકાશિ
કમલ, તેને વિષે ચંડમા સમાન માટે હે જનનયનકુ
મુદચંડ ! અહિં અન્યંતરમાં કવિયે, શ્રી સિદ્ધસેન દિ
વાકરાચાર્યે, દીક્ષા સમયમાં ગુરુએ દીધેલા કુમુદચંડ
એવા પોતાના નામનું પણ સૂચવન કર્યું હે. જે જીવ્યપ્રા
ણીનું આ રીતે એટલે પૂર્વોક્ત પ્રકારે વિધિ પૂર્વક તમારા
સ્તોત્રને રચે હે તે જીવ્ય પ્રાણીનું ઓળાએક કાલમાં
મોક્ષને પામે હે. શું કરીને પામે હે ? તો કે દેવલોક
ની સંપદાના સુખને જોગવીને તે કેવી સ્વર્ગ સંપદા ?
તો કે અત્યંત દેદીપ્યમાન એવી. તથા તે જીવ્યો કેવા
હે ? તો કે સમાધિવાલી બુદ્ધિ હે જેમની એવા હે, વલી

આકરો ઝલ્લાસ પામતો એવો રોમાંચ તેણે કંચુકે કરી સહિત છે શરીરનો દેશ જેમનો એવા, વલી કેવા છે ? તો કે તમારા પ્રતિબિંબનું નિર્મલ એવું જે મુખ કમલ તેને વિષે બાંધ્યું છે ધ્યાન જેમણે એવા છે. તથા વલી કેવા છે ? તો કે વિશેષે કરીને ગલી ગયો છે કર્મ રજરૂપી મલનો સમૂહ જેમનો એવા છે. અર્થાત્ આ પ્રકારના કહેલા એવા જે જીવ્ય પ્રાણીનું તમારું સ્તવન કરે છે. તે સ્વર્ગનાં સુખ જોગવી મનુષ્ય જીવ પામીને થોડા કાલમાં મોઢે જાય છે ॥ ૪૩—૪૪ ॥

इति श्री कल्याण मंदिर नामकं अष्टमं स्मरणं
संपूर्णम् ॥

अथ संथारापोरिसीना बुटा शद्वना अर्थ
गाथा. १ थी ४ सुधीना

ગોયમાઈણ-ગૌતમા- દિકોને	મંડિઅ-શોભિત શરીરા-શરીરવાલા	વાહુવહાણેણ-હાથના ઓશીકા વહે
આઈણ-આદિક	વહુપહિપુત્રા-ઘણી પ-	વામ-હાથુ
જિઢિજ્જા-વદ્ધસાધુઓ	રિપૂર્ણ	પાસેણ-પાસાણ
ઢિજ્જા-વેસો	સંથારણ-સંથારામાં	કુકુઢિ-કુકુઢી
રયણેહિ-રત્નોણ કરી	સંથારં-સંથારા પ્રત્યે	પસારણ-પસારીને

अंतरंत-असमर्थपणा-	पढीलेहा-पूजीने	इमस्स-आना
थी न रहेवाय तो	दव्वाइ-द्रव्यादिक	देहस्स-देहना
पमज्जए-पूजे	उवओगं-उपयोग	इमाइ-आ
संकोइअ-संकोचे	निरुंभण-रुधुं, रोकुं	रयणिए-रात्रीने विपे
संडासा-साथल संधी	आलोए-जुए	उवहि-उपधि
उव्वट्टंते-पासु फेरवे	पमाओ-प्रमाद	वोसिरिअं-वोसिरावुं

निसिही, निसिही, निसिही, न
 मो खमासमणाणं गोयमाईणं म
 हामुणीणं ॥ आटलो पाठ तथा
 नवकार तथा करेमिज्जंते सामाइ
 यं ए सर्व पाठ त्रण वार कह्हीने
 पढी ॥ अणुजाणह जिठिज्जा,
 ठिज्जा ॥ अणुजाणह परम गुरु ॥
 गुरु गुणरयणेहिं मंमिअसरीरा॥
 बहुपमिपुत्रा पोरिसि, राइअ सं
 थारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह
 संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेणं

(६७७)

॥ कुकुमिपाय पसारण, अंतरंत
पमज्जए नूमिं ॥ २ ॥ संकोइअ
संमासा, उवटंते य काय पमिले
हा ॥ दवाई उवजगं, ऊसास नि
रुंजणा लोए ॥ ३ ॥ जइ मे हु
ज पमान, इमस्स देहस्सिमाइ र
यणीए ॥ आहारमुवहिदेहं, सबं
तिविहेण वोसिरिअं ॥ ४ ॥

अर्थ:-अहीआं साधु तथा श्रावक पम्किमणुं
करीने पढी सज्जाय करे, पढी पोरिसि थये ठते आ
चार्य समीपे आवे. त्यां खमासमण देइने इच्छाकारेण
संदिसह जगवन् “ बहुपन्निपुन्ना पोरिसि राइय सं
थारए गामि ” एनो अर्थ लखीए ठीए. हे जगवन् !
तमे पोतानी इच्छाए करी मने आदेश आपो. घणी
प्रतिपूर्णा एवी पोरिसि थइ, माटे रात्री संबंधि संधारा
प्रत्ये हुं करुं ? गुरु आदेश आपे पढी इरियावहि पूर्व
क चैत्यवंदन करे. पढी शरीर चिंता लघुशंकादिक

कार्य सर्व करे, पढी यत्नाए करी संधारो करे, पढी
 ऋाबो पग संधारानी साथे राखीने मुहपत्ति पम्तिहेहे,
 पढी त्रणवार निसिही कहे. निसिही के० पाप व्यापा
 रनो निषेध करीने मोहोटा सुनीश्वर एवा गौतमादि
 क द्दमाश्रमण जे ठे ते प्रत्ये नमस्कार थानु. पढी
 हे ज्येष्ठार्या ? (वृद्ध साधुनु) तमे मने आझा आपो,
 ए प्रकारे कहेतो अको संधारानी उपर रह्यो अको न
 मस्कार पूर्वक सामायक पाठ त्रणवार जणो, पढी आ
 वी रीते कहे, ते कहे ठे. गुरुगुणरयणोहिं के० मोटा
 गुणरूप रत्नोये करी शोजित ठे शरीर जेमनुं एवा हे
 परमगुरु ? तमे मुजने आदेश आपो. घणी एवी पोरि
 सि अइ, माटे रात्री संधारकनी उपर विश्राम करुं॥

अणुजाणह संधारं के० हे जगवन् तमे मने स
 थारानी आझा आपो. पढी गुरु आझा आपे ते वारे
 बाहु के० हाथनुं उशीकुं करी ऋाबे पासे सूवे, ते पण
 शी रीते सूवे ? तो के कुकरीनी पेठे आकाशने विपे
 पग पत्तारीने सूवे, जो ए रीते असमर्थ अकां नही
 रही शकाय तो शुं करे ? ते कहिए ठीए. जूमि प्रत्ये

(६११)
पूजीने त्यां पग स्थापे ॥ ५ ॥

संकोइअ संमासा के० ज्यारे पग संकोचवो हो
य त्यारे साधल पूंजीने संकोचे, अने ज्यारे पासुं फे
रवुं होय त्यारे शरीर प्रत्ये पूंजीने पासुं फेरवे. हवे
जागवानो प्रकार लखीए ठीए. ज्यारे लघुशंकादिकने
अर्थे नवे ते वारे इव्यादिकनो उपयोग करे एटले ते
विचार करे जे इव्यथी हुं कोण हुं? अने खेत्र अकी
एम विचारे के हुं उपर हुं के नीचे हुं, के कोइ बीजे
ठेकाणे हुं; कालथी विचारे के हमणां रात्रि ठे के दि
वस ठे. जो रात्रि ठे तो केटली रात्री बाकी हशे? ए
म विचार करे ने उपयोग आपे, अने जावथी तो आ
म विचारे के मारे लघुशंकादिकनी बाधा ठे? किंवा न
थी? एवा चार प्रकारे उपयोग करतां जो निज्ञ न जा
य तो उह्वास निःश्वास रुंधीने एटले नासिका दवावी
ने निज्ञ दूर करे. निज्ञ दूर अया पढी आलोक प्रत्ये
जुए एटले बहार नीकलवानां वारणां प्रत्ये देखे, त्यां
जइ लघुशंकादिक करीने पढी धर्मध्यानमां प्रवर्त्ते ॥ ३ ॥

जइ मे हुज्ज पमान के० हवे सुइ रहेवायी प्रथम
 शुं करवुं ? ते कहे ठे एह रात्रिने विषे जो मारे आ
 देह संबंधि प्रमाद एटले मरवुं आय तो अशनादिक
 चार प्रकारना आहार प्रत्ये, उपधि (वस्त्र, पात्रादिक)
 प्रत्ये, तथा शरीर प्रत्ये, अथवा नवहिदेहं के० शरीर
 संबंधि उपधि प्रत्ये, बीजा पण सर्व प्रत्ये त्रिविधे ए
 टले मन वचन कायाए करी हुं वोसिरावुं तुं, त्याग
 करुं तुं ॥ ४ ॥

गाथा. ५ थी १० सुधीना ठुटा शब्दना अर्थ.

पन्नतो-प्ररूपेलो
 पवज्जामि-अंगीकार
 करुछुं

चोरिक्क-चोरि
 मेहुणं-मैथुन
 दविण-द्रव्यनुं
 मुच्छं-मूर्च्छा
 कोहं-क्रोध
 माणं-मान
 मायं-कपट
 लोहं-लोभ

पिज्जं-प्रेम, रागने
 दोसं-द्वेष
 कलहं-क्लेश
 अप्परुत्ताणं-अभ्या
 ख्यान
 पेसुन्नं-चाडी
 समाउत्तं-सहित
 परपरिवायं-परपरि
 वाद
 मायामोसं-माया मृ
 पावाद

मिच्छत्तसल्लं-मिथ्या
 त्वशल्य
 वोसिरिसु-त्याग क
 विग्घ भूआइं-विघ्न
 भूत
 दुग्गइ-दुर्गति
 निवंधणाइं-कारण
 पावठाणाइं-पाप
 स्थानक

(६१३)

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं,
सिद्धा मंगलं, साहु मंगलं, केव
ल्लिपन्नतो धम्मो मंगलं ॥ ५ ॥

चत्तारिलोगुत्तमा, अरिहंता लोгу
त्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहु लो
गुत्तमा, केवल्लिपण्ततो धम्मो लो
गुत्तमो ॥ ६ ॥ चत्तारि सरणं पव

ज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि,
सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहु सर
णं पवज्जामि, केवल्लिपण्तं धम्मं
सरणं पवज्जामि ॥ ७ ॥ पाणाइ

वायमल्लियं, चोरिक्कं मेहुणं दविण
मुत्तं ॥ कोहं माणं मायं, लोचं
पिज्जं तहा दोसं ॥ ८ ॥ कलहं अ
प्रक्काणं, पेसुन्नं रइ अरइ समा

(૬૧૪)

નત્તં ॥ પરપરિવાયં માયા, મોસ
મિહત્તસહ્વં ચ ॥ ૯ ॥ વોસિરિસુ
ઇમાઇં મુ, સ્કમગ્ગ સંસગ્ગ વિગ્ધ
નૂઆઇં ॥ ડુગ્ગઇં નિબંધણાઇં, અ
ઠારસ પાવઠાણાઇં ॥ ૧૦ ॥

ચત્તારિ મંગલં કેળ ચાર મંગલિક ઠે. તેમાં એક
તો અરિહંત, બીજા સિદ્ધ, ત્રીજા સાધુ, અને ચોથો કે
વલી જગવંતે પ્રહૂપ્યો એવો જે ધર્મ તે મંગલિક ઠે ॥ ૫ ॥

ચત્તારિ લોગુત્તમા કેળ ચાર લોકમાંહે નત્તમ ઠે.
એક અરિહંત, બીજા સિદ્ધ ઠે તે લોકમાં નત્તમ ઠે, ત્રીજા
સાધુ તે લોકમાં નત્તમ ઠે, વલી ચોથો કેવલીએ પ્રહૂપ્યો
જે ધર્મ તે લોકમાં નત્તમ ઠે ॥ ૬ ॥

ચત્તારિ સરણં કેળ ચાર શરણ પ્રત્યે અંગિકાર
કરું હું. એક તો શ્રી અરિહંત શરણ પ્રત્યે હું અંગિકાર
કરું હું. બીજું સિદ્ધ શરણ પ્રત્યે હું અંગિકાર કરું હું, ત્રી
જું સાધુ શરણ પ્રત્યે હું અંગિકાર કરું હું, ચોથું કેવલી
પ્રહૂપ્યો એવો જે ધર્મ તેના શરણ પ્રત્યે હું અંગિકાર

करुं तुं ॥ ७ ॥

पाणाइवायमलियं केण पेहेलुं प्राणातिपात, वी
जुं अलिक एटले मृषावाद, त्रीजुं चोरी, चोशुं मैथुन,
पांचमुं डव्यने विषे मूर्छा एटले परिग्रह, ठो कोव,
सातमुं मान, आठमी माया, नवमो लोभ, दशमो प्रे
म (राग), तथा अगिआरमो छेप ॥ ८ ॥

कलहं अप्रस्काणं केण बारमो क्लेश, तेरमो अ
ज्याख्यान (आल देवुं,) चौदसुं पैशुन्य (चामी करवी,)
पंदरमे रतिअरति, सोलमो परपरिवाद, सत्तरमुं माया
मृषा अठारमुं मिथ्यात्व शब्द ॥ ९ ॥

वोसिरिसु इमाइं केण ए प्रत्यह अठार पापस्या
नक जे ठे, ते प्रत्ये रे जीव ! तुं त्याग कर. ते अठार
पापस्थानक केवां ठे ? तो के मोक्ष मार्गने विषे गमन
करता जीवोने विघ्नभूत ठे तथा दुर्गतिनां कारण ठे। १०।
गाथा. ११ यीशुसुधीना ठुटा शब्दना अर्थ.

एगो हं-हुं एकलो
नथिथ-नथी
अन्नस्स-बीजानो

कस्सइ-कोइनो
अदीणमणसो-अदी
न मन थको

अप्पाणं-आत्माने
अणुसासई-शीखाम
ण आपे

संजुओ-सहित
 सेसा-शेष
 बाहिरा-बाह्य
 संजोग-संयोग
 मूला-मूल
 जीवेण-जीवे

परंपरा-श्रेणी
 तम्हा-ते माटे
 मह-मारा
 जावज्जिवं-ज्यां सु
 धी जीवुं सां सुधी
 तत्तं-तत्त्व

गहिअं-ग्रहं
 खमिअ-खामीने
 खमाविअ-खमावीने
 मुज्जह-मारे
 खमंत-खमे

एगो हं नत्ति मे कोई, नाह मन्न
 स्स कस्स ई ॥ एवं अप्पदीणमण
 सो, अप्पाणमणुसासई ॥ ११ ॥ ए
 गो मे सासन्न अप्पा, नाणदंसण
 संजुन्न ॥ सेसा मे बाहिरा जावा,
 सव्वे संजोग लक्खणा ॥ १२ ॥ सं
 जोगमूला जीवेण, पत्ता डुक्कपरं
 परा ॥ तम्हा संजोग संबंधं, सव्वं
 तिविहेण वोसिरियं ॥ १३ ॥ अप्प
 रिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसा
 हुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नतं तत्तं,

(६१७)

इय सम्मतं मए गहियं ॥ १४ ॥

खमिअ खमाविअ मइ खमिय,

सव्वह जीवनिकाय ॥ सिद्धह सा

ख आलोयणह, मुऊह वइर न

जाव ॥ १५ ॥ सव्वे जीवा कम्म

वस, चण्डह राज जमंत ॥ ते मे

सव्व खमाविआ, मुज्जवि तेह ख

मंत ॥ १६ ॥ जं जं मणेण वद्धं,

जं जं वाएण ज्ञासिअं पावं ॥ जं

जं काएण कयं, मिहामि डुक्कमं

तरुस ॥ १७ ॥

एगोहं नहि के० हुं एक तुं मारो कोइ नथी, अने
अन्य कोइनो हुं नथी. एम अदीनमनश्चको आत्मा प्र
त्ये शीखामण आपे ॥ ११ ॥

एगो मे सासनु के० ज्ञानदर्शने करी सहित एवो
शाश्वतो सदा नित्य एवो रागादिक परजावथी रहित

એકજ મારો આત્મા છે, શોષ વાકી રહ્યા જે, ક્યય થ
કી, તન ધન કુટુંબાદિ સંયોગ મેલાપ રૂપ, અને જાવ
અકી, વિષયકષાયારૂપ સંયોગ મેલાપ, એવા જાવજે
ઠે તે સર્વ માહારા સ્વરૂપ અકી વાહ્ય એટલે જૂદા છે ॥ ૧૨ ॥

સંજોગમૂલા જીવેણ કેળ તન, ધન કૂટુંબ મમત્વા
દિ રૂપનો સંયોગ એટલે મેલાપ તેહીજ મૂલ કારણ છે
જેનું એવી ડુલ્હની શ્રેણી તે જીવે પામી, તે કારણ
માટે પૂર્વાક્ત જે સંયોગ સંબંધ છે તે સર્વ પ્રત્યે ત્રિવિધે
કરી હું વોસિરાવું હું ॥ ૧૩ ॥

અરિહંતો મહ દેવો કેળ અરિહંત અને સિદ્ધ જગ
વંત તે મહારા દેવ છે. જ્યાં સુધી જીવું ત્યાં સુધી સુ
સાધુ મારા ગુરુ છે તથા જ્યાં સુધી જીવું ત્યાં સુધી જિ
નેશ્વર દેવોયે જાણ્યું એવું જે દયામૂલ તથા વિનયમૂલ
તત્ત્વ અથવા જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર અને તપરૂપ તત્ત્વ,
તે મારો ધર્મ છે, જાવ જીવ સુધી એ પ્રકારે સમ્યક્ત્વ
માહારે જીવે અંગિકાર કીધું. ॥ ૧૪ ॥

સ્વમિય સ્વમાવિય કેળ સ્વમ્યા, સ્વમાવ્યા, મારે વિષે

(६१ए)

जीवनिकाय खमजो, सिद्धनी साखे आलोयण करुं तुं,
मारे कोइनी साथे वैरजाव नथी. ॥ १५ ॥

सबे जीवा के० सर्व जीवो कर्म वडा थया अका
चौदे राजलोकमां जमे ठे ते में सर्व खभाव्या अने
तेउ मने खमजो. ॥ १६ ॥

जं जं मणेण के० जे जे (कर्म) मनवमे बांध्युं,
जे जे वचनवमे पाप वोढ्यो, जे जे कायावमे कर्युं,
ते ते पापनुं मने मिहामि डुकरुं हजो. ॥ १७ ॥

अथ पोसह पारवानी

गाथाना ठुटा शब्दना अर्थ

सागरचंदो-सागरचं	धनो-धन्य छे	वा लायक
द शेट	पडिमा-अभिग्रह	आणंद-आणंद श्रा
कामो-कामदेव	अखंडिआ-अखंडित	वक
चंदवडिसो-चंद्रावतं	जीवीअंते वि-मरणां	कामदेवा-कामदेव
सराजा	त सुधी	पसंसइ-प्रशंसा करेछे
सुदंसणो-सुदर्शन	सलाहणिज्जा-वखाण	दढव्वयं-दढ व्रतवाला

सागरचंदो कामो ॥ चंदवडिसो सु

दंसणो धनो ॥ जेसिं पोसह पमि

(६१०)

मा ॥ अखंमित्रा जीविअंतेवि
॥ १ ॥ धन्ना सलाहणिजा ॥ सु
लसा आणंद कामदेवा य ॥ जे
सिं पसंसइ जयवं ॥ दढद्वयंतं म
हावीरो ॥ २ ॥ पोसह विधें लीधो
॥ विधें पारिनु, विधि करतां ॥ जे
कांड अविधिहुन होय ते सविहुं
मन वचन कायाए करी ॥ मिच्छा
मि डुकमं ॥

अर्थ—सागरचंदोकामोके० जीवितनो अंत थाते,
आयुनो विनाश थाते, मरणांत उपसर्ग थाते अके पण
जेनी पोषध प्रतिमा अखंमिंत रही, संपूर्ण रही, ते
श्रावकने धन्य ठे ! ते केवा श्रावको ? सागरचंद अने
कामदेव नामे श्रावक तथा चंडावतंस राजा, वली
सुदर्शन शेर.

धन्ना सलाहणिजा के० एक सुलसा श्राविका,

(६१)

बीजा आणंद श्रावक, त्रीजा कामदेव श्रावक, ए त्रणे
धन्य ठे श्लाघनीय ठे, एटले वखाण करवा योग्य
ठे. ते प्रत्यक्षपणे जेना दृढव्रत प्रत्ये जगवान् श्री मा
हावीर स्वामी पोते श्रीमुखे प्रशंसे ठे, वखाण करे
ठे, माटे ते धन्य कृतपुण्य जाणवा ॥ १ ॥

॥ पोसहना पच्चस्काणना ठुटा शब्दना अर्थ ॥

पोसहं-पोषध
देसओ-देशथी

सव्वओ-सर्वथी
अव्वावार-अव्यापार

अहो-दिवस
रत्तं-रात

करेमि जंते पोसहं, आहार पोस
हं देसज्ज, सब्बज्ज, ॥ सरीर सक्कार
पोसहं सब्बज्ज ॥ बंज्जचेर पोसहं स
ब्बज्ज ॥ अब्बावार पोसहं सब्बज्ज ॥
चज्जविहे पोसहं ठामि ॥ जावदि व
सं अहोरत्तं पज्जुवासामि उविहं
तिविहेणं मण्णेणं वायाए काए
णं न करेमि न कारवेमि तस्स जं

(६११)

ते पम्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ इति॥

अर्थः—करेमि जन्ते केण हे जगवन् ! अग्निआ
मा पोषधव्रतने अथवा जे धर्मनी पुष्टि करे तेने पो
षध कहिए, ते पोषध प्रत्ये हुं करुं, ते चार प्रकारे ठे
प्रथम अशनादिक आहार निषेध पोसह, ते वली बे
प्रकारे ठे, एक देश अकी निषेध ते त्रिविध आहार
त्यागरूप त्रिविहार तथा विगय त्याग, आयं विल, ए
कासण पञ्चस्काणथी करवो ते देशअकी आहार त्याग
पोसह कहिए; अने बीजो सर्व थकी चारे आहारनो
त्याग करवो ते सर्व थकी आहार त्याग पोसह कहि
ए. प्रथम आहार त्याग पोसहना बे जेद कहा; हवे
बीजो शरीर संबंधि नाहावुं, पीठी चोलवी, विलेपन,
वस्त्राञ्जरणादिक शोचनानो नियम तथा नख, केश, रो
मनुं समारवुं इत्यादि शरीरसत्कार निषेध नामे ए बी
जो पोसह, ते सर्व थकी जाणवो. बीजो ब्रह्म
चर्य पाले, सर्व प्रकारे स्त्री सेवन न करे, चोथो अ

(६१३)

व्यापारनी पुष्टिरूप ते सर्वश्री जाणवो, एटले खेती,
सेवा, वाणिज्य, पशुपालन प्रमुखना जे वेपार तेनो
सर्वश्री निषेध करे, ए चार प्रकारना पोषधने विषे हुं
रहुं, अंगिकार करुं. ज्यां सुधी दिवस अने रात्रि मली
आठ पहोर पोषध प्रत्ये, अथवा ज्यां सुधी दिवस प्र
त्ये क्रमण ठे त्यां सुधी चार पोहोर पोषध व्रत प्रत्ये,
अथवा ज्यां सुधी रात्रि प्रत्ये क्रमण ठे त्यां सुधी चार
पोहोर पोषधव्रत प्रत्ये, हुं पर्युपासु, सेवुं, त्यां सुधी. अ
ने श्रोमोक दिवस होय ते वारे रात्रिपोसह जो लीये
तो “ जाव दिवसं रत्तं पज्जुवासांमि ” एवो पाठ क
हे, ज्यां सुधी श्रोमो दिवस होय, त्यांश्री लक्ष्नेआखी
रात्रि सुधि पोसह निरतिचार पालुं, डविध, त्रिविधे
करी इत्यादिनो अर्थ सुगम ठे ॥

॥ अथ पम्प्लेहणा करवानो विधि ॥

नवकार पंचिंदिय कही इरियावहि पम्पिकम्मी
स्थापना होय तो नवकार पंचिंदिय न कहेवुं पठी त
स्तउत्तरी कही एक लोगस्त अथवा चार नवकारनो

कानुस्सग्ग करी पारी, प्रगट लोगस्स कही उन्ने पगे वेसी
 मुहपत्ती, कटासणुं, चवलो, उत्तरासण, धोतीनं, कंदो
 रो आदि पम्फिलेहवां, पढी काजो काढी जीव कलेवर स
 चित्त आदे जोवुं, पढी काजो कहामनार आपनाजी
 सन्मुख उन्नो रही इरियावहि पम्फिकमे, पढी काजो
 परठववा जग्या शोधी त्रण वार अणुजाणह जस्स
 गो कही काजो परठवे. पढी त्रण वार वोसिरे कहे
 ॥ इति पम्फिलेहण विधि.

॥ अथ देववांदवानो विधि ॥

प्रथम इरियावहि पम्फिकमवाप्ती मांमीने यावत्
 लोगस्स कही पढी उत्तरासण नांखीने चैत्यवंदन क
 री नमुहुणं कही. आज्ञवमखंमा सुधी अर्क्ष जयवी
 अराय कहे वली बीजुं चैत्यवंदन करी नमुहुणं कही
 जावत् चार ओयो कहीये वली नमुहुणं कही जावत्
 बीजी चार ओयो कहीए त्यां सुधी बधुं कहेवुं. पढी
 नमुहुणं तथा वे जावंति कही उवसग्गहरं अथवा स्त
 वन कही अर्क्ष जयवी अराय आज्ञवमखंमा सुधी ॥

(६१५)

ही पठी चैत्यवन्दन कही नमुहुणं कही संपूर्ण जयवी
अराय कहेवा. प्रजाते देव वांदवा तेमां मन्ह जिणाणं
नी सज्जाय कहेवी अने मध्यान्हे तथा सांजे देव वां
दे तेमां सज्जाय न कहेवी ॥ इति.

॥ अथ मन्हजिणाणं बुटा शब्दना अर्थ ॥

मन्ह-मानवी	जयणा-जतना	मिति
आणं-आज्ञा	पूआ-पूजा	धम्मिअ-धार्मिक
मिच्छं-मिथ्यात्वनो	थुणिणं-स्तुति करवी	संसग्गो-सोवत
रिहर-त्याग करो	साहम्मिआण-साध	करण-इंद्रिओ
सम्मत्तं-सम्यक्त्व	मिओनुं	दमो-दमन करवुं
आवसयंभि-आवश्य	वत्सलं-वात्सल्य	चरिण-चारित्रता
कसां	ववहारस्त-व्यवहारनी	परिणामो-परिणाम
उज्जुतो-उच्चमवंत	सुद्धि-शुद्धि	संघोवरि-संघनी उपर
इदिवसं-प्रतिदिवस	रहजुत्ता-रथयात्रा	बहुमाणो-बहुगान
वेसु-पर्वदिवसोमां	तित्थजुत्ता-तीर्थ यात्रा	लिहणं-लखवुं लखा
गो-भावना	उवसम-क्षमा उपशम	बहुं
सज्जाय-भणवुं गणवुं	संवर-आश्रवने रो	सद्वहण-श्रावकना
परोवयारो-परोपकार	कवुं	किच्च-कृत
	भासासमिइ-भाषास	वएसेणं-उपदेशथी

मन्ह जिणाणं आणं, मिहं परिह

रह धर सम्मत्तं ॥ त्विह आव
 सयंमि, उज्जुतो होइ पइदिवसं
 ॥ १ ॥ पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सी
 लं तवो अ ज्ञावोअ ॥ सव्वाय न
 मुक्कारो, परोवयारो अ जयणा
 अ ॥ २ ॥ जिण पूअ्या जिणथु
 णिणं, गुरुथुअ साहम्मिआण
 वच्चलं ॥ ववहारस य सुद्धि, रह
 जुत्ता तिब्जुत्ता य ॥ ३ ॥ उवस
 म विवेकसंवर, ज्ञासा समिई त
 जीवकरुणा य ॥ धम्मिअ जण
 संसग्गो, करणदमो चरिण परि
 णामो ॥ ४ ॥ संघोवरि बहुमाणो,
 पुढ्यल्लिहणं पन्नवणा तिठे ॥ स
 ढ्ढाण किच्च मेअं, निच्चं सुगुरु
 वएसेणं ॥ ५ ॥ इति

(૬૭૭)

અર્થ:-મન્દ્ર જિણાણં આણં કેળ શ્રી જિનેશ્વર
ની આજ્ઞા માનવી તથા મિથ્યાત્વનો ત્યાગ કરવો,
અને સમ્યક્ત્વને ધારણ કરવું, સામાયિકાદિક ઠ. પ્ર
કારના આવશ્યકને વિષે પ્રતિદિવસ યત્નમવંત હોવું ?
પથેસુ પોસહવયં કે. આઠમ ચૌદશ વીગેરે પર્વો
ના દિવસોમાં પૌષધવ્રત કરવું અને સુપાત્રને દાન દેવું,
શીલ પાલવું, તપ કરવું, વલી જાવનાનું જાવવી, વ
લી વાંચના પૃષ્ઠનાદિ પાંચ પ્રકારનો સ્વાધ્યાય કરવો,
નમસ્કારનો પાઠ કરવો, પરોપકાર કરવો, વલી જ
નાનું પ્રવર્તવું ॥ ૨ ॥

જિણપૂઆ જિણ ધુણિણં કેળ શ્રી જિનેશ્વરની
પૂજા જ્ઞાતિ કરવી, શ્રી જિનેશ્વરની સ્તુતિ કરવી, ગુ
રુની સ્તુતિ કરવી અને સાધર્મિનું વત્સલતા કરવી,
અને વ્યવહારની શુદ્ધિ રથ યાત્રા અને તીર્થ યાત્રા સ
હિત કરવી ॥ ૩ ॥

ઝવસમ વિવેક સંવર કેળ ક્રમા ધારણ કરવી,
તથા વિવેક અને સંવર જાવ રાખવો, જાણ સમિતિ

અને પૃથ્વિવ્યાદિક ૪ પ્રકારના જીવ ઉપર દયા રાખવી, રક્ષા કરવી; તથા ધાર્મિક જનોની સાથે સંસર્ગ કરવો, તથા પાંચ ઇન્દ્રિયને દમન કરવું અને ચારિત્રના પરિણામ રાખવા ॥ ૪ ॥

સંઘોવરિ बहुमाणो के० श्री संधनी उपर बहुमान राखवું, તથા પુસ્તક લખવાં લખાવવાં અને તીર્થમાં પ્રજ્ઞાવના કરવી; શ્રાવકનાં નિત્ય કરવા યોગ્ય કાર્ય એ છે, તે સુગુરુના ઉપદેશે કરી જાણી લેવાં ॥૫॥ ઇતિ પોસહમાં ચોવીસ માંમલાં કરવાં તેનાં નામ.

॥ प्रथम संथारा पासेनी जग्याए ॥

૧ આધામે^૧ આસન્ને^૨, ઉચ્ચારે^૩ પાસવણે^૪, અણહિયાસે^૫;
૨ આધામે આસન્ને, પાસવણે, અણહિયાસે; ૩ આધામે મજ્જે^૬, ઉચ્ચારે પાસવણે, અણહિયાસે; ૪ આધામે મજ્જે, પાસવણે, અણહિયાસે; ૫ આધામે દૂરે^૭, ઉચ્ચારે પાસવણે, અણહિયાસે; ૬ આધામે દૂરે, પાસવણે, અણહિયાસે.

૧ રોગાદિક ઘાટ કારણે. ૨ સંથારાની કલ્પેલી જમીન ન જાકે. ૩ થંડિલ, ઝાડો. ૪ માતું કે પેસાવ. ૫ ન સહન થઈ શકે તેવા કારણે. ૬ સંથારાની જમીનના મધ્ય ભાગમાં. ૭ સંથારાની જમીન દૂર.

(६१७)

हवे उपाश्रयना बारणांना मांहेनी तरफना.

१ आघामे आसने, उच्चारे पासवणे, अहियासे; २ आघामे आसने, पासवणे, अहियासे; ३ आघामे मज्जे, उच्चारे पासवणे, अहियासे; ४ आघामे मज्जे, पासवणे, अहियासे; ५ आघामे दूरे, उच्चारे पासवणे, अहियासे; ६ आघामे दूरे, पासवणे, अहियासे.

हवे उपाश्रयनां बारणां बाहिर
नजीक रहीने करे.

१ अणाघामे आसने, उच्चारे पासवणे, अणहिया
यासे; २ अणाघामे आसने, पासवणे, अणहियासे; ३ अणा
घामे मज्जे, उच्चारे पासवणे, अणहियासे; ४ अणाघामे मज्जे,
पासवणे, अणहियासे; ५ अणाघामे दूरे, उच्चारे पासवणे,
अणहियासे; ६ अणाघामे दूरे, पासवणे, अणहियासे.

हवे उपाश्रयथी सो हाथ आशरे दूर
रहेते करवां.

१ अणाघामे आसने, उच्चारे पासवणे, अहियासे;
१ सहन थइ शके तेवा कारणे.

(६३०)

२ अणाधामे आसने, पासवणे, अहियासे; ३ अणाधामे मज्जे, उच्चारे पासवणे, अहियासे; ४ अणाधामे मज्जे, पासवणे, अहियासे; ५ अणाधामे दूरे, उच्चारे पासवणे, अहियासे; ६ अणाधामे दूरे, पावसणे, अहियासे॥ इति॥

पोषधविधि.

पोसह करवाने इच्छनारे प्रज्ञातमां वहेला उठी ने राइपनिकमणुं जरुर करवुं जोइए. विधिना जाण आवको तो पनिलेहण अने देववंदन पण ते साथेजक रेठे. त्यार पढी जिनमंदिरनी जोगवाइ होय तो जिने श्वरनी पूजा करी पढी नुपाश्रये आवी, गुरु समक्ष पोसह उचरवौ.

प्रथम खमासमण देइ इरियावहि पनिकमी प्र गट लोगस्स केहवो, पढी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह जगवन् पोसह मुहपत्ति पनिलेहुं ? एम क ही गुरु आदेश आपे एटले इच्छं कहीने मुहपत्ति पनिलेहवी. पढी खमाण इच्छाण पोसह संदिसाहु ? इच्छं कही खमा० इच्छाण पोसह ठानं ? पढी इच्छं कही वे हाथ जोमी नवकार गणी इच्छकारी जगवन् पसाय क

(६३१)

री पोसह दंरुक उचरावोजी; एम कही, करेमि जंते
पोसहंण ए पाठ कहेवो. पढी खमाण देइ इच्छाण सामा
यक मुहपत्ति पमिलेहुं ? इच्छं. कही मुहपत्ति पमिलेहे
पढी खमा० देइ इच्छा० सामायक संदिसाहु ? इच्छं क
ही, पढी खमाण देइ इच्छा० सामायक ठाजं ? इच्छं कही
वे हाथ जोनी नवकार गणी, इच्छकारी जगवन् पस
य करी सामायक दंरुक उचरावोजी; त्यां गुरु करेमि
जंते समाइयंनो पाठ कहे. गुरु न होय तो वमिल कहे.
तेमां जाव नियमंने ठेकाणे जाव पोसहं कहेवुं. पढी
खमाण इच्छाण बेसणे संदिसाहुं ? इच्छं. खमाण इच्छाण
बेसणे ठाजं ? इच्छं. पढी खमाण इच्छाण सज्जाय संदिसा
हु ? इच्छं. खमा० इच्छाण सज्जाय करुं ? इच्छं, कही त्रण
नवकार गणवा. पढी खमाण इच्छाण बहुबेल संदिसाहु ?
इच्छं. खमाण इच्छा० बहुबेल करहुं. इच्छं. खमाण इच्छाण
पमिलेहण करुं ? इच्छं. कहीने मुहपत्ति वगेरे पांच वा
नां पमिलेहवां (मुहपत्ति ५० बोलथी, चरवलो १० बो
लथी, कटासणुं पचीस बोलथी, सुत्रनो कंदोरो १०
बोलथी अने धोतीजं ३५ बोलथी पमिलेहवुं. ते बोल
मुहपत्तिना पचास बोल जे आगल लख्यां ठे, ते ले

वा अने जे उठा कहेवाना होय ते प्रथमश्री ग्रहण कर
 वा). पढी खमासमण दइ इच्छकारी जगवन् पसाय
 करी पमिलेहणा पमिलेहावोजी एम कही आचार्यजी
 पमिलेहवा. आचार्यजी न होय तो वमिलनुं एक अण
 पमिलेहुं वस्त्र (उत्तरासन) पमिलेहेवुं. पढी खमा
 इच्छाण उपधि मुहपत्ति पमिलेहुं ? इच्छं कही मुहपत्ति
 पमिलेहवी. पढी खमाण इच्छाण उपधि संदिसाहुं ? इच्छं
 कही, खमाण इच्छाण उपधि पमिलेहुं ? इच्छं कही, वाकी
 रहेलां उत्तरासन, मात्रीयुं, कामली वगेरे पचीस वो
 लथी पमिलेहवां. पढी एक जणे मंसासण याची तेने
 पमिलेही इरियावहि पमिक्रमी काजो लेवो. काजोत
 पासीने स्थापनाचार्य सन्मुख उन्नमक वेसीने इरिया
 वहि पमिक्रमवा पढी काजो यथा योग्य स्थानके अ
 णुजाणह जस्तग्गो कहीने परठववो. परठव्या पढी त्र
 ण वार वोसिरे कहेवुं. कदापि कोइथी राइ पमिक्रमण
 न बन्युं होय तो देव वांध्या अगाउ प्रतिक्रमण करवुं.
 तेमां प्रथम इरियावहि पमिक्रमीने खमासमण देइ
 आदेश मागी कुसुमिण डसुमिणनो काउस्तग्ग कर

वो, अने सात लाख अठार पाप स्थानकने बदले इच्छा
गमणागमणे आलोउ ? इहं कही गमणागमणे कहेवा.

गमणा गमणे.

इर्यासमिति, ज्ञाप्तासमिति, एषणासमिति, आ
दान ज्ञंरुमत्त निखेवणा समिति, पारिष्ठापनिका समि
ति, मनगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति, ए पांच समिति
त्रण गुप्ति, ए आठ प्रवचन माता श्रावकतणे धर्मे सामा
यक पोसह लीधे रुमीपेरे पाली नहीं खंरुन विराध
ना थइ होय, ते सविहुं मन वचन कायाए करो मिह्ता
मि डुकुमं.

पढी ठेवटे जगवानादि वंदन कर्या अगान ख
माण इच्छा बहुवेल संदिसाहुं ? इहं. कही खमाण इ
च्छा बहुवेल करशुं इहं. कही जगवानादि वांदीने अ
ह्वाइजेसु कहेवुं. ए रीते पम्किमण करवुं. पढी देववं
दन करी सज्जायनो आदेश मागी नज्जमक वेसी म
न्हजिणाणंणी सज्जाय कहेवी. सांजे तथा वपोरे न
कहेवी.

पढी ठ घन्ती दिवस चमया पढी पोरसि
 ववी तेनी विधि. प्रथम खमाण इच्छाण बहु पा
 पोरसि ? कही खमाण देइ इरियावहि पम्किमवा
 णी खमाण देइ इच्छाण पम्किलेहण करुं ? इच्छं कही मु
 हपत्ति पम्किलेहवी. पढी जेणे गुरु समंढ राइ पम्कि
 ण न कर्युं होय तेणे राइमुहपत्ति आ प्रमाणे पम्किलेहवी.

खमाण देइ इरियावहि पम्किममी खमाण देइ इ
 च्छाण राइमुहपत्ति पम्किलेहुं ? इच्छं कही मुहपत्ति पम्कि
 हवी. पढी वांदणां वे देवां. पढी इच्छाण राइयं आलोभं ?
 इच्छं कही. तेनो पाठ कहेवा पढी सब्वस्सवि राइयं
 कही पन्यास होयतो वे वांदणां देवां, पन्यास न होय
 तो एक खमासमणुंज देवुं पढी इच्छकार सुह राइ
 कहीने अद्भुटिहुं खमावहुं. पढी वे वांदणां देवां. पढी
 इच्छकारी जगवन् पसाय करी पच्चस्काणनो आदेश
 देजो जी. एम कहीने पच्चस्काण लेवुं. पढी सर्व मुनि
 ने वे खमासमण तथा अद्भुटिहुंना पाठ सहित वंदन
 करवुं. पढी कुंमी पुंजणी तथा अचित्त जलनी याच
 ना करवी. पढी जिनमंदिरे दरशन करवा यथाविधि

(६३५)

होय तो मध्यानना देव वांछा अ
काजो लेइ देव वांदवा, पढी चउवि
होय तेणे नीचे प्रमाणे पञ्चस्का

खमा० देइ इरियावहि पम्किमी, जगचिंतामणी
नुं चैत्यवंदन जयवीरराय सुधी कहेवुं. स्तवन नवसग
हनुं कहेवुं. पढी खमा० देइ इच्छाण सज्जाय करुं कही
नवकार गणी मन्ह जिणासंनी सज्जाय केहेवी. पढी
क सामावकन नवपत्ति पम्किहेवुं कही सुहपत्ति पम्किहेवी.

३ ॥ कर० ॥ सा पञ्चस्काण पारुं? यथाशक्ति, खमा० देइ
यिवार लाल जे तहति कही जमणो हाथ नीचे
वकर्म नि पाणी (पा. ३१४ मां लख्या प्रमाणे) पञ्च
नवकार गरावो पढी पाणी पीवुं
ए. एकासणुं करनारे जतना पूर्वक घेर
गल कही पूंजी कटासणुं नांखी स्थापना
शरयावही पम्किमी खमा० देइ गमणागमणे
गाववा. पढी काजो लेइ पाटलो, थाली वगेरे ज्ञा
जन तथा मुख पुंजीने यथा संजवे अतिथि संविज्ञा

ग फरसीने निश्चल आसने, मौनपणे आहार करवो.
लीधेली वस्तुमांथी बीलकुल पाबुं मुकी शकाय नहीं.

जेने घेर जवुं न होय ते पोसहशालाए पूर्वप्रे-
रित पुत्रादिके आणेलो आहार करे. ते प्रथम जग्या
प्रमार्जीने कटासणापर बेसी न्नाजन, मुख, वगेरे प्र-
मार्जी, स्थापना स्थापीने इरियावहि पम्किमे अने नि-
श्चल आसने मौनपणे आहार करे. तथा प्रकारना का-
ए विना स्वादिष्ट मोदक अने लविंगादिक तांबुल ग्रह-
ण न करे. पढी मुख शुद्ध करीने दिवसचरिम तिविहा-
रनुं पञ्चस्काण^१ करे. तयार पढी घेर जनार पोष-
शालाए आवीने अने पोषधशाला वाला आहार कर्या
नी जग्याए अथवा मूल स्थानके इरियावहि पम्किमी
ने जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन जयवीयराय पर्यंत करे.

पोसहमां मध्यानना देव वांध्या अगाउ पञ्चस्का-
ए पारी शकाय नहीं.

पढी बीजी वारनी पडिलेहण त्रीजा पहोर प-
ढी मुनिराजे स्थापनाचार्यनी^२ पडिलेहणा करी होय

१ पोसह विना एकासणुं वीगेरे करनारे पण ते करीने उज्या
पेहेलां दिवस चरिम तिविहारनुं पञ्चस्काण करवुं जोइय

२ स्थापनाचार्यनी पडिलेहणा कर्या अगाउ पडिलेहण न थाय.

तेनी समझ करवी, तेनी विधि आ प्रमाणे.

प्रथम खमाण देइ इच्छाण बहु पन्निपुत्रा पोरिसि
 कही खमाण इच्छाण इरियावहि पन्निक्कमवा पढी ख
 माण इच्छाण गमणागमणे आलोउं? इच्छं कही गमणा
 गमणे आलोववा पढी खमाण इच्छाण पन्निखेहण करुं?
 इच्छं कही, खमा० इच्छाण पोषध शाला प्रमार्जुं? कही
 इच्छं कही, उपवास वालाए मुहपत्ति, कटासणुं, ने चरव
 लो पन्निखेहवां, अने जमनारे कंदोरो, धोतीनं सुधां
 पांच वानां पन्निखेहवां पढी खमाण इच्छकारी जगवान
 पसाय करी पन्निखेहणा पन्निखेहावोजी. एम कहीने
 वनीलनुं एक वस्त्र पन्निखेहवुं. पढी खमाण इच्छा० उ
 पधिमुहपत्ति पन्निखेहुं? इच्छं कही मुहपत्ति पन्निखेहीने
 खमाण इच्छाण सज्जाय करुं? इच्छं कही नवकार गणीने
 मन्ह जिणाणंनी सज्जाय उज्जरुक बेसीने कहेवी. पढी
 खाधुं होय ते वांदणां देइने पाणहारनुं पञ्चखाण क
 रे अने तिबिहार उपवास वाला खमासमण देइ इच्छ
 कारी जगवन् पसाय करी पञ्चखाणनो आदेश देजो

जी कही पाणहारनुं पञ्चस्काण^१ करे (चउविहार
 उपवास वालाने पञ्चस्काण करवानुं नथी, पण प्रजाते
 तिविहार उपवासनुं पञ्चस्काण लीधुं होय ने पाणी न
 पीधुं होय तो आ वखते चउविहार उपवासनुं पञ्चस्का
 ण करे). पढी खमा^० इच्छा^० उपधि संदिसाहु? इच्छं,
 खमा^० इच्छा^० उपधि पमिलेहुं? इच्छं कही प्रथम पमि
 लेहतां बाकी रहेलां वस्त्रोनी पमिलेहणा करे तेमां
 रात्री पोसह करनार प्रथम कामली पमिलेहे. पमिले
 हेण थइ रहे एटले सर्व देव वांड़े (विधि पूर्ववत्).
 पढी अवसरे देवसि अथवा पाहिकादिं प्रतिक्रमण क
 रे. तेमां प्रथम मात्र इरियावहि पमिलेहमी खमा^० दे
 ने चैत्यवंदन करे. सात लाख अठार पापस्थानकने व
 दले गमणा गमणे आलोवे. करेमिज्जेतेमां सघले ठेका
 णे जाव नियमं ने ठेकाणे जाव पोसहं कहे. प्रतिक्रमण
 करी रह्या पढी दिवसना पोसहवाला नीचे प्रमाणे को.

१ जो पाणी चापरवानी जरूर जेवुं होय तो शुद्धि सधियुं
 पञ्चस्काण करे अने पाडिलेहण कर्या पछी मुठी वाली धण नय
 कार गणी पाणी चापरे ते पाणहारनुं पञ्चस्काण पाडिक्रमणा व
 ते करे, पण देव वांछा पछी पाणी चापरी शकाय नहीं.

(६३ए)

खमा० देइ इरियावही पन्किमी चञ्कसायथी
जय वीयराय सुधी कहीने प्रथम याचेलीं मंसासण
कुंसी वगेरे गृहस्थने (आ तमने जले ठे एम) जलावी
देवां. पढी खमा० इच्छा० पोसह पारुं, यथा शक्ति.
खमा० इच्छा० पोसह पार्यो, तहत्ति. कही नवकार गणी
चरवला पर जमणो हाथ थापी सागरचंदो कहे.

पढी खमा० इच्छा० सुहपत्ति पमिलेहुं ? इच्छं
कही सुहपत्ति पमिलेही सामायक पारवानी विधि प्र
माणे सामायक पारे.

हवे सवारे जेणे आठ पहोरनोज पोसह लीधो
होय तेणे सांजना देव वांध्या पढी, कुंमल न लीधां
होय तो लेइने मंसासण तथा चुनो नांखेलुं अचित्त पा
णी जाचीने पढी खमा० इरियावही पन्किमीने ख
मा० देइ इच्छा० स्थंमिल पमिलेहुं ? इच्छं कही चोवीस
मांसलां करे. पढी इरियावही पन्किमीने पन्कि
क्रमण करे.

માત્ર રાત્રીના ચાર પહોરનોજ પોસહ કરવો હોય તેણે પમિલેહણ દેવવંદન વગેરે વિધિ દિવસ ઠતાં કરવાની હોવાથી વહેલા આવવું જોઈએ, અને તે દિવસે નઠામાં નઠો એકાસણાનો તપ કરેલો હોવો જોઈએ તેણે કરવાની વિધિ આ પ્રમાણે.

પ્રથમ સ્વમાળ દેશ ઈરિયાવહિ પમિક્કમવાથી માંનીને યાવત્ બહુવેલ કરશું પર્યંત સવારના પોસહ લેવાની વિધિ પ્રમાણે વિધિ કરે અને ત્યાર પછી સાંજની પમિલેહણમાં સ્વમાળ દેશ પમિલેહણ કરું ? આદેશ માગવાનો છે ત્યાંથી નપધિ પમિલેહું ? નો આદેશ માગવા પર્યંત તે પ્રમાણે વિધિ કરે. એ પ્રમાણે કર્યા પછી દેવ વાંદે, માંમલાં કરે, અને પમિક્કમણ કરે.

જેણે સવારે ચાર પહોરનો પોસહ નચર્યો છે તે નોજ વિચાર આઠ પહોરનો પોસહ લેવાનો થાય તો તેણે સાંજની પમિલેહણ કરતી વખતે ઈરિયાવહી પમિક્કમી, સ્વમાસમણ દેશ ગમણાગમણે આલોવીને પછી ઈરિયાવહી પમિક્કમવાથી માંનીને બહુવેલ કરશું

એ આદેશ પર્યંત સવારના પોસહ લેવાની વિધિ પ્રમાણે સર્વ વિધિ કરવી તેમાં “ સજ્જાય કરું ” એને બદલે “ સજ્જાયમાં હું ” કહેવું અને ત્રણ નવકારને બદલે એક નવકાર ગણવો. ત્યાર પછી સાંજની પમિલેહણમાં સ્વમાં દેશ પમિલેહણ કરું ? એ આદેશ માગવાનો છે ત્યાંથી સઘલી વિધિ પૂર્વક પમિલેહણ કરે, દેવ વાંદે, માં મલાં કરે, અને પ્રતિક્રમણ પૂર્વવત્ કરે.

હવે રાત્રી પોસહ વાલા પહોર રાત્રી સુધી સજ્જાય ધ્યાન કરે, પછી સ્વમાં ઇચ્છાં વહુ પમિપુત્રા પોરિસિ ! કહી સ્વમાં ઇરિયાવહિ પમિક્રમે, પછી સ્વમાં ઇચ્છાં વહુ પમિપુત્રા પોરિસિ રાઙય સંધારણ ઠાનું ? (ઠાઙશું) એમ કહીને ચન્નક્સાયનું ચૈત્યવંદન જય વીયરાય પર્યંત કહે; પછી સ્વમાં ઇચ્છાં સંધારા વિધિ જાણવા મુહપત્તિ પમિલેહું ? ઇહં કહી મુહપત્તિ પમિલેહીને સંધારા પોરિસીનો પાઠ કહે.

સંધારા પોરિસિ કહ્યા પછી સજ્જાય ધ્યાન કરે, અને નિંજાપીમિત્ત થાય ત્યારે માત્રુ વગેરેની બાધા ટાલીને દિવસે પમિલેહેલી જગ્યાએ સંધારો કરે. તેમાં પ્ર

अम जमीन पमिलेहीने कामली पाथरे तेनी उपर कटालाणुं पाथरीने एकवसो जुगाम पाथरे, मुहपत्ति के हेने जरावे, चरवलो परुखे मुके अने मातरीयुं पेहेरी ने मावे परुखे हाथनुं लुत्तीकुं करीने सुए. रात्रीए चालवुं परे तो मंसासण वरे पमिलेहतां चालवुं.

पाठली रात्रे जागीने नवकार संजारी जावना जावी मात्रानी बाधा टाली आवे, पढी इरियावही पमिकमी कुसुमिण डुसुमिणनो कानुस्सग करी राइ पमिकमणुं करे; तयार पढी स्थापनाचार्य पमिलेह्या पढी तेमंती सन्मुख पमिलेहण करे ते आ प्रमाणे:-

इरियावही पमिकमी खमा० देइ इच्छा० पमिले हण करुं? इच्छं कही पूर्वोक्त पांच वानां पमिलेहे, पढी खमा० देइ इच्छकारी० पमिलेहणा पमिलेहावोजी क ही वमीलनुं एक वस्त्र पमिलेहे पढी खमा० देइ इच्छा० उपधि मुहपत्ति पमिलेहु? इच्छं, कही मुहपत्ति पमिलेही

१ प्रभातमां पोसह लीधा पछी राइ पडिकमणामां जे फेरफा
२ करवानुं लखेलुं छे ते प्रमाणे करवुं.

(६४३)

खमाण इच्छाण उपधि संदिताहु ? इच्छं. कही खमाण इ
च्छाण उपधि पमिलेहु ? इच्छं, कही बाकीनां सर्व वस्त्र प
मिलेहवां. पढी इरियावही पम्किमी काजोले (पूर्व प्र
माणे); पढी देव वांदी सज्जाय कही याचेली वस्तुज
गृहस्थने जलावे. पढी इरिया वही पम्किमी पोसह
पारवानी विधि प्रमाणे पोसह ? पारे.

स्थंमिल जवानी विधि.

पोसहमां कदी स्थंमिल जवुं पढे तो मातरियुं
पेहेरी कालनो वखत होय तो माथे कटासणुं नांखी
कामली नुढी मुहपत्ति कहेमे राखी चरवलो काखमां
राखी लोटादि नानुं पात्र लइने जाय, त्यां निर्जीव
जग्या जोइ बाधा टाले. उठती वखते त्रण वार वोसिरे
रहे. पढी पोषधशालाए हाथ पग धोइ वस्त्र बदली
स्थापनाजी पासे इरियावही पम्किमे, पढी खमाण
इच्छाण गमणागमणे आलोचं ? इच्छं कही गमणागमणे
आलोववा. जतां आवस्सही ने आवतां निस्सीहि केहवी.

१ प्रथम दिवसना चार पहोरनो पोसह पारवानी विधिमां च
उकस्सायनुं चैत्यवंदन जयवीरराय पर्यंत करवानुं लखेलुं छे ते
आठ पहोर वालाने करवानुं नथी.

(६४४)

मांथे कामली नांखवा संबंधी काल.

असाम शुदी १५ थी, कारतक शुदी १४ सुधी
सवारे ने सांजे ठ ठ घमी, कारतक शुदी १५ थी फाग
ण शुदी १४ सुधी बंने टंक चार घमी. फागण शुदी
१५ थी असाम शुदी १४ सुधी बंने वखत बवे घमी.

अचित्त पाणीनो काल.

असाम शुदी १५ थी कारतक शुदी १४ सुधी
चुलेथी उत्तर्या पढी त्रण पहोरनो, कारतक शुदी १५
थी फागण शुदी १४ सुधी चार पहोरनो, फागण शु
दी १५ थी. असाम शुदी १४ सुधी पांच पहोरनो.

आ प्रमाणे काल उपरांत रहेलुं पाणी पावुं स
चित्त आय ठे. पण पावुं काल पुर्ण अया अगान ते
मां कलीचुनो नांखवाथी २४ पहोर सुधी अचित्त रदे
पण जो चुनो नांखवो जुली जाय तो उपवासनी
आलोयण आवे.

(६४५)

परचुराण समजुती.

वखत मोमो थइ जवाना जयथी पोतानी मेले
एकला पोसह उचरी ले तो फरीने तेमणे गुरु समक्ष
पोसह उचरवो. तेमां उपधी पम्हिलहुं? पर्यंत बधा
आदेश मागवा (आ विधि राइ मुहपत्ति पम्हिलेह्या अ
गाज करवी.).

पम्हिलेहण करनारे उज्जरक बेसी मौनपणे पम्हि
लेहणा करवी. जीव जंतु बराबर तपासवो अने उत्तरा
सण पेहेरवुं नहीं.

काजो लेनारने एक आंबिल तपनुं विशेष फल
मले, माटे काजो उपयोग पूर्वक बराबर लेवो.
पोसहमां १८ दोष, पांच अतिचार तथा सामा
यकना बत्रीस दोष टालवानो खप करवो.

पोसहना १८ दोष.

- १ पोसहमां ब्रती विनाना बीजा श्रावकनुं आणेलुं
- पाणी न पीवुं.
- २ पोसह निमित्ते सरस आहार लेवो नहीं.

- ३ उत्तरवारणने दिवसे विविध प्रकारनी आहारनी सामग्री मेलववी नहीं.
- ४ पोसहमां अथवा पोसह निमित्ते विजुषा (शो जा) करवी नहीं.
- ५ पोसह निमित्ते वस्त्र धोवराववां नहीं.
- ६ पोसह निमित्ते आज्ञुषण घमाववां नहीं, अने पोसहमां आज्ञूषणो पहेरवां नहीं.
- ७ पोसह निमित्ते वस्त्र रंगाववां नहीं.
- ८ पोसहमां शरीर उपरथी मेल उतारवो नहीं.
- ९ पोसहमां अकाले शयन करवुं नहीं, उंघवुं नहीं, रात्रीने बीजे पहोरे संथारा पोरसी नणा वीने निझ लेवी.
- १० पोसहमां सारी के नठारी स्त्री संवंधी कथा करवी नहीं.
- ११ पोसहमां आहारने सारो नठारो कहेवो नहीं.
- १२ पोसहमां सारी या नठारी राज कथा के युद्ध कथा करवी नहीं.

(६४७)

१३ पोसहमां देश कथा करवी नहीं.

१४ पोसहमां पूज्या पण्डितेह्या विना लघुनिति व
हीनिति परठववी नहीं.

१५ पोसहमां कोइनी निंदा करवी नहीं.

१६ पोसहमां (वगर पोसाती) माता, पिता, पु
त्र, ज्ञाइ, स्त्री वगैरे संबंधीनु साधे वार्त्तालाप
करवो नहीं.

१७ पोसहमां चोर संबंधी वार्त्ता करवी नहीं.

१८ पोसहमां स्त्रीनां अंगोपांग नीरखीने जोवां नहीं.

श्री ज्ञान पंचमी स्तुतिना ठुटा शब्दना अर्थ.

प्राज्य-मोटो

चंचव-दीपतुं

पंचाक्ष-पांच इंद्रियो

द्विरद-हस्ती, हाथी.

मदभिदा-मदभेदवे

करी

पंचदक्र-सिंह

पंच देहा-पांच श

रीरवाला

प्रास्त-प्रकर्षे करी

टालेला

प्रपंच:-विस्तार

सत्तपसि-सारा तपमां

वितनुतां-विस्तारो

पंचम ज्ञानवान्-कैव

ल ज्ञान वाला

संप्रीणन्-खुशी क

रतो

सच्चकोरान्-उत्तम

चकोरने

तिलकसम:-तिलक

समान

कौशिक-धूड

पुण्याब्धि-पुण्यनो

समुद्र

प्रीतिदायी-प्रीतिनो

देनार

(६४८)

सितरुचिः-चंद्रमा	अभिध-नाम	भाविनां-भव्य जी
स्वीय-पोताना	यास्यंति-पामशे	वोने
गोभिः-किरण वडे	जग्मुः-पामता हवा	अस्तु-हो
तमांसि-अंधकारोने	यस्मात्-जेथी	हुंकार-हुंकारो
सांद्राणि-घाह	अमरतां-अजरामरप	दूरिकृत-दूर करेला
ध्वंसमानः-नाश क	णाने	सुकृत-सुकृत करना
रतो	निर्व्वाणपुष्ट्यां-मोक्ष	ब्रात-समूह
कुवलय-चंद्रविकाशी	नगरीमां	प्रचाराः-विस्तार
कमल, पृथ्वी वलय	यात्वा-पामीने, जइने	भृंगी-भमरी
उल्लास-विकसितपणा	दशम-दशमो	पंचम्यह-पंचमीना
ने, हर्षने	सुधाकुंडं-अमृतकुंड	दिवसना
उच्चैः-अत्यंत	पंचम्याः-पांचमना	तपोर्थ-तपने अर्थ
चकार-करतो हवो	तपसि-तपमां	वितरतु-विस्तारो
पुण्यात्-पुष्टी करो	विशदधियां-निर्मल	धीमतां-बुद्धिवालांना
वासरस्य-दिवसना	बुद्धिवालाने	सावधाना-सावधान

अथ ज्ञान पंचमी स्तुति प्रारंभः

॥ श्रीनेमिः पंचरूपत्रिदशपतिकृ
त प्राज्य जन्मान्निषेक, श्र्वचत्पंचा
क्रमत्तद्विरदमदन्निदा पंचवक्रोप

(६४ए)

पमानः ॥ निर्मुक्तः पंचदेह्याः परम
सुखमयप्रास्तकर्मप्रपंचः, कल्या
णं पंचमीसत्तपसि वितनुतां पंचम
ज्ञानवान् वः ॥ १ ॥ संप्रीणन्
सच्चकोरान् शिवतिलकसमः कौ
शिकानंद मूर्तिः, पुण्याब्धिप्रीति
दायी सितरुचिरिव यः स्वीयगोत्रि
स्तमांसि ॥ सांझाणि ध्वंसमानः
सकलकुवलयोद्भासमुच्चैश्वकार,
ज्ञानं पुण्याज्जिनौधः स तपसि न
विनां पंचमीवासरस्य ॥ २ ॥ पी
त्वा नानान्निधार्थामृतरसमसमं यां
ति यास्यंति जग्मु, ज्जीवा यस्माद
नेके विधिवदमरतां प्राज्यनिर्वाण
पुर्याम् ॥ यात्वा देवाधिदेवागम द

(६५०)

शमसुधाकुंभमानंद हेतु, स्तत्पंच
म्यास्तपस्युद्यतविशदधियां जावि
नामस्तु नित्यं ॥ ३ ॥ स्वर्णालंका
रवल्गन्मणि किरणगणध्वस्तनि
त्पांधकारा, हुंकारारावदूरीकृतसु
कृतजनव्रातविघ्नप्रचारा ॥ देवीश्री
अंबिकाख्या जिनवरचरणांज्जो
ज्जंगीसमाना, पंचम्यहस्तपोथ्यवितर
तु कुशलं धीमतां सावधाना ॥४॥

अर्थः—श्रीनेमिः पंचरूप के० श्रीनेमिनाथ जग
वान् ते तमारा पंचमीना सारा तपने विषे निर्विघ्न
प्रत्ये विस्तारो. हवे ते नेमिनाथ जगवान् केवा ठे!
तो के पांच रूपे करीने देवतानो पति एवो जे ई
तेणे कर्यो ठे मोटो अने उत्तम जन्मान्निपेक जेमने
एवा, वली ते केवा ठे? तो के दीपता एवा पांच ई
योरूप दासीना मद जेदेवे करीने सिद्धनुं उपमाने

જેમને એવા, વલી તે કેવા છે ? તો કે ઔદારિકાદિક
 પાંચ શરીર તેથી મુકાણા એવા છે. વલી કેવા છે ? તો
 કે નુત્કુષ્ટ એવા મુખે કરી સહિત છે. વલી કેવા છે ?
 તો કે પ્રકર્ષે કરી ટાલ્યા છે કર્મના વિસ્તાર જેમણે
 એવા છે. વલી કેવા છે ? તો કે પાંચમું જ્ઞાન જે કેવ
 લજ્ઞાન તેણે કરી યુક્ત છે ॥ ૧ ॥

સંપ્રીણન્ સચ્ચકોરાન્ કેળ હવે જિનસમુદાયને
 ચંડની સમાનતારૂપે સ્તવે છે. ચંડમા સદૃશ એવો ત
 થા મોક્ષને વિષે તિલક સમાન એવો જે જિનસમુદાય
 છે, તે જ્ઞવ્ય જનોના પંચમીના દિવસના રૂમા તપને
 વિષે જ્ઞાનને પુષ્ટિ કરો. હવે તે જિનસમુદાયને ચંડ તુ
 લ્યતા કેવી રીતે છે ? તે સર્વ વિશેષણો કરીને કહે
 છે. જેમ ચંડ ઉત્તમ ચકોરને રૂમે પ્રકારે આનંદ કરે છે
 તેમ એ શ્રી જિનસમુદાય પણ સત્પુરુષરૂપ ચકોરને સ
 મ્યક્ પ્રકારે હર્ષ કરે છે. વલી જેમ ચંડ ધૂરને આનં
 દદાયક છે મૂર્તિ જેની એવો છે, તેમ એ જિનસમુદાય
 પણ ઇંડને આનંદરૂપ છે મૂર્તિ જેની એવો છે. તથા જે
 મ ચંડ પુણ્યકારક સમુદને પ્રીતિદાયક છે, તેમ જિનો

ઘ પણ પુણ્યરૂપ જે સમુદ્ર તેને પ્રીતિનો દેનારો છે, તથા જેમ ચંડ પોતાનાં કિરણોએ કરી ગાઢ અંધકારોને નાશ કરનારો છે, તેમ જિનૌઘ પણ ગાઢ એવાં જીવોનાં અજ્ઞાનને નાશ કરનારો છે. તથા જેમ ચંડ સમગ્ર કુવલય કેળ ચંડ વિકાશી કમલોને વિકસિતપણાને અત્યંત કરતો હવો, તેમ એ જિનૌઘ પણ કુવલય કેળ પૃથ્વીવલયને હર્ષને કરતો હવો એવો છે, માટે તેને ચંડ માની ઉપમા યોગ્ય છે ॥ ૨ ॥

પીત્વા નાનાન્નિધાર્યાં કેળ શ્રી વીતરાગ દેવનો સિદ્ધાંતરૂપ દશમો એવો અમૃતકુંડ જે છે, તે જ્ઞાનપંચમી ના તપને વિષે ઝજમાલ તથા નિર્મલ છે બુદ્ધિ જેમની એવા જ્ઞાન જીવોને આનંદનો કારણજૂત નિરંતર થાઉં હવે તે જિનાગમરૂપ દશમ સુધાકુંડ કેવો છે ? તો કે નાના પ્રકારનાં છે નામ જેમનાં એવા જે અર્થો, તે રૂપ અમૃતરસ છે જેમાં એવો છે, તેને વિધિ પ્રમાણે પાન કરીને નિરૂપમ એવા સુખને પામશે, પામે છે, અને પામતા હવા; જેનું પાન કરવા થકી અનેક એવા જીવો જે છે, તે મોટી એવી મોક્ષ નગરીને વિષે અજરામરપણાને પા

મીને સ્વસ્થ થાય છે ॥ ૩ ॥

સ્વર્ણાલંકાર કેળ શ્રી અંબિકા છે નામ જેનું એવી દેવી, તે સાવધાન બતી બુદ્ધિમાન એવા જીવિક જીવના પંચમીના દિવસના તપને માટે કુશલ જે છે તેને વિસ્તારો. તે દેવી કેવી છે ? તો કે સોનાના અલંકારને વિષે વલગેલા મણિનાં કિરણોના સમૂહ કરી ટાલ્યો છે નિરંતર અંધકાર જેણે એવી છે; વલી તે દેવી કેવી છે ? તો કે હુંકારના શબ્દે કરી દૂર કર્યા છે, સુકૃતનો કરનારો એવો જે જનસમૂહ, તેના વિગ્ન પ્રચાર જેણે એવી છે; વલી તે દેવી કેવી છે ? તો કે વીતરાગનાં ચરણરૂપ કમલને વિષે જામરી સમાન છે. ॥૪॥

॥ અથ ચૈત્યવંદનો ॥

॥ અથ બીજનું ચૈત્યવંદન ॥

હવિધ ધર્મ જિણે ઉપદિશ્યો, ચોથા અગ્નિનંદન
 ॥ બીજે જન્મ્યા તે પ્રજ્ઞુ, જવ હુઃખ નિઃકંદન ॥ ૧ ॥
 હવિધ ધ્યાન તુમ્હે પરિહરો, આદરો દોય ધ્યાન ॥
 એમ પ્રકાશ્યું સુમતિ જિને, તે ચવિયા બીજ દિન ॥૨॥

(६५४)

दोय बंधन राग द्वेष, तेहने ज्ञवि तजीए ॥ मुज परे
शीतल जिन कहे, बीज दिन शिव ज्ञजीए ॥ ३ ॥
जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीजदिने
वासुपूज्य परे; लहो केवलनाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय
व्यवहार दोय, एकांत न ग्रहीये ॥ अरजिन बीज दिने
चवी, एम जिन आगल कहीए ॥ ५ ॥ वर्तमान चो
बीशीये, एम जिन कळयाण ॥ बीजदिन केइ पामी
या, प्रज्ञूनाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोबीशीये
ए, हुआं बहु कळयाण ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नम
तां होय सुख खाण ॥ ७ ॥

॥ अथ ज्ञान पांचमनुं चैत्यवंदन ॥

त्रिगुणे वेग वीर जिन, ज्ञांखे ज्ञविजन आगे.
॥ त्रिकरणसुं त्रिहुं लोक जन, निसुणो मन रागे
॥ १ ॥ आराहो ज्ञलि ज्ञातसें, पांचम अजुवाली ॥
ज्ञान आराधवा कारणे; एहज तीर्थ निहाली ॥ २ ॥
ज्ञानविना पशु सारिखा, जाणो एणे संसार ॥ ज्ञान
आराधनथी लहे, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान

रहित क्रीया कही, कास कुसुम उपमान; ॥ लोका
 लोक प्रकाश कर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी
 श्वासोश्वासमां, करे कर्मनो ठेह ॥ पुर्व कोमि वरसां
 लगे, अज्ञानी करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक कहि
 क्रीया, सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञान तणो महिमा घ
 णो, अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥ पंच मास लघु पंच
 मी, जावजीव उत्कष्टी; पंच वरस पंच मासनी, पं
 चमि करो शुज दृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए,
 काजस्सग्ग लोगस केरो ॥ नजमणुं करो जावशुं, टाले
 जव फेरो ॥ ८ ॥ एणी पेरे पंचमि आराहिए, आणी
 जाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी परें, रंग विजय
 लहो सार ॥ ९ ॥

॥ अथ अष्टमीनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ माहाशुदि आठमने दिने, विजया सुत जा
 यो ॥ तेम फागण शुदि आठमे, संजव चवी आयो
 ॥ १ ॥ चैत्रवदिनी आठमे, जनम्या रुषज जिणंद ॥
 दिक्ता पण ए दिन लहि, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥
 माधव शुदि आठम दिने, आठ कर्म कस्यां दूर ॥ अ

जिनंदन चोथा प्रभु, पाम्या सुख नरपूर ॥ ३ ॥ एदि
 ज आठम उजलि, जनम्या सुमति जिणंद ॥ आठ
 जाति कलशें करी, न्हवरावे सुर इंद ॥ ४ ॥ जनम्या
 जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रत स्वामि ॥ नेमि असाठ
 शुदि आठमे, अष्टमीगति पामि ॥ ५ ॥ श्रावणवदि
 नी आठमे, नेमि जनम्या जगन्नाण ॥ तेम श्रावण
 शुदि आठमे, पासजीनुं निर्वाण ॥ ६ ॥ ज्ञाप्वा वदि
 आठम दिने, चविया स्वामि सुपास ॥ जिन उत्तम
 पद पद्मने, सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ शासन नायक वीरजी, प्रभु केवल पायो ॥
 संघ चतुरविध थापवा, महसेन वन आयो ॥ १ ॥ मा
 धव सीत एकादशी, सोमल छीज यइ ॥ इंद नृति
 आदे मल्या, एकादश विइ ॥ २ ॥ एकादशसैं चण्ड
 णा, तेहनो परिवार ॥ वेद अरथ अवलो करे, मन अनि
 मान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय हरी ए, एका
 श गणधार; ॥ वीरे थाप्या वंदिए, जिन शासन ज

कार ॥ ३ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि पास, वर चरण वि
 लाशी; ॥ रुषज अजित सुमति नमी, मल्लि धनघाति
 विनाशी ॥ ५ ॥ पञ्च प्रभु शिववास पास, जव जवना
 तोरि; ॥ एकादशी दिन आपणी, रिद्ध सघली जोरि
 ॥ ६ ॥ दश क्षेत्रे त्रिहुं कालनां, त्रणशें कल्याण; ॥ व
 रस इग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगि
 यार अंग लखाविये, एकादश पाठां; ॥ पुंजणि छवणि
 विंटणी; मसी कागल काठां ॥ ८ ॥ अगियार अव्रत ठां
 रुवा ए. वहो परिमा अग्यार; ॥ खिमा विजयजिन शा
 सनें, कस्यो सफल अवतार ॥ ए ॥

॥ अथ ॥ रोहणी तपनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ रोहणी तप आराधिये, श्री श्री वासुपूज्य; ॥
 दुःख दोहग डुरें टले, पूजक होए पूज्य ॥ १ ॥ पहेला
 कीजें वास क्षेत्र, प्रह उगीने प्रेम ॥ मध्यान्हें करी
 धोतियां, मन वच काय खेम ॥ २ ॥ अष्ट प्रकारनी
 रचीए, पूजा नृत्य वाजित्र ॥ जावें जावना जावियें,
 कीजें जन्म पवित्र ॥ ३ ॥ त्रीहुं कालें लेइ धूप दीप;

(६५८)

प्रभु आगल कीजे; ॥ जिनवर केरी जक्तिसुं, अविन
ल सुख लीजे ॥ ४ ॥ जिनवर पूजा जिन स्तवन, जि
ननो किजें जाप ॥ जिनवर पदने ध्याइए, जेम नावे
संताप ॥ ५ ॥ कोरु कोरु गुण फल दिये, उत्तरोत्तर
जेद ॥ मान कहे ए विध करो, होय तो जवनो वेद
॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ वीशस्थानक तपना काउस्तगगुं
चैत्यवंदन ॥

चोवीश पन्नर पिस्तालीशनो. ठत्रीसनो करिये
॥ दश पचवीश सत्तावीशनो, काउस्तगग मन धरिये
॥ १ ॥ पंच समसठी दश बली, सित्तेर नव पणवीम
॥ वार अरुवीश लोगस तणो, काउस्तगग धरो गुणी
॥ २ ॥ वीश सत्तर एकावन्न, छादशने पंच ॥ एणि पं
काउस्तगग जो करे, तो जाये जव संच ॥ ३ ॥
नुकमे काउस्तगग मन धरो, गुणि लेजो वीश, वीश
स्थानक एम जाणीए, संक्षेपध्री लेश ॥ ४ ॥ जाव
मनमां घणो, जो एक पद आराधे ॥ जिन उन्नम

(६५ए)

पद्मने, नमी निज कार्य साधे ॥ ५ ॥ इति.

॥ अथ श्री आदिजिन चैत्यवंदन ॥

सरवारथ सिंहे थकी, चविया आदि जिनंद ॥
प्रथम राय विनता वसे, मानव गण सुखकंद ॥ १ ॥
योनि नकुल जिणंदने, हायन एक हजार ॥ मौना
तीर्ते केवली, वरु हेठे निरधार ॥ २ ॥ उत्तराष्टाढा
जन्म ठे ए, धनराशि अरिहंत ॥ दशसहस परिवारशुं,
वीर कहे शिवकंत ॥ ३ ॥ इति.

॥ अथ श्री चोवीश जिनना वर्णनं चैत्यवंदन ॥

पद्मप्रजने वासुपूज्य, दोय राता कहीए ॥ चंड
प्रजने सुविधिनाथ, दो नुज्ज्वल लहीए ॥ १ ॥ मद्धि
नाथ ने पार्श्वनाथ, दो नीला नीरख्या, सुनिसुव्रत ने
नेमनाथ, दो अंजन सरखा ॥ २ ॥ सोले जिन कंचन
सया ए, एदा जिन चोवीश ॥ धीर विमल पंक्ति त
णो, ज्ञानविमल कहे शीश ॥ ३ ॥

॥ अथ चोविश जिन लंठननुं चैत्यवंदन ॥

वृषज लंठन ऋषज देव, अजित लंठन हाथी
 ॥ संजव लंठन घोरलो, शिवपुरनो साथी ॥ १ ॥ अ
 जिनंदन लंठन कपि, क्रौंच लंठन सुमति ॥ पद्म लं
 ठन पद्मप्रभु, विश्वदेव सुमति ॥ २ ॥ सुपास लंठन
 साथीन, चंद्रप्रज लंठन चंद ॥ मगर लंठन सुविधि
 प्रभु, श्रीवढ शीतल जिणंद ॥ ३ ॥ लंठन खड्गी
 श्रेयांसनो, वासुपूज्यने महिष ॥ सूअर लंठन पा
 य विमलदेव, जवियां सेवो ईश ॥ ४ ॥ सींचाणो
 जिन अनंतने, वज्र लंठन श्री धर्म ॥ शांति लंठन मर
 घलो, राखे धरमनो मर्म ॥ ५ ॥ कुशुं लंठन वोक्मो
 अरजिन नंदावर्त ॥ घट लंठन मद्धि प्रभु, काचको
 मुनिसुव्रत ॥ ६ ॥ नमि जिनने नीलो कमल, पय पं
 कज नमीय ॥ शंख लंठन प्रभु नेमजी, दीप्ति उंभ
 अंधिय ॥ ७ ॥ पारसनाथजीने चरणे सर्प, नील बाण
 सोहात ॥ सिंह लंठन कंचन तनु, वर्धमान विरुपाक्ष
 ॥ ८ ॥ इणि पेरे लंठन चींतवी, उलखीए जिनाए

(६६?)

॥ श्री महिमा प्रभु सुरिनो, लक्ष्मी रतनसुरि राय
॥ ए ॥ इति चैत्यवंदन ॥

अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन.

जय चिंतामणि पार्श्वनाथ, जय त्रिभुवन स्वा
मी॥अष्ट कर्म रिपु जीतीने, पंचम गति पामी ॥ १ ॥
प्रभु नामें आनंद कंद, सुख संपत्ति लहीए ॥ प्रभुनामे
जव जय तणां, पातक सब दहीए ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं वरुण
जोमी करीए, जपीए पारस नाम; विष अमृत अइ
परगमे, पावे अविचल ठाम ॥ ३ ॥

श्री शांतिजिन चैत्यवंदन.

जय जय शांतिजिणंद देव, हृष्टिअणाउर स्वा
मी; विश्वसेन कुल चंद सम, प्रभु अंतरजामी ॥ १ ॥
अचिरा उरसर हंस जिम, जिनवर जयकारी; मारी
रोग निवारके, कीर्ति विस्तारी ॥ २ ॥ सोलमा जि
नवर प्रणमीए ए, नित्य उठी नामी शीश ॥ सुरनर
रूप प्रसन्न मन, नमतां वाधे जगीश ॥ ३ ॥

(६६१)

श्री आदिजिन चैत्यवन्दन.

अरिहंत नमो जगवंत नमो, परमेश्वर जिना
ज नमो; प्रप्रम जनेसर प्रेमे पेशत, सिद्धां सधवां
काज नमो ॥ अ० ॥ १ ॥ प्रज्जु पारंगत परममहोदय,
अविनाशी अकलंक नमो; अजर अमर अद्भुत अति
शाय निधि, प्रवचन जलधि मयंक नमो ॥ अ० ॥ २ ॥
तिहुयण ज्ञविषण जन मण वंठिय, पूरण देव रसा
ल नमो; ललि ललि पाय नमुं हुं जाले, कर जोर्मनि
त्रिकाल नमो ॥ अ० ॥ ३ ॥ सिद्ध दुद्ध तुं जग जन स
ज्जन, नयनानंदन देव नमो; सकल सुरासुर नरवर ना
यक, सारे अहनिश सेव नमो ॥ अ० ॥ ४ ॥ तुं तीर्थ
कर सुखकर साहिव, तुं निःकारण वंधु नमो; शम्भु
गत ज्ञविने हितवठल, तुं हि कृपारस सिंधु नमो ॥ अ०
॥ ५ ॥ केवलज्ञानादर्शो दर्शित, लोकालोच स्वभाव
मो; नाशित सकल कलंक कलुष गण, उगित उपश
ज्ञाव नमो ॥ अ० ॥ ६ ॥ जगचिंतामणि जगगुरु ज
हित, कारक जगजन नाथ नमो; घोर अपार जग
धि तारण, तुं शिवपुरनो साथ नमो ॥ अ० ॥ ७ ॥

(६६३)
अशरण शरण नीराग निरंजन, निरुपाधिक जगदीश
नमो; बोधि दीन अनूपम दानेश्वर, ज्ञानविमल स्वामी
श नमो ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ अथ श्री गौतमाष्टक छंद ॥
वीर जिसेसर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो
निशदिश ॥ जो कीजे गौतमनुं ध्यान, तो घर विलसे
नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरिवर चढे, मन
वांछित हेला संपजे ॥ गौतम नामे नावे रोग, गौतम
नामे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुद्धा वंक्रा, त
स नामे नावे ठुंक्रा ॥ चूत प्रेत नवि मंने प्राण, ते
गौतमना करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे निर्मल का
य, गौतम नामे वाधे आय ॥ गौतम जिन शासन श
खगार, गौतम नामे जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल बाल
सुरहां घृत गोल, मन वंछित कापरु तंवोल ॥ धरशु
धरणी निर्मल चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥
गौतम उदयो अविचल ज्ञान, गौतम नाम जपो जग
जाण ॥ मोटां मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सक

ल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोमानी जोरु, वार
 पोहोंचे वंछित कोरु ॥ महिअल माने मोटा राय, जो
 तुठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्या पातक ट
 ले, उत्तम नरनी संगत मले ॥ गौतम नामे निर्मल
 ज्ञान, गोतम नामे बाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अ
 धारो सहु, गुरु गोतमना गुण ठे बहु ॥ कहे लावण
 समय कर जोरु, गौतम तुठे संपत्ति कोरु ॥ ए॥ इति.

॥ अथश्री सोल सतीनो ठंद ॥

आदिनाथ आदें जिनवर वंदी, सफल मनोए
 कीजीयें ए ॥ प्रजातें उठी मंगलिक कामे, सोल सती
 नां नाम लीजीए ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग हितकारी
 ब्राह्मी जतरनी बेहेनमीए ॥ घट घट व्यापक अक्षर
 रूपे, सोल सति मांहे जे वमीए ॥ २ ॥ बाहुवल जगि
 नी सतीय शिरोमणि, सुंदरी नामे रूपज सुताए ॥
 अंकस्वरूपी त्रिजुवन मांहे, जेह अनुपम गुणजुताए
 ॥ ३ ॥ चंदनवाला बालपणाश्री शीयलवंती शुद्ध अ
 वीका ए ॥ अरुदना बाकुला वीर प्रति लाज्या, केव
 लही व्रत जाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ बागि

(६६५)

नंदिनी, राजीमति नेमवद्वज्जा ए ॥ जोवन वेशे काम
ने जीत्यो, संजम लेइ देव डुल्लज्जा ए ॥ ५ ॥ पंच न
रतारी पांमव नारी, डुपद तनया वखाणीए ए ॥ एक
सो आठे चीर पूराणां, शीयल महिमा तस जाणीये
ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम, कौशल्या कु
ल चंडिका ए ॥ शियल सलुणी राम जनेता, पुन्य त
णी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥ कौशंबिक गामे संतानिक ना
मे, राज्य करे रंग राजीनु ए ॥ तस घर घरणी मृगा
वती सती, सुर नुवने जश गाजीनु ए ॥ ८ ॥ सुल
सा साची शीयले न काची ॥ राची नहिं विषयारसे
ए ॥ सुखसुं जोतां पाप पलाए, नाम लेतां मन उल्ल
से ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामिनी, जनक
सुता सीता सती ए ॥ जग सहुं जाणे धीज करंतां,
प्रनल शीतल अयो शियलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांत
ए चावणी बांधी कुवाथकी जल काढीयुंए ॥ कलंक
उतारी सतीय सुनझ, चंपा वार उघासीयुंए ॥ ११ ॥
सुरनर वंदित शियल अखंफित, शीवा शीवपद गामि
नीए ॥ जेहने नामे निर्मल अइए, बलिहारी तस ना

(६६६)

सनी ए ॥ १२ ॥ हस्तीनागपुरे पांशुरायनी कुंता ना
मे कामनी ए ॥ पांशुव माता दसे दसारणी, वेन पति
व्रता पद्मिनी ए ॥ १३ ॥ शीयलवती नामे शीयलवत
धारिणी, त्रिविधे तेहने वंदिए ए ॥ नाम जपतां पातक
जाए, दरिद्रता दुरित निकुंदी ए ॥ १४ ॥ निपिया न
गरी नलह नरिंदनी, दस्यंती तल मेहनी ए ॥ संकट
परुतां शीयलज राखुं, त्रिभुवन कीर्ति जेहनी ए ॥
अनंग अतीता जगजन पूजिता, पुष्पचूला ने प्रज्ञाव
ती ए ॥ विश्व विख्याता कामित दाता, सोलमी सती
पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे ज्ञाखी ज्ञाखे साखी, उदय
स्तन ज्ञाखे सुदा ए, बाहाणुं बातां जे नर ज्ञाखे, ते
लहेखे सुख संपदा ए ॥ १७ ॥ इति.

॥ अथ श्री नवकारनो मंत्र ॥

(दोहा.)

वंचित पूरे विविध परे, श्री जिनशासन लाग
निश्चे श्री नवकार नित, जपतां जय जयकार ॥ १ ॥ अ
ससठ अक्षर अविक फल, नवपद नवे निधान; वीर
राग स्वयं मुख वदे, पंच परमेशी प्रधान ॥ २ ॥ एक

(६६७)

अक्षर एक चित्त, समस्यां संपत्ति आय, संचित सागर
सातनां, पातक दूर पलाय. ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकु
टमणि, सदगुरु ज्ञाहित सार; सो ज्ञवियां मन शुद्ध
शु, नित्य जपिए नवकार. ॥ ४ ॥

(ठंड हाटकी.)

नवकार अक्षी श्रीपाल नरेश्वर पाम्यो, राज्य प्र
सिद्ध; समज्ञान विषे शिव नाम कुमरने, सोवन पुरि
सो सिद्ध; नव लाख जपंतां नरक निवारे, पामे ज्ञव
नो पार; सो ज्ञवियां ज्ञते चोखे चित्ते, नित्य जपिए
नवकार ॥ ५ ॥ बांधी वरुणाखा शिंके बेसी, हेठल
कुंरु हुताश; तस्करने मंत्र समप्यो श्रावके, उरुचो
ते आकाश; विधिरीते जप्यो विषधर विष टाले, ढाले
अमृत धार. ॥ सोण ॥ ६ ॥ बीजोरां कारण राय म
हाबल, व्यंतर दुष्ट विरोध; जेणे नवकारे हत्या टाली
पाम्यो यक्ष प्रतिबोध; नव लाख जपंतां आए जिनवर,
इशो ठे अधिकार, सोण ॥ ७ ॥ पद्धिपति शिख्यो
मुनिवर पामे, महा मंत्र मन शुद्ध; परजव ते राज
सिंह पृथ्वीपति, पाम्यो परिगल ऋद्ध; ए मंत्र अक्षी
अमरापुर पहोत्यो, चारुदत्त सुविचार ॥ सोण ॥ ८ ॥

(६६७)

सन्यासी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाले; दीधो
 श्री पासकुमारे पन्नग, अध बलतो ते ढाले; संजला
 व्यो श्री नवकार स्वयंमुख, इंद्रनुवन अवतार. ॥ सो०
 ॥ ए ॥ मन शुद्धे जपतां मयणांसुंदरी, पामी प्रिय
 संयोग; इण ध्याने कष्ट टळ्युं जंवरनुं, रक्त पित्तनो
 रोग; निश्चेशुं जपतां नवनिधि आये, धर्म तणो आधा
 र. ॥ सो० ॥ १० ॥ घटमांही कृष्ण जुजंगम घा
 ट्यो, घरणी करवा घात; परमेष्टि प्रज्ञावे द्वार फुलनो,
 वसुधा मांही विख्यात; कमलावतीये पिंगल कीधो,
 पाप तणो परिहार. ॥ सो० ॥ ११ ॥ गयणांगण जाति
 राखी ग्रहीने, पामी बाण प्रहार; पद पंच सुणतां
 पांमुपति घर, ते अइ कुंता नार; ए मंत्र अमुलक म
 हिमा मंदिर, जवडुःख जंजण हार; ॥ सो० ॥ १२ ॥
 कंवल ने संवल कादव काढ्यां, शकट पांचशे मान;
 दीधे नवकारे गया देवलोके, विलसे अमर विमान;
 ए मंत्र अकी संपति वसुधा तले, विलसे जैन विदा
 र; ॥ सो० ॥ १३ ॥ आगे चोवीशी हुइ अनंती, होइ
 वार अनंत; नवकार तणी कोइ आदि न जाणे, इम

(६६ए)

ज्ञांखे अरिहंत; पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचे, सम
ख्यां संपत्ति सार; ॥ सोण ॥ १४ ॥ परमेष्ठि सुरपद
ते पण पामे, जे कृत कर्म कठोर; पुंरुगिरि
उपर प्रत्यक्ष पेख्यो, मणिधरने एक मोर; सहगुरुने
सन्मुख विधि समरंतां, सफल जनम संसार. ॥ सोण
॥ १५ ॥ शूलिकारोपण तस्कर कीधो, लोहखरो पर
सिद्ध; तिहां शेठे नवकार सुणाव्यो, पाम्यो अमरनी
ऋद्ध; शेठने घेर आवी विघ्न निवाख्यां, सुरे करी मनो
हार; ॥ सोण ॥ १६ ॥ पंच परमेष्ठि ज्ञानज पंचह,
पंच दान चारित्र; पंच सजाय महाव्रत पंचह, पंच
समिति समकित; पंच प्रमादह विषय तजो पंच, पा
लो पंचाचार. ॥ सो० ॥ १७ ॥

कलश ठप्पय.

नित्य जपीये नवकार, सारसंपत्ति सुखदायक;
शुद्ध मंत्र ए शाश्वतो, इम जंपे श्री जगनायक, श्री
अरिहंत सुसिद्ध, शुद्ध आचार्य ज्ञणीजे; श्री उवजाय
सुसाधु, पंच परमेष्ठि शुणीजे; नवकार सार संसार

(६७०)

ठे, कुशल लाज वाचक कहे एक चित्ते आराधतां, वि
विध ऋद्धि वंछित लहे ॥ १७ ॥

॥ इति श्री महावीरस्वामीनो ठंद समाप्त ॥

अथ श्री महावीरस्वामीनो ठंद.

श्री सिद्धारथ कुल शरणगार, त्रिशलादे सुत ज
ग आधार; शोभे सुंदर सोवन वान, शरण तमारुं श्री
वर्द्धमान ॥ १ ॥ तुम नामे लहिये संपदा, तुम नामे
मन वंछित कदा; तुम नामे लहिये सनमान, शरण
॥ २ ॥ दुर्जन दुष्ट वैरि विकराल, तुम नामे नासे त
तकाल; तुम नामे दिन दिन कल्याण, शरण ॥ ३ ॥
तुम नामे नावे आपदा, चूत प्रेत व्यंतर नहि कदा;
रोग शोग चिंता नवि जाण, शरण ॥ ४ ॥ प्रद्वारि
क पीमा नवि करे, नाम तमारुं जे अनुसरे; धर्मसिंह
मुनि ज्ञाव प्रधान, शरण ॥ ५ ॥

॥ इति श्री महावीरस्वामीनो ठंद समाप्त ॥

॥ अथ श्री नवकार लघु ढंद ॥

सुख कारण जवियण, समरो नित्य नवकार,
 जिन शालन आगम, चौद पूरवनो सार; एमंत्रनो म
 हिमा, कहेतां न लहुं पार; सुरतरु जिम चिंतित, वंठि
 त फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव, सेव करे क
 र जोरु; जुवि मंरुल विचरे, तारे जवियण कोरु; सुर
 ढंदें विलसे, अतिशय जास अनंत; पेहेले पद नमियें,
 अरिगंजन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पन्नरे जेदें, सिद्ध अया
 जगवंत; पंचमी गति पोहोता, अष्ट करम करि अंत;
 कल अकल स्वरूपी पंचानंतक तेह; जिणवर पय प्र
 णमुं, बीजे पद वली एह ॥ ३ ॥ गद्य ज्ञार धुरंधुर, सुं
 दर शशिहर सोम, करे सारण वारण, गुण वत्तीसैं
 ओम; श्रुत जाण शिरोमणि, सागर जेम गंजीर, त्री
 जे पद नमिये, आचारजं गुणधीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गु
 ण आगर, सूत्र जणावे सार, तप विधि संयोगें, ज्ञां
 खे अर्थ विचार; सुनिवर गुण जुत्ता, कहियें ते भवआ
 य; चोथे पद नमियें, अहोनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥
 पंचाश्रव टाले, पाले पंचाचार; तपसी गुण धारी, वा

(६७२)

रे विषय विकार; त्रस थावर पीहर, लोक मांहे जे सा
ध; त्रिविधे ते प्रणमु, परमारथ जिणें लाध ॥ ६ ॥ अ
रि करि हरि सायणी, मायणि जूत वैताल, सवि पाप
पणासै, वाधे मंगल माल; एणें समरण संकट, दूर ट
ले ततकाल, इम जंपे जिनप्रज्ञ; सूरि शिष्य रसाल ॥ ७ ॥

॥ अथ बीज तिथी तपनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ फतमल पाणीमांने जाय ॥ ए देशी. ॥

॥ प्रणमी सारद माय, शासन वीर सुहंकरुंजी
॥ बीज तिथी गुण गेह, आदरो ज्ञवियण सुंदरुंजी
॥ १ ॥ एह दिन पंच कळयाण, विवरीने कहुं ते सु
णोजी ॥ माहा शुदि बीजे जाण, जन्म अजिनंदन
तणोजी ॥ २ ॥ श्रावण शुदिनी हो बीज, सुमति न
व्या सुरलोकथी जी ॥ तारण ज्ञवोदधि तेह, तस पद
सेवे सुर थोकथी जी ॥ ३ ॥ समेतशिखर शुभ्र वा
ण, दशमा शीतल जिन गणुजी ॥ चैत्र वदिनी हो
बीज, वस्त्रा मुक्ति तस सुख घणुंजी ॥ ४ ॥ फाद्युन
मासनी बीज, उत्तम उज्ज्वल मासनी जी ॥ अरनाथ

तस चवन, कर्म दये तव पासनीजी ॥ ५ ॥ उत्तम
 माघज मास, शुद्धि बीजे वासुपूज्यनो जी ॥ एहिज दि
 न केवल नाण, सरण करो जिनराजनो जी ॥ ६ ॥
 करणी रूप करो खेत, समकित रूप रोपो तिहांजी ॥
 खातर किरिया हो जाण, खेम समता करी जिहां जी
 ॥ ७ ॥ उपशम तद्रूप नीर, समकित ठेम प्रगट
 होवेजी ॥ संतोष करी ग्रहो वाम, पञ्चखाण व्रत चोकि
 सोहेजी ॥ ८ ॥ नासे कर्म रिपु चोर, समकित वृक्ष
 फल्युं तिहांजी, मांजर अनुभव रूप, उत्तरे चारित्र
 फल जिहांजी ॥ ९ ॥ शांति सुधारस वारि, पान क
 री सुख लिजीएं जी ॥ तंबोल सम द्यो स्वाद, जीवने
 संतोष रस किजीएं जी ॥ १० ॥ बीज करो बावीस
 मास, उत्कृष्टी बावीस मासनी जी; ॥ चोविहार उप
 वास, पालिये शील वसुधासनी जी ॥ ११ ॥ आवश्य
 क दोय बार, पन्निहण दोय लिजीएं जी ॥ देवदंडन
 त्रण काल, मन वच कायाए किजीएं जी ॥ १२ ॥
 उजमणुं शुद्ध चित्त, करी धरीये संयोगग्री जी ॥ जि
 न वाणी रस एम, पिजीए श्रुत उपयोगग्री जी ॥ १३ ॥

एणि विध करिये हो बीज, रागने छेष डुरे करी जी ॥
 केवल पद लहि तास, वरे सुक्ति जलट धरी जी ॥१४॥
 जिनपूजा गुरुभक्ति, विनय करी सेवो सदाजी ॥ पद
 विजयनो शिष्य, भक्ति पासे सुख संपदाजी ॥१५॥ इति.

॥ अथ पंचमीसुं लघु स्तवन लिख्यते ॥

॥ पंचमी तप तमे करेरे प्राणी, जेस पामो नि
 र्मल ज्ञानरे ॥ पेहेलुं ज्ञानने पठि क्रिया, नहिं कोइ
 ज्ञान समानरे ॥ पंचमी० ॥ १ ॥ नंदीसूत्रमां ज्ञान व
 खाएयुं, ज्ञानना पांच प्रकारे ॥ मति श्रुत अवधि ने
 मनपर्यव, केवल एक उदाररे. ॥ पंचमी० ॥ २ ॥ म
 ति अष्टावीश श्रुत चण्डद्वीश, अवधि ठे असंख्य प्रका
 ररे ॥ दोय जेदे मनपर्यव दाख्यो, केवल एक उदाररे.
 ॥ पंचमी० ॥ ३ ॥ चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, एकद्वी
 एक अपाररे ॥ केवल ज्ञान समुं नहिं कोइ, लोकलो
 क प्रकाशरे. ॥ पंचमी० ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद व
 रीने, गहारी पूरो जमेदरे, ॥ समय सुंदर कहे हुं पा
 पासुं, ज्ञाननो पांचमो जेदरे ॥ पंचमी० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते ॥

हारे मारे ठाम धरमना, सामा पचवीश देश
जो ॥ दीपेरे त्यां देश मगध सहमां शिरेरे लो. ॥ हां
रे मारे नगरी तेहमां, राजग्रही सुविशेष जो ॥ राजेरे
त्यां श्रेणिक, गाजे गजपेरेरे लोण ॥ १ ॥ हां रे मारे गा
म नगर पुर पावन करता नाथजो; विचरंता तिहां आ
वि वीर समोसखारे लोण ॥ हांण ॥ चण्ड सहस्स सु
निवरना साथे साथजो; सुधारे तप संयम शियले अलं
कखारे लो० ॥ २ ॥ हांण ॥ फुड्या रस जर फुड्या अं
व कदंबजो; जाणुरे गुणशिलवन हसि रोमंचीनरे लोण ॥
हांण ॥ वाया वाय सुवाय तिहां अविलंब जो ॥ वासेरे
परिमल चिहुं पासे संचिनुरे लो. ॥ ३ ॥ हांण ॥ देव
चतुरविध आवे, कोमा कोरु जो; त्रिगुंरे मणि हेम
एजतनुं ते रचेरे लो. ॥ हांण ॥ चोसठ सुरपति सेवे हो
ताहोरु जो ॥ आगेरे रस लागे इंदाणि नचेरे लो ॥ ४ ॥
हां० ॥ मणिमय हेम सिंहासन वेठा आपजो ॥ हा
रे सुर चामर मणि रत्ने जम्यारे लो ॥ हांण ॥ सुखातां
हुनि नाद टले सवि तापजो ॥ वरसेरे सुर फूल स

(६७६)

रस जानुं अन्धारे लो. ॥ ५ ॥ हां० ॥ ताजे तेजे गाजे
 घन ज्यम लूवजो, राजेरे जिनराज समाजे धर्मेने
 लो ॥ हां० ॥ निरखी हरखी आवे जन मन लूवजो
 पोषेरे रस न पसे धोषे जर्ममां रे लो ॥ ६ ॥ हां० ॥ आ
 गम जाणी जिनतो श्रेणिक राय जो; ॥ आव्योरे परि
 वरियो हय गय रथ पायगेरे लो. ॥ हां० ॥ देइ प्रदक्षिणा
 वंदि वेठो ठाय जो ॥ सुणवारे जिन वाणी मोटे जा
 यगेरे लो. ॥ ७ ॥ हां० ॥ त्रिजुवन नायक लायक तव जगवंत
 जो ॥ आणीरे जिन करूणा धर्म कथा कहेरे लो ॥
 हां० ॥ सहज विरोध विसारी जगना जंत जो, सुणवा
 रे जिन वाणी मनमां गह गहेरे लो ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ वालिम बेहेलारे आवजो ॥ ए देशी ॥

वीर जिनवर एम उपदिशे, तांजलो चतुर मुत्रा
 एरे ॥ मोहनी निंदमां कां पमो, नुलखो धर्मनां टांणो
 ॥ विरति ए सुमति धरी आदरो ॥ १ ॥ परिहरो विन
 कपायरे, वापमा पंच परमादथी; कां पमो कुगतिमां क
 यरे ॥ वि० ॥ २ ॥ करी शको धर्म करणी सदा, तो
 सो ए उपदेशेरे ॥ सर्व कालें करी नवि शको ॥ तो क

(६७७)

पर्व सु विशेषरे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जूजूआ पर्व षटनां क
 ह्यां, फल घणां आगमे जोयरे ॥ वचन अनुसारें आ
 राधतां, सर्वथा सिद्धी फल होयरे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जी
 वने आयु परजव तणुं, तिथिदिनें बंध होय प्रायरे ॥
 तेह जणि एह आराधतां, प्राणिनु सदगति जायरे ॥
 वि० ॥ ५ ॥ तेहवे अष्टमि फल तिहां, पूठे गौतम स्वा
 मरे ॥ जविक जीव जाणवा कारणे, केहे वीर प्रजु
 तामरे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महा सिद्धि होय एहथी, सं
 पदा आठनी वृद्धिरे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एह
 थी आठ गुण सिद्धिरे ॥ वि० ॥ ७ ॥ लाज होय आठ
 पमिहारनो, आठ पवयण फल होयरे ॥ नाश अष्ट
 करमनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोयरे ॥ वि० ॥ ८ ॥
 आदि जिन जन्म दिक्षा तणो, अजितनो जन्म कट्या
 णरे ॥ चवन संजव तणो एह तिथे, अग्निनंदन निर्वा
 णरे ॥ वि० ॥ ९ ॥ सुमति सुव्रत नमि जनमीया,
 नेमनो मुक्ति दिन जाणरे ॥ पास जिन एह तिथे सि
 ष्वा, सातमा जिन चवन माणरे ॥ वि० ॥ १० ॥ ए
 ह तिथि साधतो राजिनु, दंरु वीरज लह्यो मुक्तिरे

कर्म हणवा ज्ञणि अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्तिरे ॥ वि
 ॥ ११ ॥ अतीत अनागत कालनां, जिन तणां के
 कट्याणरे ॥ एह तिथे वली घणां संयमी, पामशे प
 निर्वाणरे ॥ विण ॥ १२ ॥ धर्म वासित पशू पंखिआ
 एह तिथे करे नपवासरे ॥ व्रतधारि जीव पोशो करे
 जेहने धर्म अज्यासरे ॥ विण ॥ १३ ॥ ज्ञापियो वीरे
 आठम तणो, ज्विक हित एह अधिकाररे; ॥ जिन सु
 खे नच्चरी प्राणिआ, पामशे जव तणो पाररे ॥ वि
 ॥ १४ ॥ एहथी संपदा सवि लहे, टले कष्टनी कोमो
 ॥ सेवजो शिष्य बुद्ध प्रेमनो, कहे कांति कर जोमो
 विण ॥ १५ ॥ कलश ॥ एम त्रिजग ज्ञासन अचल शारन
 वर्धमान जिनेश्वर ॥ बुद्ध प्रेम गुरु सु पसाय पाप्म
 संशूण्यो अलवेसर ॥ जिन गुण प्रसंगे ज्ञायो रंगें, म
 वन ए आठम तणो ॥ जे ज्विक ज्ञावे सुणे गोवे, क
 न्ति सुख पावे घणो ॥ १६ ॥ इति.

॥ अथ एकादशीनुं लघु स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमि जिणंद, दारिका

(६७ए)

री समोसख्या, ॥ जगपति वंदवा कृष्ण नरिंद, यादव
 कोमशुं परिवस्था ॥ १ ॥ जगपति धीगुण फूल अमू
 ल, जक्ति गुणे माला रचि, ॥ जगपति पूजी पूछे क
 ष्ण, ॥ हाथिक समकित शिव रूची ॥ २ ॥ जगपति
 चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंज परिग्रहे ॥ जगपति
 मुज आतम उद्धार ॥ कारण तुम विण कोण कहे
 ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरीखो मुज नाथ, माथे गाजे
 गुणनिंदो ॥ जगपति कोय उपाय वताव, जेस करे
 शिव बधु कंतलो ॥ ४ ॥ जगपति उजल मागशिर
 मास, आराधो एकादशी ॥ नरपति एकसेने पंचाश,
 कळयाणक तिथी उल्लशी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे
 त्रण काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति नेवुं जिननां
 कळयाण, विवरि कहुं आगल वली ॥ ६ ॥ नरपति अर
 दिक्षा नमि नाण, मल्लि जन्म व्रत केवली ॥ नरपति
 वर्तमान चोवीशि, मांहे कळयाणक आवली ॥ ७ ॥
 नरपति मौन पणे उपवास, दोढशो जपमाला गणो ॥
 नरपति मनवच काय पवित्र, चरित्र सुणो सुव्रत तणो ॥ ८ ॥
 नरपति दाहिण धातकी खंन, पश्चिम दिशि इक्षुकारथी ॥

नरपति विजय पाटण अजिधान, साचो नृप प्रजाप
 लयी ॥ ए ॥ नरपति नारी चंझावति तास, चंझुली
 गजगामिनी, नरपति श्रेष्ठि शुर विख्यात, शीयल न
 लिला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार,
 सार नृषण चिवर धरी ॥ नरपति जाए नित्य जि
 गेह, नमन स्तवन पूजा करे ॥ ११ ॥ नरपति पो
 पात्र सुपात्र, सामायक पोषध वरे ॥ नरपति देव व
 दन आवश्यक, काल वेलाए अनुसरे ॥ १२ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ एकदिन प्रणमी पाय, सुवन
 साधु तणारी ॥ विनये वीनवे शेठ, सुनिवर करी क
 रणारी ॥ १ ॥ दाखो सुज दिन एक, ओमो पुन्य बी
 योरी ॥ बाधे जिम वरु बीज, शुज अनुबंधी य
 री ॥ २ ॥ सुनि ज्ञापे साहा ज्ञाग्य, पावन पर्व
 णारी ॥ एकादशी सुविशेष, तेहमां सुण सु मन
 ॥ ३ ॥ सित एकादशी सेव, मास अग्यार लोंगी
 अथवा वरस इग्यार, उजवी तप सु वंगरी ॥ ४ ॥
 जलि सदगुरु वेण, आनंद अति नलड्योरी, तप स
 उजविय, आरण स्वर्ग वड्योरी. ॥ ५ ॥ एकदि

(६७१)

सागर आय, पाली पुन्य वसेरी ॥ सांजल केशवरा
य, आगल जेह थसेरी ॥ ६ ॥ सोरीपुरमां शेठ; स
मृद्धत वसेरी ॥ प्रीतिमती प्रीया ताल, पुन्ये जोग
जम्योरी ॥ ७ ॥ तस कुखे अवतार, सुचित शुभ
स्वपनेरी ॥ जनन्या पुत्र पवित्र, उत्तम ग्रह सुकनेरी
॥ ८ ॥ नालनिखेष निधान, जुमीधि प्रगट हवोरी,
गर्जदोहद अनुज्ञाव, सुव्रत नाम ठव्योरी ॥ ९ ॥ बु
द्धि नद्यम गुरु जोग, शास्त्र अनेक जणयोरी. ॥ यौव
न वय अगीआर, रूपवती परणयोरी ॥ १० ॥ जिन
पूजन मुनिदान, सुव्रत पञ्चखाल धरेरी ॥ अगीआर
कंचन कोरु, नायक पुण्य जरेरी ॥ ११ ॥ धर्मघोष अ
णगार, तिथी अधिकार कहेरी ॥ सांजलि सुव्रत शेठ,
जातिस्मरण लहेरी ॥ १२ ॥ जिन प्रत्यय मुनि शा
ख, जक्ते तप उचरेरी ॥ एकादशी दिन आठ, पोहो
रो पोसो धरेरी ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ पत्नी संयुक्ते पोसह लीधो,
सुव्रत शेठे अन्यदाजी ॥ अंवसर जाणि तस्कर आ
व्या, घरमां धन लूटे तदाजी. ॥ १ ॥ शासन ने

देवी शक्ते, अंजाणा ते वापमाजी ॥ कोलाहल सुनि
 कोटवाल आव्यो, झूप आगल धर्या रांकमाजी ॥ १ ॥
 पोसह पारी देव जुहारी, दयावंत लेइ जेठणांजी ॥
 रायने प्रणमि चोर मुकावी, शेठे कीधां पारणांजी
 ॥ २ ॥ अन्य दिवस विश्वानल लागो, सोरीपुरमां आ
 करोजी ॥ शेठजी पोसह समरस वेठा, लोक कहे
 हठ कां करोजी ॥ ४ ॥ पुण्ये हाट वखारो शेठनी,
 नगरी सौ प्रशंसा करेजी ॥ हरखे शेठजी तप गज
 मणुं, प्रेमदा साथे आदरेजी ॥ ५ ॥ पुत्रने घरनो जा
 र जलावी, संवेगी सिर सेहरोजी ॥ चउनाणी विज
 य शेखर सूरी, पासे तपव्रत आदरेजी ॥ ६ ॥ एक
 खटमाली चार चोमाली, दोसय ठठ सो अठम करे
 जी ॥ बीजा तप पण बहुश्रुत सुव्रत, मोन एकावरी
 व्रत धरेजी ॥ ७ ॥ एक अधम सुर मिश्यादृष्टी, देव
 ता सुव्रत साधुनेजी ॥ पुर्वोपार्जित कर्म नदेरो, अंग
 वधारे व्याधिनेजी. ॥ ८ ॥ कर्म नहीउ पापे जमीठ,
 सुर कहे जाउ लपव जणीजी ॥ साधु न जाए गेम
 जराये, पाहु प्रहारे हण्यो मुनिजी ॥ ९ ॥ मुनि मन

वचन काय त्रियोगें, ध्यान अनल दहे कर्मनेजी ॥ के
वल पामी जिन पद रामी, सुव्रतनेम कहे श्यामनेजी.

॥ ढाल चोथी ॥ कान पयंपे नेमने ए, धनधन
यादव वंश, जिहां प्रभु अवतस्था ए॥ सुज मन मान
सहंस, जयो जिन नेमनेए ॥ १ ॥ धन शिवादेवी मा
वरीए, समुद्रविजय धन्य तात सुजात जगतगुरुए,
रत्न त्रयी अवदात ॥ जयो० ॥१॥ चरण विराधी नृप
न्योए, हुं नवमो वासुदेव ॥ जयो०॥ तिणे मन नवि न
ह्वसेए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥ हाथी
जेस कादव गढयोए, जाणुं नपादेय हेय ॥ ज०॥ तोपण
हुं न करी शकुंए, दुष्ट कर्मनो ज्ञेय ॥ जयो०॥४॥ पण
सरणो बलियातणो ए, किजे सीजे काज, ॥ ज०॥ एहवां
वचनने सांजलीए ॥ वांहे ग्रह्यानी लाज ॥ ज० ॥ ५॥
नेम कहे एकादशीए, समकित युत्त आराध ॥ ज०॥ अश
जिनवर वारमोए, ज्ञावि चोवीशि लाव ॥ जयो०॥६॥

॥ कलश. इय नेमि जिनवर नित्य पुरंदर, रैव
वताचल मंरुणो ॥ वाण नव मुनि चंद वरसे, राज
नगरे संशुण्यो ॥ संवेग रंग तरंग जलनिधि, सत्य

(६८४)

विजय गुरु अनुसरी ॥ कपूर विजय कवि क्षिमाविज
यगणि, जिनविजय जयसिरी वरी ॥ १ ॥ इति श्री॥

॥ अथ उपाध्याय श्री यशोविजयजी कृत
मौन एकादशीना दोढसो कल्याणकनु
स्तवन प्रारंभः ॥

ढाल पहेली.

॥ ठढी ज्ञावना मन धरो ए देशी ॥

धुर प्रणमुं जिन महरिसी ॥ समरुं सरसति उ
ल्लसी ॥ धसमसि ॥ भुजमति जिन गुण गायना
॥ १ ॥ हरि पूवे जिन उपदिशि ॥ परव ते मौन ए
कादशी ॥ मनवसि ॥ अह्निसि ते जविदोकेने ए
॥ २ ॥ तरीआने जवजल तरसि ॥ एह परव पंगव
फरसि ॥ मनहरसि ॥ अवसरे जेह आराहसि ए ॥ ३ ॥
उजमणे ते धारसि ॥ वस्तु इग्यार इग्यारसि ॥ ४ ॥
सि ॥ ते डुरगतिनां वारणां ॥ ४ ॥ ए दिन अतिरि

(६७५)

सुहामणो ॥ दोढसो कळ्याणक तणो ॥ मन घणो ॥
गणणुं करतां सुख होये ए ॥ ५ ॥

ढाल बीजी.

पामे पामे त्रण्य चोवीसि ॥ छीप क्षेत्र जिन
नामैं ॥ पामे पामे पांच कळ्याणक ॥ धारो शुज परि
णामे ॥ १ ॥ जिनवर ध्यायीरें ॥ मोक्ष मारगना
दाता ॥ ए आंकणी ॥ सर्वज्ञाय नमो इम पहेले ॥
नमो अरिहंत ए बीजे ॥ त्रीजे नमो नाथाय ते चोथे
॥ सरवज्ञाय कहीजे ॥ जिन० ॥ २ ॥ पांचमे नमो
नाथाय कहीजे ॥ पामे पामे जाणो ॥ त्रण्य नाम
तीरधंकर केरां ॥ गणणां पांच वखाणो ॥ जिन०
॥ ३ ॥ त्रण्य चोवीसी एक एक ढाले ॥ त्रण्य नाम
जिन कहिसुं ॥ कोरु तप करी जे फल लहियें ॥ ते
जिन जक्ति लहिसुं ॥ जिन० ॥ ४ ॥ काम सवे सिजे
जिन नामे ॥ सफल होय निज जिहा ॥ जे जिजे
जिन गुण समरंता ॥ सफल जनम ते दिहा ॥
जिन० ॥ ५ ॥

ढाल त्रीजी.

जंबुद्वीप भरत जलुं, अतित चोवीसि सार
मेरे लाल ॥ चोथा महायश केवली, ठठा सरवानुभूति
उदार मेरे लाल ॥ १ ॥ जिनवर नामे जय हुए ॥ ए
आंकणी ॥ श्री श्रीधर जिन सातमा, हवे चोवीसी
वर्तमान मेरे लाल ॥ श्री नमिजिन एकवीसमा, नग
णीसमा मल्लि प्रधान मेरे लाल ॥ जिन० ॥ २ ॥ श्री
अरनाथ अठारमा ॥ हवे ज्ञावि चोवीसी ज्ञाव मेरे
लाल ॥ श्री स्वयंप्रज्ञ चोथा नमुं ॥ ठठा देवसुत मन
दयाव मेरे लाल ॥ जिन० ॥ ३ ॥ उदय नाथ जिन
सातमा ॥ तेहने नामे मंगल माल मेरे लाल ॥ उच्च
रंग वधामणां ॥ वली लहीये प्रेम रसाल मेरे लाल ॥
जिन० ॥ ४ ॥ अलिअ विघन डुरें टले ॥ दूरिजन चिं
त्युं नवी आय मेरे लाल ॥ महीमा महोटाइ वधे, वली
जगमां सुजस गवाय मेरे लाल ॥ जिन० ॥ ५ ॥

ढाल चोथी.

पुरव भरते ते धातकी खंमेरे ॥ अतित चोवी
सी गुण अखंमेरे ॥ चोथा श्री अकलंक सोजागी रे

॥ ठठा देव सुजंकर त्यागीरे ॥ १ ॥ सप्तनाथ सप्तम
 जिन रायारे ॥ सुरपति प्रणामे तेहना पायारे ॥ वर्त्त
 मान चोवीसी जाणारे ॥ एकवीसमा ब्रह्मेन्द् वखाणो
 रे ॥ २ ॥ लंगणीसमा गुणनाथ समरीयेंरे ॥ अठारमा
 गांगीक मन धरीयेंरे ॥ कहुं अनागत हवे चोवीसीरे ॥
 धातकी खंढे हैयने हिंसीरे ॥ ३ ॥ श्री सांप्रत चोथा
 सुखदायीरे ॥ ठठा श्री मुनीनाथ अमायीरे ॥ श्री विशिष्ट
 सप्तम सुखकारारे ॥ तेतो लागे मुज मन प्यारारे
 ॥ ४ ॥ श्री जिन समरण जेहवुं मीतुरे ॥ एहवुं अमृ
 त जगमां न दीतुरे ॥ सुजस महोदय श्री जिन नामे
 रे ॥ विजय लहीजे ठामो ठामेरे ॥ ५ ॥

ढाल पांचमी.

पुस्कर अर्घ्य पूरव हुआ ॥ जिन वंदीएरे ॥ जर
 त अतीत चोवीसी के ॥ पाप निकंदीएरे ॥ चोथा सु
 मृड सुहंकरुं ॥ जिन० ॥ ठठा व्यक्त जगदीस के ॥
 पाप नि० ॥ १ ॥ श्री कलाशत गुण जख्या ॥ जिन०
 ॥ हवे चोवीसी वर्त्तमान के ॥ पाप नि० ॥ कट्याणक
 ए दिन हुआ ॥ जिन० ॥ लीजीयें तेहनां अजिधान

के ॥ पाप नि० ॥ २ ॥ अरण्यवास एकवीसमा ॥
 जिन० ॥ नुगणीसमा श्रीयोग के ॥ पाप नि० ॥ श्री
 अयोग ते अठारमा ॥ जिन० ॥ दिये शिवरमणी संयो
 ग के ॥ पाप नि० ॥ ३ ॥ चौवीसी अनागत जलि ॥
 जिन० ॥ तिहां चोथा परम जिनेस के ॥ पाप नि० ॥
 सुधारति ठठा नसुं ॥ जिन० ॥ सातमा श्री निकेश के
 ॥ पाप. नि० ॥ ४ ॥ प्रीयमेलक परमेश्वर ॥ जिन० ॥
 एहनं नाम ते परम निधान के ॥ पाप नि० ॥ महो
 टानो जे आशरो ॥ जिन० ॥ तेहथी लहीयें यश बहु
 मान के पाप नि० ॥ ५ ॥

ढाल ठठी.

धातकी खंसेरे पष्ठिम जतरमां ॥ अतित चौवी
 सी संज्ञार ॥ श्री सरदारथ चोथा जिनवरु ॥ ठठा
 हरीजड धार ॥ १ ॥ जिनवर नामेरे मुऊ आनंद व
 णो ॥ ए आंकणी ॥ श्री मगधाधिप वंडु सातमा ॥ २ ॥
 वे चौवीसी वर्त्तमान ॥ श्री प्रयत्न प्रणसुं एकवीसमा
 ॥ जेहनं जगमां नहीं उपमान ॥ जिन० ॥ ३ ॥ श्री

(६७ए)

अहोन्न जिनवर लुगणीसमा ॥ अठारमा मल्लसीहना
 प्र ॥ हवे अनागत चोवीसी नमुं ॥ चोथा दिनरुक् शि
 व सात ॥ जिन० ॥ ३ ॥ ठठा श्री जिन धनद संज्ञा
 रीये, सातमा पोषव देव ॥ हरखे तेहना चरण कमल
 तणी ॥ सुर नर सारे शेव ॥ जिन० ॥ ४ ॥ ध्यावे म
 लवुं एहवा प्रभु तणो ॥ आलस मांहेरे गंग ॥ जनम
 सफल करी मानुं तेहथी ॥ सुजस विलास सुरंग ॥
 जिन० ॥ ५ ॥

ढाल सातमी.

पुष्कर पञ्चिम नरतमां ॥ धारो अतित चोवी
 सीरे ॥ चोथा प्रलंब जिनेसरुं ॥ प्रणमुं हियरुले हिं
 सीरे ॥ १ ॥ एहवा साहिव नवी वीसरे ॥ क्षिण क्षि
 ण समरीयें हेजेरे ॥ प्रभु गुण अनुन्नव योगथी ॥ शो
 नीयें आतम तेजेरे ॥ एहवा साहिव नवी वीसरे ॥ २ ॥
 ए आंकणी ॥ ठठा चारित्रनिधि सातमा ॥ प्रशमरा
 जित गुण धामरे ॥ हवे वर्त्तमान चोवीसीयें ॥ समरी
 जें जिन नामरे ॥ एहवा० ॥ ३ ॥ स्वामी सरवज्ञ जयं

(६९०)

करु ॥ एकवीसमा गुण गेहरे ॥ श्री विपरीत नृगणी
समा ॥ अविहम धरम सनेहरे ॥ एहवाण ॥ ४ ॥ ना
थ प्रसाद अठारमा ॥ हवे अनागत चोवीसीरे ॥ चो
था श्री अघटित जिन वंदीयें ॥ कर्मसंतति जिणे पी
सीरे ॥ एहवा० ॥ ५ ॥ श्री ब्रमणेंड ठठा नमुं ॥ रिप
जचंडाजिध वंडुरे ॥ सातमा जगजश जयकरु ॥ जिन
गुण गातां आनंडुरे ॥ एहवाण ॥ ६ ॥

ढाढ आठमी.

जंबुद्वीप औरावतेंजी ॥ अतित चोवीसी उदार
॥ श्री दयांत चोथा नमुंजी ॥ जग जनना आधार
॥ १ ॥ मनमोहन जिनजी ॥ मनषी नहीं मुज दूर ॥
ए आंकणी ॥ अजिनंदन ठठा नमुंजी ॥ सातमा श्री
रतनेस ॥ वर्त्तमान चोवीसीयेंजी ॥ हवे जिन नाम ग
णेंस ॥ मनण ॥ २ ॥ स्यामकोष्ट एकवीसमाजी ॥ उ
गणीसमा मरुदेव ॥ श्री अतिपार्श्व अठारमाजी ॥ त
मरुं चित्त नितमेव ॥ मनण ॥ ३ ॥ ज्ञावी चोवीसी
वंदीयेंजी ॥ चोथा श्री नंदीखेण ॥ श्री व्रतधर ठठा

(६९१)

सुजी ॥ टाली करमनी रेण ॥ मन० ॥ ४ ॥ श्री निर
वाण ते सातमाजी ॥ तेहसुं सुजस सनेह ॥ जिम च
कोर चित्त चंदसुंजी ॥ तिम मोरा मन मेह ॥ मनण ॥ ५ ॥

ढाल नवमी.

प्रथम गोवालीआ तणे जवेजीरे ॥ ए देशी ॥
पूरव अर्धे धातकीजीरे ॥ औरावतें जे अतीत ॥ चोवी
सी तेहमां कहुंजीरे ॥ कळयाणक सुप्रतीत ॥ १ ॥ म
होदय सुंदर जिनवर नाम ॥ ए आंकणी ॥ चोथा श्री
सौंदर्यनेजी ॥ वंडु वारोवार ॥ ठठा त्रिविक्रम सभरी
येंजी ॥ सातमा नरसिंह सार ॥ महोदय सुंदर जि०
॥ २ ॥ वर्तमान चोवीसीयेंजी ॥ एकवीसमा हेमंत ॥
संतोषित जुगणीसमाजी ॥ अठारमा कामनाथ
संत ॥ महोदय सुंदर जि० ॥ ३ ॥ जावि चोवीसी वंदी
एजी ॥ चोथा श्री मुनिनाथ ॥ चंडाह ठठा नमुंजी
॥ जव दव नीरद पाय ॥ महोदय सुंदर जि० ॥ ४ ॥
दिलादित्य जिन सातमाजी ॥ जन मन मोहेन वेल ॥
॥ सुख जश लीला पामीयेंजी ॥ जश नामे रंगरेल ॥

(६९९)

महोदय सुंदर जिण ॥ ५ ॥

ढाल दशमी.

जविका सिद्ध चक्र पद वंदो, ए देशी ॥ पुस्कर अ
र्द्ध पूरव औरवतें ॥ अतीत चोवीसी संजारां ॥ श्री अष्टा
हीक चोथा वंदी ॥ जव वन अमणा निवारें ॥ १ ॥
जविका ॥ एहवा जिनवर ध्यावो ॥ गुणवंतना गुण
गावोरे ॥ जविका ॥ एहवाण ॥ ए आंकणी ॥ वणि
क नाम ठठा जिन नमीयें ॥ शुद्ध धर्म व्यवहारि ॥
उदयनाथ सातमा संजारो ॥ त्रएय जुवन उपगारी रे ॥
जविका ॥ एहवाण ॥ २ ॥ वर्तमान चोवीसी वंडु ॥
एकवीसमा तमोकंद ॥ सायकाह जुगणीसमा समरो
॥ जन मन नयणानंदरे ॥ जविका ॥ एहवा ॥ ३ ॥
श्रीक्षेमंत अठारमा वंदो ॥ ज्ञावी चोवीसी ज्ञावो ॥
श्री निरवाण चोथा जिनवर ॥ हृदयकमलमां लावोरे
॥ जविका ॥ एहवाण ॥ ४ ॥ ठठा रवीराज सातमा
॥ प्रथमनाथ प्रणमीजे ॥ चिदानंदधन सुजस मंद
दय ॥ लीला लल्लि लहीजे रे ॥ जविका ॥ एहवाण ॥

(६९३)

ढाल अग्रीआरमी.

करपट कुलीरे दुगणां ॥ ए देशी ॥ पश्चिम
अैरावतें नलो ॥ धातकी खंने अतीत के ॥ चोवीसीरे
पूरुवा ॥ चोथा जिन सुप्रतीत के ॥ १ ॥ जिनवर
नाम सोहामणुं ॥ घनीय न मेल्युं जाय के ॥ रात दि
वस मुऊ सांजरे ॥ संजारे सुख थाय के ॥ जिन
॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ श्री अवबोध ठा नमुं ॥ सातमा
श्री विक्रमेंड के ॥ चोवीसी वर्त्तमानना ॥ हवे संजा
रु जिनेंड के ॥ जिन ॥ ३ ॥ एकवीसमा श्री सुशां
तजी ॥ उगणीसमा हरनाम के ॥ श्री नंदीकेश अ
ठारमा ॥ होजो तास प्रणाम के ॥ जिन ॥ ४ ॥ जा
वि चोवीसी संजारीये ॥ चोथा श्री महामृगेंड के ॥
ठा असोचित वंदीयें ॥ सातमा श्री धर्मेंड के ॥ जि
न ॥ ५ ॥ मन लागुं जस जेहसुं ॥ न सरे तेह विण
तास के ॥ तिणे मुऊ मन जिन गुण स्तुति ॥ पा
मीसु जस विलास के ॥ जिन ॥ ६ ॥

(६९४)

ढाल बारमी.

पुरस्कर पश्चिम औरावते हवे, अतित चोवीसी व
खाणुजी ॥ अश्ववृंद चोथा जिन नमीयें ॥ ठगा कुटी
लक जाणुंजी ॥ सातमा श्री वर्द्धमान जिनेश्वर ॥ चो
वीसी वर्त्तमानजी ॥ एकवीशमा श्री नंदीकेस जि
न ॥ ते समरु सुज्ज ध्यानजी ॥ १ ॥ नुगणीसमा
श्री धरमचंड जिन ॥ अढारमा श्री विवेकोजी ॥ हवे
अनागत चोवीसीमां ॥ संनारु शुज्ज टेकोजी ॥ श्री
कलापक चोथा जिन ठगा ॥ श्री विशोम प्रणमीजे
जी ॥ सातमा श्री आरण्य जिन ध्यातां ॥ जन्मनो ला
हो लीजे जी ॥ २ ॥ श्री विजयप्रज्ज सुरीश्वर राजे ॥
दिन दिन अधिक जगीसजी ॥ खंज नयरमां रही चो
मासो ॥ संवत्त सत्तर बत्तीसैंजी ॥ दोढसो कल्याण
कनुं गुणणुं ॥ इल्ल में पूरण कीधुजी ॥ दुःख चुरण
दीवाली दीवसैं ॥ मनवंठित फल लीधुजी ॥ ३ ॥
श्री कल्याणविजयवर वाचक ॥ वादी मतंगज सिंदो
जी ॥ तास शिष्य श्री लाज्जविजय बुध ॥ पंस्ति

(६९५)

मांहि लिहोजी ॥ तास शिष्य श्री जितविजय बुध ॥
श्री नयविजय सौजागीजी ॥ वाचक जश विजयें
तस शिष्यें ॥ शुणीआ जिन वरुजागीजी ॥ ४ ॥ ए
गणणो जे कंठे करशे ॥ ते शिवरमणी वरशेजी ॥
तरसे नव हरसे सवि पातिक ॥ निज आतम उधर
सेजी ॥ बार ढाल जे नित समरसे ॥ उचित काज
आचरसेजी ॥ सुकृत सहोदय सुजस्त महोदय ॥ ली
ला ते आदरसेजी ॥ ५ ॥

कलस.

ए बार ढाल रसाल वारह, जावना तरु मंजरी
॥ वर बार अंग विवेक पल्लव, बार व्रत सोजा करी
॥ इम बार तप विध सार साधन ॥ ध्यान जिन गु
ण अनुसरी ॥ श्री नयविजय बुध चरण सेवक ॥
जसविजय जयश्री लही ॥ १ ॥
॥ इति श्री महोपाध्याय श्री यशोविजयजी
कृत मौन एकादशीना गणणानुं बार
ढालनुं स्तवन संपूर्ण ॥

(६७६)

॥ अथ मोटुं दीवाली स्तवन. ॥

ढाल १. राग रामगिरि.

श्री श्रमण संघ तिलकोपमं गौतमं, सुगति प्र
णिपत्य पादारविंदं; इन्द्रजुति प्रज्वल मंहसो मोचकं,
कृत कुशल कोटि कल्याण कंदं.॥१॥ सुनि मन रंजणो,
सयल दुःख जंजणो, वीर वर्धमानो जीणंदो; सुगति
गति जीम लही, तिम कहुं सुण सहि, जीम होएं द
र्ष हइये आणंदो.॥सुण॥२॥ करीय नदूघोषणा देश पुरपा
टणे, मेघ जीम दान जल बहूल वरसी; धण कण
मोतिया ऊगमगे जोतिया, जीन देइ दांन इम एक व
रसी.॥सुण॥३॥ दोय विण तोय उपवास आदे करी, मा
गसिर कृष्ण दशमी दिहामे; सिद्धि साम्हा अइ वीर
दीक्षा लेइ, पाप संताप मल दूर काढे.॥सुण॥४॥ बहूल
वंजण घरे पारणुं सांमिणं, पुण्य परमान्न मध्यान्ह कि
धुं; जुवन गुरु पारणा पुन्यथी वंजणे, आप अवता
फल सयल लिधुं.॥सुण॥५॥ कर्मचंमाल गोसाल संगम

(६९७)

सुरो, जीणे जिन उपरे घात मंमथो; एवमो वयर तें
पापिया सें कर्षो, कर्म कोमि तुंहिज सबल दंमथो.
॥मु०॥६॥ सहज गुण रोषिनु नामे चंमकोषिनु, जिनपदे,
स्वान जिम जेह विलगो; तेहने बुजवि उर्यो जग
पति, किधलो पापथी अतिहें अलगो. ॥मु०॥७॥ वेदया
मा त्रियाम लगें खेदियो, जेदियो तुझ नवि ध्यान कुं
जो; शूलपाणि अन्नाणि अहो बुजव्यो, तुज कृपा पार
पामे न संजो. ॥मु०॥८॥ संगमे पिनीनु प्रभुसजल लोय
णें, चिंतवे तुटश्ये किम एहो; तास उपरें दया एव
मि शी करी, सापराधे जने सबल नेहो. ॥मु०॥९॥ इम
उपसर्ग सहेतां तरणि मित वरस, सार्दि उपर अधिक
पक्ष एके; वीर केवल लहुं कर्म डुख सवि दहुं, गहग
हुं सुर निकर नर अनेके. ॥मु०॥१०॥ इंचनूति प्रमुख स
हस चउदश मुनि, साहुणी सहस ठत्रीस विहसी;
उगणसठ सहस एक लाख श्रजालुआ, श्राविका त्रि
त्रख अठार सहसी. ॥मु०॥११॥ इम अखिल साधु परी
वारशुं परवस्थो, जलधि जंगम जीश्यो गुहिर गाजे;

विचरता देश परदेश निय देशना, उपदिशे सयल सं
देह नांजे.॥सु०॥१२॥

॥ ढाल ९. विवाहलानी देशी ॥

हवे निय आय अंतीम समे, जाणिय श्री जि
नरायरे; नयरी अपापाएं आवीया, राय समाजने ग
यरे; हस्तिपालगराये दीठला, आवियमा अंगण वारे;
नयण कमल दोय विहसीआ, हरसीला हइमा मजा
ररे. ॥१३॥ जले जले प्रज्जुजी पधारीया, पावस पावन
किधांरे; जनम सफल आज अम तणो, अम्ह धे
पाजलां दीधांरे; राणी राय जिन प्रणमीया, मोटे मे
तियमे वधाविरे; जिन सनमुख कर जोमीय, वेठल
आगले आविरे. ॥१४॥ धन अवतार अमारमो, धन दिन
आजुनो एहोरे; सुरतरु आंगणे मोरिनु, मोतियमे व
ठलो मेहोरे, आ श्युं अमारमे एवमो, पूरव पून्यनो ने
होरे; हैमलो हेजे हरसिनु, जो जिन मलिनु संजोगो
रे. ॥१५॥ अति आदर अवधारिए, चरम चोमासलु रदि
यारे; राय राणि सुरनर सेवे, हियमला मांहे गद्गदि

(६९९)

यारे; अमृतशी अति मीठमी, सांझली देशना जिननी
रे; पाप संताप परो अयो, शाता अइ तन मननीरे.
॥१६॥ इंड आवे आवे चंडमा, आवे नरनारीना वृंदरे;
त्रिण प्रदक्षणा देइ करी, नाटिक नव नवे ठंदरे; जि
नमुख वयणनी गोठमी, तिहां होय अति घणी मीठी
रे; ते नर तेहज वरणवे, जीणे निज नयणले दीठीरे.
॥१७॥ इम आणंदे अतिकम्या, आवण जाडवो आसोरे;
कौतिक कोमिलो अनुक्रमे, आवियमो कार्तिक मासो
रे; पाखि पर्व पन्होतलुं, पोहतलुं पुन्य प्रवाहिरे; राय
अठार तिहां मिळया, पोसह लेवा उठांहिरे. ॥१८॥ त्रि
वन जन सवि तिहां मिळया, श्री जिन वंदन का
॥रे; सहेज संकिरण तिहां अयो, तिल पम्वा नहि
गंमोरे; गोयम स्वामि समोवमी, स्वामि सुर्वमा तिहां
वठारे; धन धन ते जिणे आपणे, लोयणे जिनवर दि
ठारे. ॥१९॥ पूरण पुन्यना नुषध, पोषध व्रत वेगे लिधां
रे; कार्तिक काली चउदशे, जिन मुखे पचखाण कि
धारे; राय अठार प्रमुख घणे, जिन पगे वांदणां दिधां

रे; जिन वचनामृत तिहां घणे, जवियणे घट घट पी
धांरे. ॥१०॥

॥ ढाल ३ ॥ राग मारु. ॥

श्री जगदीश दयालु दुख दूरे करेरे, कृपा को
मि तुज जोमी; जगमांरे जगमांरे कहिएं केहने वी
रजी रे. ॥११॥ जग जनने कुण देशे एहवी देशनारे, जा
णि निज निरवाण; नव रसरे नव रसरे सोल पहोर
दिये देशनारे. ॥१२॥ प्रबल पुन्यफल संसुचक सोहाम
णारे, अऊयणां पणपन्न; कहियांरे कहियांरे महियां
सुख सांजलि होएरे. ॥१३॥ प्रबल पापफल अऊयणां
तिम तेटलांरे, अण पुढ्यां ठत्रीस; सुणतांरे सुणतां
रे जणतां सविसुख संपजेरे. ॥१४॥ पुण्यपाल राजा ति
हां धर्म कथांतरेरे, कहो प्रभु प्रत्यक्ष देव; मुजनेरे (१)
सुपन अर्थ सवि साचलोरे. ॥१५॥ गज वानर खीर दुम
वायस सिंह घमोरे, कमलबीज इम आठ; देखिरे (२)
सुपन सज्जय मुऊ मन हुनरे. ॥१६॥ नखर विज कमल
अस्थानके सिंहनुरे, जीव रहित शरीर; सोवनरे (३)

कुंज मलिन ए शुं घटेरे ॥१७॥ वीर ज्ञणे सुपाल सुणो
मन श्रीर करीरे, सुंमिण अर्थ सुविचार, हैमे रे (१)
धरज्यो धर्म धुरंधरुरे ॥१८॥

॥ ढाल ४ ॥

श्रावक सिंधुर सारिखा, जिन मतना रागी, त्या
गी सह गुरु देवधर्म, तत्वे मति जागि, विनय विवेक
विचारवंत, प्रवचन गुण पूरा, एहवा श्रावक होयंसे,
मतिमंत सनुरा ॥१९॥ लालचे लागा थोमिलें, सुखें रा
चि रहिया, घरवासे आशा अमर, परमारथ दूहिया,
व्रत वयराग थकि नहि, कोइ लेशे प्रायें, गज सुपने
फल एह, नेह नवि मांहोमांहे ॥२०॥ वानर चंचल चप
ल जाति, सरखा मुनि मोटा, आगल होत्ये लालचि,
लोन्नी मन खोटा, आचारज ते आचारहिण, प्रायें प
रमादि, धर्म जेद करस्ये घणा, सहजे स्वारथ वादी.
॥२१॥ को गुणवंत सहंत संत, मोहन मुनि रुमा, सुख
मीठा मायाविया, मनमांहे कुमा, करस्ये मांहोमांहे
वाद, पर वादे नासे, बीजा सुपन तणो विचार, इम

वीर प्रकाशे॥३२॥कटपवृक्ष सरिखा होस्ये, दातारज
 लेरा, देव धर्म गुरु वासना, वरि वारिना वेरा; सरल
 वृक्ष सविने दीए, मनमां गहगहता, दाता डुरलज वृ
 क्ष राज, फल फुले ब्रह्मता॥३३॥कपटी जिनमत लिं
 या, बली बबूल सरिखा, खीर वृक्ष आमा अया, जीम
 कंटक तिखा; दान देयंतां वारसी, अन्य पावनपात्री,
 त्रिजा सुपन विचार कह्यो, जिन धर्म विधात्री॥३४॥
 सिंह कलेवर सारिखो, जिन शासन सबलो, अति उ
 दांत अगाहनिय, जिनवायक जमलो; परशासन साव
 ज अज, ते देखी कंपे, चनुधा सुपन विचार इम, जि
 नमुखणी जंपे॥३५॥गह्व गंगाजल सारीखो, मूकी म
 ति हिणा, मुनि मन राचे विद्वरे, जीम वायस दीणा;
 वंचक आचारज अनेक, तिणे जुलविया, ते धर्मातर
 आदरे, जरुमति बहु जवियां॥३६॥पंचम सुपन विचा
 र एह, सुणीन राजाने, ठे सोवन कुंज दीठ, मझो
 सुंण कान; को को मुनि दरसन चारित्र, ग्यान पूरण
 देहा, पाले पंचाचार चारु, ठंमि निज गेहा॥३७॥को
 कपटी चारित्र वेष, लेई विप्रतारे, मझो सोवन कुंज

जीम, पिंम पापे जारे; ठठा सुपन विचार एह, सात
 मे इंदिवर, उकरमे उतपति थइ, ते शुं कहो जिनवर.
 ॥३७॥ पुण्यवंत प्राणि हुस्ये, प्राहिं मध्यम जाति, दाता
 जोक्ता ऋद्धिवंत, निरमल अवदात; साधु असाधु जति
 वेद, तव सरीखा किजे, ते बहु जइक जवियणे, स्यो
 जलंजो दीजे. ॥३८॥ राजा मंत्रिपरे सु साधु, आपोपुं गो
 पी, चारित्र सुधु राखस्ये, सवि पाप विलोपी; सप्तम
 सुपन विचार वीर, जिनवर इम कहियो, अठम सुपन
 तणो विचार, सुंणिमन गहगहिनु. ॥३९॥ न लहे जिनमत
 मात्र जेह, तेह पात्र न कहिएं, दिधानुं परजव पुण्य
 फल, कांइ न लहिये; पात्र अपात्र विचार जेद, जो
 ला नवि लहेस्ये, पुण्य अर्थे ते अर्थ, आश्र कुपात्रे देह
 स्ये. ॥४०॥ उखर जूमि दृष्ट बिज, तेहनो फल कहिएं,
 अष्टम सुपन विचार इम, राजा मन ग्रहियें; एह अ
 नागत सवि सरूप, जाणि तिणे काले, दीक्षा लीधी वी
 र पास, राजा पुन्य पाले. ४१

॥ ढाल ५ ॥ राग गोमि ॥

इन्द्रभूति अवसर लहिरे, पुढे कहो जिनराय, स्त
 आगल हवे होयस्येरे, तारण तरण जीहाजोरे, कहे जिन
 वीरजी. ॥४३॥ मुज निरवाण समय थकीरे, त्रिहू वरस
 नव मास; माठेरो तिहां बेसश्येरे, पंचम काल निरा
 सोरे, कहे ॥४४॥ बांरे वरश्ये मुज थकिरे, गौतम तुज
 निरवाण; सोहम बीडो पामशेरे, वरसे अखय सुख
 ठांणोरे, कहे ॥४५॥ चउसठ वरसे मुज थकिरे, जंवे
 निरवाण; आयमसे आदित्य थकिरे, अधिकुं केवल ना
 णो रे, कहे ॥४६॥ मन पझव परमावधिरे, कपकोपरा
 म मन आंण; संयम त्रिण जिन कळपनीरे, पुलागा
 हारग हांणरे, कहे ॥४७॥ सिझंनव अठांणवेरे, करस्ये
 दस (वै) आलिय; चउ पूर्व जइवाहूथी रे, घास्ये स
 यल विलीठेरे, कहे ॥४८॥ दोय शत पत्रेरे मुज थकिरे,
 प्रथम संघयण संठाण; पूवणुंगते नवि हूस्ये, महाप्रा
 ण नवि जांणोरे, कहे ॥४९॥ चउत्रयपने मुज थकिरे

(७७५)

होस्ये कालिक सूर; करस्ये चञ्चली पञ्चसणेरे, वरगुण
रयणानो पुरोरे. कहे० ॥ ५० ॥ सुज्जथी पण चोराशि
येरे, होस्ये वयर कुमार; दस पूर्व्वि अधिकालिउरे, रह
स्ये तिहां निरधारोरे. कहे० ॥ ५१ ॥ सुज्ज निर्व्वण अ
कि उल्लेरे, विस पठी वनवास; सुकी करले नगरमां रे,
आर्य रक्षित सुनि वासोरे. कहे० ॥ ५२ ॥ सहसें व
रसें सुज्ज थकिरे, चण्ड पूरव विछेद; जोतिष अण मि
लतां हूसेरे, बहूल मतांतर जेदोरे. कहे० ॥ ५३ ॥ वि
क्रमथी पंच पंच्याशिंरे, होस्ये हरिजड सूरि; जिन
शासन अजुवावसेरे, जेहथी डुरियां सवि दूरोरे. कहे०
॥ ५४ ॥ षाडश सत सत्तर समेरे, सुज्जथी सुनि सू
र हिर; वप्पजट्ट सूरि होयसेरे, ते जिन शासन वीरे.
कहे० ॥ ५५ ॥ सुज्ज प्रतिविं चरावस्येरे, आभराय
भूपाल; सार्द्ध त्रिकोटी सोवन तणेरे, तास वयणथी
विशालोरे. कहे० ॥ ५६ ॥ पोरुस शत लंगणोतरेरे,
वरसे सुज्जथी सुखिंद; हेमसूरि गुरु होयस्येरे, शासन
यण दिशंदोरे. कहे० ॥ ५७ ॥ हेमसूरि पक्षिवोहोले
कुमारपाल भूपाल; जिन संक्षित करस्ये महीरे.

जिन शासन प्रतिपालो रे. कहे० ॥ ५८ ॥ गौतम न
 ला समयधारे, मुऊ शासन मन मेल; मांहो मांहे न
 वि होस्ये रे, मन्त्र गलागल केलो रे. कहे० ॥ ५९ ॥ मु
 नि मोटा आयावियारे, वेढीगारा विशेष; आप सवार
 अ वसी अयारे, ए विटंबश्ये वेधो रे. कहे० ॥ ६० ॥ लो
 जि लखपति होयस्ये रे, जम सरिखा झूपाल; सजन
 विरोधि जन हूसे रे, नवि लज्जालु दयालो रे. कहे० ॥ ६१ ॥
 निरलो जि निरमाइयारे, सुधा चारित्रवंत; ओमा मुनि
 महियले हूसे रे, सुण गौतम गुणवंत रे. कहे० ॥ ६२ ॥
 गुरु जगति शिष्य ओमलारे, श्रावक जगति विहीन
 मात पिताना सुत नही रे, ते महिलांना आधिनो
 कहे० ॥ ६३ ॥ दुषसह सूरि फलगुसिरी रे, नायक
 श्रावक जाण; सच्चसिरि तिम श्राविकारे, अंतिम सं
 वखाणयो रे. कहे० ॥ ६४ ॥ वरस सहस एकवीसते
 जिन शासन विख्यात; अविचल धर्म चलावशे रे,
 तम आगम वातो रे. कहे० ॥ ६५ ॥ दूषमे दूषमा
 लनी रे, ते कहिये शी वात; कायर कंपे हैमलो रे,
 सुणतां अवदातो रे. कहे० ॥ ६६ ॥

॥ ढाल ६ ॥ पिउमो घरे आवे, ए देशी. ॥

मुऊसुं अविहम नेह बांध्यो, हेज हैमा रंगे, दृढ
मोह बंधण सवल बांध्यो, वज्र जिम अजंग; अलगा
अया मुज अकि एहले, उपजसेरे केवल निय अंगके;
गौतमरे गुणवंता.॥६७॥ अवसर जांणि जिनवरे, पुठि
या गोयम स्वांम, दोहग दुखिया जीवने, आविये आ
पण काम; देवसर्मा वंजणो, जइ बुऊवोरे उणे ठुंक
के गामके.॥गौ०॥६८॥ सांजली वयण जिणंदनुं, आणंद
अंग न माय; गौतम वे कर जोरि, प्रणस्या वीर जि
नना पाय; पांगल्या पूरव प्रीतणी, चउनांणरे मनमां
निरमायके.॥गौ०॥६९॥ गौतम गुरु तिहां आविया, वंदा
विउ ते विप्र; उपदेश अमृत दीधलो, पीधलो तिणे
क्षिप्र; धलमस करतां वंजणो, वारि वागीरे अइ वेदन
विप्रके.॥गौ०॥७०॥ गौतम गुरुनां वयणलां, नवि धर्यां
तिणे कान; ते मरी तस शिर कृमि अयो, कामनीने
एक तांन; उठिया गोयम जांणिउ, तस चरीयोरे पोता
ने ज्ञान के. ॥ गौ० ॥ ७१ ॥

॥ ਛਾਲ ੭ ॥ ਰਾਗ ਰਾਮਗਿਰਿ ॥

ਚੋਸਠ ਮਧਨਾਂ ਤੇ ਸੋਧਿ ਯੁਗਮਗੇਰੇ, ਗਾਯੇ ਗੁਫਿ
 ਗੰਜਿਰ ਸਿਰੇਰੇ; ਪੁਰਾਂ ਤੇਤੀਲ ਸਾਗਰ ਪੂਰਵੇ ਰੇ, ਨਾਏ ਵਿਧਾ
 ਲਵਸਤਮਿਆ ਸੂਰ ਰੇ; ਵੀਰਜੀ ਵਖਾਣੇਰੇ ਜਗ ਜਨ ਮੋ
 ਹਿਯੋਰੇ. ॥ ੭੨ ॥ ਅਮ੍ਰੁਤਥੀ ਅਧਿਕਿ ਮੀਠੀ ਵਾਂਞੀਰੇ, ਸੁ
 ਣਤਾਂ ਸੁਖਮੋ ਜੇ ਮਨਮੇ ਸੰਪਯੋਰੇ; ਤੇ ਲਹੇਲਯੇ ਪੋਹੋਚਯੇ
 ਨਿਵਾਂਞੇਰੇ. ਵੀ० ॥ ੭੩ ॥ ਵਾਂਞਿ ਪਰੁਠੰਦੇ ਸੁਰ ਪਰਿਵੋਹੀ
 ਯਾਰੇ, ਸੁਣਤਾਂ ਪਾਮੇ ਸੁਖ ਸੰਪਤਿਨੀ ਕੋਰੇ; ਵਿਜਾ ਅਮ
 ਲ ਨਲਟਥੀ ਧਞਾਰੇ, ਆਵੀ ਬੇਠਾ ਆਗਲ ਬੇਕਰ ਜੋਰੇ.
 ਵੀ० ॥ ੭੪ ॥ ਸੋਹਮ ਇੰਦੋ ਭਾਸਨ ਮੋਹੀਯੋਰੇ, ਪ੍ਰਥ ਪ
 ਮੇਸਰਨੇ ਤੁਮ ਆਯੇ; ਬੇ ਧਨਿ ਵਧਾਰੋ ਸੁਵਾਨਿ ਅਕੀ ਪ
 ਠੰ ਰੇ, ਤੋ ਜੁਲਮਗ੍ਰਹ ਲਧਲੋ ਫੂਰੇ ਜਾਯੇ. ਵੀ० ॥ ੭੫ ॥
 ਭਾਸਨ ਸੋਭਾ ਅਧਿਕਿ ਵਾਧਯੋਰੇ, ਸੁਖੀਆ ਹੋਸੇ ਮੁਨਿ
 ਵਰਨਾ ਬੁੰਦੇਰੇ; ਲੰਘ ਸਯਲਨੇ ਸਵਿ ਸੁਖ ਸੰਪਦਾਰੇ, ਦੋਸੇ
 ਦਿਨ ਦਿਨਥੀ ਪਰਮਾਨੰਦੇ. ਵੀ० ॥ ੭੬ ॥ ਇੰਦਾ ਨ ਕਠਾ
 ਕਹਿਐ ਕੇਹਨੁਰੇ, ਕੋਞੇ ਸਾਂਧੁੰ ਨਵਿ ਜਾਐ ਆਯੇ; ਜਾਨਿ
 ਪਦਾਰਥ ਜਾਏ ਨਿਪਯੋਰੇ, ਜੇ ਜਿਮ ਸਰਯੋ ਤੇ ਤਿਮ ਆ
 ਰੇ. ਵੀ० ॥ ੭੭ ॥ ਸੋਲ ਪਹੋਰਨੀ ਦੇਤਾ ਦੇਸਨਾਰੇ, ਪਰ

(७७६)

नकनामा रूअमो अअयणरे; कहेतां काति वदि कहं प
रगमिरे, वीरजी पोहोता पंचमी गति रयणरे. वी० ॥ ७७ ॥
ज्ञान दीवोरे जब दूरे अयो रे, तव किधि देवे दीवानी
अणारे; तिमरे चिहूं वरणे दीवा किधलारे, दिवाली
कहिणं ठे कारण तेणरे. वी० ॥ ७८ ॥ आंसूं परिपूर
ण नयण आखंरलोरे, मूँकि चंदननी चेहमां अंगरे;
दिघो देवे दहन संघले मिलिजीरे, हा धिग धिग, सं
सार विरंगरे. वी० ॥ ७९ ॥

॥ ढाल ७ ॥ राग वीराग ॥

वंदेसु वेगे जइ वीरो, इम गौतम गहगहता, मा
रगे आवतां सांझलिनुं, वीर मुगति मांहे पोहतारे; जि
नजी, तुं निसनेही मोटो, अविहरु प्रेमहतो तुज उप
रे, ते तें किघो खोटोरे जीनजी० ॥ ८१ ॥ है है वीर
कयो अणघटतो, मुज मोकलिनु गांमे; अंतकाले वेठां
तुज पाले, हूं स्ये नावत कामेरे. जी० ॥ ८२ ॥ चौद
सहस मुज सरिखा ताहरे, तुज सरिखो मुज तुंहि;
विशवासी वीरे ठेतरीनु, ते श्या अवगुण मुंहिरे. जी०
॥ ८३ ॥ को केहने ठेहमे नवि वलगे, जो मिलतो हो

ए सबलो; मिलतास्युं जेणे चित्त चोयों, ते तिणे कयों
 निबलोरे. जी० ॥ ८४ ॥ निवुर हैमा नेह न किजे, नि
 सनेही नर निरखी; हैमां हेजे मिले जिहां हरखी, ते
 प्रीतलमि सरीखिरे. जी० ॥ ८५ ॥ तें मुऊने मनमो
 नवि दीधो, मुज मनमो तें लीधो; आप सवारथ सध
 लो किधो, मुगति जइने सिद्धेरे. जी० ॥ ८६ ॥ आ
 ज लगे तुज मुजसुं अंतर, सुपनंतर नवि हुंतो; हैमा
 हेजे हियालि ठंढी, मुजने मुकयो रोवंतोरे. जी०
 ॥ ८७ ॥ को केहशुं बहू प्रेम म करइयो, प्रेम विटवण
 विरुइं; प्रेमे परवश जे दूख पामे, ते कथा घणु गि
 इरे. जी० ॥ ८८ ॥ निसनेही सुखिया रहे सधले, स
 सनेही दुख देखे; तेल दुग्ध परे परनी पीमा, पामे
 नेह विशेषेरे. जी० ॥ ८९ ॥ समवसरण कहिएं दवे
 होसे, कहो कुंण नयलें जोशे; दया धेनु पुरी कुंण
 दोहस्ये, वृष दधि कुंण विलोसेरे. जी० ॥ ९० ॥ इ
 मारग जे वाल्हा जावे, ते पाठा नवि आवे; मुज हेमो
 दुखमे न समाए, ते कहो कुण समावेरे. जी० ॥ ९१ ॥
 यो दरिसण वीरा वा'लाने, जे दरिसणना तरस्यारे

जो सुहणे केवारे देखसुं, तो डाय दूरे करेशुं रे. जी०
 ॥ ए२ ॥ पुण्य कथा हवे कुंण केलवशे, कुंण वाळहा
 मेलवशे; सुज मनमो हवे कुंण खेलवशे, कुमति जि
 म तिम लवसेरे. जी० ॥ ए३ ॥ कुंण पुठ्याना उत्तर
 देशे, कुंण संदेह जांजशे; संघ कमल वन किम विक
 ससे, हुं ठदमस्त्रा वेसेरे. जी० ॥ ए४ ॥ हुं परापुरवसुं
 अजांण, में जिन वात न जांणि; मोह करे सवि जग
 अनाणी, एहवी जीनजीनी वांणीरे. जी० ॥ ए५ ॥
 एहवे जिन वयणे मन वाप्यो, मोह सबल बल का
 प्यो; इंण जावे केवल सुख आप्यो, ईंडे जिनपद आ
 प्योर. जी० ॥ ए६ ॥ ईंडे जुहाखा जट्टारक, जुहार
 जट्टारक तेणे; पर्व पन्धोतुं जगमां वाप्युं, ते किजे स
 वि केणे रे. जी० ॥ ए७ ॥ राजा नंदिवर्द्धन नुतरीनु,
 जाइ वहिनर बीजे; ते जावन बीज हुइ जग सघले,
 वेहेन बहूपरे किजेरे. जी० ॥ ए८ ॥

॥ ढाल ए ॥ विवाहलानी ॥

पहिरीए नवरंग फालमीए, मांसि मृगमद केसर
 जालमीए; ऊव ऊवके श्रवणे जालमीए, करि कंठे

सुगताफल मालनीए. ॥ एए ॥ घर घर मंगल
 मालनीए, जपे गोयम गुण जपमालनीए, पहीतलो
 परव दीवालनीए, रमे रस नर रामत बालनीए,
 ॥ १०० ॥ शोक संताप सवि कापीलुए, इंदे गोयम वीर
 पदे आपीलुए; नारी कहे सांजल कंतमाए, जपो गो
 यम नाम एकंतमाए. ॥ १०१ ॥ छयो लख लाज लखे
 शरी ए, द्यो मंगल कोनी कोमेशरी ए; जाप जपो
 अइ सु तपेसरी ए, जीम पामीए ऋद्धि परमेसरीए.
 ॥ १०२ ॥ लहिं दिवालनी दामलो ए, एतो पु
 ण्यनो टवको टालुलुए; सुकृत सिरि दृढ करो पालनी
 ए, जिम घर होय नित्य दिवालनीए. ॥ १०३ ॥

॥ ढाल १० ॥

हवे मुनिसुव्रत सीसोरे, जेहनी सवल जगीसो;
 ते गुरु गजपुरे आब्यारे, वादी सवि हार मनाव्या.
 ॥ १ ॥ पावल चडमासुं रहियारे, जवियण हस्तेगद
 गहीआरे; नमुंचि चक्रवर्त्ति पद्मारे, जसु हियमे नवि
 उअ ॥ २ ॥ नमुंचि तस नामे प्रधानरे, राजा दि

बहु मान; तिणे तिहां रिऊवी रायरे, मागि मोटो प
 साय. ॥ ३ ॥ लिधो षट खंम राजरे, सात दिवस मां
 मि आज; पूर्वे सुनिमुं विरोध्योरे, ते क्तिणे नवि प्रति
 बोध्यो. ॥४॥ ते सुनि सुं कहे बंमोरे, मुऊ धरति सवि
 ठंमो; विनविन सुनि मोटोरे, नवि माने कर्म खोटो.
 ॥५॥ साठसयां वर्ष तप तपिनुरे, जे जिन किरीयानो
 खपीनु; नामे विष्णु कुमाररे, सयल लवविनो जंमार.
 ॥ ६ ॥ नठ क्रम जूमि लेवारे, जोवा जाइनी सेवा;
 व्युं त्रिपदि जूमि दानरे, जले जले आया जगवान.
 ॥ ७ ॥ इणे वयणे धरुहरीनुरे, ते सुनि बहू कोपे
 चढिनु; किधो अदभूत रूपरे, जोयण लाख सरूप. ॥८॥
 प्रथम चरण पूर्वे दीधोरे, विजो पश्चिमे किधो; त्रिजो
 तस पुंठे आप्योरे, नमुंवि पातालें चांप्यो. ॥ ९ ॥ अर
 हरीनु त्रिजुवनरे, खलजलिनु सवि जन; सलसलिनु
 सुर दिन्नरे, परयो नवि सांजलिए कन. ॥ १० ॥ ए
 उत्पात अत्यंतरे, दूरि करो जगवंत; है है स्युं हवे आ
 शे रे, बोले बहू एक साले. ॥११॥ करणे किन्न
 रे, कहुआ क्रोध समेवा; मधुर मधुर गाए ग

कर जोमि विनीत. ॥ १२ ॥ विनय थकी वेगे बलिनु
 रे, ए जिन शासन बलिनु; दानव देवे खमाव्यो रे,
 नर नारीए वधाव्यो. ॥ १३ ॥ गावलमी जेंस जमकी
 रे, जे देखी डुरे तमकी रे; ते जतने ग्रहि ठे रे, आ
 ति उतारी मेरइए रे. ॥ १४ ॥ नवले अवतारे आव्य
 रे, जीवित फल लहि फाव्या; शैव सुंहालि कंसारे
 फल छूयुं नवे अवतार रे. ॥ १५ ॥ ठगण तणो घरवा
 र रे, नसुंछि लख्युं घर नारे; ते जीम जीम खेरु था
 य रे, तिम तिम दुःख दूरे जाय रे. ॥ १६ ॥ मंदिर मं
 माण मांमथा रे, दालिइ दुख डुरे ठांमथा; काति वदि
 पमवे परवेरे, इम ए आदरीलु सर्वे. ॥ १७ ॥ पुण्ये न
 रजव पांमि रे, धर्म पुन्य करो नरधांसी; पुन्ये ऋदि
 रसालि रे, नित नित पुन्ये दिवाली. ॥ १८ ॥

कलश.

जिन तुं निरंजण सजल रंजण, दुख जंजण दे
 वता; द्यो सुख सांमि मुगति गांमि, वीर तुज पाये
 सेवता. तप गच्छ गयण दिणंद दह दिसे, दीपतो जम

(૪૧૫)

જાંણિં; શ્રી હીરવિજય સુંરિંદ સહગુરુ, તાસ પાટ વ
 યાણીયે. ॥ ૧૯ ॥ શ્રી વિજયસેન સુરીત સહ ગુરુ,
 વિજયદેવ સૂરિસરુ; જે જપે અહનિશ નામ્મ જેહનો, વ
 ર્ધમાન જિણેશ્વરુ; નિર્વાણ તવન મહિમા જ્ઞવન, વીર
 જિનનો જે જ્ઞણે; તે લહે લિલાલલ્લિય લહી, શ્રી ગુણ
 હર્ષ વધામણે. ॥ ૨૦ ॥ ઇતિશ્રી વીર નિર્વાણ મહિમા
 દીપાલિકા સંપૂર્ણ ॥

॥ અથ શ્રી વીર સ્તવન ॥

વીર હમણે આવે ઠે મારે મંદિરીએ, મંદિરીએ
 વીર મંદિરીએ. વીળાપાયે પમીને મેં તો ગોદ વિઠાજ,
 નિત નિત વીનતમી કરીએ. વીળ ॥ ૧ ॥ સજન કુટુંબ
 પુત્રાદીકને, હરચે ઇણ પેરે બજ્જરિએ. વીળ ॥ ૨ ॥
 જવ પ્રજ્ઞુ આંગણે વીર પધારે, તવ વજ્જ સનમુખ સગ
 જરીએ. વીળ ॥ ૩ ॥ સયણા સુણોને જ્ઞવિયણ, પરિ
 લાજિજે તો જ્ઞવસાયર તરીએ. ॥ વીળ ॥ ૪ ॥ અગ્ર
 તિબંધ પણે મહાવીરજી, ઘર ઘર જીકાને ફરીએ.
 વીળ ॥ ૫ ॥ અજિનવ શેઠ તણે ઘેર પારણું, કિધું ફ
 રતાં ગોચરીએ. વીળ ॥ ૬ ॥ ઇમ જ્ઞાવના કરતાં શ્રવ
 ã સુણી, દેવ દૂંડૂંજીરે ચિત્ત જરીએ. વીળ ॥ ૭ ॥ વારમા

(७१६)

कल्पे जिरण आयु बांध्युं, वीर जिनने उत्तम चित्त धरीए
वी० ॥ ८ ॥ तस पद पद्मनी सेवा करतां, सेजे शिव
सुंदरी वरीए रे. वी० ॥ ९ ॥ इति वीर स्तवनम् ॥

॥ अथ श्री वीरप्रभुनुं दीवालीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ मारग देसक मोक्षनो रे, केवल ज्ञान निधान
॥ जाव दया सागर प्रभु रे, परब्रपगारी प्रधानो रे
॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध अया ॥ संघ सकल आधारो
रे, हवे इण जगतमां ॥ कोण करहो ब्रपगारो रे ॥ वी
र० ॥ २ ॥ नाथ विहूणी सैण ज्युं रे, वीर विहूणा रे
जीव ॥ साधे कोण आधारथी रे, परमानंद अजंगो रे
॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणो बाल ज्युं रे, अरहो प
रहो अग्रमाय ॥ वीर विहूणा जीवमा रे, आकुल व्या
कुल धाय रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संसय ठेदक वीरनो रे,
विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख ब्रपजे रे, ते वि
ण केम रहेवाय रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ निरजामिक जव
समुझनो रे, जवअरुवि सत्तवाह ॥ ते परमेश्वर विण
मले रे, केम बाधे ब्रह्माहो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर अ
कां पण श्रुत तणो रे, हतो परम आधार ॥ हवे ज्ञा

श्रुत आधार ठे रे ॥ अहो जिनसुझ सारो रे ॥ वीर०
 ॥ ७ ॥ त्रण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आणंद
 ॥ सेवो ध्यावो जवि जना रे, जिन पमिमा सुखकंदो
 रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचार्य सुनि रे, सहूने ए
 णीपरे सिद्धि ॥ जव जव आगम संगथी रे, देवचंड
 पद लीव रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इति दीवाली स्तवन ॥

॥ अथ श्री आराधनानुं स्तवन प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥ सकल सिद्धि दायक सदा, चोवीसे
 जिनराय ॥ सहगुरु स्वामीनी सरसती, प्रेमे प्रणमुं
 पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवनपति त्रिशला तणो, नंदन गुण गं
 जीर ॥ शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान वरुवीर
 ॥ २ ॥ एक दिन वीर जिणंदने, चरणे करी प्रणाम ॥
 जविक जीवना हित जणी, पुढे मोतम स्वाम ॥ ३ ॥
 सुक्ति मारग आराधीये, कहो केणी पेरं अरिहंत ॥
 सुधा सरस तव वचनरस, ज्ञांखे श्री जगवंत ॥ ४ ॥
 अतिचार आलोइए, व्रत धरिये गुरु शाख ॥ जीव ख
 मावो सयल जे, योनि चोरासी लाख ॥ ५ ॥ विधिभुं
 वली वोसराविये, पापस्थान अढार ॥ चार शरण

नित्य अनुसरो, निंदो डुरित आचार ॥ ६ ॥ शुभ क
 णी अनुमोदिये, ज्ञाव जलो मन आणी ॥ अणसण अ
 वसर आदरी, नव पद जपो सुजाण ॥ ७ ॥ शुभगति
 आराधन तणा, ए ठे दश अधिकार ॥ चित्त आणीने
 आदरो जिम पासो ज्ञव पार ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल पेहेली ॥ ए ठींसी किहां राखी ए देशी

ज्ञान दरिस्सण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आच
 र ॥ एह तणा इह ज्ञव परजवना, आलोइए अतिचा
 र रे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान जणो गुण खाणी ॥ वीर के
 एम वाणी रे ॥ प्रा० ॥ गुरु डलविये नहीं गुरु विन
 ये, काले धरी बहु मान ॥ सूत्र अर्थ तडुजय करी व
 धां, ज्ञानीये वही उपधान रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ ज्ञानो
 गरण पाटी पोथी, ठवणी नोकारवाली ॥ तेह तणी
 कीधी आहातना ॥ ज्ञान जक्ति न संजाली रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥
 इत्यादिक विपरीतपणाणी, ज्ञान विराध्युं जेद
 आ ज्ञव परजव वली रे जवोजव ॥ मिठा डुक्क ते
 रे ॥ ४ ॥ प्राणी लसकीत ड्यो शुद्ध जाणी ॥ ज्ञि

(७१ए)

वचने शंका नवी कीजे, नवि परमत अजिलाष ॥ सा
 धु तणी निंदा परिहरजो, फल संदेह म राख रे ॥ प्रा०
 ॥ स० ॥ ५ ॥ सुठपणुं ठंको परशंसा, गुणवंतने आदरि
 ये ॥ साहस्मिने धर्मे करी स्थिरता, ज्ञक्ति प्रज्ञावना क
 रीए रे ॥ प्रा० ॥ स० ॥ ६ ॥ संघ चैत्य प्रासाद तणो जे,
 अवर्ण वाद मन लेख्यो ॥ इय देवको जे विणसा
 रुच्यो, विणसंतां नवेख्यो रे ॥ प्रा० ॥ स० ॥ ७ ॥ इत्यादि
 क विपरीत पणाथी, समकीत खंरुं जेह ॥ आ जव
 परजव वली रे जवो जव, मित्रा डुकर तेहरे ॥ प्रा०
 ॥ ८ ॥ चारित्र ल्यो चित्त आणी ॥ पांच समिति त्र
 ण गुप्ति विराधी, आठे प्रवचन माय ॥ साधु तणे धर्मे
 परमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥ प्रा० ॥ चा०
 ॥ ९ ॥ श्रावकने धर्मे सामायिक, पोसहमां मन वाली
 ॥ जे जयणा पूर्वक जे आठे, प्रवचन माय न पाली रे
 ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ १० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चा
 रित्र रुहोळ्युं जेह ॥ आ जव ॥ मित्रा ॥ ११ ॥ प्रा०
 ॥ चा० ॥ वारे जेदे तप नवी कीधो, ठते योगे निज श
 क्ते ॥ धर्मे मन वच काया वीरज, नवि फोरवीयुं न
 क्ते रे ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ १२ ॥ तप वीरज आचार ए

एणी पेरे, विविध विराध्या जेह ॥ आ जण ॥ मिहण ॥
 प्रा० ॥ १३ ॥ चा० ॥ वलीय विशेषे चारित्र केरा, अति
 चार आलोइये ॥ वीरजिणोसर वयल सुणीने, पाप
 मयल सबी धोइए रे ॥ प्रा० ॥ चाण ॥ १४ ॥

॥ ढाढ बीजी ॥

पृथिवी पाणी तेज, वाज वनस्पति ॥ ए पांवे
 आवर कहा ए ॥ करि कर्षण आरंज, क्षेत्र जे खेती
 यां ॥ कूवा तलाव खणावीया ए ॥ १ ॥ घर आरंज
 अनेक, टांकां जोंयरां ॥ येनी माल चणावीया ए ॥
 लिपण घुंण काज, एणीपेरें परपरे ॥ पृथ्वीकाय
 विराधीया ए ॥ २ ॥ धोयल नाहण पाणी, जीलण
 अपकाय ॥ ठोती धोती करी दूहव्यां ए ॥ ज्ञाणीग
 कुंजार, लोह सोवनगरा ॥ ज्ञामुंजा लिहालागरा ए
 ॥ ३ ॥ तापण होकण काज, वख निखारण ॥ संगण
 रांधण रसवती ए ॥ एणी परे कर्मादान, परे परे
 खदी ॥ तेज वाज विराधीया ए ॥ ४ ॥ वामी वन
 राम, वावी वनस्पति ॥ पान फुल फल चुंटीयां ए ॥

(७१)

पहोंक पापनी शाक, शेक्यां सूकव्यां ॥ ठेद्यां बुद्ध्यां
 आशीयां ए ॥ ५ ॥ अलसीने एरंरु, घाणी घालीने ॥
 घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली कोलुमांहि, पी
 ली शेकनी ॥ कंदमूल फल वेचीयां ए ॥ ६ ॥ एम ए
 केंडि जीव, हणया हणावीया, ॥ हणतां जे अनुमोदि
 याए ॥ आ जव परजव जेह ॥ वली ॥ ते मुज ॥
 ॥ ७ ॥ क्रमी सरमीया कीमा, गामर गंमोला ॥ इयल
 पोरा अलशीयां ए ॥ वाला जलो चुमेल, विचलित र
 सतणा ॥ वली अशाणा प्रमुखनां ए ॥ ८ ॥ एम वे
 इंडिय जीव, जे में डुहव्या ॥ ते मुज ॥ उदेही जू
 लीख, मांकण मंकोमा, चांचर कीमी कंथुआ ए
 ॥ ९ ॥ गदहीयां धीमेल, कानखजुरमा ॥ गींगोमा
 धनेरीयां ए ॥ एम तेइंडिय जीव, जे में डुहव्या ॥
 ते मुज ॥ १० ॥ माखी मठर मांस, मसा पतंगी
 यां ॥ कंसारी कोलियावमा ए ॥ ठींकण विठु तीरु,
 जमरा जमरीयो, कोतांवग खरु माकनी ए ॥ ११ ॥
 एम चौरिंडिय जीव, जे में डुहव्या ॥ ते मुज ॥ ज
 लमां नाखी जाल, जलचर डुहव्या ॥ वनमां मृग

(७२२)

संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीरुया पंखी जीव, पानी पा
झमां ॥ पोपट घाट्या पांजरे ए ॥ एम पंचेंडिय जी
व, जे में डुहव्या ॥ ते मुजण ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ ठाल त्रीजी ॥ वाणी वाणी हितकरी
जी ॥ ए देशी ॥

क्रोध लोभ जय हास्यधीजी, बोढ्यां वचन अ
सत्य ॥ कूरु करी धन पारकांजी, लीधां जेह अदन
रे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मिछाडुकुम आज ॥ तुम सां
महाराजरे ॥ जिनजी ॥ देइ सां काजरे ॥ जिन
जी ॥ मि० ॥ ए आंकणी ॥ देव मनुज तिर्यचनां
जी, मैथुन सेव्यां जेह ॥ विषयारस लंपट पणेजी, प
णुं विमंव्यो देहरे ॥ जिनजी ॥ मि० ॥ २ ॥ परि
हनी ममता करीजी, जवजव मेली आश्र ॥ जे जी
हांनी ते तीहां रहीजी, कोइ न आवी साश्ररे ॥ जि
नजी ॥ मि० ॥ ३ ॥ रखणी जोजन जे कर्पाजी,
कीधां जहय अजहय ॥ रसना रसनी लालचेजी, प
प कर्पा प्रत्यहरे ॥ जि० ॥ ४ ॥ मि० ॥ व्रत लेइ वि

सारीयांजी, वली ज्ञाग्यां पच्चरकाण ॥ कपट हेतु
 किरिया करीजी, कीधां आप वखाण रे ॥ जि० ॥ ५ ॥
 मि० ॥ त्रण ढाल आठे डुहेजी, आलोया अतिचार ॥
 शिवगति आराधन तणोजी, ए पेहेलो अधिकार रे ॥
 जिनजी० ॥ ६ ॥ मि० ॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेलमीनी देशी ॥

॥ पंच महाव्रत आदरो ॥ साहेलमीरे ॥ अथवा
 द्यो व्रत बार तो ॥ यथाशक्ति व्रत आदरी ॥ साहेल
 मीरे ॥ पालो निरतिचार तो ॥ १ ॥ व्रत लीधां संजा
 रीये ॥ सा० ॥ हियमे धरी विचार तो ॥ शिवगति आ
 राधन तणो ॥ सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ जी
 व सवे खमावीए ॥ सा० ॥ योनी चोरासी लाखतो ॥
 मन शुद्धे करी खामणां ॥ सा० ॥ कोइशुं रोश न
 राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवो ॥ सा० ॥ कोइ
 न जाणो शत्रु तो ॥ रागद्वेष एम परिहरो ॥ सा० ॥
 कीजे जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ साहम्मि संघ खमाविये
 ॥ सा० ॥ जे उपनी अप्रीति तो ॥ सज्जन कुटुंब करी
 खामणां ॥ सा० ॥ ए जिन शासन रीति तो ॥ ५ ॥ ख

भीए अने खमावीए ॥ सा० ॥ एहज धर्मनो सार तो ॥
 शीवगति आराधन तणो ॥ सा० ॥ ए बीजो अधिकार
 तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी ॥ सा० ॥ धन मूर्छा
 मेहुन तो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रेम
 म द्वेष पैशुन्य तो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न कीजीए
 ॥ सा० ॥ क्रूरतां न दीजे आल तो ॥ रति अरति मि
 छ्या तजो ॥ सा० ॥ माया मोस जंजालतो ॥ ८ ॥
 त्रिविध त्रिविध वोसराविये ॥ सा० ॥ पाप स्थान अ
 ढारतो ॥ शिव गति आराधन तणो ॥ सा० ॥ ए चोखो
 अधिकार तो ॥ ए ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ हवे निसुणो इहा आ
 विया ए ॥ ए देशी ॥

जन्म जरा मरणे करीए, ए संसार असार तो ॥
 कर्मा कर्म सह अनुजवे ए, कोइ न राखण दारतो
 ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्ध जगज
 तो ॥ शरण धर्म श्री जैननो ए, साधु सरण गुणवं
 तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परहरि ए, चार शरण वि

(७३५)

त धारतो ॥ शिवगति आराधन तणो ए, ए पांचमो अधि
 कारतो ॥ ३ ॥ आ जव परजव जे कर्यां ए, पाप कर्म
 केइ लाख तो ॥ आत्म साखे निंदीए ए, पम्किमिए गुरु
 शाख तो ॥ ४ ॥ मिष्ट्यामति वर्त्तावियां ए, जे ज्ञांख्यां
 उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वशे ए, बली उठाप्यां
 सूत्रतो ॥ ५ ॥ घम्यां घमाव्यां जे घणां ए, घंटी हल
 हथिआर तो ॥ जवजव मेली मूकीयां ए, करतां जीव
 संहारतो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषीयां ए, जन्म जन्म
 परिवार तो ॥ जन्मांतर पहोता पढीए, कोइ न कीधी
 तारतो ॥ ७ ॥ आजव परजव जे कर्यां ए, एम अधि
 करण अनेकतो ॥ त्रिविध त्रिविध बोत्तिराविये ए,
 प्राणी हृदय विवेकतो ॥ ८ ॥ दुःकृत निंदा एम करी
 ए, पाप कर्यां परिहारतो ॥ शिवगति आराधन तणो
 ॥ ९ ॥ ए ठो अधिकार तो ॥ ९ ॥ इति.

॥ ढाल ठठी ॥ आदि तुं जोयने

आपणी ए देशी ॥

धन्य धन्य ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥

(૭૨૬)

દાન શીયલ તપ આદરી, ટાલ્યાં ડુષ્કર્મ ॥ ૧ ॥ ધ
ન્ય ॥ શત્રુજાદિક તીર્થની, જે કીધી યાત્ર ॥ યુ
તે જિનવર પૂજીયા, વલી પોરુયાં પાત્ર ॥ ધ ॥ ૨ ॥
પુસ્તક જ્ઞાન લખાવીયાં, જિનહર જિન ચૈત્ય ॥ સંઘ
ચતુર્વિધ સાચવ્યા, એ સાતે ક્ષેત્ર ॥ ધન્ય ॥ ૩ ॥
શિક્ષમણાં સુપરે કર્યાં, અનુકંપા દાન ॥ સાધુ સૂરિન
જાયને, દીધાં વહુમાન ॥ ધ ॥ ૪ ॥ ધર્મ કારજ
નુમોદિયે, હમ વારંવાર ॥ શિવગતિ આરાધન તણો,
સાતમો અધિકાર ॥ ધન ॥ ૫ ॥ જ્ઞાવ જ્ઞાતો મન
આણીયે, ચિત્ત આણી ઠામ ॥ સમતા જ્ઞાવે જ્ઞાવિયે,
એ આતમરામ ॥ ધ ॥ ૬ ॥ સુખ દુઃખ કારણ જી
વને, કોઈ અવર ન હોય, ॥ કર્મ આપ જે આચર્યા
જોગવીયે સોય ॥ ધ ॥ ૭ ॥ સમતાવિણ જે અનુ
સરે, પ્રાણી પુણ્ય કામ ॥ ઠાર નપરતે લીંપણું, જાણ
ર ચિત્રામ ॥ ધ ॥ ૮ ॥ જ્ઞાવ જ્ઞાતીપરે જ્ઞાવિયે,
ધર્મનો સાર ॥ શિવગતિ આરાધન તણો, એ આતમ
અધિકાર ॥ ધ ॥ ૯ ॥ ૬તિ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ रेवतगीरी जुपरे ए देशी ॥

हवे अवसर जाणी, करिये संक्षेपण सार ॥ अ
णसण आदरिये, पचस्की चारे आहार ॥ ललुता सवि
मुकी, ठांमी समता अंग ॥ ए आत्म खेले समता
ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारे कीधा, आहार अनंत
निःशंक ॥ पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लालचियो रंक
॥ डुलहो ए वली वली, अणसणनो परिणाम ॥ एथी
पामीजे, शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ धन धन्या शा
लिज्जड, खंधो मेघ कुमार ॥ अणसण आराधी, पा
म्या नवनो पार ॥ शिव मंदिर जाशे, करी एक अव
तार ॥ आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ द
शमे अधिकारे, महामंत्र नवकार ॥ मनथी नवि मू
को शिव सुख फल सहकार ॥ ए जपतां जाये, दुर्ग
ति दोष विकार ॥ सुपरे ए समरो, चौद पूरवनो सा
र ॥ ४ ॥ जन्मांतर जातां, जो पामे नवकार ॥ तो
पातक गाली, पामे सुर अवतार ॥ ए नवपद सरखो,
मंत्र न कोइ सार ॥ इह नवने परनेवे, सुख संपत्ति
दातार ॥ ५ ॥ जुठ नील नीलनी, राजा राणी आय

(७१८)

॥ नवपद महिमाथी, राजसिंह महाराय ॥ राणी र
नवती बेहु, पान्यां ठे सुरजोग ॥ एक नवथी लेखे
सिद्धि वधु संयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतिने ए वली, मं
फळयो ततकाल ॥ फणिवर फीटीने, प्रगट थड फू
माल ॥ शीव कूमेरे योगी, सोवन पुरिसो कीध
एम एणे मंत्रे, काज घणानां सीध ॥ ७ ॥ ए द
अधिकारे, वीर जिणेसर जाख्यो ॥ आराधन केरो
विधि जेणे चित्तमां राख्यो ॥ तेणे पाप पखाळी, न
वज्रय दूरे नांख्यो ॥ जिन विनय करंतां, सुमति अ
त रस चाख्यो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ढाल आठमी ॥ नमो नवि नावशुं॥ए देश

॥ सिद्धारथ राय कुल तिलोए, त्रिशला मात
ल्हार तो ॥ अवनितले तुमे अवतस्था ए, करवा
म उपगार ॥ १ ॥ जयोजिन विरजीए ॥ में अपरा
कर्या घणाए, केहेतां न लहुं पारतो ॥ तुम चरणे
व्या नणीए, जो तारे तो तार ॥ २ ॥ ज० ॥
श करीने आवियोए, तुम चरणे महाराज तो ॥ ३ ॥

(७३ए)

व्याने उवेखशो ए, तो केम रहेशे लाज ॥ ३ ॥ ज०
कर्म अलूजण आकरांए, जन्म मरण जंजाल तो ॥
हूं हुं एहथी उजग्यो ए, बोमावो देव दयाल ॥ ज० ॥
॥ ४ ॥ आज मनोरथ सुज फट्या ए, नागं डःख
दंदोलतो ॥ तूगो जिन चोवीसमो ए, प्रगट्या पुन्यक
छोल ॥ ५ ॥ ज० ॥ जव जव विनय तुमारमोए,
जाव चक्ति तुम पाय तो ॥ देव दया करी दीजीए ए,
बोध बीज सुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ इय तरण तारण, सुगति कारण, डःख निवार
ण जगजयो ॥ श्री वीर जिनवर, चरण धुणतां, अधि
क मन उलट थयो ॥ १ ॥ श्री विजय देव, सुरिंद
पटघर, तीर्थ जंगम, इण जगे ॥ तप गह्वपति श्री,
विजय प्रज्ञ सूरि, सूरि तेजे जगमगे ॥ २ ॥ श्री
हीरविजय सूरि शिष्य वाचक, कीर्त्ति विजय सुरगुरु
समो ॥ तस शिष्य वाचक विनय विजये, धुण्यो जि
१, चोवीसमो ॥ ३ ॥ सइ सत्तर संवत, जंगणत्रीसे,
रही रांदेर चोमास ए ॥ विजय दशमी, विजय कार

ए, कीयो गुण, अज्यास ए ॥ ४ ॥ नरन्नव आराधन
 सिद्धि साधन, सुकृत लील विलासए ॥ निर्जरा हेत,
 स्तवन रचीयुं, नामे पुण्य प्रकाशए ॥ ५ ॥ इति श्री
 वीर जिन आराधनारूप पुण्य प्रकाश स्तवन संपूर्णम्.

अथ श्री ज्ञानपंचमीनुं स्तवन.

पुण्य प्रशंसीये. ए देशी.

सुत सिद्धारथ जुपनोरे, सिद्धारथ जगवान ॥ व
 रह परखदा आगलेरे, ज्ञाखे श्री वर्धमानोरे ॥ १ ॥ ज
 वियण चित्त धरो ॥ मन वच काय अमायोरे, ज्ञान
 जगति करो ॥ ए आंकणी ॥ गुण अनंत आतम तणा
 रे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥ तेमां पण ज्ञानज वसुं
 जिणशी दंसण होयरे ॥ २ ॥ ज० ॥ ज्ञाने चारित्र गु
 ण वधेरे, ज्ञाने उद्योत सहाय ॥ ज्ञाने श्रिविरपणुं न
 हेरे, आचारज नवझायरे ॥ ३ ॥ ज० ॥ ज्ञानी ध्यामां
 ञासमांरे, कठिण करम करे नाश ॥ वहि जेम श्वेष
 दहेरे, कणमां ज्योति प्रकाशोरे ॥ ४ ॥ ज० ॥ प्रकाश

ज्ञान पढे दयारे, संवर मोह विनाश ॥ गुणठाणंग
 पगधालीयेरे, जेम चढे मोह आवासोरे ॥ ५ ॥ ज० ॥
 मइ सुअ ल्हि मणपज्जवारे, पंचम केवल ज्ञान ॥ चउ
 मुगां श्रुत एक ठे रे, स्वपर प्रकाश निदानरे ॥ ६ ॥
 ॥ ज० ॥ तेहनां साधन जे कह्यारे, पाटी पुस्तक आ
 दि ॥ लखे लखावे साचवेरे, धर्मी धरी अप्रमादोरे
 ॥ ७ ॥ ज० ॥ त्रिविध आशातना जे करेरे, जणतां
 करे अंतराय ॥ अंधा बेहेरा बोजनारे, मुगा पांगुला
 धायरे ॥ ८ ॥ ज० ॥ जणतां गणतां न आवनेरे,
 न मले बल्लन चीज ॥ गुण अंजरी वरदत्त परेरे, ज्ञा
 न विराधन बीजरे ॥ ९ ॥ ज० ॥ प्रेमे पुढे परखदारे
 प्रणमी जगगुरु पाय ॥ गुणअंजरी वरदत्तनोरे, करो
 अधिकार पसायोरे ॥ १० ॥ ज० ॥ इति

॥ ढाल बीजी ॥

कपूर होय अति नजलोरे--ए देशी.

जंबुद्वीपना जरतमां रे, नयर पदमपुर खास ॥
 अजितसेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तासरे ॥ १ ॥

प्राणी, आराधो वरज्ञान ॥ एहज मुक्ति निदानरे ॥ प्रा
 णी० ॥ ए आंकणी ॥ वरदत्त कुंवर तेहनोरे, विनयादि
 गुणवंत ॥ पितरे ज्ञावा मूकीजरे, आव वरस जब
 हुंतरे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ पंक्ति यत्न करे घणोरे, ठात्र ज
 णावण हेत ॥ अक्षर एक न आवमेरे, ग्रंथ तणी शी
 चेतरे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ कोढे व्यापी देहमीरे, राजा रा
 णी सचिंत ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमांरे, सिंहदास धन
 वंतरे ॥ ४ ॥ प्रा० ॥ कपूरतिलका गेहिनीरे, शीलेशो
 जित अंग ॥ गुणमंजरी तस बेटमीरे, मुंगी रोगे व्यं
 गरे ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ सोल वरसनी सा अशरे, पामी यौ
 वन वेश ॥ दुर्जग पण परणे नहींरे, मात पिता धो
 खेदरे ॥ ६ ॥ प्रा० ॥ तेणे अवसरे नयानमांरे, विज
 यसेन गणधार ॥ ज्ञान रयण रयणायहरे, चरण का
 ण व्रत धाररे ॥ ७ ॥ प्रा० ॥ वनपालक जूपावने
 दीध वधाइ जाम ॥ चतुरंगी सेना सजीरे, वंदन जाव
 तामरे ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ धर्मदेशना सांजलेरे, पुरजन स
 हित नरेश ॥ विकसित नयण वदन मुदारे, नहि प्र
 माद प्रवेशरे ॥ ९ ॥ प्रा० ॥ ज्ञान विराधन परजवेरे,

(७३३)

मूरख पर आधीन ॥ रोगे पीम्या टलवलेरे, दीसे
 दुःखीया दीनरे ॥ १० ॥ प्रा० ॥ ज्ञान सार संसारमां
 रे, ज्ञान परम सुख हेत ॥ ज्ञान विना जग जीवमारे,
 न लहे तत्त्व संकेतरे ॥ ११ ॥ प्रा० श्रेष्ठी पुढे मुल्लिंद
 नेरे, ज्ञाखो करुणावंत ॥ गुणमंजरी मुज अंगजारे,
 कवण कर्म विरतंतरे ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ इति

॥ ढाल त्रीजी ॥

सूरती महिनानी.-देशीमां.

धातकीखंमना नरतमां, खेटक नयर सुगाम ॥
 व्यवहारी जिन देव ठे, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥ अं
 गज पांच सोह्यामणा, पुत्री चतुरा चार ॥ पंक्ति पा
 से शीखवा, ताते मूक्या कुमार ॥ २ ॥ वालस्वजावे
 रामते, करतां दहामा जाय ॥ पंक्ति मोरे त्यारे, मा
 आगल कहे आय ॥ ३ ॥ सुंदरी शंखिणी शीखवे, न
 एवानुं नहीं काम ॥ पंक्त्यो आवे तेमवा, तो तस ह
 णज्यो ताम ॥ ४ ॥ पाटी खनियो लेखण, वाली की
 घां राख ॥ शठने विद्या नवि रुचे, जेम करहाने डाख

॥ ५ ॥ पामापरे मोहोटा अथा, कन्या न दीए कोया ॥
 शेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुज करणी जोय ॥ ६ ॥
 त्रटकी ज्ञाखे ज्ञामिनी, बेटा बापना होय ॥ पुत्री
 होये मातनी, जाणे ठे सौ कोय ॥ ७ ॥ रेरे पा
 पिणी सापिणी, सामा बोल म बोल ॥ रीसादी कहे
 ताहरो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥ शेठे मारी सुंदरी
 काल करी तत खेव ॥ ए तुज बेटी उपनी, ज्ञान विराव
 न हेंव ॥ ९ ॥ मूर्खगित गुणमंजरी, जातिसमरणपा
 मि ॥ ज्ञान दीवाकर साचो, गुरुने कहे शिर नामि
 ॥ १० ॥ शेठ कहे सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग ॥
 गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो बंछित योग ॥ ११ ॥
 उज्जवल पंचमी सेवो, पंच वरस पंच मास ॥ नमो ना
 एस्स गणणुं गणो, चोविहार उपवास ॥ १२ ॥ पुस्त
 उत्तर सन्मुख, जपिये दोय हजार ॥ पुस्तक आगव
 ठोश्ये, धान्य फलादि उदार ॥ १३ ॥ दीवो पंच दीव
 तणो, साधुनु मंगल गेह ॥ पोसहमां न करी शकें, ते
 ए विधि पारणे एह ॥ १४ ॥ अथवा सौज्ञान्य पंचमी,
 उज्जल कार्त्ति मास ॥ जावज्जीव लगे सेवीये, उजम

(७३५)

विधि खास ॥ १५ ॥ इति.

॥ ढाल चोथी ॥

एकवीशानी देशीमां.

पांच पोथी रे, ठवणी पाठां विटांगणां ॥ चावखी दो
रा रे, पाटी पाटला वरतणां ॥ मसी कागल रे, कांबी
खमिआ लेखिणी ॥ कवली नावली रे, चंडुआ ऊरम
र पुंजणी ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ प्रासाद प्रतिमा तास नू
खण, केसरचंदन नावली ॥ वासकूंषि वालाकूंचि,
अंग लुहणां ठावली ॥ कलश थाली मंगल दीवो, आ
रति ने धूपणां ॥ चरला मुहपत्ती सामीवच्चल, नो
कारवाली आपना ॥ २ ॥ ढाल ॥ ज्ञान दरिसणारे, च
रणनां साधन जे कह्यां ॥ तप संयुतरे, गुणमंजरीए
सद्व्यां ॥ नृप पूढेरे, वरदत्त कुंअरने अंगरे ॥ रोग उप
नोरे, कवण करमना जंग रे ॥ ३ ॥ त्रुटक ॥ मुनिराज
जाखे जंबुद्वीपे, नरत सिंहपुर गाम ए ॥ व्यवहारी
वसु तास नंदन, वसुसार वसुदेव नाम ए ॥ वनमांहे
रमतां दोय बंधव, पुण्य योगे गुरु मळ्या ॥ वैराग्य पा
मी जोग वामी, धर्म धामि संवर्या ॥ ४ ॥ ढाल ॥ ल

धु बांधव रे, गुणवंत गुरु पदवी लहे ॥ पणसय मुनि
 ने रे, सारण वारण नितु दिए ॥ कर्मयोगे रे, अशुभ
 उदय अयो अन्यदा ॥ संसारो रे, पोरिस्ती जणी पोढ्या
 यदा ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ सर्व घाति निंद व्यापी, साधु मा
 गे वायणा ॥ उंधमां अंतराय आतां, सूरि हूआ दूम
 णा ॥ ज्ञान उपर द्वेष जाग्यो, लाग्यो मिष्ट्या जूत
 मो ॥ पुण्य अमृत ठोली नाख्युं, ज्यो पाप तणो प
 मो ॥ ६ ॥ ठाल ॥ मन चिंतवेरे, कां मुज लाग्युं पा
 प रे ॥ श्रुत अन्यास्यो रे, तो एवमो संताप रे ॥ मुज
 बांधव रे, जोयण सयण सुखे करे ॥ मूरखना रे, आ
 ठ गुण मुख उच्चरे ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ वार वासर कोड
 मुनिने, वायणा दीधी नहीं ॥ अशुभ ध्याने आयु
 री, जूष तुज नंदन सही ॥ ज्ञान विराधन मूढ ज
 पणुं, कोढनी वेदन लही ॥ वृद्ध बांधव मान सरा
 हंसगति पाम्यो सही ॥ ८ ॥ ठाल ॥ वरदत्तनेरे, जनि
 समरण उपन्युं ॥ जव दीठेरे, गुरु प्रणामी कहे शुभ
 मनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञान जगत्रय दीवमो ॥ गु
 अवगुण रे, जासन जे जग परवमो ॥ ९ ॥ त्रुटक ॥

ज्ञानपावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहो केम आवने ॥
 गुरु कहे तपस्त्री पाप नासे, टाढ जेम घन तावने ॥
 जूप पज्जणे पुत्रने प्रज्जु, तपनी शक्ति न एवमी ॥
 गुरु कहे पंचमी तप आराधो, संपदा ल्यो बेवमी
 ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

मेंदी रंग लाग्यो—ए देशी.

सद्गुरु वयण सुधारसे रे, जेदी साते घात ॥
 तपशुं रंग लाग्यो ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो
 रोग मिछ्यात्व ॥ त० ॥ १ ॥ पंचमी तप महिमा
 घणो रे, प्रसुर्यो महीयल मांही ॥ त० ॥ कन्या स
 हस सयंवरा रे, वरदत्त परणयो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥
 जूपे कीधो पाटवी रे, आप अयो मुनि जूप ॥ त० ॥
 ज्ञीम कांत गुणे करी रे, वरदत्त रविशशि रूप ॥ त०
 ॥ ३ ॥ राज रमा रमणी तणा रे, जोगवे जोग अखं
 न ॥ त० ॥ वरसे वरसे जजवे रे, पंचमी तेज प्रचंन
 ॥ त० ॥ ४ ॥ जुक्त जोगी अयो संजमी रे, पाले व्रत खट

काय ॥ त० ॥ गुणमंजरी जिनचंडने रे, परणावे नि
 ज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख विलसी घड़ साधवी
 रे, वैजयंते दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण उपनो रे, जि
 हां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमरसेन राजा घरे रे,
 गुणवंत नारी पेट ॥ त० ॥ लक्षण लक्षित रायने रे,
 पुण्ये कीधो जेट ॥ त० ॥ ७ ॥ सूरसेन राजा थयो
 रे, सो कन्या नरतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी के
 रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥ त० ॥ ८ ॥ तिहां पण
 ते तप आदर्युं रे, लोक सहित नूपाल ॥ त० ॥ दश
 हजार वरसां लगे रे, पाले राज्य नदार ॥ त० ॥ ९ ॥
 चार महाव्रत चौपहुं रे, श्री जिनवरनी पास ॥ त० ॥
 ॥ केवलधर मुक्ति गयो रे, सादि अनंत निवास ॥ त० ॥
 ॥ १० ॥ रमणी विजय गुनापुरी रे, जंबु विदेह
 ऊर ॥ त० ॥ अमरसिंह महीपालने रे, अमरावत
 घर नार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंत धकी चवी रे, गुणमं
 रीनो जीव ॥ त० ॥ मानस सर जेम हंसलो रे, न
 म धर्यु सुग्रीव ॥ त० ॥ १२ ॥ वीशे वरसे राज्या
 सहस चोराशी पुत्र ॥ त० ॥ लाख पूरव समता रे

(७३ए)

रे, केवलज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥ पंचमी तप म
हिमा विषे रे, ज्ञाखे निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणे
जेहथी शिवपद लह्युं रे, तेने तस उपकार ॥ त०
॥ १४ ॥ इति ॥

॥ ढाल ठठी ॥

करकुंरुने करुं वंदणा—ए देशी.

चोवीस दंरुक वारवा ॥ हुं वारी लाल ॥ चोवी
शमो जिनचंद रे ॥ हुं वारी लाल ॥ प्रगट्यो प्राणंत
स्वर्गथी ॥ हुं० ॥ त्रिशला नर सुखकंद रे ॥ हुं० ॥ १ ॥
महावीरने करुं वंदना ॥ हुं० ॥ ए आंकणी ॥ पंच
मी गतिने साधवा ॥ हुं० ॥ पंचम नाण विलास रे ॥
हुं० ॥ महानिशीथ सिद्धांतमां ॥ हुं० ॥ पंचमी तप प्र
काश रे ॥ हुं० ॥ २ ॥ अपराधी पण न्हय्यो ॥ हुं०
॥ चंरु कोशिड साप रे ॥ हुं० ॥ यज्ञ करता वांजणां ॥
हुं० ॥ सरखा कीधा आप रे ॥ हुं० ॥ ३ ॥ देवानंदा त्रा
हणी ॥ हुं० ॥ रिखजदत्त वली विप्र रे ॥ हुं० ॥ व्या
सी दिवस संबंधथी ॥ हुं० ॥ कामित पूर्यो क्षिप्र रे ॥ हुं०

॥ ४ ॥ कर्म रोगने टालवा ॥ हुं० ॥ सवि औषधनो
जाण रे ॥ हुं० ॥ आदर्यो में आशा धरी ॥ हुं० ॥
मुज उपर हित आण रे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ श्री विजय
सिंह सूरेशानो ॥ हुं० ॥ सत्यविजय पन्यास रे ॥ हुं०
॥ शिष्य कपूरविजय कवि ॥ हुं० ॥ चंदकिरण जस
जास रे ॥ हुं० ॥ ६ ॥ पास पंचासरा सान्निध्ये ॥
हुं० ॥ खिमाविजय गुरु नाम रे ॥ हुं० ॥ जिनविजय क
हे मुज हजो ॥ हुं० ॥ पंचमी तप परिणाम रे
॥ हुं० ॥ ७ ॥

कलस.

इय वीर लायक विश्वनायक, सिद्धि दायक स
स्तव्यो ॥ पंचमी तप संस्तवन टोमर, गुंथी जिन क
ठे ठव्यो ॥ पुण्य पाटण खेत्रमांहे, सत्तर त्राणु सं
त्स रे ॥ श्री पार्श्व जन्म कट्याण दिवसे, सकल जनि
मंगल करे ॥ १ ॥ इति ॥

(४४१)

॥ अथ ठ आवश्यकनुं स्तवन ॥

हुहा.

चोविशे जिनवर नमुं, चतुर चेतना काज ॥

आवश्यक जिणे नपदिस्या, तेषुणस्युं जिनराज ॥ १ ॥

आवश्यक आराधीए, दिवस प्रते दोयवार ॥ डुरित दो

ष दूरे टले, ए आतम नपकार ॥ २ ॥ सामायक

चोवीसठो, वंदण पन्निकमणेण ॥ कानसग पच्चरका

ण कर, आतम निर्मल एण ॥ ३ ॥ जेर जाय जिम

जांगुली, मंत्र तणे महिमाय ॥ तेम आवश्यक आद

रे, पातक दूर पलाय ॥ ४ ॥ जार तजी जिम जार

वही, हेले हलुन थाय ॥ अतिचार आलोयतां, जन्म

दोष तिम जाय ॥ ५ ॥

॥ ठाल १. कपूर होय अति नजलुं, ए देशी ॥

पहेलुं सामायक करो रे, आणी समता जाव ॥

राग रोष दूरे करो रे, आतम एह स्वजाव रे ॥ प्राणी

समता ठे गुण गेह, एतो अन्निनव अमृत मेह रे ॥

प्राणी समता ठे गुण गेह, ए आंकणी ॥ १ ॥ आपे

आप विचारीए रे, रमिए आप स्वरूप ॥ ममता जे
 परजावनी रे, विषमो ते विष कूप रे. प्राणी० ॥ २ ॥
 जव जव मेली सुकीयां रे, धन कुटुंब संजोग ॥ वार
 अनंति अनुजव्यां रे ॥ सवि संजोग विजोग रे. प्रा०
 ॥ ३ ॥ शत्रु मित्र जग को नहीं रे, सुख दुःख माया
 जाल ॥ जो जागे चित्त चेतना रे, तो सवि दुःख वि
 सराल रे. प्रा० ॥ ४ ॥ सावद्य जोग सवि परिहरो रे,
 ए सामायक रूप ॥ हूवा ए परिणामधी रे, सिद्ध अ
 नंत अरूप रे. प्रा० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ९. साहेलमीनी देशी ॥

आदीश्वर आराहीएं साहेलमी रे, अजित जजो
 जगवंत तो ॥ संजवनाथ सोहामणा, सा० अन्ननंदन
 अरिहंत तो ॥ १ ॥ सुमति पद्मप्रज्ज पूजीए, सा०
 समरु स्वामी सुपार्श्व तो, चंडप्रज्ज चित्त धारीए, सा०
 सुविधि सुविधि ऋद्धिवास तो ॥ २ ॥ शीतल नृत्य
 दिनमणि, सा० श्री पूरण श्रेयांस तो, वासुपूज्य सु
 पूजीआ, सा० विमल विमल जस हेत तो ॥ ३ ॥ करु अ
 नंत उपासना, सा० धरम धरम धूर धारतो, आंति कुं

पु अर मद्धि नसुं, सा० मुनिसुव्रत वरवीर तो ॥४॥
 चरण नसुं नमीनायना, सा० नेमीश्वर करुं ध्यानतो,
 पार्श्वनाथ प्रभु पूजीए, सा० वंडु श्री वर्धमान तो
 ॥ ५ ॥ ए चोवीशे जीनवरा. सा० त्रिजुवन करण
 ज्योत तो, मुक्तिपंथ जेणे दाखव्यो, सा० निर्मल के
 बल ज्योततो ॥ ६॥ समकित शुद्ध एहथी होए. सा०
 लीजे जवनो पार तो, बीजुं आवश्यक इश्युं, सा०
 चोवीसहो सार तो ॥ ७ ॥

॥ ढाल ३. गिरिमां गोरो गीरुल ए देशी ॥

वे कर जोमी (१) गुरुचरणे देन वांदणां रे,
 आवश्यक पचवीश धारो रे ॥ धारो रे (१) दोष वत्री
 श निवारीए रे ॥ १ ॥ चार वार गुरु चरणे मस्तक
 नामीए रे ॥ वार करी आवर्त खांभो रे, खांभो रे
 (१) वली तेत्रीश आशातना रे ॥ २ ॥ गीतारथ गु
 ण गिरुआ गुरुने वंदतां रे, नीच गोत्र दाय जाय ॥
 आए रे (१) उंच गोत्रनी अरजना रे ॥ ३ ॥ आंण
 उलंगे कोइ न जगमां तेहनी रे, परजव लहे सौजा
 ग्य ॥ ज्ञायग रे (१) दीपे जगमां तेहनुं रे ॥ ४ ॥

(७४४)

कृष्णराय मुनिवरने दीधां वांदणां रे ॥ दायक सभ
कित सार, पाम्या रे (१) तीर्थंकर पद पामशे रे ॥ ५ ॥
शीतल आचारज जिम ज्ञाणेजने रे ॥ इज्य वांदणां
दीध; ज्ञावे रे (१) देतां वली केवल लहुं रे ॥ ६ ॥
ए आवश्यक त्रीजुं एणी पेरें जाणज्यो रे ॥ गुरुवंदना
अधिकार, करजो रे (१) विनयभक्ति गुणवंतनी रे ७

॥ ढाल ४ ॥

चेतन चेतो रे चेतना, ए देशी.

ज्ञानादिक जिनवर कह्या रे, जे पांचे आचार
तो ॥ दोय वार ते दिन प्रते रे, पन्निकमीए अतिचार,
जयोजिन वीरजी रे ॥ १ ॥ आलोइने पन्निकमी रे,
मिठामि डुक्कन देय ॥ मन वच काया शुद्ध करी रे,
चारित्र चोखु करेय. जयो० ॥ २ ॥ अतिचार शब्द
गोपवे रे, न करे दोष प्रकाश ॥ माठी मद्ध तणी पां
रे, ते पामे परिहास. जयो० ॥ ३ ॥ शब्द प्रकाश
गुरु मुखे रे, होये तस ज्ञाव विशुद्ध ॥ ते हस्ती शेर न
हीं रे, करे कर्म शुं जुद्ध. जयो० ॥ ४ ॥ अतिचार ५
म पन्निकमी रे, धर्म करो निशब्द ॥ जित पताश

(७४५)

तिम वरो रे. जिम जग फल्लही मल्ल. जयो० ॥५॥
वंदितुं विधिशुं कहो रे, तिम पम्कमणा सूत्र॥ चोथुं
आवश्यक इशुं रे, पम्कमणा सूत्र पवित्र.जयो०॥६॥

॥ ढाल ५ ॥

हवे निसुणो इहां आवीआ, ए देशी.

वैद विचक्षण जेम हरे ए, पहेलां साल विकार
तो ॥ दोष शेष पठी रुऊवा ए, करे उंसम उपचार
तो ॥ १ ॥ अतिचार ब्रण रुऊवा ए, कानसग्ग तिम
होय तो ॥ नव पल्लव संजम हुवे ए, दूषण नव रहे
कोय तो ॥ २ ॥ कायानी थिरता करी ए, चपल
चित्त करो ठाम तो ॥ वचन जोग सवि परिहरी ए,
रमीए आतमरामतो ॥ ३ ॥ सास नसासादिक क
ह्या ए, जे सोले आगार तो ॥ तेह विना सबी परिह
रो ए, देह तणा व्यापार तो॥४॥आवश्यक ए पांचसुं ए,
पंचमी गति दातार तो ॥ मन शुद्धे आराधीएं ए, लहीएं
जवनो पार तो ॥ ५ ॥

॥ ढाल ६ ॥

व्हालम वेहेला रे आवजो, ए देशी.

सुगुण पञ्चखाण आराधज्यो, एह ठे सुगतिनुं
हेत रे ॥ आहारनी लालच परिहरो, चतुर चित्त तुं चे
त रे. सु० ॥ १ ॥ साल काढ्युं व्रण रुजव्युं, गर वेदना
दूर रे ॥ पढी जला पण्य जोजन अकी, वधे देह जिम
नूर रे. सु० ॥ २ ॥ तिम परिक्रमण कानसगयी, ग
यो दोष सवि डुष्ट रे ॥ पढी पञ्चखाण गुण धारणे,
होये धर्म तनु पुष्ट रे. सु० ॥ ३ ॥ एहश्री कर्म कादव
टले, एह ठे संवर रुप रे ॥ अविरति कुपश्री नयो,
तप अकलंक सरुप रे. सु० ॥ ४ ॥ पूरव जनम तप आ
चर्यो, विशाळया अइ नार रे ॥ जेहना नवणना नीरश्री,
शमे सकल विकार रे. सु० ॥ ५ ॥ रावणे शक्ति शमे
हणयो, परुचो लखमण सेज रे ॥ दाश अरुतां सचेत
न अयो, विशाळया तप तेज रे. सु० ॥ ६ ॥ ठनुं आव
श्यक कह्युं, एहवुं ते पञ्चखाण रे ॥ ठ ए आवश्यक
कह्यां, नमुं ते जग ज्ञाण रे. सु० ॥ ७ ॥

(४४४)

कलशः

तप गह्व नायक मुगति दायक, श्री विजय देव
सूरीश्वरो ॥ तस पद दीपक मोह जीपक, श्री विजय
प्रज्ञ सूरी गणधरो ॥ १ ॥ श्री कीर्ति विजय नवधाय
सेवक, विजय विजय वाचक कहे ॥ ठ आवश्यक जे
आराधे, तेह शिव संपद लहे ॥ २ ॥ इति श्री पद्माव
स्यक स्तवन संपूर्ण.

॥ मुनिराज गुण स्तवन ॥

धन ते मुनिवरारे, जे चाले समझावे, ए देशी.

सम्यक् इष्टीने संतोषी, पंच महाव्रत पाले ॥ नि
ज स्वरूपथी तृप्ती शान्ति, अष्ट कर्मने टाले ॥ धन ते
मुनिवरारे, प्रभु ज्ञान गुण जंमार ॥ ए टेक ॥ १ ॥
पुन्य पापनी वृत्ति मुकी, सुरति सिद्धज सुखमां ॥ सा
त प्रकृति कृप उपसम करी, अरति नहीं कोइ दुःख
मां ॥ धन्य ॥ २ ॥ प्रेमे आनंद निजगुण माने, प
रिसह सहनमें सुरा ॥ जिन आणानी युक्ति जाणे, ध

म धुरंधर धीरा ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ गृहस्थना संग पण
 सर्वे, सुक्या ठे ते मनथी ॥ जीवित मरणनो संशय
 बोली, तुं हुं करे न तनथी ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ अनंतानु
 बंधि क्रोधादिक जे, तेनुं मूलज कापे ॥ निरवद्य वचन
 श्री वीतरागी, सत्य स्वरूपे स्थापे ॥ धन्य० ॥ ५ ॥
 दोष लगामे नहीं संजममें, आतम अनुभव लेदया ॥
 चलन हलन गुण प्रेम दयालुं, लुंचे शीरना केशा
 ॥ धन्य० ॥ ६ ॥ जम चेतननी जुजवी रीती, जाणे
 अंतरजामी ॥ त्रिया देखी न झटी मांमे, विषय वा
 एयने वामी ॥ धन्य० ॥ ७ ॥ त्रण मोहनीने त्रोनीने,
 समकीत रस चित माच्या ॥ पंच प्रमादनी वृत्ति मे
 नी, ध्यान अजपा राच्या ॥ धन्य० ॥ ८ ॥ त्रण योग
 नी योग कलाने, जाणे परने पोते ॥ निमित्त कारण ने
 उपादेय, कर्म मलने धोते ॥ धन्य० ॥ ९ ॥ आर्त रों
 कुध्यानकुं त्यागी, वर्त्ते ठे समजावे, धर्म शुक्लके मा
 रग लागे, पान सुधा पय पावे ॥ धन्य० ॥ १० ॥ रा
 रागने कद्दानी कथनी, नवी कदे संजुता ॥ उपदेशी
 वैराग अनुभव, अर्चित है अवधूता ॥ धन्य० ॥ ११ ॥

(४४६)

उष्ण शीत पावोषनी रतमां, प्रेम उदासन प्यारा ॥
 बावीस परिसह जीपन स्वामी, ज्ञान कृपा गुण धा
 रा ॥ धन्य० ॥ १२ ॥ हास्य रति अरति शोक डुगंगा,
 कदी आणे नहीं मनमें ॥ परम लाज अजयना दा
 ता, ए मुनि लाजे जिनमें ॥ धन्य० ॥ १३ ॥ बंध मो
 क्कनी वरती मुकी, मुकी करमनी कहाणी ॥ राग द्वे
 ष दोष योद्धा जीत्या, आतम सुरत आणी ॥ धन्य०
 ॥ १४ ॥ एवा गुरुनी सेवा करतां, शिव सुख ठे ते
 साचुं ॥ ए मुनिवरना चरणकमलनी, रेणी मस्तक या
 चुं ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ धन्य धन्य ते मुनिवर जिनजी
 ना, सदाय दर्शन करीए ॥ कहत नहु तेनी वाणी सुण
 तां, केवल कमला वरीए ॥ धन्य० ॥ १६ ॥

अथ पूजाविधि आश्रयी श्री सुविधि

जिन स्तवन.

देशी चोपाइनी.

सुविधिनाथनी पूजा सार, करतां सघले जय
 जयकार ॥ पूजानी विधि धारो सहि, श्री जगवंतेशा

म धुरंधर धीरा ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ गृहस्थना संग पण
 सर्वे, सुक्या ठे ते मनथी ॥ जीवित मरणनो संशय
 ठोमी, तुं हुं करे न तनथी ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ अनंतानु
 बंधि क्रोधादिक जे, तेनुं मूलज कापे ॥ निरवद्य वचन
 श्री वीतरागी, सत्य स्वरूपे स्थापे ॥ धन्य० ॥ ५ ॥
 दोष लगामे नहीं संजममें, आतम अनुज्ञव लेश्या ॥
 चलन हलन गुण प्रेम दयालुं, लुंचे शीरना केशा
 ॥ धन्य० ॥ ६ ॥ जरु चेतननी जुजवी रीती, जाणे
 अंतरजामी ॥ त्रिया देखी न झट्टी मांमे, विषय वा
 एयने वामी ॥ धन्य० ॥ ७ ॥ त्रण मोहनीने त्रोमीने,
 समकीत रस चित माच्या ॥ पंच प्रमादनी वृत्ति ठो
 मी, ध्यान अजपा राच्या ॥ धन्य० ॥ ८ ॥ त्रण योग
 नी योग कलाने, जाणे परने पोते ॥ निमित्त कारण ने
 उपादेय, कर्म मलने धोते ॥ धन्य० ॥ ९ ॥ आर्त रोंड
 कुध्यानकुं त्यागी, वर्ते ठे समजावे, धर्म शुक्लके मा
 रग लागे, पान सुधा पय पावे ॥ धन्य० ॥ १० ॥ रंग
 रागने कहानी कथनी, नवी कहे संजुता ॥ उपदेशी
 वैराग अनुज्ञव, अर्चित है अवधूता ॥ धन्य० ॥ ११ ॥

उष्ण शीत पावोषणी रतमां, प्रेम दुदासन प्यारा ॥
 बावीस परिसह जीपन स्वामी, ज्ञान क्षमा गुण धा
 रा ॥ धन्य० ॥ १२ ॥ हास्य रति श्ररति शोक डुगंगा,
 कदी आणे नहीं मनमें ॥ परम लाज्ज अज्जयना दा
 ता, ए मुनि लाज्जे जिनमें ॥ धन्य० ॥ १३ ॥ बंध मो
 क्षणी वरती मुकी, मुकी करमनी कहाणी ॥ राग द्वे
 ष दोष योद्धा जीत्या, आत्म सुरत आणी ॥ धन्य०
 ॥ १४ ॥ एवा गुरुनी सेवा करतां, शिव सुख ठे ते
 साचुं ॥ ए मुनिवरना चरणकमलनी, रेणी मस्तक या
 चुं ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ धन्य धन्य ते मुनिवर जिनजी
 ना, सदाय दर्शन करीए ॥ कहत नहु तेनी वाणी सुण
 तां, केवल कमला वरीए ॥ धन्य० ॥ १६ ॥

अथ पूजाविधि आश्रयी श्री सुविधि

जिन स्तवन.

देशी चोपाइनी.

सुविधिनाथनी पूजा सार, करतां सघले जय
 जयकार ॥ पूजानी विधि धारो सहि, श्री जगवंतेशा

मे धुरंधर धीरा ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ गृहस्थना संग पण
 सर्वे, सुक्या ठे ते मनथी ॥ जीवित मरणनो संशय
 गोमी, तुं हुं करे न तनथी ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ अनंतानु
 बंधि क्रोवादि क जे, तेनुं मूलज कापे ॥ निरवय वचन
 श्री वीतरागी, सत्य स्वरूपे स्थापे ॥ धन्य० ॥ ५ ॥
 दोष लगामे नही संजममें, आतम अनुजव लेश्या ॥
 चलन हलन गुण प्रेम दयालुं, लुंचे शीरना केशा
 ॥ धन्य० ॥ ६ ॥ जरु चेतननी जुजवी रीती, जाणे
 अंतरजामी ॥ त्रिया देखी न इष्टी मांने, निषय वा
 एयने वामी ॥ धन्य० ॥ ७ ॥ व्रण मोढर्नानि गोमीने,
 समकीत रस चित माच्या ॥ पंच प्रमादनी वृत्ति जो
 मी, ध्यान अजपा राच्या ॥ धन्य० ॥ ८ ॥ व्रण योग
 नी योग कळाने, जाणे परने पोते ॥ निमित्त कारण ने
 उपोदय, कर्म मलने घेते ॥ धन्य० ॥ ९ ॥ आर्त गोंड
 कुल्यानकुं त्यागी, वत्ते ठे समजावे, तर्म शुक्रतेक मा
 रग लागे, पान सुवा पय पावे ॥ धन्य० ॥ १० ॥ गंग
 रागेने कळानी कथनी, नवी कडे संजुता ॥ उपोदशी
 वैराग अनुजव, अर्चित है अवधूता ॥ धन्य० ॥ ११ ॥

(७४ए)

जुषण शीत पावोषणी रतमां, प्रेम जुदासन प्यारा ॥
बावीस परिसह जीपन स्वामी, ज्ञान कमा गुण धा
रा ॥ धन्य० ॥ १२ ॥ हास्य रति अरति शोक डुगंगा,
कदी आणे नहीं मनमें ॥ परम लाज अजयना दा
ता, ए मुनि लाजे जिनमें ॥ धन्य० ॥ १३ ॥ बंध मो
हनी वरती मुकी, मुकी करमनी कहाणी ॥ राग द्वे
ष दोष योक्ष जीत्या, आतम सुरत आणी ॥ धन्य०
॥ १४ ॥ एवा गुरुनी सेवा करतां, शिव सुख ठे ते
साचुं ॥ ए मुनिवरना चरणकमलनी, रेणी मस्तक या
चुं ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ धन्य धन्य ते मुनिवर जिनजी
ना, सदाय दर्शन करीए ॥ कहत नहु तेनी वाणी सुण
तां, केवल कमला वरीए ॥ धन्य० ॥ १६ ॥

अथ पूजाविधि आश्रयी श्री सुविधि

जिन स्तवन.

देशी चोपाइनी.

सुविधिनाथनी पूजा सार, करतां सघले जय
जयकार ॥ पूजानी विधि धारो सहि, श्री जगवंतेशा

खे कही ॥ १ ॥ पूर्व सन्मुख स्नान आदरो, पश्चिम
 दिशि रही दातण करो ॥ उत्तर वस्त्र पहरो सही, पु
 जो उत्तर पुरव मुख रही ॥ २ ॥ घरमां पैसेतां नामे
 जाग, देरातर करवानो लाग ॥ दोह दाध जूमिथी की
 जीए, ऊंचुं नीचुं सहुथी बरजीए ॥ ३ ॥ पुरव उत्तर
 मुख पूजा जाण, बीजी दिशे हुवे करतां दाण ॥ न
 बांग पूजानो विधि एह, विधि करतां दोय निर्मल दे
 ह ॥ ४ ॥ पग जंघा ने दाध वे तणी, खजा मस्तक
 नी पांचमी जणी ॥ जाल कंठ हृदय ए जाण, उदर
 नयसुं तिलक बखाण ॥ ५ ॥ चंदन बिण पूजा नहि
 होय, वात्सपूजा प्रजातिं जोय ॥ कुसुम पुजा मध्या
 ले करो, लांजे धूप दीप आदरो ॥ ६ ॥ धूप उल्लेखो मा
 वे पात, जमणे पाते दीप प्रकाश ॥ दोणुं लागल मू
 को सही, चैत्यचंदन करो दक्षिण रही ॥ ७ ॥ हाथ
 थकी जे जूमियें पने, पग लागे मलीन आजने ॥
 मस्तकथी ऊंचुं पण्डितो, नाजिथकी नीचुं मत करो
 ॥ ८ ॥ कीले ग्रावुं तर्जियें फूल, एम फलदिक रो
 जए अमूल ॥ फूल पांचमी नहि वेदीए, कजिका नहि

ये नवि जेदीअें ॥ ए ॥ गंध धूप आखे आंणीयें, फूल दीप बलि फल जाणीयें ॥ पाणी आठसुं सुंदर सही, आठ प्रकारी पूजा कही ॥ १० ॥ शांति कारण नज्वल वस्त्र, लाज्ज कारणें पीत पवीत्र ॥ वयरी जी पवा पहेरो श्याम, रातुं वस्त्र ते मंगल काम ॥ ११ ॥ पंच वरण वस्त्रे होय सिद्ध, खंभित सांध्यां वस्त्र निषिद्ध ॥ पद्मासनने मौने रही, मुख कोश पूजाविधि कही ॥ १२ ॥ ए विधि पूजा कीजें सदा, जिम पामीजे सुख संपदा ॥ आनंद विमल पंरितनो दास, प्रीति विजय प्रणमे बुद्धास ॥ १३ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथजीनुं ज्ञावपूजानुं स्तवन ॥

पूजाविधि मांहे ज्ञावीएजी, अंतरंग जे ज्ञाव ॥
 ते सवि तुज आगल कहुंजी, साहेब सरल स्वज्ञाव ॥ १ ॥
 सुहंकर, अवधारो प्रभु पास ॥ ए टेक ॥ दातण कर
 तां ज्ञावीअेंजी, प्रभु गुण जल मुख शुद्ध ॥ ऊल उ
 तारी प्रमत्तताजी, हो मुज निरमल बुद्ध ॥ सुहं ॥ २ ॥
 जतनाए स्नान करीजीएजी, काढो मयल मिथ्यात ॥

अंगुष्ठो अंग शोषवीजी, जाणुं हुं अवदात ॥ सुहं०
 ॥ ३ ॥ खीरोदकना धोतीआंजी, चिंतवो चित संतो
 प ॥ अष्टकरम संवर जलोजी आव पनो मुखकोश ॥
 सुहं० ॥ ४ ॥ ठरशीयो एकाग्रताजी, केसर जक्ति क
 छोल ॥ अल चंदन चिंतवोजी, ध्यान धोल रंग रो
 ल ॥ सुहं० ॥ ५ ॥ जाल वहुं आणा जलीजी, तिलक
 तणो ते जाव ॥ जे आजरण उत्तारीएजी, ते उत्तार्या
 परजाव ॥ सुहं० ॥ ६ ॥ जे निरमाद्य उत्तारीअंजी,
 ते तो चित उपाव ॥ पखाल करतां चिंतवोजी, निर
 मल चित समाधि ॥ सुहं० ॥ ७ ॥ अंगलूदणां वे भर
 मनांजी, आत्म स्वप्नाव जे अंग ॥ जे आजगण पहे
 रावीएजी, ते स्वप्नाव निज चंग ॥ सुहं० ॥ ८ ॥ जे
 नववाम विशुद्धताजी, ते पूजा नव अंग ॥ पंनानार
 विशुद्धताजी, तेद फुल पंच रंग ॥ सुहं० ॥ ९ ॥ दीवा
 करतां चिंतवोजी, ज्ञानदीप नुमकाश ॥ नयादि पूज
 पुरीठजी, तव पात्र सुविशाल ॥ सुहं० ॥ १० ॥ नृप
 रूप अतिकार्यताजी, कृष्णामन जोग शुद्ध ॥ वायना
 मद मदमदेजी, तेतो अनुभव योग ॥ सुहं० ॥ ११ ॥

मय स्थानक अरु ठांस्वांजी, तेह अष्ट मंगलीक ॥
 जे नैवेद्य निवेदीएजी, ते मन निश्चल ठीक ॥ सुहं०
 ॥ १२ ॥ लवण उतारी ज्ञावीअंजी, कृत्रिम धर्मनो रे
 त्याग ॥ मंगल दीवो अति जलोजी, शुद्ध धरमपरजा
 ग ॥ सुहं० ॥ १३ ॥ गीत नृत्य वादीत्रनोजी, नाद अ
 नहद सार ॥ समरति रमणी जे करीजी, ते साचो
 धेइकार ॥ सुहं० ॥ १४ ॥ ज्ञाव पूजा एम ज्ञावीएजी,
 सत्य बजावोरे घंट ॥ त्रिजुवन मांहे ते विस्तरेजी,
 टाले करमनी फाट ॥ सुहं० ॥ १५ ॥ इणीपरें ज्ञावना
 ज्ञावतांजी, साहेब जस सुप्रसन्न ॥ जनम सफल जग
 तेहनोजी, तेह पुरुष धन्य धन्य ॥ सुहं० ॥ १६ ॥ प
 रम पुरुष प्रभु सांमलाजी, मानो ए मुज सेव ॥ दूर
 करो ज्ञव आमलोजी, वाचक जश कहे देव ॥ सु
 हं० ॥ १७ ॥

॥ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

बापलमांरे पातीकमां, तमे शुं करशो हवे रही
 ने रे ॥ श्री सिद्धाचल नयणे नीरख्यो, दूर जाउ तुमे
 वहीने रे ॥ १ ॥ बापलमां रे० ॥ काल अनादि लगे तु

(७५४)

म साधे, प्रीत करी निरवहीने रे ॥ आज्ञकी प्रभु
 चरणे रहीशुं, एम शीखवीयुं मनने रे ॥ १ ॥ वापल
 मां रे० ॥ उपमकाले एणे नरते, मुक्ति नहीं संघेणने
 रे ॥ पण तुज नक्ति मुक्तिने खेंचे, चमक वपल जेम
 लोहने रे ॥ २ ॥ वापलमां रे० ॥ बाह्य अन्तर शत्रु
 केरो, जय न होवे मुज मनने रे ॥ सेवक सुखीयो सु
 जस विलासी, ते महिमा प्रभु तुजने रे ॥ वापलमां रे०
 ॥ ४ ॥ शुद्ध सोहागण चुरण आप्युं, मिथ्या पंक सो
 धनने रे ॥ आत्मज्ञाव श्रयो जब निरमल, आणंदमय
 तुज नजने रे ॥ वापलमां रे० ॥ ५ ॥ नाम मंत्र तु
 मारो साध्यो, ते श्रयो जग मोहनने रे ॥ तुज सुख सु
 झा देखी हरखुं, जीम चातक जलवरने रे ॥ वापल
 मां रे० ॥ ६ ॥ अखय निधान तुम समकित पामी,
 कोण वंछे चल धनने रे ॥ शांत सुधारस कनक कचो
 ले, सींचो सेवक तनने रे ॥ वापलमां रे० ॥ ७ ॥ तुम
 विण अवर देव नहीं जाचुं, फरि फरि आ मनने रे ॥
 ज्ञान विमल कहे नवजल तारो, सेवक बाह्य अर्दीने
 रे ॥ वापलमां रे० ॥ ८ ॥

॥ श्री ऋषभदेवजीनुं स्तवन ॥

माता मरुदेवाना नंद, देखी तारी मुरति मारुं
 मन लोनाणुंजी ॥ मारुं दिल लोनाणुंजी ॥ देखी० ॥
 करुणाना गर करुणा सागर, काया कंचनवान ॥ घो
 री लंठन पाडले कांड, धनुष पांचसे मान ॥ माता० ॥
 ॥ १ ॥ त्रिगुणे बेशी धर्म कहंता, सुणे पर्वदा वार ॥
 योजन गामिनी वाणी मीठी, वरसंती जल धार
 ॥ माता० ॥ २ ॥ ज्वंशी रुमी अपहराने, रामा ठे म
 नरंग ॥ पाये नेत्र रणऊणे कांड, करती नाटारंग
 ॥ माता० ॥ ३ ॥ तुंही ब्रह्मा तुंही विधाता, तुं जग
 तारण हार ॥ तुज सरखो नहीं देव जगतमां, अम्व
 मीआं आधार ॥ माता० ॥ ४ ॥ तुंहीज आता तुंही
 ज आता, तुंही जगतनो देव ॥ सुरनर किन्नर वासुदेवा,
 करता तुज पद सेव ॥ माता० ॥ ५ ॥ श्री सिद्धाचल
 तीरथ केरो, राजा ऋषभ जिणंद ॥ कीर्ति करे माणे
 क मुनी ताहरी, टाळो जव जय फंद ॥ माता० ॥
 ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

चालो चालो विमलगिरि जइए रे जवजल तर
 वाने ॥ तुमे जयणाए धरज्यो पायरे पार उतरवाने
 ॥ ए टेक ॥ बाल कालनी चेष्टा टाली, हांरे हुंतो
 धरम योवन हवे पायो रे ॥ जव जलण ॥ झूल अना
 दिनी दूर निवारी हांरे हुंतो अनुजवमांलय लायो रे ॥
 पारण ॥ चालोण ॥ १ ॥ जव तरपा सवी दूर निवारी,
 हांरे मारी जिन चरणे लह्य लागी रे ॥ जवण ॥ सं
 वर जावमां दिल हवे ठरीजुं, हांरे मारा जवनी जाव
 ट जागी रे ॥ पार० ॥ चालोण ॥ २ ॥ सचितसरवनो
 त्याग करीने, हांरे नित्य एकासणां तपकारी रे ॥ ज
 वण ॥ पम्कमणां दोय टंकनां करशुं, हांरे जली अ
 मृत क्रिया दिल धारी रे ॥ पार० ॥ चालोण ॥ ३ ॥
 व्रत उचरशुं गुरुनी पासे, हांरे हुंतो यथाशक्ति अनु
 सारे रे ॥ जवण ॥ गुरु साथे चरुशुं गिरिपाजे, हांरे
 जे जवोदधि बुझतां तारे रे ॥ पारण ॥ चालोण ॥
 ॥ ४ ॥ जवतारक ए तीरथ फरसी, हांरे हुंतो सूरज
 कुंममां नाह्यो रे ॥ जवण ॥ अष्ट प्रकारी ऋषज जिशं

दनी, हां रे हुंतो पूजा करीश लह्य लावी रे ॥ पारण ॥
 ॥ चालो ॥ ५ ॥ तीरथ पतिने तीरथ सेवा, एतो सा
 चा मोक्षना मेवा रे ॥ जव ॥ सात ठठ दोय अठम
 करीने, मने स्वामीवञ्जलनी हेवा रे ॥ पार. ॥ चा
 लो. ॥ ६ ॥ प्रभुपदपद्म रायण तले पुजी, हुंतो पा
 मीश हरख अपार रे ॥ जव. ॥ रुपविजय प्रभु ध्या
 न पसाए, एतो पामे सुख श्रीकार रे ॥ पार. ॥ चालो. ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

आंखनियेरे में आज शेत्रुंजो दीगो रे, सवा ला
 ख टकानो दहामो रे, लागे मुने मीगो रे ॥ सफल
 थयोरे मारा मननो उमाह्यो, वहाला मारा जवनो
 संशय जाग्यो रे ॥ नरक तीर्थंच गति दूर निवारी,
 घरणे प्रभुजीने लाग्यो रे ॥ शत्रुंजय. ॥ १ ॥ ए आं
 कणी ॥ मानव जवनो लाहो लीजे, वहाला मारा दे
 हनी पावन कीजे रे ॥ सोना रुपाने फुलने वधावी,
 प्रेमे प्रदक्षिणा दीजे रे ॥ शत्रुं. ॥ २ ॥ डुधने पखाळी
 ने केसर घोळी वहाला. ॥ श्री आदिश्वर पूज्या रे ॥

श्री सिद्धाचल नयणे जोतां, पाप मेवासी धूज्या रे
 ॥ शत्रुं० ॥ ३ ॥ श्रीसुख सौधर्मा सुरपति आगे ॥ वहा
 ला० ॥ वीर जिणंद एम बोले रे ॥ त्रण जुवनमां ती
 रथ मोटुं, नहीं कोई शत्रुंजय तोले रे ॥ शत्रुं० ॥ ४ ॥
 इंड सरीखा ए तीरथनी ॥ वहाला० ॥ चाकरी चित्त
 मां चाहे रे, कायानी तो काह्यर काढी, सूरज कुंरुमां
 नाह्ये रे ॥ शत्रुं० ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे श्री सिद्ध खे
 त्रे ॥ वहाला० ॥ साधु अनंता सिद्धा रे ॥ ते माटे ए तीर
 थ मोटुं, उद्धार अनंता क्रीधा रे ॥ शत्रुं० ॥ ६ ॥ ना
 ज्ञीराया सुत नयणे जोतां ॥ वहाला० ॥ मेह अमीरस
 बुठा रे ॥ नदयरत्न कहे आज मारे पौतें, श्री आदेश्व
 र तुज्या रे ॥ शत्रुं० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री समेतशिखर गिरिनुं स्तवन ॥

॥ क्रीमा करी घेर आवीन ॥ ए देशी ॥

समेत शिखर जिनवंदिये, महोदुं तीरथ एह रे

॥ पार पमाने जवतणो, तीरथ कहियें तेद रे ॥ स०

॥ १ ॥ अजितथी सुमति जिणंद लगे, सदस मुनि

परिवार रे ॥ पद्म प्रभु शिव सुख वर्या, त्रणशे अरु
 अणगार रे ॥ स० ॥ १ ॥ पांचसैं मुनि परिवारशुं, श्री
 सुपास जिणंद रे ॥ चंडप्रभु श्रेयांस लगे, साथे सह
 स मुणींद रे ॥ स० ॥ ३ ॥ ठ हजार मुनिराज शुं,
 विमल जिनेसर सिद्धा रे ॥ सात सहसशुं चउदमा,
 निज कारज वर कीधां रे ॥ स० ॥ ४ ॥ एकसो आठ
 शुं धर्मजी, नवसैंशुं शांतिनाथ रे ॥ कुंथुअर एक स
 हस शुं, साचो शिवपुर साध रे ॥ स० ॥ ५ ॥ मद्धि
 नाथ शत पांचसुं, मुनि नमी एक हजार रे ॥ तेत्रीस
 मुनियुत पालजी, वरिया शीव सुख सार रे ॥ स०
 ॥ ६ ॥ सत्तावीश सहस त्रणसैं, उपर उगणपंचास रे
 ॥ जिन परिकर बीजा केइ, पास्या शिवपुर वास रे
 स० ॥ ७ ॥ ए वीशे जिन एणें गीरि, सिद्ध अणसण
 लेइ रे ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीने, पास शामलनुं
 चेइ रे ॥ स० ॥ ८ ॥ इति.

॥ अथ समेतशिखरजीनुं स्तवन ॥

जइ पूजो लाल, समेतशिखर गिरि उपर पास
 जी शामला ॥ जिन जक्ति लाल, करतां जिनपद पा

वे टले जव आमला ॥ ए आंकणी ॥ ठरी पाली दर्शन
 करिये, जवजव संचित पातक हरियें, नीज आतम
 पुण्य रसैं जरिये ॥ जइ० ॥ १ ॥ ए गिरिवर नित्य से
 वा कीजे, जिम शिव सुखमां करमां लीजे, चिदानंद
 सुधारस नित्य पीजे ॥ जइ० ॥ २ ॥ जिहां शिवरम
 णी वरवा आव्या, अजितादिक वीशे जिनराया, बहु
 मुनिवर युत शिव वधु पाया ॥ जइ० ॥ ३ ॥ तेणे ए
 उत्तम गिरि जाणो, करो सेवा आतम करी साणो, ए
 फरी फरी नहीं आवे टाणो ॥ जइ० ॥ ४ ॥ तुमे धन
 कन कंचननी माया, करतां अशुचि कीनी काया, कि
 म तरशो विण ए गिरिराया ॥ जइ० ॥ ५ ॥ इम शु
 ज्ञ मति वचन सुणी ताजां, ए जजो जगगुरु आतम
 राजा, गिरि फरसे धरी मन शुचि माजा ॥ जइ० ॥
 ॥ ६ ॥ संवत्सर रिपि गज चंद समे, फागण सुदी त्री
 ज बुधवार गमे, गिरि दर्शन करतां चित्त रमे ॥ जइ० ॥
 ॥ ७ ॥ प्रभुपद पद्म तणी सेवा, करतां नित्य लक्षियें
 शीव मेवा, कहे रूपविजय मुज ते देवा ॥ जइ० ॥
 ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री समेतशिखरजीनुं स्तवन ॥

समेतशिखर गिरि जेटीये रे, मेढवा जवना पा
स ॥ आतम सुख वरवा जणी रे, ए तीरथ गुण नि
वास रे ॥ १ ॥ जविया सेवो तीरथ एह ॥ समेतशि
खर गुण गेह रे ॥ ज० ॥ से० ॥ ए आंकणी ॥ समे
तशिखर कटपे कह्यो रे, वीश टूंक अधिकार ॥ वी
श तीर्थकर शीव वस्था रे, बहु सुनिने परिवार रे
॥ जविया० ॥ २ ॥ सेवोण ॥ सिद्ध क्षेत्र मांहे वस्या
रे, जांखे नय व्यवहार, निश्चय निज स्वरूपमां रे,
दोय नय प्रज्जुजीना सार रे ॥ जविया० ॥ ३ ॥ सेवोण ॥
आगम वचन विचारतां रे, अति दुर्गम नय वाद ॥ व
स्तु तत्त्व जिणे जाणिये रे, ते आगम स्यादवाद रे
॥ जविया० ॥ ४ ॥ सेण ॥ जयरथ राय तणी परे रे,
जात्रा करो मन रंग ॥ जव दुःखने देइ अंजली रे,
प्राये सिद्धि वधुनो संग रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ से० ॥ सम
कित युत जात्रा करे रे, तो शिव हेतु प्राय ॥ जव हे
तु किरिया त्यागशी रे, आतम गुण प्रगटाय रे ॥ ज० ॥
॥ ६ ॥ से० ॥ जेह समये समकित अयुं रे, तेह सम

ये होये नाण ॥ ज्ञान विमल गुरु ज्ञाखिया रे, आव
 द्यक ज्ञाप्यनी वाण रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ सेवो० ॥ इति.

॥ अथ श्री आबुजीनुं स्तवन ॥

कोइ लो पर्वत धूँधलो रे लो ॥ ए देशी ॥ आबु
 अचल रलीआमणो रे लो, दिलवाने मनोहार ॥ सुख
 कारी रे ॥ वादलीए जे स्वर्गशु रे लो, देवल दीपे चा
 र बलिहारी रे ॥ ज्ञाव धरीने जेटीए रे लो ॥ ए आंक
 णी ॥ बार पादशाह बश कीया रे लो, विमल मंत्री
 सर सार ॥ सु० ॥ तेणे प्रासाद निपाइउ रे लो, रिख
 जजी जगदाधार रे ॥ व० ॥ १ ॥ ज्ञा० ॥ तेह चैत्यमां
 जिनवरु रे लो, आठसेंने वोतेर ॥ सुख० ॥ जे दीठे प्र
 नु सांजरे रे लो, मोह कयों जेणे जेर ॥ व० ॥ २ ॥
 ॥ ज्ञा० ॥ इव्य ज्ञावधी तिम वरी रे लो, दीधी देठ
 ल काज ॥ सु० ॥ चैत्य तीहां मंतावीयुं रे लो, लेवा
 शीवपुर राज ॥ व० ॥ ४ ॥ आ० ॥ पंदरसें कारीग
 रो रे लो, दीवी धरा प्रत्येक ॥ सु० ॥ तेम मर्दन कार
 क वली रे लो, वस्तुपाल ए विवेक ॥ व० ॥ ५ ॥ आ० ॥

कोरणी धोरणी तीहां करी रे लो, दीठे बने ते वात
 ॥ सु० ॥ पण नवि जाए मुखे कही रे लो, सुर गुरु
 सम विख्यात ॥ ब० ॥ ६ ॥ आ० ॥ त्रणे वरसे नी
 पनो रे लो, ते प्रासाद उत्तंग ॥ सु० ॥ बार क्रोम त्रे
 पन लहने रे लो, खरच्या डव्य उठरंग ॥ ब० ॥ ७ ॥
 ॥ आ० ॥ देराणी जेठाणीना गोखमा रे लो, देखतां
 हरख ते आय ॥ सु० ॥ लाख अठार खरचीआ रे लो,
 धन धन एनी माय ॥ ब० ॥ ८ ॥ आ० ॥ मूल नाय
 क नेमीसरु रे लो, जनम थकी ब्रह्मचार ॥ सु० ॥ नि
 ज सत्ता रमणी थया रे लो, गुण अनंत आधार ॥ ब० ॥
 ॥ ए ॥ आ० ॥ चारसेने अरुसठ जला रे लो, जिन
 वर बिंब विशाल ॥ सु० ॥ आज जले में जेटीआ रे
 लो, पाप गया पायाल ॥ ब० ॥ १० ॥ आ० ॥ रिख
 न धातुमय देह रे लो, एकसो पीसतालीश बिंबासु०
 चोमुख चैत्य जुहारीए रे लो, मरुधरमां जेम अंब
 ॥ ब० ॥ ११ ॥ आ० ॥ बाणुं कान्हूसगिआ तेहमां रे
 लो, उगणांशी जिनराय ॥ सु० ॥ अचल गढे बहु जि
 नवरा रे लो, वंडु तेना पाय ॥ ब० ॥ १२ ॥ आ० ॥

(७६४)

धातुमय परमेश्वरा रे लो, अद्भुत जास स्वरूप ॥ सु० ॥
 चोमुख जिन वंदता रे लो, आए निजगुण रूप ॥ व० ॥
 ॥ १३ ॥ आ० ॥ अढारसेंने अढारमां रे लो, चैत्र वदत्री
 ज दीन ॥ सु० ॥ पालनपुरना संघशुरे लो, प्रणमी
 अयो धन धन ॥ व० ॥ १४ ॥ आ० ॥ तेम शांति जग
 दीसरु रे लो, जात्रा करी अद्भुत ॥ सु० ॥ जे देखी
 जिन सांजेरे रे लो, सेवा करे पुर हुंत ॥ व० ॥ १५ ॥
 ॥ आ० ॥ एम जाणी आबु तणी रे लो, जात्रा करशे
 जेह ॥ सु० ॥ जिन उत्तम पद पामशे रे लो, पद्मविज
 य कहे तेह ॥ व० ॥ १६ ॥ आ० ॥ इति.

॥ अथ श्री अर्बुदगिरिनुं स्तवन ॥

चालो चालोने गिरिधर रमवा जइए. ए देशी.

आवो आवोने राज, श्री अर्बुदगिरि जइये ॥
 श्री जिनवरनी नक्ति करीने, आतम निर्मल अइए ॥
 आ० ॥ ए आंकणी ॥ विमल वसइना प्रथम जियोसर,
 मुख निरखे सुख पइए ॥ चंपक केतकी प्रमुख कुमु
 मवर, कंठे टोरुर ठवीये ॥ आ० ॥ १ ॥ जमणे पासे
 लुण वसइ, श्री नेमीसर नमीये ॥ राजिमती वर

नयणे निरखी, दुख दोहग सवि गमीये॥ आ० ॥ १ ॥
 सिद्धाचल श्री ऋषज्ज जिनेसर, रैवत नेम समरिये ॥
 अर्बुद गिरिनी यात्रा करंतां, चिहुं तीर्थ चित्त धरीये॥
 आ० ॥ ३ ॥ मंरुप मंरुप विविध कोरणी, नीरखी
 हीयमे ठरीए ॥ श्री जिनवरनां विंव निहाली, नर
 जवसफलो करीए ॥ आ० ॥ ४ ॥ अविचल गढ आ
 दीश्वर प्रणामी, अशुज्ज करम सवि हरीए ॥ पास
 शांति निरखी जब नयणे, मन मोह्युं मुंगरीए ॥ आ०
 ॥ ५ ॥ पाजे चढतां बुजम वाधे, जेम धोमे पाखरीये
 ॥ सकल जिनेसर पूजी केसर, पाप पमल सवि ह
 रिये ॥ आ० ॥ ६ ॥ एक ध्याने प्रभुने ध्यातां, मनमां
 ही नवी रुरिये ॥ ज्ञान विमल कहे प्रभु सुपसाए,
 सकल संघ सुख करीये ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति.

॥ अथ श्री आबुगिरिनुं स्तवन ॥

आदि जिनेसर पूजता दुःख मैटो रे, आबुगढ
 दढ चित्त; जविक जइ जेटो रे, देलवामे देहरां न
 मी ॥ ८ ॥ चार परिमित नित्य ॥ ज० ॥ वीश गज

बल पदमावती ॥ ५० ॥ चक्षेसरी इव्य आण ॥ ज० ॥
 शंख दीये अंबीसुरी ॥ ५० ॥ पंचकोश वेहे वाण ॥ ज० ॥
 ॥ १ ॥ वार पादशाह जीतीने ॥ ५० ॥ विमल मंत्री
 आढहाद ॥ ज० ॥ इव्य जणी धरती कीयो ॥ ५० ॥ क
 पज देव प्रासाद ॥ ज० ॥ ३ ॥ विहुत्तेर अधिकां आठ
 सें ॥ ५० ॥ विंव प्रमाण कहाय ॥ ज० ॥ पन्नरशे कारी
 गरे ॥ ५० ॥ वरस त्रीके ते आय ॥ ज० ॥ इव्य अनुपम
 खरचीयो ॥ ५० ॥ लाख त्रेपन वार कोमी ॥ ज० ॥ सं
 वत दश अठाशीए ॥ ५० ॥ प्रतिष्ठा करी मन होमी ॥
 ज० ॥ ५ ॥ देराणी जेठाणीना गोखना ॥ ५० ॥ लाख
 अठार प्रमाण ॥ ज० ॥ वस्तुपाल तेजपालनी ॥ ५० ॥
 ए दीय कांता जाण ॥ ज० ॥ ६ ॥ मूलनायक नेमीसर
 ॥ ५० ॥ चारसैं अमलठ विंव ॥ ज० ॥ कपज धा
 तुमय देह रे ॥ ५० ॥ एकसो पीसताखील विंव ॥ ज०
 ॥ ७ ॥ चन्मुख चैत्य जुहारीए ॥ ५० ॥ कानस्सगीया गु
 एवंत ॥ ज० ॥ वाणुमिन तेहमां कहूं ॥ ५० ॥ अग
 न्यासी अरिहंत ॥ ज० ॥ ८ ॥ अचलगटे प्रभुजी य
 णा ॥ ५० ॥ जात्रा करो हुशियार ॥ ज० ॥ कोमी

तपे फल जे लहे ॥ ७७ ॥ ते प्रभु नक्ति विचार ॥ ज ॥ ए ॥
 सालंबन निरालंबने ॥ ७८ ॥ प्रभु ध्याने जवपार ॥
 मंगल लीला पामीये ॥ ७९ ॥ वीर विजय जयकार ॥
 ज ॥ १० ॥ इति.

॥ अथ श्री गिरनारजीनुं स्तवन ॥

माहारा वालाजी, ए देशी.

तोरणथी रथ फेरी चाट्या कंत रे, प्रीतमजी
 आठ जवोनी प्रीतनी त्रोलीतंत ॥ मारा प्रीतमजी ॥
 नवमे जव पण नेह न आणो मुऊ रे ॥ प्री० ॥ तो शे
 कारण एटले आववुं तुझ ॥ मा० ॥ १ ॥ एक पोकार
 सुणी तीर्थचनो एम रे ॥ प्री० ॥ मूको अवला रोती
 प्रभुजी केम ॥ मा० ॥ खट् जीवना रखवालमां शि
 रदार रे ॥ प्री० ॥ तो केम विलवती स्वामी मूको नारी
 ॥ मारा० ॥ २ ॥ शिव वधु केरुं एहवुं केहवुं रुप रे ॥
 प्री० ॥ मुज मूकीने चित्तमां धरी जिन नूप ॥ मा० ॥
 जिनजी लीए सहसा वनमां व्रत नार रे ॥ प्री० ॥
 घांती करम खपावीने निरधार ॥ मा० ॥ ३ ॥ केवल

(७६८)

ऋद्धि अनंती प्रगट कीध रे ॥ प्री० ॥ जाणी राजुल ए
म प्रतिज्ञा लीध ॥ मा० ॥ जे प्रभुजीये कीधुं करवुं
तेह रे ॥ प्री० ॥ एम कही व्रतधर अइ प्रभु पासे जेह
॥ मारा० ॥ ४ ॥ प्रभु पेहेलां निज शोकयनुं जोवारूप
रे ॥ प्री० ॥ केवल ज्ञान लही अइ सिद्ध सरूप ॥ मारा०
॥ शीववधु वरीया जिनवर उत्तम नेमरे ॥ प्री० ॥ पद्म
कहे प्रभु राख्यो अविचल प्रेम ॥ मा० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री गिरनार तीर्थनुं स्तवन ॥

सहसावन जइ वसीए, चालोने लखी सहसा
वन जइ वसीए ॥ घरनो धंवो कबुअ न पूरो, जो
करीए अहो निसिए ॥ पीयरमां सुख घमीय न दीवुं,
जय कारण चउ दीशीये ॥ चालो० ॥ १ ॥ नाक वि
हुणा सयल कुटुंबी, लज्जा किमपि न पसिए ॥ चा०
॥ जेलां जमीए ने नजर नहीसे, रहेवुं घोर तमसीए
चा० ॥ २ ॥ पीयर पाठल ठल करी मेढ्युं, सासरीए
सुख वसीए ॥ चा० ॥ सातुमी ते घर घर जटके,
लोकेने चटके मसीए ॥ चा० ॥ ३ ॥ कहेतां सातु
थावे हांसु, जुंशिये सुख लेइ मशीए ॥ चा० ॥ ४ ॥

अमारो बालो ज़ोलो, जाणे न असि मसि कसिए ॥
 चा० ॥ ४ ॥ जूठाबोली कलहण शीला, घरघर झू
 नी ज्युं नसीए ॥ चा० ॥ ए दुःख देखी हसुं मूजे,
 डुरजनभी दूर खसीए ॥ चा० ॥ ५ ॥ रैवतगिरिनुं
 ध्यान धरीनुं, काल गयो हसमसीए ॥ चा० ॥ श्री गि
 रनारे त्रण कल्याणक, नेमि नमन उल्लसिए ॥ चा०
 ॥ ६ ॥ शिववरशे चोवीश जिनेश्वर, अनागत चउ
 वीशीए ॥ चा० ॥ कैलास उजयंत रैवत कहीए, शरण
 गिरिने फरसीए ॥ चा० ॥ ७ ॥ गिरनार नंदनइ ए ना
 मे, आरे आरे ठ ब्रविसिए ॥ चा० ॥ देखी महितल
 महिमा मोटो, प्रभु गुण ज्ञान वरसिये ॥ चा० ८ ॥
 अनुभव रंग वधे तेम पूजो, केसर घशी उरशीए ॥
 चा० ॥ ज्ञावस्तव सुत केवल प्रगटे, श्री शुभवीर बिल
 सीए ॥ चा० ॥ ए ॥ इति.

॥ अथ श्री गिरनार तीर्थ स्तवन ॥

देखी कामनी दोयके काम व्यापिनुं रे के, कामे
 व्यापीनु ॥ ए देशी ॥ नेम निरंजन देवके सेव सदा

करुं रे के ॥ से० ॥ अहनीश तारुं ध्यान के, दील मांहे
 धरुं रे के ॥ दी० ॥ शंख लंठन गुणखाण के, अंजन
 दान ठे रे के ॥ अं० ॥ राजेमतिना कंथ के, परएया
 विणुअठे रे के ॥ प० ॥ १ ॥ तुंहिंज जीवन प्राण
 के, आतमराम ठे रे के ॥ आ० ॥ माहरे परमाधार
 के, ताहरुं नाम ठे रे के ॥ ता० ॥ समुद्र विजयना
 नंदन, नितु नितु वंदना रे के ॥ नि० ॥ कीजीये करु
 णावंत के, कर्म निकंदना रे के ॥ क० ॥ २ ॥ जीत्या
 मनमथ राज, रही गढ उपरे रे के ॥ र० ॥ पहेरी शी
 ल सन्नाह, उदास एसी धरो रे के ॥ उ० ॥ सवि जि
 नवरमां स्वामि, तुम्हे अधिकुं करचुं रे के ॥ तु० ॥
 कुमरपणे धरी धीर, महाव्रत उचस्यां रे के ॥ म०
 ॥ ३ ॥ आठ ज्ञवांतर नेह, तेह उवेखीने रे के ॥ ते०
 करुणा कीधी केवल, पशुयां देखीने रे के ॥ प० ॥
 पूरण पाली प्रीत, वली निज नारने रे के ॥ व० ॥ आपी
 संजम ज्ञार, पद्मोचामी पारने रे के ॥ प० ॥ ४ ॥
 जण जणशुं जे प्रीत करे ते जन घणा रे के ॥ क० ॥
 निरवादे धरि नेह के, ते विरला सुण्या रे के ॥ ते० ॥

राजेमतिनो कंत, वखाणे कविजना रे के ॥ व० ॥ तु
 म्हे तो दीधो ठेह के, तेह तो थीर मना रे के ॥ ते०
 ॥ ५ ॥ जादव नाथ सनाथ, करो मुजने सदा रे के
 ॥ क० ॥ दिय मुज शिरपर हाथ, होवे जेम संपदा रे
 के ॥ हो० ॥ जलि जलि मेरे पतंग, दीवाने मन नहीं रे
 के ॥ दी० ॥ नाणे मन असवार, घोमो दोमो सही रे
 के ॥ घो० ॥ ६ ॥ सबदा साथे प्रीत, निबलने नवि
 रुही रे के ॥ नि० ॥ पण लाग्या जे केमे, किहां जाए
 मही रे के ॥ कि० ॥ जे सज्जन गुं होय ते, नीम न
 नंजिये रे के ॥ नी० ॥ पोतानो जे होय, सदा दिल
 जीए रे के ॥ स० ॥ ७ ॥ तुमची सु नजर होये तो,
 कर्मने मंजीए रे के ॥ क० ॥ तो उशमन होय दूरे,
 गोणे नवि गंजीए रे के ॥ को० ॥ प्राणाधार पवित्र
 है, दरशन दीजीए रे के ॥ द० ॥ ज्ञानविमल सुखपूर,
 मलीने कीजीये रे के ॥ म० ॥ ८ ॥ इति.

अथ श्री अष्टापद स्तवन.

कुंवर गंगारो नजरे देखतांजी ॥ ए देशी ॥

चन अठ दश दोय वंदिएजी, वर्तमान जगदीश

रे; अष्टापद गिरि उपरेजी, नमतां बाधे जगीशरे ॥
 च० ॥ १ ॥ नरत नरतपति जिन मुखेजी, उच्चरीयां
 व्रत वार रे; दर्शन शुद्धिने कारणेजी, चोवीश प्रभुने
 विहार रे ॥ च० ॥ २ ॥ उंचपणे कोश तिग कह्योजी,
 योजन एक विस्तार रे; निज निजमान प्रमाण नरा
 वीयाजी, विंव स्वपर उपगाररे ॥ च० ॥ ३ ॥ अजि
 तादिक चउ दाहिणेजी, पछिमे पउमाइ आठ रे; अनं
 त आदे दश उत्तरेजी, पूरवे ऋषज वीर पाठरे ॥ च०
 ॥ ४ ॥ ऋषज अजित पूरवे रह्याजी, ए पण आगम
 पाठ रे; आतम शक्ते करे जातराजी, ते नव मुक्तिव
 रे हणी आठ रे ॥ च० ॥ ५ ॥ देखो अचंजो श्री सिद्ध
 चलेजी, हुआ असंख्या उदार रे; आज दिने पणइणे
 गिरेजी, ऊगमग चैत्य उदार रे ॥ च० ॥ ६ ॥ रहेश
 उत्सर्पिणि लगेजी, देव महिमा गुणदाख रे; सिंद नि
 पद्यादिक थिर पणेजी, वसुदेव हिंमनी साख रे ॥ च०
 ॥ ७ ॥ केवली जिन मुखमें सुण्योजी, इण विवे पा
 ठ पठाय रे; श्री शुभवीर वचन रसेजी, गायो ऋष
 ज शिव वाय रे ॥ च० ॥ ८ ॥ इति

अथ श्री अष्टापद स्तवन.

अष्टापद अरिहंतजी मारा बालाजी रे, आदी
 वर अवधार; नमीये नेह श्रुं ॥ मा० ॥ दश हजा
 मुणिंद श्रुं ॥ मा० ॥ वरिया शिववधु सार ॥ न
 मीये ॥ नरत नूप नावे कर्यो ॥ मा० ॥ चनुमुख
 वैत्य नुदार ॥ न० ॥ जिनवर चोवीशे जीहां ॥ मा० ॥
 प्राप्या अति मनोहार ॥ न० ॥ मा० ॥ १ ॥ वरण
 प्रमाणे विराजता ॥ मा० लंठनने अलंकार ॥ न० ॥
 समनासाये सोजता ॥ मा० ॥ चिहुं दिशे चार प्र
 प्रकार ॥ न० ॥ ३ ॥ मंदोदरी रावण तीहां ॥ मा० ॥
 नाटक करतां विचाल ॥ न० ॥ त्रुटी तांत तव रावणे
 ॥ मा० ॥ निजकर वीणा सत काल ॥ न० ॥ ४ ॥ क
 री बजावी तिणे समे ॥ मा० ॥ पण नवी त्रोम्युं ते
 तान ॥ न० ॥ तीर्थीकर पद बांधीयुं ॥ मा० ॥ अज्ञूत जा
 वशुं गान ॥ न० ॥ ५ ॥ निज लब्धे गौतम गुरु ॥
 मा० ॥ करवा आव्या ते जात ॥ न० ॥ जगचिंता
 मणी तीहां कर्युं ॥ मा० ॥ तापस बोध विख्यात ॥
 न० ॥ ६ ॥ ए गिरि महिमा मोटको ॥ मा० ॥ तेणे

(७७४)

जव पामे जे सिद्ध ॥ न० ॥ जे निज लब्धे जिन नमे
॥ मा० ॥ पामे शाश्वत रुद्धि ॥ न० ॥ ७ ॥ पद्म वि
जय कहे एहना ॥ मा० ॥ केतां करुं रे वखाण ॥ न० ॥
वीरे स्वमुखे वरणव्यो ॥ मा० ॥ नमतां कोनि कल्या
ण ॥ न० ॥ ८ ॥ इति

अथ श्री अष्टापद गिरि स्तवन.

अष्टापद गिरि यात्रा कारणकुं, रावण प्रति इ
रि आया; पुष्पक नामे विमाने बेसी, मंदोदरी सुहा
या ॥ १ ॥ श्री जिन पूजीये लाल, समकित निर्मल
कीजे; नयणे निरखी हो लाल, नरजव सफलो कीजे;
हैयमे हरखी लाल, समता संग करीजे; ए आंकणी॥
चउमुख चउगति हरण प्रासादे, चउवीसे जिन वेग;
चउदिशि सिंहासन समनासा, पूरव दिशि दोय जि
हा ॥ श्री० ॥ २ ॥ संजव आदे दक्षिण चारे पश्चिमे
आठ सुपासा; धर्म आदि उत्तर दिशि जाणो, एवं जि
न चउवीसा ॥ श्री० ॥ वेठा सिंह तणे आकारे, जि
णहर जरते कीधां; रयण विंव मूरति थापीने, जग
जसवाद प्रसिद्धा ॥ श्री० ॥ ४ ॥ करे मंदोदरी राणी

नाटक, रावण तांत बजावे; मादल वीणा ताल तंबू
 रो, पग रव ठम ठमकावे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नक्ति जा
 वे एम नाटक करतां, त्रुटी तंती विचाले; सांधी आ
 प नसा निज करनी, लघु कलाशुं ततकाले ॥ श्री० ॥
 ॥ ६ ॥ इय जावशुं नक्ति न खंभी, तो अक्षय पद
 साधुं ॥ समकित सुरतरु फल पामीने तीर्थंकर पद
 बांधुं ॥ श्री० ॥ एणी पेरे नविजन जे जिन आगे,
 बहुपरे जावना जावे; ज्ञान विमल गुण तेहना अह
 निश, सुरनर नायक गावे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति.

अथ श्री तीर्थमालासुं स्तवन.

शेत्रुंजे ऋषज समोसर्या, जला गुण जर्या ए;
 सिध्या साधु अनंत तीरथ ते नमुं रे ॥ १ ॥ तीन क
 व्याणक तीहां थयां, मुगते गयारे; नेमीसर गिरनार
 ॥ ती० ॥ २ ॥ अष्टापदे एक देहरो, गिरि सेहरो रे ॥
 नरते नराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ ३ ॥ आबु चोमुख अ
 ति जलो, त्रिजुवन तिलो रे; विमल वसे वस्तुपाल
 ॥ ती० ॥ ४ ॥ समेतशिखर सोढामणो, रलियाम
 णो रे; सीध्या तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ ५ ॥ नयरी

(७७६)

चंपा निरखीए, हिये हरखीए रे; सिध्या श्री वासु
पुज्य ॥ ती० ॥ ६ ॥ पूरव दिशि पावापुरी, ऋद्धेन्नरी
रे; मुगते गया महावीर ॥ ती० ॥ ७ ॥ जेसलमेर
जुहारीए, दुःख वारीए रे; अरिदंत विंव अनेक ॥ ती०
॥ ८ ॥ विकानेरज वंदीए, चिर नंदिए रे; अरिदंत दे
हरां आठ ॥ ती० ॥ ९ ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो
रे; फलोधि अंजन पास ॥ ती० ॥ १० ॥ अंतरीक अजा
वरो, अमीऊरो रे; जिरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ ११ ॥
त्रिलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे; राणपुरो रिस
हेस ॥ ती० ॥ १२ ॥ नाकुलाइ जादवो, गोमी स्तवो
रे; श्री वरकाणो पास ॥ ती० ॥ १३ ॥ नंदीसरनां देहरां,
बावन जलां रे; रुचक कुंमले चार चार ॥ ती० ॥ १४ ॥
शाश्वती अशाश्वती, प्रतिमा ठती रे; स्वर्ग मृत्यु पाता
ल ॥ ती० ॥ १५ ॥ तीरथ जात्रा फल तीहां, दोज्यो
मुज इहां रे ॥ समय सुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ १६ ॥ इति

॥ अथ श्री सीमंधर जिनस्तवन ॥

धन धन खेत्र माहाविदेहजी, धन्य पुंमरिगिणी

गाम ॥ धन्य तिहांनां मानवीजी, नित उठी करे रे
 प्रणाम ॥ सीमंधर स्वामी कश्येरे हुं महा विदेह आ
 वीश, जयवंता जिनवर कश्ये रे हुं तमने वांदीश
 ॥ १ ॥ चांदलीआ संदेशमोजी, कहेजो सीमंधर स्वा
 म॥ नरत क्षेत्रनां मानवीजी, नित उठी करे रे प्रणाम
 ॥ सी० ॥ २ ॥ समवसरण देवे रच्युं तीहां, चोसठ इं
 ६ नरेश ॥ सोना तणे सींहासन बेठा, चामर ठत्र ध
 रेश ॥ सी० ॥ ३ ॥ इंझणी काढे गहूंलीजी, मोतीना
 चोक पूरेश ॥ रली रली लीये लूठणांजी, जिनवर दी
 ये उपदेश ॥ सी० ॥ ४ ॥ एवे समे में सांजळ्युंजी,
 हवे करवां पञ्चखाण ॥ पोथी ठवणी तीहां कणेजी,
 अमृत वाणी वखाण ॥ सी० ॥ ५ ॥ रायने वहालां
 घोमलांजी, वेपारीने वहाला ठे दाम ॥ अमने वहा
 ला सीमंधर स्वामी, जिम सीताने श्री राम ॥ सी०
 ॥ ६ ॥ नहीं मागुं प्रभु राज रीझिजी, नहीं मागु गरथ
 जंमार ॥ हुं मागुं प्रभु एटलुंजी, तुम पासे अवतार ॥
 सी० ॥ ७ ॥ दैव नदीधी पांखमीजी, केम करी आवुं रे
 हजुरा ॥ मुजरो मारो मानजोजी, प्रहळगमते सूर ॥ सी० ॥

॥ ૮ ॥ સમય સુંદરની વીનતીજી, માનજો વારંવાર ॥
 વે કર જોમી વીનહુંજી, વીનતમી અવધાર ॥ સી૦ ॥ ૯ ॥

॥ અથ શ્રી યુગમંધર જિનસ્તવન ॥

શ્રી યુગમંધરને કહેજો, કે દધિસુત વીનતમી
 સુણજો રે ॥ શ્રી યુગ ॥ ૧ ॥ આંકણી ॥ કાયા પામી અ
 તિ કૂમી, પાંચ નહીં રે આવું ઝમી, લલિત નહીં કોયે
 રૂમી રે ॥ શ્રી૦ ॥ ૧ ॥ તુમ સેવા માંહે સુર કોમી, તે
 ઇહાં આવે એક દોમી, આશ ફલે પાતક મોમી રે ॥
 શ્રી૦ ॥ ૨ ॥ દુઃખમ સમયમાં રહે જરતે, અતિશય ના
 ણી નવિ વરતે, કંઠીએ કહો કોણ સાંજલતે ॥ શ્રી૦
 ॥ ૩ ॥ શ્રવણે સુગ્રીઆ તુમ નામે, નયણાં દરિસણ
 નવિ પામે, એતો ઝઘમાને ઘામે રે ॥ શ્રી૦ ॥ ૪ ॥ ત્રા
 ર આંગલ અંતર રહેવું, શોકલમીની પરે દુઃખ સહેવું,
 પ્રભુ વિના કુણ આગલ કહેવું રે ॥ શ્રી૦ ॥ ૫ ॥ મહોટા
 મેલ કરી આપે, વેહુને તોલ કરી આપે, સજ્જન જસ જ
 ગમાં વ્યાપે રે ॥ શ્રી૦ ॥ ૬ ॥ વેહુનો એક મતો આવે,
 કેવલ નાણ જુગલ પાવે; તો સવિ વાત વની આવે રે

(७७ए)

श्री० ॥ ७ ॥ गज लंठन गज गति गामी, विचरे वि
प्रविजय स्वामी, नगरी विजया गुण धामी रे ॥ श्री०
॥ ८ ॥ मात सुताराये जायो, सुदृढ नरपति कुल आ
यो, पंक्ति जिन विजये गायो रे ॥ श्री० ॥ ए॥ इति.

॥ अथ अजरा पार्श्वनाथनुं स्तवन ॥

महा कोप थयो ते कलीकालमां जो ॥ ए गर
वानी देशीमां ॥ हां रे मारे आजनी घनी ते रलीआ
मणी जो, अजरा पासजी पुज्यानी वधामणी जो ॥
मारेण ॥ १ ॥ पूरो पूरो रे सोहागण साथीनु जो ॥ मारे
मंदिरे पधाखो पास हाथीनु जो ॥ मारेण ॥ २ ॥ हुं
तो मोतीमाना चोक पूरावती जो ॥ अजरापासजीनी
आंगीनु रचावती जो ॥ मारेण ॥ ३ ॥ हुं तो चंपेली
ना थंन रोपावती जो ॥ अजरापासजीने पधरावती
जो ॥ मारेण ॥ ४ ॥ कहे रूपचंद स्वामीने दीठमो
जो ॥ मारा हृदय कमल लागे मीठमो जो ॥ मारे
आजण ॥ ५ ॥ इति.

॥ अथ श्री पांच कारणानुं स्तवन ॥

दोहा.

सिंहास्य सुत वंदीए, जगदीपक जिनराज; व
स्तु तत्व सवि जाणीए, जस आगमधी आज ॥ १ ॥
स्यान्नादधी संपजे, सकल वस्तु विख्यात; सप्त जंग
रचना विना, बंध न बेसे वात ॥ २ ॥ वाद वेदे नयजू
जुआ, आप आपणे ठाम; पूरण वस्तु विचारतां, को
ई न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध पुरुषे एह गज, ग्रही अ
वयव एकेक; दृष्टिवंत लहे पूर्णगज, अवयव मिली
अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकलनये करी, जुगति योग
शुद्ध बोध; धन्य जिन शासन जगजयो, जिहां नदी
किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली. राग आशावरी ॥

श्री जिनशासन जगजयकारी, स्यान्नाद शुद्ध
रूप रे; नयएकांत मिश्यात निवारण, अकल अजंग
अनूप रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कोइ कहे एक का
लतणे वश, सकल जगत गति दोय रे; काले ठपने

काले विणसे, अवर न कारण कोय रे. श्री ॥ २ ॥ का
 ले गर्ज धरे जग वनिता, काले जनमे पूत रे; काले बो
 ले काले चाले, काले जाले घर सूत रे. श्री ॥ ३ ॥ का
 ले दूध अकी दही आये, काले फल परिपाक रे; विविध
 पदारथ काल उपाए, काले सहु आये खाक रे. श्री ॥ ४ ॥
 जिन चोवीशे बारे चक्रवर्ती, वासुदेव बलदेव रे; काले
 कवलित कोइ न दीसे, जसु करता सुरसेव रे. श्री
 ॥ ५ ॥ उत्सर्पिणी अवसर्पिणी आरा, ठए जुइ जुइ
 ज्ञातरे; षट् ऋतु काल विशेष विचारो, जिन जिन
 दिन रातरे ॥ श्री ॥ ६ ॥ काले बाल विलास मनोहर,
 यौवन काला केशरे; वृद्धपण बली पली वपु अति दुर्बल,
 शक्ति नहीं लवलेशरे ॥ श्री० ॥ ७ ॥

इति काल विवादः

काल बीजी; गिरुआ गुणवीरजी, ए देशी.

तव स्वप्नाववादी वदेजी, काल किस्सुं करे रंक;

वस्तु स्वप्नावे नीपजेजी, विणसे तिमज निशंक; सु
 विवेक विचारी जुन; जुन वस्तु स्वप्नाव ॥ १ ॥ ए
 आंकणी ॥ ठते योग जोवनवतीजी, वांजणी न जणे
 वाल; मूठ नहीं महिला मुखेजी, करतल ऊगे न वाल
 ॥ सु० ॥ २ ॥ विण स्वप्नाव नवि नीपजेजी, केम प
 दारण कोय; अंव न लागे लींवेजी, वाग वसंते जोय
 ॥ सु० ॥ ३ ॥ मोर पिछ कुण चीतरेजी, कुण करे
 संध्या रंग; अंग विविध सवि जीवनांजी, सुंदर नयन
 कुरंग ॥ सु० ॥ ४ ॥ कांटा वोर वबुलनांजी, कोणे
 अणीयालां कीव; रूप रंग गुण जुजुआजी, तरु फ
 ल फूल प्रसिद्ध ॥ सु० ॥ ५ ॥ विषधर मस्तक नित्य
 वसेजी, मणि हर विष ततकाल; पर्वत शिर चल वाय
 रोजी, उर्ध्व अग्निनी जाल ॥ सु० ॥ ६ ॥ मछ तुंव ज
 लमां तरेजी, वूमे काग पढाण; पंखि जात गयणे फिरे
 जी, इणिपरे सयल विनाण ॥ सु० ॥ ७ ॥ वायु सुंठ
 श्री उपशमेजी, हरमे करे विरेच; सीजे नहीं कण कां
 गर्नुजी, शक्ति स्वप्नाव अनेक ॥ सु० ॥ ८ ॥ दश वि
 शेपे काष्ठनांजी, जुयमां थाय पढाण; शंख अस्थिनी

(७८३)

नीपजेजी, क्षेत्रे स्वप्नाव प्रमाण ॥ सु० ॥ ए ॥ रवि
तातो शशि शीतलोजी, ज्ञव्यादिक बहु ज्ञाव; ठए इ
व्य आप आपणाजी, न तजे कोय स्वप्नाव ॥ सु० ॥
॥ १० ॥ इति स्वप्नाव वादः

ढाल त्रीजी.

कपूर होए अति नजलो रे. ए देशी.

काल किश्युं करे बापमोजी, वस्तु स्वप्नाव अक
ऊ; जो नवि होये नवितव्यताजी, तो किम सीजे क
ऊरे; प्राणी मकरो मन जंजाल, ज्ञावी ज्ञाव निहाल
रे ॥ प्राणी ॥ म० १ ॥ ए आंकणी. जलनिधि तरे जंगल फ
रेजी, कोरु जतन करे कोय; अणज्जावी होवे नहींखी,
ज्ञावि होय ते होय रे ॥ प्रा० ॥ १ ॥ आंवे मोर वसं
तमांजी, माले माले केइ लाख; केइ खर्यी केइ खाख
टीजी, केइ आंधा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ बाजल जि
म नवितव्यताजी, जिण जिण दिसिज जाय; परवश
मन माणस तणुंजी, तृण जिम पूंठे धाय रे. प्राण ॥ ४ ॥

नियति वशे विण चिंतव्युंजी, आवी मले तत्काल;
 वरसासोनुं चिंतव्युंजी, नियति करे विस्तराल रे. प्रा०
 ॥ ५ ॥ ब्रह्मदत्त चक्रीतणांजी, नयण हणे गोवाल; दो
 य सहस्सजस्त देवताजी, देह तणा रखवाल रे. प्रा०
 ॥ ६ ॥ को कूहो कोयल करेजी, किम राखी शके प्रा
 ण; आदेमी शर ताकीयोजी, उपर जमे शींचाण रे.
 प्रा० ॥ ७ ॥ आदेमी नागें रुद्रयोजी, वाण लाग्यो शीं
 चाण; कोकुहो उरुी गयोजी, जून् जून् नियत प्रमा
 ण रे. प्रा० ॥ ८ ॥ शस्त्र हण्यां संग्राममांजी, राने प
 रुचा जीवंत; मंदिरमांथ्री मांनवीजी, राख्यादी न रदं
 त रे. प्रा० ॥ ९ ॥ इति ज्वितव्यतावादः कथितः

॥ ढाल चोथी ॥

राग मारुणी. मनोहर हीरजीरे, ए देशी.

काल स्वप्नाव नियतमतिकूमी, कर्म करे ते थाय;
 कर्म निरय तिरिय नर सुरगतिजी, जीव ज्वंत
 रे जाय; चेतन चेतिये रे ॥ १ ॥ कर्म समो नहीं कोइ.
 चेतन० ए थांकणी कर्म राम वस्या वनवासे, सीता

पामे आल; कर्म लंकापति रावणनुं, राजी थयुं विस
 राल ॥ चे० ॥ २ ॥ कर्म कीली कर्म कुंजर, कर्म नर
 गुणवंत; कर्म रोग शोग दुःख पीडित, जनम जाय वि
 लपंत ॥ चे० ॥ ३ ॥ कर्म वरस लगें रिसहेसर, नदक न
 पामे अन्न; कर्म वीरने जुनुयोगमां रे, खीला रोप्या क
 न्न ॥ चे० ॥ ४ ॥ कर्म एक सुखपाले बेसे, सेवक सेवे
 पाय; एक हय गय रथ चढ्यां चतुरनर, एक आग
 ल नजाय ॥ चे० ॥ ५ ॥ नद्यम मानी अंधतणी परे,
 जग हीने हाहूतो; करम बली ते लहे सकल फल,
 सुखनर सेजे सूतो रे ॥ चे० ॥ ६ ॥ नंदर एके कीधो
 नद्यम, करंमीनु करकोले; मां हे घणां दिवसनो नूख्यो,
 नाग रह्यो दुःख मोले रे ॥ चे० ॥ ७ ॥ विवर करी
 मूषक तस मुखमां, दिये आपणो देह; माग लही व
 ननाग पधार्या, कर्म मर्म जूनु एह ॥ चे० ॥ ८ ॥

॥ इति कर्म विवादः कथितः ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

हवे नद्यमवादी जणे ए, ॥ ए ज्यारे असम

अतो; सकल पदारथ साधवा ए, एक उद्यम समरथ तो ॥ १ ॥
 उद्यम करतां मानवी ए, शुं नवि सीजे काज तो; रामे रयणायर तरी ए, लीधुं लंका राज तो ॥ २ ॥
 करम नियत ते अनुसरे ए, जेहमां शक्ति न होय तो; देउल बाध मुखे पंखीयां ए, पिउ पेसंता जाय तो ॥ ३ ॥
 विण उद्यम किम निकले ए, तिल मां हेथी ते ल तो; उद्यमथी उंची चढे ए, जुन एकेंडिय वेल तो ॥ ४ ॥
 उद्यम करतां एक समे ए, जेह नवि सीजे काज तो; ते फिरि उद्यमथी हुवे ए, जो नवि आवे बाज तो ॥ ५ ॥
 उद्यम करी नर्या विना ए, नवि रंधाये अन्न तो; आवी न पने कोलीउ ए, मुखमां पग्वे जतन्न तो ॥ ६ ॥
 कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यमे कीधां कर्म तो; उद्यमथी दूरे टले ए, जुन कर्मनो मर्म तो ॥ ७ ॥
 दह प्रहारी हत्या करी ए, कीधां पाप अनंत तो; उद्यमथी पट मात्तमां ए, आप अया अरिहंत तो ॥ ८ ॥
 टीपे टीपे सर जरे ए, कांकरे कांकरे पाल तो; गिरि जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम शक्ति निदाल तो ॥ ९ ॥
 उद्यमथी जल विंउउ ए, करे पाखाणमां गम तो; उद्य

मथी विद्या नणे ए; नयम जोने दाम तो ॥ १० ॥

॥ इति नयम विवादः ॥

॥ ठाल ठळी. ए ठंझी किहां राखी. ए देशी ॥

ए पांचे नयवाद करंतां, श्रीजिन चरणे आवे; अ
मिय सरस जीन दाणी सुणीने, आनंद अंग न मावे
रे प्राणी; समकित मति मन आणो, नय एकांत म ता
णो रे प्राणी; ते मिळ्या मति जाणो रे प्राणी ॥ स० ॥

॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ए पांचे समुदाय मिळ्या विण,
कोइ काज न सीजे; अंगुलियोगे करतणी परे, जे
बूजे ते रीजे रे प्राणी ॥ स० ॥ २ ॥ आग्रह आणी
कोइ एकने, एहमां दीजे वरुड; पण सेना मिलि स
कल रणांगण, जीते सुन्नट लरुड रे प्राणी ॥ सम० ॥

॥ ३ ॥ तंतु स्वप्नावे पट नपजावे, कालक्रमे रे वणा
ए; नवितव्यता होय तो निपजे, नही तो विघन घ
णां रे प्राणी ॥ सम० ॥ ४ ॥ तंतु वाय नयम जो
कादिक, जाग्य सकल सहकारी; इम पांचे मलि सक
ल पदारथ, उत्पत्ति जुळ विचारी रे प्राणी ॥ सम० ॥

अतो; सकल पदारथ साधवा ए, एक उद्यम समरथ तो
 ॥१॥ उद्यम करतां मानवी ए, शुं नवि सीजे काज तो;
 रामे रयणायर तरी ए, लीधुं लंका राज तो ॥ २ ॥
 करम नियत ते अनुसरे ए, जेहमां शक्ति न होय तो;
 देजल बाध मुखे पंखीयां ए, पिज पेसंता जाय तो
 ॥ ३ ॥ विण उद्यम किम निकले ए, तिल मांहेथी ते
 ल तो; उद्यमथी नंची चढे ए, जुन एकेंडिय वेल तो
 ॥ ४ ॥ उद्यम करतां एक समे ए, जेह नवि सीजे का
 ज तो; ते फिरि उद्यमथी हुवे ए, जो नवि आवे वाज
 तो ॥ ५ ॥ उद्यम करी नुर्या विना ए, नवि रंधाये अ
 न्न तो; आवी न पमे कोलीज ए, मुखमां पखे जतन्न
 तो ॥ ६ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यमे कीधां क
 र्म तो; उद्यमथी दूरे टले ए, जुन कर्मनो मर्म तो ॥ ७ ॥
 दढ प्रहारी हत्या करी ए, कीधां पाप अनंत तो; उद्य
 मथी षट मासमां ए, आप थया अरिहंत तो ॥ ८ ॥
 टींपे टींपे सर जरे ए, कांकरे कांकरे पाल तो; गिरि
 जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम शक्ति निहाल तो ॥ ९ ॥
 उद्यमथी जल विंडुन ए, करे पाखाणमां गम तो, उद्य

मथी विद्या ज्ञे ए; उद्यम जोमे दाम तो ॥ १० ॥

॥ इति उद्यम विवादः ॥

॥ ढाल ठढी. ए ठंढी किहां राखी. ए देशी ॥

ए पांचे नयवाद करंतां, श्रीजिन चरणे आवे; अ
मिय सरस जीन दाणी सुणीने, आनंद अंग न मावे
रे प्राणी; समकित मति मन आणो, नय एकांत म ता
णो रे प्राणी; ते मिथ्या मति जाणो रे प्राणी ॥ स० ॥

। १ ॥ ए आंकणी ॥ ए पांचे समुदाय मिथ्या विण,
तोइ काज न सीजे; अंगुलियोगे करतणी परे, जे
भूजे ते रीजे रे प्राणी ॥ स० ॥ २ ॥ आग्रह आणी
तोइ एकने, एहमां दीजे वसाइ; पण सेना मिलि स
कल रणांगण, जीते सुन्नट लसाइ रे प्राणी ॥ सम० ॥

। ३ ॥ तंतु स्वप्नावे पट उपजावे, कालक्रमे रे वणा
इ; नवितव्यता होय तो निपजे, नही तो विधन घ
णाए रे प्राणी ॥ सम० ॥ ४ ॥ तंतु वाय उद्यम जो
मादिक, जाग्य सकल सहकारी; इम पांचे मिलि सक
न पदारथ, उत्पत्ति जुनु विचारी रे प्राणी ॥ सम० ॥

॥ ५ ॥ नियति वशे हलु करमो अइने, निगोद अकी
 निकलीयो; पुण्ये मनुज जवादिक पामी. सज्जुहने ज
 इ मलियो रे प्राणी ॥ सम० ॥ ६ ॥ जव धितिनो प
 रिपाक अयो तव, पंमितवीर्य उल्लसीनु; जव्य स्वजा
 वे शिवगति पामी, शिवपुरे जइने वसीनु रे प्राणी
 ॥ सम० ॥ ७ ॥ वर्द्धमान जीन इणीपरे विनये, शास
 न नायक गायो; संघ सकल सुख होये जेहथी, स्या
 दवादरस पायो रे प्राणी ॥ सम० ॥ ८ ॥

कलश.

इय धर्मनायक, मुक्ति दायक, वीर जिनवरसंशु
 एयो; सय सत्तर संवत वह्नि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घ
 णो; श्री विजयदेव सूरिंद पटधर श्री विजयप्रज्ञ मु
 णिंदए, श्री कीर्त्तिविजय वाचक शिष्य इणी परे, वि
 नय कहे आणंद ए ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संज्ञवनाथनुं स्तवन ॥

साहिव सांज्ञलो रे, संज्ञव अरज हमारी ॥ ज

वोजव हुं ज्ञम्यो रे, न लहि सेवा तुमारी ॥ नरय नि
 गोदमां रे, तिहां हुं बहु ज्ञव ज्ञमीन ॥ तुम विना दुःख
 सहां रे, अहोनिश क्रोधे धमधमीयो ॥ सा० ॥ १ ॥
 इंडिय वश पम्यो रे, पाढ्यां व्रत नवि सुंसे ॥ त्रस
 पण नवी गण्या रे, हणीया आवर हुंसे ॥ व्रत चित
 नवि धर्यां रे, बीजुं साचुं न बोळ्युं ॥ पापनी गोठमी
 रे, तीहां में हड्ढलुं खोळ्युं ॥ सा० ॥ २ ॥ चोरी में
 करी रे, चउविह अदत्त न टाळ्युं ॥ श्री जिन आणशुं
 रे, में नवि संयम पाळ्युं ॥ मधुकरतणीपरे रे; शुद्ध
 न अहार गवेख्यो ॥ रसना लालचे रे, नीरस पिंरु उ
 वेख्यो ॥ सा० ॥ ३ ॥ नरजव दोहिलो रे, पामी मो
 ह वश पम्यो ॥ परस्त्री देखीने रे, मुज मन तिहां
 जइ अमीयो ॥ काम न को सख्यां रे, पापे पिंरु में ज
 रीयो ॥ शुद्ध बुद्ध नवी रही रे, तेणे नवी आत्म ल
 रीयो ॥ सा० ॥ ४ ॥ लक्ष्मीनी लालचे रे, में बहु दी
 नता दाखी ॥ तोपण नवि मली रे, मलीतो नव रही
 राखी ॥ जे जन अज्जिलसे रे, ते तो तेहथी नासे ॥
 तृण सम जे गणे रे, तेहनी नित्य रहे पासे ॥ सा० ॥

(७९०)

॥ ५ ॥ धन धन ते नरा रे, एहनो मोह विठोमी ॥
विषय निवारीने रे, जेहने धर्ममां जोमी ॥ अन्नक ते
में नखयां रे, रात्री जोजन कीधां ॥ व्रत ठ नवि पा
लियां रे, जेहवां मूलथी लीधां ॥ साण ॥ ६ ॥ अनंत
नव हुं नम्यो रे, नमतां साहिव मलियो ॥ तुम वि
ना कोण दीये रे, बोध रयण मुज बलियो ॥ संनव
आपजो रे, चरण कमल तुम सेवा ॥ नय एम विनवे
रे, सुणजो देवाधि देवा ॥ साण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजीनुं स्तवन ॥

अंतरजामि सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तु
मारो ॥ सांनलीने आव्यो हुं तीरे, जनम मरण दुःख
वारो ॥ १ ॥ सेवक अरज करे ठे राज, अमने शीव
सुख आपो ॥ ए आंकणी ॥ सहुकोनां मनवांछित पू
री, चिंता सहुनी चुरो ॥ एहवुं विरुद ठे राज तुमाहं,
केम राखो ठो दूरे ॥ सेण ॥ २ ॥ सेवकने वलवलतो
देखी, मनमां मेहेर न धरशो ॥ करुणासागर केम
कहेवाशो, जो उपकार न करशो ॥ सेण ॥ ३ ॥ लट

(७९)

पटनुं हवे काम नहीं ठे, प्रत्यक्ष दरिसेण दीजे ॥ धुं
आमे धीजुं नहीं साहेब, पेट पमचां पतीजे ॥ सेण ॥
॥ ४ ॥ श्री संखेश्वर मंरुण साहेब, विनतनी अवधारो ॥
कहे जिनहर्ष मया कर मुजने, जव सायरथी तारो
॥ सेण ॥ ५ ॥ इति.

॥ अथ श्री दीवालीनुं स्तवन ॥

॥ बाढहाजीनी वाटनी अमे जोतां रे ॥ ए देशी.

जय जिनवर जग हितकारी रे, करे सेवा सुर
अवतारी रे, गौतम पमुहा गणधारी ॥ १ ॥ सनेही
वीरजी जयकारी रे ॥ अंतरग रिपुने त्रासे रे, तप को
पाटोपें वासे रे, लहुं केवलनाण उद्धासे ॥ स० ॥
॥ २ ॥ कटीलंके वाद वदाय रे, पण जिन साथें
न घटाय रे, तेणो हरिलंबन प्रभु पाय ॥ स० ॥ ३ ॥
सवि सुरंवहू श्रेष्ठ श्रेष्ठ कारा रे, जल पंकजनी पेरे न्या
रा रे, तजी तृषणा जोग विकारा ॥ स० ॥ ४ ॥ प्रभु
देशना अमृतधारा रे, जिन धर्म विषे रथकारा रे, जे
णे तार्या मेघ कुमारा ॥ स० ॥ ५ ॥ गौतमने केवल

आली रे, वस्त्रा स्वातिये शिव वरमाली रे; करे उत्तम
लोक दीवाली ॥ स० ॥ ६ ॥ अंतरंग अलह निवारी रे,
शुभ सज्जनने उपगारी रे, कहे वीर वीजु हितकारी
॥ स० ॥ ७ ॥ इति.

॥ अथ श्री दीवालीनुं स्तवन ॥

॥ प्रभु कंठे ठवि फूलनी माला ॥ ए देशी.

रमती गमती अमुन साहेली, वेहु मली लीजी
ए एक ताली रे ॥ सखी आज अनोपम दीवाली ॥
लील विलासे पूरण मासे, पोश दशम निशि रढीया
ली रे ॥ स० ॥ १ ॥ पशुपंखी वसीयां वनवासे, तेप
ण सुखीआं समकाली रे ॥ स० ॥ एणी रात्रे घेर घे
र उत्सव होशे, सुखीयां जगतमां नरनारी रे ॥ स० ॥
॥ २ ॥ उत्तम ग्रह विशाखा जोगे, जनम्या प्रभुजी
जयकारी रे ॥ स० ॥ साते नरके अयां अजुवालां,
थावरने पण सुखकारी रे ॥ स० ॥ ३ ॥ माता नमी
आवे दिक्कुमरी, अधोलोकनी वसनारी रे ॥ स० ॥ मू

(७९३)

तीघर इशाने करती, जोजन एक अशुची टाली रे
॥ स० ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वलोकनी आठज कुमरी, वरसावे
जल कुसुमाली रे ॥ स० ॥ पूरव रुचक आठ दर्पण
धरती, दक्षिणनी अरु कलशाली रे ॥ स० ॥ ५ ॥ अरु
पश्चिमनी पंखा धरती, उत्तर आठ चमर ढाली रे
॥ स० ॥ विदिशीनी चञ्च दीपक धरती; रुचक छीप
नी चञ्चबाली रे ॥ स० ॥ ६ ॥ केल तणां घर त्रणे
करीने, मर्दन स्नान अलंकारी रे ॥ स० ॥ रक्षा पोट
ली बांधी बेहुने, मंदिर मेढ्यां शणगारी रे ॥ स० ॥
॥ ७ ॥ प्रभु मुख कमलें अमरी जमरी, रास रमं
ती लटकाली रे ॥ स० ॥ प्रभु माता तुं जगतनी मा
ता, जग दीपकनी धरनारी रे ॥ स० ॥ ८ ॥ माजी तुज
नंदन घणुं जीवो, उत्तम जीवने उपगारी रे ॥ स० ॥
उपपन्न दिक्कुमरी गुणगाती, श्री शुभवीर वचन शा
लीरे ॥ स० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्र स्तवन ॥

अवसर पामीने रे, कीजे नव आंबेलनी उली

॥ जुली करतां आपद जाये, ऋद्धि सिद्धि लहिये बहु
 ली ॥ अ० ॥ १ ॥ आसोने चैत्रे आदरशुं, सातमथी
 संजाली रे ॥ आलस मेली आंवेल करशे, तस घर
 नित्य दीवाली ॥ अ० ॥ २ ॥ पूनमने दिन पूरी आते
 प्रेमशुं पखाली रे ॥ सिद्धचक्रने शुद्ध आराधि, जा
 प जपे जपमाली ॥ अ० ॥ ३ ॥ देहेरे जशने देव जु
 हारो, आदीश्वर अरिहंत रे ॥ चोवीसे चाहोने पूजो,
 ज्ञावशुं जगवंत ॥ अ० ॥ ४ ॥ वे टंके पन्निक्कमणुं
 बोळ्युं, देववंदन त्रण काल रे ॥ श्री श्रीपाल तणी प
 रे समजी, चित्तमां राखो चाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ समकि
 त पामी अंतरजामी, आराधो एकांत रे ॥ स्याद्वाद
 पंथे संचरतां, आवे जवनो अंत, ॥ अ० ॥ ६ ॥
 सत्तर चोराणुंये शुद्धि चैत्रीये, वारशे वनावी
 रे ॥ सिद्धचक्र गातां सुख संपत्ति, चालीने घेर
 आवी ॥ अ० ॥ ७ ॥ नदयरत्न वाचक, जे नरना
 री चाले रे ॥ जवनी ज्ञावठ ते ज्ञांजीने, मुक्तिपुरी
 मां महाले ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ अथ रोहिणी तपनुं स्तवन ॥

हारे मारे वासुपूज्यनो नंदन, मधवा नामजो
 ॥ राणी तेहनी कमला, पंकज लोयणी रे लो ॥ हां
 रे मारे आठ पुत्रने, उपर पुत्री एक जो ॥ मात पि
 ताने वहाली, नामे रोहिणी रे लो ॥ १ ॥ हारे मारे
 देखी यौवन, वय निज पुत्री नूप जो ॥ स्वयंवर मंरु
 प मांसी, नृपतेमाविया रे लो ॥ हां रे मारे अंग वं
 गने, मरुधर केरा राय जो ॥ चातुरंगी फोजांशी चं
 पाये, आवीआ रे लो ॥ २ ॥ हारे मारे पूरव जवना,
 रागे रोहिणी नाम जो ॥ नूप अशोकने कंठे, वरमा
 ला धर रे लो ॥ हां रे मारे गज रथ घोडा, दान अने
 बहु मान जो ॥ देइ वोलावी बेटी, बहु आम्बरे रे
 लो ॥ ३ ॥ हारे मारे रोहिणी राणी, जोगवतां सु
 ख जोग जो ॥ आठ पुत्रने पुत्री चार सोहामणी रे
 लो ॥ हां रे मारे आठमा पुत्रनुं, लोकपाल ठे नाम
 जो ॥ ते खोले लई बेठी, गोखे जामीनी रे लो ॥ ४ ॥
 हारे मारे एहवे कोइक, नगर वणीकनो पुत्र जो ॥
 आयु कथथी बालक, मरण दशा लहे रे लो ॥

(७६)

हां रे मारे मातपितादिक, सहु तेनो परिवार जो॥ रम
तो परम तो गोख तले, अईने बहे रे लो॥५॥ हां रे मारे
ते देखी अति, हरखी राणी ताम जो ॥ पीनने ज्ञां
खे ए नाटक कुण ज्ञातनुं रे लो ॥ हां रे मारे दीप
कहे ए, पूरव पुन्य संकेत जो ॥ जन्म अकी नवी दी
तुं दुःख कोइ ज्ञातनुं रे लो ॥ ६ ॥

॥ अथ गौतमस्वामीनुं प्रज्ञाति स्तवन ॥

राग प्रज्ञाति

॥ मात पृथ्वी सुत प्रात उठी नमो, गणधर
गौतम नाम गेले॥ प्रह समे प्रेमशुं जेह ध्यातां सदा,
चढती कला होय वंश बेले ॥ मा० ॥ १ ॥ वसूज्जुति
नंदन विश्वजन वंदन, दुरित निकंदन नाम जेनुं ॥ अ
जेद बुद्धे करी ज्ञविजन जे ज्ञजे, पूर्ण पहोंचे सही
ज्ञाग्य तेनुं ॥ मा० ॥३॥ सुरमणि जेह चिंतामणि सुर
तरु, कामित पूरण कामधेनु ॥ एहज गौतमतणुं ध्या
न हृदये धरो, जेह अकी अधिक नहीं महात्म्य केनुं

(७९७)

॥ मा० ॥ ३ ॥ ज्ञान बल तेजने सकल सुख संपदा,
गौतम नामथी सिद्धि पामे ॥ अखंड प्रचंड प्रताप
होय अवनिमां, सुरनर जेहने शीश नामे ॥ मा०
॥ ४ ॥ प्रणव आदे धरी माया बीजे करी, स्वमुखे गौ
तम नाम ध्याये ॥ कोन्ही मन कामना सफल वेगे फ
ले, विघन वैरी सवे दूर जाये ॥ मा० ॥ ५ ॥ डुष्ट दूरे
टले स्वजन मेलो मले, आधि उपाधिने व्याधि नासे ॥
भूतनां प्रेतनां जोर ज्ञांजे वली, गौतम नाम जपतां
उच्चासे ॥ मा० ॥ ६ ॥ तीर्थ अष्टापदे आप लब्धे ज
इ, पन्नरशें त्रणने दीख दीधी ॥ अठम पारणे तापस
कारणे, क्षीर लब्धे करी अखुट कीधी ॥ मा० ॥ ७ ॥
वरस पञ्चास लगे गृहवासे वस्या, वरस वली त्रीश
करी वीर सेवा ॥ बार वरसां लगे केवल जोगव्युं, न
क्ति जेहनी करे नित्ये देवा ॥ मा० ॥ ८ ॥ महियल
गौतम गोत्र महिमा निधि, गुण निधि ऋद्धिने सिद्धि
दाई ॥ उदय जस नामथी, अधिक लीला लहे, सुजस
सौभाग्य दोलत सवाई ॥ ए ॥ इति ॥

(७६)

॥ श्री संखेश्वरा पार्श्वनाथनुं स्तवन ॥

पास संखेश्वरा, सार कर सेवकां, देवकां एवमी
वार लागे ॥ कोमी कर जोमी दरवार आगे, खमा ॥
ठाकुरां चाकुरां मान मागे ॥ पास० ॥ १ ॥ प्रगट था
पासजी मेली परुदो परो, मोरु असुराणने आप
ठोमो ॥ सुज महीराण मंजुसमां पेशीने, खलकना
नाथजी बंध खोलो ॥ पास० ॥ २ ॥ जगतमां देव ज
गदीश तुं जागतो, एम शुं आज जिनराज उंधे ॥ मो
टा दानेश्वरी तेहने दाखीए, दान दे जेह जगकाल
मोघे ॥ पास० ॥ ३ ॥ नीरु पमी जादवा जोर जागी ज
रा, ततक्षण त्रीकमे तुज संजार्यो ॥ प्रगट पातालथी
पलकमां तैं प्रजु, जक्तजन तेहनो जय निवार्यो ॥
पास० ॥ ४ ॥ आदि अनादी अरिहंत तुं एक ठे, दीन
दयाल ठे कोण डुजो ॥ उदयरत्न कहे प्रगट प्रजु पा
सजी, पामी जय जंजनो एह पूजो ॥ [उदयरत्न कहे
असुरनुं शुं गजु, मानसो रखे महाराज जूगे] ॥ ५ ॥ इति.

(७९९)

॥ अथ दान, शील, तप, अने ज्ञावनुं
प्रज्ञातिथुं ॥

रे जीव जैन धर्म कीजीये, धर्मना चार प्रकार॥
दान शीयल तप ज्ञावना, जगमां एटलुं सार ॥ रे
जी० ॥ १ ॥ वरस दिवसने पारणे, आदीसर सुखका
र ॥ शीलनी रस वोहोरावियो, श्री श्रेयांस कुमार
॥ रे जी० ॥ २ ॥ चंपा पोल उघामवा, चारणीए का
व्यां नीर ॥ सतीय सुन्नडा जश थयो, शीयले सुरन
र धीर ॥ ३ ॥ तप करी काया शोषवी, सरस नीरस
आहार ॥ वीर जिणंद वखाणीयो, धन धनो अणगार
॥ रे जी० ॥ ४ ॥ अनित्य ज्ञावना ज्ञावतां, धरतां नि
र्मल ध्यान ॥ जरंत आरिसा जुवनमां, पाम्या केवल
ज्ञान ॥ रे जी० ॥ ५ ॥ जैन धर्म सुरतरु समो, जेह
नी शीतल ढाया ॥ समय सुंदर कहे सेवतां, वंछित
फल पाया ॥ रे जी० ॥ ६ ॥

॥ अथ प्रज्ञातिथुं ॥

॥ जोबनीयांनी मोजां फोजां, जाय नगरां देती

रे ॥ घमी घमीनां घमियालां वागे, तोय न जागे तेथी
 रे ॥ जो० ॥ १ ॥ जरा राहसी जोर करे ठे, फेलावे फ
 जेती रे, आवी अवधे नशंके नहि लखपतिने लेती
 रे ॥ जो० ॥ २ ॥ माळे वेगो मोज करे ठे, खांते जुवे
 खेती रे ॥ जमरो जमरो ताणी लेशे, गोफण गोला सें
 ती रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ जमराजाने शरणे जावुं, जोरा
 लो कोइ जेथी रे ॥ डुनियां दूजो दीसे नांहि, आखर
 तरशो तेहथी रे ॥ जो० ॥ ४ ॥ दांत पम्या ने मोसो
 थयो, काज न सरयुं केहथी रे ॥ उदयरत्न कहे आपे
 समजो, कहीये वातो केती रे ॥ ज० ॥ ५ ॥

॥ अथ प्रज्ञाति रागमां स्तवन ॥

प्रज्ञाते उगीने माता मुखमुं जोवे ॥ ए देशी ॥

आवी रूमी जगति में, पेहेलां न जाणी पे
 हेलां न जाणी रे प्रभु पेहेलां न जाणी ॥ संसार
 नी मायामां में वलोव्युं पाणी ॥ आ० ॥ ए आंकणी ॥
 कलपतरुनां फल लावीने जे जिनवर पूजे ॥ काल अ

नादि कर्म ते संचित, सत्ताथी ध्रूजे ॥ आ० ॥ १ ॥
 स्थावर तिरि निरयालय डुग, इग विगला लीजे ॥
 साधारण नवमे गुणगणे, धुर ज्ञागे बीजे ॥ आ० ॥
 ॥ २ ॥ केवल पामीने शिवगति पामी, शैलेशी टाणे ॥
 चरम समय दोय मांहे स्वामी, अंतिम गुणगणे
 ॥ आ० ॥ ३ ॥ बाकी नाम करमनी पयसी, सघली
 तीहां जावे ॥ अजर अमर निकलंक स्वरूपे निःकर्मा
 आवे ॥ आ० ॥ ४ ॥ जे सिद्ध केरी पद्मिमा पूजे, ते
 सिद्धमयी होवे ॥ नाही धोइ निर्मल चित्ते आरिसो
 जावे ॥ आ० ॥ ५ ॥ कर्म सुरुण तप केरी पूजा, फल ते न
 र पावे ॥ श्री शुद्धवीर स्वरूप विलोकी, शिव बहु घर
 आवे ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन ॥ राग प्रज्ञाती ॥

आजको लाहो लीजीए, काल केणे रे दीठी ॥
 रहण न पावे पा घसी, जब आवे चीठी ॥ आ० ॥
 ॥ १ ॥ मनसा वाचा कर्मणा, आलस सब ठंढी ॥
 ध्यान धरुं अरिहंतनुं, स्थानक शिर मंढी ॥ आ० ॥
 ॥ २ ॥ विनय मूल जे पालीए, श्री जिनवर धर्म ॥ ज्ञा

वे शुद्ध आराधतां, वूटे निज कृत कर्म ॥ आ० ॥ ३ ॥
 दान शीयल तप ज्ञावना, ए चार प्रकार ॥ दया शुद्ध
 आराधिये, पामीये ज्ञवपार ॥ आ० ॥ ४ ॥ धर्मनो मर्म
 ए जाणजो, राग द्वेषने वारो ॥ केवलज्ञान निपाईने,
 देवचंद पद सारो ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ स्तवन ॥ राग प्रज्ञाति ॥

जागे सो जिन ज्ञक्त कहावे, सोवे सो संसारी
 रे ॥ कर्म कलंककी कीच ज्ञइ है, ताथें ज्ञयो ब्रम ज्ञा
 री है ॥ जाण ॥ १ ॥ त्रस जीवकी हत्या न करे, स्था
 वर करुणा कारी है ॥ कूनी साख कथन नहीं कूना
 बोले बोल विचारी है ॥ जाण ॥ २ ॥ आपण मोसे
 अदत्त न लेवे, चोरी मारी निवारी है ॥ पंच साखे पाणि
 ग्रहण करीने, अवर स्त्रीया ब्रह्मचारी है ॥ जाण ॥ ३ ॥
 स्नान प्रमित जल जिनकी सेवा, परिग्रह संख्या धा
 री है ॥ रूपचंद समकितके लव्धन, ताकुं वंदना इ
 मारी है ॥ जाण ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ आप स्वज्ञावनी सध्याय ॥

आप स्वज्ञावमां रे, अवधू सदा मगनमें रहेनां.

जगत जीव हे करमाधीना, अचरिज कबुझ मोरे

न लीना ॥ आ० ॥ १ ॥ तुम नहीं केरा, कोइ नहीं
 तेरा, क्या करे मेरा मेरा ॥ तेरा हे सो तेरी पासे,
 अवर सबे अनेरा ॥ आ० ॥ २ ॥ वपु विनाशी तुं
 अविनाशी, अब हे इनको विलासी ॥ वपु संग जब
 दूर निकाशी, तब तुम शिवका वासी ॥ आ० ॥ ३ ॥
 रागने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा ॥
 जब तुम उनकुं दूर करीसा, तब तुम जगका ईसा ॥
 आ० ॥ ४ ॥ परकी आसा सदा निरासा, ए हे जग
 जन पासा ॥ ते काटनकुं करो अज्यासा, लहो सदा
 सुखवासा ॥ आ० ॥ ५ ॥ कबहींक काजी कबहींक
 पाजी, कबहींक हुआ अपन्नाजी ॥ कबहींक जगमें
 कीर्ति गाजी, सब पुञ्जलकी बाजी ॥ आ० ॥ ६ ॥ शुद्ध
 योगने समता धारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी ॥ कर्म
 कलंककुं दूर निवारी, जीव वरे शिव नारी ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ अथ सहजानंदीनी सध्याय ॥

॥ बीजी असरण जावना ॥ ए देशी ॥

सहजानंदी रे आतमा, सूतो कांइ निश्चित रे ॥
 मोह तणा रणीआ जमे, जाग जाग मतिवंत रे, लूटे

जगतना जंत रे, नाखी वांक अत्यंत रे, नरकावास ठ
वंत रे, कोइ विरला उगरंत रे ॥ स० ॥ १ ॥ राग छे
ष परिणति जजी, माया कपट कराय रे ॥ काश कु
सुम परें जीवमो, फोगट जनम गमाय रे, माथेजय
जमराय रे, श्यो मन गर्व धराय रे, सहु एक मारग
जाय रे, कोण जग अमर कहाय रे ॥ स० ॥ २ ॥
रावण सरिखा रे राजवी, नागा चाढ्या विण धाग रे;
दश माथां रण रमवम्यां, चांच दीए शिर काग रे;
देव गया सवि जाग रे, न रह्यो माननो ठाग रे; हरि
हाथें हरिनाग रे, जोजो ज्ञाइनुना राग रे ॥ स० ॥ ३ ॥
केइ चाढ्या केइ चालशे, केता चालणहार रे ॥ मार
ग वहेतो रे नित्य प्रत्ये, जोतां लग्न हजार रे ॥ देश
विदेश सधार रे, ते नर एणें संसार रे ॥ जातां जम
दरवार रे, न जुवे वार कुवार रे ॥ स० ॥ ४ ॥ नारा
यण पुरी द्वारिकां, बलती मेली निराश रे ॥ रोता र
णमां ते एकला, नाठा देव आकाश रे ॥ किहां तरु ठा
या आवास रे, जलजल करी गयो सास रे ॥ बलजल
सरोवर पास रे, सुखी पांमव शिववास रे ॥ स० ॥ ५ ॥

राजी गाजीने बोलता करता हुकम हेरान रे ॥ पो
 ठ्या अग्निमां एकला, काया राख समान रे, ब्रह्मदत्त
 नरक प्रयाण रे, ए ऋद्धि अधिर निदान रे, जेवुं पीपल
 पान रे, म धरो जूठ गुमान रे ॥ स० ॥ ६ ॥ वालेस
 र विना एक घन्टी, नवि सोहातुं लगार रे ॥ ते विना
 जन्मारो वही गयो, नहीं कागल समाचार रे ॥ नहीं
 कोइ कोइनो संसार रे, स्वारथीन परिवार रे ॥ माता
 मरुदेवी सार रे, पोहोतां मोक्ष मोझार रे ॥ स० ॥ ७ ॥
 मात पिता सुत बांधवा, अधिको राग विचार रे ॥ ना
 री असारी रे चित्तमां, वंढे विषय गमार रे, जुवो सू
 रिकांता जे नार रे, विख देती ज़रतार रे ॥ नृप जिन
 धर्म आधार रे, सज्जन नेह निवार रे ॥ स० ॥ ८ ॥
 हसी हसी देता रे तालीन, शय्या कुसुमनी सार रे ॥
 ते नर अंते माटी अया, लोक चणे घरबार रे, घमता
 पात्र कुंझार रे, एहवुं जाणी असार रे ॥ ठोमथो विषय
 विकार रे, धन्य तेहनो अवतार रे ॥ स० ॥ ९ ॥ आव
 चासुत शिव वर्या, वली एलाची कुमार रे ॥ धिक् धि
 क् विषया रे जीवने, लइ वैराग्य रसाल रे, मेहेली

मोह जंजाल रे, घर रमे केवल बाल रे, धन्य करकं
 मू जूपाल रे ॥ स० ॥ १० ॥ श्री शुभविजय सुगुरु
 लही, धर्म रयण धरो ठेक रे ॥ वीर वचन रस शैलनी,
 चाखे चतुर विवेक रे, न गमे ते नर जेक रे, धरता
 धर्मनी ठेक रे, नवजल तरिया अनेक रे ॥ स० ॥ ११ ॥

॥ अथ चेतन शिखामणनी सद्याय ॥

चेतन अब कबु चेतीयें, ज्ञान नयन उघामी; स
 मता सहजपणुं नजो, तजो ममता नारी ॥ चे०
 ॥ १ ॥ या डुनीयां हे बावरी, जेसी बाजीगर
 बाजी ॥ साथ कीसीके नां चले; ज्युं कुलटा नारी
 ॥ चे० ॥ २ ॥ माया तरुठाया परें, न रहे थिरकारी;
 जानत हे दिलमें जनी, पण करत विगारी ॥ चे०
 ॥ ३ ॥ मेरी मेरी तुं क्या करे, करे कोणशुं यारी;
 पलटे एकण पलकमें, ज्युं घन अंधीयारी ॥ चे० ॥ ४ ॥
 परमात्म अविचल नजो, चिदानंद आकारी; नय
 कहे नियत सदा करो, सब जन सुखकारी ॥ चे० ॥ ५ ॥

॥ अथ आत्मबोधनो सद्याय ॥

॥ हो सुण आतमा मत परु मोहपंजर मांहे ॥

माया जाल रे ॥ धनराज्य जोवन रूप रामा, सुत सुता
 घरवार रे ॥ हुकुम होदा हाथी घोडा, कारिमो परि
 वार ॥ मायाजाल रे ॥ हो० ॥ १ ॥ अतुल बल हरि च
 क्री रामा, जुजोर्जित मदमत्त रे ॥ क्रूर जमबल नि
 कट आवे, गलित जाये सत्त ॥ मायाण ॥ हो० ॥ २ ॥
 पुहवीने जे बत्र परें करे, मेरुनो करे दंरु रे ॥ ते प
 ण गया हाथ घसता, मूकी सर्व अखंरु ॥ मा० ॥
 हो० ॥ ३ ॥ जे तखत बेसी हुकुम करता, पहेरी न
 वला वेश रे ॥ पाघ सेहेरा धरत टेढा, मरी गया ज
 मदेश ॥ माण ॥ हो० ॥ ४ ॥ मुख तंबोलने अधर
 राता, करत नव नव खेल रे ॥ तेह नर बल पुण्य
 घाठे, करत परधर टेल ॥ माण हो० ॥ ५ ॥ जज स
 दा जगवंत चेतन, सेव गुरूपदपद्म रे ॥ रूप कहे कर
 धर्म करणी, पामे शाश्वत सद्म ॥ माण ॥ होण ॥ ६ ॥

॥ अथ आत्मबोधनो सज्जाय ॥

॥ सांजल सयणा साची सुणावुं, पूरव पुण्यें तुं
 पाम्यो रे ज्ञाई ॥ नरक निगोदमां जमतां नरजव, तें
 निःफल केम वाम्यो रे ज्ञाई ॥ सां० ॥ १ ॥ जैनधर्म

જયવંતો જગમાં, ધારી ધર્મ ન સાધ્યો રે જાણ ॥ મેઘ
 ઘટા સરિખા ગજ સાટે, ગર્દજ ઘરમાં વાંધ્યો રે જાણ
 ॥ સાં ॥ ૨ ॥ કલ્પવૃક્ષ કુહામે કાપી, ધંતુરો ઘેર
 ઘારે રે જાણ ॥ ચિંતામણિ ચિંતિત પૂરણ તે, કાગ નમા
 રુણ મારે રે જાણ ॥ સાં ॥ ૩ ॥ એમ જાણી જાવા
 નદિ દીજે, નર નારી નર જીવને રે જાણ ॥ નલક્ષ્મી
 શુદ્ધ ધર્મને સાધો, જે માન્યો મુનિ મનને રે જાણ
 ॥ સાં ॥ ૪ ॥ જે વિજ્ઞાવ પરજ્ઞાવમાં જીજીએ, રમણ
 સ્વજ્ઞાવમાં કરીએ રે જાણ ॥ ઉત્તમ પદ પદ્યને અવ
 લંબી, જીવિયણ જીવ જલ તરીયે રે જાણ ॥ સાં ॥ ૫ ॥

॥ અથ ધોવીમાની સજ્જાય ॥

॥ ધોવીમા તું ધોજે મનનું ધોતીનું રે, રાખે રા
 ખતો મેલ લગાર રે ॥ એણે રે મેલે જગ મેલો કયો
 રે, અણધોયું ન રાખે લગાર રે ॥ ધો ॥ ૧ ॥ જિન
 શાસન સરોવર સોહામણું રે, સમકિત તણી રુમી પા
 લ રે ॥ દાનાદિક ચારે વારણાં રે, માંદી નવતત્ત્વ કમ
 લ વિશાલ રે ॥ ધો ॥ ૨ ॥ તિહાં ઝીલે મુનિવર હં
 સલા રે, પીયે ઠે તપ જપ નીર રે ॥ શમ દમ આં

जे सिला रे, तिहां पखाले आतम चीर रे ॥ धो० ॥
 ॥ ३ ॥ तपवजे तप तनके करी रे, जालवजे नव ब्र
 ह्म वाम रे ॥ गंटा नमामे पाप अढारना रे, एम न
 जलुं होशे ततकाल रे ॥ धो० ॥ ४ ॥ आलोयण सा
 वूमो सूधो करे रे, रखे आवे माया शेवाल रे ॥ निश्चे
 पवित्रपणुं राखजे रे, पढे आपणा नियम संज्ञाल रे
 ॥ धो० ॥ ५ ॥ रखे मूकतो मन मोकलुं रे, परम मेली
 ने संकेल रे ॥ समयसुंदरनी शीखनी रे, सुखनी अमृ
 तवेल रे ॥ धो० ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञरतचक्रीनी सध्याय ॥

॥ मनहीमें वैरागी ज्ञरतजी, मनहीमें वैरागी ॥
 सहस बत्रीश मुकुट बंध राजा, सेवा करे वर
 ज्ञागी ॥ चोसठ सहस अंतेनरी जाके, तोहि न हुवा
 अनुरागी ॥ ज्ञ० ॥ १ ॥ लाख चोराशी तुरंगम जाके,
 ठनुं कोरु हे पागी ॥ लाख चोराशी गज रथ सोही
 यें, सुरता धर्मशुं लागी ॥ ज्ञ० ॥ २ ॥ चार करोरु म
 ण अन्नज नपमे, लूण दश लाख मण लागे ॥ तिन
 कोरु तो गोकुल दूजे, एक कोरु हल सागी ॥ ज्ञ० ॥

॥ ३ ॥ सहस्र वत्तीस दश वरुजागी, जये सरवके
 त्यागी ॥ ठुंनुं कोरु गामके अधिपति, तोहे न हुआ
 सरागी ॥ ज० ॥ ४ ॥ नव निधि रतन चोगमा वाजे
 मन चिंता सब जांगी ॥ कनक कीर्त्ति मुनिवर वंदतहे,
 देजो मुक्ति में मागी ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ठंढण ऋषिजीनी सधाय ॥

॥ ठंढण ऋषिने वंदणा ॥ हुं वारी ॥ न
 त्कृष्टो अणगार रे ॥ हुं वारी लाल ॥ अग्निग्रह ली
 धो आकरो ॥ हुं वारी० ॥ लब्धे लेशुं आहार रे ॥ हुं
 वारी लाल ॥ ठं० ॥ १ ॥ दिन प्रति जावे गोचरी ॥
 हुं० ॥ न मले शुद्ध आहार रे ॥ हुं० ॥ न लीए मूल
 असूऊतो ॥ हुं० ॥ पींजर हूवो गात रे ॥ हुं० ॥ ठं०
 ॥ २ ॥ हरि पूठे श्री नेमने ॥ हुं० ॥ मुनिवर सहस्र
 अठार रे ॥ हुं० ॥ नत्कृष्टो कोण एहमें ॥ हुं० ॥ मुजने
 कहो विचार रे ॥ हुं० ॥ ठं० ॥ ३ ॥ ठंढण अधिको
 दाखीन ॥ हुं० ॥ श्री मुख नेम जिणंद रे ॥ हुं० ॥
 कृष्ण उमाहो वांदवा ॥ हुं० ॥ धन्य जादवकुल चंद
 रे ॥ हुं० ॥ ठं० ॥ ४ ॥ गलीआमां मुनिवर मढ्या ॥ हुं०

(७११)

वांटे कृष्ण नरेश रे ॥ हुं० ॥ किणही मिथ्यात्वियें
 देखीने ॥ हुं० आव्यो जाव विशेष रे ॥ हुं० ॥ हुं०
 ॥ ए ॥ आवो अम घर साधुजी ॥ हुं० ॥ ल्यो मोद
 क ठे शुद्ध रे ॥ हुं० ॥ ऋषिजी लेश आवीया ॥ हुं०
 प्रभुजी पास विशुद्ध रे ॥ हुं० ॥ हुं० ॥ ६ ॥ मुज ल
 ब्धें मोदक मिळया ॥ हुं० ॥ पूढे ठे कहो कृपाल रे ॥ हुं० ॥
 लब्धि नहीं वत्स ताहरी ॥ हुं० ॥ श्री पति लब्धि नि
 हाल रे ॥ हुं० ॥ हुं० ॥ ७ ॥ तो मुजने लेवो नहीं
 ॥ हुं० ॥ चाढ्यो परवण काज रे ॥ हुं० ॥ इंट निंजा
 रे जाइने ॥ हुं० ॥ चूरे कर्म समाज रे ॥ हुं० ॥ हुं०
 ॥ ८ ॥ आवी सूधी जावना ॥ हुं० ॥ पाम्यो केवल
 नाण रे ॥ हुं० ॥ ठंढण रुषि मुगते गया ॥ हुं० ॥ कदे
 जिनहर्ष सुजाण रे ॥ हुं० ॥ हुं० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ अश्मत्ताजीनी सध्याय ॥

श्री अश्मत्ता मुनिवरजूकी, करणीकी बलिहारी
 वे ॥ खट वर्षनके संजम लीनो, वीरवचन चित्त धा
 री वे ॥ श्री० ॥ १ ॥ विजय नृपति श्री देवी नंदन,
 गिलासपुर अवतारी वे ॥ अंग अग्यार पढे गुण आद

र, त्रिविध त्रिविध अविकारी वे ॥ श्री० ॥ २ ॥ तप
 गुण रयण संवहर आदिक, करकें काय न्दारी वे ॥
 प्रभु आदेशें विपुलाचल पर, करी अणसण अति न्दारी
 वे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ केवल पाय मुक्ति गये मुनिवर, क
 र्म कलंक निवारी वे ॥ अढारसैं अमृताले तिहिं गिरि,
 कीनी आपना सारी वे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वाचक अमृत
 धर्म सुगुरुके, सुपसायें सुविचारी वे ॥ शिष्य कृमा क
 ल्याण हरख धर, गुण गावे जयकारी वे ॥ श्री० ॥ ५ ॥
 ॥ अथ करकंमू प्रत्येक बुद्धजीनी सज्जाय ॥

॥ चंपा नगरी अति न्दली ॥ हुं वारी ॥
 दधिवाहन नूपाल रे ॥ हुं वारी लाल ॥ पद्मावती कू
 खें नपनो ॥ हुं ॥ कर्म कीधो चंमाल रे ॥ हुं ॥ ॥ १ ॥
 करकंमूने करु वंदणा ॥ हुं ॥ पहिलो प्रत्येक बुद्ध रे
 ॥ हुं ॥ गिरुवाना गुण गावतां ॥ हुं ॥ समकित आ
 ये शुद्ध रे ॥ हुं ॥ कण ॥ १ ॥ लाधी वांशनी लाकमी ॥ हुं ॥
 अयो कंचनपुर राय रे ॥ हुं ॥ वापशुं संग्राम मांमी
 न ॥ हुं ॥ साधवी लीन समजाय रे ॥ हुं ॥ कण ॥ १ ॥
 वृषज रूप देखी करी ॥ हुं ॥ प्रतिबोध पाम्मो नरेश

रे ॥ हुं० ॥ उत्तम संजम आदर्यो ॥ हुं० ॥ देवता दी
 धो वेषरे ॥ हुं० ॥ कणा॥ ४ ॥ कर्म खपाय मुगते गया ॥ हुं० ॥
 करकंरू रुषिराय रे ॥ हुं० ॥ समयसुंदर कहे साधुने
 ॥ हुं० ॥ प्रणम्यां पातक जाय रे ॥ हुं० ॥ क० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ क्रोधनी सध्याय ॥

॥ करुवां फल ठे क्रोधनां, ज्ञानी एम बोले ॥
 रीस तणो रस जाणीए, हलाहल तोले ॥ क० ॥ १ ॥
 क्रोधे क्रोम पूरव तणुं, संजम फल जाय ॥ क्रोध सहि
 त तप जे करे, तेतो लेखें न आय ॥ क० ॥ २ ॥ साधु
 घणो तपीयो हुतो, धरतो मन वैराग ॥ शिष्यना क्रो
 ध थकी अयो, चंमकोशीयो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥ आग
 नठे जे घर थकी, ते पहेलुं घर बाले ॥ जलनो जोग
 जो नवि मले, तो पासेनुं परजाले ॥ क० ॥ ४ ॥ क्रो
 धतणी गति एहवी, कहे केवलनाणी ॥ हाण करे जे
 हेतनी, जालवजो एम जाणी ॥ क० ॥ ५ ॥ उदयर
 लन कहे क्रोधने, काढजो गले साही ॥ काया करजो
 निर्मली, उपशम रस नार्ही ॥ क० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ माननी सद्याय ॥

रे जीव मान न कीजीयें, मानें विनय न आवे
 रे ॥ विनय विना विद्या नहीं, तो किम समकित पावे
 रे ॥ रे० ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नहीं, चारित्र
 विण नहीं मुक्ति रे ॥ मुक्तिनां सुख ठे शाश्वतां, ते
 केम लहीए जुक्ति रे ॥ रे० ॥ २ ॥ विनय वसो संसा
 रमां, गुणमां अधिकारी रे ॥ माने गुण जाये गली,
 प्राणी जो जो विचारी रे ॥ रे० ॥ ३ ॥ मान कयुं
 जो रावणे, ते तो रामे मार्यो रे ॥ डुर्योधन गरव क
 री, अंते सवि हार्यो रे ॥ रे० ॥ ४ ॥ सूकां लाकनां
 सारिखो, दुःखदायी ए खोटो रे ॥ उदयरत्न कहे मान
 ने, देजो देशोटो रे ॥ रे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मायानी सझाय ॥

॥ समकितनुं मूल जाणीयें जी, सत्य वचन
 साक्षात् ॥ साचामां समकित वसे जी, मायामां मिथ्या
 त्व रे ॥ प्राणी म करीश माया लगार ॥ १ ॥ एआं
 कणी ॥ मुख मीगे जूगे मनं जी, कूरु कपटनो रे

(७१५)

कोट ॥ जीजें तो जी जी करे जी, चित्तमांहे ताके चों
ट रे ॥ प्राण ॥ १ ॥ आप गरजें आघो पमे जी, पण न
धरे विश्वास ॥ मनशुं राखे आंतरो जी, ए मायानो पा
स रे ॥ प्राण ॥ ३ ॥ जेहशुं बांधे प्रीतमीजी, तेहशुं रहे
प्रतिकूल ॥ मेल न ठंमे मन तणो जी, ए मायानुं मू
ल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ तप कीधुं माया करी जी, मित्रशुं
राख्यो जेद ॥ मल्लीजीनेश्वर जाणजो जी, तो पाम्या
स्त्री वेद रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ नदयरतन कहे सांजलो जी,
मेलो मायानी बुद्ध ॥ मुक्ति पुरी जावा तणो जी, ए
मार्ग ठे शुद्ध रे ॥ प्राण ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अंथ लोचनी सद्याय ॥

तुमें लक्षण जो जो लोचनां रे, लोचें जन पामे
लोचना रे ॥ लोचें माह्या मन मोढ्या डुरे रे, लोचें
डुर्धर पंथे संचरे रे ॥ तुण ॥ १ ॥ तजे लोच तेहनां ले
उं ज्ञामणां रे, वली पाये नमीने करुं खामणां रे ॥
लोचें मरजादा न रहे कहेनी रे, तुमें संगत मेलो ते
हनी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ लोचें घर मेहेली रणमां मरे रे,
लोचें उंच ते नीचुं आचरे रे ॥ लोचें पाप जणी पग

लां नरे रे, लोनें अकारज करतां न नसरे रे ॥ तु० ॥
 ॥ ३ ॥ लोनें मनसुं न रहे निर्मलुं रे, लोनें सगपण
 नासे वेगलुं रे ॥ लोनें न रहे प्रीतिने पावतुं रे, लोनें
 धन मेले बहु एकतुं रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ लोनें पुत्र प्रत्ये
 पिता हणे रे, लोनें हत्या पातक नवि गणे रे ॥ ते
 तो दाम तणे लोनें करी रे, उपर मणिधर घाए ते म
 री रे ॥ तु० ॥ ५ ॥ जोतां लोन्नो थोन्न दीसे नहीं रे,
 एवं सूत्र सिद्धांते कह्युं सही रे ॥ लोनें चक्री सुजुम
 नामे जुवो रे, ते तो समुझमांहे मूवी मुवो रे ॥ तु० ॥
 ॥ ६ ॥ एम जाणीने लोन्नने वंरजो रे, एक धर्म गुं
 ममता मंरजो रे ॥ कवि नदयरतन ज्ञांखे मुदा रे, वं
 हूं लोन्न तजे तेहने सदा रे ॥ तु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आठ मदनी सज्जाय ॥

मद आठ महामुनि वारीये, जे दुर्गतिना दाता
 रो रे ॥ श्री वीर जिणेसर उपदिसे, ज्ञांखे सोदम ग
 णधारो रे ॥ मद० ॥ १ ॥ हांजी जातिनो मद पहेलो
 कह्यो, पूर्वे हरिकेशीये कीधो रे ॥ चंराल तणे कूस

उपन्यो, तपथी सवि कारज सीधो रे ॥ मद० ॥ १ ॥
 हांजी कुल मद बीजो दाखीयो, मरीची जवे कीधो
 प्राणी रे ॥ कोमा कोमि सागर जवमां जम्यो, मद म
 करो इम मन जाणी रे ॥ मद० ॥ ३ ॥ हांजी बल म
 दथी दुःख पामीया, श्रेणिक वसूजुति जीवो रे ॥ ज
 इ जोगव्यां दुःख नरक तणां, मुख पामता नित रीवो
 रे ॥ मद० ॥ ४ ॥ हांजी सनतकुमार नरेसरु, सुर
 आंगल रूप वखाण्युं रे ॥ रोम रोम काया बिगनी गई,
 मद चोथानुं ए टाणुं रे. ॥ मद० ॥ ५ ॥ हांजी मुनि
 वर संजम पालतां, तपनो मद मनमां आयो रे ॥ अ
 या कूरगमु ऋषि राजीया, पाम्या तपनो अंतरायो रे
 ॥ मद० ॥ ६ ॥ हांजी देश दशारणनो धणी, राय द
 शार्ण जइ अजिमानी रे ॥ इंडनी रुद्धि देखी बुजी
 या, संसार तजी अया ज्ञानी रे ॥ मद० ॥ ७ ॥ हांजी
 स्थुलिजइ विद्यानो कख्यो, मद सातमो जे दुःख दाइ
 रे ॥ श्रुत पूरण अर्थ न पामीया, जुन मान तणी अ
 धिकाइ रे ॥ मद० ॥ ८ ॥ राय सुजुम षट खंरुनो धणी,
 लोचनो मद कीधो अपार रे ॥ हयगय रथ सब साय

रे गळ्युं, गयो सातमी नरक मऊार रे ॥ मद० ॥ ए॥
 इम तन धन यौवन राजनो, म धरो मनमां अहंकारो रे ॥
 ए अघिर असत्य सवि कारमुं, विणसे कृणमां बहु वा
 रो रे ॥ मद० ॥ १० ॥ मद आठ निवारो व्रतधारी, पालो
 संयम सुखकारी रे ॥ कहे मान विजय ते पामशे,
 अविचल पदवी नर नारी रे ॥ मद० ॥ ११ ॥

॥ अथ श्री मेतारज मुनिनी सज्जाय ॥

सम दम गुणना आगरुजी, (संजम गुणना
 आगलाजी,) पंच महाव्रत धार ॥ मासखम
 एने पारणेजी, राजगृही नगरी मऊार ॥ मेता
 रज मुनिवर, धन धन तुम अवतार ॥ १ ॥ ए आं
 कणी ॥ सोनीने घेर आवीयाजी, मेतारज रुपि राय
 ॥ जवला घमतो उठीयोजी, वंदे मुनिना पाय ॥ मेता
 रज० ॥ २ ॥ आज फळयो घर आंगणेजी विणकाले
 सहकार ॥ ल्यो निक्का ठे सूऊतीजी, मोदिक तणो ए
 आहार ॥ मेतारज० ॥ ३ ॥ क्राँच जीव जवला च
 र्योजी, वहोरी वळया रुपिराय ॥ सोनी मन शंका थ
 र्ई जी, साधुतणां ए काम ॥ मेतारज० ॥ ४ ॥ रीस

करी रुषिने कहेजी, द्यो जवला मुज आज ॥ वाघर
 शीशे वींठियुंजी तरुके राख्या मुनिराज ॥ मेतारज०
 ॥ ५ ॥ फट फट फूटे हामकांजी, तरु तरु त्रूटे चाम ॥
 सोनीने परिसो कियोजी, मुनि राख्यो मन ठाम ॥
 मेतारज० ॥ ६ ॥ एहवा पण महोटा यतीजी, मन्न न
 आणे रोष ॥ आतम निंदे आपणोजी, सोनीनो शो
 दोष ॥ मेतारज० ॥ ७ ॥ गजसुकुमाल संतापीया
 जी, बांधी माटीनी पाल ॥ खेर अंगारा शिर धर्या
 जी, सुगते गया ततकाल ॥ मेतारज० ॥ ८ ॥ वाघ
 णे शरीर वलूरियुंजी, साधु सुकोसल सार ॥ केवल
 लही सुगति गयाजी, इम अरणिक अणगार ॥ मेता
 रज० ॥ ९ ॥ पापी पालके पीलियाजी, खंधक सूरि
 ना शिष्य ॥ अंबरु चेला सातशेंजी, नमो नमो ते नि
 श दिश ॥ मेतारज० ॥ १० ॥ एहवा ऋषि संजारतां
 जी, मेतारज ऋषिराय ॥ अंतगरु हूआ केवलीजी,
 वंदो मुनिना पाय ॥ मेतारज० ॥ ११ ॥ ज्ञारी काष्ठ
 नी खीये तिहांजी, लावी नांखी तिणि वार ॥ धवके
 पंखी जागीयोजी, जवला काढ्या तिणे सार ॥ मेता

रज० ॥ १२ ॥ देखी जवला विठमांजी मनमां ला
ज्यो सोनार ॥ उघो मुहपति साधुनोजी, लेइ अयो
अणगार ॥ मेतारज० ॥ १३ ॥ आतम ताख्यो आपणो
जी, थिर करी मनवचकाय ॥ राजविजय रंगे जणे
जी, साधुतणी ए सद्याय ॥ मेतारज० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अरणिक मुनिनी सद्याय ॥

अरणिक मुनिवर चाढ्या गोचरी, तरुके दाजे
शीशोजी ॥ पाय अणवाणेरें वेलु परजले, तन सु
कुमाल मुनीशोजी ॥ अरणिक० ॥ १ ॥ मुख करमा
णुं रे मालती फूल ज्युं, ऊनो गोखनी हेगोजी ॥ खरे
रे वपोररे दीगो एकलो, मोढी माननी देगोजी ॥
अरणिक० ॥ २ ॥ वयण रंगीली रे नयणे वेंधियो, ऋ
षि भंज्यो तेणे ठाणोजी ॥ दासीने कहे जारे उताव
ली, ऋषि तेही घर आणोजी ॥ अरणिक० ॥ ३ ॥ पाव
न कीजे रे ऋषि घर आंगणुं, वोढोरो मोदक सारोजी ॥
नव यौवन रस काया कां दहो, सफल करो अवतारो
जी ॥ अरणिक० ॥ ४ ॥ चंझवदनी रे चारित्र च
कव्युं, सुख विलसे दीन रातोजी ॥ एक दिन रमतां रे

(८११)

गोखे सोगठे, तव दीठी निज मातोजी ॥ अरणिकण ॥ ६ ॥
 अरणिक अरणिक करती मा फरे, गलिये गलिये मज्जा
 रोजी ॥ कहो कोणे दीठारे महारो अरणीको, पंढे लो
 क हजारोजी ॥ अरणिकण ॥ ६ ॥ नतयों त्यांधी रे
 जननीने पाय परुथो, मन शुं लाज्यो अपारोजी ॥ व
 ष्ट तुज न घटे रे चारित्र चूकवुं, जेदशी शिव सुख
 सारोजी ॥ अरणिक० ॥ ७ ॥ एम समजावी रे पा
 ठो वालीयो, आण्यो गुरुने पासोजी ॥ सद् गुरु दीए
 रे शीख ज्ञानी परे, वैरागे मन वासोजी ॥ अरणिक०
 ॥ ८ ॥ अग्नि धखंतीरे शीला नपरे, अरणिके अण
 सण कीधोजी ॥ रूपविजय कहे धन्य ते मुनिवरु,
 जिणे मनवंडित लीधोजी ॥ अरणिक० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ वणज्जारानी सध्याय ॥

नरज्जव नयर सोहामणुं ॥ वणज्जारा रे ॥ पा
 मीने करजे व्यापार ॥ अहो मोरा नायक रे ॥ सत्ता
 वन संवरतणी ॥ व० ॥ पोठी ज्ञरजे नदार ॥ अण ॥ १॥
 शुज्ज परिणाम विचित्रता ॥ व० ॥ करियाणां बहु मू

(८११)

ल ॥ अ० ॥ मोह नगर जावा जणी ॥ व० ॥ करजे
 चित्त अनुकूल ॥ अ० ॥ १ ॥ क्रोध दावानल बुलवे
 ॥ व० ॥ मान विषम गिरिराज ॥ अ० ॥ बुलंधजे ह
 लवे करी ॥ व० ॥ सावधान करे काज ॥ अ० ॥ ३ ॥
 बंशजाल माया तणी ॥ व० ॥ नवि करजे विशराम
 ॥ अ० ॥ खामी मनोरथ जट तणी ॥ व० ॥ पूरणुं
 नही काम ॥ अ० ॥ ४ ॥ राग द्वेष दोय चोरटा ॥ व० ॥
 बाटमां करशे हेरान ॥ अ० ॥ विविध वीर्य बुद्धासथी
 ॥ व० ॥ ते हलजे रे ठाय ॥ अ० ॥ ५ ॥ एम सवि
 विघन विदारीने ॥ व० ॥ पहुँचजे शिवपुर वास ॥ अ० ॥
 खय उपशम जे जावना ॥ व० ॥ पोठें जया गुणरा
 श ॥ अ० ॥ ६ ॥ खायक जावें ते अशे ॥ व० ॥ ला
 ज होशे ते अपार ॥ अ० ॥ उत्तम वणज जे एम करे
 ॥ व० ॥ पद्म नमे वारंवार ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ आत्मशिक्षा सध्याय ॥

॥ राग सामग्री ॥

आत्मरामें रे मुनि रमे, चित्त विचारीने जोय
 रे ॥ ताहारुं दीसे नवि कोय रे, सहु स्वारथी मढ्युं

(८२३)

जोय रे, जन्म मरण करे लोय रे, पूठें सब मली रो
 य रे ॥ आ० ॥ १ ॥ सजन वर्ग सवि कारमुं, कूमो कु
 टुंब परिवार रे ॥ कोइ न करे तुज सार रे, धर्म वि
 ण नहीं कोइ आधार रे, जिणें पामे जवपार रे ॥ आ० ॥
 ॥ २ ॥ अनंत कलेवर मूकीयां; ते कीयां सगपण अ
 नंत रे ॥ जव उद्देगे रे तुं जम्यो, तोही न आव्यो
 तुज अंत रे ॥ चेतो हृदयमां संत रे ॥ आ० ॥ ३ ॥
 जोग अनंता तें जोगव्या, देव मणुअ गति मांहे रे ॥
 तृप्ति न पाम्यो रे जीवसो, हजी तुज वांठा ठे त्यांहि
 रे, आण संतोष चित्त मांहि रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ ध्यान
 करो रे आतमतणुं, परवस्तुग्री चित्त वारी रे ॥ अना
 दि संबंध तुजको नहीं, शुद्ध निश्चय इमं धारी रे, इण
 विध निजचित्त ठारी रे, मणिचंड आतम तारी रे ॥ आ० ॥ ५ ॥

॥ सामायिकना बत्रीश दोषनी सझाय ॥

॥ चोपाइ ॥

शुद्ध गुरु चरणें नामी शीश, सामायिकना दो
 ष बत्रीश ॥ कहिभुं त्यां मनना दश दोष, दुशमन
 खी धरतो रोष ॥ १ ॥ सामायिक अविवेकें करे, अर्थ

विचार न हैमे धरे ॥ मन उद्वेग इच्छे यश घणो, न
 करे विनय वमेरा तणो ॥ १ ॥ जय आणे चिंते व्या
 पार, फल संशय नीआणा सार ॥ हवे वचननां दोष
 निवार, कुवचन बोले करे टुंकार ॥ २ ॥ लइ कुंची
 जा घर उघाम, मुखे लवी करतो वढवाम ॥ आवो
 जावो बोले गाल, मोह करी हुलरावे बाल ॥ ३ ॥
 करे विकथा न हास्य अपार, ए दश दोष वचनना वार ॥
 काया केरां दूषण बार, चपलासन जोवे दिशि चार
 ॥ ४ ॥ सावद्य काम करे संघात, आलस मोमे उंचे
 हाथ ॥ पग लांबे बेसे अविनीत, उठिंगण छ्ये थांजो
 जीत ॥ ५ ॥ मेल उतारे खरज खणाय, पग उपरच
 ढावे पाय ॥ अति उघामुं मेले अंग, ढांके तेम वली
 अंग उपंग ॥ ६ ॥ निझायें रस फल निर्गमे, करहा कं
 टक तरुएं जमे ॥ ए बत्रीशे दोष निवार, सामायिक
 करजो नर नार ॥ ७ ॥ समता ध्यान घटा उजली,
 केशरी चोर हुवो केवली ॥ श्री शुजवीर वचन पाल
 ती, स्वर्गे गइ सुलसा रेवती ॥ ८ ॥

॥ इति सामायिक बत्रीश दोष स्वाध्याय ॥

(८३५)

॥ अथ आदिजिन स्तुति ॥

॥ आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया; मरु
देवी जस भाया, धोरी लंठन पाया ॥ जगतस्थिति
निपाया, शुद्ध चारित्र पाया; केवलसिरि राया, मोह
नगरे सधाया ॥ १ ॥ सवि जन सुखकारी, मोह मिथ्या
निवारी; डुरगति दुःख ज्ञारी, शोक संताप वारी ॥
श्रेणिद्वपक सुधारी, केवलानंत धारी; नमियें नरनारी,
जेह विश्वोपकारी ॥ २ ॥ समवसरण बेठा, लागे जे
जिनजी मीठा; करे गणप पइठा, इंड चंडादि दिठा ॥ द्वाद
शांगी वरिठा, गूंथतां टाले रिठा; नविजन होय हिठा,
देखि पुण्यें गरिठा ॥ ३ ॥ सुरसमकितवंता, जेह ऋ
दे महंता; जेह सज्जन संता, टालियें मुऊ चिंता ॥ जि
नवर सेवंता, विश्व वारो डुरंता; जिन उत्तमश्रुणंता, पद्म
ने सुख दिंता ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ चार शाश्वता जिननी स्तुति ॥

ऋषज चंडानन वंदन कीजे, वारिखेण दुःख वा
रेजी ॥ वर्द्धमान जिनवर वली प्रणमो, शाश्वता नाम

(८५६)

ए चारेजी ॥ जस्तादिक खेत्रें मली होवे, चार नाम
चित्तधारेजी ॥ तेणें चारे ए शाश्वत जिनवर, नमीएं
नित्य सवारेंजी ॥ १ ॥ उर्ध्व अधो त्रीवे लोकें थड,
कोमी पंनरशें जाणोजी ॥ उपर कोमी बेंतालीश प्रण
मो, अरुवन लख मन आणोजी ॥ उत्रीश सहस एं
सी ते उपर, बिंब तणो परिमाणोजी ॥ असंख्यात
व्यंतर ज्योतिषिमां, प्रणमुं ते सुविहाणोजी ॥ २ ॥ रा
यपत्तेणी जीवान्निगमें, जगवती सूत्रें ज्ञांखीजी ॥
जंबुद्वीपपन्नत्तिठाणांगे, वीवरीने धणुं दाखीजी, वली
अशाश्वती ज्ञाता कल्पमां, व्यवहार प्रमुखें आखी
जी ॥ ते जिन प्रतिमा लोपे पापी, जिहां बहु सूत्र
ठे साखीजी ॥ ३ ॥ ए जिन पूजाणी आराधक, ईशा
न इंड कहायाजी ॥ जेम सूरियाज प्रमुख सुरवर, दे
वी तणा समुदायाजी ॥ नंदीसर अछाड महोछव, करे
अति हरख जरायाजी ॥ जिन उत्तम कल्याणक दि
वसें, पद्म विजय नमे पायाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ बीज तिथीनी स्तुति ॥

॥ दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष ॥

(८१७)

राय राणा प्रणमें, चंडतणी ज्यां रेख ॥ तिहां चंडवि
मार्नें, शाश्वत जिनवर जेह ॥ हुं बीजतणे दिन, प्रण
मुं आणी नेह ॥ १ ॥ अग्निनंदन चंदन, शीतल शीत
ल नाथ ॥ अरनाथ सुमति जिन, वासुपूज्य शिव सा
थ ॥ इत्यादिक जिनवर, जन्म ज्ञान निरवाण ॥ हुं
बीज तणे दिन, प्रणमुं ते सुविहाण ॥ २ ॥ परका
श्यो बीजे, दुविध धर्म जगवंत ॥ जेम विमल कमल
दोय, विपूल नयन विकसंत ॥ आगम अति अनुपम,
जिहां निश्चै व्यवहार ॥ बीजें सवि कीजे, पातकनो
परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी, कमल सुको
मल चीर ॥ चक्रेसरी केसरी, सरस सुगंध शरीर ॥
कर जोरी बीजें, हुं प्रणमुं तस पाय ॥ एम लब्धि वि
जय कहे, पूरो मनोरथ माय ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमीनी स्तुति ॥

श्रावण शुदि दिन पंचमीए, जन्म्या नेम जिणं
द तो ॥ श्याम वरण तनु शोभतुं ए, मुख शारदको
चंद तो ॥ सहस वरस प्रभु आजखुए, ब्रह्मचारि जग

(८१८)

वंत तो ॥ अष्ट करम हेल्ले हणिए, पोहोता मुक्ति म
 हंत तो ॥ १ ॥ अष्टापद आदि जिन ए, पहोता मुक्ति
 मोऊार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्ति गि
 रनार तो ॥ पावापुरी नगरीमां वलीए, श्री वीरतणुं
 निर्वाण तो ॥ समेतशिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिर व
 हु तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमनाथ ज्ञानी हुवाए, जां
 खे सार वचन तो ॥ जीव दया गुण वेलमीए, कीजें
 तास जतन तो ॥ मृषा न बोलो मानवीए, चोरी चित्त
 निवार तो ॥ अनंत तीर्थंकर एम कहे ए, परहरीएं पर
 नार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामें जह्नु जलो ए, देवी श्री
 अंबिका नाम तो ॥ शासन सानिध्य जे करे ए, करे
 वली धर्मनां काम तो ॥ तप गच्छ नायक गुण निलो
 ए, श्री विजयसेन सूरि राय तो ॥ ऋषज्जदास पाय
 सेवतां ए, सफल करो अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमीनी स्तुति ॥

मंगल आव करी जस आगल, जाव घरी सुर
 राजजी ॥ आव जातना कलश करीने, न्हवरावे जि

(८१९)

नराजजी ॥ वीर जिनेश्वर जन्म महोत्सव, करतां शि
व सुख साधेजी ॥ आठमनुं तप करतां अम घेरे, मं
गल कमला वाधेजी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गज
गंजन, अष्टापद परें बलीयाजी ॥ आठमे आठ सरूप
विचारी, मद आठे तस गलीयाजी ॥ अष्टमी गति प
होता जे जिनवर, फरस आठ नहिं अंगजी ॥ आठ
मनुं तप करतां अम घर, नित्य नित्य वाधे रंगजी ॥ २ ॥
प्रातिहारज आठ विराजे, समवसरण जिनराजेजी ॥
आठमे आठसो आगम ज्ञांखी, ज्ञविमन संशय ज्ञां
जेजी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पाले निरतिचा
रोजी ॥ आठमने दिन अष्ट प्रकारी, जीव दया चित्त
धारोजी ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारे पुजा करीने, मानव जव
फल लीजेंजी ॥ सिद्धाई देवी जिनवर सेवी, अष्ट म
हासिद्धि दीजेजी ॥ आठमनुं तप करतां लीजे निर्म
ल केवल ज्ञानजी ॥ धीर विमल कवि सेवक नय क
हे तपथी कोरु कढ्याणजी ॥ ४ ॥ इति.

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

एकादशी अति रुअमी, गोविंद पुढे नेम ॥ को

(८३०)

ए कारण ए परव मोटुं, कहोने मुज शुं तेम ॥ जिन
वर कल्याणक अति घणां, एकसोने पंचाश ॥ तेणे
कारण ए परव मोटुं, करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अ
गिआर श्रावकतणी प्रतिमा, कही ते जिनवर देव ॥
एकादशी एम अधिक सेवो, वन गजा जिमरेव ॥ चो
वीश जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरतरु चंग ॥
जेम गंग निर्मल नीर जेहवुं, करो जिनसु रंग ॥ २ ॥
अगीआर अंग लखाविएं, अगीआर पाठां सार ॥ अ
गिआर कवली विंढणां, ठवणी पूंजणी सार ॥ चाव
खी चंगी विविध रंगी, शास्त्रतणे अनुसार ॥ एका
दशी एम उजवो, जेम पामियें नवपार ॥ ३ ॥ वर
कमल नयणी कमल वयणी, कमल सुकोमल काय ॥
जुज मंम चंम अखंम जेहने, समरतां सुख आय ॥ ए
कादशी एम मनवशी, गणि हर्ष पंक्ति शीस ॥ शा
सन देवी विघन निवारो, संघतणां निश दिश ॥ ४ ॥ इति

॥ अथ रोहिणी तपनी स्तुति ॥

नक्षत्र रोहिणी जे दिन आवे, अहोरत्न पोषध

करी शुभ्र ज्ञावे, चञ्चविहार मन लावे ॥ वासुपूज्य
 नी ज्ञक्ति कीजें, गणणुं पण तस नाम जपी जें, वरष
 सत्तावीस लीजें ॥ धोमी सक्तें वरस ते सात, जाव
 जीव अथवा विख्यात, तप करी करो कर्मघात ॥ नि
 ज शक्ति उजमणुं आवे, वासुपूज्यनुं बिंब ज्ञरावे,
 लाल मणिमय ठावे ॥ १ ॥ एम अतीत अने वर्तमान, अना
 गत वंदो जिन बहु मान, कीजें तस गुण गाना ॥ तप कारक
 नी ज्ञक्ति आदरीएं, साधर्मिक वली संघनी करीए, धरम
 करी ज्ञव तरीएं ॥ रोग सोग रोहिणी तपें जाए, संकट टले
 तस जश बहु धाए, तसु सुरनर गुण गाए ॥ नीराशंसपणे
 तप एह, शंका रहितपणे करो तेह, निधि नव होए जेम
 गेह ॥ २ ॥ उपधान स्थानक जिन कल्याण, सिद्धच
 क्र शत्रुंजय जाण, पंचमी तप मन आण ॥ परिमा
 तप रोहिणी सुखकार, कनकावली रत्नावली सार,
 मुक्तावली मनोहार ॥ आठम चण्डश ने वर्धमान, इत्या
 दिक तप मांहे प्रधान, रोहिणी तप बहुमान ॥ एणि
 परें ज्ञाखे जिनवर वाणी, देशना मीठी अमीअ समा
 णी, सूत्रें तेह गुंथाणी ॥ ३ ॥ चंदा यक्षणी यक्षकुमार

वासुपूज्य शासन सुखकार, विघ्न मिटावण हार ॥ रो
हिणी तप करता जन जेह, एह जव परजव सुख
लहे तेह, अनुक्रमे जवनो ठेह ॥ आचारी पंक्ति उप
गारी, सत्य वचन जांखे सुखकारी, कपूरविजय व्रत
धारी ॥ खिमाविजय शिष्य जिनगुरु राय, तस
शिष्य मुज गुरु उत्तम आय, पद्मविजय गुण गाय ॥

॥ अथ पजूसणनी स्तुति ॥

पुण्यनुं पोषण, पापनुं शोषण, परव पजूसण
पामीजी ॥ कल्प घेर पधरावो स्वामी, नारी कहे शि
र नामीजी ॥ कुंअर गयवर खंध चढावी, ढोल निशा
न वजमावोजी ॥ सदगुरु संगें चढते रंगे; वीर चरित्र
सुणावोजी ॥१॥ प्रथम वखाण धरम सारथिपद, बीजे
सुपनां चारजी ॥ त्रीजे सुपन पाठक वली चोथे, वीर
जनम अधिकारजी ॥ पंचमे दीक्षा ठेठे शिवपद, सातमे
जिन त्रेवीशजी ॥ आठमे थिरावली संजलावी, पिनुमा
पूरो जगीशजी ॥१॥ ठठ अठम अठाइ कीजें, जिनवर
चैत्य नमीजेंजी ॥ वरशी पम्किमणुं मुनिवंदन, संघ

(७३३)

सयल खामीजेजी ॥ आठ दिवस लगे अमर प्रज्ञा
वना, दान सुपात्रे दिजेजी ॥ नड्वाहु गुरु वयण सुणोने,
ज्ञान सुधारस पीजेजी ॥ ३ ॥ तीरथमां विमलाचल
गिरिमां, मेरु महीधर नेमजी ॥ मुनिवर मांही जिन
वर मोहोटा, परव पजूसण तेमजी ॥ अवसर पामी
साहमीवड्डल, बहु पकवान्न वमाइजी ॥ खिमा
विजय जिन देवी सिद्धाइ, दिन दिन अधिक व
धाइजी ॥ ४ ॥

॥ अथ पजूसणानी स्तुति ॥

सत्तरजेदी जिन पूजा रचीने, स्नात्र महोत्सव
कीजेंजी ॥ ढोल ददामा जेरी नफेरी, जलरी नाद
सुणीजेंजी ॥ वीरजिन आगें ज्ञावना ज्ञावी, मानव
जव फल लीजेंजी ॥ परव पजूसण पूरव पुण्यें, आ
व्यां एम जाणीजेंजी ॥ १ ॥ मास पास वली दसम
डुवालस, चत्तारी अठ कीजेंजी ॥ उपर वली दस
दोय करीने, जिन चोवीस पूजीजेंजी ॥ वमा कल्प
लो ठठ करीने, वीर चरित्र सुणीजेंजी ॥ परवने दिन

जन्म महोन्नव, धवल मंगल वरतीजेंजी ॥ १ ॥ आठ
दिवस लगे अमर पलावी, अठमनुं तप कीजेंजी ॥
नागकेतुनी परें केवल लहीए, जो शुभ जावे रहीए
जी ॥ तेलाधर दिन त्रण कल्याणक, गणधर वाद वदी
जेंजी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजे ऋषभ चरित्र
सुणीजेंजी ॥ ३ ॥ बारशे सूत्रने समाचारी, संवहरी
पडिक्कमिएजी ॥ चैत्य प्रवाडी विधि शुं कीजे, सकल
जंतुने खामीजेंजी ॥ पारणाने दिन साहमीवहल, की
जें अधिक वसाइजी ॥ मानविजय कहे सकल मनो
रथ, पूरे देवी सिद्धाईजी ॥ ४ ॥

॥ अथ अध्यात्म स्तुति ॥

जुगी सवेरा सामायिक लीधुं, पण बारणुं नवि
दीधुंजी ॥ कालो कृतरों घरमां पेगो, धी सघलुं तेणें
पीधुंजी ॥ जुगो बहुअर आलस मूको, ए घर आप
संजालोजी ॥ निज पतिने कहो वीरजिन पूजो, स
मकितने अजुआलोजी ॥ १ ॥ बले विद्वामे ऊरुप
ऊडपावी, उत्रोरु सर्वे फोडोजी ॥ चंचल ठैयां वार्यां
न रहे, त्राक भांगी माल त्रोडीजी ॥ तेह विना रेंडि

(८३५)

यो नवि चाले, मौन जलो केने कहीयेंजी ॥ ऋषजा
दिक चोवीश तीर्थकर, जपीयें तो सुख लहीयेंजी
॥ १ ॥ घर वाशीदूं करोने वहूअर, टालो नजी शा
लुजी ॥ चोरटो एक करे ठे हेरु, नरडे द्योने तालुंजी ॥
लबके प्राहुणा चार आव्या ठे, ते उन्ना नवि राखो
जी ॥ शिवपद सुख अनंतां लहियें, जो जिन वाणी
चाखोजी ॥ ३ ॥ घरनो खुणो कोद खणे ठे, बहु तुमे
मनमां लावोजी ॥ पोहोळे पलंगे प्रीतम पोढ्या, प्रेम
धरीने जगावोजी ॥ ज्ञावप्रभु सुरि कहे नहीं ए क
थलो, अध्यातम उपयोगीजी ॥ सिद्धायिका देवी सा
निध्य करेवि, साधे ते शीवपद जोगीजी ॥४॥ इति.

॥ अथश्री शांतिजिन स्तुति ॥

शांति जिनेसर समरिये, जेनी अचिरा माय ॥

विश्वसेन कुल उपना, मृग लंठन पाय ॥ गजपुर न
यरीनो धणी, सोवन वरणी काय ॥ धनुष्य चालीस
देहडी, लाख वरसनं आय ॥ १ ॥ शांति जिनेसर
सोलमा, चक्री पंचम जाणुं ॥ कुंथुनाथ चक्री ठठा, अ

(८३६)

रनाथ वखाणुं ॥ ए त्रणे चक्री सही, देखी आणंड ॥
 संजम लेइ मुगते गया, नित्य उगीने वंडु ॥ १ ॥
 शांति जिनेसर केवली, बेठा धर्म प्रकाशे ॥ दान शील
 तप ज्ञावना, नर सोहे अन्यासे ॥ एह वचन जिनजी
 तणां, जिणे हियडे धरियां ॥ सुणतां समकित निर्म
 लां, निश्चे केवल वरिया ॥३॥ समेत शिखर गिरि उपरे,
 जइने अणसण कीधुं ॥ काउस्सग मुझ्यें रह्या, तिणें
 मुगतिज लीधुं ॥ गरुड यक्ष समरुं सदा, देवी निर्वाणी
 ॥ नविक जीव तुमें सांजलो रिषज्जदासनी वाणी ॥४॥

॥ अथश्री ऋषज्ज देवजीनी स्तुति ॥

ज्याशी लाख पुरव घर वासैं, वसीआ परिकर
 युक्ताजी ॥ जन्मथकी पण देव तरु फल, क्षीरोदधि
 जल ज्ञोक्ताजी ॥ मइ सुअ नहि नाण संजुता, नयण
 वयणकज चंदाजी ॥ चार सहस शुं दीक्षा शिक्षा,
 स्वामी श्री ऋषज्ज जिणंदाजी ॥ १ ॥ मनःपर्यव तव
 नाण उपन्युं, संजति लिंग सहायाजी ॥ अढि द्वीपमां
 संझी पंचेंडि, जाणे मन गत ज्ञावाजी ॥ इव्य अ

नंता सूक्ष्म त्रीग, अढारशें खित ठायाजी ॥ पलिय अ
 संख्यम ज्ञाग त्रिकालिक, डव्य असंख्य परजायजी ॥ १ ॥
 ऋषज्ज जिनेश्वर केवल पामी, रयण सिंहासण ठाया
 जी ॥ अनज्जिलाप्य अज्जिलाप्य अनंता, ज्ञाग अनंत उ
 च्चरायाजी ॥ तास अनंतमे ज्ञागे धारी, ज्ञाग अनंते
 सूत्रजी ॥ गणधर रचीआं आगम पूजी, करीअें जन्म
 पवित्रजी ॥ ३ ॥ गोमुख जह्ण चक्केसरी देवी, सम
 कित शुद्ध सुहावेजी ॥ आदी देवनी सेव करंती, शासन
 सोह चढावेजी ॥ श्रद्धासंयुत जे व्रतधारी, विघन तां
 स निवारेजी ॥ श्रीशुभ वीर विजय प्रभु ज्ञेत्ते, समरे
 नित्य सवारेजी ॥ ४ ॥

॥ अथ पंच तीरथनी आरती ॥

पेहेली आरती प्रथम जिणंदा, शत्रुंजय मंमण
 ऋषज्ज जिणंदा ॥ श्री सिद्धाचल तीर्थे आव्या, पूरव
 नवाणुं ज्ञविक मन ज्ञाव्या ॥ आरती कीजे श्री जिन
 वरकी ॥ १ ॥ दुसरी आरती शांति जिणंदकी ॥ शां
 ति करे प्रभु शिव मारगकी ॥ पारेवो जिणे शरणे रा

ख्यो ॥ केवल पामीनें धर्म प्रकास्यो ॥ आ० ॥ २ ॥
 तीसरी आरती श्री नेमनाथ ॥ राजुल नारी तारी
 निज हाथ ॥ सहस पुरुष शुं संयम लोथो ॥ करी
 निज आतम कारज सीधो ॥ आ० ॥ ३ ॥ चौथी आ
 रती चिहुंगति वारी ॥ पारसनाथ नविक हितकारी ॥
 गोमी पास संखेश्वरो पास ॥ नविजननी पूरे मन
 आस ॥ आ० ॥ ४ ॥ पांचमी आरती श्री महाबोर ॥
 मेरुपरे जिम रह्या धीर ॥ साढाबार वरस तप तपीया ॥
 कर्म खपावीने शिवपुर वसिया ॥ आ० ॥ ५ ॥ ६
 णिपरें प्रनुजीनी आरती करशे ॥ शुन परिणामें शि
 वपुर वरसें ॥ इणिपरें जिनजीनी आरती गावे ॥ शु
 न परिणामे शिवपुर जावे ॥ ६ ॥ करजोडी सेवक एम
 बोले ॥ नहीं कोइ मारा जिनजीने तोले ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ अथ शांतिजिननी आरती.

जय जय आरती शांति तुमारी, तोरा चरण
 कमलकी में जानं बलिहारी ॥ जय० ॥ १ ॥ विश्वसे
 न अचिराजीके नंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥

(८३ए)

॥ जय० ॥ २ ॥ चालीश धनुष्य सोवनमय काया,
मृगलंठन प्रभुचरण सुहाया ॥ जय० ॥ ३ ॥ चक्रवर्ती
प्रभु पांचमा शोहे, शोलमा जिनवर जग सह मोहे ॥
॥ जय० ॥ ४ ॥ मंगल आरती तारी कीजे, जन्म ज
न्मनो लाहो लीजें ॥ जय० ॥ ५ ॥ कर जोमी सेवक
गुण गावे, सो नरनारी अमरपद पावे ॥ जय०॥६॥

॥ आदि जिननी आरती.

जय जय आरतो आदि जिणंदा, नान्नीराया मरु
देवीको नंदा ॥ पेहेली आरतो पूजा कीजे, नरन्नव
पामीने लाहो लीजे ॥ १ ॥ जे०॥ दुसरी आरती दीन
दयाल, धुलेव मंरुपझां जग अजवाळ्युं ॥ २ ॥ जे० ॥
तीसरी आरती त्रिभुवन देवा, सुरनर इंड करे तो
री सेवा ॥ ३ ॥ जे०॥ चौथी आरती चौगति चुरे, मन
वांछितफल शिवसुख पुरे ॥४॥ जे०॥ पंचमी आरती
पुन्य उपाया, सुलचंदे रीखव गुण गाया ॥ जे०॥५॥

॥ अथ मंगल दीवो ॥

दीवोरे दीवो मंगलिक दीवो ॥ आरतो उत्तारन

बहु चिरंजीवो ॥ दी० ॥ सोहामणुं घर पर्व दिवाली,
 अंबर खेले अबला बाली ॥ दी० ॥ देपाल नणे इणे
 कल अजुआली, जावे नगते विघ्न निवारी ॥ दी० ॥
 देपाल नणे इणे ए कलीकाले, आरतो उतारी राजा
 कुंमारपाले ॥ दी० ॥ अम घेर मंगलिक तुम घेर मंग
 लिक, मंगलिक चतुर्विध संघने होजो ॥ दी० ॥ इति.

॥ अथ मंगल चार. ॥

चारो मंगल चार, आज महारे चारो मंगल चा
 र ॥ देख्यो दरस सरस जिनजीको, शोना सुंदर सार
 ॥ आज० ॥ १ ॥ विनुं विनुं जन मनमोहन अरचो,
 घसी केशर घनसार ॥ आज० ॥ २ ॥ विविध जाति
 के पुष्प मंगावो, सफल करो अवतार ॥ आ० ॥ ३ ॥
 धूप नखेवोने करो आरति, मुख बोलो जयजयकार ॥
 आ० ॥ ४ ॥ समवसरण आदिसर पूजो, चोमुख प्र
 तिमा चार ॥ आ० ॥ ५ ॥ हैये धरी आव जावना
 जावो, जिम पामो नवपार ॥ आ० ॥ ६ ॥ सकलचंद
 सेवक जिनजीको, आनंदघन उपगार ॥ आ० ॥ ७ ॥

(८४१)

॥ अथ चार मंगल ॥

आज घेर नाथ पधार्या, कीजें मंगल चार ॥

आण ॥ पहिले मंगल प्रभुजीने पूजुं, घसी केसर घ
नसार ॥ आण ॥ १ ॥ बीजे मंगल अगर नखेवुं, कंठे
ठवुं फूलहार ॥ आण ॥ त्रीजे मंगल आरती उतारुं,
घंट वजावुं रणकार ॥ आण ॥ २ ॥ चौथे मंगल प्र
भुगुण गांनं, नाटक थै थैकार ॥ आण ॥ रूपचंद कहे
नाथ निरंजन, चरण कमल जांनं वार ॥ आण ॥ ३ ॥

॥ अथ जिन नव अंग पूजाना दोहा ॥

जल जरि संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥

ऋषज्ज चरण अंगूठमो, दायक नवजल अंत ॥ १ ॥
जानु बलें कानस्सगग रह्या, विचर्या देश विदेश ॥ ख
मां खमां केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश ॥ २ ॥ लो
कांतिक वचने करी, वरश्या वरशी दान ॥ करकामे
प्रभु पूजना, पूजो नवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयुं
दोय अंसथी, देखी वीर्य अनंत ॥ भुजाबलें नवजल
तर्या, पूजो खंध महंत ॥ ४ ॥ सिद्ध शिला गुण उ

जलो, लोकांते जगवंत ॥ वसिया तेणें कारण जवि,
 शिर शीखा पूजंत ॥ ५ ॥ तीर्थंकर पद पुण्यशी,
 तिहुअण जन सेवंत ॥ त्रिजुवन तिलक समा प्रजु, जा
 ल तिलक जयवंत ॥ ६ ॥ सोल पहोर प्रजु देशना, कंठे
 विवर वरतुल ॥ मधुर ध्वनि सुर नर सूणे, तिणे गले
 तिलक अमूल्य ॥ ७ ॥ हृदय कमल उपशम बले,
 बाढ्या रागने रोष ॥ हीम दहे वनखंमने, हृदय ति
 लक संतोष ॥ ८ ॥ रत्नत्रयी गुण उजलो, सकल सु
 गुण विशराम ॥ नाजि कमलनी पूजना, करतां अ
 विचल धाम ॥ ९ ॥ उपदेशक नव तत्त्वना, तेणे नव
 अंग जिणंद ॥ पूजो बहुविध रागशी, कहे शुभ्र वीर
 मुणिंद ॥ १० ॥ इति श्री नव अंग पूजाना दोहा ॥

॥ अथ सामायिक लेवानी विधि ॥

॥ प्रथम नंचे आसनें पुस्तक प्रमुख मुकीने
 श्रावक श्राविका कटासणुं मुहपत्ति चवलो लेइ, शुद्ध
 वस्त्र जग्या पुंजी, कटासणा उपर बेसी, मुहपत्ति ना
 वा हाथमां मुखपासें राखी, जमणो हाथ आपनाजी

(८४३)

सनमुख राखो एक नवकार गणि पंचिंदिय कही
 खमासमण देइ इरियावहिया, तस्सुत्तरो, अन्न
 नससिएणं कही, एक लोगस्सनो अथवा चार नवका
 रनो काउस्सग करी, पारी, प्रगट लोगस्स कही, ख
 मासमण देइ, इच्छाकारेण संदिसह जगवन्, सामाय
 क मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं. एम कहि मुहपत्ति पडिले
 हणना पचाश बोल कही, मुहपत्ति पडिलेहीएं. पढी ख
 मासमण देइ० इच्छाकारेण संदिसह जगवन् सामायक
 संदिसाहुं ? इच्छं. कही खमासमण देइ, इच्छा० सामायक
 गनं ? इच्छं. एम कहि बे हाथ जोडी एक नवकार गणी,
 इच्छकारी जगवन्, पसाय करी सामायक मंरुक उच्च
 रावोजी. वडिल करेमिज्जंते कहे, पढी खमासमण देइ
 इच्छा० बेसणे संदिसाहुं ? इच्छं. कही खमासमण देइ इच्छा०
 बेसणे गनं ? इच्छं खमा० देइ इच्छा० सजाय संदिसाहुं ?
 इच्छं. खमा०॥ इच्छा०॥ सजाय करुं ? इच्छं० एम कहि त्रण
 नवकार गणवा, पढी बे धनी सजाय धर्म ध्यान
 करवुं ॥ इति सामायक लेवानी विधि समाप्तम् ॥

॥ अथ सामायक पारवानो विधि ॥

॥ खमासमण देश इरियावहि पडिक्कमवाथी जाव
त लोगस्ससुधी कही खमा० ॥ इच्छा० ॥ मुहपति प
डिलेहुं कही, मुहपति पडिलेहि, खमासमण देश, इ
च्छा० ॥ सामायक पारुं? यथाशक्ति. वली खमासमण
देश, इच्छा० ॥ सामायक पारुं; तहत्ती कही, पढी ज
मणो हाथ चवला उपर अथवा कटासणानपर थापी,
एक नवकार गणी सामाश्यवयजुत्तो कहियें. पढी
जमणो हाथ आपना सन्मुख सवलो राखीने एक न
वकार गणीयें.

॥ अथ देवसि प्रतिक्रमण विधि प्रारंभ ॥

॥ प्रथम सामायक लिजे. पढी पाणी वापरुं
होय तो मुहपति पडिलेहेवी, अने आहार वावरयो
होयतो वांदणां बे देवां, त्यां बीजा वांदणामां आव
सिआए ए पाठ न केहेवो. पढी यथा शक्ति पञ्चस्काण
करवुं. खमासमण देश इच्छाकरेण० कही, वमेरा अथवा
पोते चैत्यवंदन कहिने पढी जंकिंचि नमुत्तुणं कही,

(८४५)

उन्ना अईने अरिहंत चेईयाणं कहिने एक नवकारनो
 कानुस्सग्ग करी पारी नमोऽर्हत्तूण्हिने प्रथम थोय केहे
 वी. पढी लोगस्स, सब्बलोए, अरिहंतचेईयाणं कहिने
 एक नवकारनो कानुस्सग्ग पारीने बीजी थोय केहे
 वी. पढी पुस्करवरदी कही, सुअस्स जगवन्तु करेमि
 कानुस्सग्गं वंदणं कही एक नवकारनो कानुस्सग्ग पारी
 त्रीजी थोय केहेवी. पढी सिद्धाणं बुद्धाणं कही वेया
 वच्च गराणं करेमि कानुस्सग्गं अन्नत्तुण्हि पढी एक
 नवकारनो कानुस्सग्गपारी, नमोऽर्हत्तूण्हि कही, चोथी थोय
 केहेवी. पढी बेसीने नमुत्तुणं केहेवुं. पढी चार ख
 मासमण देवा पूर्वक जगवान्, आचार्य, उपाध्याय
 सर्वसाधुभ्यः प्रत्ये वंदन करीयें. पढी इच्छाकारेण०
 देवसि प्रतिक्रमणे ठाठं एम कहि, जमणो हाथ चवला
 कटासणा उपर आपोनें इच्छं सब्बस्सवि देवसिअण के
 हेवुं. पढी उन्ना अइ करेमिज्जंते इच्छामि ठामि कानुस्सग्गं
 जोमें देवसिन्तु तस्सउत्तरीण कही, पढी अतिचारनी
 आठ गाथानो कानुस्सग्ग करवो. आठ गाथा न आवडे

तो आठ नवकारनो कानुसग्ग करवो ते पारीने, पढी
लोगस्स कहेवो. ॥ बेसीने त्रीजा आवश्यकनी मुहप
त्ति पडिलेहीने वांदणां बे देवां. पढी उज्जा अइने इच्चा
काण देवसिअं आलोउं इहं आलोएमि जो मे देवसिउण
कहीने, पढी सातलाख कहेवा. पढी अठार पापस्थानक
आलोइमे सव्वस्सवि देवसिअ कहीने बेसवुं. बेसीने ज
मणो ठींचण उज्जो राखी एक नवकार गणी पढी क
रेमिज्जंते इच्चा मि पम्भिमिउणकहीने, वंदित्तु कहेवुं, पढी
वांदणां बे देवां. पढी अप्पुठिउहं अप्पिंतर देवसिअं खामी
ने वांदणां बे देवां. पढी उज्जा अइ आयरियउवच्चाए
कहीने, करेमिज्जंते इच्चा मि ठामि कानुसग्गं जोमें देव
सिउणतस्सउत्तरीणकही, पढी बे लोगस्सनो अथवा आठ
नवकारनो कानुसग्गपारीने पढी लोगस्स प्रगट कहेवो,
पढी सव्वलोए अरिहंतचेईयाणं, वंदणवत्तिआएण कही,
एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो कानुसग्ग पारीने
पुस्करवरदीण सुअस्सज्जगवउण करेमिण वंदण कही एक
लोगस्स अथवा चार नवकारनो कानुसग्ग पारीने,

सिद्धाणं बुद्धाणं० कही सुअ देवयाए करेमि कानुस्सग्गं
 अन्नत्तं० कही एक नवकारनो कानुसग्ग पारी नमोऽर्हत्तुं
 कही पुरुषे सुअ देवयानो पेहेली थोय कहेवो, स्त्रीये
 कमल दलनी पेहेली थोय कहेवी. पढी खेत्रदेवयाए
 करेमि कानुसग्गं० कही एक नवकारनो कानुस्सग्ग पारो
 नमोऽर्हत्तुं कहो क्षेत्र देवयानी बीजो थोय स्त्रीये
 तथा पुरुषे बंने ए कहेवी. पढी प्रगट एक नवकार गणी
 बेसीने, ठठा आवश्यकनो सुहपति पम्हिलेही, बे वांदणां
 दीजे. पढी सामायक, चनुव्विसत्तो, वंदण, पम्हिक
 मणुं. कानुस्सग्ग अने पच्चस्काण ए ठ आवश्यक संज्ञा
 रवां. पढी इत्थामो अणुसठिं कही, नमो खमासमणाणं
 कही, नमोऽर्हत्तुं कहीने पुरुष नमोस्तु वर्द्धमानाय
 कहे, अने स्त्री संसार दावानी त्रण गाथा कहे. पढी
 नमुत्तुणं कही स्तवन कहेवुं. पढी वरकनक कही न
 गवान् आदे वांदवा. पढी जमणो हाथ उपधी उपर
 थापी अट्ठाईजेसु कहेवुं. पढी देवसिअ पायच्चित्तनो
 कानुस्सग्ग चार लोगस्सनो अथवा सोल नवकारनो

(८४८)

करवो. पढी ते कानुस्सग्ग पारी, प्रगट लोगस्स कही,
वेसीने खमासमण वे देइ सज्जायनो आदेश मागी,
एक नवकार गणी सच्चाय कहीए, पढी एक नवकार
गणीए, पढी डुरककन कम्मकननो कानुस्सग्ग चार
लोगस्सनो संपूर्ण अथवा सोल नवकारनो करवो. एक
वरेरे अथवा पोते पारीने नमोऽर्हतू कही लघुशांति
कहेवी, पढी प्रगट लोगस्स कहेवो, पढी शरियावहि
कही तस्सज्जरी एक लोगस्स अथवा चार नवकार
नो कानुस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स केहेवो. पढी चउ
कसाय कही, नमुबुणं, जावंति वे कही, उवसग्गहरं,
जयवीयराय कही, मुहपति पमिलेहेवी इत्थामिण ॥
इत्थाकाण॥ सामायक पारुं. यथाशक्ति इत्थामिण॥ इत्था
काण सामायक पारयुं तहत्ति कही, पढी जमणो हाय
उपधी उपर आपी एक नवकारगणीने सामाइअ वय
जुत्तो कहेवो. पढी थापना होयतो एक नवकार गणी
उठे. ॥ इति ॥ देवसि प्रतिक्रमण विधि कही, बाकी
अंतरविधी वरेराशी समजवी.

(७४ए)

॥ अथ राइ प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम पूर्वनीरीते सामायक लीजे ॥ पढी कु

सुमिण डुसुमिणनो कानुस्सग्ग चार लोगसनो अथवा
सोद नवकारनो करी, पारी प्रगट लोगस्स कहेवो,
पढी खमासमण देइ जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन ज
यवीयराय सुधी करवुं. पढी चार खमासमण पूर्वक
जगवान्, आचार्य, उपाध्याय सर्व साधु प्रत्ये वांदवा,
खमासमण वे देइ, सध्यायनो आदेश मागी एक न
वकार गणीने जरहेसरनी सध्याय कहीने फरी एक
नवकार गणवो. पढी इच्चकार सुहराइनो पाठ केहेवो,
पढी इच्चाकाण राइ प्रतिक्रमणे ठाउं कहीने जमणो
हाथ उपधी उपर स्थापीने इच्चंसव्वस्सवि राइय डुच्चिंति
यण कही॥ नमुत्तुणं करेमि जंतं कही, इच्चांमि ठामि का
नुस्सग्गं तस्सउत्तरी अन्नत्तुं कही एक लोगस्स अथवा
चार नवकारनो कानुस्सग्ग पारीने, प्रगट लोगस्स
कही, सव्वलोएण अरिहंतण कही, एक लोगस्स अथवा
चार नवकारनो कानुस्सग्ग पारी पुरस्करवरदीण सुअ

સ્સપ વંદણ કહી, અતિચારની આઠગાથાનો અથવા
 આઠ નવકારનો કાનસ્સગ પારી, સિદ્ધાણં બુદ્ધાણં
 કહીને, ત્રીજા આવસ્યકનો મુહપતિ પડિલેહી વાંદ
 ણાં બે દેવાં. ત્યાંથી તે અપ્રુઢિનિ શ્વામિ વાંદણાં બે દી
 જે, ત્યાં સુધી દેવસિનીરીતે જાણવું. પણ જે ઠામે દે
 વસિઅં આવે છે તે ઠામે રાફ્યં કેહેવું. પછી આયરિઅ
 નવચ્ચાણ કરેમિત્તંતે ઇન્દ્રામિ ઠામિ કાનસ્સગં તસ્સ
 નત્તરી કહી, તપ ચિંતામણિ કરતાં ન આવમે તો ચાર
 લોગસ્સ અથવા સોલ નવકારનો કાનસ્સગ કરવો.
 તે પારી પ્રગટ લોગસ્સ કહી, પછી ઠઠા આવચ્યકની
 મુહપતિ પડિલેહીને વાંદણાં બે દેવાં, તે પછી તીર્થવંદ
 ન કરવું, પછી યથાશક્તિયે પચ્ચસ્કાણ કરવું. પછી ઇ
 ન્દ્રાકારેણ સંદિસહ જગવન્ સામાયક ચત્તવિસત્થો, વં
 દણ, પઢિક્કમણું, કાનસ્સગ અને પચ્ચસ્કાણ એ ઠ આવ
 ચ્યક સંજારવાં. પચ્ચસ્કાણ કર્યું હોય તો કર્યું ઠેજી
 કેહેવું, અને ધાર્યું હોય તો ધાર્યું ઠેજી એમ કેહેવું.
 પછી ઇન્દ્રામોઅણુસઠિં નમોશ્વમાસમણાણં નમોહરિતં.

कही विशाललोचन, नमुत्तुणं, अरिहंतचेईयाणं
 कहीने एक नवकारनो कानस्सग्ग पारीने नमोऽर्हतं
 कही कळयाणकंदंनी शोय प्रथम कहेवी. पढी लोगस्स,
 पुस्करवरदी, सिद्धाणं बुद्धाणं, कही अनुक्रमे चार थोयो
 कहीयें ठैए त्यां सुधी सर्व कहेवुं. पढी नमुत्तुणं कही,
 जगवान् आदि चारने चार खमासमणे वांदवा. पढी
 जमणो हाथ उपधी उपर आपी अट्ठाइज्जेसु कहेवुं. पढी
 श्री सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीय
 राय, कानस्सग्ग, शोय पर्यंत करवुं. पढी खमासमण
 पूर्वक श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीय
 राय, कानस्सग्ग शोय सुधी करवुं. पढी सामायक पा
 रवानो विधिनी रीते सामायक पारवा सुधी कहेवुं.॥
 इति राइप्रतिक्रमणनी विधि समाप्त ॥

॥ अथ पस्सि प्रतिक्रमणनी विधि लिख्यते ॥

॥ देवसि प्रतिक्रमणमां वंदित्तु कहि रह्या त्यां
 सुधी कहेवुं, पण चैत्यवंदन सकळाऽर्हतनुं कहेवुं ने
 शोयो स्नातस्यानी कहेवी. पढी खमासमण देइने

ઇચ્છા કરેણ સંદિસહ જગવન્, દેવસિત્ર આલોચિત્ર
 પડિકંતા ઇચ્છાકાળ પરિક્ષિતપતિ પડિલેહું, એમ કહી
 મુહપતિ પડિલેહિયેં, પત્ની વાંદણાં બે દીજે પત્ની ઇચ્છા
 કાળ સંબુદ્ધા શ્વામણેણં અપ્રુઢિનહં અપ્રિંતર પરિક્ષિત્ર
 શ્વામેન ઇચ્છં શ્વામેમિ પરિક્ષિતં પત્નરસ દિવસાણં પત્નર
 સ રાચિત્રાણં જંકિંચિ અપત્તિત્રં કહી ઇચ્છાકાળ કહો
 પરિક્ષિત્ર આલોચિત્ર ઇચ્છં આલોચિત્ર જોમે પરિક્ષિત્ર અ
 ચિત્રારો કન કહી ઇચ્છાકાળ કહી પરિક્ષિત્ર અતિચાર આ
 લોચં એમ કહીને અતિચાર કહીયે. પત્ની એવંકારે શ્રીશ્રાવ
 ક તણે ધર્મે શ્રીસમકિત મૂલ વારવ્રત એકસો ચોવી
 શ અતિચાર માંહે જે કોઈ અતિચાર પદ દિવસ માં
 હે સુદ્ધમ વાદર જાણતાં અજાણતાં હુન હોય, તે સવિ
 હું મને, વચને અને કાયાએ કરી મિચ્છામિહુક્કમં. સર્વ
 સ્સવિ, પરિક્ષિત્ર, હુચ્ચિંતિત્ર, હુપ્રાસિત્ર, હુચિદિત્ર, ઇચ્છા
 કરેણ સંદિસહ જગવન્, તસ્સમિચ્છામિ હુક્કમં॥ ઇચ્છ
 કારિ જગવન્, પસાય કરી પરિક્ષિત્ર તપ પ્રસાદ કરો
 જી. એમ નિચ્છાર કરીને આવી રીતે કહિએ. ચનત્રેણં એ

(८५३)

क उपवास, बे आयंबिल त्रण निवि, चार एकासणां, आठ बियासणां, बे हजार सञ्चाय यथाशक्ति तपकरी प्रवेश कस्यो होय तो पश्वीउ कहिए. करवो होय तो तहत्ति कहिये. ने न करवो होय तो अणबोल्या रहिये. पढी बे वांदणां दीजे; पढी इच्छाकाण पत्तेय खामणेणं अप्पुठ्ठिहं अप्पितर पस्किअं खामेणं ? इच्छं खा मेमि पस्किअं. पन्नरस दिवसाणं पन्नरस राइआणं जं किंचि अपत्तिअं कही पढी वांदणां बे दोजे, पढी देवसिअं आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह जगवन् पस्किअं पम्किमुं ? समं पम्किमामि इच्छं एम कही करे मिज्जंते सामाइयं कही इच्छामि पडिक्कमिणं जोमे पस्किउ कहा पढी खमासमण देइ इच्छाकारेण कही पस्किसूत्र पढुं. एम कही त्रण नवकार गणी साधु होय तो पस्किसूत्र कहे, अने साधु न होय तो त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदितु कहे, पढी सुअ देवयानी थोय कहेवी. पढी हेठा बेसी जमणो ठींचण उज्जो करवो. एक नवकार गणी करेमिज्जंते इच्छामि पम्किमिणं क

હી વંદિતુ કેહેવું. પઠી કરેમિત્રંતે ઇચ્છામિગમિ કાઝ
 સસગ્ગં જોમે પરિકિન, તસસનતરી, અન્નઢળ કહીને વાર
 લોગસસનો કાઝસસગ્ગ કરવો. લોગસસ ચંદેસુ નિમ્મલ
 યરા સુધી કહેવા, અથવા અમતાલીશ નવકારનો કા
 ઝસગ્ગ કરીને પારવો. પાલીને પ્રગટ લોગસસ કહેવો.
 પઠી મુહપત્તિ પમીલેહિને, વાંદણાં બે દિજે. પઠી ઇ
 ઢાકાળ સમાપ્ત યામણેણં અપ્રુઢિનહં અપ્રિંતર પરિકિઅં
 યામેનં ઇચ્છં યામેમિ પરિકિઅં. એક પરકાણં પન્નરસ દિ
 વસાણં પન્નરસ રાઙ્યાણં જાંકિંચિ અપત્તિઅં કહી પ
 ઠી યમાસમણ દેઙ ને ઇચ્છાકાળ કહી, પરિકિયામણાં
 યામું ? એમ કહીને યામણાં ચાર યામવાં. પઠો દેવ
 સિ પ્રતિક્રમણમાં વંદિતું કહ્યા પઠી વાંદણાં બે દેઙને
 ત્યાંથી સામાયક પારિયે, ત્યાં સુધી દેવસિની પેઠે
 જાણવું; પણ સુઅદેવયાની થોયોને ઠેકાણે જ્ઞાનાદિક
 ની થોયો કહેવી, સ્તવન અજિતશાંતિનું કહેવું, સઘ્યા
 યને ઠેકાણે ઝવસગ્ગહરં તથા સંસારદાવાની ચાર
 થોયો કહેવો. અને લઘુશાંતને ઠેકાણે મોટી શાંત ક

(૬૫૫)

હેવી. અને દેવસિંચનો પાઠ હોય ત્યાં પશ્ચિંચ કહેવું.

॥ ઇતિ પશ્ચિ પ્રતિક્રમણવિધિ સંપૂર્ણ ॥

॥ અથ ચનુમ્માસી પ્રતિક્રમણ વિધિ ॥

॥ નપર લખેલા પશ્ચિના વિધિ પ્રમાણેજ ઠે, પણ એટલું વિશેષ જે વાર લોગસ્સના કાનુસ્સગ્ગને ઠે કાણે વોશ લોગસ્સનો કાનુસ્સગ્ગ કરવો, અને પશ્ચિના આગારને ઠે કાણે ચનુમ્માસીના કહેવા. તથા તપને ઠે કાણે ઠેઠેણં વે નપવાસ, ચાર આંબિલ, ઠ નિવો, આઠ એકાસણ, સોલ વિઆસણ, ચાર હજાર સજ્ઞાય એ રીતે કહેવું. ॥ ઇતિ ચનુમ્માસી પ્રતિક્રમણવિધિ ॥

॥ અથ સાંવત્સરી પ્રતિક્રમણ વિધિ ॥

॥ એ પણ નપર લખેલા પશ્ચિના વિધિ પ્રમાણે ઠે, તથાપિ વાર લોગસ્સના કાનુસ્સગ્ગને ઠે કાણે ચાલીશ લોગસ્સ અથવા એકસોને સાઠ નવકારનો કાનુસ્સગ્ગ કરવો, અને તપને ઠે કાણે અઠમ જ્ઞત્તં એટલે ત્રણ નપવાસ, ઠ આંબિલ, નવ નિવિ, વાર એકાસણાં, ચો વોશ વેઆસણાં, અને ઠ હજાર સજ્ઞાય એ રીતે કહે

वुं. पस्किना आगारने ठेकाणे सांवत्सरीना आगार क
हेवा. ॥ इति संवत्सरी प्रतिक्रमण ॥

॥ अथ चण्ड नियम धारवानी विगतलखी एणी ॥

॥ गाथा ॥ सच्चित्तं द्रव्यं विगणं, वाणह तंबोलं वड कुंसुमे
सु, वार्हण सयण विलेखण, बंजं दिसिं न्हाणं जत्तेसुं.

१ सच्चित्त जे माटी पाणी अग्नि मोठुं नीली वनस्पति
फलफूल गाल काठ मूल पत्र बीज आदि काचां
धान्य, पाकां पण शस्त्र लागे वे घडी अथा वि
ना सचित्तमां तेनुं मान करे ॥

२ द्रव्य जे जे वस्तु मुखमां जुदां स्वाद अर्थे नां
खवी तेनी गणतीनो नियम ॥

३ विगण ते दुधं, दहो, धी, गोळ, तेल, कर्महविगे ते
जे तावमे तळे ने त्रण घाण तळ्या पदार्थ कमे
विगे, बीजा घाण निवियातामां तेनो नियम ॥

४ वाणह ते पगरखां मोजडि पावमि चाखमि मो
जां तेनो नियम ॥

५ तंबोल ते सोपारी पान लवंग एलची प्रमुख

मुख शुद्धि आय तेना तोलनो नियम ॥

६ वढ ते पोतानें पेहेरवामां आवे ते वस्त्रनी गण
तिनो नियम ॥ [नियम करे ॥

७ कुसुमेसु ते जे वस्तु नाके सुंधे तेना तोलनो

८ वाहाण ते त्रण जेदे. चरतुं ते घोडा हाथो जंट
बलद पाना प्रमुख; फरतुं ते गाडी रथ प्रमुख; तर
तुं ते बहाण, नाव, त्रापा, बोट प्रमुख; तेनो नियम ॥

९ सयण ते सुवाना खाटला पलंग गाडी पाट पा
टला, पाश्ररणां प्रमुखनो नियम ॥

१० विलेवण ते जे वस्तु पोताने शरीरे विलेपन करे
तेना तोलनो नियम ॥

११ बंज ते नारीना जोगनो नियम ॥

१२ दिसि ते पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, उर्ध्व, अधा,
जवानुं प्रमाण करे ते ॥

१३ न्हाण ते सर्व अंगे नाहावुं तेनुं परिमाण ॥

१४ जत्तेसु ते जोजन पाणो जम्यामां आवे तेनुं तोल ॥

१५ पृथ्वीकाय ते माटी मीठुं खनी प्रमुख पोताने
निमीत्ते वरे तेनो नियम ॥

- १६ अपकाय ते पाणी पोए वावरे नाह्या प्रमुखमां आवे तेना तोलनुं मान ॥
- १७ तेऊकाय ते जे पोताने शरीरे जोग उपजोगमां चुला, चारी, शधमी, अंजोढी प्रमुखनुं रांध्युं नि पज्युं ताप्या शेक्यामां आवे तेनो नियम करे ते.
- १८ वाऊकाय ते पंखा, हिंचोला, पन्वा, लुगडादिक श्री पवन नांखीए तेनुं प्रमाण ॥
- १९ वनस्पतिकाय ते लोलां फल, फूल, शाक, खाधा वावस्यामां आवे ते दातण सुधानुं परिमाण ॥
- २० त्रसकाय ते जे त्रास पामे ते किडा, कीमी, विंठी, गाय, मडूर, पंखी, मनुष्य, देव नारकी तेमांना कोइ ने विना अपराधे संकळपी माहुं नही तेनो नियम
- २१ असि ते तरवार जाला तीर बुरी कोस कोदाला पावडा, घंटि प्रमुख जीव वधनां करनारां शस्त्र तेनो नियम करे ते ॥ [नियम करे ते ॥
- २२ मसी ते साहोना खमिया दवातो प्रमुखनो
- २३ कसी ते जमिन खोदवादीक घर हाट खेत्र प्र

(८५७)

मुख तलाव कुवादि पावडादिके करी खोदे तेनो
नियम ॥ इतिश्रो चउद नियमादि बोल ३३ पोताथो
पळे तेम पाळे ॥ तेहने धन्य ठे ॥

॥ अथ समकित सहित बारव्रत उचरवानी
विधि संक्षेपे लिखीए ठीए ॥

॥ प्रथम समकित ते यथार्थ वस्तु तत्त्वना धर्म
तथा देवगुरु धर्मनी श्रद्धा ते शुद्ध पद युक्त ॥

१ देव श्री अरिहंत, अठार दोष रहित, संपूर्ण ज्ञान,
संपूर्ण दर्शनना धणी, मुक्ति मारगना देखाम
नार ते देव वीना बीजा देवने देव बुद्धिए नाआदरुं.

२ गुरु, सुसाधु, पंचमहाव्रतधारो, निग्रंथ, मोक्ष मा
रग साधवा उद्यमी ते वीना बीजा नामधारी
पाखंती गुरु बुद्धिए ना आदरुं ॥

३ सुधर्म, श्री जिनेश्वर श्री वीतरागदेवे ज्ञाप्यो ते
आज्ञा सहित दया मूल, दुर्गती पडता प्राणी
उने आलंबन; ते वीना बीजा नाम धर्म, गुण
विना धर्म बुद्धिए न आदरुं ॥

॥ ए त्रण तत्त्व सुधां सद्दहु ते पूजुं, वांडुं, सेवुं, ते
 श्री विपरीत न पूजुं, न वांडुं, न सेवुं, रायान्नियोगादि
 आगारें जयणा; नियम जंग न आय ॥

१ दिनप्रते देव जूहारुं, जोग ना बनें तो १ नव
 कारवाली प्रमुख गणुं ॥

२ दिनप्रते गुरु वांडु. जोग ना बनें तो श्रीसीमंधरादि
 प्रभुनीदिशिधारीने वांडू, नूले नवकारवाली १ गणुं.

३ धर्म, प्रज्ञाते नवकारसी आदि संध्याये डुविहार
 आदि करुं. न करुं तो नवकारवाली १ गणुं. वरस
 प्रते देव पूजामां रूप ॥ गुरु ड्यमां रूप धर्म
 कार्यमां सात खेत्रे रूप ॥ वावरूप ॥ आशातना
 टालवा खप करुं ॥ ॥ श्री ॥

१ प्रथम स्थूल प्राणातिपात विरमण अणुव्रतण
 स्थूल जीव संकटपी निरअपराधें हणवानी बुद्धि
 ए न हणुं. हणाववा अनुमोदवामां पण थाय
 तेनी जतना उपयोग राखुं.

२ बीजे स्थूल मृषावादे विरमण व्रत. पांच प्रकारे

(८६१)

जूठ न बोलवुं तेनां नाम १ कन्या २ गो ३ जूमी
४ आपण मोसो ५ कुडीसाख्य. ए पांच प्रकारे
जूठ न बोलुं. सुद्धम जयणा ॥

३ त्रीजे स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत ॥ मोटी
चोरी ना करुं, तालुं तोरुं नहीं, गांठ ठोडवी
नहीं, भारग पारुवो नही, चोरीनो झाल लेवो
नहीं, जावत अणदीधुं लेवुं नहीं राज दंमादि
उपजे ते चोरी तजुं ॥

४ चोथुं स्वदारा संतोष परदार विरमण व्रत. वि
धवा वेश्या कुलांगना प्रमुख, देव मनुष्य त्रौजंच
संबंधि स्त्री सोयदोराने आकारे सेववी नहीं. जावत
कुवचन तथा सरागे विकार बुद्धि ए सामुं पण
जोवुं नही. तेम नारीने पुरुष संबंधि जाणवुं ॥

५ पांचमुं परिग्रह परिमाणव्रत ॥ इच्छा परिमाणव्रत ॥
धनं, धान्य, क्षेत्र, वस्त्र, रूप, सुवर्न, कुपंद, द्विपंद, चतु
ष्पद ए नव प्रकारना परिग्रहनुं परिमाण वा इच्छा
परिमाण करे उपरांत संबंधे बने तो तीर्थे वावरुं ॥

(૫૬૭)

૬ ઘટું દિશિ પરિમાણ, તે પૂર્વાદિ દિશાએ જવાનો
નિયમ શક્તિ અનુસારે કરે જાવ જીવ સુધી ૦

૭ સાતમું જોગોપજોગવ્રત, તેમાં જોગ તે જોગવી
વસ્તુ ફરી કામમાં ના આવે તે, અન્ન, પાન, ખાદિમ,
સ્વાદિમ પ્રમુખ; તથા નપજોગ તે ઘર ઘરેણું વસ્ત્ર
નારી પ્રમુખ જોગવેલા પદાર્થ વારંવાર જોગવે તે
નપજોગ, તેનો નિયમ, વાવીસ અન્નદ્વય વત્રીસ અ
નંતકાય ૪૫ મહાવીગય તજવો. ૧૪ નિયમ ધારવા.

૮ આઠમું અનર્થદંત્ર, વિના અર્થે પાપ કર્મે આર્ત રૌડ
વિષય કષાય હાસ્યાદિકે કરી સજન પ્રમુખ
શરીર પૂજા વ્રતાદિ કારણવિના ઘરેણાં કોશ
કોદાલા નુશલ મુસલાદિ હલ ગામ્માં શસ્ત્ર સજ્જ
કરી પાપ કામમાં જે પ્રવર્તીવે તે ૦ ॥

૯ નવમું સામાયક વ્રત, તે દિન, પક્ષ, માસ, વરસમાં
સામાયક કરવાં તેની સંખ્યા. બે ઘનિ સુધી સ
મજાવેં વરતવું તે સામાયક ॥

૧૦ દશમું દેશાવગાસિકવ્રત તે જાવજીવ દિશિપરિ

(૫૬૩)

માણ કરેલું તેમાંથી દિનપ્રતે જવા આવવાના નિયમ કરી ઘર શેરી પ્રમુખમાં રહેવું તે વે ધ સ્ત્રીથી માંત્રી જાવજીવ સુધી નીમૈં સ્થેત્રે રહેવું, સામાયક આદિ ધર્મ સેવવો, તથા ચનુદ નિયમ ધારવા તે પ્રથમ કહ્યા છે ॥

૧૧ અગ્નીઆરમું પોષધ નપવાસ વ્રત તે ચ્યાર પરવી વા પાંચ પરવી પોસહ માસેં વરસેં કરવા તે શક્તિ જોગ ચાર પ્રકારના પોસાના જ્ઞાંગા ૫૦ એક, દ્વિક, ત્રીક, ચતુસંજોગી મત્રી થાય છે સર્વથી ચોવીહાર, દેશથી આંબિલ નીવિ એકાસણ; આઠ અથવા ચાર પહોર રાત્રી દિન, અથવા રાત વા દિન, આત્માને ચારિત્ર પુષ્ટ કરવા પ્રવર્તવું તે ॥

૧૨ વારમું અતિથિસંવિજ્ઞાગ વ્રત તે પ્રથમ કહ્યા તે વા ગુરુને પોસહ પારણાદીકે પડીલાત્રી જે દાન દીધું તે જોજનાદિક વધેલું રહે તે પોતે વાવરે. જોગ ના બને તો ધર્મ મિત્રને જોજન કરાવે અથવા પોતાના ધર્માચાર્ય જે દિશાએ વિચરે તે

(८६४)

दिशाए वांदी निमंत्रणा करी वावरे ॥

॥ ए समकित मूल बारवत देशाची लख्य
तेमां जेद तो विशेष ठे ते सुविहीत गुरुवादीकने
ने ए आदरवां. जीवित जन्म जांण्यानुं फल ए

॥ अथ पञ्चस्काणाना आगारनी गाथा ।

दो चेव नमुकारे, आगारा ठ चेव पोरिसिए ॥
तेवय पुरिमढे, एकासणगंमि अढेव ॥ १ ॥ सत्तेग
णेसुअ, अढेव य अंबिलंमि आगारा ॥ पंचेव य ज्ञ
ठ प्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥ पंच चनरो अज्जि
निव्वीए अठ नव आगारा ॥ अप्पाअरणे पंच चन,
वंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥



शुद्धि पत्र.

लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.	पातुं.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
८ अ	अै		४५	१ इत्था	इच्छा	
७ य	य्य		४८	२५ गांव	गांठ	
११ ए	ऐ		४९	२ ठे	छे	
१३ क्ष	क्षै		४९	२ कहेठे	कहेछे	
१४ ज्ञ	ज्ञै		४९	१८ वनतुं	वनतुं	
४ वलचर	थलचर		५०	४ गायछे	थायछे	
५ वदीउ	वंदीउ		५२	३ इंद्रिय	इंद्रिय	
८ मो	नमो		५३	५ निग्धा	निग्धा	
१० स्त्रीद्धाण	सिद्धाणं		५४	१३ करीने	करीने	
१६ करी,	करी		५५	१ निग्धायण	निग्धायण	
१८ विशुद्ध	विशुद्ध		५७	२ मोन	मौन	
२ अरिहंतादिक	अरिहंतादिक		५७	२५ लाख	लाख	
५ अवे	अने		५९	२१ आगर संपदा	आगर संपदा	
१८ कवलज्ञान	केवलज्ञान.		६०	९ विराधना	विराधना	
१ काइ	कोइ		६२	१८ स्वामीने	स्वामीने	
१२ भाव	भाव		६२	२० अरिष्टनेमि	अरिष्टनेमि	
५ प्रतिवोधी	प्रतिवोधी		७३	१६ लांठन	लांठन	
७ भगवान	भगवान		७५	८ लांछन	लांछन	
३ करता	करतो		७५	२८ सौम्यदृष्टि	सौम्यदृष्टि	
१७ दवता	देवता		७७	१६ एवमं	एवमं	
१ दृष्टि	दृष्टि		८५	३ तेमा	तेमां	
६ थअ	अथ		८८	१५ इगानिखमणे	इगानिख मणे	
६ क०	के०					

पानुं. लीटी.

अशुद्ध. शुद्ध.

पानुं. लीटी.

अशुद्ध.

१००	१६ भोगण	भोगेण
१०३	१४ पहुआ	पहुआ
१०३	१८ बलवण	बलवण
२०५	५ द्वादश	द्वादश
१०६	१ श्रृंग	श्रृंग
१०७	१४ धीर	धीर
१०८	१८ पञ्चने.	पञ्चने,
१०८	४ बिंवाइ	बिंवाइ
११०	८ गंधहृथीणं	गंधहृथीणं
१११	४ अखलथं	अखलथं
११२	१० मखय	मखय
११३	१३ ओघ	ओघ
११४	१६ लोकनाहाणं	लोगनाहाणं
१२१	६ संताइ	संताइ.
१२१	८ केविसाहु	केविसाहु
१२१	१० साहु	साहु
१२३	१ दारिद्रित	दारिद्रिता
१२३	३ समकत्व	सम्यकत्व
१२३	८ अविगेण	अविग्वेणं
१२५	४ धारण	धारण
१२६	१० वप्माहये	वप्महिणु
१५०	२० आखवढ	आखवढे
१५५	१ अर्हद्वक्र	अर्हद्वक्त्र
१५५	१८ कापान	कार्याने
१५६	२० नाखी	नाखी

१५६	१८ ज्योतिषिदेख	ज्योतिषिदेख
१५८	२ सप्भूय	त्सप्भूय
१६२	६ धम्मवक्कवाहिं	धम्मवक्कवाहिं
१६५	२ वेयावच्च	वेयावच्च
१७३	२ उणोवरिया	उणोवरिया
१७५	४ लि	ली
१७६	१३ निकाक्षित	निकांक्षित
१७८	१५ नक्की	नक्की
१८८	१४ दष्टि	दष्टि
१८८	१८ पडिक्कमु	पडिक्कमु
१८०	३ पडिक्कमणमां	पडिक्कमणमां
१८६	५ वेपगां	वेपगां
१८८	६ पडिक्कमीश	पडिक्कमीश
२०८	१ काष्ठ	काष्ठ
२१३	१३ संग्राम	संग्राम
२१५	१४ अन	एन
२१८	४ कौकुच्य	कौकुच्य
२२०	८ जघन्य	जघन्य
२२२	१३ दुप्पाज्जअ	दुप्प-
२२७	१५ वर्मना	मज्जिअ
२३१	१२ अप्या	धर्मना
२३६	१२ संताइ	अप्या
२३८	३ अवो	संताइ
२३८	८ जघन्य	अधो
		जघन्य

लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.	पाजु.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१४ साहर्मिण		साहर्मिण	३०८	११ वधुं		वधुं
१८ चित		चित्त	३०८	११ साधु		साधु
१४ साधर्मिक		साधर्मिक	३१६	८ दूध		दूध
छेछी दुरियाइ		दुरियाइ	३२५	११ ओठी		ओछी
१८ जित्ते		चित्ते	३२५	१४ मोढ		मोडे
१५ जेनी		जेवी	३३०	१४ भुवः		भुवः
१७ अधिष्टायिका		अधिष्टायिका	४३१	५ मधिष्ठानं		मधिष्ठानं
२ साधुभिः		साधुभिः	३३७	२ चित्		चित्त
३ तापथी		तापथी	३३७	१२ निर्भितिः		निर्भितिः
३ दधातु		दधातु	३३७	१५ जयांत		जयंति
७ जेशु		ज्जेशु	३३७	३ नखांशव		नखांशवः
४ नाममंत्र		नाममंत्र	३४३	५ विचयां		निचयो
२० सिद्धि		सिद्धि	३४६	१२ देवराजार्चितानो दे-		वराजार्चितानां
१५ दृष्टिना		दृष्टिनां				
१२ विजयीदवि		विजयादेवि	३४८	३ अभिघ		अभिघः
१२ जीणु		जिणु	३४८	४ रैवतकः		रैवतकः
५ बंदु		बंदुं	३४८	८ विशालहृदया		विशालहृदया
२ कुण्ण		कुण्ण	३५२	१ संक्षीप्ता		संक्षिप्त
२ दसन		दसन	३५२	८ कायाय		कायाये
५ अवांत		अवंति	३५५	१६ सांभल्या		सांभल्यां
११ अहकुमारोअ		अहकुमारो	३५७	५ इंधन		इंधन
७ इच्छाकार		इच्छाकार	३५७	८ धोमेल		धोमेल
१५ जयोतपी		ज्योतिपी	३५७	८ पतंगीया		पतंगीयां
४ मुट्टिसाहिअं		मुट्टिस-	३५८	१ स्वप्नातर		स्वप्नांतर
		सहिअं	३५८	१ आप्या		आप्यां
१२ मुट्टिसाहित		मुट्टिसहित	३५५	१० देवद्र		देवेंद्र
७ निवगइनु		निविगइनुं	३५६	१ कया		कयां
१८ लेखुं		लेखुं				

पातुं.	लीटी अशुद्ध.	शुद्ध.
उ६७	२ कधिओ	कधिओ
उ६८	११ उधरथे	उधरथे
उ६९	४ कोइ	कोइ
उ७०	१७ करण	करणे
उ७४	१८ धीमेल	धीमेल
४०७	१५ शांतीवाला	शांतीवाला
४१०	५ थइठे	थइठे
४२३	१ तथा	तथा
४३२	३ जिण	जिणं
४३८	१३ मार्गन	मार्गने
४४४	८ सांत	सांति
४४३	१६ सीह	सीह
४३९	१५ पहेरलां	पहेरेलां
४४७	१ इह	इह
४६०	१५ बुद्ध	बुद्ध
४६४	८ शांति	शांति
४६६	११ गोष्टिकानां	गोष्टिकानां
४६७	२ ,,	,,
४६७	७ प्रतिष्ठा	प्रतिष्ठा
४६८	१ शांति	शांतिं
४६८	१० प्रतिष्ठा	प्रतिष्ठा
४६८	११ ,,	,,
४७२	१९ ज्ञा	ज्ञा
४७३	१८ ,,	,,
४७३	१३ ,,	,,
	१५ ,,	,,
	० भिपण	भीषण

पाञ्च	लीटी	अञ्जुद्ध.	शुद्धः
५०७	८	दूरविगारिय	दूरविगारिय
५०७	१६	धवल	धवल
५०८	१८	अभिगवाय	अभिगवाय
५१८	८	वाङ्मय	वाङ्मय
५२१	६	वडीना	वडीना
५१२	१४	मत्वेति	मत्वेति
५२२	६	मुखरी	मुखरी
५२३	७	नात्यद्भुतं	नात्यद्भुतं
५२५	१३	पोतान	पोतानो
५२६	८	पयःपाणी	पयः-पाणी
५२७	७	नहि	न हि
५२८	५	मिपोन्मिय	मिपोन्मिय
५३०	१६	स्पष्टिकरोपि	स्पष्टिकरोपि
५३१	४	जलधर	जलधरै;
५३१	१०	निर्धूम	निर्धूम
५३२	१५	”	”
७३४	१८	सर्वरिपु	सर्वरीपु
५३५	२	शु	शु
५४३	१५	मुच्चे	मुच्चे
५४८	२	ठ	ठे
५६५	५	हृद्वत्तिनि	हृद्वत्तिनि
५६५	८	बोले छे	बोले छे
५७४	१	निश्च	निश्च
५७५	१०	हृदयसां	हृदयसां
५७५	४	ध्यानथी	ध्यानथी
५७६	४	वृत्तं	वृत्तं
५८१	८	सानिध्यतः	सानिध्यतः
५८१	८	पायूपतां	पायूपतां
५८४	५	दिव्यधोनि	दिव्यध्वनि

अशुद्ध.
विधुरयं
पादद्वयं

शुद्ध.

विधुरयं
पादद्वयं

अशुद्ध.
विधुरयं
पादद्वयं

शुद्ध.

१ प्रात
६ था
१ विधाय
५ व्यान
७ देवद
११ भवदंष्ट्रि
१७ वज्जिनद
१ त्वाद्विव
१ मोत्त
११ सागरचदो
१३ विलपम
१ नमुच्छुणं
१४ बहु गान
१७ सढढाण
१४ पभवाणा
६ इच्छकारी
१६ लख्या छे
८ मिथ्यामि
१३ इथ्या
८
१६ अधुष्टिओ
३ इथ्या
७ वसो
८ हेण
१७ पढी

प्रति
तथा
विधाय
प्यान
देवदंष्ट्रि
भवदंष्ट्रि
वज्जिनदंष्ट्रि
त्वाद्विव
मोत्तं

सागरचंदो
विलेपन
नमुच्छुणं
बहु मान

सह्याण
पभावाणा
इच्छकारी
लख्या छे
मिच्छामि
इच्छा

अधुष्टिओ
इच्छा
वसो
हणं
पढी

पादद्वयं

प्रति

तथा

विधाय

प्यान

देवदंष्ट्रि

भवदंष्ट्रि

वज्जिनदंष्ट्रि

त्वाद्विव

मोत्तं

सागरचंदो

विलेपन

नमुच्छुणं

बहु मान

सह्याण

पभावाणा

इच्छकारी

लख्या छे

मिच्छामि

इच्छा

अधुष्टिओ

इच्छा

वसो

हणं

पढी

६४१ १७ हिंदा
६४६ १० ज्जिनोध
६४६ १ पमानः
६६० ७ डुवणी
६६० ७ श्रीवत्थ
६६० ८ श्रेयासनो
६६३ १४ धरशु
६६३ १५ धरणी
६६४ ५ गोतम
६६६ १
६६६ ५ विधि
६७१ ११ धुर धुर
६७६ ४ धोप
६७७ १२ अटमी
६८७ ३ ब्रह्मद
६८८ ७ पाप
६८० १५ पार्श्व
६८७ ३ पद
६८७ ६ ध्यान
६८८ १३ लुधर्मा
७०१ ६ तत्त्वे
७०५ ६ वासोरे
७११ ११ आप्योरे
७११ १५ वेहेन
७ १४ पेरे
७१७ १२ गोतम
७१८ ५ आदरो
७२७ ४ खेले

निद्रा
ज्जिनोध
मानः
ठवणी
श्रीवत्थ
श्रेयासनो
धरशुं
धरणी
गौतम

विधि
धुरंधर
धोप
अटमी
ब्रह्मद
पाप
पार्श्व
पदे
ध्यान
लुधर्मा
तत्त्वे
वासोरे
आप्योरे
वेहेन
पेरे
गौतम
आदरो
खेले

पांचुं लीटी अशुद्ध.

शुद्ध.

पांचुं

२ कीधो

कीधो

लीटी. अशुद्ध.

शुद्ध.

७३५	१० चरला	चरवला
७४१	१५ दूर	दूरे
७४४	१३ चौखु	चोखुं
७५२	३ भलोजी	भलोजी;
७६२	६ स्वर्गशु	स्वर्गशुं
७६५	१५ पूजता	पूजतां
७७२	१२ असंख्या	असंख्य
७७३	८ प्र	प्र
७७३	१२ सतकाल	ततकाल
७८३	११ नहींखी	नहींजी
७८५	१० नामजो	तामजो
७८५	११ धररे	धरेरे
८०१	४ पामी	गामी
८०७	७ घसता	घसंता
८०८	५ उडावण	उडावण
८१२	२ संवत्तर	संवत्तर
८१५	३ विपुलाचक	विमलाचल
८१७	६ मुखपाडता	मुखपाडंता

८१७	८ वगडी	वी गडी
८१७	१४ थया	थयो
८१८	४ कीयाजी	कीये
८१८	४ मनि	मुनि
८२०	११ वपोर	वपोरे
८२१	८ वासो	वास्यो
८२४	३ वचननां	वचनना
८२५	५ जन	जिन
८२५	१७ शाश्वतो	शाश्वतां
८२८	१७ करीने	भरीने
८३०	७ जेहखुं	जेहचो
८३४	१३ कृतरो	कृतरो
८४६	११ कहीन	हीने
८४७	३ पेहली	पेहेली
८५२	२ इछा	इच्छा
८५७	१३ अधा	अधो
८५७	१५ अंप	अंगे

